

**THE BOOK WAS
DRENCHED**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_176006

UNIVERSAL
LIBRARY

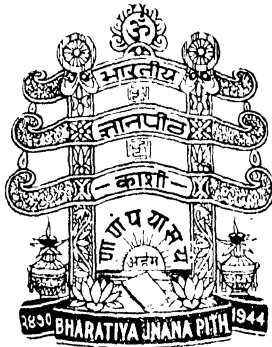
‘ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी’ पालि गन्धमाला [गन्थाङ्को १]

भदन्ताचरियेन बुद्धघोसमहाथेरवरप्पणीता परमत्थजोतिका नाम

जा त क ट्ठ क था

[पठमो भागो]

एककनिपातवण्णना



कोसिनारकेन तिपिटकाचरियेन
भिक्षुना धम्मरक्खितेन
संसोधिताभिसङ्गता च

भा र ती य ज्ञा न पी ठ का शी

पठममुद्रापनं
सहस्रसमत्तं

आसाल्हो वीरनि० सं० २४७७
बु० सं० २४६५
जुलाई १९५१

मूलं ९ रु०

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

स्व० पुण्यश्लोका माता मूर्तिदेवी की पवित्र स्मृति में
तत्सुपुत्र सेठ शान्तिप्रसाद जी द्वारा

संस्थापित

ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी पालि ग्रन्थमाला

पालि ग्रंथांक १

प्रकाशक—

अयोध्याप्रसाद गोयलीय,

मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ काशी

दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस

मुद्रक—देवताप्रसाद गहमरी, संसार प्रेस, काशीपुरा, बनारस

स्थापनाब्द
फाल्गुन कृष्ण ६
वीरनि० २४७० }

सर्वाधिकार सुरक्षित

{ विक्रम सं० २०००
१८ फरवरी १९४४



स्व० मूर्तिदेवी, मातेश्वरी सेठ शान्तिप्रसाद जैन

JÑĀNA-PĪTHA MŪRTIDEVĪ PALI GRANTHAMĀLĀ

PALI GRANTHA No. 1

JATĀKATTHAKĀTHA

Vol. I



EDITED BY

TRIPITAKACHARYA
BHIKSHU DHARM RAKSHIT

Published by

Bhāratiya Jñānapitha, Kāshi

First Edition }
1000 Copies. }

ASHARH, VIRĀ SAMVAT 2477
BUDDH SAMVAT 2495
JULY, 1951.

{ *Price*
{ *Rs. 9/-*

BHĀRATĪYA JÑĀNA-PĪTHA, KASHI

FOUNDED BY

SETH SHANTI PRASAD JAIN

IN MEMORY OF HIS LATE BENEVOLENT MOTHER

SHRĪ MŪRTI DEVĪ

JNĀNA-PĪTHA MŪRTI DEVĪ PALI GRANTHAMĀLĀ

PALI GRANTHA No. 1

PUBLISHER

AYODHYA PRASAD GOYALIYA,

SECY., BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪTHA,
DURGAKUNDA ROAD, BANARAS.

Founded in
Phalgunā Krishna 9, } *All Rights Reserved.* { Vikrama Samvat 2000
Vira Sam. 2470 } 18th Feb. 1944.

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

विज्जति

सिरिघनसुगततथागतेन पनम्हाकं भगवता अरहता सम्मासम्बुद्धेन अभिसम्बुज्झित्वा, सम्बोधिसमधि-
गमाय सम्भारभूता दीपङ्ककरपादमूले कताभिनीहारतो पट्ठाय याव तुसितभवननिवासा, या चरियायो कथा-
मग्गेन ओवादानुरूपेण च तत्थ तत्थ भिक्खुभिक्खुनीनञ्चेव उपासकुपासिकानञ्च वुत्ता, ता सब्बा अद्वच्छट्ठ-
सत्पपमाणा जातक'न्ति नामेन तेनेव तथागतेन पाकटीकता । तञ्च खो पन जातकं सङ्गीति आरोपेन्तेहि धम्म-
सङ्गाहकत्थेरवरहि सङ्गीतित्तयसमारोपितं पिटकवसेन सुत्तन्तपिटके च निकाय वसेन खुट्ठनिकाये च अन्तोगधं
होति ।

तस्स खो पन जातकस्स अत्थवण्णना, परमविसुद्धसद्भावुद्धिविरियपतिमण्डितेन तिपिटकपरियत्तिप्प-
भेदसाट्ठकथे सत्थुमासने अप्पट्ठित्ताणाचारणे थेरवंसप्पदीपानं थेरानं महाविहारवासीनं वंसालङ्कारभूतेन
जम्बुदीपवासिना सकसमयसमयन्तरपरारदस्मिना यसस्सिना भवन्त बुद्धोसत्थेर'वरेन परमत्थजोतिका'ति
नामेन कता । सा पत्तायं परमानं उत्तमानं अत्थानं जोतनतो पकासनतो परमत्थजोतिका नाम । जातकट्ठकथा'
तिपि अयमेव कथीयते ।

न खो पन जातकट्ठकथासदिसा विमालतमा अञ्जा अट्ठकथा नाम अत्थि । इमस्मि पन गन्थे राज-
नीतिधम्मनीत्यादयो सञ्चेपि धम्मा आगता । अपि च कथामग्गेन वण्णितो अयं गन्थो सब्बजनसुखावहो होति ।
एतरहि लोके कथासाहिच्चे जातकट्ठकथा विय लोकियलोकुत्तरत्थसाधको एकोपि अञ्जो गन्थो नत्थेव ।

अयं जातकट्ठकथा जातकपालियं आगतनियामेनेव बावीसतिया निपातेहि पतिमण्डिता होति । तेसु
एककनिपातवण्णनाय निदानकथानन्तरं अपण्णकजातकादीनि दियड्ढजातकसत्तानि होन्ति, तानि अपण्णक-
वग्गादीहि पण्णारसहिक्खेहि चैव तीहि पण्णासकेहि च सङ्गहीतानि । सब्बेसं निपातानं वित्थारो पन एवं वेदि-
तव्वोः—

| अनुक्कमो | निपातो | वगगप्पमाणो | जातकप्पमाणो |
|----------|---------------|------------|-------------|
| १ | एककनिपातो | १५ | १५० |
| २ | दुकनिपातो | १० | १०० |
| ३ | तिकाकनिपातो | ५ | ५० |
| ४ | चतुक्कनिपातो | ५ | ५० |
| ५ | पञ्चकनिपातो | ३ | २५ |
| ६ | छक्कनिपातो | २ | २० |
| ७ | सत्तकनिपातो | २ | २१ |
| ८ | अट्ठकनिपातो | १ | १० |
| ९ | नवकनिपातो | ... | १२ |
| १० | दसकनिपातो | ... | १६ |
| ११ | एकादसकनिपातो | ... | ६ |
| १२ | द्वादसकनिपातो | ... | १० |
| १३ | तेरसकनिपातो | ... | १० |
| १४ | पकिण्णकनिपातो | ... | १३ |
| १५ | वीसतिनिपातो | ... | १४ |

| अनुवकमो | निपातो | वगण्यमाणो | जातकप्यमाणो |
|---------|----------------|-----------|-------------|
| १६ | तिसतिनिपातो | ... | १० |
| १७ | चत्तालीसनिपातो | ... | ५ |
| १८ | पञ्चासनिपातो | ... | ३ |
| १९ | सट्टिनिपातो | ... | २ |
| २० | सत्ततिनिपातो | ... | २ |
| २१ | असीतिनिपातो | ... | ५ |
| २२ | महानिपातो | ... | १० |
| २२ | | ४३ | ५४७ |

इति इमानि सतचत्तालीमाधिकानि पञ्चजातकसतानि इमिस्सं जातकट्टकथाय वणिगतानि । जातक-पालीपि एतपरमायेव दिस्सन्ति । यस्मिन् वदन्ति पण्णासाधिकानि पञ्चजातकमतानीति अद्वच्छट्ठानि जातक-सतानीति च तं एतकमेव, न हेत्थ अप्पिकाय तिसङ्खचाय ऊनता सल्लक्खीयतेति अनेकेहि थेरेहि वुत्तं ।

इमाय जातकट्टकथाय पन निदानमतं इतो सत्ताधिकतिसनिसंवच्छरतो पुब्बे दिवङ्गतेन **आचरियेन धम्मनन्दकोसम्बिना** मुद्दापितं अहोमि । सकलाय जातकट्टकथाय हिन्दीभासाय परिवत्तनम्पि आनन्दकोसल्ला-नत्थेरेन कतं अत्थि । तस्सा ताव तयो भागा येव मुद्दापिता सन्ति । अञ्जो पि भागा सीधेन मुद्दापिता भविस्स-न्तीति मञ्जो । अपि च जातकट्टकथाय नागरक्खरमुद्दापने अतिवियपयोजनं दिस्समाने **‘भारतीय ज्ञानपीठ काशी’** इति नामिकाय समितिया मुद्दापनमारद्धं । इमिस्सा पन्नायं पठमो भागो याव एककनिपातवण्णना परि-योमाना मुद्दापितो । जातकट्टकथाय पन मुद्दापनेन तेन भारतीयानं महाउपकारो कतो ।

इमाय जातकट्टकथाय सम्पादनकिच्चं पन सव्वप्पकारेन तिपिटकाचरियेन भदन्तजगदीसकस्सपत्थेर-वरेन कतं । तस्सेव अनुमतिया मया संमोधिताभिमङ्गलता च । इमिस्मि अभिसङ्खरणे तत्थ तत्थ विसयानुरूपा मातिकायो लिखिता सन्ति, ता अञ्जोसु गन्थेसु नत्थि, इध पन पाठकानं सुखावबोधत्थाययेव तथा कता । अधोदिप्पणीसु विमदिसपाठापि तेनेव अज्झासयेन आहटा । पमादवसेन खलु इमिस्मि मुद्दापने सद्दोसादयो दिस्सन्ते, तस्मा मया सुद्धिपत्तं लिखितं अत्थि, तं साधुसो ओलोकेत्वाव सज्जना पठन्तूति निवेदयामि ।

कुसिनारायं

२८-५-५१

इत्थं विज्झापीयते मया कोसिनारकेन

भिक्खुना धम्मरक्खितेनान्ति

सङ्केतनिरूपनं

| | | |
|-------|---|----------------------------|
| रो० | — | मुद्दित रोमनक्खरपोत्थकं । |
| सि० | — | मुद्दित सीहलक्खरपोत्थकं । |
| स्या० | — | मुद्दित स्यामक्खरपोत्थकं । |
| म० | — | मुद्दित मरम्मक्खरपोत्थकं । |

सूचिपत्रं

निदानकथा

| अङ्कको | अनुअङ्कको | विसयो | पिट्ठङ्कको |
|--------|-----------|--|------------|
| १ | " | परणामगाथा | १ |
| २ | " | तीणि निदानानि | २ |
| ३ | " | दूरेनिदानं | " |
| " | १ | सुमेधकथा | " |
| " | " | अमरवती नगरं | ३ |
| " | " | सुमेधपण्डितस्स चिन्तनं | " |
| " | " | सुमेधपण्डितस्स पब्बज्जा | ५ |
| " | " | दीपङ्करभगवतो पादमूले बुद्धभावाय अभिनीहारो | ८ |
| " | " | बुद्धुप्पादस्स पुब्बनिमित्तानि | १२ |
| " | " | महासत्तस्स अधिट्ठानानि | १५ |
| " | " | १. दानपारमी | " |
| " | " | २. सीलपारमी | १६ |
| " | " | ३. नेक्खम्मपारमी | " |
| " | " | ४. पञ्चापारमी | १७ |
| " | " | ५. विरियपारमी | " |
| " | " | ६. खन्तिपारमी | १८ |
| " | " | ७. सच्चपारमी | १८ |
| " | " | ८. अधिट्ठानपारमी | " |
| " | " | ९. मेत्तापारमी | १९ |
| " | " | १०. उपेक्खापारमी | " |
| " | " | महासत्तस्स पारमिसम्ममनं | २० |
| " | २ | भगवा दीपङ्करो | २२ |
| " | ३ | भगवा कोण्डञ्जो | २४ |
| " | ४ | भगवा मङ्गलो | " |
| " | ५ | भगवा सुमनो | २७ |
| " | ६ | भगवा रेवतो | " |
| " | ७ | भगवा सोभितो | " |
| " | ८ | भगवा अनामदस्मी | २८ |
| " | ९ | भगवा पटुमो | " |
| " | १० | भगवा नारदो | २९ |
| " | ११ | भगवा पटुमुत्तरो | " |
| " | १२ | भगवा सुमेधो | " |
| " | १३ | भगवा सुजातो | ३० |
| " | १४ | भगवा पियदस्मी | " |
| " | १५ | भगवा अत्थदस्मी | " |

| अङ्कको | अनुअङ्कको | विसयो | पिट्ठको |
|--------|-----------|---------------------------------|---------|
| ३ | १६ | भगवा धम्मदस्सी | ३१ |
| " | १७ | भगवा सिद्धत्थो | " |
| " | १८ | भगवा तिस्सो | " |
| " | १९ | भगवा फुस्सो | ३२ |
| " | २० | भगवा विषस्सी | " |
| " | २१ | भगवा सिखी | " |
| " | २२ | भगवा वेस्सभू | ३३ |
| " | २३ | भगवा ककुसन्धो | " |
| " | २४ | भगवा कोणागमणो | " |
| " | २५ | भगवा कस्सपो | " |
| " | २६ | सब्बे बुद्धा | ३४ |
| " | २७ | बोधिसत्तानं आनिसंसा | " |
| " | २८ | पारमियो पूरेसि | ३५ |
| " | " | १. दानपारमी | " |
| " | " | २. सीलपारमी | " |
| " | " | ३. नेक्खम्मपारमी | " |
| " | " | ४. पञ्जापारमी | ३६ |
| " | " | ५. विरियपारमी | " |
| " | " | ६. खन्तिपारमी | " |
| " | " | ७. सच्चपारमी | " |
| " | " | ८. अधिट्ठानपारमी | " |
| " | " | ९. मेत्तापारमी | " |
| " | " | १०. उपेक्खापारमी | ३७ |
| ४ | २९ | अविट्ठरे निदानं | " |
| " | " | तीणि कोलाहलानि | " |
| " | " | १. कप्पकोलाहलं | " |
| " | " | २. बुद्धकोलाहलं | " |
| " | " | ३. चक्कवत्तिकोलाहलं | " |
| " | ३० | देवतायाचनं | ३८ |
| " | ३१ | पञ्चमहाविलोकनं विलोकेसि | " |
| " | " | १. कालो | " |
| " | " | २. दीपं | " |
| " | " | ३. देसो | " |
| " | " | ४. कुलं | ३९ |
| " | " | ५. जनेत्तिआयु | " |
| " | ३२ | पटिसन्धि गण्ह | " |
| " | ३३ | महामायादेवी सुपिनं अद्दस | " |
| " | ३४ | ब्राह्मणा आहंसु | ४० |
| " | ३५ | द्वतिसपुब्बनिमित्तानि पातुरहंसु | " |
| " | ३६ | बोधिसत्तमातुधम्मता | " |

| ग्रन्थको | अनुग्रन्थको | विसयो | पिटुङ्को |
|----------|-------------|-----------------------------------|----------|
| ४ | ३७ | लुम्बिनीवने | ४० |
| " | ३८ | तापसो कालदेवलो | ४२ |
| " | ३९ | लक्खणपटिग्गाहका अट्ट ब्राह्मणा | ४३ |
| " | ४० | पंचवगिया थेरा | " |
| " | ४१ | चत्तारि पुब्बनिमित्तानि | ४४ |
| " | ४२ | रञ्जो वप्पमङ्गलं अहोसि | " |
| " | ४३ | जातकानं सिप्पं दस्सेसि | ४५ |
| " | ४४ | चत्तारि पुब्बनिमित्तानि | " |
| " | " | १. जराजिण्णां | " |
| " | " | २. व्याधितं | " |
| " | " | ३. कालकतं | ४६ |
| " | " | ४. पब्बजितं | " |
| " | ४५ | बोधिसत्तस्स पच्छिमो अलङ्कारो | " |
| " | ४६ | राहुलो जातो | " |
| " | ४७ | किसागोतमिया उदानं | " |
| " | ४८ | नाटकस्थियो | ४७ |
| " | ४९ | महाभिनिक्वमनं | " |
| " | ५० | बोधिसत्तो पव्वजि | ४९ |
| " | ५१ | बोधिसत्तो राजगहं पाविसि | ५० |
| " | ५२ | आनारं च कालामं उट्ठकं च रामपुत्तं | " |
| " | ५३ | दुक्कङ्किरिया | " |
| " | ५४ | सुजाताय पायासदानं | ५१ |
| " | ५५ | बोधिसत्तस्स पाति पटिसोतं गच्छति | ५२ |
| " | ५६ | बोधिमण्डं आरुहं | " |
| " | ५७ | मारपरजयो | ५३ |
| " | ५८ | सम्बोधिया पत्ति | ५६ |
| ५ | ... | सन्तिके निदानं | ५७ |
| " | ५९ | जयपल्लङ्को वग्गपल्लङ्को | " |
| " | ६० | अनिमिमवेतियं | " |
| " | ६१ | रतनचङ्कमचेतियं | " |
| " | ६२ | रतनघरं | " |
| " | ६३ | येन अजपालनिग्रोधो | " |
| " | ६४ | मुचलिनन्दं, राजायतनं | ५८ |
| " | ६५ | तपस्सुभल्लिका | ५९ |
| " | ६६ | ब्रह्मा धम्मदेसनं आयाचि | " |
| " | ६६ | ब्रह्मा धम्मदेसनं आयाचि | " |
| " | ६७ | धम्मचक्कप्पवत्तनं | " |
| " | ६८ | चरथ भिक्खवे चारिकन्ति | ६० |
| " | ६९ | भगवा राजगहे | " |
| " | ७० | सारिपुत्तो च मोग्गल्लानो च | ६२ |

| अङ्कको | अनुअङ्कको | विसयो | पिट्ठङ्कको |
|--------|-----------|---------------------------------|------------|
| ५ | ७१ | भगवा कपिलवत्थुं अगमासि | ६२ |
| " | ७२ | कपिलवत्थुस्मिं पाटिहारियं अकासि | ६३ |
| " | ७३ | कपिलवत्थुं पिण्डाय पाविसि | ६४ |
| " | ७४ | राहुलमातुया सिरिगम्भं अगमासि | ६५ |
| " | ७५ | नन्दं पम्बाजेसि | " |
| " | ७६ | राहुलं पम्बाजेसि | " |
| " | ७७ | अनाथपिण्डको जेतवनारामं कारेसि | ६६ |

निदानकथा निद्धिता

१. एककनिपातो

१. पठमो पण्णासको

१. अपण्णकवग्गवण्णना

| अङ्कको | विसयो | पिट्ठङ्कको |
|--------|------------------|------------|
| १ | अपण्णकजातकं | ६८ |
| २ | वण्णपथजातकं | ७५ |
| ३ | सेरिवाणिजजातकं | ७८ |
| ४ | चुल्लसेट्ठिजातकं | ८० |
| ५ | तण्डुलनालिजातकं | ८६ |
| ६ | देवधम्मजातकं | ८८ |
| ७ | कट्टहारिजातकं | ९३ |
| ८ | गामनिजातकं | ९५ |
| ९ | मखादेवजातकं | ९६ |
| १० | मुखविहारिजातकं | ९८ |

२. सीलवग्गवण्णना

| | | |
|----|-------------------|-----|
| १ | लक्खणमिगजातकं | १०० |
| २ | निम्रोधमिगजातकं | १०२ |
| ३ | कण्डिनजातकं | १०८ |
| ४ | वातमिगजातकं | ११० |
| ५ | खरादियजातकं | ११२ |
| ६ | तिपल्लत्थमिगजातकं | ११३ |
| ७ | मालुतजातकं | ११६ |
| ८ | मतकभत्तजातकं | ११७ |
| ९ | आयाचितभत्तजातकं | ११९ |
| १० | नलपानजातकं | १२० |

३. कुरुङ्गवग्गवण्णना

| सङ्को | विसयो | पिट्ठङ्को |
|-------|-----------------|-----------|
| १ | कुरुङ्गमिगजातकं | १२२ |
| २ | कुक्कुरजातकं | १२४ |
| ३ | भोजाजानीयजातकं | १२७ |
| ४ | आजञ्जजातकं | १२६ |
| ५ | तित्थजातकं | १३० |
| ६ | महिलामुखजातकं | १३३ |
| ७ | अभिण्हजातकं | १३५ |
| ८ | नन्दिविसालजातकं | १३७ |
| ९ | कण्हजातकं | १३६ |
| १० | मुनिकजातकं | १४१ |

४. कुलावकवग्गवण्णना

| | | |
|----|----------------|-----|
| १ | कुलावकजातकं | १४२ |
| २ | नच्चजातकं | १४७ |
| ३ | सम्मोदमानजातकं | १४८ |
| ४ | मच्छजातकं | १५० |
| ५ | वट्टकजातकं | १५१ |
| ६ | सकुग्गजातकं | १५३ |
| ७ | तित्तिरजातकं | १५५ |
| ८ | बकजातकं | १५८ |
| ९ | नन्दजातकं | १६१ |
| १० | खदिरङ्गारजातकं | १६३ |

५. अत्थकामवग्गवण्णना

| | | |
|----|---------------|-----|
| १ | लोसकजातकं | १६८ |
| २ | कपोतजातकं | १७३ |
| ३ | वेलुकजातकं | १७५ |
| ४ | मकसजातकं | १७६ |
| ५ | रोहिणीजातकं | १७७ |
| ६ | आरामदूसकजातकं | १७८ |
| ७ | वाह्णिजातकं | १८० |
| ८ | वेदग्भजातकं | १८१ |
| ९ | नक्खत्तजातकं | १८४ |
| १० | दुम्मेधजातकं | १८६ |

२. मज्झिमो पण्णासको

६. आसिसवग्गवण्णना

| | | |
|---|----------------|-----|
| १ | महासीलवजातकं | १८८ |
| २ | चूलजनकजातकं | १९२ |
| ३ | पुण्णपातिजातकं | १९३ |

ग्रहको

वितयो

पिट्ठको

| | | |
|----|------------------|-----|
| ४ | फलजातकं | १६५ |
| ५ | पञ्चावधजातकं | १६७ |
| ६ | कञ्चनक्खन्धजातकं | १६६ |
| ७ | वानरिन्दजातकं | २०१ |
| ८ | तयोधम्मजातकं | २०३ |
| ९ | भेरिवादजातकं | २०५ |
| १० | सङ्खधमनजातकं | २०६ |

७. इत्थीवग्गवण्णना

| | | |
|----|------------------|-----|
| १ | असातमन्तजातकं | २०७ |
| २ | अण्डभूतजातकं | २१० |
| ३ | तक्कजातकं | २१४ |
| ४ | दुराजानजातकं | २१७ |
| ५ | अनभिरतिजातकं | २१६ |
| ६ | मुदुलक्खग्गजातकं | २२० |
| ७ | उच्छङ्गजातकं | २२३ |
| ८ | साकेतजातकं | २२५ |
| ९ | विसवन्तजातकं | २२६ |
| १० | कुहालजातकं | २२७ |

८. वरणवग्गवण्णना

| | | |
|----|---------------|-----|
| १ | वरगजातकं | २३० |
| २ | सीलवनागजातकं | २३२ |
| ३ | सच्चकिरजातकं | २३४ |
| ४ | हक्खधम्मजातकं | २३७ |
| ५ | मच्छजातकं | २३८ |
| ६ | असङ्कियजातकं | २४० |
| ७ | महासुपिनजातकं | २४२ |
| ८ | इल्लीसजातकं | २४६ |
| ९ | खरस्सरजातकं | २५५ |
| १० | भीमसेनजातकं | २५६ |

९. अपायिम्हवग्गवण्णना

| | | |
|----|-------------------|-----|
| १ | सुरापानजातकं | २५६ |
| २ | मित्तविन्दजातकं | २६१ |
| ३ | कालकण्णिजातकं | २६२ |
| ४ | अत्थस्सद्वारजातकं | २६४ |
| ५ | किम्पक्कजातकं | २६६ |
| ६ | सीलवीमंसनजातकं | २६७ |
| ७ | मङ्गलजातकं | २६६ |
| ८ | सारम्भजातकं | २७१ |
| ९ | कुहकजातकं | २७२ |
| १० | अकतञ्जुजातकं | २७४ |

१०. लित्तवग्गवण्णना

| अङ्कको | विसयो | पिट्ठङ्कको |
|--------|------------------|------------|
| १ | लित्तजातकं | २७६ |
| २ | महासारजातकं | २७७ |
| ३ | विस्सासभोजनजातकं | २८२ |
| ४ | लोमहंसजातकं | २८३ |
| ५ | महासुदस्सनजातकं | २८५ |
| ६ | तेलपत्तजातकं | २८७ |
| ७ | नामसिद्धिजातकं | २९२ |
| ८ | कूटवाणिजजातकं | २९४ |
| ९ | परोसहस्सजातकं | २९६ |
| १० | असातरूपजातकं | २९७ |

३. उपरिमो पण्णासको

११. परोसतवग्गवण्णना

| | | |
|----|--------------------------|-----|
| १ | परोसतजातकं | २९९ |
| २ | पण्णिकजातकं | ३०० |
| ३ | वेरिजातकं | ३०१ |
| ४ | मित्तिविन्दजातकं | ३०२ |
| ५ | दुब्बलकटुजातकं | ३०३ |
| ६ | उदञ्चनिजातकं | ३०४ |
| ७ | सालित्तजातकं | ३०५ |
| ८ | बाहियजातकं | ३०७ |
| ९ | कुण्डकपूवजातकं | ३०८ |
| १० | सम्बसंहारकपञ्चो निट्ठितो | ३१० |

१२. हंसीवग्गवण्णना

| | | |
|----|------------------------|-----|
| १ | गद्वभपञ्चो निट्ठितो | ३१० |
| २ | अमरादेवीपञ्चो निट्ठितो | ३१० |
| ३ | सिगालजातकं | ३११ |
| ४ | मितचिन्तीजातकं | ३१३ |
| ५ | अनुसासिकजातकं | ३१४ |
| ६ | दुब्बचजातकं | ३१५ |
| ७ | नित्तिरजातकं | ३१६ |
| ८ | वट्टकजातकं | ३१७ |
| ९ | अकालरावीजातकं | ३१९ |
| १० | वन्धनमोक्खजातकं | ३२० |

१३. कुसनालिधग्गवण्णना

| | | |
|---|--------------|-----|
| १ | कुसनालिजातकं | ३२३ |
| २ | दुम्भेधजातकं | ३२५ |
| ३ | नङ्गलीसजातकं | ३२७ |

अङ्गको

विसयो

पिट्ठङ्गको

| | | |
|----|----------------|-----|
| ४ | अम्बजातकं | ३२६ |
| ५ | कटाहजातकं | ३३० |
| ६ | असिलकवर्णजातकं | ३३२ |
| ७ | कलण्डुकजातकं | ३३४ |
| ८ | बिलारवतजातकं | ३३५ |
| ९ | अग्निकजातकं | ३३६ |
| १० | कोमियजातकं | ३३७ |

१४. असम्पदानवग्गवण्णना

| | | |
|----|----------------|-----|
| १ | असम्पदानजातकं | ३३६ |
| २ | पञ्चभीरुकजातकं | ३४१ |
| ३ | घनासनजातकं | ३४३ |
| ४ | भानसोधनजातकं | ३४४ |
| ५ | चन्दाभजातकं | ३४५ |
| ६ | सुवण्णहंसजातकं | ३४६ |
| ७ | वट्ठुजातकं | ३४८ |
| ८ | गोधजातकं | ३५० |
| ९ | उभतोभट्टजातकं | ३५१ |
| १० | काकजातकं | ३५२ |

१५. ककण्टकवग्गवण्णना

| | | |
|----|----------------|-----|
| १ | गोधजातकं | ३५४ |
| २ | सिगालजातकं | ३५५ |
| ३ | विरोचनजातकं | ३५६ |
| ४ | नङ्गुट्टुजातकं | ३५८ |
| ५ | राधजातकं | ३५९ |
| ६ | काकजातकं | ३६० |
| ७ | पुप्फरत्तजातकं | ३६२ |
| ८ | सिगालजातकं | ३६४ |
| ९ | एकपण्णजातकं | ३६६ |
| १० | मञ्जीवजातकं | ३६८ |

एककनिपातवण्णना निट्ठिता

जातकट्टकथा

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

जातकट्टकथा

१. पणामगाथा *

जातिकोटिसहस्सेहि पमाणरहितं हितं ।
लोकस्स लोकनाथेन कतं येन महेसिना ॥
तस्स पादे नमस्सित्वा कत्वा धम्मस्स चञ्जलि ।
संघञ्च पतिमानेत्वा सब्बसम्मानभाजनं ॥
नमस्सनादितो अस्स पुञ्ञस्स रतनत्तये ।
पवत्तस्सानुभावेन भेत्वा सञ्जे उपद्देवे ॥

* स्या०—वन्वित्वा सिरसा सेट्ठं बुद्धमप्पट्ठिपुग्गलं ।
ज्जेय्यसागरमुत्तिण्णं तिण्णसंसारसागरं ॥
तथेव परमं सन्तं गम्भीरं बुद्धसं अणुं ।
भवाभवकरं बुद्धं धम्मं सद्धम्मपूजितं ॥
तथेव पन संघञ्च असंगं संघमुत्तमं ।
उत्तमं वक्खिण्णेय्यानां सन्तिन्नियमनासवं ॥
कतन तस्स एतस्स पणामेन विसेसतो ।
धीरातिधीरधीरेहि आगमञ्जूहि विञ्जूहि ॥
अपदानट्ठकथं भन्ते कातब्बन्ति विसेसतो ।
पुनप्पुनाबरेनेव याचितोहं यसस्सिभि ॥
तस्माहं सापदानस्स अपदानस्स सेसतो ।
वीपिस्सं पिटकत्तये ॥
यथा पालिनयेनेव अत्थसंवण्णनं सुभं ।
केन कत्थ कदा चेत्तं भासितं धम्ममुत्तमं ॥
किमत्थं भासितं चेतमेत्तं वत्वा विधिं गतो ।
निदानकोसल्लत्थञ्च सुउग्गहणधारणा ॥
तस्मा तन्तं विधिं पत्वा पुब्बापरविसेसतं ।
पुराणसीहलभासाय पोरानट्ठकथाय च ॥
ठपितं तं न साधेति साधूनं इच्छित्तिच्छित्तं ।
तस्मा तमुपनिस्साय पोरानट्ठकथानयं ॥
विधज्जेत्वा विरुद्धत्थे विसेत्यम्पकासयं ।
विसेसवण्णनं सेट्ठं करिस्सामत्थवण्णनन्ति ॥

केन कत्थ कदा चेत्तं भासितं धम्ममुत्तमन्ति च करिस्सामत्थवण्णनन्ति च पटिञ्ञातत्ता ।

तं तं कारणमागम्म देसितानि जुतीमता ।
 अपण्णकादीनि पुरा जातकानि महेसिना ॥
 यानि येसु चिरं सत्था लोकनित्थरणत्थिको ।
 अनन्ते बोधिसम्भारे परिपाचेसि नायको ॥
 तानि सब्बानि एकज्झं आरोपेन्तेहि संगहं ।
 जातकं नाम संगीतं धम्मसंगाहकेहि यं ॥
 बुद्धवंसस्स एतस्स इच्छन्तेन चिरट्ठिति ।
 याचितो अभिगन्त्वान धरेन अत्थदस्सिना ॥
 असंसट्ठविहारेन सदा सद्धिविहारिना ।
 तथेव बुद्धमित्तेन सन्तचित्तेन विञ्जुना ॥
 महिसासकवंसम्हि सम्भूतेन नयञ्जुना ।
 बुद्धदेवेन च तथा भिक्खुना सुद्धबुद्धिना ॥
 महापुरिसचरियानं आनुभावं अचिन्तियं ।
 तस्स विज्जोतयन्तस्स जातकस्सत्थवण्णनं ॥
 महाविहारवासीनं वाचनामग्गनिस्सितं ।
 भासिस्सं भासतो तम्मो साधु गण्हन्तु साधवोति ॥ [1]

२. तीणि निदानानि

सा पनायं जातकस्स^१ अत्थवण्णना दूरेनिदानं अविदूरेनिदानं सन्तिकेनिदानन्ति इमानि तीणि निदानानि दस्सेत्वा वण्णयमाना येनं सुणन्ति तेहि समुदागमतो^२ पट्ठाय विञ्जातत्ता यस्मा सुट्ठु विञ्जाता नाम ह्योति तस्मा तं तीणि निदानानि दस्सेत्वा वण्णयिस्साम ।

तत्थ आदितो ताव तेसं निदानानं परिच्छदो वेदितब्बो—(१) दीपंकरपादमूलस्मि हि कताभिनी-
 हारस्स महासत्तस्स याव वेस्सन्तरत्तभावा चवित्वा तुसितपुरे निव्वत्ति ताव पवत्तो कथामग्गो दूरेनिदानं नाम,
 (२) तुसितभवनतो पन चवित्वा याव बोधिमण्डे सब्बञ्जुतप्पत्ति ताव पवत्तो कथामग्गो अविदूरेनिदानं नाम,
 (३) सन्तिकेनिदानं पन तेसु तेसु ठानेसु विहरतो तस्मिं तस्मिं येव ठाने लब्भतीति । तत्रिदं दूरेनिदानं नाम :—

३. दूरेनिदानं

§ १. सुमेधकथा

इतो किर कप्पसत्तसहस्साधिकानं चतुन्नं असंखेय्यानं मत्थके अमरवती नाम नगरं अहोसि । तत्थ सुमेधो नाम ब्राह्मणो पटिवसति, उभतो सुजातो मातितो च पितितो च, संसुद्धगह्णिको याव सत्तमाकुलपरिवट्टा, अक्खित्तो अनुपक्कुट्टो जातिवादेन, अभिरूपो दस्सनीयो पासादिको परमाय वण्णपोक्खरताय समन्नागतो । सो अज्जं कम्मं अकत्वा ब्राह्मणसिप्पमेव उग्गाण्ह । तस्स दहरकाले येव मातापितरो कालमकंसु । अथस्स रासिव-
 ड्ढको अमच्चो आयपोत्थकं आहरित्वा सुवण्णरजतमणिमुत्ताहि भरिते गब्भे विवरित्वा एत्तकं ते कुमार ! मातुसन्तकं, एत्तकं पितुसन्तकं, एत्तकं अय्यकपय्यकानन्ति याव सत्तमा कुलपरिवट्टा धनं आचिक्खित्वा एतं पटिपज्जाहीति^३ आह । सुमेधपण्डितो चिन्तेसि—इमं धनं संहरित्वा मय्हं पितुपितामहादयो परलोकं गच्छन्ता एक्कं क्हापणम्मि गहेत्वा न गता, मया पन गहेत्वा गमनकारणं कातुं वट्ठतीति । सो रञ्जो आरोचेत्वा नगरे भेरि

चरापेत्वा महाजनस्स दानं दत्त्वा तापसपब्बज्जं पब्बजि । इमस्स पत्तत्थस्स आवीभावत्थं इमस्सि ठाने सुमेधकथा कथेतब्बा । सा पनेसा किञ्चापि बुद्धवंसे निरन्तरं आगता येव, गाथाबन्धनेन न आगतत्ता न सुट्ठु पाकटा तस्मा तं अन्तरन्तरा गाथाबन्धदीपकेहि बचनेहि सद्धि कथेस्साम ।

अमरवती नगरं

कप्पसत्तसहस्साधिकानं हि चतुन्न असंखेय्यानं मत्थके दसहि सद्देहि अविवित्तं अमरवतीति च अमरन्ति च लद्धनामं नगरं अहोसि यं सन्धाय बुद्धवंसे वुत्तं :—[२]

“कप्पे च सत्तसहस्से च चतुरो च असंखिये ।
अमरं नाम नगरं दस्सनेय्यं मनोरमं ।
दसहि सद्देहि अविवित्तं अन्नपानसमायुत” ॥ न्ति ।

तत्थ “दसहि सद्देहि अविवित्तं” न्ति हत्थिसद्देन अस्ससद्देन रथसद्देन भेरिसद्देन मुत्तिंगसद्देन वीणासद्देन गीतसद्देन^१ संखसद्देन तालसद्देन ‘अस्नाथ पिवथा खादथा’ ति दसमेन सद्देनाति, इमेहि दसहि सद्देहि अविवित्तं अहोसि । तेसं पन सद्दानं एकदेसमेव गहेत्वा :—[२]

“हत्थिसद्दं अस्ससद्दं भेरिसंखरथानि च ।
खादथ पिवथा चेव अन्नपानेन घोसित” ॥ न्ति ।

बुद्धवंसे इमं गार्थं^२ वत्त्वा:—

“नगरं सब्बंगसम्पन्नं सब्बकाममुपागतं^३ ।
सत्तरतनसम्पन्नं नानाजनसमाकुलं ॥
समिद्धं देवनगरं व आवासं पुञ्जकम्मिनं ।
नगरे अमरवतिया सुमेधो नाम ब्राह्मणो ॥
अनेककोटिसन्निचयो पहतधनधञ्जवा ।
अज्झायको मन्तधरो तिण्णं वेदानपारगु ॥
लक्खणे इतिहासे च सधम्मो पारमि गतो” ति वुत्तं ।

सुमेधपण्डितस्स चिन्तनं

अथेकदिवसं सो सुमेधपण्डितो उपरिपासादवरतले रहोगतो हुत्वा पल्लङ्कं आभुजित्वा निसिन्नो चिन्तेसि:—पुनब्भवे पण्डित ! पटिसन्धिगहणं नाम दुक्खं तथा निब्बत्तनिब्बत्तट्ठाने सरीरभेदनं, अहं च जातिधम्मो जराधम्मो व्याधिधम्मो मरणधम्मो । एवंभूतेन मया अजाति अजरं अज्याधि अदुक्खमसुखं सीतलं अमत्तम-हानिब्बाणं परियेसितुं वट्टति । अवस्सं भवतो मुञ्चित्वा निब्बाणगामिना एकेन मग्गेन भवितव्वन्ति । तेन वुत्तं:—

“रहोगतो निसीदित्वा एवं चिन्तेमहं तदा ।
दुक्खो पुनब्भवो नाम सरीरस्स च भेदनं ॥
जातिधम्मो जराधम्मो व्याधिधम्मो चहं तदा ।
अजरं अमरं खेमं परियेसिस्सामि निब्बुत्ति ॥
यन्नूनिमं पूतिकायं नानाकुणपपूरितं ।
छट्ठयित्वान गच्छेय्यं अनपेखो अतत्थिको ॥ [३]
अत्थि हेहिति यो^४ मग्गे न सो सक्का न हेतुये ।
परियेसिस्सामि तं मग्गं भवतो परिमुत्तिया” ति ॥

१ रो०—सम्मसद्देन । २ रो०—वुत्तगार्थं । ३ रो०—सब्बकम्म । ४ रो०—सुो ।

ततो उत्तरिम्पि एवं चिन्तेसिः— यथा हि लोके दुःखस्स पटिपक्खभूतं सुखं नाम अत्थि, एव भव सति तप्पटिपक्खेन विभवेनापि भवितव्वं । यथा च उण्हे सति तस्स वूपसमभूतं सीतम्पि अत्थि; एवं रागादीनं अग्गीनं वूपसमन निब्बाणेनापि भवितव्वं । यथा च पापकस्स लामकस्स धम्मस्स पटिपक्खभूतो कल्याणो अनवज्ज-धम्मोपि अत्थियेव, एवमेव पापिकाय जातिया सति सब्बजातिक्खेपनतो अजातिसंखातन निब्बाणेनापि भवितव्वमेवाति । तेन वुत्तंः—[३]

“यथापि दुक्खे विज्जन्ते सुखं नामपि विज्जति ।
एवं भवे विज्जमाने विभवोपि इच्छितव्वको ॥
यथापि उण्हे विज्जन्ते अपरं विज्जति सीतलं ।
एवं तिविधग्गी विज्जन्ते निब्बाणं इच्छितव्वकं ॥
यथापि पापे विज्जन्ते कल्याणमपि विज्जति ।
एवमेव जातिविज्जन्ते अजातिपि इच्छितव्वकाति^१ ॥

अपरम्पि चिन्तेसिः— यथा नाम गूथरासिम्हि निमुग्गेन पुरिसेन दूरतोव पञ्चवण्णपदुमसञ्छल्ल महातळाकं दिस्वा कतरेन नुखो मग्गेन एत्थ गन्तव्वान्ति तं तळाकं गवेसितुं युत्तं । यं तस्स अगवेसनं न सो तळाकस्स दोसो । एवं किलेसमलधोवनअमतमहानिब्बाणतळाके विज्जन्ते तस्स अगवेसनं न अमतमहानिब्बाणमहातळाकस्स दोसो । यथा च चोरेहि सम्परिवारितो पुरिसो पळायनमग्गे विज्जमानेपि सचे न पलायति न सो मग्गस्स दोसो पुरिसस्सेव दोसो, एवमेव किलेसेहि परिवारेत्वा गहितस्स पुरिसस्स विज्जमाने येव निब्बाणगामिम्हि सिवे मग्गे विज्जमाने मग्गस्स अगवेसनं नाम न मग्गस्स दोसो पुगलस्सेव दोसो । यथा च व्याधिपीळितो पुरिसो विज्जमाने व्याधितिकिच्छके वेज्जे सचे तं वेज्जं गवेसित्वा व्याधिं न तिकिच्छापेति न सो वेज्जस्स दोसो, एवमेव यो किलेस-व्याधिपीळितो किलेसवूपसममग्गकोविदं विज्जमानमेव आचरियं न गवेसति तस्सेव दोसो न किलेसविनासकस्स आचरियस्साति । तेन वुत्तंः—

यथा गूथगतो पुरिसो तळाकं दिस्वान पूरितं ।
न गवेसति तं तळाकं न दोसो तळाकस्स सो ॥
एवं किलेसमलधोवे विज्जन्ते अमततन्तळे ।
न गवेसति तं तळाकं न दोसो अमततन्तळे ॥ [४]
यथा अरीहि परिरुद्धो विज्जन्ते गमने पथे ।
न पलायति सो पुरिसो न दोसो अञ्जसस्स सो ॥
एवं किलेसपरिरुद्धो विज्जमाने सिवे पथे ।
न गवेसति तं मग्गं न दोसो सिवमञ्जसे ॥
यथासि व्याधितो पुरिसो विज्जमाने तिकिच्छके ।
न तिकिच्छापेति तं व्याधिं न सो दोसो तिकिच्छके ॥
एवं किलेसव्याधीहि दुक्खितो परिपीळितो ।
न गवेसति तं आचरियं न सो दोसो विनायके ति ॥

अपरम्पि चिन्तेसिः—यथा मण्डनजातिक्को पुरिसो कण्ठे[४]आसत्तं कुणपं छड्ढेत्वा सुखं गच्छति, एव मयापि इमं पूतिकायं छड्ढेत्वा अनपेखेन निब्बाणनगरं पविसितव्वं । यथा च नरनारियो उक्कारभूमियं^२ उच्चार-पस्सारं कत्वा न तं उच्छग्गेन वा आदाय दसन्तेन वा वेटेत्वा गच्छन्ति जिगुच्छमाना पन अनपेखाव छड्ढेत्वा गच्छन्ति, एवं मयापि इमं पूतिकायं अनपेखेन छड्ढेत्वा अमतं निब्बाणनगरं पविसितुं वट्टति । यथा च नाविका नाम जज्जरं नावं अनपेखा छड्ढेत्वा गच्छन्ति, एवं अहम्पि इमं नवहि वणमुखेहि पग्घरन्तं कायं छड्ढेत्वा अनपेखो निब्बाणनगरं पविसिस्सामि । यथा च पुरिसो नानारतनानि आदाय चोरेहि सद्धिं मग्गं गच्छन्तो अत्तनो

रतननासभयेन ते छड्डेत्वा खेमं मगं गण्हाति, एवं अयम्पि करजकायो रतनविलोपकचोरसदिसो सचाहं एत्थ तण्हं करिस्सामि अरियमग्गकुसलधम्मरतनं मे नस्सिस्सति तस्मा मया इमं चोरसदिसं कायं छड्डेत्वा निब्बाण-नगरं पविसितुं वट्ठती ति । तेन वुत्तः—

यथापि कुणपं पुरिसो कण्ठे बद्धं जिगुञ्छिय ।
मोचयित्वान गच्छेय्य सुखी सेरी सयं वसी ॥
तथेविमं पूतिकायं नानाकुणपसञ्चयं ।
छड्डयित्वान गच्छेय्यं अनपेखो अनत्थिको ॥
यथा उच्चारठानम्हि करीसं नरनारियो ।
छड्डयित्वान गच्छन्ति अनपेखा अनत्थिका ।
एवमेवाहमिमं कायं नानाकुणपपूरितं ।
छड्डयित्वान गच्छिस्सं बच्चं कत्वा यथा कुटिं ॥
यथापि जज्जरं नावं पलुग्गं उदगाहिं ॥
सामी छड्डेत्वा गच्छन्ति अनपेखा अनत्थिका ॥ [5]
एवमेव इमं कायं नवच्छिद्दं धुवस्सवं ।
छड्डयित्वान गच्छिस्स जिण्णं नावं व सामिका ॥
यथापि पुरिसो चोरेहि गच्छन्तो भण्डमादिय ।
भण्डच्छेदभयं दिस्वा छड्डयित्वान गच्छति ॥
एवमेव अयं कायो महाचोरसमो विय ।
पहायिमं गमिस्सामि कुसलच्छेदना भया” ति ॥

सुमेधपण्डितस्स पब्बज्जा

एवं सुमेधपण्डितो नानाविधाहि उपमाहि इमं नेक्खम्मपसंहितं अत्थं चिन्तेत्वा, सकनिवेसन अपरिमितं भोगक्खन्धं हेट्ठावुत्तनयेन कपणद्धिकादीनं विस्सज्जेत्वा, महादानं दत्वा, [५] वत्थुकामे च किलेसकामे च पहाय, अमरनगरतो निक्खमित्वा, एककोव हिमवन्ते धम्मकं नाम पब्बतं निस्साय अस्समं कत्वा, पण्णसालं च चंकमं च मापेत्वा, पञ्चहि नीवरणदोसेहि विवज्जितं “एवं समाहिते चित्ते” ति आदिना नयेन वुत्तेहि अट्ठहि कारण-गणेहि समुपेतं अभिञ्जासंखातं बलं आहरितुं तस्मिं अस्समपदे नवदोससमन्नागतं साटकं पजहित्वा, द्वादसगुण-सगन्नागतं वाकचीरं निवासेत्वा इसिपब्बज्जं पब्बजि । एवं पब्बजितो अट्ठदोससमाकिण्णं तं पण्णसालं पहाय, समन्नागतं रुक्खमूलं उपगन्त्वा, सब्बं धञ्जविकर्ति पहाय, पवत्तफलभोजनो हुत्वा निसज्जट्ठानचंकमवसेनेव पधानं पदहन्तो सत्ताहम्भन्तरे येव अट्ठन्नं समापत्तीनं पञ्चन्नं च अभिञ्जानं लाभी अहोसि । एवं तं यथापत्थितं अभिञ्जाबलं पापुणि । तेन वुत्तः—

“एवाहं चिन्तयित्वान नेककोटिसतं धनं ।
नाथानाथानं दत्वान हिमवन्तमुपागमिं ॥
हिमवन्तस्स अविदूरे धम्मको नाम पब्बतो ।
अस्समो सुकतो मय्हं पण्णसाला सुमापिता ॥
चंकमनं तत्थ मापेसि पञ्चदोसविवज्जित ।
अट्ठगुणसमुपेतं अभिञ्जाबलमाहरिं ॥
साटकं पजहि तत्थ नवदोसमुपागतं ।
वाकचीरं निवासेसि द्वादसगुणमुपागतं ॥
अट्ठदोससमाकिण्णं पजहि पण्णसालकं ।
उपागमिं रुक्खमूलं गुण दसहुपागतं ॥”

वापितं रोपितं धञ्जं पर्जहिं निरवसेसतो ।
 अनेकगुणसम्पन्नं पवत्तफलमादियि ॥ [६]
 तत्थ पधानं पर्दहिं निसज्जट्ठानचंकमे ।
 अब्भन्तरमिह सत्ताहे अभिञ्जाबलपापुणि" न्ति ॥

इमाय पन पालिया सुमेधपण्डितेन अस्समपण्णसालचंकमा सहत्था मापिता विय वुत्ता । अयं पनत्थ अत्थो । महासत्तं हिमवन्तं अज्झोगहेत्वा अज्ज धम्मकपब्बतं पविसिस्सामीति निक्खन्तं दिस्वा सक्को देवानमिन्दो विस्सकम्मं^१ देवपुत्तं आमन्तेत्वा गच्छ तात ! अयं सुमेधपण्डितो पब्बजिस्सामीति निक्खन्तो, एतस्स वसनट्ठानं मापेहीति । सो तस्स वचनं सम्पटिच्छित्वा रमणीयं अस्समं सुगुत्तं पण्णसालं [६] मनोरमं चंकमं च मापेसि । भगवा पन तदा अत्तो पुञ्जानुभावेन निष्कस्रं तं अस्समपदं सन्धाय सारिपुत्त ! तस्मिं धम्मकपब्बतेः—

“अस्समो सुकतो मय्हं पण्णसाला सुमापिता ।

चंकमं तत्थ मापेसि पञ्चदोसविवज्जित” ॥ न्ति आह ।

तत्थ “सुकतो मय्हं”न्ति सुकतो मया—“पण्णसाला सुमापिता” ति पण्णच्छदनसालापि मे सुमापिता अहोसि । “पञ्चदोस विवज्जित” न्ति पञ्चिमे चंकमगदोसा नाम— (१) थद्धविसमता, (२) अन्तो रुक्खता, (३) गहणच्छन्नता, (४) अतिसम्बाधता, (५) अतिविसालताति ।

थद्धविसमभूमिभागस्मिं हि चंकमे चंकमन्तस्स पादा रुजन्ति, फोटा उट्ठहन्ति, चित्तं एकगत्तं न लभति, कम्मट्ठानं विपज्जति । मुदुसमतले पन फामुविहारं आगम्म कम्मट्ठानं सम्पज्जति । तस्मा थद्धविसमभूमिभागता एको दोसोति वेदिदव्वो । चंकमस्स अन्तो वा मज्जे वा कोटियं वा रुक्खे सति पमादमागम्म चंकमन्तस्स नलाटं वा सीमं वा पटिहज्जातीति अन्तरुक्खता दुतियो दोसो । तिणलतादिगहणच्छन्ने चंकमे चंकमन्ते अन्धकारवेलायं उरगादिके पाणे अक्कमित्वा वा मारेति, तेहि वा दट्ठो दुक्खं आपज्जतीति गहणच्छन्नता ततियो दोसो । अतिसम्बाधे चंकमे आयामतो रतनिके वा अड्ढरतनिके वा चंकमन्तस्स परिच्छेदे पक्खलित्वा नखापि अंगुलियोपि भिज्जन्तीति अतिसम्बाधता चतुत्थो दोसो ।

अतिविसाले चंकमे चंकमन्तस्स चित्तं विधावति, एकगत्तं न लभतीति अतिविसालता पञ्चमो दोसो । पुथुलतो पन दियड्ढरतनं द्वीसु पस्सेसु रतनमत्तं अनुचंकमणं दीघतो सट्ठिहत्थं मुदुतलं समविप्पकिण्णवाळुकं चंकमणं वट्ठि । चेतियगिरिमिह दीपप्पसादकमहिन्दत्थेरस्स चंकमणं तादिसं अहोसि ।

तेनाह “चंकमं तत्थ मापेसि पञ्चदोसविवज्जित” न्ति । “अट्ठगुणसम्पूत” न्ति अट्ठहिं समणसुखेहि उपेतं । अट्ठिमानि समणसुखानि नाम (१) धनधञ्जापरिगहाभावो, (२) अनवज्जपिण्डपातिपरियेसनभावो, (३) निब्बुतपिण्डपातभुञ्जनभावो, (४) रट्ठं पीळेत्वा धनसारं वा सीसकहापणादीनि वा गणहन्तेसु राजकुलेसु रट्ठपीळनकिलेसाभावो, (५) उपकरणेसु निच्छन्दरागभावो, (६) चोरविलोपे निम्भयभावो, (७) राजराजमहामत्तेहि असंसट्ठभावो, (८) चतुसु दिसासु अप्पटिहत्तभावोति । इदं [७] वुत्तं होति— यथा तस्मिं अस्समे वसन्तेन सक्का होन्ति इमानि अट्ठ समणसुखानि विन्दितुं एवं अट्ठ गुणसमपेत्तं तं अस्समं मापेसिन्ति ।

“अभिञ्जा बलमाहरि” न्ति [७] पच्छा तस्मिं अस्समे वसन्तो कसिणपरिकम्मं कत्वा अभिञ्जानं च समापतीनं च उप्पादनत्थाय अनिच्चन्तो दुक्खतो विपस्सनं आरभित्वा थामप्पत्तं विपस्सनाबलं आहरिं । यथा तस्मिं वसन्तो तं बलं आहरितुं सक्कोमि एवं तं अस्समं तस्स अभिञ्जात्थाय विपस्सनाबलस्स अनुच्छविकं कत्वा मापेसिन्ति अत्थो ।

“साटकं पर्जहिं तत्थ नवदोसमुपागत” न्ति एत्थायं आनुपुब्बकथा — तदा किर कुटिलेणचंकमादि पतिमण्डितं पुष्पफगफूलपगरुक्खसञ्छन्नं रमणीयं मधुरसलिलासयं अपगतबाळमिर्गाभसनकसकुणं पविवेकक्खमं अस्समं मापेत्वा अलंकृतचंकमस्स उभोसु अन्तेसु आलम्बनफलकं संविधाय निसीदनत्थाय चंकमवेमज्जे समतलं मुगवण्णसिलं मापेत्वा अन्तोपण्णसालायं जटामण लवाकचीरं तिदण्डकुण्डिकादिके तापसपरिक्खारे मण्डपे

पानीयकुटपानीयसंखपानीयसारावानि अग्निसालायां अंगारकपल्लदारुआदीनीति एवं यं यं पब्बजितानं उपका-
राय संवत्तति तं सब्बं मापेत्वा पण्णसालाभित्तिं “ये केचि पब्बजितुकामा इमे परिवेत्तारे गहेत्वा प बजन्तु”
ति अक्खरानि छिन्दित्वा देवलोकमेव गते विस्सकम्मे देवपुत्ते सुमेधपण्डितो हिमवन्तपादे गिरिकन्दरानुसारेण
अत्तनो निवासानुरूपं फासुकट्ठानं ओलोकन्तो नदीनिवत्तने विस्सकम्मनिम्मितं सक्कदत्तियं रमणीयं अस्समं
दिस्वा चंकमणकोटिं गन्त्वा पदवळ्ळज्जं अपस्सन्तो ध्रुवं पब्बजिता धुरगामे भिक्खं परिवेत्तित्वा किलन्तरूपा
आगन्त्वा पण्णसालं पविसित्वा निसिन्ना भविस्सन्तीति चिन्तेत्वा थोकं आगमेत्वा अतिविय चिरायन्ति जानि-
स्सामीति पण्णसालाकुटिद्वारं विवरित्वाअन्तो पविसित्वा इतोचितो च ओलोकन्तो महाभित्तिं अक्खरानि
वाचेत्वा मय्हं कप्पियपरिक्खारा एते इमे गहेत्वा पब्बजिस्सामीति अत्तनो निवत्थपारुत्तं साटकयुगं पजहि ।

तेनाह “साटकं पजहि तत्था” ति । एवं पविट्ठो अहं सारिपुत्त ! तस्सं पण्णसालायां साटकं पजहि ।
“नव दोसमुपागतं” न्ति साटकं पजहन्तो नव दोसे दिस्वा पजहिन्ति दीपेति ।

तापसपब्बज्जं पब्बजितानं हि साटकस्मिं नव दोसा उपट्ठहन्ति । (१) महग्घभावो एको दोसो
(२) परपटिबद्धताय उपपज्जनभावो एको (३) परिभोगेन लहुं किलिस्सनभावो एको (४) किलिट्ठे च
धोवितब्बो च रज्जितब्बो च होति । परिभोगेन जीरणभावो एको । (५) जिराणस्स हि तुन्नं वा अगलदानं
वा कातब्बं होति पुन परिवेत्तनाय दुरभिसम्भबभावो एको (६) तापसपद्बज्जाय असारूपभावो एको ।
(७) पच्चत्थिकानं साधारणभावो एको । यथा हि नं पच्चत्थिका न गण्हन्ति तथा गोपेतब्बं होति ।
(८) परिभुज्जन्तस्स विभूसनट्ठानभावो एको । (९) गहेत्वा चरन्तस्स [८] खन्धभारमहिच्छभावो एकोति ।

“वाकचीरं निवासेसि” न्ति तदाहं सारिपुत्त ! इमे नव दोसे दिस्वा साटकं पहाय वाकचीरं निवासेसि ।
मुज्जतिणं [८] हीरहीरं कत्वा गन्थेत्वा कलवाकचीरनिवासनपारुपण्णत्थाय आदियिन्ति अत्थो । “द्वादसगुण-
मुपागतन्ति द्वादसहि आनिससेहि समन्नागतं ।

वाकचीरस्मिं हि द्वादसानिसंसा— (१) अप्पग्धं सुन्दरं कप्पियन्ति अयं ताव एको आनिसंसो । (२) सह-
त्था कातुं सक्काति अयं दुतियो । (३) परिभोगेन सनिकं किलिस्सति । धोवियमानेपि पपञ्चो नत्थीति अयं
ततियो । (४) परिभोगेन जिण्णोपि सिब्बितब्बाभावो चतुत्थो । (५) पुन परिवेत्तन्तस्स सुखेन करणभावो
पञ्चमो । (६) तापसपद्बज्जाय सारूपभावो छट्ठो । (७) पच्चत्थिकानं निरुपभोगभावो सत्तमो । (८) परि-
भुज्जन्तस्स विभूसनट्ठानाभावो अट्ठमो । (९) धारणसल्लहुकभावो नवमो । (१०) चीवरपच्चये अप्पिच्छ-
भावो दसमो । (११) वाकुप्पत्तिया धम्मिकअनवज्जभावो एकादसमो । (१२) वाकचीरे नट्ठेपि अनपेक्खभावो
द्वादसमोति ।

“अट्ठदोससमाकिण्णं पजहि पण्णसालकं” न्ति कथं पजहि ? सो किर वरसाटकयुगं ओमुञ्चन्तो
चीवरवंसे लग्गितं अनोजपुप्फदामसदिसं रत्तं वाकचीरं गहेत्वा, निवासेत्वा तस्सूपरि अपरं सुवण्णवण्णं
वाकचीरं परिदहित्वा, पुग्गागपुप्फसन्थरसदिसं सखुरं अजिनचम्मं एकंसं कत्वा, जटामण्डलं पटिमुञ्चित्वा
चूळाय सद्धिं निच्चलभावकरत्थं सारसूचिं पवेसेत्वा, मुत्ताजालसदिसाय सिक्काय पवालवण्णकुण्डिकं ओदहित्वा,
तीसु ठानेसु वंक्कं काजं आदाय एकस्सा काजकोटिया कुण्डिकं एकस्सा अंकुरार्पिच्छं तिदण्डकादीनि ओलम्बेत्वा,
खारिभारं अंसे कत्वा, दक्खिणेन हत्थेन कत्तरदण्डं गहेत्वा, पण्णसालतो निक्खमित्वा, सट्ठिहत्थमहाचंकमं अपरं परं
चंकमन्तो अत्तनो वेसं ओलोकत्वा, मय्हं मनोरथो मत्थकं पत्तो, सोभति वत मे पब्बज्जा, बुद्धादीहि सब्बेहि धीरपु-
रिसेहि वणिता थोमिता अयं पब्बज्जा नाम, पहीणं मे गिहीबन्धनं, निक्खन्तोस्मि नेक्खम्मं, लद्धो मे उत्तमपद्ब-
ज्जा, करिस्सामि समणधम्मं, लभिस्सामि मग्गफलसुखं न्ति उस्साहजातो खारिकाजं ओतारेत्वा, चंकमभ्रेमज्जे
मुग्गवण्णसिलापट्ठे सुवण्णपटिमा विय निसिन्नो दिवसभागं वीतिनामेत्वा, सायण्हमयं पण्णसालं पविसित्वा,
विदळमञ्चकपस्से कट्ठत्थरिकाय निपन्नो सरीरं उतुं गगगपेत्वा नल्लपञ्चये पत्तन्तिन्ता अत्तनो आगग्गं
आवज्जेसि—

अहं घरावासं आदीनवं दिस्वा अमितभोगं अनन्तं यसं पहाय अरञ्जं पविसित्वा नेक्खम्मगवेसको हुत्वा पब्बजितो । इतोदानि पट्ठाय पमादचारं चरितुं न वट्ठति । पविवेकं हि पहाय [९] विचरन्तं मिच्छावितक्क-मक्खिका खादन्ति । इदानीं मया विवेकमनुब्रूहेतुं वट्ठति । अहं हि घरावासं पळिबोधतो दिस्वा निक्खन्तो । अयं च मनापा पण्णसाला बेलुवपकवण्णा परिभण्डकता भूमि । रजतवण्णा सेतभित्तियो । कपोतपादवण्णं पण्णच्छदनं । विचित्तत्थरकवण्णो बिदळमञ्चको । निवासफामुक्कं वसनट्ठानं । न एत्तो अतिरेकतरा विय मे गेहसम्पदा पञ्जायति । इति पण्णसालाय दोसे विचिन्तो अट्ठ दोसे पस्सि ।

पण्णसालापरिभोगस्मिं हि अट्ठ आदीनवा—(१) महासमारम्भेन^१ दब्बसम्भारे समोधानेत्वा करण-परियेसनभावो एको आदीनवो । (२) तिणपण्णमत्तिकामु पतितासु [९] तासं पुनप्युनं ठपेतब्बताय निबद्धजग्गन-भावो दुतियो । (३) सेनासनं नाम महल्लकस्स पापुणाति अवेलाय वुट्ठापियमानस्स चित्तेकगता न होतीति उट्ठापनियभावो ततियो । (४) सीतुप्पट्टिघातेन कायस्स सुखुमालकरणभावो चतुत्थो । (५) गेहं पविट्ठेन यं किञ्चि पापं सक्का कातुन्ति गरहपटिच्छादनभावो पञ्चमो । (६) मय्हन्ति परिग्गहकरणभावो छट्ठो । (७) गेहस्स अत्थिभावो नाम सदुतियकवासोति सत्तमो । (८) उक्कामङ्कुणघरगोळिकादीनं साधारणताय बहुसाधारणभावो अट्ठमो इति ।

इमे अट्ठ आदीनवे दिस्वा महासत्तो पण्णसालं पजहि । तेनाहः—“अट्ठदोससमाकिण्णं पजहिं पण्ण-सालक”न्ति । “उपागमिं रुक्खमूलं गुणे दसहुपागत”न्ति छन्नं पटिक्खपित्वा दसहि गुणेहि उपेतं रुक्खमूलं उपग-तोस्मीति वदति । तत्रिमे दस गुणा—(१) अप्पसमारम्भता एको गुणो, (२) उपगमनमत्तकमेव हि तत्थ होतीति । अप्पजग्गनता दुतियो, (३) तं हि सम्मट्ठम्पि असम्मट्ठम्पि परिभोगफामुक्कं होति येव अनुट्ठापनियभावो ततियो, (४) गरहं न पटिच्छादेति तत्थ हि पापं करोन्तो लज्जतीति गरहायापटिच्छन्नभावो चतुत्थो, (५) अब्भोकासवासो विय कायं न सत्थम्भेति कायस्स असत्थम्भनभावो पञ्चमो, (६) परिग्गहकरणाभावो छट्ठो, (७) गहालय-पटिक्खेपो सत्तमो, (८) बहुसाधारणगेहे विय पटिजग्गिस्सामि नं निक्खमथाति नीहरणकाभावो अट्ठमो, (९) वसन्तस्स सप्पीतिकभावो नवमो, (१०) रुक्खमूलसेनासनस्स गतगतट्ठाने सुलभताय अनपेक्खभावो दसमोति । इमे दसगुणे दिस्वा रुक्खमूलं उपगतोस्मीति वदति ।

इमानि एत्तकानि कारणानि सल्लक्खेत्वा महासत्तो पुनदिवसे भिक्खाय पाविसि । अथस्स सम्पत्तगामे मनुस्सा महन्तेन उस्साहेन भिक्खं अदंसु । सो भत्तकिच्चं निट्ठयेत्वा अस्समं आगम्म निसीदित्वा चिन्तेसि—“नाहं आहारं न लभामीति पब्बजितो, सिनिद्धाहारो नामेस मानमदपुरिसमदे वड्ढेति, आहारमूलकस्स च दुक्खस्स अन्तो नत्थि । [१०] यन्नूनाहं वापितरोपितधञ्जनिब्बतं आहारं पजहिंवा पवत्तफलभोजनो भवेय्यन्ति ।” सो ततो पट्ठाय तथा कत्वा घटेन्तो वायमन्तो सत्ताहभन्तरेयेव अट्ठ समापत्तियो पञ्च च अभिञ्जा निब्बत्तेसि । तेन वुत्तः—

“वापितं रोपितं धञ्जं पजहिं निरवसेसतो ।

अनेकगुणसम्पन्नं पवत्तफलमार्दियं ॥

तत्थप्पधानं पदहिं निसज्जट्ठानचङ्कमे ।

अब्भन्तरमिह सत्ताहे अभिञ्जाबलपापुणि”न्ति ॥

दीपङ्कुरभगवतो पादमूले बुद्धभावाय अभिनीहरो

एवं अभिञ्जाबलं पत्वा सुमेधतापसे समापत्तिमुखेन वीतिनामेन्ते दीपङ्कुरो नाम सत्था लोके उदपादी । तस्स पटिसन्धिजातिबोधिधम्मचक्कप्पवत्तनेसु सकलापि दससहस्सी लोकधातु सङ्कम्पि [10] सम्पकम्पि सम्पवेधि महाविरवं विरवि । द्वत्तिसपुब्बनिमित्तानि पातुरहंसु । सुमेधतापसो समापत्तिमुखेन वीतिनामन्तो नेव तं सद्दमस्सोसि न तानि निमित्तानि अद्दस । तेन वुत्तः—

“वं मे सिद्धिपत्तस्स वसीभूतस्स सासने ।
 दीपङ्करो नाम जिनो उपज्जि लोकनायको ॥
 उप्पज्जन्ते च जायन्ते बुज्जन्ते धम्मदेसने, ।
 चतुरो निमित्ते नाइसि^१ ज्ञानरतिसमप्पितो”ति ॥

तस्मिं काले दीपङ्करदसबलो चतुर्हि खीणासवसतसहस्सेहि परिवृतो अनुपुब्बेन चारिकं चरमानो रम्मकं नाम नगरं पत्वा सुदस्सनमहाविहारे पटिवसति । रम्मनगरवासिनो दीपङ्करो किर समणस्सरो परमाभिसम्बोधिं पत्वा पवत्तवरधम्मचक्रो अनुपुब्बेन चारिकं चरमानो रम्मनगरं पत्वा सुदस्सनमहाविहारे पटिवसतीति सुत्वा सप्पिनवनीतादीनि चैव भेसज्जानि वत्थच्छादनानि च गाहापेत्वा गन्धमालादिहत्था येन बुद्धो येन धम्मो येन संघो तन्निम्ना तप्पोणा तप्पम्भारा हुत्वा सत्थारं उपसंक्रमित्वा वन्दित्वा गन्धादीहि पूजेत्वा एकमन्तं निसिन्ना धम्मदेसनं सुत्वा स्वातनाय निमन्तेत्वा उट्ठायासना पक्कमिसु । ते पुनरिदमे महादानं सज्जेत्वा नगरं अलंकरित्वा दसबलस्स आगमनमगं अलंकरोन्ता उदकभिन्नोदकानेसु पंसुं पक्खित्वा समं भूमितलं कत्वा रजतपट्टवण्णं बालुकं आकिरन्ति, लाजानि चैव पुप्फानि च विकिरन्ति, नानाविरागेहि वत्थेहि धजपताके उस्सापेन्ति, कदलियो पुण्णघटपन्तियो च पटित्ठापेन्ति । तस्मिं काले सुमेधतापसो अत्तनो अस्समपदा उगमन्त्वा तेसं मनुस्सानं उपरि [११] भागेन आकासेन गच्छन्तो ते हट्ठहट्ठे मनुस्से दिस्वा किन्नुखो कारणन्ति आकासतो ओरुह् एकमन्तं ठितो मनुस्से पुच्छि, ‘हम्भो ! कस्स तुम्हे इमं मगं अलंकोथा ति ?’ तेन वुत्तः—

“पच्चन्तदेसविसये निमन्तेत्वा तथागतं ।
 तस्स आगमनं मगं सोधेन्ति तुट्ठमानसा ॥
 अहं तेन समयेन निक्खमित्वा सकस्समा ।
 धुनन्तो वाकचीरानि गच्छामि अम्बरे तदा ॥
 वेदजातं जनं दिस्वा तुट्ठहट्ठं पमोदितं ।
 ओरोहित्वान गगना मनुस्से पुच्छि तावदे ॥ [११]
 तुट्ठहट्ठो पमुदितो वेदजातो महाजो ।
 कस्स सोधीयती मग्गो अज्जसं वटुमायन” ॥ न्ति ।

मनुस्सा आहंसु, “भन्ते सुमेध ! न त्वं जानासि ? दीपंकरदसबलो सम्मासम्बोधिं पत्वा पवत्तवरधम्मचक्रो चारिकं चरमानो अम्हाकं नगरं पत्वा सुदस्सनमहाविहारे पटिवसति । मयं तं भगवन्तं निमन्तयिम्ह । तस्सेतं बुद्धस्स भगवतो आगमनमगं अलंकरोमाति ।”

सुमेधतापसो चिन्तेसि, “बुद्धोति खो घोसमत्तम्पि लोके दुल्लभं, पगेव बुद्धुप्पादो । मयापि इमेहि मनुस्सेहि सद्धिं दसबलस्स मगं अलंकरितुं वट्टतीति ।” सो ते मनुस्से आह, “सचे भो ! तुम्हे एतं मगं बुद्धस्स अलंकोथ मय्हम्पि एकं ओकासं देथ अहम्पि तुम्हेहि सद्धिं मगं अलंकरिस्सामीति ।”

ते ‘साधूति’ सम्पटिच्छित्वा सुमेधतापसो इद्धिमाति जानन्ता उदकभिन्नोकासं सल्लक्खेत्वा ‘त्वं इमं ठानं अलंकोहीति’ अदंसु । सुमेधो बुद्धारम्मणं पीति गहेत्वा चिन्तेसि, “अहं इमं ओकासं इद्धिया अलंकरितुं पहीमि । एवं अलंकरो पन मं न परितोसेस्सति ।” अज्ज मया कायवेय्यावच्चं कातुं वट्टतीति पंसुं आहरित्वा तस्मिं पदेसे पक्खिपि ।

तस्स तस्मिं पदेसे अनलंकते यव दीपंकरो दसबलो महान्भावानं छळपिञ्जानं खीणासवानं चतुर्हि सतसहस्सेहि परिवृतो, देवतासु दिब्बमालागन्धादीहि पूजयन्तीसु, दिब्बसंणीतेसु पवत्तन्तेसु, मनुस्सेसु मानुसकगन्धहि चैव मालादीहि च पूजयन्तेसु, अनन्ताय बुद्धलील्लहाय मनोसिलातले विजम्हमानो सीहो विथ तं अलंकतपटियत्तमगं पटिपज्जि ।

सुमेधतापसो अक्खीनि उम्मीलेत्वा अलंकृतमग्गेन आगच्छन्तस्स दसबलस्स द्वित्तिसमहापुरिस-
लक्खणपतिमण्डितं, असीतिया अनुब्यञ्जनेहि [१२] अनुब्यञ्जितं ब्यामप्पभाय सम्परिवारितं, मणि-
वण्णगगनतले नानप्पकारा विज्जुल्लता विय आवेळावेळभूता चेव युगलयुगलभूता च छब्बण्णाघनबुद्धरस्मियो
विस्सज्जेन्तं रूपगगप्पत्तं अत्तभावं ओलोकेत्वा, अज्ज मया दसबलस्स जीवितपरिच्चागं कातुं वट्ठतीति मा भगवा
कलले अक्कमि, मणिफलकसेतुं पन अक्कमन्तो विय सद्धिं चतुहि खीणासवसतसहस्सेहि मम पिट्ठिं मद्मानो
गच्छन्तु तं मे भविस्सति दीघरत्तं हिताय सुखायाति केसे मोचेत्वा अजिनजटावाकची [१२] रानि कालवण्णे
कलले पत्थरित्वा मणिफलकसेतु विय कललपिट्ठे निपज्जि । तेन वुत्तं:—

“ते मे पुट्ठा व्याकरिमु बुद्धो लोके अनुत्तरो ।

दीपंकरो नाम जिनो उप्पज्जि लोकनायको ॥

तस्स सोधीयति मग्गो अञ्जसं वटुमायनं ।

बुद्धोति मम सुत्वान पीति उप्पज्जि तावदे ॥

बुद्धो बुद्धोति कथयन्तो सोमनस्सं पवेदयि ।

तत्थ टत्वा विचिन्तेसि तुट्ठो संविग्गमानसो ॥

इध बीजानि रोपिस्सं खणो वे मा उपच्चगा ।

यदि बुद्धस्स सोधेथ एकोकासं ददाथ मे ॥

अहम्पि सोधयिस्सामि अञ्जसं वटुमायनं ।

अदंमु ते ममोकासं सोधेतुं अञ्जसं तदा ॥

बुद्धो बुद्धोति चिन्तेन्तो मग्गं सोधेमहं तदा ।

अनिट्ठिते ममोकासे दीपंकरो महामुनि ॥

चत्तारिसतसहस्सेहि छळभिञ्जेहि तादिहि ।

खीणासवेहि विमलेहि पटिपज्जिअ ञ्जसं जिनो ॥

पच्चुग्गमना वत्तन्ति वज्जन्ति भेरियो बहू ।

आमोदिता नरमरू साधुकारं पवत्तयुं ॥

देवा मनुस्से पस्सन्ति मनुस्सापि च देवता ।

उभोपि ते पञ्जलिका अनुयन्ति तथागतं ॥

देवा दिब्बेहि तुरियेहि मनुस्सा मानुसकेहि च ।

उभोपि ते वज्जयन्ता अनुयन्ति तथागतं ॥

दिब्बं मन्दारवं पुप्फं पदुमं पारिच्छत्तकं ।

दिसोदिसं ओकिरन्ति आकासनभगता मरू ॥

चम्पकं सळलं नीपं नागपुन्नागकेतकं ।

दिसोदिसं उक्खिपन्ति भूमितलगता नरा ॥

केसे मुञ्चित्वाहं तत्थ वाकचीरं च चम्पकं ।

कलले पत्थरित्वान अवकुज्जो निपज्जहं ॥ [१३]

अक्कमित्वान मं बुद्धो सहहिस्सेहि गच्छतु ।

मा मा कलले अक्कमित्थो हिताय मे भविस्सती” ति ॥

सो कललपिट्ठे निपन्नकोव पुन अक्खीनि उम्मीलेत्वा दीपंकरदसबलस्स बुद्धसिरिं सम्पस्समाना
एवं चिन्तेसि, “सचे अहं इच्छेय्यं सब्बकिलेसे ज्ञापेत्वा संघनवको हुत्वा रम्मनगरं पविसेय्यं [१३] अञ्जातक-

वेसेन पन मे किलेसे ज्ञापेत्वा निब्बानपत्तिया किच्चं नत्थि, यन्ननाहं दीपकरदसबलो विय परमाभिसम्बोधिं पत्त्वा धम्मनावं आरोपेत्वा महाजनं संसारसागरा उत्तारेत्वा पच्छा परिनिब्बायेय्यं । इदं मय्हं पतिरूपं” न्ति । ततो अट्ठ धम्मे समोधानेत्वा बुद्धभावाय अभिनीहारं कत्वा निप्पज्जि । तेन वुत्तं:—

“पुथुवियं निपघ्नस्स एवं मे आसि चेतसो ।
इच्छमानो अहं अज्ज किलेसे ज्ञापये मम ।
किम्मे अज्जातवेसेन धम्मं सच्छिकतेनिघ ।
सब्बज्जुतं पापुणित्वा बुद्धो हेस्सं सदेवके ॥
किम्मे एकेन तिण्णेन पुरिसेन थामदस्सिना ।
सब्बज्जुतं पापुणित्वा सन्तारेस्सं सदेवके ॥
इमिना मे अधिकारेन पुरिसेन थामदस्सिना ।
सब्बज्जुतं पापुणित्वा पारेमि जनतं बहुं ॥
संसारसोतं छिन्दित्वा विद्धंसित्वा तयो भवे ।
धम्मनावं समाएह सन्तारेस्सं सदेवके, ति ॥

यस्मा पन बुद्धत्तं पत्थेन्तस्स:—

‘मनुस्सत्तं लिगसम्पत्तिं हेतु सत्थारदस्सनं ।
पब्बज्जा गुणसम्पत्तिं अधिकारो च छन्दता ॥
अट्ठधम्मसमोधाना अभिनीहारो समिज्जती” ति ।

(१) मनुस्सत्तभावेस्मिं येव हि ठत्वा बुद्धत्तं पत्थेन्तस्स पत्थना समिज्जति । नागस्स वा सुपण्णस्स वा देवताय वा पत्थना नो समिज्जति । (२) मनुस्सत्तभावेपि पुरिसलिगे ठितस्सेव पत्थना समिज्जति । इत्थिया वा पण्डकनपुंसकउभतोव्यञ्जनकानं वा नो समिज्जति । (३) पुरिसस्सपि तस्मिं अत्तभावपि अरहत्तप्पत्तिया हेतुसम्पन्नस्सेव पत्थना समिज्जति, नो इतरस्स । (४) हेतुसम्पन्नेपि सचे जीवमानकबुद्धस्सेव सन्तिके पत्थेन्तस्स पत्थना समिज्जति । परिनिब्बुते बुद्धे चेतियसन्तिके वा बोधिमूले वा पत्थेन्तस्स न समिज्जति । (५) बुद्धानं सन्तिके पत्थेन्तस्सापि पब्बज्जालिगे ठितस्सेव समिज्जति नो [१४] गिहीलिगे ठितस्स । (६) पब्बजितस्सापि पञ्चभिज्जास्स अट्ठसमापत्तिलाभिनो येव समिज्जति, न इमाय गुणसम्पत्तिया विरहितस्स । (७) गुणसम्पन्नेनापि येन अत्तनो जीवितं बुद्धानं परिचत्तं होति तस्स इमिना अधिकारेन अधिकारसम्पन्नस्सेव समिज्जति, न इतरस्स । (८) अधिकारसम्पन्नस्सापि यस्स बुद्धकारकधम्मानं अत्थाय महन्तो छन्दो च महन्तो उस्साहो च वायामो च परियेद्वि च तस्सेव समिज्जति न इतरस्स ।

तत्रिदं^१ छन्दमहन्तताय ओपम्मं । सचे हि एवमस्स “यो सकलचक्कवाळगब्भं एकोदकीभूतं अत्तनो बाहुबलेन पतरित्वा पारं गन्तुं [१५] समत्थो सो बुद्धत्तं पापुणाति । यो वा पन सकलचक्कवाळगब्भं वलगुम्बसञ्छन्नं वियुहित्वा मदित्वा पदसा गच्छन्तो पारं गन्तुं समत्थो सो बुद्धत्तं पापुणाति । यो वा पन सकलचक्कवाळगब्भं सत्थियो आकोटेत्वा निरन्तरं सत्थिलसमाकिण्णं पदसा अक्कममानो पारं गन्तुं समत्थो सो बुद्धत्तं पापुणाति । यो वा पन सकलचक्कवाळगब्भं वीतच्चिकंगारभरितं पादेहि महमानो पारं गन्तुं समत्थो सो बुद्धत्तं पापुणाती” ति । यो एतेसु एकम्पि अत्तनो दुक्करं न मज्जति अहं एतम्पि तरित्वा वा गत्त्वा वा पारं गहेस्सामीति एव महन्तेन छन्देन च उस्साहेन च वायामेन च परियेद्विथा च समन्नागतो होति तस्स पत्थना समिज्जति, न इतरस्स ।

सुमेघतापसो पन इमे अट्ठधम्मे समोधानेत्वा बुद्धभावाय अभिनीहारं कत्वा निप्पज्जि ।

दिपङ्कुरोपि भगवा आगन्त्वा सुमेघतापसस्स सीसभागे ठत्वा भणिशीहपञ्जरं उग्घान्तेतो विय

पञ्चवर्णप्यसादसम्पन्नानि अक्खीनि उम्मिलेत्वा कललपिट्ठे निपन्नं सुमेधतापसं दिस्वा अयं तापसो बुद्धत्ताय अभिनीहारं कत्वा निपन्नो इज्झिस्सति नुखो इमस्स पत्थना उदाहु नोति अनागतं सञ्जाणं पेसेत्वा उपधारेन्तो इतो कप्पसतसहस्साधिकानि चत्तारि असंखेय्यानि अतिक्कमित्वा गोतमो नाम बुद्धो भविस्सतीति अत्वा टितकोव परिसमज्जे व्याकसि, “पस्सथ नो तुम्हे इमं उगतपं तापरां कललपिट्ठे निपन्नं” न्ति ?

एवं भन्ते ।

अयं बुद्धत्ताय अभिनीहारं कत्वा निपन्नो । समिज्झिस्सति इमस्स पत्थना । इतो कप्पसतसहस्साधिकानं चतुन्नं असंखेय्यानं मत्थके गोतमो नाम बुद्धो भविस्सति । तस्मिं पनस्स अत्तभावे कपिलवत्थु नाम नगरं निवासो भविस्सति । माया नाम देवी माता । सुद्धोदनो नाम राजा पिता । अग्गसावको उपतिस्सो नाम थेरो । दुत्तियसावको कोलितो नाम । बुद्धपट्ठाको आनन्दो नाम । अग्गसाविका खेमा नाम थेरी । दुत्तियसाविका [१५] उप्पलवण्णा नाम थेरी भविस्सति । परिपक्कज्जाणो महाभिनिक्खमणं कत्वा महापधानं पदहित्वा निग्रोधमूले पायासं पटिग्गाहेत्वा नेरञ्जराय तीरे परिभुञ्जित्वा बोधिमण्डं आद्य्ह अस्सत्थरुक्खमूले अभिसम्बुज्झिस्सतीति । तेन वृत्तः—

“दीपङ्कुरो लोकविद् आहुतीनं पटिग्गहो ।
उस्सीसके मं ठत्वान इदं वचनमबुदी^१ ॥
पस्सथ इमं तापसं जटिलं उग्गतापनं ।
अपरिमेय्ये इतो कप्पे बुद्धो लोके भविस्सति ॥ [१५]
अहु कपिलह्वया रम्मा निक्खमित्वा तथागतो ।
पधान पदहित्वान कत्वा दुक्करकारियं ॥
अजपालरुक्खमूले निसीदित्वा तथागतो ।
तत्थ पायासमग्य्ह नेरञ्जरमुपेहि^२ति ॥
नेरञ्जराय तीरमिह^३ पायासं आदाय सो जिनो ।
पटियत्तवरमग्गेन बोधिमूलं हि एहि^४ति ॥
पदक्खिणं कत्वा बोधिमण्डं अनुत्तरो ।
अस्सत्थरुक्खमूलमिह बुज्झिस्सति महायसो ॥
इमस्स जनिका माता माया नाम भविस्सति ।
पिता सुद्धोदनो नाम अयं हेस्सति गोतमो ॥
अनासवा वीतरागा सन्तचित्ता समाहिता ।
कोलितो उपतिस्सो च अग्गा हेस्सन्ति सावका ॥
आनन्दो नामुपट्ठाको उपट्ठहिस्सति तं जिनं ।
खेमा उप्पलवण्णा च अग्गा हेस्सन्ति साविका ॥
अनासवा वीतरागा सन्तचित्ता समाहिता ।
बोधी तस्स भगवतो अस्सत्थोति पवुच्चती” ॥ ति ।

बुद्धपावस्स पुञ्जनिमित्तानि

सुमेधतापसो मय्हं किर पत्थना समिज्झिस्सतीति सोमनस्सप्यत्तो अहोसि । महाजनो दीपंकरदसबलस्स वचनं सुत्वा सुमेधतापसो किर बुद्धबीजं बुद्धंकुरो चाति हट्ठतुट्ठो अहोसि । एवं नेसं अहोसि, यथा नाम पुरिसो नदि तरन्तो उज्जेन तित्थेन उत्तरितुं असक्कोन्तो हेट्ठा तित्थेन

उत्तरति, एवमेवं मयंपि दीपंकरदसबलस्स सासनं मग्गफलं अलभमाना अनागते यदा त्वं बुद्धो भविस्ससि तदा तव सम्मुखा मग्गफलं सच्छिकातुं समत्था भवेय्यामा ति पत्थनं ठपयिंसु । दीपंकरदसबलोपि बोधिसत्तं पसंसित्वा अट्ठहि पुप्फमुट्ठीहि पूजेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कामि । [१६]

तेपि चतुसतसहस्ससंखा खीणासवा बोधिसत्तं गन्धेहि च मालाहि च पूजेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कमिंसु देवमनुस्सा पन तथेव पूजेत्वा वन्दित्वा पक्कन्ता ।

बोधिसत्तो सब्बेसं पटिक्कन्तकाले सपना वुट्ठाय पारमियो विचिनिस्सामीति पुप्फरासिमत्थके पल्लकं आभुजित्वा निसीदि । एवं निसिन्ने बोधिसत्ते सकलदससहस्सचक्कवाळे देवता सन्निपतित्वा साधुकारं दत्वा, ^१ “अय्य सुमेधतापस ! पोरानकबोधिसत्तानं पल्लकं आभुजित्वा पारमियो विचिनिस्सामाति निसिन्नकाले यानि पुब्बनिमित्तानि नाम पञ्चायन्ति तानि सब्बानिपि अज्ज पातुभूतानि । निस्संसयेन त्वं बुद्धो [१६] भविस्ससि । मयमेतं जानाम । यस्सेतानि निमित्तानि पञ्चायन्ति एकन्तेन सो बुद्धो होति । त्वं अत्तनो विरियं दढ्हं कत्वा पग्गण्हा” ति बोधिसत्तं नानप्पकाराहि ^२ थुतीहि अभित्थविंसु । तेन युतं :—

“इदं सुत्वान वचनं असमस्स महेसिनो ।

आमोदिता नरमरु बुद्धबीजंकुरो अयं ॥

उक्कुट्टिसद्दा वत्तन्ति अप्पोटेन्ति हसन्ति च ।

कतञ्जली नमस्सन्ति दससहस्सी सदेवका ॥

यदिमस्स लोकनाथस्स विरज्झिस्साम सासनं ।

अनागतमिह अद्धाने हेस्साम सम्मुखा इमं ॥

यथा मनुस्सा नदि तरन्ता पटितित्थं विरज्झय ।

हेट्ठा तित्थे गहेत्वान उत्तरन्ति महानदि ॥

एवमेव ^३ मयं सब्बे यदि मुञ्चेमिमं जिनं ।

अनागतमिह अद्धाने हेस्साम सम्मुखा इमं ॥

दीपंकरो लोकविदू आहुतीनं पटिग्गहो ।

मम कम्मं पकित्तेत्वा दक्खिणं पदमुट्ठरि ॥

ये तत्थासुं जिनपुत्ता सब्बे पदक्खिणमकंसु मं ।

नरा नागा च गन्धब्बा अभिवादेत्वान पक्कमं ॥

दस्सनं मे अतिक्कन्ते ससंघे लोकनायके ।

तुट्ठहट्ठेन चित्तेन आसना वुट्ठहि तदा ॥

मुखेन सुखितो होमि पामोज्जेन पमोदितो ।

पीतिया च अभिस्सन्नो पल्लकं आभुजि तदा ॥

पल्लकेन निसीदित्वा एवं चिन्तेसहं तदा ।

वसीभूतो अहं ज्ञाने अभिञ्जापारमिं ^४ गतो ॥

साहस्सिकमिह लोकमिह इसयो नत्थि मे समा ।

असमो इद्धिधम्ममेसु अलभि ईदिसं मुखं ॥ [१७]

पल्लकाभुजने मय्हं दससहस्साधिवासिनो ।

महानादं पवत्तेसुं धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥

यं पुब्बे बोधिसत्तानं पल्लकवरमाभुजे ।

निमित्तानि पदिस्सन्ति तानि अज्ज पदिस्सरे ॥

सीतं व्यपगतं होति उष्णं च उपसम्मति ।
 तानि अज्ज पदिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 दससहस्सी लोकधातू निस्सदा होन्ति निराकुला ।
 तानि अज्ज पदिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 महावाता न वायन्ति न सन्दन्ति सवन्तियो ।
 तानि अज्ज पदिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥ [१७]
 थलजोदकजा पुप्फा सब्बे पुप्फन्ति तावदे ।
 ते पज्ज पुप्फिता सब्बे धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 लता वा यदि वा रुक्खा फलभारा होन्ति तावदे ।
 ते पज्ज फलिता सब्बे धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 आकासट्ठा च भुम्मट्ठा रतना जोतन्ति तावदे ।
 तेपज्ज रतना जोतन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 मानुसका च दिब्बा च तुरिया वज्जन्ति तावदे ।
 तपज्जुभो अभिरवन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 विचित्तपुप्फा गगना अभिवस्सन्ति तावदे ।
 तेपि अज्ज पवस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 महासमुद्धो आभुजति दससहस्सी पक्कम्पति ।
 ते पज्जुभो अभिरवन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 निरयेपि दससहस्सी अग्गी निब्बन्ति तावदे ।
 तेपज्ज निब्बुता अग्गी धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 विमलो होति सुरियो सब्बे दिस्सन्ति तारका ।
 तेपि अज्ज पदिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 अनोवट्ठेन उदकेन महिया उग्भिज्जि तावदे ।
 तम्पज्जुग्भिज्जते महिया धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 तारागणा विरोचन्ति नक्खत्ता गगनमण्डले ।
 विसाखा चन्दिमा युत्ता धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 बिलासया दरीसया निक्खमन्ति सकासया ।
 तेपज्ज आसया छुद्धा धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥ [१८]
 न होति अरति सत्तानं सन्तुट्ठा होन्ति तावदे ।
 ते पज्ज सब्बे सन्तुट्ठा धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 रोगा तदूपसम्मन्ति जिघच्छा च विनस्सति ।
 तानि अज्ज पदिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 रागो तदा तनु होति दोसो मोहोपि नस्सति ।
 तेपज्ज विगता सब्बे धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 भयं तदान भवति अज्जपेतं पदिस्सति ।
 तेन लिगेन जानाम धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 रजोनुद्धंसति उद्धं अज्जपेतं पदिस्सति ।
 तेन लिगेन जानाम धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥

अनिट्ठगन्धो पक्कमति दिब्बगन्धो पवायति ।
 सोपज्ज वायति गन्धो धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥ [18]
 सब्बे देवा पदिस्सन्ति ठपयित्वा अरूपिनो ।
 तेपज्ज सब्बे दिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 यावता निरया नाम सब्बे दिस्सन्ति तावदे ।
 तेपज्ज सब्बे दिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 कुड्डा कपाटा सेला च न होन्तावरणं तदा ।
 आकासभूता तेपज्ज धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 चुती च उप्पत्ति च खणे तस्मि न विज्जति ।
 तानि अज्ज पदिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥
 दल्हं पग्गण्ह विरियं मा निवत्ति अभिक्कम ।
 मयं पेतं विजानाम धुवं बुद्धो भविस्ससि” ति ॥

महासत्तस्स अधिट्ठानानि

बोधिसत्तो दीपंकरदसबलस्स च दससहस्सचक्कवाळदेवतानं च वचनं सुत्वा भीयो सोमत्ताय सञ्जा-
 तुस्साहो हुत्वा चिन्तेसि, “बुद्धा नाम अमोघवचना । नत्थि बुद्धानं कथाय अञ्जथत्तं । यथाहि आकासे खित्तले-
 ड्डुस्स पतनं, जातस्स मरणं, अरुणे उग्गते सुरियस्सुट्ठानं, आसया निक्खन्तस्स सीहस्स सीहनादनदनं, गरुडभाय
 इत्थिया भारमोचनं च धुवं अवस्संभावी, एवमेव बुद्धानं वचनं नाम धुवं अमोघं । अद्धा, अहं बुद्धो भविस्सामीति ।
 तेन वृत्तः—

“बुद्धस्स वचनं सुत्वा दससहस्सीन चूभयं ।
 तुट्ठहट्ठो पमोदितो एवं चिन्तेसहं तदा ॥
 अट्ठेज्जवचना बुद्धा अमोघवचना जिना ।
 वितथं नत्थि बुद्धानं धुवं बुद्धो भवामहं ॥ [१६]
 यथा खित्तं नभे लेड्डु धुवं पतति भूमियं ।
 तथेव बुद्धसेट्ठानं वचनं धुवसस्सत्तं ॥
 यथापि सब्बसत्तानं मरणं धुवसस्सत्तं ।
 तथेव बुद्धसेट्ठानं वचनं धुवसस्सत्तं ॥
 यथा रत्तिक्खये पत्ते सुरियस्सुग्गमनं धुवं ।
 तथेव बुद्धसेट्ठानं वचनं धुवसस्सत्तं ॥
 यथा निक्खन्तसयनस्स सीहस्स नदनं धुवं ।
 तथेव बुद्धसेट्ठानं वचनं धुवसस्सत्तं ॥
 यथा आपन्नसत्तानं भारमोरोपनं धुवं ।
 तथेव बुद्धसेट्ठानं वचनं धुवसस्सत्तं” ॥ न्ति

(१. दानपारमी)

सो धुवाहं बुद्धो भविस्सामीति एवं कतसन्निट्ठानो बुद्धकारके धम्मं उपधारेतुं कहन्नुखो बुद्धकारकधम्मा[19]
 किं उद्धं उदाहु अधो दिसासु विदिसासूति अनुक्कमेन सकलं धम्मधातुं विचिनन्तो पोराणकबोधिसत्तेहि आसे-
 वितनिसेवितं पठमं दानपारमि दिस्वा एवं अत्तानं ओवदि “सुमेघ पण्डित ! त्वं इतो पट्ठाय पठमं दानपारमि

पूरेय्यासि । यथा हि निक्कुज्जितो उदकुम्भो निस्सेसं कत्वा उदकं वमति येव न पच्चाहरति एवमेवं धनं वा यस वा पुत्तदारं वा अंगपच्चंगं वा अनोलोकेत्वा सम्पत्तयाचकानं सब्बं इच्छतिच्छितं निस्सेसं कत्वा ददमानो बोधिस्समूले निसीदित्वा बुद्धो भविस्ससी” ति पठमं दानपारमिं दळ्हं कत्वा अधिट्ठासि । तेन वुत्तः—

“हन्द बुद्धकरे धम्मे वि चिनामि इतोचितो ।
उदं अधो दसदिसा यावता धम्मधातुया ॥
विचिनन्तो तदा दक्खि पठमं दानपारमिं ।
पुब्बकेहि महेसीहि अनुचिण्णं महापथं ॥
इमं त्वं पठमं ताव दळ्हं कत्वा समादिय ।
दानपारमितं गच्छ यदि बोधिं पत्तुमिच्छसि ॥
यथापि कुम्भो सम्पुण्णो यस्स कस्सचि अधो कतो ।
वमते उदकं निस्सेसं न तत्थ परिरक्खति ॥
तथेव याचके दिस्वा हीनमुक्कट्ठमज्झमे ।
ददाहि दानं निस्सेसं कुम्भो विय अधो कतो” ति ॥

(२. सीलपारमी)

अथस्स न एतकेहेव बुद्धकारकधम्मेहि भवितब्बन्ति उत्तरिम्पि उपधारयतो दुतियं सीलपारमिं दिस्वा एतदहोसि, “सुमेधपण्डित ! त्वं इतोपट्ठाय सीलपारमिम्पि पूरेय्यासि । यथाहि [२०] चमरीमिगो नाम जीवितम्पि अनोलोकेत्वा अत्तनो वाळमेव रक्खति, एवं त्वम्पि इतोपट्ठाय जीवितम्पि अनोलोकेत्वा सीलमेव रक्खन्तो बुद्धो भविस्ससी” ति दुतियं सीलपारमिं दळ्हं कत्वा अधिट्ठासि । तेन वुत्तः—

“न हेते एत्तका येव बुद्धधम्मा भविस्सरे ।
अञ्जेपि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना ॥
विचिनन्तो तदा दक्खि दुतियं सीलपारमिं ।
पुब्बकेहि महेसीहि आसेवितनिसेवितं ॥
इमं त्वं दुतियं ताव दळ्हं कत्वा समादिय ।
सीलपारमितं गच्छ यदि बोधिं पत्तुमिच्छसि ॥
यथापि चमरी वाळं किस्मिचि पतिलगितं ।
उपेति मरणं तत्थ न विकोपेति वालधिं ॥ [२०]
तथेव चतुसु भूमीसु सीलानि परिपूरय ^१ ।
परिरक्ख सब्बदा सीलं चमरी विय वाळधि” ॥ न्ति ।

(३. नेक्खम्मपारमी)

अथस्स न एतकेहेव बुद्धकारकधम्मेहि भवितब्बन्ति उत्तरिम्पि उपधारयतो ततियं नेक्खम्मपारमिं दिस्वा एतदहोसि “सुमेधपण्डित ! त्वं इतो पट्ठाय नेक्खम्मपारमिम्पि पूरेय्यासि । यथाहि चिरम्पि बन्धनागारे वसमानो पुरिसो न तत्थ सिनेहं करोति अथखो उक्कण्ठति येव अवसितुकामो होति, एवमेव त्वम्पि सब्बभवे बन्धनागारसदिसे कत्वा सब्बभवेहि उक्कण्ठतो मुञ्चितुकामो हुत्वा नेक्खम्मामिमुखोव होहि । एवं बुद्धो भविस्ससी” ति ततियं नेक्खम्मपारमिं दळ्हं कत्वा अधिट्ठासि । तेन वुत्तः—

“न हेते एत्तका येव बुद्धधम्मा भविस्सरे ,
अञ्जेपि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना ।

विचिनन्तो तदा दक्खि ततियं नेक्खम्मपारमिं ।
 पुब्बकेहि महेसीहि आसेवितनिसेवितं ॥
 इमं त्वं ततियं ताव दळ्हं कत्वा समादिय ।
 नेक्खम्मे पारमिं गच्छ यदि बोधिं पत्तुमिच्छसि ॥
 यथा अन्दुघरे पुरिसो चिरवुत्थो दुखहितो ।
 न तत्थ रागं अभिजनेति मुत्ति येव गवेसति ॥
 तथेव त्वं सब्बभवे पस्स अन्दुघरे विय ।
 नेक्खम्माभिमुखो होहि भवतो परिमुत्तिया ॥” ति । [२१]

(४. पञ्ञापारमी)

अथस्स न एत्तकेहेव बुद्धकारकधम्मेहि भवितव्वन्ति उत्तरिम्पि उपधारयतो चतुत्थि पञ्ञापारमिं
 दिस्वा एतदहोसि “सुमेधपण्डित ! त्वं इतो पट्ठाय पञ्ञापारमिम्पि पूरेय्यासि हीनमज्झिमुक्कट्ठेसु कच्चि अव-
 ज्जेत्वा सब्बेपि पण्डिते उपसंक्रमित्वा पञ्ञं पुच्छेय्यासि । यथाहि पिण्डचारिको भिक्खु हीनादिभेदेसु कुलेसु
 कच्चि अवज्जेत्वा पटिपाटिया पिण्डाय चरन्तो खिप्पं यापनं लभति, एवं त्वम्पि सब्बपण्डिते उपसंक्रमित्वा पञ्ञं
 पुच्छन्तो बुद्धो भविस्समी” ति चतुत्थं पञ्ञापारमिं दळ्हं कत्वा अधिट्ठसि । तेन वुत्तः—

“न हेते एत्तकायेव बुद्धधम्मा भविस्सरे ।
 अञ्ञेपि विचिनिस्सामी ये धम्मा बोधिपाचना ॥
 विचिनन्तो तदा दक्खि चतुत्थं पञ्ञाय पारमिं ।
 पुब्बकेहि महेसीभि आसेवितनिसेवितं ॥
 इमं त्वं चतुत्थं ताव दळ्हं कत्वा समादिय ।
 पञ्ञाय पारमिं गच्छ यदि बोधिं पत्तुमिच्छसि ॥ [21]
 यथापि भिक्खु भिक्खन्तो हीनमुक्कट्ठमज्झमे ।
 कुलानि न विवज्जेन्तो एवं लभति यापनं ॥
 तथेव त्वं सब्बकाले पग्गिपुच्छन्तो बुद्धं जनं ।
 पञ्ञाय पारमिं गत्वा सम्बोधि पापुणिस्समी ॥” ति ।

(५. विरियपारमी)

अथस्स न एत्तकेहेव बुद्धकारकधम्मेहि भवितव्वन्ति उत्तरिम्पि उपधारयतो पञ्ञमं विरियपारमिं
 दिस्वा एतदहोसि “सुमेधपण्डित ! त्वं इतो पट्ठाय विरियपारमिम्पि पूरेय्यासि । यथा हि सीहो मीगराजा
 सब्बइरियापथेसु दळ्हविरियो होति एवं त्वम्पि सब्बभवेसु सब्बइरियापथेसु दळ्हविरियो अलीनविरियो
 समानो बुद्धो भविस्समी” ति पञ्ञमं विरियपारमिं दळ्हं कत्वा अधिट्ठसि । तेन वुत्तः—

“न हेते एत्तकायेव बुद्धधम्मा भविस्सरे ।
 अञ्ञेपि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना ॥
 विचिनन्तो तदा दक्खि पञ्ञमं विरियपारमिं ।
 पुब्बकेहि महेसीहि आसेवितनिसेवितं ॥
 इमं त्वं पञ्ञमं ताव दळ्हं कत्वा समादिय ।
 विरियपारमितं गच्छ यदि बोधिं पत्तुमिच्छसि ॥
 यथापि सीहो मीगराजा निमज्जट्ठानचक्रमे ।
 अलीनविरियो होति पग्गहीतमनो सदा ॥ [२२]

तथेव त्वम्पि सब्बभवे पगण्ह विरियं दळ्हं ।
विरियपारमितं गत्वा सम्बोधि पापुणिस्ससी ॥” ति ।

(६. खन्तिपारमी)

अथस्स न एत्तकेहेव बुद्धकारकधम्महेहि भवितव्वन्ति उत्तरिम्पि उपधारयतो छट्ठं खन्तिपारमिं दिस्वा एतदहोसि “सुमेधपण्डित ! त्वं इतो पट्ठाय खन्तिपारमिम्पि पूरेय्यासि सम्माननेपि अवमाननेपि खमोव भवेय्यासि । यथाहि पठवियं नाम सुचिम्पि पक्खिपन्ति असुचिम्पि, न तेन पठवी सिनेहं न पटिघं करोति खमति सहति अधिवासेतियेव एवमेव त्वम्पि सम्माननावमाननेसु खमोव समानो बुद्धो भविस्ससी”ति छट्ठं खन्तिपारमिं दळ्हं कत्वा अधिट्ठासि । तेन वुत्तं:—

“न हेते एत्तकायेव बुद्धधम्मा भविस्सरे ।
अञ्जेपि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना ॥
विचिन्तो तदा दक्खि छट्ठमं खन्तिपारमिं ।
पुब्बकेहि महेसीहि आसेवितनिसेवितं ॥
इमं त्वं छट्ठमं ताव दळ्हं कत्वा समादिय ।
तत्थ अद्वेज्जमानसो सम्बोधि पापुणिस्ससि ॥ [२२]
यथापि पठवी नाम सुचिम्पि असुचिम्पि च ।
सब्बं सहति निक्खेपं न करोति पटिघं दयं ॥
तथेव त्वम्पि सब्बेसं सम्मानावमानक्खमो ।
खन्तिपारमितं गत्वा सम्बोधि पापुणिस्ससी ॥” ति ।

(७. सच्चपारमी)

अथस्स न एत्तकेहेव बुद्धकारकधम्महेहि भवितव्वन्ति उत्तरिम्पि उपधारयतो सत्तमं सच्चपारमिं दिस्वा एतदहोसि “सुमेधपण्डित ! त्वं इतो पट्ठाय सच्चपारमिम्पि पूरेय्यासि । असनिया मत्थके पतमानायपि धनादीनं अत्थाय छन्दादीनं वसेन सम्पजानमुसावादं नाम मा अभासि । यथाहि ओसधितारका नाम सब्बउतुमु अत्तनो गमणवीथिं जहित्वा अञ्जाय वीथिया न गच्छति सकवीथियाव गच्छति, एवमेवं त्वम्पि सच्चं पहाय मुसावादं नाम अकरोन्तो येव बुद्धो भविस्ससी” ति सत्तमिं सच्चपारमिं दळ्हं कत्वा अधिट्ठासि । तेन वुत्तं:—

“न हेते एत्तका येव बुद्धधम्मा भविस्सरे ।
अञ्जेपि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना ॥
विचिन्तो तदा दक्खि सत्तमं सच्चपारमिं ।
पुब्बकेहि महेसीहि आसेवितनिसेवितं ॥
इमं त्वं सत्तमं ताव दळ्हं कत्वा समादिय ।
तत्थ अद्वेज्जवचनो सम्बोधि पापुणिस्ससि ॥ [२३]
यथापि ओसधी नाम तुलाभूता सदेवके ।
समये उतुवस्से वा नातिक्कमति वीथितो ॥
तथेव त्वम्पि सच्चवेसु मा वोक्कमि हि वीथितो ।
सच्चपारमितं गत्वा सम्बोधि पापुणिस्ससी ॥” ति ।

(८. अधिट्ठानपारमी)

अथस्स न एत्तकेहेव बुद्धकारकधम्महेहि भवितव्वन्ति उत्तरिम्पि उपधारयतो अट्ठमं अधिट्ठानपारमिं दिस्वा एतदहोसि “सुमेधपण्डित ! त्वं इतो पट्ठाय अधिट्ठानपारमिम्पि पूरेय्यासि । यं अधिट्ठासि तस्मिं

अधिदृष्टान निच्चलो भवेय्यासि । यथा हि पब्बतो नाम सब्वासु दिसासु^१ वाते पहरन्तेपि न कम्पति न चलति अत्तनो
ठाने येव तिदृठति, एवमेवं त्वम्पि अत्तनो अधिदृष्टाने निच्चलो होन्तोव बुद्धो भविस्ससी” ति अदृष्टमं अधिदृष्टान-
पारमिं दळ्हं कत्वा अधिदृष्टासि । तेन वृत्तः—

“न हेते एत्तका येव बुद्धधम्मा भविस्सरे ।
अञ्जरेपि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना ॥ [२३]
विचिनन्तो तदा दक्खि अदृष्टमं अधिदृष्टानपारमिं ।
पुब्बकेहि महेसीहि आसेवितनिसेवितं ॥
इमं त्वं अदृष्टमं ताव दळ्हं कत्वा समादिय ।
तत्थ त्वं अचलो हुत्वा सम्बोधिं पापुणिस्ससि ॥
यथापि पब्बतो सेलो अचलो सुप्पतिदृठितो ।
न कम्पति भुसवातेहि सकदृष्टानेव तिदृठति ॥
तत्थेव त्वम्पि अधिदृष्टाने सब्बदा अचलो भव ।
अधिदृष्टानपारमिं गन्त्वा सम्बोधिं पापुणिस्ससी ॥” ति ।

(६. मेत्तापारमी)

अथस्स न एतकेहेव बुद्धकारकधम्मेहि भवितव्वन्ति उत्तरिम्पि उपधारयतो नवमं मेत्तापारमिं
दिस्वा एतदहोसि “सुमेधपण्डित ! त्वं इतो पट्ठाय मेत्तापारमिम्पि पूरेय्यासि, हितेसुपि अहितेसुपि एकचित्तो
भवेय्यासि, यथापि उदकं नाम पापजनस्सपि कल्याणजनस्सपि सीतभावं एकसदिसं कत्वा फरति एवमेवं त्वम्पि
सब्बसत्तेसु मेत्तचित्तेन एकचित्तोव^२ होन्तो बुद्धो भविस्ससी” ति नवमं मेत्तापारमिं दळ्हं कत्वा अधिदृष्टासि ।
तेन वृत्तः—

“न हेते एत्तका येव बुद्धधम्मा भविस्सरे ।
अञ्जरेपि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना ॥
विचिनन्तो तदा दक्खिं नवमं मेत्ताय पारमिं ।
पुब्बकेहि महेभीहि आसेवितनिसेवितं ॥
इमं त्वं नवमं ताव दळ्हं कत्वा समादिय ।
मेत्ताय असमो होहि यदि बोधिं पत्तुमिच्छसि ॥ [२४]
यथापि उदकं नाम कल्याणे पापके जने ।
समं फरति सीतेन पवाहेति रजोमलं ॥
तत्थेव त्वम्पि अहितहिते समं मेत्ताय भावय ।
मेत्ताय पारमिं^३ गन्त्वा सम्बोधिं पापुणिस्ससी ॥” ति ।

(१०. उपेक्खापारमी)

अथस्स न एतकेहेव बुद्धकारकधम्मेहि भवितव्वन्ति उत्तरिम्पि उपधारयतो दसमं उपेक्खापारमिं
दिस्वा एतदहोसि—“सुमेधपण्डित ! त्वं इतो पट्ठाय उपेक्खापारमिम्पि पूरेय्यासि सुखेपि दुक्खेपि मज्झत्तोव
भवेय्यासि । यथापि पटवी नाम सुचिम्पि असुचिम्पि पक्खिप्पमाने मज्झत्ताव होति, एवमेवं त्वम्पि
सुखदुक्खेसु मज्झत्तोव होन्तो बुद्धो भविस्ससी” ति दसमं उपेक्खापारमिं दळ्हं कत्वा अधिदृष्टासि ।
तेन वृत्तः—[२४]

“न हेते एत्तका येव बुद्धधम्मा भविस्सरे ।
 अञ्जेपि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना ॥
 विचिनन्तो तदा दक्खि दसमं उपेक्खापारमि ।
 पुब्बकेहि महेसीहि आसेवितनिसेवितं ॥
 इमं त्वं दसमं ताव दळ्हं कत्वा समादिय ।
 तुलाभूतो दळ्हो हुत्वा सम्बोधि पापुणिस्ससि ॥
 यथापि पठवी नाम निक्खित्तं असुचिं सुचिं ।
 उपेक्खति उभोपेते कोपानुनयवज्जिता ॥
 तथेव त्वम्पि सुखदुक्खे तुलाभूतो सदा भव ।
 उपेक्खापारमितं गन्त्वा सम्बोधि पापुणिस्ससी ॥” ति !

महासत्तस्स पारमिसम्मसनं

ततो चिन्तेसि—“इमस्मि लोके बोधिसत्तेहि पूरेतब्बा बोधिपरिपाचना बुद्धकारकधम्मा एत्तकायेव ।
 दसपारमियो ठपेट्वा अञ्जे नत्थि । इमापि दसपारमियो उद्धं आकासेपि नत्थि, हेट्ठा पठवियम्पि पुरत्थिमादिसु
 दिसासु पि नत्थि । मय्हं येव पन हृदयम्भन्तरे^१ पतिट्ठिता” ति । एवं तासं हृदये पतिट्ठितभावं दिस्वा सब्बापि
 दळ्हं कत्वा अधिट्ठाय पुनप्पुनं सम्मसन्तो अनुलोमपटिलोमं सम्मसति । परियन्ते गहेत्वा आदिं प्रापेति,
 आदिमिह गहेत्वा परियन्ते ठपेति, मज्जे गहेत्वा उभतो ओसापेति, उभतो कोटिमु गहेत्वा मज्जे ओसापेति ।
 अंगपरिच्चागो पारमियो नाम, बाहिरभण्डपरिच्चागो उपपारमियो नाम, जीवितपरिच्चागो परमत्थपारमियो
 नामाति^२ । दस पारमियो, दस उपपारमियो, दस परमत्थपारमियोति यन्ततेलं विनिवट्टेन्तो विय महासिनेरु-
 मत्थकं कत्वा चक्कवाळ [२५] महासमुद्धं आलोकेन्तो विय च सम्मसि । तस्स दस पारमियो सम्मसन्तस्स
 सम्मसन्तस्स धम्मतेजेन चतुनहुताधिकद्वियोजनसतसहस्सबह्व्वा अयं महापठवी हत्थिना अक्कन्तनळकलापो
 विय पीळियमानं उच्छ्रयन्तं विय च महाविरवं विरवमाना संकम्पि सम्पकम्पि सम्पवेधि, कुलाळचक्कं विय
 तेलयन्तचक्कं विय च परिब्भमि । तेन वुत्तं:—

“एत्तका येव ते लोके ये धम्मा बोधिपाचना ।
 ततुद्धं नत्थि अञ्जत्र दळ्हं तत्थ पतिट्ठह ॥
 इमे धम्मे सम्मसतो सभावसरसलक्खणे ।
 धम्मतेजेन वसुधा दससहस्सी पक्कम्पथ ॥
 चलती रवती पुथवी उच्छ्रयन्तं व पीळितं ।
 तेलपन्ते यथा चक्कं एवं कम्पति मेदिनी ॥” ति । [25]

महापठविया कम्पमानाय रम्मनगरवासिनो सण्ठातुं असक्कोन्ता युगन्तवातब्बाहता महासाला
 विय मुच्छितमुच्छिता पपत्तिमु, घटादीनि कुलाळभाजनानि पवट्टन्तानि अञ्जमञ्जं पहरन्तानि चुण्णविचु-
 ण्णानि अहेसुं । महाजनो भीततसितो सत्थारं उपसंकमत्वा किन्नुखो भगवा नागावट्टो अयं भूतयक्खदेवतासु
 अञ्जतरावट्टेति न हि मयं एतं जानाम, अपिच खो सब्बोपि अयं महाजनो उपद्दुतो । किन्नुखो इमस्स लोकस्स

१ रो०—हृदयमंसन्तरे । २ स्या०—बाहिरभण्डपरिच्चागो दानपारमियो नाम, अंगपरिच्चागो दानउपपार-
 मियो नाम, जीवितपरिच्चागो दानपरमत्थपारमियो नामाति ।

पापकं भविस्सति, उदाहु कल्याणं ? कथेथ नो एतं कारणन्ति आह । सत्था तेसं कथं सुत्वा तुम्हे मा भायथ, मा चिन्तयित्थ, नत्थि वो इतो निदाना भयं । यो सो मया अज्ज सुमेधपण्डितो अनागते गोतमो नाम बुद्धो भविस्सतीति व्याकतो सो इदानीं पारमियो सम्मसति । तस्स पारमियो सम्मसन्तस्स विलोछेन्तस्स धम्मतेजेन सकलदससहस्सी लोकधातु एकप्पहारेन कम्पति चेव रवति चाति आह । तेन वृत्तः—

“यावता परिसा आसि बुद्धस्स परिवेसने ।
 पवेधमाना सा तत्थ मुच्छिता सेति भूमियं ॥
 घटानेकसहस्सानि कुम्भीनञ्च सता बहू ।
 सञ्चुण्णा मथिता तत्थ अञ्जमञ्जं^१ पघट्टिता ॥
 उब्बिग्गा तसिता भीता भन्ता व्यधितमानसा ।
 महाजना समागम्म दीपंकरमुपागमुं ॥
 किम्भविस्सति लोकस्स कल्याणं अथ पापकं ।
 सब्बो उपद्दुतो लोको तं^२ विनोदेहि चक्खुम ! [२६]
 तेसं तदा सञ्जापेसि दीपंकरो महामुनि ।
 विस्सत्था होथ मा भाथ इमस्मि पुथविकम्पने ॥
 यमहं अज्ज व्याकासि बुद्धो लोके भविस्सति ।
 एसो सम्मसती धम्मं पुब्बकं जिनसेवितं ॥
 तस्स सम्मसतो धम्मं बुद्धभूमिं असेसतो ।
 तेनायं कम्पिता पुथवी दससहस्सी सदेवके ॥” ति ।

महाजनोपि तथागतस्स वचनं सुत्वा हट्टतुट्ठो मालागन्धविलेपनं आदाय रम्मनगरा निक्खमित्वा बोधिसत्तं उपसंक्रमित्वा मालादीहि पूजेत्वा वन्दित्वा पदक्खिणं कत्वा रम्मनगरमेव पाविसि । बोधिसत्तोपि दसपारमियो सम्मसित्वा विरियं दळ्हं कत्वा अधिट्ठाय निसिन्नासना वुट्ठासि । तेन वृत्तः— [२६]

“बुद्धस्स वचनं सुत्वा मनो निब्बायि तावदे ।
 सब्बे मं उपसंक्रमम पुनपि मं अभिवन्दियुं ॥
 समादियित्वा बुद्धगुणं दळ्हं कत्वा न मानसं ।
 दीपंकरं नमस्सित्वा आसना वुट्ठहि तदा ॥” ति ।

अथ बोधिसत्तं आसना वुट्ठहन्तं सकलदससहस्सचक्कवाळे देवता सन्निपत्तिवत्ता दिब्बेहि मालागन्धेहि पूजेत्वा, अय्य सुमेधतापस ! तथा अज्ज दीपंकरदसब्रलस्स पादमूले महती पत्थना पत्थिता, सा ते अनन्तरायेन समिज्झतु, मा ते भयं वा छम्भितत्तं वा अहोसि, सरीरे अप्पमत्तकोपि रोगो मा उप्पज्जि, खिप्पं पागमियो पूरेत्वा सम्मासम्बोधिं पटिवुज्झ । यथा पुष्पफुल्लपङ्कगा रुक्खा समये पुष्पन्ति चेव फलन्ति च तथेव त्वम्पि समयं अनतिक्रमित्वा खिप्पं बोधिमुत्तमं फुसस्सुति आदीनि थुतिमंगलानि पयिरुदाहरिस्सु । एवं पयिरुदाहरित्वा अत्तनो अत्तनो देवट्ठानमेव अगमसु । बोधिसत्तोपि देवताहि अभित्थुतो अहं दसपारमियो पूरेत्वा कप्पसतसहस्साधिकानं चतुस्रं असंखेय्यानं मत्थके बुद्धो भविस्सामीति विरियं दळ्हं कत्वा अधिट्ठाय नभं अब्भुगन्त्वा हिमवन्तमेव अगमासि । तेन वृत्तः—

“दिब्बं मानुसकं पुप्फं देवा मानुसका उभो ।
 समोकिरन्ति पुप्फेहि बुट्टहन्तस्स आसना ॥
 वेदयन्ति च ते सोत्थि देवा मानुसका उभो ।
 महन्तं पत्थितं तुय्हं तं लभस्सु यथिच्छितं ॥
 सब्बीतियो विवज्जन्तु सोको रोगो विनस्सतु ।
 मा ते भवत्वन्तरायो^१ फुस खिप्पं बोधिमुत्तमं ॥ [२७]
 यथापि समये पत्ते पुप्फन्ति पुप्फिनो दुमा ।
 तथेव त्वं महावीर ! बुद्धाण्णेन पुप्फसि ॥
 यथा ये केचि सम्बुद्धा पूरयुं दसपारमी ।
 तथेव त्वं महावीर ! पूरय दसपारमी ॥
 यथा ये केचि सम्बुद्धा बोधिमण्डमिह बुज्झरे ।
 तथेव त्वं महावीर ! बुज्झस्सु जिनबोधियं ॥
 यथा ये केचि सम्बुद्धा धम्मचक्कं पवत्तयुं ।
 तथेव त्वं महावीर ! धम्मचक्कं पवत्तय ॥
 पुण्णमायं यथा चन्दो परिसुद्धो विरोचति ।
 तथेव त्वं पुण्णमनो वीरोच दससहस्सियं ॥ [२७]
 राहुमुत्तो यथा सुरियो तापेन अतिरोचति ।
 तथेव लोका मुच्चित्वा^२ विरोच सिरिया तुवं ॥
 यथा या काचि नदियो ओसरन्ति महोर्दधि ।
 एवं सदेवका लोका ओसरन्तु तवन्तिके ॥
 तेहि श्रुतप्पसत्थो सो दसधम्मे समादिय ।
 तं धम्मे परिपूरेन्तो पवनं^३ पाविसी तदा ॥” ति ।

सुमेधकथा निट्ठिता

§ २ भगवा दीपङ्करो

रम्मनगरवासिनोपि खो नगरं पविसित्वा बुद्धपमुखस्स भिक्खुसंघस्स महादानं अदंसु । सत्था तेसं धम्मं देसेत्वा महाजनं सरणादिसु पटिट्ठापेत्वा रम्मनगरम्हा निक्खमित्वा ततो उद्धम्पि यावतायुकं तिट्ठन्तो सब्बं बुद्धकिच्चं कत्वा अनुक्कमेन अनुपादिसेसाय निब्बाणधातुया परिनिब्बायि । तत्थ यं वत्तब्बं तं सब्बं बुद्धवंसे वुत्तनयेनेव वेदितब्बं । वुत्तं हि तत्थ :—

“तदा ते भोजयित्वा न ससंघं लोकनायकं ।
 उपगञ्छुं सरणं तस्स दीपकरस्स सत्थुनो ॥
 सरणागमने कञ्चि निवेसेसि तथागतो ।
 कञ्चि पञ्चमु सीलेसु सीले दसविधे परं ॥
 कस्सचि देति सामञ्जं चतुरो फलमुत्तमे ।
 कस्सचि असमे धम्मे देति सो पटिसम्भदा ॥
 कस्सचि वरसमापत्तियो अट्ठ देति नरासभो ।
 तिस्सो कस्सचि विज्जायो छल्लभिञ्जा पवेच्छति ॥ [२८]

तेन योगेन जनकार्यं ओवदति महामुनि ।
 तेन वित्थारिकं आसि लोकनाथस्स सासनं ॥
 महाहनु उसभक्खन्धो दीपंकरसनामको ।
 बहू जने तारयति परिमोचेति दुग्गतिं ॥
 बोधनेय्यं जनं दिस्वा सतसहस्सेपि योजने ।
 खणेन उपगन्त्वा न बोधेति तं महामुनि ॥
 पठमाभिसमये बुद्धो कोटिसतमबोधयि ।
 दुतियाभिसमये नाथो सतसहस्सं अबोधयि ॥
 यदा देवभवनम्हि बुद्धो धम्ममदेसयि ।
 नवुतिकोटिसहस्सानं ततियाभिसमयो अहु ॥ [28]
 सन्निपाता तयो आसुं दीपंकरस्स सत्थुनो ।
 कोटिसतसहस्सानं पठमो आसि समागमो ॥
 पुन नारदकूटम्हि पविवेकगते जिने ।
 खीणासवा वीतमला समिसु सतकोटियो ॥
 यदा वसी महावीरो सुदस्सनसिलुच्चये ।
 नवुतिकोटिसहस्सेहि परिवारेसि तदा मुनि ॥
 अहं तेन समयेन जटिलो उग्गतापनो ।
 अन्तळिक्खम्हि चरणो पञ्चाभिञ्जासु पारगू ॥
 दसबीससहस्सानं धम्माभिसमयो अहु ।
 एकद्विञ्चं अभिसमयो गणनातो असंखिया ॥
 वित्थारिकं बाहुजञ्जं इद्धं फीतं अहु तदा ।
 दीपंकरस्स भगवतो सासनं सुविसोधितं ॥
 चत्तारि सतसहस्सानि छळभिञ्जा महिद्धिका ।
 दीपंकरं लोकविदुं परिवारेन्ति सब्बदा ॥
 ये केचि तेन समयेन जहन्ति मानुसं भवं ।
 अप्पत्तमानसा सेखा गरहिताव भवन्ति ते ॥
 सुपुप्फितं पावचनं अरहन्तेहि तादिहि ।
 खीणासवेहि विमलेहि उपसोभति सदेवके ॥
 नगरं रम्मवती नाम सुदेवो^१ नाम खत्तियो ।
 सुमेधा नाम जनिका^२ दीपंकरस्स सत्थुनो ॥
 दसवस्ससहस्सानि अगारमज्झाम्हि सो वसि ।
 रम्मो सुरम्मसुभो तयो पासादमुत्तमा ॥
 तीनि सतसहस्सानि नारियो समलंकता ।
 यसोधरा नाम नारी उसभक्खन्धो च अत्रजो ॥
 निमित्तं चतुरो दिस्वा हत्थियानेन निक्खमि ।
 अनूनदससहस्सानि पधानं पदही जिनो ॥
 पधानचारं चरित्वान अबुज्झि मनसा मुनि ।

धम्मचक्कं महावीरो नन्तदाये सिरिषने ।
 सिरिसमूले रुचिरो अकासि तित्थियमद्दं ॥
 सुमंगलो च तिस्सो च अहेसुं अगगसावका ।
 सामतो नामुपट्ठाको दीपंकरस्स सत्थुनो ॥ [२९]
 नन्दा चेव सुनन्दा च अहेसुं अगगसाविका ।
 बोधि तस्स भगवतो पिप्फलीति पवुच्चति ॥
 असीतिहत्थमुब्बेधो दीपंकरो महामुनि ।
 सोभति दीपसुखोव सालराजाव फुल्लितो ॥
 सतसहस्सवस्सानि आयु तस्स महेसिनो ।
 तावता तिट्ठमानो सो तारेसि जनतं बहुं ॥
 जोतयित्वान सद्धम्मं सन्तारेत्वा महाजनं ।
 जलित्वा अग्गिक्खन्धोव निब्बुतो सो ससावको ॥
 सा च इद्धि सो च यसो तानि च पादेसु चक्करतनानि ।
 सब्बं समन्तरहितं ननु रिता सब्बसंखाराति ॥ [२९]

§ ३. भगवा कोण्डञ्जो

दीपंकरस्स पन भगवतो अपरभागे एकं असंखेय्यं अतिककमित्वा कोण्डञ्जो नाम सत्था उदपादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाता अहेसुं । पठमसन्निपाते कोटिसतसहस्सं, दुतिये कोटिसहस्सं, ततिये नवुतिकोटियो । तदा बोधिसत्तो विजितावी नाम चक्कवती हुत्वा कोटिसतसहस्ससंख्यस्स बुद्धपमुखस्स भिक्खुसंघस्स महादानं अदासि । सत्था बोधिसत्तं बुद्धो भविस्ससीति व्याकरित्वा धम्मं देसेसि । सो सत्थु धम्मकथं सुत्वा रज्जं पटियादेत्वा पब्बजि । सो तीणि पिटकानि उग्गहेत्वा अट्ठसमापत्तियो पञ्च च अभिञ्जायो उप्पादेत्वा अपरिहीनज्ज्ञानो ब्रह्मलोके निब्बत्ति । कोण्डञ्जस्स बुद्धस्स पन रम्मवती नाम नगरं, आनन्दो नाम खत्तियो पिता, सुजाता नाम देवी माता, भदो च सुभदो च द्वे अगगसावका, अनुरुद्धो नामुपट्ठाको, तिस्सा च उपतिस्सा च द्वे अगगसाविका, सालकल्याणी बोधि अट्ठासीतिहत्थुब्बेधं सरीरं, वस्ससतसहस्सं आयुप्पमाणं अहोसि ।

दीपंकरस्स अपरेन कोण्डञ्जो नाम नायको ।

अनन्ततेजो अमितयसो अप्पमेय्यो दुरासदोति ॥

§ ४. भगवा मङ्गलो

तस्स अपरभागे एकं असंखेय्यं अतिककमित्वा एकस्मिं येव कप्पे चत्तारो बुद्धा निब्बत्तिंसु, मंगलो सुमनो रेवतो सोभितोति । मंगलस्स भगवतो तयो सावकसन्निपाता अहेसुं । तेसुं पठमसन्निपाते कोटिसतसहस्सं भिक्खूअहेसुं । दुतिये कोटिसहस्सं, ततिये नवुति कोटियो । वेमातिकभाता किरस्स आनन्दकुमारो नवुतिकोटि-संखाय परिसाय सद्धि धम्मसवणत्थाय सत्थुसन्तिकं अगमासि । सत्था तस्स आनुपुब्बीकथं कथेसि । सो सद्धि परिसाय सह पटिसम्भदाहि [३०] अरहत्तं पापुणि । सत्था तेसं कुलपुत्तानं पुब्बचरितं ओलोकेन्तो इद्धिमय-पत्तचीवरस्स उपनिस्सयं दिस्वा दक्खिण्हत्थं पसारेत्वा एथ भिक्खवोति आह । सब्बे तं खणं येव इद्धिमयपत्तची-वरधरा सट्ठिवस्सथेरा विय आकप्पसम्पन्ना हुत्वा सत्थारं वन्दित्वा परिवारयिंसु । अयमस्स ततियो सावक-सन्निपातो अहोसि ।

यथा पन अञ्जेसं बुद्धानं समन्ता असीतिहत्थप्पमाणा येव सरीरप्पभा अहोसि न तस्स एवं । तस्स पन भगवतो सरीरप्पभा निच्चकालं दससहस्सीलोकधातुं फरित्वा अट्ठासि । रुक्खपठवीपब्बतसमुदादयो अन्तमसो उक्खलियादीनि उपादाय सुवण्णपट्टपरियोनद्धा विय अहेसुं । आयुप्पमाणं पनस्स नबुतिवस्ससहस्साति अहोसि । एत्तकं कालं चन्दसुरियादयो अत्तनो पभाय विरोचितुं नासक्खिसु । रत्तिन्दिवपरिच्छेदो न पञ्जायित्थ । दिवा सुरियालोकेन विय सत्ता[३०] निच्चं बुद्धालोकेनेव विचरिसु।सायं पुप्फनकुसुमानं पातोव रवनसकुणादीनञ्च वसेन लोको रत्तिन्दिवपरिच्छेदं सल्लक्खेसि । किम्पन अञ्जेसं बुद्धानं अयमानुभावो नत्थीति ? नो नत्थि ते पिहि आकंखमाना दससहस्सि वा लोकधातुं ततो वा भिय्यो आभाय फरेय्युं । मंगलस्स पन भगवतो पुब्बपत्थ-
नावसेन अञ्जेसं व्यामप्पभा विय सरीरप्पभा निच्चमेव दससहस्सीलोकधातुं फरित्वा अट्ठासि ।

सो किर बोधिसत्तचरियकाले वेस्सन्तरसदिसे अत्तभावे ठितो सपुत्तदारो वंकपब्बतसदिसे पब्बते वसि । अथेको खुरदाठिको नाम यक्खो महापुरिसस्स दानज्झासयत्तं सुत्वा ब्राह्मणवण्णेन उपसंकमित्वा महासत्तं द्वे दारके याचि । महासत्तो ददामि ब्राह्मणस्स पुत्तकेति हट्ठपहट्ठो उदकपरियन्तं पठावि कम्पेन्तो द्वेपि दारके अदासि । यक्खो चंकमणकोटियं आलम्बनफलकं निस्साय ठत्वा पस्सन्तस्सेव महासत्तस्स मूलकलापे^१ विय द्वे दारके खादि । महापुरिसस्स यक्खं ओलोकेत्वा मुखे^२ विवटमत्ते अग्गिजालं विय लोहितधारं उग्गिरमानं तस्स मुखं दिस्वापि केसग्गमत्तम्पि दोमनस्सं न उप्पज्जि । सुदिन्नं वत मे दानन्ति चिन्तयतो पनस्स सरीरे महन्तं पीतिसोमनस्सं उदपादि । सो इमस्स मे निस्सन्देन अनागतो इमिनाव नीहारेन रस्मियो निक्खमन्तूति पत्थनं अकासि । तस्स तं पत्थनं निस्साय बुद्धभूतस्स सरीरतो रस्मियो निक्खमित्वा एत्तकं ठानं फरिसु । [३१]

अपरम्पिस्स पुब्बचरितं अत्थि । सो किर बोधिसत्तकाले एकस्स बुद्धस्स चेतियं दिस्वा इमस्स बुद्धस्स मया जोवितं परिच्चजितुं वट्ठतीति चिन्तेत्वा दण्डदीपकवेठननियामेन सकलसरीरं वेठापेत्वा रतनमकुलं सतसह-
स्सग्घनिकं सुवण्णपातिं सप्पिस्स पूरापेत्वा तत्थ सहस्सवट्ठियो जालापेत्वा तं सीसेनादाय सकलसरीरे जालापेत्वा चेतियं पदक्खीणं करोन्तो सकलरत्तिं वीतिनामेसि । एवं याव अरुणुग्गमणा वायमन्तस्सापिस्स लोमक्कूपमत्तम्पि उसुमं न गण्हि । पडुमगब्भं पविट्ठकालो विय अहोसि । धम्मो हि नामेस अत्तानं रक्खन्तं रक्खति । तेनाह भगवाः—

धम्मो हवे रक्खति धम्मचारिं धम्मो मुचिण्णो सुखमावहाति ।

एसानिसंसो धम्मो मुचिण्णे न दुग्गतिं गच्छति धम्मचारी ॥” ति । [३१]

इमस्सापि कम्मस्स निस्सन्देन तस्स भगवतो सरीरोभासो दससहस्सीलोकधातुं फरित्वा अट्ठासि । तदा अम्हाकं बोधिसत्तो मुरुचि नाम ब्राह्मणो हुत्वा सत्थारं निमन्तेस्सामीति उपसंकमित्वा मधुर-
धम्मकथं सुत्वा स्वे मय्हं भिक्खं गण्हथ भन्तेति आह । ब्राह्मण ! कित्तकेहि ते भिक्खूहि अत्थोति ? कित्तका पन वो भन्ते ! परिवारभिक्खूति आह । तदा सत्थु पठमसन्निपातो येव होति, तस्मा कोटिसत्तसहस्सन्ति आह । भन्ते ! सब्बेहिपि सद्धिं मय्हं गेहे भिक्खं गण्हथाति । सत्था अधिवामेसि । ब्राह्मणो स्वाननाय निमन्तेत्वा गेहं गच्छन्तो चिन्तेसि-अहं एत्तकानं भिक्खून् यागुभत्तवत्थादीनि दातुं नो न सक्कोमि, निसीदनट्ठानं पन कथं भविस्सतीति तस्स सा चिन्ता चतुरासीति योजनसहस्समत्थके ठितस्स देवरञ्जो पण्डुकम्बलसिलालसनस्स उण्हभावं जनेसि । सक्को को नुखो मं इमस्मा ठाना चावेतुकाभोति दिब्बचक्खुना ओलोकेन्तो महापुरिसं दिस्वा मुरुचिब्राह्मणो बुद्धपमुखं भिक्खुसंघं निमन्तेत्वा निसीदनट्ठानत्थाय चिन्तेति, मयापि तत्थ गत्वा पुञ्जे कोट्ठासं गहेतुं वट्ठतीति वड्ढकीवण्णं निम्मिणित्वा वासिफरमुहत्थो महासत्तस्स पुरतो पातुरहोसि । सो अत्थि नुखो कस्सचि भतिया कत्तब्बन्ति आह । महापुरिसो दिस्वा किं कम्मं करिस्ससीति आह ।

मम अजाननसिर्पं नाम नत्थि, गेहं वा मण्डपं वा यो यं कारति तस्स तं कातुं जानामीति ।

तेन हि मय्हं कम्मं अत्थीति ।

किं अय्याति ?

स्वातनाय द्वे कोटिसतसहस्सभिक्षू निमन्तिता, तेसं निसीदनमण्डपं करिस्ससीति ?

अहं नाम [३२] करेय्यं सत्ते मे भति दातुं सक्खिस्सथाति ।

सक्खिस्सामी ताताति ।

साधु करिस्सामीति गत्वा एकं पदेसं ओलोकेसि । द्वादसतेरसयोजनप्पमाणो पदेसो कसिणमण्डलं विय समनलो अहोसि । सो एत्तके ठाने सत्तरतनमयो मण्डपो उट्ठहत्तूति चिन्तेत्वा ओलोकेसि । तावदेव पृथविं भिन्दित्वा मण्डपो उट्ठहि । तस्स सोवण्णमयेसु थम्हेसु रजतमया घटका अहेसु^१ रजतमयेसु सोवण्णमया । मणित्थम्भेसु मणिमया सत्तरतनमयेसु सत्तरतनमयाव घटका अहेसु^१ । ततो मण्डपस्स अन्तरन्तरे किंकिणिकजालं ओलम्बन्तूति ओलोकेसि । सह ओलोकनेनेव जालं ओलम्बि, यस्स मन्दवातेरितस्स पञ्चंगिकस्सेव तुरियस्स मधुरसदो निग्गच्छति, दिव्वमंगीनवत्तनकालो विय होति । अन्तरन्तरा^१ गन्धदाममालादामानि ओलम्बन्तूति चिन्तेसि । दामानि ओलम्बिमु । कोटिसनसहस्ससंखानं [३२] भिक्षून् आसनानि च आधारकानि च पठविं भिन्दित्वा उट्ठहन्तूति चिन्तेसि । तावदेव उट्ठहिमु । कोणे कोणे एकेका उदकचाटियो उट्ठहन्तूति चिन्तेसि । उदकचाटियो उट्ठहिमु । एत्तकं मापेत्त ब्राह्मणस्स सन्तिकं गत्वा—एहि अय्य । तव मण्डपं ओलोकेत्वा मय्हं भति देहीति आह ।

महापुरिसो गत्वा मण्डपं ओलोकेसि । ओलोकेन्तस्सेव सकलसरीरं पञ्चवण्णाय पीतिया निरन्तरं फुटं अहोसि । अथस्स मण्डपं ओलोकेत्वा एतदहोसि—नायं मण्डपो मनुस्सभूतेन कतो । मय्हं पन अञ्जासयं मय्हं गुणं आगम्म अद्धा सक्कभवनं उण्हं अहोसि । ततो सक्केन देवरञ्जा अय मण्डपो कारितो भविस्सति । न खो पन मे युत्तं एवरूपे मण्डपे एकदिवसं येव दानं दातुं । सत्ताहं दस्सामीति चिन्तेसि । बाहिरकदानं हि कित्तकम्पि समानं बोधिसत्तानं तुट्ठिं कातुं न सक्कोति । अलंकतसीसं पन छिन्दित्वा अञ्जितअक्खीनि उप्पाटेत्वा हृदयमंसं वा उब्बत्तेत्वा दिन्नकाले बोधिसत्तानं चागं नीस्साय तुट्ठि नाम होति । अम्हाकम्पि हि बोधिसत्तस्स सिविजातके देवसिकं पञ्चकहापणम्मणानि विस्सज्जेत्वा चतुसु द्वारेसु मज्जे नगरे च दानं देन्तस्स तं दानं चागतुट्ठि उप्पादेतुं नासक्खि । यदा पनस्स ब्राह्मणवण्णेन आगत्वा सक्को देवराजा अक्खीनि याचि तदा तानि उप्पाटेत्वा ददमानस्सेव हासो उप्पज्जि । केसग्गमत्तम्पि चित्तं अञ्जथत्तं नाम नाहोसि । एवं दानं निस्साय बोधिसत्तानं तित्ति नाम नत्थि । तस्मा सोपि महापुरिसो सत्ताहं मया कोटिसतसहस्ससंखानं भिक्षून् दानं दातुं वट्ठतीति चिन्तेत्वा तस्मिं [३३] मण्डपे निसीदापेत्वा सत्ताहं गवपाणं नाम दानं अदासि ।

गवपाणन्ति महन्ते महन्ते कोलम्बे खीरस्स पूरेत्वा उद्धने आरोपेत्वा, घनपाकपक्के खीरे थोके तण्डुले पक्खिपित्वा, पक्कमधुसक्कराचुण्णसप्पीहि^२ अभिसंखटं भोजनं वुच्चति ।

मनुस्सायेव पन परिवसितुं नासक्खिमु । देवापि एकन्तरिका हुत्वा परिवसिंसु । बारसतेरसयो-जनप्पमाणं ठानम्पि भिक्षू गण्हितुं नप्पहोसि येव । ते पन भिक्षू अत्तनो अत्तनो आनुभावेन निसीदिसु ।

परियोसानदिवसे सब्बभिक्षून् पत्तानि धोवापेत्वा भेसज्जत्थाय सप्पिनवनीतमधुफाणितादीनि पूरेत्वा तिचीवरेहि सिद्धिं अदासि । संघनवकभिक्षुना लद्धचीवरसाटका सतसहस्सघनका अहेसु^१ ।

सत्था अनुमोदनं करोन्तो-अयं पुरिसो एवरूपं महादानं अदासि । को नु खो भविस्सतीति उपधारेन्तो अनागतं कप्पसतसहस्साधिकानं द्विघ्नं असंखेय्यानं मत्थके गोतमो नाम बुद्धो भविस्सतीति दिस्वा महापुरिसं आमन्तेत्वा त्वं [३३] एत्तकं नाम कालं अतिक्कमित्वा गोतमो नाम बुद्धो भविस्ससीति व्याकासि ।

महापुरिसो व्याकरणं सुत्वा—अहं किर बुद्धो भविस्सामि, को मे घरावासेन अत्थो, पब्बजि-
स्सामीति चिन्तेत्वा तथारूपं सम्पत्तिं खेलपिण्डं विय पहाय सत्थु सन्तिके पब्बजित्वा बुद्धवचनं उगग्हित्वा
अभिञ्जा च समापत्तियो च निब्बत्तेत्वा आयुपरियोसाने ब्रह्मलोके निब्बत्ति ।

मंगलस्स पन भगवतो नगरं उत्तरं नाम अहोसि । पितापि उत्तरो नाम खत्तियो । मातापि उत्तरा
नाम । सुदेवो च धम्मसेनो च द्वे अगगसावका । पालितो नाम उपट्ठाको । सीवली च असोको च द्वे अगगसाविका ।
नागरुक्खो बोधि । अट्ठासीतिहत्थुब्बेधं सरीरं अहोसि । नवुतिवस्ससहस्सानि ठत्वा परिनिब्बुते पन तस्मि
एकप्पहारेनेव दसचक्कवाळसहस्सानि एकन्धकारानि अहेसुं । सब्बचक्कवाळेसु मनुस्सानं महत्तं आरोदन-
परिदेवनं अहोसिः—

“कोण्डञ्जस्स अपरेन मंगलो नाम नायको ।

तमं लोके निहत्त्वान धम्मोवकमभिधारयी” ॥ ति ।

§ ५. भगवा सुमनो

एवं दससहस्सीलोकधातुं अन्धकारं कत्वा परिनिब्बुतस्स तस्स भगवतो अपरभागे सुमनो नाम सत्था
उदपादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाता । पठमसन्निपाते कोटिसतसहस्सं भिक्खू अहेसुं । दुतिये कञ्चनपब्ब-
तम्हि नवुतिकोटिसहस्सानि । ततिये असीतिकोटिसहस्सानि ।

तदा महासत्तो अतुलो नाम नागराजा अहोसि महिद्धिको महानुभावो । सो बुद्धो [३४]
उप्पन्नोति सुत्वा ज्ञातिसंघपरिवृतो नागभवना निक्खमित्वा कोटिसतसहस्सभिक्खुपरिवारस्स तस्स भगवतो
दिब्बतुरियेहि उपहारं कत्वा महादानं दत्वा पञ्चेकं दुस्सयुगानि दत्वा सरणेसु पतिट्ठासि ।

सोपि नं सत्था ‘अनागते बुद्धो भविस्समीति’ व्याकासि ।

तस्स भगवतो नगरं खेमं नाम अहोसि । सुदत्तो नाम राजा पिता । सिग्गिमा नाम माता । सरणा
च भावितत्तो च अगगसावका । उदेनो नामुपट्ठाको । सोणा च उपसोणा च अगगसाविका । नागरुक्खो बोधि ।
नवुतिहत्थुब्बेधं सरीरं । नवुतियेव वस्ससहस्सानि आयुप्पमाणं अहोसिः—

“मंगलस्म अपरेन सुमनो नाम नायको ।

सब्बधम्मोहि असमो सब्बसत्तानमुत्तमो” ॥ ति । [३५]

§ ६. भगवा रेवतो

तस्स अपरभागे रेवतो नाम सत्था उदपादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाता । पठमसन्निपाते गणना
नाम नत्थि । दुतिये कोटिसतसहस्सभिक्खू अहेसुं । तथा ततिये ।

तदा बोधिसत्तो अतिदेवो नाम ब्राह्मणो हुत्वा सत्थु धम्मदेसनं सुत्वा सरणेसु पतिट्ठाय सिग्गि
अञ्जलिं ठपेत्वा तस्स सत्थुनो किलेसप्पहाणे वण्णं वत्वा उत्तरामंगेन पूजं अकासि ।

सोपि नं बुद्धो भविस्समीति व्याकासि ।

तस्स पन भगवतो नगरं धञ्जवती^१ नाम अहोसि । पिता विपुलो नाम खत्तियो । मातापि विपुला
नाम । वरुणो च ब्रह्मदेवो च अगगसावका । सम्भवो नाम उपट्ठाको । भद्दा च मुभद्दा च अगगसाविका ।
नागरुक्खोव बोधि । सरीरं अमीतिहत्थुब्बेधं अहोसि । आयु सट्ठिवस्ससहस्सानीतिः—

“सुमनस्स अपरेन रेवतो नाम नायको ।

अनुपमो असदिसो अतुलो उत्तमो जिनो” ॥ ति ।

§ ७. भगवा सोभितो

तस्स अपरभागे सोभितो नाम सत्था उदपादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाता । पठमसन्निपाते
कोटिसतं भिक्खू अहेसुं । दुतिये नवुति कोटियो । ततिये अमीनि कोटियो ।

तदा बोधिसत्तो अजितो नाम ब्राह्मणो हत्वा सत्थु धम्मदेसनं सुत्वा सरणमु पतिट्ठाय बुद्ध-
पमुखस्स भिक्खुसंघस्स महादानं अदामि ।

सोपि नं बुद्धो भविस्ससीति व्याकासि ।

तस्स पन भगवतो नगरं सुधम्मं नाम अहोसि । पिता सुधम्मो नाम राजा । मातापि सुधम्मा
नाम । असमो च सुनेत्तो च अगगसावका । अनोमो नाम उपट्ठाको । नकुला च सुजाता च अगगसाविका ।
नागरुक्खोव बोधि । अट्ठपण्णासहत्थुब्बेधं सरीरं अहोसि, नवुतिवस्ससहस्सानि आयुप्पमाणन्ति:—[३५]

“रेवतस्स अपरेन सोभितो नाम नायको ।

समाहितो सन्तचित्तो असमो अप्पटिपुग्गलो” ॥ ति ।

§ ८. भगवा अनोमदस्सी

तस्स अपरभागे एकं असंखेय्यं अतिककमित्वा एकस्मि कप्पे तयो बुद्धा निब्बत्तिमु अनोमदस्सी
पदुमो नारदोति ।

अनोमदस्सिस्स भगवतो तयो सावकसन्निपाता । पठमे अट्ठभिक्खुसतसहस्सानि अहेसुं । दुतिये
सत्त । ततिये छ । तदा बोधिसत्तो एको यक्खसेनापति अहोसि महिद्धिको महानुभावो अनेककोटि [३५]
सतसहस्सानं यक्खानं अधिपति । सो बुद्धो उप्पन्नोति मुत्वा आगत्त्वा बुद्धपमुखस्स भिक्खुसंघस्स महादानं
अदामि । सत्थापि नं अनागते बुद्धो भविस्ससीति व्याकासि ।

अनोमदस्सिस्स पन भगवतो चन्दवती नाम नगरं अहोसि । यसवा नाम राजा पिता । यसोधरा
नाम माता । निसभो च अनोमो च अगगसावका । वरुणो नाम उपट्ठाको । सुन्दरी च सुमना च अगगसाविका ।
अज्जुणरुक्खो बोधि । सरीरं अट्ठपञ्चासहत्थुब्बेधं अहोसि । वस्ससतसहस्सं आयूति:—

“सोभितस्स अपरेन सम्बुद्धो दिपदुत्तमो ।

अनोमदस्सि अमितयसोतेजस्सी दुग्गित्थकमो” ॥ ति ।

§ ९. भगवा पदुमो

तस्स अपरभागे पदुमो नाम सत्था उदपादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाता । पठमसन्निपाते
कोटिसतसहस्सं भिक्खू अहेसुं । [३६] दुतिये तीणि सतसहस्सानि । ततिये अगगमकं अरञ्जे महावन-
सण्डवासीनं भिक्खून् द्वे सतसहस्सानि ।

तदा तथागतं तस्मि वनसण्डे वसन्ते बोधिसत्तो सीहो हत्वा सत्थारं निरोधसमापन्ति समापन्नं
दिस्वा पसन्नचित्तो वन्दित्वा पदक्खिणं कत्वा पीतिसोमनस्सजातो तिक्खत्तुं सीहनादं नदित्वा सत्ताहं बुद्धा-
रम्मणपीति अविजहित्वा पीतिमुखेनेव गोचराय अपक्कमित्वा जीवितपरिच्चागं कत्वा पयिरुपा-
समानो अट्ठासि ।

सत्था सत्ताहच्चयेन निरोधा वृट्ठितो सीहं ओलोकेत्वा भिक्खूसंघेपि चित्तं पसादेत्वा संघं
वन्दिस्सतीति भिक्खूसंघो आगच्छत्तूति चित्तेसि । भिक्खू तावदेव आगमिसु । सीहो संघे चित्तं पसादेसि ।
सत्था तस्स मनं ओलोकेत्वा ‘अनागते बुद्धो भविस्ससीति’ व्याकासि ।

पदुमस्स पन भगवतो चम्पकं नाम नगरं अहोसि । असमो^१ नाम राजा पिता । मातापि
असमा नाम । सालो च उपसालो च अगगसावका । वरुणो नाम उपट्ठाको । रामा च सुगमा^२ च अगग-
साविका । सोणरुक्खो नाम बोधि । अट्ठपण्णासहत्थुब्बेधं सरीरं अहोसि । आयु वस्ससतसहस्सन्ति:—

“अनोमदस्सिस्स अपरेन सम्बुद्धो दिपदुत्तमो ।

पदुमो नाम नामेन असमो अप्पटिपुग्गलो” ॥ ति । [३६]

§ १०. भगवा नारदो

तस्स अपरभागे नारदो नाम सत्था उदपादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाता । पठमसन्निपाते कोटिसतसहस्रभिक्षू अहेमुं । दुतिये नवुतिकोटिसहस्सानि^१ । ततिये असीतिकोटिसहस्सानि^२ ।

तदा बोधिसत्तो इसिपब्बज्जं पब्बज्जित्वा पञ्चमु अभिञ्जासु अट्ठमु च समापत्तीमु वसी हुत्वा बुद्धपमुखस्स संघस्स महादानं दत्त्वा चन्दनेन पूजं अकासि ।

सोपि नं अनागते बुद्धो भविस्ससीति व्याकासि ।

तस्स भगवतो धञ्जवती नाम नगरं अहोसि । सुदेवो^३ नाम खत्तियो पिता । अनोमा नाम माता । भट्ठसालो च जितमित्तो च अगगसावका । वासेट्ठो नामुपट्ठाको । उत्तरा च फग्गुणी च अगगसाविका । महासोणदक्खो नाम बोधि । सरीरं अट्ठासीतिहत्थुब्बेधं अहोसि । नवुतिवस्स-सहस्सानि आयूतिः—

“पदुमस्स अपरेन सम्बुद्धो दिपदुत्तमो ।

नारदो नाम नामेन असमो अप्पटिपुग्गलो” ॥ ति ।

§ ११. भगवा पदुमुत्तरो ।

नारदबुद्धस्स अपरभागे इतो सतसहस्रकप्पमत्थके एकास्मि कप्पे एकोव पदुमुत्तरबुद्धो नाम उदपादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाता । पठमे कोटिसतसहस्रभिक्षू अहेमुं । दुतिये वेभारपब्बते नवुतिकोटिसहस्सानि । ततिये अमीतिकोटिसहस्सानि ।

तदा बोधिसत्तो जटिलो नाम महारट्ठियो हुत्वा बुद्धपमुखस्स संघस्स तिचीवरदानं अदासि ।

सोपि नं अनागते बुद्धो भविस्समीति व्याकासि ।

पदुमुत्तरस्स पन भगवतो काले तिथिया नाम नाहेमुं । सब्बे देवमनुस्सा नं बुद्धमेव सरणं अगमंमु । तस्स नगरं हंसवती नाम अहोसि । पिता आनन्दो नाम खत्तियो । माता सुजाता नाम । देवलो च सुजातो च अगगसावका । सुमनो नाम उपट्ठाको । अमिता च असमा च अगगसाविका । सालरुक्खो च बोधि । सरीरं अट्ठासीतिहत्थुब्बेधं अहोमि । सरीरप्पभा समन्ततो द्वादसयोजनानि गण्हि । वस्स-सतसहस्रं आयूतिः—

“नारदस्स अपरेन सम्बुद्धो दिपदुत्तमो ।

पदुमुत्तरो नाम जिनो अक्खोब्भो सागरुपमो” ॥ ति ।

§ १२. भगवा सुमेधो

तस्स अपरभागे तिमकप्पमतसहस्मानि अतिक्कमित्त्वा सुमेधो सुजातो चाति एकास्मि कप्पे द्वे बुद्धा निव्वन्तिमु ।

सुमेधस्सापि तयो सावकसन्निपाता । पठमसन्निपाते सुदस्सननगरं कोटिमत्तं खीणामवा अहेमुं । दुतिये नवुति कोटियो । ततिये असीति कोटियो । तदा बोधिसत्तो उत्तरो नाम [३७] माणवो हुत्वा निदहित्वा ठपितं येव [३७] अमीतिकोटिधनं विस्सज्जेत्वा बुद्धपमुखस्स संघस्स महादानं दत्त्वा धम्मं सुत्वा सरणेमु पतिट्ठाय निक्खमित्त्वा पब्बजि ।

सोपि नं अनागते बुद्धो भविस्समीति व्याकासि ।

सुमेधस्स भगवतो सुदस्सनं नाम नगरं अहोसि । सुदत्तो नाम राजा पिता । मातापि सुदस्सना नाम । सरणो च सब्बकामो च द्वे अगगसावका । सागरो नाम उपट्ठाको । रामा च सुरामा च द्वे अगगसाविका । महानीपरुक्खो बोधि । सरीरं अट्ठासीतिहत्थुब्बेधं अहोसि । आयु नवुतिवस्ससहस्सानीति ।

“पदुमुत्तरस्स अपरेन सुमेधो नाम नायको ।
दुरासदो उगतेजो सब्बलोकुत्तमो मुनी” ॥ ति ।

§ १३. भगवा सुजातो

तस्स अपरभागे सुजातो नाम सत्था उदपादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाता । पठमसन्निपाते सट्ठिभिक्षुसहस्सानि अहेमुं । दुतिये पञ्जासं । ततिये चत्तारीमं ।

तदा बोधिसत्तो चक्कवत्ती राजा हुत्वा ‘बुद्धो उपपन्नोति’ सुत्वा उपसंकमित्वा धम्मं सुत्वा बुद्धपमुखस्स संघस्स सद्धि सत्तहि रतनेहि चतुमहादीपरज्जं दत्त्वा सत्थुसन्तिके पव्वजि । सकलरट्ठवासिनो रट्ठुपादं गहेत्वा आरामिककिच्चं साधेन्ता बुद्धपमुखस्स संघस्स निच्चं महादानं अदंसु । सोपि नं^१ सत्था व्याकासि ।

तस्स भगवतो नगरं सुमंगलं नाम अहोसि । उगतो नाम राजा पिता । पभावती नाम माता । सुदस्सतो च देवो च अगगसावका । नारदो नाम उपट्ठाको । नागा च नागसमाला च अगगसाविका । महावेणुगुक्खो बोधि । सो किर मन्दच्छिद्धो धनक्खन्धो उपरि माहासाखाहि मोरपिञ्जकलापो विय विरोचित्थ । तस्स भगवतो सरीरं पण्णासहत्थुब्बेधं अहोसि । आयु नवुतिवस्ससहस्सानीतिः—

“तत्थेव मण्डकण्णम्हि सुजातो नाम नायको ।
सीहहनू सभक्खन्धो अप्पमेय्यो दुरासदो ॥” ति ।

§ १४. भगव पियदस्सी

तस्स अपरभागे इतो अट्ठारसकप्पसतमत्थके एकस्मि कप्पे पियदस्सी अत्थदस्सी धम्मदस्सीति तयो बुद्धा निब्बत्तिमु ।

पियदस्सिस्सपि तयो सावकसन्निपाता । पठमे कोटिसतसहस्सं भिक्खु अहेमुं । दुतिये नवुतिकोटियो । ततिये असीतिकोटियोति ।

तदा बोधिसत्तो कस्सपो नाम माणवो तिण्णं वेदानं पारं गतोव हुत्वा सत्थुधम्मदेसनं सुत्वा कोटिसतसहस्सधनपरिच्चागेन [३८] संधारामं कारेत्वा सरणेमु च सीलेमु च पतिट्ठासि ।

अथ नं सत्था अट्ठारसकप्पसतच्चयेन बुद्धो भविस्ससीति व्याकासि ।

तस्स भगवतो अनोमं नाम नगरं अहोसि । पिता सुदिन्नो नाम राजा । माता चन्दा नाम । पालितो च [३८] सब्बदस्सी च अगगसावका । सोभितो नामुपट्ठाको । सुजाता च धम्मदिन्ना च अगगसाविका । पियंगुगुक्खो बोधि । सरीरं असीतिहत्थुब्बेधं अहोसि । नवुतिवस्ससहस्सानि आयूतिः—

“सुजातस्स अपरेन सयम्भू लोकनायको ।
दुरासदो असमसमो पियदस्सि महायसो ॥” ति ।

§ १५. भगवा अत्थदस्सी

तस्स अपरभागे अत्थदस्सी नाम सत्था उदपादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाता । पठमे अट्ठनवुति भिक्खुसतसहस्सानि अहेमुं । दुतिये अट्ठासीतिसतसहस्सानि । तथा ततिये ।

तदा बोधिसत्तो सुमीमो नाम महिद्धिकतापसो हुत्वा देवलोकतो मन्दारवपुष्पछत्तं आहरित्वा सत्थारं पूजसि ।

सोपि नं बुद्धो भविस्ससीति व्याकासि ।

तस्स भगवतो सोभितं नाम नगरं अहोसि । सागरो नाम राजा पिता । सुदस्सना नाम माता । सन्तो च उपसन्तो च अगगसावका । अभयो नामुपट्ठाको । धम्मा च सुधम्मा च अगगसाविका । चम्पकरक्खो बोधि ।

१ रो०-सोपि तं व्याकासि ।

सरीरं असीनिहत्युब्बेधं अहोसि । सरीरप्पभा समन्ततो सब्बकालं योजनमत्तं फरित्वा अट्ठासि । आयु वस्सस-
तसहस्सन्तिः—

“तत्थेव मण्डकप्पम्हि अत्थदस्सी नरासभो ।
महातमं निहत्त्वान पत्तो सब्बोधिमुत्तम” ॥ न्ति ।

§ १६. भगवा धम्मवस्सी

तस्स अपरभागे धम्मदस्सी नाम सत्था उदपादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाता । पठमे कोटिसत्तं भिक्खू अहेसुं । दुतिये सत्तति कोटियो । ततिये असीति कोटियो । तदा बोधिसत्तो सक्को देवराजा हुत्वा दिव्वगन्धपुप्फेहि च दिव्वतुरियेहि च पूजं अकासि ।

सोपि नं व्याकासि ।

तस्स भगवतो सरणं नाम नगरं अहोसि । पिता सरणो नाम राजा । माता सुनन्दा नाम । पदुमो च फुस्सदेवो च अगगसावका । सुनेत्तो नामुपट्ठाको । खेमा च सब्बनामा च अगगसाविका । रत्तकुर-
वकरुक्खो बोधि बिम्बिजालो तिपि वुच्चति । सरीरं पनस्स असीतिहत्युब्बेधं अहोसि । वस्ससतसहस्सं आयूतिः—

“तत्थेव मण्डकप्पम्हि धम्मदस्सि महायसो ।
तमन्धकारं विधमेत्वा अतिरोचति सदेवके” ॥ ति । [३९]

§ १७. भगवा सिद्धत्थो

तस्स अपरभागे इतो चतुनवुतिकप्पमत्थके एकस्मि कप्पे एकोव सिद्धत्थो नाम बुद्धो उदपादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाता । पठमसन्निपाते कोटिसतसहस्सं भिक्खू अहेसुं । दुतिये नवुति कोटियो । ततिये असीति कोटियो ।

तदा बोधिसत्तो उगगतेजो अभिञ्जाबलसम्पन्नो मंगलो नाम तापसो हुत्वा महाजम्बुफलं आह-
रित्वा तथागतस्स अदासि ।

सत्था तं फलं परिभुञ्जित्वा चतुनवुतिकप्पमत्थके बुद्धो भविस्ससीनि [३९] बोधिसत्तं व्याकासि ।

तस्स भगवतो नगरं वेभारं नाम अहोसि । पिता जयसेनो नाम राजा । माता सुफस्सा नाम । सम्बहुलो च सुमित्तो च अगगसावका । रेवतो नामुपट्ठाको । सीवली च सुगमा च अगगसाविका । कणिकार-
रुक्खो बोधि । सरीरं सट्ठिहत्युब्बेधं अहोसि । वस्ससतसहस्सं आयूतिः—

“धम्मदस्सिस्स अपरेन सिद्धत्थो नाम नायको ।
निहन्तिवा तमं सब्बं सुरियोवब्भुगतो यथा” ॥ ति ।

§ १८. भगवा तिस्सो

तस्स अपरभागे इतो द्वानवुतिकप्पमत्थके तिस्सो फुस्सोति एकस्मि कप्पे द्वे बुद्धा निव्वत्तिमु ।

तिस्सस्स भगवतो तयो सावकसन्निपाता । पठमसन्निपाते भिक्खूनं कोटिसत्तं अहोसि । दुतिये नवुति कोटियो । ततिये असीति कोटिको ।

तदा बोधिसत्तो महाभोगो महायसो सुजातो नाम खत्तियो हुत्वा इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा मर्हिद्धिक-
भावं पत्वा बुद्धो उप्पन्नोति सुत्वा दिव्वं मन्दारवपदुमं पारिच्छत्तकपुप्फानि च आदाय चतुपरिसमज्जे गच्छन्नं
तथागतं पूजेसि, आकासे पुप्फवितानं अकासि ।

सोपि नं सत्था इतो द्वे नवुतिकप्पे बुद्धो भविस्ससीति व्याकासि ।

तस्स भगवतो खेमं नाम नगरं अहोसि । पिता जनसन्धो नाम खत्तियो । माता पदुमा नाम । ब्रह्मदेवो च उदयो च अगगसावका । सम्भवो नामुपट्ठाको । फुस्सा च सुदत्ता च अगगसाविका । असनरुक्खो बोधि । सरीरं सट्ठिहत्युब्बेधं अहोसि । वस्ससतसहस्सं आयूतिः—

“सिद्धत्थस्स अपरेन असमो अप्पटिपुगलो ।
अनन्तसीलो अमिनयसो तस्सो लोकगनायको” ॥ ति ।

§ १९. भगवा फुस्सो

तस्स अपरभागे फुस्सो नाम सत्था उदपादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाता । पठमसन्निपाते सट्-
ठिभिक्षुसत्तसहस्सानि अहेमुं । दुतिये पण्णास, ततिये द्वत्तिस ।

तदा बोधिसत्तो विजितावी नाम खत्तियो हुत्वा महारज्जं पहाय सत्थुसन्तिके पब्बजित्वा
तीणि [40] पिट्ठकानि उग्गहेत्वा महाजनस्स धम्मकथं कयेसि । सीलपारमिं च पूरेसि ।

सोपि नं बुद्धो तथेव व्याकासि ।

तस्स भगवतो कासि नाम नगरं अहोसि । जयसेनो नाम राजा पिता । सिरिमा नाम माता ।
सुरक्खितो च धम्मसेनो च अगगसावका । सभियो नामुपट्ठाको । चाला च उपचाला च अगगसाविका ।
आमलकरुक्खो बोधि । सरीरं अट्ठपण्णासहत्थुब्बेधं अहोसि । नवुतिवस्ससहस्सानि आयूतिः—

“तथेव मण्डकप्पम्हि अहु सत्था अनुत्तरो ।

अनूपमो असमसमो फुस्सो लोकगनायको” ॥ ति । [४०]

§ २०. भगवा विपस्सी

तस्स अपरभागे इतो एकनवुतिकप्पे विपस्सी नाम भगवा उदपादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाता ।
पठमसन्निपाते अट्ठसट्ठि भिक्षुसत्तसहस्सं अहोसि । दुतिये एकसत्तसहस्सं । ततिये असीति सहस्सानि ।

तदा बोधिसत्तो महिद्धिको महानुभावो अनुलो नाम नागराजा हुत्वा सत्तरतनखचितं सोवण्णमयं
पीठं भगवतो अदासि ।

सोपि नं इतो एकनवुतिकप्पे बुद्धो भविस्ससीति व्याकासि ।

तस्स भगवतो बन्धुमती नाम नगरं अहोसि । बन्धुमा नाम राजा पिता । बन्धुमती नाम माता ।
खण्डो च तस्सो च अगगसावका । असोको नामुपट्ठाको । चन्दा च चन्दमिता च अगगसाविका । पाटलीरुक्खो
बोधि । सरीरं असीतिहत्थुब्बेधं अहोसि । सरीरप्पभा सदा सत्तयोजनानि फरित्वा अट्ठासि । असीतिवस्स-
सहस्सानि आयूतिः—

“फुस्सस्स अपरेन सम्बुद्धो दिपदुत्तमो ।

विपस्सी नाम नामेन लोके उप्पज्जि चक्खुमा ॥” ति ।

§ २१. भगवा सिखी

तस्स अपरभागे इतो एकत्तिसे कप्पे सिखी च वेस्सभू चाति द्वे बुद्धा अहेमुं ।

सिखिस्सापि तयो सावकसन्निपाता । पठमसन्निपाते भिक्षुसत्तसहस्सं अहोसि । दुतिये असीति-
सहस्सानि । ततिये सत्ति ।

तदा बोधिसत्तो अरिन्दमो नाम राजा हुत्वा बुद्धपमुखस्स संघस्स सचीवरं महादानं पवत्तेत्वा
सत्तरतनपतिमण्डितं हत्थिरतनं दत्वा हत्थिप्पमाणं कत्वा कप्पियभण्डं अदासि ।

सोपि नं इतो एकत्तिसे कप्पे बुद्धो भविस्ससीति व्याकासि ।

तस्स पन भगवतो अरुणावती नाम नगरं अहोसि । अरुणो नाम खत्तियो पिता । पभावती नाम
माता । अभिभू च सम्ह्वो च अगगसावका । खेमकरो नामुपट्ठाको । मखिला च पदुमा च अगगसाविका । पुण्डरी-
करुक्खो बोधि [41] सरीरं सत्तितिसहत्थुब्बेधं अहोसि । सरीरप्पभा योजनत्तयं फरित्वा अट्ठासि । सत्तितिस-
वस्ससहस्सानि आयूतिः—

“विपस्सिस्स अपरेन सम्बुद्धो दिपदुत्तमो ।

सिखिहूवयो नाम जिनो असमो अप्पटिपुगलो ॥” ति ।

§ २२. भगवा वेस्सभू

तस्स अपरभागे वेस्सभू नाम सत्था उदपादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाता । पठमसन्निपाते असीति-
भिक्षुसतसहस्सानि अहेसुं, दुत्तिथे सत्ति, तत्तिथे सट्ठि ।

तदा बोधिसत्तो मुदस्सनो नाम राजा हुत्वा बुद्धपमुखस्स संघस्स सचीवरं महादानं दत्वा तस्स
सन्तिके पव्वजित्वा आचारगुणसम्पन्नो बुद्धरतने चित्तिकारपीतिबहुलो अहोसि । सोपि नं भगवा इतो एकत्तिसे
कप्पे बुद्धो भविस्ससीति व्याकासि ।

तस्स पन भगवतो अनूपमं नाम नगरं अहोसि । सुप्पतीतो नाम[४१] राजा पिता । यसवती नाम माता ।
सोणो च उत्तरो च अगसावका । उपसन्तो नाम उपट्ठाको । दामा च समाला च अगसाविका । सालरुक्खो
बोधि । सरीरं सट्ठिहत्थुब्बेधं अहोसि । सट्ठिवस्ससहस्सानि आयूतिः—

“तत्थेव मण्डकप्पम्हि असमो अप्पटिपुग्गलो ।

वेस्सभू नाम नामेन लोके उप्पज्जि सो जिनो ॥” ति ।

§ २३. भगवा ककुसन्धो

तस्स अपरभागे इमस्मिं कप्पे चत्तारो बुद्धा निब्बत्ता—ककुसन्धो, कोणागमणो, कस्सपो, अम्हाकं
भगवाति ।

ककुसन्धस्स भगवतो एकोव सन्निपातो । तत्थ चत्ताळीसं भिक्षुसहस्सानि अहेसुं ।

तदा बोधिसत्तो खेमो नाम राजा हुत्वा बुद्धपमुखस्स संघस्स सपत्तचीवरं महादानञ्चेव अञ्ज-
नादि भेसज्जानि च दत्वा सत्थुधम्मदेसनं सुत्वा पव्वजि ।

सोपि नं सत्था व्याकासि । ककुसन्धस्स पन भगवतो खेमं नाम नगरं अहोसि । अग्गिदत्तो नाम
ब्राह्मणो पिता । विसाखा नाम ब्राह्मणी माता । विधुरो च संजीवो च अगसावका । बुद्धिजो नाम उपट्ठाको ।
सामा च चम्पका च अगसाविका । महासिरीमरुक्खो बोधि । सरीरं चत्ताळीसत्थुब्बेधं अहोसि । चत्ताळीसं वस्स-
सहस्सानि आयूतिः—

“वेस्सभुस्स अपरेन सम्बुद्धो दिपदुत्तमो ।

ककुसन्धो नाम नामेन अप्पमेय्यो दुरासदो ॥” ति ।

§ २४. भगवा कोणागमणो

तस्स अपरभागे कोणागमणो नाम सत्था उदपादि । तस्सापि एको सावकसन्निपातो । तत्थ तिस्रं
भिक्षुसहस्सानि अहेसुं । तदा बोधिसत्तो पव्वतो नाम राजा हुत्वा अमञ्चगणपरिवृतो सत्थुसन्तिकं गन्त्वा
धम्मदेसनं सुत्वा बुद्धपमुखं भिक्षुसंघं निमन्तेत्वा महादानं पवत्तेत्वा पत्तुण्णं चीनपट्टं कोसेय्यं कम्बलं
दुकूलानि चैव सुवण्णपट्टकं दत्वा सत्थुसन्तिके पव्वजि ।

सोपि नं व्याकासि ।

तस्स भगवतो सोभवती नाम नगरं अहोसि । यञ्जदत्तो नाम ब्राह्मणो पिता । उत्तग नाम
ब्राह्मणी माता । भीयसो च उत्तरो च अगसावका । सोत्थिजो नाम उपट्ठाको । समुदा च उत्तरा च अग-
साविका । उदुम्बररुक्खो बोधि । सरीरं तिस्रिहत्थुब्बेधं अहोसि । तिस्रवस्ससहस्सानि आयूतिः—

“ककुसन्धस्स अपरेन सम्बुद्धो दिपदुत्तमो ।

कोणागमणो नाम जिनो लोकजेट्ठो नरासभो ॥” ति ।

§ २५. भगवा कस्सपो

तस्स अपरभागे कस्सपो नाम सत्था लोके उदपादि । तस्सापि एको सावकसन्निपातो । तत्थ
वीसतिभिक्षुसहस्सानि अहेसुं ।

तदा बोधिमत्तो जोतिपालो नाम माणवो हुत्वा [४२] तिष्ठणं वेदानं पारगू भूमियं च अन्तळिक्खे च पाकटो घटीकाग्गस्स कुम्भकाग्गस्स मित्तो अहोसि । सो तेन सद्धिं सत्थारं उपसंक्रमित्वा धम्मकथं सुत्वा पब्बजित्वा आग्गविरियो तीणि पिटकानि उग्गहेत्वा वत्तावत्तसम्पत्तिया बुद्धमासनं मोभेमि ।

मोपि नं सत्था व्याकासि ।

तस्स भगवतो जाननगरं वाराणसी नाम अहोसि । ब्रह्मदत्तो नाम ब्राह्मणो पिता । धनवती नाम ब्राह्मणी माता । तस्मो च भारद्वाजो च अग्गसावका । सव्वमित्तो नाम उपट्ठाको । अनुला च उरुवेला च अग्गसाविका । निग्रोधरुक्खो बोधि । सरीरं वीसतिहत्थुब्बेधं अहोसि । वीसतीवस्ससहस्सानि आयूतिः—

“कोणागमणस्स अपरेण सम्बुद्धो दिपदुत्तमो ।

कस्सपो नाम सो जिनो धम्मराजा पभं करो ॥” ति ।

§ २६. सब्बे बुद्धा

यस्मिं पन कप्पे दीपंकरदसवल्लो उदपादि तस्मिं अज्जेपि तयो बुद्धा अहेसुं । तेमं सन्तिका बोधि-सत्तस्स व्याकरणं नत्थि, [४३] तस्मा ते इध न दस्सिता । अट्ठकथायं पन तम्हा कप्पा पट्ठाय सब्बेपि बुद्धे दस्सेतुं इदं वुत्तंः—

“तण्हं करो मेधं करो अथोपि सरणं करो ।
दीपं करो च सम्बुद्धो कोण्डञ्जो दिपदुत्तमो ॥
मंगलो च सुमनो च रेवतो सोभितो मुनि ।
अनोमदस्सी पदुमो नारदो पदुमुत्तरो ॥
सुमेधो च मुजातो च पियदस्सी महायसो ।
अत्थदस्सी धम्मदस्सी सिद्धत्थो लोकनायको ॥
तिस्सो फुस्सो^१ च सम्बुद्धो विपस्सी सिखी वेस्सभू ।
ककुसन्धो कोणागमणो कस्सपो चापि नायको ॥
एते अहेसुं सम्बुद्धा वीतरागा समाहिता ।
सतरंसीव उपपन्ना महातमविनोदना ।
जलित्वा अग्गिक्खन्धाव निब्बुता ते ससावका ॥” ति ।

§ २७. कताभिनीहारानं बोधिसत्तानं आनिसंसा

तत्थ अम्हाकं बोधिसत्तो दीपंकरादीनं चतुर्वीसतिया बुद्धानं सन्तिके अधिकारं करोन्तो कप्पसत-सहस्साधिकानि चत्तारि असंखेय्यानि आगतो । कस्सपस्स पन भगवतो ओरभागे ठपेत्वा इमं सम्मासम्बुद्धं अज्जो बुद्धो नाम नत्थि । इति दीपंकरादीनं चतुर्वीसतिया बुद्धानं सन्तिके लद्धव्याकरणो पन बोधिसत्तो येन पन तेन—

“मनुस्सत्तं लिगसम्पत्ति हेतु सत्थारदस्सनं ।

पब्बज्जा गुणसम्पत्ति अधिकारो च छन्दता ॥

अट्ठधम्मसमाधाना अभिनीहारो समिज्झती ॥” ति । [४३]

इमे अट्ठ धम्मे समोधानेत्वा दीपंकरपादमूले कताभिनीहारेन “हन्द बुद्धकरे धम्मे विचिनामि इतो-चित्तो” ति उस्साहं कत्वा “विचिन्तो तदा दक्खि पठमं दानपारमि” न्ति दानपारमितादयो बुद्धकारकधम्मा दिट्ठा । ते पूरेन्तो याव वेस्सन्तरत्तभावा आगमि । आगच्छन्तो च^२ ये ते कताभिनीहारानं बोधिसत्तानं आनिसंसा संवण्णिताः—

“एवं सब्बंगसम्पन्ना बोधिया नियता नरा ।
 संसरं दीघमद्धानं कप्पकोटिसतेहिपि ॥
 अवीचिम्हि न उप्पज्जन्ति तथा लोकन्तरेसु च ।
 निज्झामतण्हा खुप्पिपासा न होन्ति कालकञ्जका^१ ॥
 न होन्ति खुद्का पाणा न उप्पज्जन्तापि दुग्गति ।
 जायमाना मनुस्सेसु जच्चन्धा न भवन्ति ते ॥ [44]
 सोतवेकल्लता नत्थि न भवन्ति मूगपक्खिका ।
 इत्थिभावं न गच्छन्ति उभतोव्यञ्जनपण्डका ॥
 न भवन्ति परियापन्ना बोधिया नियता नरा ।
 मुत्ता आनन्तरिकेहि सब्बत्थ सुद्धगोचरा ॥
 मिच्छादिट्ठि न सेवन्ति कम्मकिरियदस्सना ।
 वसमानापि सग्गेसु असञ्जं न उपपज्जरे ॥
 सुद्धावासेसु देवेषु हेतु नाम न विज्जति ।
 नेक्खम्मनिन्ना सप्पुग्गिमा विसंयुत्ता भवाभवे ।
 चरन्ति लोकत्थवरियाय पूरेन्ता मव्वपारमी ॥” ति ।

§ २८. पारमियो पूरेसि

(१. दानपारमी)

ते आनिसंसे अधिगन्त्वाव आगतो । पारमियो पूरेन्तस्स चस्स अकित्तिब्राह्मणकाले, संख-
 ब्राह्मणकाले, धनञ्जयराजकाले, महामुदस्सनकाले, महागोविन्दकाले, निमिमहागजकाले, चन्दकुमारकाले,
 विसय्हसेट्ठिकाले, सिविराजकाले, वेस्सन्तरकालेति दानपारमिताय पूरित्तभावानं परिमाणं नाम नत्थि ।
 एकन्तेन पनस्स समपण्डितजातकेः—

“भिक्षाय उपगतं दिस्वा सकत्तानं परिच्चजि ।

दानेन मे समो नत्थी एसा मे दानपारमी ॥” ति ।

एवं अतपरिच्चागं करोन्तस्स दानपारमिता परमत्थपारमिता नाम जाता ।

(२. सीलपारमी)

तथा सीलवनागराजकाले, चम्पेय्यनागराजकाले, भूर्गिदन्तनागराजकाले, छद्दन्तनागराजकाले,
 जयहिंस [४८] राजस्स पुत्तअलीनसत्तकुमारकालेति^२ सीलपारमिताय परिपूर्णित्तभावानं परिमाणं नाम
 नत्थि । एकन्तेन पनस्स संखपालजातकेः—

“मुलेहि विज्जयन्तेपि^३ कोट्टयन्तेपि सत्तिहि ।

भोजपुत्ते न कुप्पामि एसा^४ मे सीलपारमी ॥” ति ।

एवं अतपरिच्चागं करोन्तस्स सीलपारमिता परमत्थपारमी नाम जाता ।

(३. नेक्खम्मपारमी)

तथा सोमनस्सकुमारकाले, हत्थिपालकुमारकाले, अयोधरपण्डितकालेति महारज्जं पत्ताय नेक्खम्म-
 पारमिताय पूरित्तभावानं परिमाणं नाम नत्थि । एकन्तेन पनस्स चूलमुत्तमोमजातकेः—[45]

१ स्या०—कालकञ्जिका । २ स्या०—जयबिस्सराजपुत्तकाले अलीनसत्तकुमारकालेति । ३ रो०—मुलेहीपि
 विज्जयन्तो । ४ रो०—एस ।

“महारज्जं हत्थगतं खेलपिण्डं व छड्ढियं ।

चजतो न होति लग्नं एसा मे नेक्खम्मपारमी ॥” ति ।

एवं निस्सगताय रज्जं छड्ढेत्वा निक्खमन्तस्स नेक्खम्मपारमी परमत्थपारमी नाम जाता ।

(४ पञ्ञापारमी)

तथा विधूरपण्डितकाले, महागोविन्दपण्डितकाले, कुद्दालपण्डितकाले, अरकपण्डितकाले, बोधिपरिब्बाजककाले, महोसधपण्डितकालेति, पञ्ञापारमिया पूरितत्तभावानं परिमाणं नाम नत्थि । एकन्तेन पनस्स सत्तुभत्तजातके^१ सेनकपण्डितकालेः—

“पञ्ञाय विचिन्तोहं ब्राह्मणं मोचयिं दुखा ।

पञ्ञाय मे समो नत्थि एसा मे पञ्ञापारमी ॥” ति ।

अन्तोहस्तगतं सप्पं दस्सेन्तस्स पञ्ञापारमी परमत्थपारमी नाम जाता ।

(५. विरियपारमी)

तथा विरियपारमितादीनम्पि पूरितत्तभावानं परिमाणं नाम नत्थि । एकन्तेन पनस्स महाजनकजातकेः—

“अतीरदस्सी जलमज्झे हता सब्बेव मानुसा ।

चित्तस्स अज्झथा नत्थि एसा मे विरियपारमी ॥” ति ।

एवं महासमुद्धे तरन्तस्स विरियपारमी परमत्थपारमी नाम जाता ।

(६. खन्तिपारमी)

खन्तिवादजातकेः—

“अचेतनं व कोट्टेन्ते तिण्हेन फरसुना मम ।

कासिराजे न कुप्पामि एसा मे खन्तिपारमी ॥” ति ।

एवं अचेतनभावेन विय महादुक्खं अधिवासेन्तस्स खन्तिपारमी परमत्थपारमी नाम जाता ।

(७. सच्चपारमी)

महासुतसोमजातकेः—

“सच्चवाचं अनुरक्खन्तो चजित्वा मम जीवितं ।

मोचयिं एकसतं खत्तिये एसा मे सच्चपारमी ॥” ति । [४५]

एवं जीवितं चजित्वा सच्चमनुरक्खन्तस्स सच्चपारमी परमत्थपारमी नाम जाता ।

(८. अधिष्ठानपारमी)

मूगपक्खजातकेः—

“माता पिता न मे देस्सा नपि मे देस्सं महायसं ।

सब्बञ्जुतं पियं मय्हं तस्मा वतमधिठ्ठहि ॥” न्ति ।

एव जीवितम्पि चजित्वा वतं अधिठ्ठहन्तस्स अधिष्ठानपारमी परमत्थपारमी नाम जाता ।

(९. मेत्तापारमी)

एकराजजातकेः—

“न मं कोचि उत्तसति नपिहं भायामि कस्सचि ।

मेत्ताबलेनुपत्थद्धो रमामि पवने सदा ॥” ति ।

एवं जीवितम्पि अनवलोकेत्वा मेत्तायन्तस्स मेत्तापारमी परमत्थपारमी नाम जाता ।

(१०. उपेक्खापारमी)

लोमहंसजातकः—

“सुसाने सेय्यं कप्पेमि छवट्ठि^१ उपधायहं ।

गोमण्डला उपगन्त्वा रूपं दस्सेन्तनप्पक ॥” न्ति ।

एवं गामदारकेसु निट्ठुभनादीहि चैव मालागन्धुपहारादीहि च सुखदुःखं उप्पादेन्तेसुपि उपेक्खं अनतिवत्तन्तस्स उपेक्खापारमी परमत्थपारमी नाम जाता ।

अयमेत्थ संखेपो । वित्थारतो पनेस अत्थो चरियापिटकतो गहेत्तब्बो । एवं पारमियो पूरेत्वा वेस्सन्तरत्तभावे ठितोः—

“अचेतनायं पठवी अविज्झाय सुखं दुःखं ।

सापि दानबला मय्हं सत्तक्खत्तुं पकम्पथा ॥” ति ।

एवं महापठविकम्पनानि महापुञ्जानि करित्वा आयुपरियोसाने ततो चुतो तुसितभवने निब्बत्ति । इति दीपंकरपादमूलतो पट्ठाय याव अयं तुसितपुरे निब्बत्ति एत्तकं ठानं दूरेनिदानं नामाति वेदितब्बं ।

दूरेनिदानं निष्ठितं

४. अविदूरेनिदानं

§ २९. तीणि हळाहळानि

तुसितपुरे वसन्ते येव पन बोधिसत्ते बुद्धहळा^२हळं नाम उदपादि । लोकास्मि हि तीणि हळाहळानि उप्पज्जन्ति—कप्पहळाहळं, बुद्धहळाहळं चक्कवत्तिहळाहळन्ति ।

(१. कप्पहळाहळं)

तत्थ वस्ससतसहस्सस्स अच्चयेन कप्पुट्ठानं भविस्सतीति लोकव्यूहा नाम कामावचरदेवा मुत्त-सिरा विकिण्णकेसा रुदम्मखा अस्सूनि हत्येहि पुञ्छमाना रत्तवत्थनिवत्था अतिविय विरूपवेसधारिनो हुत्वा मनुस्सपथे विचरन्ता एवं आरोचेन्ति—“मारिसा ! इतो वस्ससतसहस्सस्स अच्चयेन कप्पुट्ठानं भविस्सति । अयं लोको विनस्सिस्सति । महासमुदोपि [४७] सुस्सिस्सति । अयं च महापठवी सिनेह च पब्बतराजा उड्डयिहस्सन्ति विनस्सिस्सन्ति । याव ब्रह्मलोका लोकविनासो भविस्सति । मेत्तं मारिसा ! भावेथ । करुणं मुदितं उपेक्खं मारिसा ! भावेथ । मातरं उपट्ठहथ, पितरं [४६] उपट्ठहथ कुलेजेट्ठाप-चायिनो होथा ति । इदं कप्पहळाहळं नाम ।

(२. बुद्धहळाहळं)

वस्ससहस्सस्स अच्चयेन पन सब्बञ्जू बुद्धो लोके उप्पज्जिस्सतीति लोकपालदेवता—‘इतो मारिसा ! वस्ससहस्सस्स अच्चयेन बुद्धो लोके उप्पज्जिस्सतीति उग्घोसेन्ता आहिण्डन्ति—इदं बुद्धहळाहळं नाम ।

(३. चक्कवत्तिहळाहळं)

वस्ससतस्स पन अच्चयेन चक्कवत्ती राजा उप्पज्जिस्सतीति देवतायेव—इतो मारिसा ! वस्ससतच्चयेन चक्कवत्तिको राजा लोके उप्पज्जिस्सतीति—उग्घोसेन्तियो आहिण्डन्ति । इदं चक्कवत्तिहळाहळं नाम ।

§ ३०. देवतायाचनं

इमानि तीणि हळाहळानि महन्तानि होन्ति । तेसु बुद्धहळाहळसदं सुत्वा सकलदससहस्सचक्कवाळे देवता एकतो सन्निपतित्वा असुको नाम सत्तो बुद्धो भविस्सतीति ज्ञत्वा तं उपसंक्रमित्वा आयाचन्ति । आयाचमाना च पुब्बनिमित्तेसु उप्पन्नेसु आयाचन्ति । तदा पन सब्बापि ता एकेकचक्कवाळे चातुम्महाराजिकसुयामसन्तुसितनिम्मानरतिपरनिम्मितवसवत्तिमहाब्रह्मेहि सद्धि एकेकचक्कवाळे सन्निपतित्वा तुसितभवने बोधिसत्तस्स सन्तिकं गन्त्वा—मारिसा ! तुम्हेहि दसपारमियो पूरेन्तेहि न सक्कसम्पत्तिं न मारब्रह्मचक्कवत्तिसम्पत्तिं पत्थेन्तेहि पूरिता । लोकनित्थरणत्थाय पन सब्बञ्जुतं पत्थेन्तेहि पूरिता । सो वो इदानि कालो मारिस ! बुद्धत्ताय । समयो मारिस ! बुद्धत्ताया ति—याचिसु ।

§ ३१. पञ्चमहाविलोकनं विलोकेसि

अथ महासत्तो देवतानं पटिञ्जं अदत्वाव कालदीपदेसकुलजनेत्तिआयुपरिच्छेदवसेन पञ्चमहाविलोकनं नाम विलोकेसि ।

(१. कालो)

तत्थ कालो नुखो अकालो नुखो ति पठमं कालं विलोकेसि ।^१

तत्थ वस्ससतसहस्सतो उद्धं वड्ढितआयुकालो कालो नाम न होति । कस्मा ? तदा हि सत्तानं जातिजरामरणानि न पञ्जायति । बुद्धानं च धम्मदेसना तिलक्खणविनिमुत्ता नाम नत्थि । तेसं “अनिच्च दुक्खमनत्ता” ति कथेन्तानं किं ‘नामेतं कथेन्तीति नेव सोतब्बं न सद्धातब्बं मञ्जन्ति । ततो अभिसमयो न होति । तस्मिं असति अनिय्याणिकं सासनं होति । तस्मा सो अकालो ।

वस्ससततो अनआयुकालोपि कालो न होति । कस्मा ? तदा सत्ता उस्सन्नकिलेसा होन्ति । उस्सन्नकिलेसानं च दिन्धोवादो ओवादट्ठाने न तिट्ठति । उदके दण्डराजी विय खिप्पं [48] विगच्छति । तस्मा-सोपि अकालो ।

वस्ससतसहस्सतो पन पट्ठाय हेट्ठाय वस्ससततो पट्ठाय उद्धं आयुकालो कालो नाम । तदा च वस्ससतकालो । अथ महासत्तो निब्बत्तित्तब्बकालोति पस्सि ।

(२. दीपं)

ततो दीपं विलोकेन्तो सपरिवारे चत्तारो दीपे ओलोकेत्वा तीसु दीपेसु बुद्धा न निब्बत्तन्ति, जम्बुदीपे येव निब्बत्तन्तीति दीपं च पस्सि ।

(३. देसो)

ततो जम्बूदीपो [४७] नाम महा दसयोजनसहस्सपरिमाणो । कतरस्मिं नुखो पदेसे बुद्धा निब्बत्तन्तीति ओकासम्पि बिळोकेन्ता मज्झिमं देसं पस्सि । मज्झिमदेसो नाम पुरत्थिमदिसाय कज्जंगलं नाम निगमो, तस्स अपरेन महासाला, ततो परं पच्चन्तिमा जनपदा ओरतो, मज्झे पुब्बदक्खिणाय दिसाय सळलवती नाम नदी, ततो परं पच्चन्तिमा जनपदा ओरतो मज्झे, दक्खिणाय दिसाय सेतकण्णिकं नाम निगमो, ततो परं पच्चन्तिमा जनपदा ओरतो मज्झे, पच्छिमाय दिसाय थूनं नाम ब्राह्मणगामो, ततो परं पच्चन्तिमा जनपदा ओरतो मज्झे, उत्तराय दिसाय उसीरद्धजो नाम पब्बतो, ततो परं पच्चन्तिमा जनपदा

ओरतो मज्जेति एवं विनये वृत्तो पदेसो । सो आयामतो तीणि योजनसतानि वित्थारतो अड्ढतिययोजनानि परिक्षेपतो नवयोजनसतानीति । एतस्मिं पदेसे बुद्धा पच्चेकबुद्धा अगसावका महासावका असीति महासावका चक्कवत्तिराजानो अज्जे च महेसक्खा खत्तियब्राह्मणगहपतिमहासाळा उप्पज्जन्ति ।

इदं चेत्थ कपिलवत्थुक नाम नगरं । तत्थ मया निब्बत्तितब्बन्ति निट्ठं अगमासि ।

(४. कुलं)

ततो कुलं विलोकेन्तो बुद्धा नाम वेस्सकुले वा सुद्धकुले वा न निब्बत्तन्ति । लोकसम्मते पन खत्तियकुले वा ब्राह्मणकुले वाति द्विसु येव कुलेसु निब्बत्तन्ति । इदानि च खत्तियकुलं लोकसम्मतं । तत्थ निब्बत्तिस्सामि ।

सुद्धोदनो नाम राजा मे पिता भविस्सतीति कुलं पस्सि । ततो मातरं विलोकेन्तो' बुद्धमाता नाम लोला मुराधुत्ता न होति, कप्पसतसहस्सं पन पूरितपारमी जातितो पट्ठाय अखण्डपञ्चसीलायेव होति । अयञ्च महामाया नाम देवी एदिसी, अयं च मे माता भविस्सतीति ।

(५. जनेत्तिआयु)

कित्तकं पनस्सा आयूति ? दसन्नं मासानं उपरि सत्तदिवसानि पस्सि ।

§ ३२ पटिसन्धिं गण्हि

इति इम पञ्चमहाविलोकनं विलोकेत्वा-कालो मे मारिसा ! बुद्धभावायाति—देवतानं संगहं करोन्तो पटिञ्जं दत्त्वा गच्छथ तुम्हेति ता देवता उय्योजेत्वा तुसितदेवताहि परिवुतो तुसितपुरे नन्दनवनं पाविसि । सब्ब-देवलोकसु हि नन्दनवनं अत्थियेव । तत्र न देवता “इतो चुतो सुगतिं गच्छ इतो चुतो सुगतिं गच्छा” ति पुब्बे कतकुसलकम्मोकासं [48] सारयमाना विचरन्ति । सो एवं देवताहि कुसलं सारयमानाहि परिवुतो तत्थ विचरन्तो चवित्वा महामायाय देविया कुच्छिस्मि पटिसन्धिं गण्हि । तस्सावीभावत्थं अयं आनुपुब्बी कथा ।

§ ३३. महामायादेवी सुपिनं अद्दस

तदा किर कपिलवत्थुनगरे असाळ्हिनक्खत्तं घुट्ठं अहोसि । महाजनो नक्खत्तं कीळति । महामाया-देवी पुरे पुण्णमाय सत्तमदिवसतो पट्ठाय[४८]विगतमुरापानं मालागन्धविभूतिसम्पन्नं नक्खत्तकीळं अनुभवमाना सत्तमदिवसे पातोव उट्ठाय गन्धोदकेन नहायित्वा चत्तारि सतसहस्सानि विस्सज्जेत्वा महादानं दत्त्वा सब्बालंकारविभूसिता वरभोजनं भुञ्जित्वा उपोसथंगानि अधिट्ठाय अलंकृतपटियत्तं सिरिगम्भं पविसित्वा सिरिसयनेनिपन्ना निदं ओक्कममाना इमं सुपिनं अद्दस ।

चत्तारो किर नं महाराजानो सयनेनेव सद्धिं उक्खिपित्वा हिमवन्तं नेत्वा सट्ठिगोजनिके मनोसिला-तले सत्तयोजनिकस्स महासालरुक्खस्स हेट्ठा टपेत्वा एकमन्तं अट्ठंसु । अथ नेसं देवियो आगन्त्वा देवि अनो-तत्तदहं नेत्वा मनुस्समलहरणत्थं नहापेत्वा दिब्बवत्थं निवासापेत्वा गन्धेहि विलिम्पापेत्वा दिब्बपुष्पाणि पिल-न्धापेत्वा ततो अविदूरे रजतपब्बतो, तस्स अन्तो कणकविमानं अत्थि, तत्थ पाचिनमीसकं दिब्बसयनं पञ्जापेत्वा निपज्जापेसु । अथ बोधिसत्तो सेतवरवारणो हत्वा ततो अविदूरे एको सुवण्णपब्बतो, तत्थ चरित्वा ततो ओरुत्थं रजतपब्बतं अभिरुहित्वा उत्तरदिसतो आगम्म रजतदामवण्णाय सोण्डाय सेतपदुमं गहेत्वा कुञ्चनादं^१ नदित्वा कणकविमानं पविसित्वा मातुसयनं तिवक्खत्तुं पदक्खिणं कत्वा दक्खिणपस्सं फालेत्वा^२ कुच्छि पविट्ठसदिसो अहोसि । एवं उत्तरासाळ्हिनक्खत्तेन पटिसन्धिं गण्हि ।

१ रो०—कोञ्चनादं । २ रो०—तलित्वा ।

§ ३४. ब्राह्मणा आहंसु

पुन दिवसे पबुद्धा देवी नं सुपिनं रञ्जो आरोचेसि । राजा चतुसट्ठमत्ते ब्राह्मणपामोक्खे पक्को-
सापेत्वा हरितुपलित्ताय लाजादीहि कतमंगलसक्काराय भूमिया महारहानि आसनानि पञ्चापेत्वा तत्थ निसि-
न्नानं ब्राह्मणानं सप्पिमधुसक्कराभिसंखतस्स वरपायासस्स सुवण्णरजतपातियो पुरेत्वा सुवण्णरजतपातीहि
येव पटिबुज्जेत्वा अदासि । अञ्जेहि च अहतवत्थकपिलगाविदानादीहि ते संतप्पेसि । अथ नेसं सब्बकामेहि
संतप्पितानं सुपिनं आरोचापेत्वा किं भविस्सतीति पुच्छि ।

ब्राह्मणा आहंसु—“मा चिन्तयि महाराज ! देविया ते कुच्छिम्हि गम्भो पतिट्ठितो । सो [50]
च खो पुरिसगम्भो न इत्थिगम्भो । पुत्तो ते भविस्सति । सो सचे अगारं अज्झावसिस्सति राजा भविस्सति
चक्कवत्ती, सचे अगारा निक्खम्म पब्बजिस्सति बुद्धो भविस्सति लोके विवत्तच्छद्दो” ति ।

§ ३५. द्वित्सपुब्बनिमित्तानि पातुरहंसु

बोधिसत्तस्स पन मातुकुच्छिम्हि पटिसन्धिगहणक्खणे एकप्पहारेनेव सकलदससहस्सी लोकधातु संकम्पि
सम्पकम्पि सम्पवेधि । द्वित्स पुब्बनिमित्तानि पातुरहंसु । दससु चक्कवालसहस्सेसु अप्पमाणो ओभासो पूरि ।
तस्स तं सिरि दट्ठुकामा[४९]विय अन्धा चक्खूनि पटिलभिसु । बधिरा सद्दं सुणिंसु । मूगा समालपिसु । खज्जा
उजुगत्ता अहेसु । पंगुला पदसा गमनं पटिलभिसु । बन्धनगता सब्बसत्ता अन्दुबन्धनादीहि मुच्चिसु । सब्बनरकेसु
अग्नि निब्बायि । पेत्तिविसये खुप्पिपासा वूपसमि । तिरच्छानानं भयं नाहोसि । सब्बसत्तानं रोगो वूपसमि । सब्ब-
सत्ता पिण्वदा अहेसु । मधुरेनाकारेन अस्सा हेसिसु । वारणा गज्जिसु । सब्बतुरियानि सक्कसकिन्नादं मुच्चिसु ।
अघट्टितानि येव मनुस्सानं हत्थूपगादीनि आभरणानि विरविंसु । सब्बदिसा विप्पसन्ना अहेसु । सत्तानं मुखं
उप्पादयमानो मुदुसीतलो वातो वायि । अकालमेघो पवस्सि । पठवितोपि उदकं उब्भिज्जित्वा विस्सन्दि । पविखनो
आकासगमनं विजहिंसु । नदियो असन्दमाना अट्ठंसु । महासमुद्दे मधुरं उदकं अहोसि । सब्बवत्थकमेव पञ्चवण्णेहि
पदुमेहि सञ्छन्नं तलं अहोसि । थलजजलजादीनि सब्बपुप्फानि पुप्फिसु । रुक्खानं खन्धेसु खन्धपदुमानि साखामु
साखापदुमानि लतासु लतापदुमानि पुप्फिसु । थले सिलातलानि भिन्दित्वा उपरूपरि सत्तसत्त हुत्वा दण्डपदुमानि
नाम निक्खमिंसु । आकासे ओलम्बकपदुमानि नाम निब्बत्तिंसु । समन्ततो पुप्फवस्सानि वस्सिसु । आकासे दिब्ब-
तुरियानि वज्जिसु । सकलदससहस्सी लोकधातु वट्टेत्वा विस्सट्ठमालागुळं विय उप्पीळेत्वा वद्धमालाकलापो
विय अलंकतपटियत्तं मालासनं विय च एकमालामालिनी विप्फुरन्तवाळवीजनी पुप्फधूपगन्धपरिवासिता परम-
सोभगप्पत्ता अहोसि ।

§ ३६ बोधिसत्तमातुधम्मता

एवं गहितपटिसन्धिकस्स बोधिसत्तस्स पटिसन्धितो पट्ठाय बोधिसत्तस्स चेव बोधिसत्तमातुया च
उपद्दविनवारणत्थं खग्गहत्था चत्तारो देवपुत्ता आरक्खं गहिंसु । बोधिसत्तमातु पुरिसेसु रागाचित्तं नुप्पज्जि ।
लाभग्गयसग्गप्पत्ता च अहोसि सुखीनि अकिलन्तकाया बोधिसत्तञ्च अन्तो [51] कुच्छिगतं विप्पसन्ने मणिरतने
आवुतपण्डुमुत्तं विय पस्सति । यस्मा च बोधिसत्तेन वसितकुच्छि नाम चेतियगम्भसदिसा न सक्का हीति अञ्जेन
सत्तेन आवसितुं वा परिभुज्जितुं वा तस्मा बोधिसत्तमाता सत्ताहजाते बोधिसत्ते कालं कत्वा तुसितपुरे
निब्बत्ति । यथा च अञ्जा इत्थियो दसमासे अप्पत्वापि अतिक्कमित्वापि निसिन्नापि निपन्नापि विजायन्ति न
एवं बोधिसत्तमाता । सा पन बोधिसत्तं दसमासे कुच्छिना परिहरित्वा ठिताव विजायति । अयं बोधिसत्त-
मातुधम्मता ।

§ ३७ लुम्बिनीवने

महामायापि देवी पत्तेन तेलं विय दसमासे कुच्छिया बोधिसत्तं परिहरित्वा परिपुण्णगम्भा जातिघरं
गन्तुकामा मुद्धोदनमहाराजस्स आरोचेसि—इच्छामहं देव ! कुलसन्तकं [५०] देवदहनगरं गन्तुन्ति । राजा

साधूति सम्पटिच्छित्वा कपिलवत्थुतो याव देवदहनगरा मगं समं कारेत्वा कदलिपुण्णघटधजपताकादीही अलं-
कारापेत्वा देविं सोवण्णसिविकाय निसीदापेत्वा अमच्चसहस्सेन उक्खिपापेत्वा महन्तेन परिवारेन पेसेसि ।

द्विंशं पन नगरानं अन्तरे उभयनगरवासीनम्पि लुम्बिनीवनं नाम मंगलसालवनं अत्थि । तस्मिं
समये मूलतो पट्ठाय याव अगगसाखा सव्वं एकफालिफुल्लं अहोसि । साखन्तरेहि चेव पुप्फन्तरेहि च पञ्च-
वण्णभमरगणा नानप्पकारा च सकुणसंधा मधुरस्सरेन विकूजन्ता विचरन्ति । सकलं लुम्बिनीवनं चित्त-
लतावनसदिसं महानुभावस्स रञ्जो सुसज्जितआपणमण्डलं विय अहोसि ।

देविया तं दिस्वा सालवनकीळं कीळितुकामता उदपादि । अमच्चा देविं गहेत्वा सालवनं
पविसिंमु । सा मंगलसालमूलं गन्त्वा सालसाखायं गण्हितुकामा अहोसि । सालसाखा मुसेदितवेत्तगं विय ओन-
मित्वा देविया हत्थपथं उपगच्छि । सा हत्थं पसारेत्वा साखं अगहेसि । तावदेव चस्सा कम्मजवाता चलिंमु ।
अथस्सा साणि परिक्विपित्वा महाजोने परिक्वमि । सालसाखं गहेत्वा तिट्ठमानाय एव चस्सा गम्भवुट्ठानं
अहोसि । तं खणं येव चत्तारोपि सुद्धचित्ता महाब्रह्मानो सुवण्णजालं आदाय सम्पत्ता तेन सुवण्णजालेन बोधि-
सत्तं सम्पटिच्छित्वा मातुपुरतो ठपेत्वा “अत्तमना देवि ! होहि महेसक्को ते पुत्तो उप्पन्नो” ति आहंमु ।

यथा पन अञ्जे सत्ता मातु कुच्छित्तो निक्खमन्ता पटिक्कूलेन असुचिना मक्खिता निक्खमन्ति
न एवं बोधिसत्तो । बोधिसत्तो [५२] पन धम्मासनतो ओतरन्तो धम्मकथिको विय, निस्सेणितो ओत-
रन्तो पुरिसो विय च, द्वे च हत्थे द्वे च पादे पसारेत्वा ठितको मातुकुच्छिसम्भवेन केनचि असुचिना अम-
क्खितो मुद्धो विसदो कासिकवत्थं निक्खित्तमणिरतनं विय जोतन्तो मातुकुच्छित्तो निक्खमि । एवं सन्तेपि
बोधिसत्तस्स च बोधिसत्तमातुया च सक्कारत्थं आकासतो द्वे उदकधारा निक्खमित्वा बोधिसत्तस्स च
मातु चस्स सरीरे उतुं गाहापेसुं ।

अथ नं सुवण्णजालेन पटिगहेत्वा ठितानं ब्रह्मानं हत्थतो चत्तारो महाराजानो मंगलसम्मतया
सुखसम्पत्तसाय अजिनप्पवेणिया गण्हिंमु । तेमं हत्थतो मनुस्सा दुकूलचुम्बटकेन पटिगण्हिंमु । मनुस्सानं हत्थतो
मुञ्चित्वा पठविंयं पतित्ठाय पुरत्थिमदिसं ओलोकेसि । अनेकानि चक्कवाळसहस्सानि एकंगणानि अहेमु ।
तत्थ देवमनुस्सा गन्धमालादीहि पूजयमाना “महापुरिस ! इध तुम्हेहि सदिसो अञ्जो नत्थि, कुन्तेत्थ उत्तरितरो”
ति आहंमु । एवं चतस्सो दिसा चतस्सो अनुदिसा च हेट्ठा उपरीति दसपि दिसा अनुविलोकेत्वा अत्तनो सदिसं
अदिस्वा अयं [५१] उत्तरा दिसाति सत्तपदवीतिहारेण अगमासि । महाब्रह्मणा सेतच्छतं धारयमानेन मुयामेन
देवपुत्तेन वाळवीजनिं अञ्जाहिं^१ च देवताहि सेसराजककुधभण्डहत्थाहि अनुगम्ममानो ततो सत्तमपदे ठितो
“अग्गोहमस्मि लोकस्सा” ति आदिकं आसभिं वाचं निच्छारेन्तो सीहनादं नदि ।

बोधिसत्तो हि तीसु अत्तभावेसु मातुकुच्छित्तो निक्खन्तमत्तो एव वाचं निच्छारेसि—
महोसधत्तभावे, वेस्सन्तरत्तभावे, इमस्मि अत्तभावेति । महोसधत्तभावे किरस्स मातु कुच्छित्तो
निक्खमन्तस्सेव सक्को देवराजा आगन्त्वा चन्दनसारं हत्थं ठपेत्वा गतो । सो नं मुट्ठियं कत्वाव निक्खन्तो ।
अथ नं माता—तात ! किं गहेत्वा आगतोसीति पुच्छि । ओसधं अम्माति ।

इति ओसधं गहेत्वा आगतत्ता ओसधदारकोत्वेवस्स नामं अकंमु । तं ओसधं गहेत्वा चाटियं
पक्खिपिंमु । आगतागतानं अन्धबधिरादीनं तदेव सब्बरोगवूपसमाय भेसज्जं अहोसि । ततो महन्तं इदं
ओसधं महन्तं इदं ओसधंति उप्पन्नवचनं उपादाय महोसधोत्वेवस्स नामं जातं । वेस्सन्तरत्तभावे पन मातुकु-
च्छित्तो निक्खमन्तो दक्खिणहत्थं पसारेत्वाव “अत्थि नुखो अम्म ! किञ्चि धनं गेहस्मि ? दानं दस्सामी” ति
वदन्तो निक्खमि । अथस्स माता “सधने कुले निव्वत्तोमि ताता” ति पुत्तस्स हत्थं [५३] अत्तनो हत्थतले
कत्वा सहस्सत्थविकं ठपापेसि ।

इमस्मि पन अत्तभावे इमं सीहनादं नदीति । एवं बोधिसत्तो तीसु अत्तभावेसु मातुकुच्छितो निक्ख-
न्तमत्तोव वाचं निच्छारेसि ।

यथा च पटिसन्धिकवणे एवं जातकवणेपिस्स बत्तिसपुब्बनिमित्तानि पातुरहंसु । यस्मि पन समये
अम्हाकं बोधिसत्तो लुम्बिनीवने जातो तस्मि येव समये राहुलमाता देवी, छन्नो अमच्चो, काळुदायी अमच्चो,
आनन्दो राजकुमारो, आजानीय्यो हत्थिराजा, कन्थको अस्सराजा, महाबोधिरुक्खो, चतस्सो निधिकुम्भियो च
जाता । नत्थ एका गावुत्तप्पमाणा, एका अद्धयोजनप्पमाणा, एका तिगावुत्तप्पमाणा, एका योजनप्पमाणा अहो-
सीति इमे सत्त सहजाता नाम । उभयनगरवासिनो बोधिसत्तं गहेत्वा कपिलवत्थुनगरमेव अगमंसु ।

§ ३८ तापसो काळदेवलो

तं दिवसं येव च कपिलवत्थुनगरे सुद्धोदनमहाराजस्स पुत्तो जातो अयं कुमारो बोधितले निसी-
दित्वा बुद्धो भविस्सतीति तावत्तिसभवनं हट्ठतुट्ठा देवसंघा चेल्लुक्खेपादीनि पवत्तेन्ता कीळिमु । तस्मि समये
सुद्धोदनमहाराजस्स कुलुपगो अट्ठसमापत्तिलाभी काळदेवलो नाम तापसो भत्तकिच्चं कत्वा दिवाविहा-
रत्थाय तावत्तिसभवनं गन्त्वा तत्थ दिवा [५२] विहारं निसिन्नो ता देवता दिस्वा किंकारणा तुम्हे एवं
तुट्ठमानसा कीळथ ? मय्हं पेतं कारणं कथेथाति पुच्छि ।

देवता आहंसु—मारिस ! सुद्धोदनरञ्जो पुत्तो जातो । सो बोधितले निसीदित्वा बुद्धो हुत्वा धम्म-
चक्कं पवत्तेस्सति । तस्स अनन्तं बुद्धलीळ्हं दट्ठुं धम्मं च सोतुं लच्छामाति इमिना कारणेन तुट्ठम्हाति ।

तापसो तासं वचनं सुत्वा खिप्पं देवलोकतो ओरुय्ह राजनिवेसनं पविसित्वा पञ्जात्तासने निसिन्नो
पुत्तो किर ते महाराज ! जातो पस्सिस्सामि नन्ति आह । राजा अलंकतपटियत्तं कुमारं आणापेत्वा तापसं
वन्दापेतुं अभिहरि ।

बोधिसत्तस्स पादा परिवत्तित्वा तापसस्स जटामु पतिट्ठहिंसु । बोधिसत्तस्स हि तेनत्तभावेन
वन्दितव्वयुत्तको अञ्जं नाम नत्थि । सचे हि अजानन्ता बोधिसत्तस्स सीसं तापसस्स पादमूले
ठपेय्युं सत्तधा अस्स मुद्धं फलेय्य । तापसो न मे अत्तानं नासेतुं युत्तन्ति उट्ठायासना बोधिसत्तस्स अञ्जलिं
पग्गहेसि । राजा तं अच्छरियं दिस्वा अत्तनो पुत्तं वन्दि ।

तापसो अतीते चत्ताळीसकप्पे, अनागते चत्ताळीसाति असीति कप्पे अनुस्सरति । बोधिसत्तस्स
लक्खणसम्पत्तिं दिस्वा भविस्सति नुखो बुद्धो उदाहु नोति आर्वज्जित्वा उपधारेन्तो निस्संसयं बुद्धो भवि-
स्सतीति जत्वा अच्छरियपुरिसो अयन्ति [५३] सितं अकासि । ततो अहं इमं बुद्धभूतं दट्ठुं लभिस्सामि
नुखो नोति उपधारेन्तो न लभिस्सामि अन्तरा येव कालं कत्वा बुद्धसत्तेनपि बुद्धसहस्सेनपि गन्त्वा बोधेतुं
असक्कुण्ये अरूपभवे निब्बत्तिस्सामीति दिस्वा एवरूपं नाम अच्छरियपुरिसं बुद्धभूतं दट्ठुं न लभिस्सामि ।
महती वत मे जानी भविस्सतीति परोदि ।

मनुस्सा दिस्वा अम्हाकं अय्यो इदानीव हसित्वा पुन रोदितुं उपट्ठितो किन्नु खो भन्ते ! अम्हाकं अय्य-
पुत्तस्स कोचि अन्तरायो भविस्सतीति पुच्छिंसु ।

नत्थेतस्स अन्तरायो निस्संसयेन बुद्धो भविस्सतीति ।

अथ कस्मा परोदित्थाति ?

एवरूपं महापुरिसं बुद्धभूतं दट्ठुं न लभिस्सामि, महती वत मे जानी भविस्सतीति अत्तानं अनुसोचन्तो
रोदामीति आह ।

ततो किन्नुखो मे जातकेसु कोचि एतं बुद्धभूतं दट्ठुं लभिस्सति न लभिस्सतीति उपधारेन्तो भागिनेय्यं
नाळकदारकं अइस । सो भगीनिया गेहं गन्त्वा कहं ते पुत्तो नाळकोति ?

गेहे अय्य !

पक्कोसाहि नन्ति । अत्तनो सन्तकं आगतं आह, तात ! सुद्धोदनमहाराजस्स कुले पुत्तो जातो । बुद्धंकुरो एस पञ्चतिस वस्सानि अतिक्कमित्वा बुद्धो भविस्सति । त्वं एतं दट्ठुं लभिस्ससि । अज्जेव पव्वज्जाहीति [५३] ।

सत्तासीतिकोटिधने कुले निव्वत्तो दारको न मं मातुलो अनत्थे नियोजेस्सतीति चिन्तेत्वा तावदेव अन्तरापणतो कासावानि^१ चेव मत्तिकापत्तञ्च आहरापेत्वा केसमस्सु ओहारेत्वा कासावानि वत्थानि अच्छादेत्वा यो लोके उत्तमपुग्गलो तं उट्ठिस्स मय्हं पव्वज्जाति बोधिसत्ताभिमुखं अज्जलिम्पग्गह् पञ्च-पटिट्ठितेन वन्दित्वा पत्तं थविकाय पक्खपित्वा अंसकूटे ओलगेत्वा हिमवन्तं पविसित्वा समणधम्मं अकासि ।

सो पठमाभिसम्बोधिपत्तं तथागतं उपसंक्रमित्वा नालकपटिपदं कथापेत्वा पुन हिमवन्तं पविसित्वा अरहतं पत्वा उक्कट्ठपटिपदं पटिपन्नो सत्तेव मासे आयुं पालेत्वा एकं सुवण्णपव्वतं निस्साय ठितकोव अनुपादि-सेसाय निव्वानधातुया परिनिव्वायि ।

§ ३९. लक्खणपटिग्गाहका अट्ट ब्राह्मणा

बोधिसत्तम्पि खो पञ्चमदिवसे सीसं नहापेत्वा नामगहणं गण्हिस्सामाति राजभवनं चतुजातिक-गन्धेहि विलिम्पित्वा लाजपञ्चमकानि पुष्फानि विकिरित्वा असम्भिन्नपायासं पचापेत्वा तिण्णं वेदानं पारो अट्ठुत्तरसत्तं ब्राह्मणे निमन्तेत्वा राजभवने निसीदापेत्वा सुभोजनं भोजेत्वा [५५] महासक्कारं कत्वा किन्नुखो भविस्सतीति लक्खणानि पटिग्गाहपेसु । तेसुः—

“रामो धजो लक्खणो चापि मन्ती कोण्डञ्जो च भोजो सुयामो सुदत्तो ।

एते तदा अट्ठ अहेसुं ब्राह्मणा छलंगवा मन्तं व्याकरिंसु ॥” ति ।

इमे अट्ठेव ब्राह्मणा लक्खणपटिग्गाहका अहेसुं । पटिसन्धिगहणदिवसे सुपिनोपि एतेहेव पटिग्गहितो । तेसु सत्त जना द्वे अंगुलियो उक्खिपित्वा द्वेधा व्याकरिंसु “इमेहि लक्खणेहि समन्नागतो अगारं अज्झावसमानो राजा होति चक्कवत्ती, पव्वजमानो बुद्धो” ति सब्बं चक्कवत्तिरञ्जो सिरिविभवं आचिक्खिंसु ।

तेसं पन सब्बदहरो गोत्ततो कोण्डञ्जो नाम माणवो बोधिसत्तस्स लक्खणवरनिष्फात्ति ओलोकेत्वा “एतस्स अगारमज्जे ठानकारणं नत्थि, एकन्तेनेव विवट्छदो बुद्धो भविस्सती” ति एकमेव अंगुलि उक्खिपित्वा एकंसव्याकरणं व्याकासि । अयं हि कताधिकारो पच्छिमभविक्कसत्तो पञ्चाय इतरे सत्त जने अभिभवित्वा इमेहि लक्खणेहि समन्नागतस्स अगारमज्जे ठानं नाम नत्थि । असंसयं बुद्धो भविस्सतीति एकमेव गतिं अट्ठसि । तस्मा एकंगुलि उक्खिपित्वा एवं व्याकासि [५४] ।

§ ४०. पंचवगिया थेरा नाम

अथ ते ब्राह्मणा अत्तनो घरानि गन्त्वा पुत्ते आमन्तयिंसु—ताता ! अम्हे महल्लका, सुद्धोदनमहा-राजस्स पुत्तं सब्बञ्जुत्तपत्तं मयं लभेय्याम वा नो वा, तुम्हे तस्मिं कुमारे सब्बञ्जुत्तं पत्ते तस्स सासने पव्वजेय्याथाति ।

ते सत्तपि जना यावतायुक्कं ठत्वा यथाकम्मं गता । कोण्डञ्जमाणवो अगो अहोमि । सो महासत्ते बुद्धिमन्वाय महाभिनक्खमन्तं अभिनक्खमित्वा अनुक्कमेन उरुवेळं गन्त्वा रमणीयो वत अयं भूमिभागो अलं वतिदं कुलपुत्तस्स पधानत्थिक्कस्स पधानायाति चित्तं उप्पादेत्वा तत्थ वामं उपगते महापुरिमो पव्वजितोति सुत्वा तेमं ब्राह्मणानं पुत्ते उपसंक्रमित्वा एवमाह—सिद्धत्थकुमारो किर पव्वजितो सो निस्संसयं बुद्धो भविस्सति, सचे तुम्हाकं पितरो अरोगा अस्सुं अज्ज निक्खमित्वा पव्वजेय्युं । सचे

तुम्हेपि इच्छेय्याथ एथ अहं तं पुरिसं अनुपब्बजिस्सामीति । ते सब्बे एकच्छन्दा भवितुं [56] नासक्खिमु । तयो जना न पब्बजिमु । कोण्डञ्जब्राह्मणं जेट्ठकं कत्वा इतरे चत्तारो पब्बजिमु । ते पञ्चपि जना पञ्चवग्गिया थेरा नाम जाता ।

§ ४१. चत्तारि पुब्बनिमित्तानि

तदा पन राजा किं दिस्वा मय्हं पुत्तो पब्बजिस्सतीति पुच्छि ।

चत्तारि पुब्बनिमित्तानीति ।

कतरं च कतरञ्चाति ?

जराजिणं व्याधितं मतं पब्बजितन्ति ।

राजा—इतो पट्ठाय एवरूपानं मम पुत्तस्स सन्तिकं उपसंकमितुं मा अदत्थ । मय्हं पुत्तस्स बुद्धभावेन कम्मं नत्थि । अहं मम पुत्तं द्विसहस्सदीपपरिवारानं चतुस्रं महादीपानं इस्सरियाधिपच्चं रज्जं कारेत्तं छत्तिसयोजनपरिमण्डलाय परिसाय पटिवुत्तं गगनतले विचरमानं पस्सितुकामोम्हीति—एवं च पन वत्वा इमेसं चतुप्पकारानं पुरिसानं कुमारस्स चक्खुपथे आगमननिवारणत्थं चतुसु दिसासु गाबुते गाबुते आरक्खं ठपेसि ।

तं दिवसं च पन मंगलट्ठाने सन्निपतितेसु असीतिया जातिकुलसहस्सेसु एकेको एकमेकं पुत्तं पटिजानि । अयं बुद्धो वा होतु राजा वा मयं एकमेकं पुत्तं दस्साम । सचेपि बुद्धो भविस्सति खत्तियसमणेहेव पुरक्खतपरिवारितो विचरिस्सति, सचेपि राजा भविस्सति खत्तियकुमारेहेव पुरक्खतपरिवारितो विचरिस्सतीति ।

§ ४२. रञ्जो वप्पमंगलं अहोसि

राजापि बोधिसत्तस्स उत्तमरूपसम्पन्ना विगतसब्बदोसा धातियो पच्चुपट्ठापेसि । बोधिसत्तो अनन्तेन परिवारेन महन्तेन सिरिसोभगेन वड्ढति ।

अथेकदिवसं रञ्जो वप्पमंगलं नाम अहोसि । तं दिवसं सकलनगरं देवविमानं विय [५५] अलं करोन्ति । सब्बे दासकम्मकरादयो अहतवत्थनिवत्था गन्धमालादिपतिमण्डिता राजकुले सन्निपतन्ति । रञ्जो कम्मन्ते नंगलसहस्सं योजिय्यति । तस्मिं पन दिवसे एकेन ऊनं अट्ठसत्तं नंगलानि सद्धि बलिवद्-रस्मियोत्तेहि रजतपरिक्खतानि होन्ति । रञ्जो आलम्बननंगलं^१ पन रत्तमुवण्णपरिक्खत्तं होति । बलिवद्दानं सिंगानि रस्मियोत्तपतोदानि सुवण्णपरिक्खतानेव होन्ति । राजा महापरिवारेन नगरा निक्खमन्तो पुत्तं गहेत्वा अगमासि । कम्मन्तट्ठाने एको जम्बुक्खो बहळपलासो सन्दच्छायो अहोसि । तस्स हेट्ठा कुमारस्स सयनं पञ्चपापेत्वा उपरि सुवण्णतारक्खचित्तं वित्तानं बन्धापेत्वा साणिपाकारेण परिक्खपापेत्वा आरक्खं ठपापेत्वा राजा सब्बालंकारेण अलंकरित्वा अमच्चगणपरिवृतो नंगलकरणट्ठानं अगमासि । तत्थ राजा सुवण्णनंगलं गण्हाति । अमच्चा एकऊनट्ठसत्तं रजतनंगलानि, कस्सका सेसनंगलानि । ते तानि गहेत्वा इतो चित्तो च कसन्ति । राजा पन ओरतो पारं गच्छति पारतो ओरं आगच्छति । एतस्मिं ठाने [57] महासम्पत्ति अहोसि । बोधिसत्तं परिवारेत्वं निसिन्ना धातियो रञ्जो सम्पत्ति पस्सिस्सामाति अन्तोसाणितो बहि निक्खन्ता ।

बोधिसत्तो इतो चित्तो च ओलोकेन्तो कच्चि अदिस्वा वेगेन उट्ठाय पल्लकं आभुजित्वा आनापाने परिगहेत्वा पठमञ्ज्ञानं निब्बत्तेसि ।

धातियो खज्जभोजन्तरे विचरमाना थोकं चिरायिमु । सेसक्खानं छाया निवत्ता^२, तस्स पन रुक्खस्स परिमण्डला हुत्वा अट्ठासि । धातियो अय्यपुत्तो एकोति वेगेन साणि उक्खिपित्वा अन्तो पविसमाना बोधिसत्तं सयने पल्लकं निसिन्नं तं च पाटिहारियं दिस्वा गन्त्वा रञ्जो आरोचेसुं—देव ! कुमारो एवं निसिन्नो एवं अञ्जेसं रुक्खानं छाया निवत्ता जम्बुक्खस्स छाया परिमण्डला ठिताति । राजा वेगेनागन्त्वा पाटिहारियं दिस्वा इदं ते तात ! दुतियं वदनन्ति पुत्तं बन्दि ।

१ रो०—आलम्बननङ्गले । २ सी०—अनतिवत्ता । रो०—अतिवत्ता ।

§ ४३. आतकानं सिप्यं दस्सेसि

अथ अनुक्कमेन बोधिसत्तो सोळसवस्सपदेसि को जातो । राजा बोधिसत्तस्स तिण्णं उत्तूनं अनुच्छविके तयो पासादे कारेसि, एकं नवभूमकं, एकं सत्तभूमकं, एकं पञ्चभूमकं । चत्ताळीससहस्सा च नाट-कित्थियो उपट्ठापेसि । बोधिसत्तो देवो विय अच्छरासंघपरिवुतो अलंकतनाटकपरिवुतो निप्पुरिसेहि तुरियेहि परिचारियमानो महासम्पत्तिं अनुभवन्तो उतुवारेन तेसु तेसु पासादेसु विहरति । राहुलमाता पनस्स देवी अगगमहेसी अहोसि । [५६]

तस्स एवं महासम्पत्तिं अनुभवन्तस्स एकदिवसं आतिसंघस्स अब्भन्तरे अयं कथा उदपादि—सिद्धत्थो कीळापसुतोव विचरति, न किञ्चि सिप्यं सिक्खति, संगामे पच्चुपट्ठिते किं करिस्सतीति !

राजा बोधिसत्तं पक्कोसापेत्वा—तात ! तव आतका सिद्धत्थो किञ्चि सिप्यं असिक्खित्वा कीळापसुतोव विचरतीति वदन्ति । एत्थ किं पत्तकाले मज्झसीति ? देव ! मम सिप्यसिक्खनकिञ्चं नत्थि । नगरे मम सिप्यं दस्सन्तथं भेरि चरापेथइतो सत्तमे दिवसे आतकानं सिप्यं दस्सेस्सामीति ।

राजा तथा अकासि । बोधिसत्तो अक्खणवेधि वाळवेधि, सरवेधि, सहवेधि पुंकानपुंक धनुग्गहे सन्निपातापेत्वा महाजनस्स मज्झे अज्जेहि च धनुग्गहेहि असाधारणं आतकानं द्वादसविधं सिप्यं दस्सेसि । तं सरभंगजातकं आगतनयेनेव व वेदितब्बं । तदास्स आतिसंघो निक्कंखो अहोसि ।

§ ४४. चत्तारि पुब्बनिमित्तानि

अथेकदिवसं बोधिसत्तो उय्यानभूमिं गन्तुकामो सारथिं आमन्तेत्वा रथं योजेहीति आह । सो साधूति पटिस्सुणित्वा महारहं उत्तमरथं सब्वालंकारेन अलंकरित्वा कुमुदपत्तवण्णो [58] चत्तारो मंगलसिन्धवे योजेत्वा बोधिसत्तस्स पटिनिवेदेसि । बोधिसत्तो देवविमानसदिसं रथं अभिरुहत्वा उय्यानाभिमुखो अगमासि ।

(१) जराजिण्णं ।

देवता सिद्धत्थकुमारस्स अभिसम्बुज्जनकालो आसन्नो, पुब्बनिमित्तं दस्सेस्सामाति एकं देवपुत्तं जराजज्जरं खण्डदन्तं पलितकेसं गोपाणसिवकं ओभग्गसरीरं दण्डहत्यं पवेधमानकं कत्वा दस्सेसु । तं बोधिसत्तो चेव सारथी च पस्सन्ति ।

ततो बोधिसत्तो सारथि—“सम्म ! को नामेसो पुरिमो ! केसापिस्स न यथा अज्जेस” न्ति महापदाने आगतनयेन पुच्छित्वा तस्स वचनं सुत्वा धिरत्थु वत भो ! जाति यत्रहि नाम जातस्स जरा पञ्चा-यिस्सतीति संविग्गहदयो ततो व पटिनिवत्तित्वा पासादमेव अभिरुहि ।

राजा किंकारणा मम पुत्तो खिप्यं पटिनिवत्तीति पुच्छि ।

जिण्णं पुरिसं दिस्वा देवाति आहंसु ।

“जिण्णकं दिस्वा पब्बजिस्सती” नि कस्मा मं नासेथ ! सीधं मे पुत्तस्स नाटकानि सज्जेथ । सम्पत्तिं अनुभवन्तो पब्बज्जाय सति न करिस्सतीति वत्वा आरक्खं वड्ढेत्वा सब्वादिसासु अद्ध्ययोजने अद्ध्ययोजने ठपेसि ।

(२) व्याधितं

पुनेकदिवसं बोधिसत्तो तथेव उय्यानं गच्छन्तो देवताहि निम्मित्तं व्याधितं पुरिसं दिस्वा पुरिमनयेनेव पुच्छित्वा संविग्गहदयो निवत्तित्वा पासादं अभिरुहि । राजापि पुच्छित्वा हेट्ठावुत्तनयेनेव संविदहित्वा पुन वड्ढेत्वा समन्ततो तिगावुत्तप्पमाणे पदेसे आरक्खं ठपेसि । [५७]

(३) कालकतं

अपरं पन एकदिवसं बोधिसत्तो तथेव उय्यानं गच्छन्तो देवताहि निम्मितं कालकतं दिस्वा पुरिमनयेनेव पुच्छित्वा संविग्गहदयो पुन निवत्तित्वा पासादं अभिरुहि । राजापि पुच्छित्वा हेट्ठावुत्तनयेनेव संविदहित्वा पुन वड्ढेत्वा समन्ततो योजनप्पमाणे पदेसे आरक्खं ठपेसि ।

(४) पब्बजितं

अपरं पन एकदिवसं उय्यानं गच्छन्तो तथेव देवताहि निम्मितं सुनिवत्थं सुपारुतं पब्बजितं दिस्वा को नामेसो सम्माति सारथि पुच्छि । सारथि किञ्चापि बुद्धप्पादस्स अभावा पब्बजितं वा पब्बजितगुणे वा न जानाति देवानुभावेन पन पब्बजितो नामेस देवाति वत्वा पब्बज्जाय गुणे वण्णेसि । बोधिसत्तो पब्बज्जाय र्हचि उप्पादेत्वा तं दिवसं उय्यानं अगमासि ।

दीघभाणका पनाहु-“चत्तारि निमित्तानि एकदिवसेनेव दिस्वा अगमासी” ति ।

§ ४५. बोधिसत्तस्स पच्छिमो अलंकारो

तत्थ दिवसभागं कीळित्वा मंगलपोक्खरणिं नहायित्वा अत्थं गते सुरिये मंगलसिलापट्टे निसीदि अत्तानं अलंकारापेतुकामो । अथस्स परिचारकपुरिसा नानावण्णानि दुस्सानि नानप्पकारा आभरणविकतियो मालागन्धविलेपनानि च आदाय समन्ता परिवारेत्वा अट्ठंमु ।

तस्मिं खणे सक्कस्स निसिन्नासनं उण्हं [५९] अहोसि । सो कोनुखो मं इमम्हा ठाना चावेतुका-
मोति उपधारेन्तो बोधिसत्तस्स अलंकरणकालं दिस्वा विस्सकम्मं^१ आमन्तेसि- सम्म विस्सकम्म ! सिद्धत्थ-
कुमारो अज्ज अड्ढरत्तसमये महाभिनिक्खमणं निक्खमिस्सति । अयमस्स पच्छिमो अलंकारो । उय्यानं गन्त्वा महापुरिसं दिब्बालंकारेहि अलंकारोहीति ।

सो साधूति पटिस्सुणित्वा देवतानुभावेन तं खणं येव उपसंकमित्वा तस्सेव कप्पकसदिसो हुत्वा कप्पकस्स हत्थतो वेठनदुस्सं गहेत्वा बोधिसत्तस्स सीसं वेठेसि । बोधिसत्तो हत्थसंपक्सेनेव नायं मनुस्सो देवपुत्तो एकोति अञ्जासि । वेठने वेठितमत्तो सीसे मोळियं मणिरतनाकारेण दुस्ससहस्सं अब्भु-
ग्गच्छि । पुन वेठेन्तस्स दुस्ससहस्सन्ति दसक्खत्तुं वेठेन्तस्स दसदुस्ससहस्सानि अब्भुग्गच्छिमु । सीसं खुद्दकं दुस्सानि बहूनि कथं अब्भुग्गतानीति न चित्तेतब्बं । तेसु हि सव्वमहन्तं सामलतापुप्फप्पमाणं, अवसेसानि कुतुम्ब-
कपुप्फप्पमाणानि अहेसुं । बोधिसत्तस्स सीसं केसेहि आकिण्णं किञ्जक्खगवच्छित्तं विय कुप्पकपुप्फं अहोसि ।

अथस्स सब्बालंकारपतिमण्डितस्स सब्बताळावचरेसु सकानि सकानि च पटिभाणानी दस्स-
यन्तेसु ब्राह्मणेसु जयनरिन्दाति आदिवचनेहि सूतमागधादिमु नानप्पकारेहि मंगलवचनथुतिघोसेहि सम्भावेन्तेसु सब्बालंकारपतिमण्डितं रथवरं अभिरुहि । [५८]

§ ४६. राहुलो जातो

तस्मिं समये राहुलमाता पुत्तं विजायीति सुत्वा मुद्धोदनमहाराजा पुत्तस्स मे तुट्ठि निवेदेथाति सासनं पहिणि । बोधिसत्तो तं सुत्वा राहुलो जातो^२ बन्धनं जातन्ति आह । राजा किं मे पुत्तो अवचानि पुच्छित्वा तं वचनं सुत्वा इतो पट्ठाय मे नत्ता राहुलकुमारो येव नाम होतूति आह ।

§ ४७. किंसागोतामया उदानं

बोधिसत्तोपि खो रथवरं आह्मह महन्तेन यसेन अतिमनोरमेन सिरिसोभग्गेन नगरं पाविसि । तस्मिं समये किंसागोतमी नाम खत्तियकञ्जा उपरिपासादवरतलगतं नगरं पदक्खिणं कुरुमानस्स बोधिसत्तस्स रूप-
सिरि दिस्वा पीतिसोमनस्सजाता इमं उदानं उदानेसि:—

१ स्या०-विस्सुकम्मं । २ सि०-राहु जातो ।

“निब्बुता नून सा माता निब्बुतो नून सो पिता, ।

निब्बुता नून सा नारी यस्सायं ईदिसो पती” ॥ ति । [60]

बोधिसत्तो तं सुत्वा चिन्तेसि—अयं एवमाह, एवरूपं अत्तभावं पस्सन्ति या मातु हृदयं निब्बायति पितुहृदयं निब्बायति पजापतिया हृदयं निब्बायतीति । कस्मिं नुखो निब्बुते हृदयं निब्बुतं नाम होतीति ? अथस्स किलेसेसु विरत्तमानसस्स एतदहोसि—रागग्गिम्हि निब्बुते निब्बुतं नाम होति, दोसग्गिम्हि निब्बुते निब्बुतं नाम होति, मोहग्गिम्हि निब्बुते निब्बुतं नाम होति, मानदिट्ठि आदिसु सब्बकिलेसदरथेसु निब्बुतेसु निब्बुतं नाम होति, अयं मे सुवचनं सावेसि । अहं हि निब्बाणं गवेसतो चरामि । अज्जेव मया घरावासं छड्ढेत्वा निक्खम्म पव्वजित्वा निब्बाणं गवेसितुं वट्ठतीति । अयं इमिस्सा आचरियभागे होतुति कण्ठतो ओमुञ्चित्वा किसानोत्तमिया सतसहस्सगघनकं मुत्ताहारं पेसेसि । सा सिद्धत्थकुमारो मयि पटिबद्धचित्तो दृत्वा पण्णाकारं पेसेसीति सोमनस्सजाता अहोसि ।

§ ४८. नाटकस्थियो

बोधिसत्तोपि महन्तेन सिरिसोभगेन अत्तनो पासादं अभिरुहित्वा सिरिसयने निपज्जि । तावदेव नं सब्बालंकारपतिमण्डिता नच्चगीतादिसु सुसिक्खिता देवकञ्जा विय रूपसोभगप्पत्ता इत्थियो नानातुरियानि गहेत्वा सम्परिवारयित्वा अभिरमापेन्तियो नच्चगीतवादितानि पयोजयिंसु । बोधिसत्तो किलेसेसु विरत्तचिन्ताय नच्चादिसु अनभिरतो मुहुत्तं निहं ओक्कमि । तापि इत्थियो यस्सत्थाय मयं नच्चादीनि पयोजयेम सो निहं उपगतो इदानीं किमत्थं किलमामाति गहितगहितानि तुरियानि अज्झोत्थरित्वा निपज्जिंसु । गन्धतेलपदीपा ज्ञायन्ति । बोधिसत्तो पव्वज्जित्वा सयनपिट्ठे पल्लकेन निसिन्नो अद्दस ता इत्थियो तुरियभण्डानि अवत्थरित्वा निदायन्तियो एकच्चा पग्घरितत्थेळा लाला किलिन्नगत्ता एकच्चा [५९] दन्ते खादन्तियो एकच्चा काकच्छन्तियो एकच्चा विप्पलपन्तियो एकच्चा विवटमुखा एकच्चा अपगतवत्था पाकटवीभच्छसम्बाधट्ठाना । सो तासं तं विप्पकारं दिस्वा भिय्योसोमत्ताय कामेसु विरत्तो अहोसि । तस्स अलंकृतपटियत्तं सक्कभवनसदिसम्पि तं महातलं विप्पविद्धनानाकुणपभरितं आमकसुसानं विय उपट्ठासि । तयो भवा आदित्तगेहसदिसा विय खायिंसु । उपदुत्तं वत भो ! ^१उपस्सट्ठं वत भोति उदानं पवत्ति । अतिविय पव्वज्जाय चित्तं नमि ।

§ ४९. महाभिनिक्खमनं

सो अज्जेव मया महाभिनिक्खमनं निक्खमितुं वट्ठतीति सयना वुट्ठाय द्वारसमीपं गन्त्वा को एत्थाति आह । [61]

उम्मारे सीसं कत्वा निपन्नो छन्नो अहं अय्यपुत्त ! छन्नोति आह ।

छन्न ! अहं अज्ज महाभिनिक्खमणं निक्खमितुकामो । एकं मे अस्सं कप्पेहीति । सो साधु देवाति अस्सभण्डकं गहेत्वा अस्ससालं गन्त्वा गन्धतेलपदीपेसु जलन्तेसु सुमनपट्टवितानस्स हेट्ठा रमणीये भूमिभागे टिटं कन्थकं अस्सराजानं दिस्वा अज्ज मया इममेव कप्पेतुं वट्ठतीति कन्थकं कप्पेसि ।

सो कप्पियमानोव अज्जासि अयं मे कप्पना अतिगाळ्हा, अज्जेसु दिवसेसु उय्यानकीळादि-गमनकाले कप्पना विय न होति । मय्हं अय्यपुत्तो अज्ज महाभिनिक्खमणं निक्खमितुकामो भविस्सतीति । ततो तुट्ठमानसो महाहसितं हसि । सो सहो सकलनगरं पत्थरित्वा गच्छेय्य । देवता पन तं सद्दं निरुम्हित्वा न कस्सचि सोतुं अदंसु ।

बोधिसत्तोपि खो छन्नं पेसेत्वाव पुत्तं ताव पस्सिस्सामीति चिन्तेत्वा णासन्नपल्लकतो वुट्ठाय राहुलमाताय वसनट्ठानं गन्त्वा गम्भद्वारं विवरि । तस्मिं खणे अन्तोगम्भे गन्धतेलपदीपो ज्ञायति । राहुलमाता सुमनमल्लिकादीनं पुष्पानं अम्मणमत्तेन अभिप्पकिण्णसयने पुत्तस्स मत्थके हत्थं ठपेत्वा निदायति । बोधिसत्तो

उम्मारो पादं ठपेत्वा ठितकोव ओलोकेत्वा सचाहं देविया हत्थं अपनेत्वा मम पुत्तं गण्हस्सामि देवी पबुज्झिस्सति एवं मे गमनन्तरायो भविस्सति, बुद्धो हुत्वाव आगन्त्वा पुत्तं पस्सिस्सामीति पासादतलतो ओतरि । यं पन जातकट्टकथायं “तदा सत्ताहजातो राहुलकुमारो होती” ति वुत्तं तं सेसट्टकथामु नत्थि तस्मा इदमेव गहेतब्बं ।

एवं बोधिसत्तो पासादतला ओतरित्वा अस्ससमीपं गन्त्वा एवमाह—तात कन्थक ! त्वं अज्ज एकरत्तिं मं तारय, अहं तं निस्साय बुद्धो हुत्वा सदेवकं लोकं तारेस्सामीति । ततो उल्लंघित्वा कन्थकस्स पिट्ठि अभिरुहि ।

कन्थको गीवतो पट्ठाय आयामेन अट्ठारसहत्थो होति, तदनुच्छविकेन उब्बेधेन समन्नागतो थाम-जवसम्पन्नो सव्वसेतो, धोतसंखसदिसो । [६०] सो सचे हसेय्य वा पादसद्दं वा करेय्य सहो सकलनगरं अवत्थरेय्य । तस्मा देवता अत्तनो आनुभावेन तस्स यथा न कोचि सुणाति एवं हसितसद्दं सन्निरुम्हित्वा अक्कमनअक्कमन-पदवारे हत्थतलानि उपनामेसुं ।

बोधिसत्तो अस्सवरस्स पिट्ठिवेमज्झगतो^१ छन्नं [62] अस्सस्स वाळ्धिं गाहापेत्वा अड्ढरत्त-समये महाद्वारसमीपं पत्तो । तदा पन राजा एवं बोधिसत्तो याय कायचि वेलाय नगरद्वारं विवरित्वा निक्खमितुं न सक्खिस्सतीति द्वीमु द्वारकवाटेसु एकेकं पुरिससहस्सेन विवरितब्बं कारापेसि ।

बोधिसत्तो थामबलसम्पन्नो हत्थिगणनाय कोटिसहस्सहत्थीनं बलं धारेति, पुरिसगणनाय दसपुरिसकोटिसहस्सानं । तस्मा सो चिन्तेसि—“सचे द्वारं न अवापुरीयति अज्ज कन्थकस्स पिट्ठे निसिन्नोव वाळ्धिं गहेत्वा ठितेन छन्नेन सद्धिं येव कन्थकं ऊरुहि निष्पीळेत्वा अट्ठारसहत्थुब्बेधं पाकारं उप्पतित्वा अतिक्कमिस्सामी” ति । छन्नोपि चिन्तेसि,—“सचे द्वारं न विवरीयति अहं अय्यपुत्तं मम खन्धे निसीदापेत्वा कन्थकं दक्खिणहत्थेन कुच्छियं परिक्खिपन्तो उपकच्छन्तरे कत्वा पाकारं उप्पतित्वा अतिक्कमिस्सामी” ति । कन्थकोपि चिन्तेसि,—“सचे द्वारं न विवरीयति अहं अत्तनो सामिकं पिट्ठयं यथानिसिन्नमेव छन्नेन वाळ्धिं गहेत्वा ठितेन सद्धिं येव उक्खिपित्वा पाकारं उप्पतित्वा अतिक्कमिस्सामी” ति । सचे द्वारं न अवापुरीयित्थं^२ यथाचिन्तितमेव तीसु जनेसु अज्जतरो सम्पादेय्य । द्वारे अधिवत्था देवता पन द्वारं विवरि ।

तस्मि येव खणे मारो पापिमा बोधिसत्तं निवत्तेस्सामीति आगन्त्वा आकासे ठितो आह—मारिस्स ! मा निक्खमि । इतो ते सत्तमे दिवसे चक्करतननं पातुभविस्सति । द्विसहस्सपरिगृहीतपारिवारानं चतुन्नं महादीपानं रज्जं कारेस्ससि । निवत्त मारिस्साति !

कोसि त्वन्ति ?

अहं वसवत्तीति मारोम्हीति ।

मार ! जानामहं मय्हं चक्करतनस्स पातुभावं । अनत्थिकोहं रज्जेन । दससहस्सीं लोकधातुं उन्नादेत्वा बुद्धो भविस्सामीति ।

मारो इतोदानि ते पट्ठाय कामवितक्कं वा व्यापादवितक्कं वा विहिंसावितक्कं वा चिन्तित-काले जानिस्सामीति ओतारापेखो छाया विय अनपगच्छन्तो अनुबन्धि ।

बोधिसत्तोपि हत्थगतं चक्कवत्तिरज्जं खेळपिण्डं विय अनपेखो छड्ढेत्वा महन्तेन सक्कारेन नगरा निक्खमित्वा आसाळ्हिपुण्णमायं उत्तरासाळ्हनक्खत्ते वत्तमाने निक्खमित्वा च पुन नगरं अपलोकेतुकामो जातो । एवञ्च पनस्स चित्ते उपन्नमत्ते येव—महापुरिस्स ! न तथा निवत्तित्वा[६१] ओलोकेनकम्मं कतन्ति वदमाना विय महापठवी कुलालचक्कं विय छिज्जित्वा परिवत्ति । बोधिसत्तो नगराभिमुखो ठत्वा नगरं ओलोकेत्वा तस्मि ठाने कन्थकनिवत्तनचेतियट्ठानं दस्सेत्वा गन्तब्बमगाभिमुखं कन्थकं[63] कत्वा पायासि महन्तेन सक्कारेन उळारेन सिरिसोभगेन । तदा किरस्स देवता पुरतो सट्ठिउक्कासहस्सानि धारयिंसु, पच्छतो सट्ठि, दक्खिणपस्सतो सट्ठि, वामपस्सतो सट्ठि । अपरा देवता चक्कवाळ्मुखवट्ठियं अपरिमाणा उक्का धारयिंसु । अपरा देवता च नागसु-पण्णादयो च दिब्बेहि गन्धेहि मालाहि चुणेहि धूपेहि पूजयमाना गच्छन्ति । पारिच्छत्तकपुप्फेहि चैव मन्दारवपुप्फेहि

च घनमेघवृष्टिकाले धाराहि विय नभं निरन्तरं अहोसि । दिग्बानि सङ्गीतानि पवतन्ति । समस्ततो अट्ठसट्ठितुरियसतसहस्रानि पवज्जिमु । समुदकुच्छियं मेघत्थनितकालो विय युगन्धरकुच्छियं सागरनिग्घोसकालो विय वतति । इमिना सिरिसोभग्गेन गच्छन्तो बोधिसत्तो एकरत्तेनेव तीणि रज्जानि अतिककम्म तिसयोजनमत्थके अनोमानदीतीरं पापुणि ।

किं पन अस्सो ततो परं गन्तुं न सककोतीति ? नो न सककोति । सो हि एकवक्कवाळगम्भं नाभिया ठितचक्कस्स नेमिवट्ठि मद्दन्तो विय अन्तन्तेन चरित्वा पुरे पातरासमेव आगत्वा अत्तनो सम्पादितं भत्तं भुञ्जितुं समत्थो । तदा पन देवनागमुपण्णादीहि आकासे ठत्वा ओस्सट्ठेहि गन्धमालादीहि याक् ऊरुप्पदेसा सञ्छन्नं सरीरं आकड्ढित्वा गन्धमालाजटं छिन्दन्तस्स अतिप्पपञ्चो अहोसि । तस्मा तिसयोजनमत्तमेव अगमासि ।

§ ५०. बोधि सत्तो पब्बजि

अयं बोधिसत्तो नदीतीरे ठत्वा छन्नं पुच्छि—किं नामा अयं नदीति ।

अनोमा नाम देवाति ।

अम्हाकम्पि पब्बज्जा अनोमा नाम भविस्सतीति पण्हिया घट्टेन्तो अस्सस्स सञ्जं अदासि । अस्सो उप्पतित्वा अट्ठउसभविट्थाराय नदिया पारिमतीरे अट्ठासि । बोधिसत्तो अस्सपिट्ठितो ओरुह् रजतपट्टसदिसे वालुकापुल्लिने ठत्वा छन्नं आमन्तेसि । सम्म छन्न ! त्वं मय्हं आभरणानि चैव कन्थकञ्च अदाया गच्छ इधेवाहं पब्बजिस्सामीति ।

अहम्पि देव ! तया सद्धिं पब्बजिस्सामीति ।

बोधिसत्तो न लब्भा तया पब्बजितुं गच्छ त्वन्ति तिवक्खतुं पटिबाहित्वा आभरणानि चैव कन्थकं च पटिच्छापेत्वा चिन्तेसि—इमे मय्हं केसा समणसारुप्पा न होन्ति ; अञ्जो बोधिसत्तस्स केसे छिन्दितुं युत्तरूपो नत्थि, ततो सयमेव खग्गेन छिन्दिस्सामीति दक्खिणहत्थेन अंसि गण्हित्वा वामहत्थेन मोळिया सद्धिं चूळं गहेत्वा छिन्दि । केसा द्रङ्गुलमत्ता हुत्वा दक्खिणतो आवत्तमाना सीसं अल्लियिमु । तेसं यावजीवं तदेवप्पमाणं अहोसि, मस्सु च तदनु रूपं अहोसि । पुन केसमस्सु ओहारणकिच्चं नाम नाहोसि । [६४]

बोधिसत्तो सह मोळिया चूळं [६२] गहेत्वा सचाहं बुद्धो भविस्सामि आकासे तिट्ठतु नो चे भूमियं पततूति अन्तळिक्खे खिपि । तं चूळामणिवेठनं योजनप्पमाणं ठानं गत्वा अकासे अट्ठासि । सक्को देवराजा दिग्बचक्खुना ओलोकेत्वा योजनियरतनचङ्गोटकेन सम्पटिच्छित्वा तावतिसभवने चूळामणिचेतियं नाम पतिट्ठापेसि ।

“छेत्वान मोळि वरगन्धवासितं, वेहासयं” उक्खिपि अगगुग्गलो ।

सहस्सनेत्तो सिरसा पटिग्गहि, सुवण्णचङ्गोटवरेण वासवो” ति ॥

पुन बोधिसत्तो चिन्तेसि—“इमानि कासिकवत्थानि मय्हं न समणसारुप्पानी” ति । अथस्स, कस्सप-बुद्धकाले पुराणसहायको घटीकारमहाब्रह्मा एकं बुद्धन्तरं अपत्ते । मित्तभावेन चिन्तेसि—अज्ज मे सहायको महाभिनिक्खमनं निक्खन्तो, समणपरिक्खारमस्स गहेत्वा गच्छिस्सामीति :—

“तिचीवरं च पत्तो च वासी सूचि च बन्धनं,

परिस्सावेन अट्ठेते युत्तयोगस्स भिक्खुनो” ति ।

इमे अट्ठसमणपरिक्खारे आहरित्वा अदासि । बोधिसत्तो अरहद्दजं निवासेत्वा उत्तमपब्बज्जावेसं गण्हित्वा—छन्न ! मम वचनेन मातापितुम्भं आरोग्यं वदेहीति उय्योजेसि ।

छन्नो बोधिसत्तं बन्धित्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कामि । कन्थको पन छन्नेन सद्धिं मन्तयमानस्स बोधिसत्तस्स वचनं सुणन्तो ठत्वा नत्थीदानि मय्हं पुन सामिनो दस्सन्ति चक्खुपथं विज्जहन्तो सीकं अधिवासेतुं असक्कोस्तो हृदयेन फलितेन कालं कत्वा तावतिसभवने कन्थको नाम देवपुत्तो हुत्वा निब्बति ।

हारताय परमकसिमानं पत्तकायस्स सुवण्णवण्णो कायो काळवण्णो अहोसि । द्वत्तिसमहापुरिसलक्खणानि पटिच्छन्नानि अहेसुं ।

अप्येकदा अप्पाणकं ज्ञानं ज्ञायन्तो महावेदनाहि अभितुन्नो वितञ्जिभूतो चङ्कमनकोटियं पति । अथ न एकच्चा देवता कालकतो समणो गोतमोति वदन्ति । एकच्चा विहारोवेसो अरहतन्ति आहंसु । तत्थ यास कालकतोति अहोसि ता गत्वा सुद्धोदनमहाराजस्स आरोचेसुं तुम्हाकं पुत्तो कालकतोति ।

मम पुत्तो बुद्धो हुत्वा कालकतो अहुत्वाति ?

बुद्धो भवितुं नासक्खि पधानभूमियं येव पतित्वा कालकतोति ।

इदं सुत्वा राजा—नाहं सद्दहामि, मम पुत्तस्स बोधि अप्पत्वा कालकिरिया नाम नत्थीति पटिक्खिपि ।

कस्मा पन राजा न सद्दहतीति ? काळदेवलातापसस्स वन्दापनदिवसे जम्बुक्खमूले च पाटिहारियानं दिट्ठत्ता ।

पुन बोधिसत्ते सञ्चं पटिलभित्वा उट्ठिते ता देवता आगत्त्वा—अरोगो ते महाराज ! पुत्तोति आरोचेन्ति ।

राजा जानामहं पुत्तस्स अमरणभावन्ति वदति ।

महासत्तस्स छब्बस्सानि दुक्करकारियं करोन्तस्स आकासे गण्ठिकरणकालो विय अहोसि । सो अयं दुक्करकारिका नाम बोधाय मग्गो न होतीति ओळारिकं आहारं आहारेतुं गामनिगमेसु पिण्डाय चरित्वा आहारं आहरि । अथस्स द्वत्ति समहापुरिसलक्खणानि पाकतिकानि अहेसुं । कायो सुवण्णवण्णो अहोसि ।

पञ्चवगिया भिक्खू अयं छब्बस्सानि दुक्करकारिकं करोन्तोपि सब्बञ्जुतं पटिविज्झितुं नासक्खि इदानि (67) गामादिमु पिण्डाय चरित्वा ओळारिकं आहारं आहरियमानो किं सक्खिस्सति ? बाहुलिको एस पधानविबन्तो । सीसं नहायितुकामस्स उस्सावविन्दुत्तक्कनं विय अम्हाकं एतस्स सत्तिका विसेसत्तक्कनं । किं नो इमिनाति महापुरिसं पहाय अत्तनो अत्तनो पनचीवरं गहेत्वा अट्ठारसयोजनमग्गं गत्वा इसिपतनं पर्विसिमु ।

§ ५४. सुजाताय पायासदानं

तेन खो पन समयेन उरुवेलायं सेनानिनिगमे सेनानिकुटुम्बिकस्स गेहे निव्वत्ता सुजाता नाम दारिका वयप्पत्ता एकास्मि निग्रोधरक्खे पत्थनं अकासि । सचे समजातिकं कुलधरं गत्वा पठमगम्भे पुत्तं लभिस्सामि अनुसंवच्छरं ते सतसहस्सपरिच्चागेन बलिकम्मं करिस्सामीति । तस्सा सा पत्थना समिज्झि । सा महासत्तस्स दुक्करकारिकं करोन्तस्स छट्ठे वस्से परिपुण्णे विसाखपुण्णमायं बलिकम्मं कानुकामा हुत्वा पुरेतरं येव च धेनुसहस्सं लट्ठिमधुकवने चरापेत्वा तासं खीरं पञ्चधेनुसतानि पायेत्वा तासं खीरं [६५] अड्ढतियानीति एवं याव सोलसन्नं धेनूतं खीरं अट्ठधेनुयो पिवन्ति ताव खीरस्स बहळत्तं च मधुरत्तं च ओजवत्तत्तं च पत्थयमाना खीरपरिवत्तनं नाम अकासि । सा विसाखपुण्णमीदिवसे पातोव बलिकम्मं करिस्सामीति रत्तिया पच्चू-ससमयं पच्चुट्ठाय ता अट्ठधेनुयो दुहापेसि । वच्छका धेनूतं थनमूलं नागमंमु । थनमूले पन नवभाजने उपनीतमत्ते अत्तनो धम्मताय खीरधारा पर्वत्तिमु । तं अच्छरियं दिस्वा सुजाता सहत्थेनेव खीरं गहेत्वा नवभाजने पक्खित्वा सहत्थेनेव अंगि कत्वा पचितुं आरभि । तस्मि पायासे पच्चमाने महन्तमहन्ता बुब्बुला उट्ठहित्वा दक्खिणावत्ता हुत्वा सञ्चरन्ति । एकफुसितम्पि बहि न पतति । उद्धनतो अप्पमत्तकोपि धूमो न उट्ठहति । तस्मि समये चत्तारो लोकपाला आगत्त्वा उद्धने आरक्खं गणिहसु । महाब्रह्मा छत्तं धारेसि । सक्को अलातानि समानेन्तो अंगि जालेसि । देवताद्विसहस्सदीपपरिवारेसु चतुसु दीपेसु देवानं च मनुस्सानं च उपकप्पनकओजं अत्तनो देवानुभावेन दण्डकबद्धं मधुपटलं पीत्वा पीळत्वा गण्हमाना विय संहरित्वा तत्थ पक्खिपिमु । अञ्जेसु हि कालेसु देवता कबळे कबळे ओजं पक्खिपन्ति । सम्बोधिदिवसे च पन परिनिब्बाणदिवसे च उक्खलियं येव पक्खिपन्ति ।

सुजाता एकदिवसेनेव [68] तत्थ अत्तनो पाकटानि अनेकानि अच्छरियानि दिस्वा पुण्णादासि आमन्तेसि—अम्म ! पुण्णे ! अज्ज अम्हाकं देवता अतिविय पसन्ना । मया एत्तके काले एवरूपं अच्छरियं नाम न दिट्ठपुञ्जं । वेगेन गन्त्वा देवत्थानं पटिजग्गाहीति ।

सा साधु अय्येति तस्सा वचनं सम्पटिच्छित्वा तुरिततुरिता रुक्खमूलं अगमासि ।

बोधिसत्तोपि खो तस्मिं रत्तिभागे पञ्च महासुपिने दिस्वा परिगण्हतो निस्संसयेनाहं अज्ज बुद्धो भविस्सामीति कतसन्निट्ठानो तस्सा रत्तिया अच्चयेन कतसरीरपटिज्जगनो भिक्खाचारकालं आगमयमानो पातोव आगन्त्वा तस्मिं रुक्खमूले निसीदि अत्तनो पभाय सकलं रुक्खं ओभासयमानो ।

अथ खो सा पुण्णा आगन्त्वा अद्दस बोधिसत्तं रुक्खमूले पाचीनलोकाधातुं ओलोकयमानं निसिन्नं । सरीरतो चस्स निक्खन्ताहि पभाहि सकलरुक्खं सुवण्णवण्णं दिस्वा तस्सा एतदहोसि—अज्ज अम्हाकं देवता रुक्खतो ओरुह्म सहत्थेनेव बलिकम्मं सम्पटिच्छित्तुं निसिन्ना मञ्जेति उब्बेगपत्ता हुत्वा वेगेन गन्त्वा सुजाताय एतमत्थं आरोचेसि । [६६]

सुजाता तस्सा वचनं सुत्वा तुट्ठमानसा हुत्वा अज्जदानि पट्ठाय मम जेट्ठधीतुट्ठाने तिट्ठहीति धीतु अनुच्छविकं सब्बालङ्कारं अदासि । यस्मा पन बुद्धभावं पापुणनदिवसे सतसहस्सगघनिकं सुवण्णपातिं लद्धुं वट्ठति तस्मा सा सुवण्णपातियं पायासं पक्खिपिस्सामीति चित्तं उप्पादेत्वा सतसहस्सगघनिकं सुवण्णपातिं नीहरापेत्वा तत्थ पायासं पक्खिपितुकामा पक्कभोजनं आवज्जेसि । सब्बो पायासो पदुमपत्ता उदकं विय विनि-वट्ठित्वा पातियं पतिट्ठासि । एकपातिपूरणमतोव अहोसि । सा तं पातिं अञ्जाय सुवण्णपातिया पटिकुज्जेत्वा ओदातवत्थेन वेदेत्वा सब्बालङ्कारेहि अत्तभावं अलङ्कुरित्वा तं पातिं अत्तनो सीसे ठपेत्वा महन्तेन आनुभावेन निग्रोधमूलं गन्त्वा बोधिसत्तं ओलोकेत्वा बलवसोमनस्सजाता रुक्खदेवताति सञ्जाय दिट्ठट्ठानतो पट्ठाय ओनतो नता गन्त्वा सीसतो पातिं ओतारेत्वा विवरित्वा सुवण्णभिङ्कारेण गन्धपुष्पवासितं उदकं गहेत्वा बोधिसत्तं उपगन्त्वा अट्ठासि । घटीकारमहाब्रह्मना दिन्नमत्तिकापत्तो एत्तकं अद्धानं बोधिसत्तं अविजहित्वा तस्मिं खणे अदस्सनं गतो । बोधिसत्तो पत्तं अपस्सन्तो दक्खिणहत्थं पसारेत्वा उदकं सम्पटिच्छि । सुजाता सहेव पातियां पायासं महापुरिसस्स हत्थे ठपेसि । महापुरिसो सुजातं ओलोकेसि । सा आकारं सल्लक्खेत्वा अय्य ! मया तुम्हाकं परिच्चत्तं गण्हित्वा यथारुचिं गच्छथाति वन्दित्वा यथा मय्हं मनोरथो [69] निप्फन्नो एवं तुम्हा-कम्पि निप्फज्जतूति वत्ता सतसहस्सगघनिकाय सुवण्णपातिया पुराणपण्णं विय अनयेक्खा हुत्वा पक्कामि ।

§ ५५. बोधिसत्तस्स पाति पटिसोतं गच्छति

बोधिसत्तोपि खो निसिन्नट्ठाना उट्ठाय रुक्खं पदक्खिणं कत्वा पातिं आदाय नेरञ्जराय तीरं गन्त्वा अनेकेसं बोधिसत्तसहस्सानं ^१ अभिसम्बुज्जनदिवसे ओतरित्वा नहानट्ठानं सुप्पतिट्ठितित्थं नाम अत्थि, तस्स तीरे पातिं ठपेत्वा ओतरित्वा नहात्वा अनेकबुद्धसहस्सानं निवासनं अरहद्दज्जं निवासेत्वा पुरत्था-भिमुखो निसीदित्वा एकट्ठितालपक्कप्पमाणे एकूनपण्णासपिण्डे कत्वा सब्बं अपोदकं मधुपायासं परिभुञ्जि ।

सो एवं हिस्स बुद्धभूतस्स सत्तसत्ताहं बोधिमण्डे वसन्तस्स एकूनपञ्चासदिवसानि आहारो अहोसि । एत्तकं कालं नेव अञ्जो आहारो अत्थी न नहानं न मुखधोवनं न सरीरवळञ्जो । ज्ञानमुखेन मगगमुखेन फलमुखेनेव वीतिनामेसि ।

तं पन पायासं परिभुञ्जित्वा सुवण्णपातिं गहेत्वा—सच्चाहं अज्ज बुद्धो भवितुं सक्खिस्सासि अयं मे पाति पटिसोतं गच्छतु तो चे सक्खिस्सामि अनुमोतं गच्छतूति वत्ता पक्खिपि । सा [६७] सोतं छिन्दमाना नदीमज्झं गन्त्वा मज्झट्ठानेनेव जवसम्पन्नो अस्सो विय असीतिहत्थमत्तट्ठानं पटिसोतं गन्त्वा एकस्मिं आवत्ते निमुज्जित्वा कालनागराजभवनं गन्त्वा तिण्णं बुद्धानं परिभोगपातियो किळिकिळीति रवं कारयमाना पहरित्वा तस्सं सब्बहेट्ठिमा हुत्वा अट्ठासि ।

कालो नागराजा तं सद्दं सुत्वा हिट्थो एको बुद्धो निब्बत्ति पुन अज्ज एको निब्बतोति अनकेहि पदसत्तेहि श्रुतियो ऋदमानो अट्ठासि । तस्स किर ^२ महापटविद्या एकयोजनतिगावूत्तप्पमाणं नभं पूरेत्वा आरोहनकालो अञ्जया हिट्थो वसति श्वदिसो अहोसि ।

§ ५६. बोधिमण्डं अरुहिं

बोधिसत्तोपि नदीतीरग्निं सुपुण्फितसालवने दिक्खविहारं कत्वा सायणहसमये पुष्पानं वण्टतो मुञ्चन-

काले देवताहि अलङ्कृतेन अट्ठसभविद्यारेण मग्गेन सीहो विय विजम्भमानो बोधिरुक्खाभिमुखो पायासि । नागयक्खसुपण्णादयो दिब्बेहि गन्धपुष्पादीहि पूजयिषु । दिब्बसङ्गीतादीनि^१ पवत्तयिषु दससहस्सीलोकधातु एकगन्धा एकमाला एकसाधुकारा अहोसि ।

तस्मिं समये सोत्थियो नाम तिणहारको तिणं आदाय पटिपथे आगच्छन्तो महापुरिसस्स आकारं जत्वा अट्ठ तिणमुट्ठियो तस्स अदासि । बोधिसत्तो तिणं गहेत्वा [७०] बोधिमण्डं आरुह्य दक्खिणदिसाभागे उत्तराभिमुखो अट्ठासि । तस्मिं खणे दक्खिणचक्कवाळं ओसीदित्वा हेट्ठा अवीचिसम्पत्तं विय अहोसि । उत्तरचक्कवाळं उल्लङ्घित्वा उपरि भवगम्पत्तं विय अहोसि । बोधिसत्तो इमं^२ सम्बोधिपापुणनट्ठानं न भविस्सति मञ्जेति पदक्खिणं करोन्तो पच्छिमदिसाभागं गत्वा पुरत्थाभिमुखो अट्ठासि । ततो पच्छिमचक्कवाळं ओसीदित्वा हेट्ठा अवीचिसम्पत्तं विय अहोसि । पुरत्थिमचक्कवाळं उल्लङ्घित्वा भवगम्पत्तं विय अहोसि । ठितठितट्ठाने किरस्स नेमिवट्ठपरियन्ते अक्कन्ते नाभिया पतिट्ठितमहासकटचक्कं विय महापठवी ओनतुन्नता अहोसि । बोधिसत्तो मयिदं सम्बोधिपापुणनट्ठानं न भविस्सति मञ्जेति पदक्खिणं करोन्तो उत्तरदिसाभागं गत्वा दक्खिणाभिमुखो अट्ठासि । ततो उत्तरचक्कवाळं ओसीदित्वा हेट्ठा अवीचिसम्पत्तं विय अहोसि । दक्खिणचक्कवाळं उल्लङ्घित्वा भवगम्पत्तं विय अहोसि । बोधिसत्तो इदम्पि सम्बोधि पापुणनट्ठानं न भविस्सति मञ्जेति पदक्खिणं करोन्तो पुरत्थिमदिसाभागं गत्वा पच्छिमाभिमुखो अट्ठासि । पुरत्थिमदिसाभागे पन सम्बबुद्धानं पल्लङ्कट्ठानं तं नेवच्छम्भति न कम्पति ।

महासत्तो इदं सम्बबुद्धानं अविजहितं अचलट्ठानं किलेसपञ्जरविद्धंसनट्ठानन्ति जत्वा तानि तिणानि अग्रे गहेत्वा चालेसि । तावदेव जुदसहत्थो पल्लङ्को अहोसि । तानिपि [६८] खो तिणानि तथारूपेण सण्ठानेन सण्ठहिषु यथा रूपं सुकुसलोपि चित्तकारो वा पोत्थकारो वा आलिखितुम्पि समत्थो नत्थि । बोधिसत्तो बोधिकखन्धं पिट्ठितो कत्वा पुरत्थाभिमुखो दब्बहमानसो हुत्वा 'कामं तच्चा च नहार च अट्ठि च अवसुस्सतु^३ उपसुस्सतु सरीरे मंसलोहितं, नत्वेव सम्मासम्बोधि अप्पत्वा इमं पल्लङ्कं भिन्दिस्सामीति' असनिसतसन्निपातेनापि अमेज्जरूपं अपराजितपल्लङ्कं आभुजित्वा निसीदि ।

§ ५३. मारपराजयो

तस्मिं समये मारो देवपुत्तो सिद्धत्थकुमारो मय्हं वसं अतिक्कमितुकामो, न दानिस्स अतिक्कमितुं दस्सामीति मारबलस्स सन्तिकं गत्वा एतमत्थं आरोचेत्वा मारघोसनं नाम घोसापेत्वा मारबलं आदाय निक्खमि । सा मारसेना मारस्स पुरतो द्वादसयोजनानि होति । दक्खिणतो च वामतो च द्वादसयोजनानि, पच्छतो पन चक्कवाळपरियन्तं कत्वा ठिता उद्धं नवयोजनुब्बेधा मारसेना यस्सा उन्नदन्तिया उन्नादमद्दो [७१] योजनसहस्सतो पट्ठाय पठविउद्रियनसद्दो विय सूयति । अथ मारो देवपुत्तो दिव्युद्दयोजनसतिकं गिरिमेखलं नाम हत्थि अभिरुहित्वा बाहुसहस्सं मापेत्वा नानायुधानि अगगहेसि । अवसेसायपि मारपरिसाय द्वे जना एकसदिसकं आयुधं न गण्हिषु । नानप्पकारमुखा हुत्वा महासत्तं अज्झोत्थरमाना आगमिषु ।

दससहस्सचक्कवाळे देवता पन महासत्तस्स थुतियो वदनामा अट्ठंषु । सक्को देवराजा विजयुत्तरसङ्खं धममानो अट्ठासि । सो किर सङ्खो वीसंहत्थसतिको होति, सकिं वातं गाहापेत्वा धमन्तो चत्तारो मासे सद्दं करित्वा निस्सद्दो होति । महाकालनागराजा अतिरेकपदसतेन वण्णं वदन्तो अट्ठासि । महाब्रह्मा सेतच्छतं धारयमानो अट्ठासि । मारबले पन बोधिमण्डं उपसङ्कमन्ते उपसङ्कमन्ते तेसं एकोपि ठातुं नासक्खि । सम्मुखसम्मुखट्ठानेनेव पलायिषुं । कालो नागराजा पठविधं निमुज्जित्वा पञ्चयोजनसतिकं मञ्जेरिकं नागभवनं गत्वा उभोहि हत्थेहि मुखं पिदहित्वा निपन्नो । सक्को विजयुत्तरसङ्खं पिट्ठियं कत्वा चक्कवाळमुखवट्ठियं अट्ठासि । महाब्रह्मा सेतच्छतं चक्कवाळकोटियं ठपेत्वा ब्रह्मलोकमेव अगमासि । एकदेवतापि ठातुं समत्था नाम नाहोसि । महापुरिसो एकोव निसीदी । मारोपि अत्तनो परिसं आह-ताता ! सुद्धोदनपुत्तेन

सिद्धत्वेन सदिसो अञ्जो पुरिसो नाम नत्थि । मयं सम्मुखा युद्धं दातुं न सक्खिस्साम, पच्छाभागेन दस्सामाति । [६९]

महापुरिसोपि तीणि पस्सानि ओलोकेत्वा सब्बदेवतानं पलातत्ता सुञ्जानि^१ अद्स । पुन उत्तरपस्सेन मारबलं अञ्जोत्थरमानं दिस्वा अयं एत्तको जनो मं एककं सन्धाय महन्तं वायामं परक्कमं करोति । इमस्मिं ठाने मय्हं माता वा पिता वा भाता वा अञ्जो वा कोचि वातको नत्थि । इमा पन दसपारमियोव मय्हं दीघरत्तं पुट्ठपरिजनसदिसा । तस्मा पारमियो च फलकं कत्वा पारमिसत्थेनेव पहरित्वा अयं बलकायो मया विद्धंसेत्तुं वट्ठतीति दसपारमियो आवज्जमानो निसीदि ।

अथ मारो देवपुत्तो एतेनेव सिद्धत्थं पलापेस्सामीति वातमण्डलं समुट्ठापेसि । तं खणं येव पुरत्थिमादिभेदा वाता समुट्ठहित्वा अड्ढयोजनद्वियोजन [72] तियोजनप्पमाणानि पब्बतकूटानि पदालेस्वा वनगच्छरुक्खादीनि उम्मूलेत्वा समन्ता गामनिगमे चुण्णविचुण्णं कातुं समत्थापि महापुरिसस्स पुञ्जतेजेन विहतानुभावा बोधिसत्तं पत्वा चीवरकण्णमत्तम्पि चालेतुं नासक्खिमु ।

ततो उदकेन नं अञ्जोत्थरित्वा मारेस्सामीति महावस्सं समुट्ठापेसि । तस्सानुभावेन उपरूपरि सतपटलसहस्सपटलादिभेदा बलाहका उट्ठहित्वा वस्सिमु । वुट्ठिधारावेगेन पठवी छिद्वा अहोसि । वनरुक्खादीनं उपरिभागेन महामेघो आगन्त्वा महासत्तस्स चीवरे उस्सावबिन्दुपतनमत्तम्पि तेमेतुं नासक्खि ।

ततो पासाणवस्सं समुट्ठापेसि । महन्तानि महन्तानि पब्बतकूटानि धूपायन्तानि पज्जलन्तानि आकासेनागन्त्वा बोधिसत्तं पत्वा दिब्बमालागुलभावं आपर्जिज्जमु ।

ततो पहरणवस्सं समुट्ठापेसि । एकतो धारा उभतो धारा असिसत्तिखुरप्पादयो धूपायन्ता पज्जलन्ता आकासेनागन्त्वा बोधिसत्तं पत्वा दिब्बपुष्पानि अहेसुं ।

ततो अङ्गारवस्सं समुट्ठापेसि । किंसुकवण्णा अङ्गारा आकासेनागन्त्वा बोधिसत्तस्स पादमूले दिब्बपुष्पानि हुत्वा विकिरिमु ।

ततो कुक्कुळवस्सं समुट्ठापेसि । अच्चुण्हो अरिगवण्णो कुक्कुळो आकासेनागन्त्वा बोधिसत्तस्स पादमूले चन्दनचुण्णं हुत्वा निपति ।

ततो बालुकावस्सं समुट्ठापेसि । अतिमुखमघालुका धूपायन्ता पज्जलन्ता आकासेनागन्त्वा बोधिसत्तस्स पादमूले दिब्बपुष्पानि हुत्वा निपतिमु ।

ततो कललवस्सं समुट्ठापेसि । तं कललं धूपायन्तं पज्जलन्तं आकासेनागन्त्वा बोधिसत्तस्स पादमूले दिब्बविलेपनं हुत्वा निपति ।

ततो इमिना भिसेत्वा सिद्धत्थं पलापेस्सामीति अन्धकारं समुट्ठापेसि । तं चतुरङ्गसमन्नागतं विय महातमं हुत्वा बोधिसत्तं पत्वा सुरियप्पभाविहत्तं विय अन्धकारं अन्तरधायि । [70]

एवं मारो इमाहि नवहि वातवस्सपासाणप्पहरणङ्गारकुक्कुळवालिकाकललन्धकारवुट्ठीहि बोधिसत्तं पलापेतुं असक्कोन्तो-किं भणे ! तिट्ठथ, इमं कुमारं गण्हथ, हनथ, पलापेथाति परिसं आणापेत्वा सयम्पि गिरिमेखलस्स हत्थिनो खन्धे निसिन्नो चक्कायुधं आदाय बोधिसत्तं उपसङ्कमित्वा--सिद्धत्थ ! उट्ठेहि एतस्मा पल्लङ्का नायं तुय्हं पापुणाति मय्हं एसो पापुणातीति आह ।

महासत्तो तस्स वचनं सुत्वा अबोच-मार ! नेव तया दसपारमियो पूरिता, न उपपारमियो, न परमत्थपारमियो नापि पञ्चमहापरिच्चागा परिच्चत्ता न ज्ञानत्थचरिया^२ न लोकत्थचरिया न बृद्धत्थचरिया पूरिता, नायं पल्लङ्को तुय्हं [73] पापुणाति मय्हेवेसो पापुणातीति आह ।

मारो कुद्धो कोधवेगं असहन्तो महापुरिसस्स चक्कायुधं विस्सज्जेसि । तं तस्स दसपारमियो

आवज्जेन्तस्स उपरिभागे मालावितानं हुत्वा अट्ठासि । तं किर खुरधारं चक्कायुधं अञ्जदा तेन कुद्धेन विस्सट्ठं एकघनपासाणे थम्मे वंसकळीरे विय छिन्दन्तं गच्छति । इदानीं पन तस्मिं मालावितानं हुत्वा ठिते अवसेसा मारपरिसा इदानीं पल्लङ्कतो बुट्ठाय पलायिस्सतीति महन्तमहन्तानि सेलकूटानि विस्सज्जेसुं । तानिपि महापुरिसस्स दसपारमियो आवज्जेन्तस्स मालागुलभावं आपज्जित्वा भूमियं पतिंसु ।

देवता चक्कवाळमुखतट्टियं ठिता गीवं पसारेत्वा सीसं उक्खिपित्वा उक्खिपित्वा नट्ठो वत भो सिद्धत्थकुमारस्स रुपसोभग्गप्पत्तो अत्तभावो किन्नु खो करिस्सतीति ओलोकेन्ति ।

ततो महापुरिसो पूरितपारमीनं बोधिसत्तानं अभिसम्बुज्जनदिवसे पत्तपल्लङ्को^१ मय्हं पापुणातीति वत्वा ठितं मारं आह—मार ! तुय्हं दानस्स दिन्नभावे को सक्खीति ।

मारो इमे एतका सक्खिनीति मारबलाभिमुखं हत्थं पसारेसि । तस्मिं खणे मारपरिसाय अहं सक्खि अहं सक्खीति पवत्तसट्ठो पठविउद्वियनसट्ठसदिसो अहोसि । अथ मारो महापुरिसं आह—सिद्धत्थ ! तुय्हं दानस्स दिन्नभावे को सक्खीति ।

महापुरिसो 'तुय्हं ताव दानस्स दिन्नभावे सचेतना सक्खिनो मय्हं पन इमस्मिं ठाने सचेतनो कोचि सक्खि नाम नत्थि, तिट्ठतु ताव मे अवसेसअत्तभावेसु दिन्नदानं वेस्सन्तरत्तभावे पन ठत्वा मय्हं सत्तसतकमहादानस्स ताव दिन्नभावे अयं अचेतनापि घनमहापठवी सक्खीति चीवरगब्भन्तरतो दक्खिणहत्थं अभिनीहरित्वा वेस्सन्तरत्तभावे ठत्वा मया^२ सत्तसतकमहादानस्स दिन्नभावे त्वं सक्खी न सक्खीति [७१] महापठवीअभिमुखं हत्थं पसारेसि ।

महापठवी अहं ते तदा सक्खीति विरावसतेन विरावसहस्सेन विरावसतसहस्सेन मारबलं अवत्थरमाना विय उन्नदि ।

ततो महापुरिसे दिन्नं ते सिद्धत्थ ! महादानं उत्तमदानन्ति वेस्सन्तरदानं सम्मसन्ते सम्मसन्ते दियइद्वयोजनसतिको गिरिमेखलहत्थी जन्नुकेहि पतिट्ठासि । मारपरिसा दिसा विदिसा पलायि । द्वे एकमग्गेन गता नाम नत्थि । सीसाभरणानि चैव निवत्थवत्थानि च पहाय सम्मुखसम्मुखदिसाहि येव पलायिंसु ।

ततो देवसङ्घा पलायमानं मारबलं दिस्सा [७१] मारस्स पराजयो जातो सिद्धत्थकुमारस्स जयो, जयपूजं करिस्सामाति नागा नागानं, सुपण्णा सुपण्णानं, देवता देवतानं, ब्रह्मानो ब्रह्मानं पेसेत्वा गन्धमालादिहत्था महापुरिसस्स सन्तिकं बोधिपल्लङ्कं अगमंसु । एवं गतेसु च पन तेसु :—

“जयो हि बुद्धस्स सिरीमतो अयं
मारस्स च पापिमतो पराजयो,
उग्घोसयुं बोधिमण्डे पमोदिता
जयं तदा नागगणा महेसिनो ।
जयो हि बुद्धस्स सिरीमतो अयं
मारस्स च पापिमतो पराजयो,
उग्घोसयुं बोधिमण्डे पमोदिता
सुपण्णसङ्घापि जयं महेसिनो ।
जयो हि बुद्धस्स सिरीमतो अयं
मारस्स च पापिमतो पराजयो
उग्घोसयुं बोधिमण्डे पमोदिता
जयं तदा देवगणा महेसिनो ।

जयो हि बुद्धस्स सिरीमतो अयं
मारस्स च पापिमतो पराजयो,
उग्घोसयं बोधिमण्डे पमोदिता
जयं तदा ब्रह्मगणापि तादिनो” ति ।

अवसेसा दसमु चक्कवाळसहस्सेसु देवता मालागन्धविलेपनेहि पूजयमाना नानपकारा थुतियो वदमाना अट्ठमु ।

§ ५८. सम्बोधिषा पत्ति

एवं धरमाने येव सुरिये महापुरिसो मारबलं विधमेत्वा चीवरूपरि पतमानेहि बोधिरुक्खङ्कुरेहि रत्तपवाळदलेहि विय पूजियमानो^१ पठमे यामे पुब्बेनिवासज्जाणं अनुस्सरित्वा मज्झिमे दिब्बचक्खुं विसोधेत्वा पच्छिमे यामे पटिच्चसमुप्पादे ज्ञाणं ओतारेसि । [७२]

अथस्स द्वादसङ्गिकं पच्चयाकारं वट्टविवट्टवसेन अनुलोमपटिलोमतो सम्मसन्तस्स सम्मसन्तस्स दससहस्सीलोकधातु उदकपरियन्तं कत्वा द्वादसक्खत्तुं सङ्कम्पि ।

महापुरिसे पन दस सहस्सीलोकधातुं उन्नादेत्वा अरुणगमनवेलाय सब्बञ्जुतज्जाणं [75] पटिविज्जन्ते सकलदससहस्सी लोकधातु अलङ्कृतपटियत्ता अहोसि । पाचीनचक्कवाळमुखवट्टियं उस्सापितानं धजानं पटाकानं रंसियो पच्छिमचक्कवाळमुखवट्टियं पहरन्ति । तथा पच्छिमचक्कवाळमुखवट्टियं उस्सापितानं पाचीनचक्कवाळमुखवट्टियं, उत्तरचक्कवाळमुखवट्टियं उस्सापितानं दक्खिणचक्कवाळमुखवट्टियं, दक्खिणचक्कवाळमुखवट्टियं उस्सापितानं उत्तरचक्कवाळमुखवट्टियं पहरन्ति । पठवीतले उस्सापितानं पन धजानं पटाकानं ब्रह्मलोकं आहच्च अट्ठमु । ब्रह्मलोके बद्धानं पठवीतले पटिठ्हिमु । दससहस्सचक्कवाले पुष्फपगरुक्खा पुष्फं गण्हिमु । फलपगरुक्खा फलपिडिभारभरिता अहेसुं । खन्धेसु खन्धपदुमानि पुप्फिमु । साखामु साखापदुमानि, लतासु लतापदुमानि, आकासे ओलम्बकपदुमानि सिलातलानि भिन्दित्वा उपरु-परि सत्तसत्ता हत्वा दण्डकपदुमानि उट्ठहिमु ।

दससहस्सीलोकधातु वट्टेत्वा विस्सट्ठमालागुळा विय सुसंथतपुप्फसन्थारो विय च अहोसि । चक्कवाळन्तरेसु अट्ठयोजनसहस्सलोकन्तरिका सत्तसुरियप्पभायपि अनोभासितपुब्बा एकोभासा अहेसुं । चतुरासीतियोजनसहस्सगम्भीरो महासमुदो मधुरोदको अहोसि । नदियो नप्पवत्तिमु । जच्चन्धा रूपानि पस्सिंसुं । जातिबधिरा सद्धं सुणिंसु । जातिपीठसप्पी पदसा गच्छिंसु । अन्दुबन्धनादीनि छिज्जित्वा^२ पत्तिंसु । एवं अपरिमाणेन सिरिविभवेन पूजियमानो नेकप्पकारेसु अच्छरियधम्मेसु पातुभूतेसु सब्बञ्जुतज्जाणं पटिविज्जित्वा सब्बबुद्धानं अविजहितउदानं उदानेसिः—

“अनेकजातिसंसारं सन्धाविस्सं अनिब्बिंसं,
गहकारकं गवेसन्तो दुक्खा जाति पुनप्पुनं ।
गहकारक ! दिट्ठोसि पुन गेहं न काहसि,
सब्बा ते फामुका भग्गा गहकूटं विसङ्खितं,^३
विसङ्खारगतं चित्तं तण्हानं खयमज्झगा” ति । [76]

इति तुसितपुरतो पट्ठाय याव अयं बोधिमण्डे सब्बञ्जुतपत्ति, एत्तकं ठानं अविदूरेनिदानं नामाति वेदितव्वं ।

५. सन्तिके निदानं

सन्तिके निदानं पन “भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डकस्स आरामे वेसालियं विहरति महावने कूटागारसालाय” न्ति एवं तेसु तेसु ठानेसु विहरतो तस्मिं तस्मिं ठाने येन लब्धतीति वुत्तं । किञ्चापि एवं वुत्तं अथ खो पन तं आदितो पट्ठाय एवं वेदितव्वं—

§ ५९. जयपल्लंको वरपल्लंको

इमं उदानं उदानेत्वा जयपल्लंके निसिन्नस्स हि भगवतो एतदहोसि—अहं कप्पसतसहस्साधिकानि चत्तारि असंखेय्यानि इमस्स पल्लंकस्स कारणा सन्धावि । एत्तकं मे कालं इमस्सेव पल्लंकस्स कारणा मया अलंकृतसीसं गीवाय छिन्दित्वा दिन्नं । सुअञ्जितानि अक्खीनि, हृदयममं उव्वत्तेत्वा दिन्नं । जालियकुमार-सदिसा पुत्ता, कण्हाजिनाकुमारीमदिसा धीतरो, मदीदेवीसदिसा भरियायो च परेसं दासत्थाय दिन्ना । अयं मे पल्लंको जयपल्लंको वरपल्लंको च । एत्थ मे निसिन्नस्स संकप्पा परिपुण्णा । न ताव इतो वुट्ठहि-स्सामीति । अनेककोटिसतसहस्सा समापत्तियो समापज्जन्तो सत्ताहं तत्थेव निसीदि यं सन्धाय वुत्तं :— अथ खो भगवा सत्ताहं एकपल्लंकेन निसीदि विमुत्तिमुखपटिसंवेदी”^१ ति ।

§ ६०. अनिमिसचेतियं

अथेकच्चानं देवतानं अज्जापि नून सिद्धत्थस्स कतव्वकिच्चं अत्थि पल्लंकरिं हि आलयं न विज-हतीति परिवितक्को उदपादि । सत्था देवतानं वितक्कं अत्वा तासं विततक्कवूपसमनत्थं वेहासं अब्भुगन्त्वा यमकपाटिहारियं दस्सेसि । महाबोधिमण्डस्मि हि कतयमकपाटिहारियं च जातिनमागमे कतपाटिहारियं च पाटिकपुत्तसमागमे^२ कतपाटिहारियं च सर्व्वं गण्डम्बकवमूलं यमकपाटिहारियसदिसं अहोसि । एवं सत्था इमिना पाटिहारियेन देवतानं वितक्कं वूपसमेत्वा पल्लंकतो ईसकं पाचीननिस्सिते उत्तरदिसाभागे ठत्वा इमस्मि वत मे पल्लंके सर्व्वञ्जुतजाणं पटिविद्वन्ति चत्तारि असंखेय्यानि कप्पसतसहस्सञ्च पुरितानं पारमीनं फलाधिगमनट्ठानं पल्लंकं अनिमिसेहि अक्खीहि ओलोकयमानो सत्ताहं वीतिनामेसि । तं ठानं अनिमिसचेतियं नाम जातं ।

§ ६१. रतनचङ्कमचेतियं

अथ पल्लंकस्स च ठितट्ठानस्स च अन्तरा चंकमं मापेत्वा पुरत्थिमपच्छिमतो आयते [७७] रतनचंकमे चंकमन्तो सत्ताहं वीतिनामेसि । तं ठानं रतनचंकमचेतियं नाम जातं ।

§ ६२. रतनघरं

चतुत्थे पन सत्ताहे बोधितो पच्छिमुत्तरदिमाभागे देवता रतनघरं मापयिमु । तत्थ पल्लंकेन निमी-दित्वा अभिधम्मपिटकं विमेषतो चेत्थ अनन्तनयं समन्तपट्ठानं विचिन्तो सत्ताहं वीतिनामेसि ।

अभिधम्मिका पत्ताहुः—“रतनघरं नाम न रतनमयं गेहं । सत्तघं पन पकरणानं सम्मसितट्ठानं रतनघर” न्ति । यस्मा पनेत्थ उभोपेते पगियाया युज्जज्जि तस्मा उभयगपेतं गहेनव्वमेव । ततो पट्ठाय पन तं ठानं रतनघरचेतियं नाम जातं । [७४]

§ ६३. येन अजपालनिग्रोधो

एवं बोधिसमीपे येव चत्तारि सत्ताहानि वीतिनामेत्वा पञ्चमे सत्ताहे बोधिरुक्खमूला येन अजपालनि-ग्रोधो तेनुपसंकपि । तत्रापि धम्मं विचिन्तो येव विभुत्तिमुखं^३ पटिसंदेहेतो निमीदि ।

तस्मिं समये भारो देवपुत्तो एत्तकं कालं अनुवन्धन्तो ओतारारेक्खोपि इमस्स किञ्चि खलितं नाहम । अतिककन्तोदानि एस मम वसन्ति दोमनरसप्पत्तो मत्तागमे निसीदित्वा सोळ्ळम कारणानि चित्तेन्तो भूमियं सोळ्ळस लेखा कड्ढि । “अहं ऐसां विय दानपारमिं न पूरेसि तेनम्हि इमिना सदिसो न जानो” ति एकं १ महावग्ग उदान । २ स्या०—पातलीपुत्रसमागमे । ३ सि०—विमुत्तिमुखं ।

लेखं कड्ढि । तथा “अहं एसो विय सीलपारमि नेक्खम्मपारमि पञ्जापरमि विरियपारमि खन्तिपारमि सच्चपारमि अधिट्ठानपारमि मेत्तापारमि उपेक्खापारमि न पूरेसि तेनम्हि इमिना सदिसो न जातो” ति दसमं लेखं कड्ढि । अहं एसो विय असाधारणस्स आसयानुसयजाणस्स इन्द्रियपरोपरियजाणस्स महाकरुणास-
मापत्तिजाणस्स यमकपाटिहारियजाणस्स अनावरणजाणस्स सब्बञ्जुतजाणस्स पटिवेधाय उपनिस्सयभूता दसपारमियो न पूरेसि तेनम्हि इमिना सदिसो न जातो” ति सोळसमं लेखं कड्ढि । एवं इमेहि कारणेहि महामग्गे सोळस लेखा कड्ढमानो^१ निसीदि ।

तस्मिं समये तण्हा अरती रागा चाति तिस्सो मारधीतरो पिता नो न पञ्जायति कहं नुखो एतरहीति ओलोकयमाना तं दोमनस्सप्पत्तं भूमियं विलिखमानं दिस्वा पितुसन्तिकं गत्वा कस्मासि तात ! दुक्खी दुम्मनोसीति पुच्छिमु ।

अम्मा, अयं महासमणो मय्हं वसं अतिक्कन्तो । एतकं कालं ओलोकेन्तो ओतारमस्स दट्ठुं नासक्खि तेनम्हि दुक्खी दुम्मनोति । [78]

यदि एवं मा चिन्तयित्थ मयमेतं अत्तनो वसे कत्वा आदाय आगमिस्सामाति ।

न सक्का अम्मा ! एसो केनचि वसे कातुं । अचलाय सद्दाय पटिट्ठितो एसो पुरिसोति ।

तात ! मयं इत्थियो नाम, इदानेव नं रागपासादीहि बन्धित्वा आनेस्साम । तुम्हे मा चिन्तयित्थाति ।

ता इतो भगवन्तं उपसंकमित्वा पादे ते समण ! परिचारेस्सामाति आहंसु । भगवानेव तासं वचनं मनसि अकासि न अक्खीनि उम्मीलेत्वा ओलोकेसि अनुत्तरे उपधिसंखये विमुत्तमानसो विवेकसुखञ्चेव अनुभवन्तो निसीदि । पुन मारधीतरो “उच्चावचा खो पुरिसानं अधिप्पाया, केसञ्चि कुमारिकासु पेमं होति, केसञ्चि पठमवये ठितासु, केसञ्चि मज्झिमवये ठितासु, केसञ्चि पच्छिमवये ठितासु । यन्नून मयं नानप्पकारेहि रूपेहि पलोभेय्यामा” ति [७५] एकमेका कुमारिवण्णादि-
वसेन सतं सतं अतभावे अभिनिम्मिनित्वा कुमारियो अविजाता सकिविजाता दुविजाता मज्झमित्थियो महि-
त्थियो च हुत्वा छक्खत्तुं भगवन्तं उपसंकमित्वा पादे ते समण परिचारेस्सामाति आहंसु । तम्पि भगवा न मनसा-
कासि यथा तं अनुत्तरे उपधिसंखये विमुत्तो ।

केचि पनाचरिया वदन्ति:—“ता महित्थिभावेन उपगता दिस्वा भगवा एवमेवं एता खण्डदन्ता पलितकेसा होन्तूति अधिट्ठासी” ति तं न गहेतब्बं । न हि सत्था एवरूपं अधिट्ठानं करोति । भगवा पन “अपेथ तुम्हे किं दिस्वा एव वायमथ ? एवरूपं नाम अवीतरागादीनं पुरतो कातुं वट्ठति । तथागतस्स पन रागो पहीनो, दोसो पहीनो, मोहो पहीनो” ति । अत्तनो किलेसप्पहाणं आरब्ध:—

“यस्स जितं नावजीयति जितमस्स नो याति कोचि लोके ।

तं बुद्धमनन्तगोचरं अपदं केन पदेन नेस्सथ ॥

यस्स जालिनी विसत्तिका तण्हा नत्थि कुहिञ्चि नेतवे ।

तं बुद्धमनन्तगोचरं अपदं केन पदेन नेस्सथा” ति ।

इमा धम्मपदे बुद्धवगे द्वे गाथा वदन्तो धम्मं कथेसि । ता सच्चं किर नो पिता अवोच “अरहं सुगतो लोके न रागेन [79] सुवानयो” ति आदीनि वत्वा पितु सन्तिकं अगमंसु ।

भगवापि तत्थ सत्ताहं बीतिनामेत्वा मुचलिन्दमूल^२ अगमासि ।

§ ६४. मुचलिन्दं, राजायतनं

तत्थ सत्ताहवद्दलिकाय^३ उपपन्नाय सीतादिपटिबाहनत्थं मुचलिन्देन नागराजेन सत्तक्खत्तुं भोगेहि परिक्खित्तो असम्बाधं गन्धकुटियं विहरन्ता विय विमुत्तिमुखं पटिसंवेदियमानो सत्ताहं बीतिनामेत्वा राजायतनं

१ रो०—आकड्ढमानो । २ रो०—मुचलिन्दं । ३ रो०—सत्ताहं बीतिनामेत्वा वद्दलिकाय ।

उपसंकमि । तत्थापि विमुत्तिमुखपटिसंवेदीयेव निसीदि ।

एत्तावता सत्त सत्ताहानि परिपुण्णानि । एत्थन्तरे नेव मुखधोवनं न सरीरपटिजग्गनं न आहार-
किच्चं अहोसि । ज्ञानमुखेन मग्गमुखेन फलमुखेनेव वीतिनामेसि ।

अथस्स तस्मिं सत्तसत्ताहमत्थके एकूनपञ्जासतिमे दिवसे तत्थ निसिन्नस्स मुखं धोविस्सामीति चित्तं
उदपादि । सक्को देवानमिन्दो अगदहरीटकं आहरित्वा अदासि । सत्था तं परिभुञ्जि । तेनस्स सरीरवळञ्जं
अहोसि । अथस्स सक्को येव नागलतादन्तकट्ठं चेव मुखधोवनउदकं च अदासि । सत्था तं दन्तकट्ठं खादित्वा
अनोतत्तदहे उदकेन मुखं धोवित्वा तत्थेव राजायतनमूले निसीदि । [७६]

§ ६५. तपस्सुभल्लिका नाम द्वे वाणिजा

तस्मिं समये तपस्सुभल्लिका^१ नाम द्वे वाणिजा पञ्चहि सकटसतेहि उक्कलाजनपदा मज्झिमदेसं
गच्छन्ता अत्तनो ब्रातिसालोहिताय देवताय सकटानि सन्निरुम्भित्वा सत्थुआहारसम्पादने उस्साहिता मन्थं च
मधुपिण्डिकं च आदाय पतिगण्हातु नो भन्ते भगवा इमं आहारं अनुकम्पं उपादायाति सत्थारं उपसंकमित्वा अट्ठंसु ।

भगवा पायासं पटिग्गहणदिवसे येव पत्तस्स अन्तरहितत्ता न खो तथागता हत्थेसु पतिगण्हन्ति
किम्हि नु खो अहं पतिगण्हेय्यन्ति चिन्तेसि । अथस्स चित्तं ब्रत्वा चतूहि दिसाहि चत्तारो महाराजानो इन्दनी-
लमणिमये पत्ते उपनामेसु^२ । भगवा ते पटिक्खिपि । पुन मुग्गवण्णसेलमये चत्तारो पत्ते उपनामेसु^३ । भगवा चतु-
न्तप्पि देवपुत्तानं अनुकम्पाय चत्तारोपि पत्ते पटिग्गहेत्वा उपरूपरि ठपेत्वा एको होतूति अधिट्ठहि । चत्तारोपि
मुखवट्ठियं पञ्चायमानलेखा हुत्वा मज्झिमेन पमाणेन एकत्तं उपगमिसु । भगवा तस्मिं पञ्चगधे सेलमये पत्ते
आहारं पतिगण्हित्वा परिभुञ्जित्वा अनुमोदनं अकासि ।

द्वे भानरो वाणिजा बुद्धं च धम्मं च सरणं [80] गत्वा द्वे वाचिकउपासका अहेसु^४ । अथ
तेसं एको नो भन्ते ! परिचरितब्बट्ठानं देथाति वदन्तानं दक्खिणेन हत्थेन अत्तनो सीसं परामसित्वा केसधातुयो
अदासि । ते अत्तनो नगरे ता धातुयो अन्तोपक्खिपित्वा चेतियं पटिट्ठापेसु^५ ।

§ ६६. ब्रह्मा धम्मदेसनं आयाचि

सम्मसम्बुद्धोपि खो ततो वुट्ठाय पुन अजपालनिग्रोधमेव गत्वा निग्रोधमूले निसीदि । अथस्स तत्थ
निसीन्नमत्तस्सेव अत्तना अधिगतस्स धम्मस्स गम्भीरत्तं पञ्चवेवखन्तस्स सब्बबुद्धानं आचिण्णो “अधिगतो खो
म्यायं धम्मो”^२ ति परेसं धम्मं अदेसेतुकाम्यताकारप्पवत्तो वितक्को उदपादि । अथ ब्रह्मा सहम्पति “नस्सति वत
भो ! लोको विनस्सति वत भो ! लोको” ति दसहि चक्कवाळसहस्सेहि सक्कमुयामसन्तुसितसुनिम्मितवसवत्ती-
महाब्रह्मानो आदाय सत्थु सन्निकं गत्वा “देसेतु भन्ते ! भगवा धम्मं देसेतु सुगतो धम्म” नि आदिना नयेन
धम्मदेसनं आयाचि ।

§ ६७. धमचक्कपवत्तनं

सत्था तस्स पटिञ्जं दत्त्वा कस्स नु खो अहं पठमं धम्मं देसेय्यन्ति चिन्तेन्तो आळारो पण्डितो सो इमं
धम्मं खिप्पं आजानिस्सतीति चित्तं उप्पादेत्वा पुन ओलोकेन्तो तस्स सत्ताहकालकतभावं ब्रत्वा उदकं आवज्जेसि ।
तस्सापि अभिदोसकालकतभावं ब्रत्वा बहुपकारा खो मे पञ्चवग्गिया भिक्खूति पञ्चवग्गिये आरब्ध मनसिकारं
क्त्वा कहन्नुखो ते एतरहि [७७] विहरन्तीति आवज्जेन्तो वाराणसियं मिगदायेति ब्रत्वा तत्थ गत्वा धम्मचक्कं
पवत्तेस्सामीति कतिपाहं बोधिमण्डसामन्ता^३ येव पिण्डाय चरन्तो विहरित्वा आसाळ्हिपुण्णमासियं वाराणसि
गमिस्सामीति चातुहसियं पञ्चूससमये पभाताय रत्तिया कालस्सेव पत्तचीवरमादाय अट्ठारसयोजनमग्गं पटिपन्नो
अन्तरामग्गे उपकं नाम आजीवकं दिस्वा तस्स अत्तनो बुद्धभावं आचिक्खित्वा तं दिवसं येव सायण्हसमये इसिपतनं
अगमासि ।

पञ्चवग्गिया थरा तथागतं दूरतोव आगच्छन्तं दिस्वा “अयं आवुसो ! समणो गोतमो पञ्चवबाहुल्लाय
आवत्तित्वा परिपुण्णकायो फीतिन्धियो^४ सुवण्णवण्णो हुत्वा आगच्छति इमस्स अभिवोदनादीनि न करिस्साम

महाकुलपुत्रो खो पनेस आसनाभिहारं अरहन्ति तेनस्म आसनमत्तं पञ्चापेस्सामा” नि कतिकं अकंसु ।

भगवा सदेवकस्स लोकस्स चित्ताचारं जाननसमत्थेन ज्ञाणेन किन्नुखो इमे चिन्तयिंसूति आवज्जित्वा चित्तं अञ्जासि । अथ ने सब्बदेवमनुस्सेसु अनोदिस्सकवसेन [81] फरणसमत्थं मेत्तचित्तं संखिपित्वा ओदिस्सकवसेन मेत्तचित्तं फरि । ते भगवता मेत्तचित्तेन फुट्ठा^१ तथागतो उपसंकमन्ते सकाय कतिकाय सण्ठातुं असक्कोन्ता अभिवादनपच्चुट्ठानादीनि सब्बकिच्चानि अकंसु । सम्बुद्धभावं पनस्स अजानमाना केवल नामेन च आवुमोवादेन च समुदाचरन्ति ।

अथ ने भगवा “मा भिक्खवे ! तथागतं नामेन च आवुमोवादेन च समुदाचरथ, अरहं^२ भिक्खवे ! तथागतो सम्मासम्बुद्धो” नि अत्तनो बुद्धभावं सञ्जापेत्वा पञ्चत्तवरबुद्धासने निशिघ्नो उत्तरासाल्लहनक्खत्तयोगे वत्तमाने अट्ठारसहि ब्रह्मकोटीहि परिवुतो पञ्चवगिये थरे आमन्तेत्वा धम्मचक्कपवत्तनसुत्तं देसेसि । तेसु अञ्जाकोण्डञ्जत्थेरो देसनानुसारेन ज्ञाणं पेसेन्तो मुत्तपरियोसाने अट्ठारसहि ब्रह्मकोटिहि सद्धि सोनापत्ति-फले पतिट्ठासि । सत्था तत्थेव वस्सं उपगन्त्वा पुन दिवसे वप्पत्थेरं ओवदन्तो विहारं येव निसीदि । सेसा चत्तारो पिण्डाय चरिंसु । वप्पत्थेरो पुब्बवहेयेव सोतापत्तिफलं पापुणि । एतेनेव उपायेन पुनदिवसे मद्दियत्थेर पुनदिवसे महानामत्थेरं पुनदिवसे अस्सजित्थेरन्नि सब्बे सोतापत्तिफले पतिट्ठापेत्वा पञ्चमियं पक्खस्स पञ्चपि जने सन्निपातेत्वा अनत्तलक्खणमुत्तन्तं देसेसि । देसनापरियोसाने पञ्चपि थेरा अरहत्तफले पतिट्ठहिंसु । [७८]

§ ६८. चरथ भिक्खवे चारिकन्ति

अथ सत्था यसस्स कुलपुत्तस्स उपनिस्सयं दिस्वा तं रत्तिभागे निब्बिज्जित्वा गेहं पहाय निक्खन्तं एहि यसाति पक्कोसित्वा तस्मिं येव रत्तिभागे सोतापत्तिफले पतिट्ठापेसि । पुनदिवसे अरहत्ते पतिट्ठापेत्वा अपरेपि तस्स सहायके चतुपण्णासजने एहि भिक्खु पब्बज्जाय पब्बाजेत्वा अरहत्तं पापेसि ।

एवं लोके एकसट्ठिया अरहन्तेसु जातेसु सत्था वुत्थवस्सो पवारत्वा ‘चरथ भिक्खवे ! चारिकन्ति’ सट्ठि भिक्खू दिसासु पेसेत्वा सयं उरुवेलं गच्छन्तो अन्तरामग्गे कप्पासिकवनसण्डे तिसंजने भद्दवगियकुमारे विनेसि । तेसु सब्बपच्छिमको सोतापन्नो सब्बुत्तमो अनागामी अहोसि । तेषि सब्बे एहिभिक्खुभावेनेव पब्बाजेत्वा दिसासु पेसेत्वा सयं उरुवेलं गन्त्वा अड्डहुड्डानि पाटिहारियसहस्सानि दस्सेत्वा उरुवेलकस्सपादयो सहस्सजटिल-परिवारे तेभातिकजटिले विनेत्वा एहि-भिक्खुभावेनेव पब्बाजेत्वा गयासीसे निसीदापेत्वा आदित्तरियायदेसनाय अरहत्ते पतिट्ठापेत्वा तेन अरहन्तसहस्सेन परिवुतो त्रिम्बिसाररज्जो दिन्नं [82] पटिञ्जं मोचेस्सामीति राजगहनगरूपचारे लट्ठिवनुय्यानं अगमासि ।

§ ६९. भगवा राजगहे

राजा उय्यानपालस्स सन्तिका सत्था आगतोति सुत्वा द्वादसनहुतेहि ब्राह्मणगहपतिकेहि परिवुतो सत्थारं उपसंकमित्वा चक्कविचित्तनलेसु सुवण्णपट्टविनानं विय पभासमुदयं विस्सज्जेन्तेसु तथागतस्स पादेसु सिरसा निपतित्वा एकमन्तं निसीदि सद्धि परिसाय । अथ खो तेसं ब्राह्मणगहपतिकानं एतदहोसि किन्नुखो महास-मणो उरुवेलकस्सपो ब्रह्मचरियं चरति उदाहु उरुवेलकस्सपो महासमणोति । भगवा तेसं चेतसा चेतो परिवितक्कमञ्जाय थेरं गाथाय अज्झभासिः—

“किमेव दिस्वा उरुवेलवासी पहासि अग्गिं किसको वदानो ।

पुच्छामि तं कस्सप ! एतमत्थं कथं पहीनं तव अग्गिहुत्त ॥” न्ति

थेरोपि भगवतो अधिप्पायं विदित्वाः—

“रूपे च सद्दे च अथो रसे च कामित्थियो चाभिवदन्ति यञ्जा ।

एतं मलन्ति उपधीसु अत्वा तस्मा न यिट्ठे न हुत्ते अरज्जि ॥” न्ति^३ ।

इमं गार्थं वत्वा अत्तनो सावकभावप्पकासनत्थं तथागतस्स पादपीठे सीसं ठपेत्वा सत्था मे भन्ते

भगवा सावकोहमस्मीति वत्वा एकतालं द्वितालं तितालान्ति याव सत्तालप्पमाणं [७९] सत्तक्खत्तुं वेहासं अब्भुगन्त्वा आरुह्य तथागतं वन्दित्वा एकमन्तं निसीदि ।

तं पाटिहारियं दिस्वा महाजनो अहो ! महानुभावा बुद्धो एवं थामगतदिट्ठिको नाम अत्तानं अरहाति मञ्जमानो उरुवेलकस्सपोपि दिट्ठिजालं भिन्दित्वा तथागतेन दमितोति सत्थु गुणकथं येव कथेसि ।

भगवा नाहं इदानीमेव उरुवेलकस्सपं दमेमि अतीतेपि एस मया दमितो येवाति वत्वा इमिस्सा अत्थुप्पत्तिया महानारदकस्सपजातकं कथेत्वा चत्तारि सच्चानि पकासेसि । मगधराजा एकादसहि नहुतेहि सद्धि सोतापत्तिफले पटिट्ठासि । एकं नहुतं उपासकत्तं पटिवेदेसि । [८३]

राजा सत्थु सन्तिके निसिन्नो येव पञ्च अस्सासके पवेदेत्वा सरणं गन्त्वा स्वातनाय निमन्तेत्वा आसना वुट्ठाय भगवन्तं पदक्खणं कत्वा पक्कामि ।

पुनदिवसे येहि च भगवा दिट्ठो येहि च आदिट्ठो सब्बेपि राजगहवासिनो अट्ठारसकोटिसंखा मनुस्सा तथागतं दट्ठुकामा पातोव राजगहतो लट्ठिवनं अगमंस्सु । तिगावुतमग्गो नप्पहोसि । सकललट्ठिवनुय्यानं निरन्तरं फुटं^१ अहोसि । महाजनो दसबलस्स रूपगप्पत्तं अत्तभावं पस्सन्तो तित्ति कानुं नासक्खि । वण्णभूमि नामेसा एवरूपेसु हि ठानेसु तथागतस्स लक्खणानुब्यञ्जनादिप्पभेदा सब्बापि रूपकायसिरि वण्णेत्तब्बा ।

एवं रूपगप्पत्तं दसबलस्स सरीरं पस्समानेन महाजनेन निरन्तरं फुटे उय्याने च मग्गे च एकभिक्खुस्सापि निक्खमणोकासो नाहोसि । तं दिवसं किर भगवा छिन्नभत्तो भवेय्य तं मा अहोमीति सक्कस्स निसिन्नासनं उण्हाकारं दस्सेसि । सो आवज्जमानो तं कारणं ब्रत्वा माणवकवण्णं अभिनिम्मिनित्वा बुद्धधम्मसंघ-पटिमयुत्तयुतियो वदमानो दसबलस्स पुरतो ओतरित्वा देवानुभावेन ओभामं कत्वाः—

“दन्तो दन्तेहि सह पुराणजटिलेहि विप्पमुत्तेहि ।

सिगीनिक्खमुवण्णो राजगहं पाविसि भगवा ॥

मुत्तो मुत्तेहि सह पुराणजटिलेहि ।

सिगीनिक्खमुवण्णो राजगहं पाविसि भगवा ॥

तिण्णो तिण्णेहि सह पुराणजटिलेहि ।

सिगीनिक्खमुवण्णो राजगहं पाविसि भगवा ॥

दसवासो^२ दसबलो दसधम्मविदू दसहि चुपेनो ।

सो दससत्परिवारो राजगहं पाविसि भगवा ॥” ति । [८०]

इमाहि गाथाहि सत्थु वण्णं वदमानो पुरतो पायामि । महाजनो माणवकस्स रूपमिरि दिस्वा अनिविय अभिरूपो अयं माणवको न खो पनम्हेहि दिट्ठपुब्बोति चिन्तेत्वा कुतो अयं माणवको कस्स वा अयन्ति आह । ते सुत्वा माणवोः—

“यो धीरो सब्बधी दन्तो बुद्धो अण्णटिपुगलो ।

अरहं सुगतो लोके तस्साहं परिचारको ॥” ति ।

गाथं आह । सत्था सक्केन कतोकासं मग्गं पटिपज्जित्वा [८४] भिक्खुमहम्मपरिवृतो राजगहं पाविसि । राजा बुद्धपमुखस्स संघस्स महादानं दत्त्वा अहं भन्ने ! तीणि रत्तनानि विना वत्तितुं न मक्खिस्सामि वेलाय वा अवेलाय वा भगवतो सन्तिकं आगमिस्सामि लट्ठिवनुय्यानं च नाम अतिदूरे इदं पनम्हाकं वेळुवनं नाम उय्यानं नातिदूरे नाच्चासन्ने गमनागमनसम्पन्नं बुद्धारहं मेनामनं इदं मे भगवा पतिगण्हातूति सुवण्णाभिकारेनेव पुप्फ-गन्धवासितं मणिवण्णउदकं आदाय वेळुवनुय्यानं परिच्चजन्तो दसबलस्स हत्थे उदकं पातेसि । तस्मि आरामपटिग्गहणे बुद्धसामनस्स मूलानि ओतिण्णानीति महापठवी कम्पि । जम्बुदीपस्मि हि ठपेत्वा वेळुवनं अञ्जं पठवि कम्पेत्वा गहितमेनामनं नाम नत्थि । तम्ब्रपणिदीपेपि ठपेत्वा महाविहारं अञ्जं पठवि कम्पेत्वा
१ रो०—पुटं । २ रो०—दसावासो ।

गहितसेनासनं नाम नत्थि । सत्था वेळुवनारामं पटिग्गहेत्वा रञ्जो अनुमोदनं कत्वा उट्ठायासना भिक्खुसंघ-
परिवृतो वेळुवनं अगमासि ।

§ ७०. सारिपुत्तो च मोगल्लानो च

तस्मिं खो पन समये सारिपुत्तो च मोगल्लानो चाति द्वे परिब्राजका राजागहं उपनिस्साय विहरन्ति
अमत्तं परियेसमाना । तेसु सारिपुत्तो अस्सजित्थेरं पिण्डाय पविट्ठं दिस्वा पसन्नचित्तो पयिरूपासित्वा “ये धम्मा
हेतुप्पभावा” ति गाथं सुत्वा सोतापत्तिफले पतिट्ठाय अत्तनो सहायकस्स मोगल्लानपरिब्राजकस्सापि तमेव
गाथं अभासि । सोपि सोतापत्तिफले पतिट्ठहि ते उभोपि सञ्जयं ओलोकेत्वा अत्तनो परिसाय सद्धिं सत्थु सन्तिके
पव्वजिसु । तेसु महामोगल्लानो सत्ताहेनेव अरहत्तं पापुणि । सारिपुत्तत्थेरो अड्ढमासेन । उभोपि जने सत्था
अगसावकट्ठाने ठपेसि । सारिपुत्तत्थेरेन अरहत्तप्पत्तदिवसे येव सावकसन्निपातं अकासि ।

§ ७१. भगवा कपिलवत्थुं अगमासि ।

तथागते पन तस्मिञ्जेव वेळुवनुय्याने विहरन्ते सुद्धोदनमहाराजा पुत्तो किर मे छ वस्सानि दुक्कर-
चारिकं चरित्वा परमाभिसम्बोधिं पत्वा पवत्तवरधम्मचक्रो^१ राजगहं निस्साय वेळुवने विहरतीति सुत्वा अञ्ज-
तरं अमच्चं आमन्तेसि । [८१] एहि भणे ! पुरिससहस्सपरिवारो राजगहं गन्त्वा मम वचनेन “पिता वो सुद्धोदनमहा-
राजा दट्ठुकामो” ति वत्वा पुत्तं मे गण्हित्वा एहीति आह । सो एवं देवाति रञ्जो वचनं सिरसा सम्पटिच्छित्वा
पुरिससहस्सपरिवारो खिप्पमेव सट्ठियोजनमगं गन्त्वा दसवलस्स चतुपरिसमञ्जे निसीदित्वा धम्मदेसनवेलाय
विहारं पाविसि । सो तिट्ठतु ताव रञ्जो पहितसासनन्ति परिसपरियन्ते ठितो सत्थु धम्मदेसनं सुत्वा यथाठितोव
सद्धिं पुरिस [८५] सहस्सेन अग्हत्तं पत्वा पव्वज्जं याचि । भगवा एथ भिक्खवोति हत्थं पसारेसि । सब्बे तं
खणं येव इद्धिमयपत्तचीवरधरा वस्ससत्तिकत्थेरा विय अहेसुं । अरहत्तप्पत्तकालतो पट्ठाय पन अरिया नाम
मज्झत्ताव होन्तीति रञ्जो पहितसासनं दसवलस्स न कथेसि ।

राजा नेव गतको आगच्छति न सासनं सूयतीति एहि भणे ! त्वं गच्छाति तेनेव नियामेन अञ्जं अमच्चं
पेसेसि । सोपि गन्त्वा पुरिमनयेनेव सद्धिं परिसाय अरहत्तं पत्वा तुण्ही अहोसि । राजा एतेनेव नियामेन पुरिसस-
हस्सपरिवारे नव अमच्चं पेसेसि । सब्बे अत्तनो किच्चं निट्ठपेत्वा तुण्हीभूता तत्थेव विहरिंसु ।

राजा सासनमत्तकम्पि आहरित्वा आचिक्खन्तं अलभित्वा चिन्तेसि-“एत्तका जना मयि सिनेहाभावेन
सासनमत्तम्पि न पच्चाहरिंसु, को नुखो मम वचनं करिस्सती” ति सब्बं राजबलं ओलोकेन्तो कालुदायिं अदस ।
सो किर रञ्जो सब्बत्थसाधको अमच्चो अब्भन्तरिको अतिविस्सासिको बोधिसत्तेन सद्धिं एकदिवसे जातो सह-
पंसुकीळितो सहायो । अथ नं राजा आमन्तेसि-“तात ! कालुदायि अहं मम पुत्तं पस्सितुकामो नवपुरिससहस्सानि
पेसेसि एकपुरिसोपि आगन्त्वा सासनमत्तं आरोचेन्तोपि नत्थि । दुज्जानो खो पन मे जीवितन्तरायो अहं
जीवमानोव पुत्तं दट्ठुं इच्छामि सक्खिस्ससि नुखो मे पुत्तं दस्सेतु” न्ति ?

सक्खिस्सामि देव ! सचे पव्वजितुं लभिस्सामीति ।

तात ! त्वं पव्वजित्वा अपव्वजित्वा वा मय्हं पुत्तं दस्सेहीति आह ।

सो साधु देवाति रञ्जो सासनं आदाय राजगहं गन्त्वा सत्थुधम्मदेसनवेलाय परिसपरियन्ते ठितो
धम्मं सुत्वा सपरिवारो अरहत्तफलं पत्वा एहिभिक्खुभावे पतिट्ठासि ।

सत्था बुद्धो हुत्वा पठमं अन्तोवस्सं इसिपत्तने वसित्वा बुत्थवस्सो पवारेत्वा उरुवेलं गन्त्वा तत्थ
तयो मासे वसन्तो तेभातिकजटिले विनेत्वा भिक्खुसहस्सपरिवारो फुस्समासपुण्णमाय राजगहं गन्त्वा द्वे मासे
वसि । एत्तावता बाराणसितो निक्खमन्तस्स पञ्च मासा जाता सकलो हेमन्तो अतिककन्तो उदायित्थेरस्स [८२]
आगतदिवसतो पट्ठाय सत्तट्ठदिवसा वीतिवत्ता । सो फग्गुणीपुण्णमासियं चिन्तेसि अतिककन्तो हेममन्तो
वसन्तसमयो अनुप्पत्तो, मनुस्सेहि सस्सादीनि उद्धरित्वा सम्मुखसम्मुखट्ठानेहि मग्गा दिन्ना हरिततिणसञ्छन्ना

पठवी, सुपुष्पिता वनसण्डा पटिपज्जनक्खमा मग्गा, कालो दसबलस्स जातिसंगहं कातुन्ति । अथ भगवन्तं [८६] उपसंक्रमित्वाः—

“अंगारिनोदानि दुमा भदन्ते ! फलेसिनो छदनं विप्पहाय ।

ते अच्चिमन्तोव पभासयन्ति समयो महावीर ! भगीरसानं ।

नातिसीतं नातिउण्हं नातिदुग्भिकख्छातकं ।

सह्ला हरिता भूमि एस कालो महामुनी ।” ति ।

सट्ठिमत्ताहि गाथाहि दसबलस्स कुलनगरं गमनत्थाय गमनवण्णं वण्णेसि ।

अथ नं सत्था किन्नुखो उदायि ! मधुरस्सरेन गमनवण्णं वण्णेसीति आह । भन्ते ! तुम्हाकं पिता सुद्धो-
दनो महाराजा पस्सितुकामो, करोथ जातकानं संगहन्ति । साधु उदायि ! करिस्सामि जातकानं संगहं । भिक्खु-
संघस्स आरोचेहि गमिकवत्तं पूरेस्सन्तीति । साधु भन्तेति थेरो आरोचेसि । भगवा अंगमगधवासीनं कुलपुत्तानं
दसहि सहस्सेहि कपिलवत्थुवासीनं दसहि सहस्सेहीति सब्बेहेव वीसतिसहस्सेहि खीणासवभिक्खूहि परिवुतो
राजगहा निकम्भित्वा दिवसे दिवसे योजनं गच्छति । राजगहतो सट्ठियोजनं कपिलवत्थुं द्वीहिमासेहि पापुणि-
स्सामीति अनुरितचारिकं पक्कामि । थेरोपि भगवतो निक्खन्तभावं रज्जो आरोचेस्सामीति वेहासं अब्भुगन्त्वा
रज्जो निवेसने पातुरहोसि । राजा थेरं दिस्वा तुट्ठचित्तो महारहे पल्लके निसीदापेत्वा अत्तनो पटियादितस्स
नानगरसभोजनस्स पत्तं पूरेत्वा अदासि । थेरो उट्ठाय गमनाकारं दस्सेसि । निसीदित्वा भुञ्ज ताताति । सत्थु
सन्तिकं गन्त्वा भुञ्जिस्सामि महाराजाति । कहं पन सत्थाति । वीसतिभिक्खुसहस्सपरिवारो तुम्हाकं दस्सनत्थाय
चारिकं निक्खन्तो महाराजाति । राजा तुट्ठमानसो आह, तुम्हे इमं परिभुञ्जित्वा याव मम पुत्तो मं नगरं
पापुणाति तावस्स इतोव पिण्डपातं पटिहत्थाति । थेरो अधिवासेसि । राजा थेरं परिवसित्वा पत्तं गन्धचुण्णेन
उब्रट्ठेत्वा उत्तमभोजनस्स पूरेत्वा तथागतस्स देयाति थेरस्स हत्थे पत्तिट्ठापेसि । थेरो सब्बेसं पस्सन्तानं येव
पत्तं आकासे खिपित्वा सयम्पि वेहासं अब्भुगन्त्वा पिण्डपातं आहरित्वा सत्थु हत्थे ठपेसि । [८३] सत्था तं
परिभुञ्जि । एतेनपायेन थेरो दिवसे दिवसे आहरि । सत्थापि अन्तगमग्गे रज्जो येव पिण्डपातं परिभुञ्जि ।
थेरोपि भत्तकिच्चावसाने दिवसे दिवसे अज्ज एत्तकं भगवा आगतो अज्ज एत्तकन्नि[८७] बुद्धगुणपटिसंयुत्ताय
च धम्मकथाय सकलराजकुलं सत्थु दस्सनं विनायेव सत्थरि सज्जातप्पसादं अकासि । तेनेव नं भगवाः—
“एतदग्गं भिक्खवे ! मम सावकानं भिक्खून् कुलप्पसादकानं यदिदं कालुदायी” ति एतदग्गे ठपेसि ।

§ ७२. कपिलवत्थुस्मिं पाटिहारियं अकासि

साकियापि खो अनुपत्ते भगवति अम्हाकं जातिसेट्ठं पस्सिस्सामाति सन्निपत्तित्वा भगवतो वसन-
ट्ठानं वीमंसमाना निगोधसक्कस्स आरामो रमणियोति सल्लक्खेत्वा तत्थ सब्ब परिजग्गनविधिं कारेत्वा गन्ध-
पुष्पहत्था पच्चुग्गमनं करोन्ता सव्वालंकारपतिमण्डिते दहरदहरे नागरदारके च दारिकायो च पठमं पहिणिमु ।
ततो राजकुमारे च राजकुमारियो च तेसं अनन्तरा^१ सामं गन्धपुष्पचुण्णादीहि पूजयमाना भगवन्तं गहेत्वा निगोधा-
राममेव अगमंमु । तत्र भगवा वीसतिसहस्सखीणासवपरिवुतो पञ्चत्तवरबुद्धासने निसीदि । साकिया नाम मान-
जातिका मानत्थद्धा । ते सिद्धत्थकुमारो अम्हेहि दहरतरो अम्हाकं कणिट्ठो भागिनेय्यो पुत्तो नत्ताति चिन्तेत्वा
दहरदहरे राजकुमारे आहंमु, तुम्हे भगवन्तं वन्दथ मयं तुम्हाकं पिट्ठितो निसीदिस्सामाति । तेसु एवं अव-
न्दित्वा निसिन्नेसु भगवा तेसं अज्झासयं ओलोकेत्वा न मं जातयो वन्दन्ति हन्द दानि नं वन्दापेस्सामीति अभि^२-
ज्जापादकज्ज्ञानं समापज्जित्वा वुट्ठाय आकासं अब्भुगन्त्वा तेसं सीसे पादपंसु ओकिरमानो विय गण्डम्ब-
ख्खमूले यमकपाटिहारियसदिसं पाटिहारियं अकासि ।

राजा तं अच्छरियं दिस्वा आह-भगवा ! तुम्हाकं जातदिवसे इसिकाळदेवलस्स वन्दनत्थं उपनीतानं
पादे वो परिवत्तित्वा ब्राह्मणस्स मत्थके पत्तिट्ठिते दिस्वापि अहं तुम्हे वन्दि अयं मे पठमवन्दना, बप्पमंगलदिवसे
जम्बुच्छायाय सिरिसयने निसिन्नानं वो जम्बुच्छायाय अपरिवत्तनं दिस्वापि पादे वन्दि अयं मे दुतियवन्दना । इदानी

इमं अदिट्ठपुब्बं पाटिहारियं दिस्वापि तुम्हाकं पादे वन्दामि अयं मे ततियवन्दनाति । रज्जे पन वन्दिते भगवन्तं अवन्दित्वा ठातुं समत्थो नाम एको साकियोपि नाहोसि । सब्बे वन्दिसु येव । इति भगवा आतके वन्दापेत्वा आकासतो ओतरित्वा पञ्जत्ते आसने निसीदि । निसिन्ने भगवति सिखाप्पत्तो जातिसमागमो अहोसि । सब्बे एकग्गचित्तो हुत्वा निसीदिमु । ततो महामेघो पोक्खरवस्सं वस्सि । तम्भवणं उदकं हेट्ठो विरवन्तं गच्छति । तेमितुकामोव तेमेति अनेमितुकामस्स [८४] सरीरे बिन्दुमत्तोपि न पतति । तं दिस्वा सब्बे अच्छरियव्भुतचित्ता जाता । अहो ! अच्छरियं अहो ! अब्भुतन्ति कथं समुट्ठापेसुं । सत्था न [८८] इदानीव मय्हं जातिसमागमे पोक्खरवस्सं वस्सति अतीतेपि वस्सीति इमिस्सा अट्ठुणत्तिया महावेस्सन्तरजातकं कथेसि । धम्मदेसनं सुत्वा सब्बे उट्ठाय वन्दित्वा पक्कमिमु । एकोपि राजा व राजमहामत्तो वा स्वे अम्हाकं भिवखं गण्हथाति वत्ता गतो नाम नत्थि ।

§ ७३. कपिलवत्थुं पिण्डाय पाविसि

सत्था पुनदिवसे वीसतिसहस्सभिक्षुपरिवृतो कपिलवत्थुं पिण्डाय पाविसि । तं न कोचि गन्त्वा निमन्तेसि वा पत्तं वा अग्गहेसि । भगवा इन्दवीले ठितोव आवज्जेसि, “कथन्नुवो पुब्बबुद्धा कुलनगरे पिण्डाय चरिमु कि नु उप्पटिपाटिया इस्सरजनानं घरानि अगमसु उदाहु सपदानचारिकं चरिमु” ति । ततो एकबुद्धस्सापि उप्पटिपाटिया गमनं अदिस्वा मयापि दानि अयमेव तेसं वंसो अयं मे पवेणी पग्गहेत्तव्वा आर्याति च मे सावकापि ममज्जेव अनुसिक्खन्ता पिण्डचारियवत्तं परिपूरेस्सन्तीति कोटियं निविट्ठगेहतो पट्ठाय सपदानं पिण्डाय चरि । अय्यो किर सिद्धत्थकुमारो पिण्डाय चरतीति द्विभूमकनिभूमकादिमु पासादेमु मीहपञ्जरं विवर्त्त्वा महाजनो दस्सनव्यावटो अहोसि ।

राहुलमातापि देवी अय्यपुत्तो किर इमस्मिं येव नगरे महन्तेन राजानुभावेन मुवण्णसिक्कादीहि विचरित्वा इदानी केसमस्सुं ओहारेत्वा कासायवत्थवसनो कपालहत्थो पिण्डाय चरति गोभति नुखोति मीह-पञ्जरं विवर्त्त्वा ओलोकयमाना भगवन्तं नानाविरागसमुज्जलाय सरीरप्पभाय नगरवीथियो ओभासेत्वा व्यामप्पभापरिक्खेपसमुपगूळ्हाय^१ अमीत्यनुव्यञ्जनावभासिताय द्वित्तिसमहापुरिसलक्खणपतिमण्डिताय अनु-पमाय बुद्धसिरिया विरोचमानं दिस्वा उण्हीसतो पट्ठाय याव पादतलाः—

“सिनिद्धनीलमुदुकुञ्चितकेसो सुरि^२यनिम्मलतलाभिनलाटो ।

युत्ततु गमुदुकायतनासो रंसिजालविततो नरमीहो ॥” ति ।

एवमादिकाहि अट्ठहि नरसीहगाथाहि नाम अभित्थवित्वा “तुम्हाकं पुत्तो पिण्डाय चरती” ति रज्जो आरोचेसि । राजा संविग्गहदयो हत्थेन साटकं सण्ठपेत्तो तुरित्तुरित्तं निक्खमित्वा वेगेन गन्त्वा भगवतो पुरतो ठत्वा आह “कि भन्ते ! अम्हे लज्जापेथ ? किमत्थं पिण्डाय चरथ ? कि एत्तकानं भिक्खून् न सक्का भत्तं लद्धन्ति [८९] सज्जं करित्था” ति ? वंसचारित्तमेतं महाराज ! अम्हाकन्ति । ननु भन्ते ! अम्हाकं महासम्मत्तवत्तियवंसो नाम [८५] वंसो ? तत्थ च एकस्सार्त्तियोपि भिक्खाचरो^३ नाम नत्थीति । अयं महाराज ! राजवंसो नाम तव वंसो अम्हाकं पन दीपं करो कोण्डञ्जो—पे—कस्सपोति अयं बुद्धवंसो नाम एते च अज्जो च अनेकसहस्समंखा बुद्धा भिक्खाचरा भिक्खाचारेनेव जीविकं कप्पेसुन्ति अन्तरवीथियं ठितोव :—

“उत्तिट्ठे नप्पमज्जेय्य धम्मं सुचरितं चरे ।

धम्मचारी सुखं सेति अस्मिं लोके परमिह चा ॥”^४ ति ।

इमं गाथमाह । गाथापरियोसाने राजा सोतापत्तिकले पतिट्ठासिः—

“धम्मं चरे सुचरितं न नं दुच्चरितं चरे ।

धम्मचारी सुखं सेति अस्मिं लोके परमिह चा ॥” ति ।

इमं पन गाथं सुत्वा सकदागामिकले पतिट्ठासि । महाधम्मपालजातकं^५ सुत्वा अनागामिकले पति-

१ रो०—समुपगूळ्हाय । २ रो०—पुत्रिमला । ३ रो०—भिक्खाचरो । ४—धम्मपद, लोकवग ।

५ रो०—धम्मपालजातकं ।

ट्ठासि । मरणसमये सेतच्छतस्स हेट्ठा सिरिसयने निपन्नो येव अरहतं पापुणि । अरञ्जवासेन पन पधानानु-
योगकिच्चं रञ्जो नाहोसि । सोतापत्तिफलं सच्छिक्त्वा येव पन भगवतो पत्तं गहेत्वा सपरिं भगवन्तं महापासादं
आरोपेत्वा पणीतेन खादनीयेन भोजनीयेन परिवसि ।

७४. राहुलमातुया सिरिगम्भं अगमासि

भक्तकिच्चपरियोसाने सब्बं इत्थागारं आगन्त्वा भगवन्तं वन्दि ठपेत्वा राहुलमातरं । सा पन
“गच्छ अय्यपुत्तं वन्दाही” ति परिजनेन वुच्चमानापि “सचे मय्हं गुणो अत्थि सयमेव मे सन्तिकं अय्यपुत्तो
आगमिस्सति आगतमेव नं वन्दिस्सामी” ति वत्वा न अगमासि ।

भगवा राजानं पत्तं गहापेत्वा द्वीहि अगसावकेहि सद्धि राजधीताय सिरिगम्भं गन्त्वा राजधीता
यथाएव वन्दमाना न किञ्च वत्तब्बानि वत्वा पञ्जत्ते आसने निसीदि । सा वेगेनागन्त्वा गोप्फकेसु
गहेत्वा पादपिट्ठियं सीसं परिवत्तेत्वा यथाञ्जसासयं वन्दि । राजा राजधीताय भगवति सिनेहवह्ममानादि-
गुणसम्पत्तियो कथेसि—“भन्ते! मम धीता तुम्हेहि कासायानि [१०] निवत्थानीति सुत्वा ततो पट्ठाय
कासाववत्था जाता, तुम्हाकं एकभक्तिकाभावं सुत्वा एकभक्तिकाव जाता, तुम्हेहि महासयनस्स छड्डित्ताभावं ज्ञत्वा
पट्टिकामञ्चके येव निपन्ना, तुम्हाकं मालागन्धादीहि विरतभावं ज्ञत्वा विरतमालागन्धाव जाता अत्तनो
जातकेसु मयं पट्टिजिगिस्सामाति सासने पेसिते एकजातकम्पि न ओलोकेसि । एवं गुणसम्पन्ना मे भगवा !
धीता” ति । “अनच्छरियं महाराज ! यं इदानीं तथा रक्खियमाना राजधीता परिपक्वे आणे [८६]
अत्तानं रक्खेय्य एसा पुब्बे अनारक्खा पव्वतपादे विचरमाना अपरिपक्वे आणे अत्तानं रक्खीति वत्वा
वन्दकित्तरजातकं कथेत्वा उट्ठायसना पक्कामि ।

७५. नन्दं पव्वाजेसि

दुतियदिवसे नन्दस्स राजकुमारस्स अभिसेकगेहणपवेसनविवाहमंगलेसु वत्तमानेसु तस्स गेहं
गन्त्वा कुमारं पत्तं गाहापेत्वा पव्वाजेतुकामो मंगलं वत्वा उट्ठायसना पक्कामी । जनपदकल्याणी कुमारं
गच्छन्तं दिस्वा “तुवटं खो अय्यपुत्त ! आगच्छेय्यासी” ति वत्वा गीवं पसारेत्वा ओलोकेमि । सोपि भगवन्तं
पत्तं गण्हायानि वत्तु अविमहमानो विहारमेव अगमामि । तं अनिच्छमानं येव भगवा पव्वाजेमि । इति भगवा
कपिलपुरं गन्त्वा तनियदिवसे नन्दं पव्वाजेसि ।

७६. राहुलं पव्वाजेसि

सत्तमे दिवसे राहुलमाता कुमारं अलंकरित्वा भगवतो सन्तिकं पेमेसि—“पस्म तात ! एतं बीसति-
सहस्ससमणपरिवृतं सुवण्णवण्णं ब्रह्मरूपीवण्णं समणं, अयं ते पिता एतस्स महन्ता निधयो^१ अहेसु^२ ।
त्यास्स निकखमनतो पट्ठाय न पस्साम गच्छ नं दायज्जं याच, अहं तात ! कुमारो अभिमेकं पत्वा चक्कवत्ती
भविस्सामि धनेन मे अत्थो धनं मे देहि सामिको हि पुत्तो पितु सन्तकस्सा” ति । कुमारो च भगवतो सन्तिवं
गन्त्वा पितुसिनेहं पटिलभित्वा हट्ठनुट्ठो “सुखा ते समण ! छाया” ति वत्वा अञ्जम्पि वहुं अत्तनो अनुरूपं
वदन्तो अट्ठासि ।

भगवा कतभक्तकिच्चो अनुमोदनं कत्वा उट्ठायसना पक्कामि । कुमारोपि “दायज्जं मे समण !
देहि, दायज्जं मे समण ! देही” ति भगवन्तं अनुबन्धि । भगवा कुमारं न निवत्तापेसि । परिजनोपि भगवता सद्धि
२ गच्छन्तं निवत्तेतुं नासक्खि । इति सो भगवता सद्धि आगममेव आगमासि । ततो भगवा चिन्तेमि, “यं अयं
पितुसन्तकं धनं इच्छति तं वट्ठानुगतं सविघातं हन्दस्स बोधिमण्डे पट्टिकदं सत्तविधं अग्रियधनं देमि लोबुत्तरदा-
यज्जस्स नं सामिकं करोमी” ति आयस्सन्तं सारिपुत्तं आमन्तेमि “तेन हि [११] त्वं सारिपुत्त ! राहुलकुमारं पव्वा-
जेही” ति । पव्वजिते पन कुमारं रञ्जो अधिमत्तदुक्खं उप्पज्जि । तं अधिवासेतुं अगक्कोन्तो भगवतो
निवेदेत्वा “गाधु भन्ते ! अय्या मातापितृहि अननञ्जानं पत्तं न पव्वाजेय्य” ति वरं याचि । भगवा

तस्मै तं वचनं पटिस्मुणित्वा पुनरिवमे राजनिवेसने कतपातरामो एकमन्तं निसिन्नेन रञ्जा “भन्ते ! तुम्हाकं दुक्करकारिककाले^१ एका देवता मं उपसंक्रमित्वा पुत्तो ते कालकतोति आह । तस्मा वचनं असद्दहन्तो “न मयं पुत्तो [८७] बोधि अप्पत्वा कालं करोतीति तं पटिक्खिपि” न्ति वुत्तं “इदानीं किं सद्विहसिथ ? ये तुम्हे पुब्बेपि अट्ठिकानि दस्सेत्वा पुत्तो ते मनोति वुत्ते न सद्विहत्था” नि इमिस्मा अत्युपत्तिया महाधम्मपालजातकं कथेमि । कथापरिग्रहोमाने राजा अनागामिकफले पटिट्ठहि ।

§ ७७. अनाथपिण्डको जेतवनारामं कारेसि

इति भगवा पितरं तीमु फलेसु पटिट्ठापेत्वा भिक्खुसंघपरिवृतो पुनदेव राजगहं गत्वा सीतवने विहासि । तस्मिं समये अनाथपिण्डको गहपति पञ्चहि सकटसतेहि भण्डं आदाय राजगहे अत्तनो पियसहायस्स सेट्ठिनो गेहं गत्वा तत्थ बुद्धस्स भगवतो उभयभावं मुत्वा बलवपच्चसमये देवतानुभावेन विवटेन द्वारेण सत्थारं जपसंक्रमित्वा धम्मं मुत्वा सोतापत्तिफले पटिट्ठाय द्वितीयदिवसे बुद्धपमुखस्स संघस्स महादानं दत्वा सावत्थि आगमनत्थाय सत्थुपटिञ्जं गहेत्वा अन्तरामगे पञ्चचत्तालीसयोजनट्ठाने सतसहस्सं सतसहस्सं दापेत्वा योजनिकाय योजनिकाय विहारे कारपेत्वा^२ जेतवनं कोटिसत्थारेण अट्ठारसहिरञ्जकोटीहि किणित्वा नवकम्मं पट्ठपेमि । सो मज्झे दमवलस्स गन्धकुट्टि कारेसि । तं परिवारेत्वा असीनिमहाथेरानं पाटियक्कसन्निवेसने आवासं एककुण्डिकट्टिकुण्डिकहंसवट्टकदीघसालामण्डपादिवसेन सेमसेनासनानि पोक्खरणिं चक्रमनरत्तिट्ठानदिवाट्ठानानि चापि अट्ठारसकोटिपरिचवागेन रमणीये भूमिभागे मनोरमं विहारं कारपेत्वा दमवलस्स आगमणत्थाय दूतं पेमेमि । सत्था दूतस्स वचनं मुत्वा महाभिक्खुसंघपरिवारो राजगहा निक्खमित्वा अनुपुब्बेन पावत्थिनगरं पापुणि ।

महामट्ठिपि खो विहारमहं सज्जेत्वा तथागतस्स जेतवनं पविसनदिवसे पुत्तं सव्वालंकारपत्तिमण्डितं कत्वा अलंकृतपटियत्तेहेव पञ्चहि कुमारसतेहि सद्धि पेमेमि । सो सपरिवारो पञ्चवण्णवत्थममुज्जलानि पञ्चधजसनानि गहेत्वा [९२] दमवलस्स पुत्तो अहोमि । तेमं पच्छतो महामुभट्टा चूळमुभट्टानि द्वे सेट्ठिधीतरो पञ्चहि कुमारसतेहि सद्धि पुण्णघटे गहेत्वा निक्खमिमु । तामं पच्छतो सेट्ठिभरिया सव्वालंकारपत्तिमण्डिता पञ्चहि मानुगामसतेहि सद्धि पुण्णपातियो गहेत्वा निक्खमि । सव्वेसं पच्छतो सयं महासेट्ठि अहतवत्थनिक्कथो अहतवत्थेहेव पञ्चहि सेट्ठिमतेहि सद्धि भगवन्तं अब्भुगञ्छि ।

भगवा इमं उपासकपरिमं पुत्तो कत्वा महाभिक्खुसंघपरिवृतो अत्तनो सरीरप्पभाय सुवण्णरसमेकपिञ्जरानि विय वनन्तरानि कुरुमानो अनन्ताय बुद्धलीलहाय अप्पटिसमाय बुद्धसिरिया जेतवनविहारं पावमि । अयं नं अनाथपिण्डको पुच्छि । [८८] “कथाहम्भन्ते ! इमस्मिं विहारे पटिपज्जामी” ति ? तेनहि गहपति ! इमं विहारं आगतानागतस्स भिक्खुसंघस्स देही” ति साधु भन्तेति महासेट्ठि सुवण्णभिक्कारं आदाय दमवलस्स हत्थे उदकं पातेत्वा “इमं जेतवनविहारं आगतानागतस्स चातुदिसस्स बुद्धपमुखस्स संघस्स दम्मी” ति अदासि । सत्था विहारं पटिग्गहेत्वा अनुमोदनं करोन्तोः—

“सीतं उण्हं पटिहन्ति ततो वाळमिगानि च ।
सिरिसपे च मकमे सिसिरे चापि वुट्ठियो ॥
ततो वातातपे घोरे सञ्जाते पटिहञ्जति ।
लेणत्थं च सुखत्थं च ज्ञामितुं च विपस्सितुं ॥
विहारदानं संघस्स अगं बुद्धेन वण्णितं ।
तस्मा हि पण्डितो पोसो सम्पस्सं अत्थमत्तनो ॥
विहारे कारये रम्मे वासयेत्थ बहुस्सुते ।
तेसं अन्नञ्च पाणं च वत्थसेनासनानि च ॥
ददेय्य उजुभूतेसु विप्पसन्नेन चेतसा । [९३]

ते तस्स धम्मं देसेन्ति सब्बदुक्खापनुदनं ।

यं सो धम्मं इधञ्जाय परिनिब्बाति अनासवो ॥” ति ।

विहारानिमंसं कथेसि । अनाथपिण्डको दुतियदिवसतो पट्ठाय विहारमहं आरभि । विसाखाय पासादमहो चतुहि मासेहि निट्ठितो । अनाथपिण्डकस्स पन विहारमहो नवहि मासेहि निट्ठासि । विहारमहेपि अट्ठारमेव कोटियो अगमंमु इति इमस्मिं येव विहारे चतुपण्णासकोटिमखं धनं परिच्चजि ।

अतीते पन विपस्सिस्स भगवतो काले पुनब्बसुमित्तो नाम सेट्ठी सुवण्णिट्ठिकासन्थारेन किणित्वा तस्मिं येव ठाने योजनप्पमाणं संधारामं कारेसि । सिरिवस्स भगवतो काले सिरिवद्दो नाम सेट्ठी सुवण्णजालसन्थारेन किणित्वा तस्मिं येव ठाने तिगावुत्तप्पमाणं संधारामं कारेसि । वेस्सभस्स भगवतो काले सोत्थियो नाम सेट्ठि सुवण्णहत्थिपदसन्थारेन किणित्वा तस्मिं येव ठाने अट्ठयोजनप्पमाणं संधारामं कारेसि । कवुसन्धस्स भगवतो काले अञ्चुनो नाम सेट्ठी सुवण्णिट्ठिकासन्थारेनेव किणित्वा तस्मिं येव ठाने गावुत्तप्पमाणं संधारामं कारेसि । कोणागमणस्स भगवतो काले उग्गो नाम सेट्ठी सुवण्णकच्छपसन्थारेन किणित्वा तस्मिं येव ठाने अट्ठगावुत्तप्पमाणं संधारामं कारेसि । कस्सपस्स भगवतो काले सुमंगलो नाम सेट्ठी सुवण्णिट्ठिकसन्थारेन किणित्वा तस्मिं येव ठाने सोळसकरीसप्पमाणं [८९] संधारामं कारेसि । अम्हाकं पन भगवतो काले अनाथपिण्डको सेट्ठी कहापणकोटिसन्थारेन किणित्वा तस्मिं येव ठाने अट्ठकरिसप्पमाणं संधारामं कारेसि । इदं किर ठानं सब्बबुद्धानं अविजहित्ठानमेव । इति महाबोधिमण्डे सब्बञ्जुत्तप्पत्तितो याव महापरिनिब्बानमञ्चा यस्मिं यस्मिं ठाने भगवा विहासि इदं सन्तिकेनिदानं नाम । तस्स वसेन सब्बजातकानि वण्णयिस्साम ।

जातकट्ठकथाय

निदानकथानिट्ठिता [१५]

जातकट्टकथा

१. एकनिपातो

१. अपण्णकवग्गवण्णना

१. अपण्णकजातकं

पच्चुपन्नवत्थु

इमं ताव अपण्णकधम्मदसनं भगवा सावत्थिं उपनिस्साय जेतवनमहाविहारे विहरन्तो कथेसि ।
कम्पन आरब्ध अयं कथा समुट्ठितानि ? सेट्ठिस्स सहायके पच्चसते तित्थियसावकेति ।

एकस्मिं हि दिवसे अनाथपिण्डको सेट्ठी अत्तनो सहायके पच्चसते अञ्जतित्थियसावके आदाय
वहुं मालागन्धविलेपनञ्चेव तेलमधुपाणितवत्थच्छादनानि च गाहापेत्वा जेतवनं गत्वा भगवन्तं वन्दित्वा
मालादीहि पूजत्वा भेसज्जानि चैव वत्थानि च भिक्खुमघस्स विस्सज्जेत्वा छ निसज्जादोमे वज्जेत्वा एकमन्तं
निसीदि । तेपि अञ्जतित्थियसावका तथागतं वन्दित्वा सत्थु पुण्णचन्दसस्मिरिकं मुखं लक्खणानुव्यञ्जनपति-
मण्डितं व्यामप्यभापरिक्खितं ब्रह्मकायं आवेळावेळा यमकयमका हुत्वा निच्छरन्तियो घनबुद्धरस्मियो च
ओलोकयमाना अनाथपिण्डकस्स समीपे येव निसीदिमु ।

अथ नेमं सत्था मनोसिलातले मीहनाद नदन्तो तम्भमीहो विय गज्जन्तो, पावुस्सकमेघो विय च,
आकासगंगंओता [१५] रेन्तो विय च, रतनदामं गन्थेन्तो विय च अट्ठंगसमन्नागतेन सवनीयेन ब्रह्मस्सरेन नाना
नयविचित्तं मधुरधम्मकथं कथेसि । ते सत्थुधम्मदेसनं सुत्वा पसन्नचित्ता बुट्ठाय दसवलं वन्दित्वा अञ्जतित्थिय-
सरणं भिन्दित्वा बुद्धं सरणं अगमंमु । ते ततो पट्ठाय निच्चकालं अनाथपिण्डकेन सट्ठिं गन्धमालादिहत्वा विहारं
गत्वा धम्मं सुणन्ति दानं देन्ति सीलं रक्खन्ति उपोसथकम्मं करोन्ति ।

अथ भगवा सावत्थितो पुनदेव राजगहं अगमासि । ते तथागतस्स गतकाले तं सरणं भिन्दित्वा पुन
अञ्जतित्थियसरणं गत्वा अत्तनो मूलट्ठाने येव पतिट्ठिता ।

भगवापि सत्तट्ठमासे वीतिनामेत्वा पुन जेतवनं अगमासि । अनाथपिण्डको पुनपि [१०] ते आदाय
सत्थु सन्तिकं गत्वा सत्थारं गन्धादीहि पूजेत्वा वन्दित्वा एकमन्तं निसीदि । तेपि भगवन्तं वन्दित्वा एकमन्तं
निसीदिमु । अथ नेमं अनाथपिण्डको तथागते चार्गिकं पक्कन्ते गहितसरणं भिन्दित्वा पुन अञ्जतित्थियसरणमेव
गहेत्वा मूले पतिट्ठितभावं भगवतो आरोचेसि ।

भगवा अपरिमितकणकोटियो निरन्तरं पवत्तितवचीसुचरितानुभावेन दिब्बगन्धगन्धितं नानागन्ध-
पूरितं रतनकरण्डकं विवरन्तो विय मुखपदुमं विवरित्वा मधुरस्सरं निच्छारेन्तो “सच्चं किर तुम्हे उपासका !
तीणि सरणानि भिन्दित्वा अञ्जतित्थियसरणं गता” ति पुच्छि । अथ तेहि पटिच्छादेतुं आसक्कोन्तेहि “सच्चं
भगवा” ति बुत्ते सत्था “उपासका ! हेट्ठा अबीचि उपरि भवगं परिच्छेदं कत्वा तिरियं अपरिमाणामु लोकधातुमु
सीलादिगुणेन बुद्धेन सदिसो नाम नत्थि कुतो अधिकतरो । “यावता भिक्खवे ! सत्ता अपदा वा—पे—तथागतो
नेमं अगमक्खायत्ति” गं किञ्चि वित्तं इथ वा हुरं वा—पे—अगतो वे पसन्नान” न्ति आदीहि सुत्तेहि पकासिते

१ इतिबुत्तक, सुत्तनिपात ।

रतनत्तयगुणे पकासेत्वा एवं उत्तमगुणेहि समन्नागतं रतनत्तयं सरणं गता उपासका वा उपासिका वा तिरयादिमु निव्वत्तनका नाम नत्थि । अपायनिव्वत्तितो मुञ्चित्वा पन देवलोके उप्पज्जित्वा महासम्पत्तिं अनुभोन्ति । तस्मा तुम्हेहि एवरूपं सरणं भिन्दित्वा अञ्जातित्थियसरणं गच्छन्तेहि अयुत्तं कत्” न्ति आह ।

एत्थ च तीणि रतनानि मोक्खवसेन उत्तमवसेन च सरणं गतानं अपायेमु निव्वत्तिया अभावदीपनत्थं इमानि सुत्तानि दस्सेत्त्वानिः [96]—

“ये केचि बुद्धं सरणं गतासे न ते गमिस्सन्ति अपायं ।
 पहाय मानुसं देहं देवकायं परिपूरेस्सन्ति ॥
 ये केचि धम्मं सरणं गतासे न ते गमिस्सन्ति अपायं ।
 पहाय मानुसं देहं देवकायं परिपूरेस्सन्ति ॥
 ये केचि संघं सरणं गतासे न ते गमिस्सन्ति अपायं ।
 पहाय मानुसं देहं देवकायं परिपूरेस्सन्ति^१ ॥
 बद्धं वे सरणं यन्ति पव्वतानि वनानि च ।
 आरामरक्खचेत्यानि मनुस्सा भयतज्जिता ॥
 नेतं खो सरणं खेमं नेतं सरणमुत्तमं ।
 नेतं सरणमागम्म सब्बदुक्खा पमुच्चति ॥
 यो च बुद्धं च धम्मं च संघं च सरणं गतो ।
 चत्तारि अरियसच्चाणि सम्मप्यञ्जाय पस्सति ॥ [९१]
 दुक्खं दुक्खसमुप्पादं दुक्खस्स च अतिक्कमं ।
 अरियञ्चट्ठंगिकं मग्गं दुक्खूपसमगामिनं ॥
 एतं खो सरणं खेमं एतं सरणमुत्तमं ।
 एतं सरणमागम्म सब्बदुक्खा पमुच्चती ॥” ति ।^२

न केवलं च नेसं सत्था एत्तकं येय धम्मं देसेसि । अपि च खो “उपासका ! बुद्धानुस्सति कम्मट्ठानं नाम धम्मानुस्सति—पे—संघानुस्सति कम्मट्ठानं नाम सोतापत्तिमग्गं देति सोतापत्तिफलं देति सकदागामिमग्गं देति सकदागामिफलं देति अनागामिमग्गं देति अनागामिफलं देति अरहत्तमग्गं देति अरहत्तफलं देती” ति एवमादीहि पियेहि धम्मं देसेत्वा “एवरूपं नाम सरणं भिन्दन्तेहि अयुत्तं तुम्हेहि कत्” न्ति आह ।

एतं च बुद्धानुस्सनिकम्मट्ठानादीनं सोतापत्तिमग्गादिप्पदानं “एकधम्मो भिक्खवे ! भावितो बहुलीकतो एकन्तनिव्विदाय विरागाय निरोधाय उपसमाय अभिञ्जाय, मम्बोधाय, निव्वानाय मंवत्तति । कतमो एकधम्मो ? बुद्धानुस्सती” ति^३ एवमादिहि मुत्तेहि दीपेत्तव्वं ।

एवं भगवा नानप्यकारेहि उपासके ओवदित्वा “उपासका ! पुब्बेपि मनुस्सा असरणं सरणन्ति तक्कगाहेन विरुद्धगाहेन गहेत्वा अमनुस्सपरिग्गहीते कन्तारे यक्खभक्खा हुत्वा महाविनामं पत्ता, अपण्णकगाहं पन एकंसगाहं अविरुद्धगाहं गहितमनुस्सा तस्मिं येव कन्तारे मोत्थिभावं पत्ता” ति वत्वा तुण्ही अहोसि ।

अथ खो अनाथपिण्डको गहपति उट्ठायासना भगवन्तं वन्दित्वा अभित्थवित्वा सिरसि अञ्जलिम्पतिट्ठापेत्वा एवमाह—“भन्ते ! इदानीं ताव इमेमं उपासकानं उत्तमसरणं भिन्दित्वा तक्कगाहं विरुद्धगाहं सरणगहणं अम्हाकं पाकटं पुब्बे पन अमनुस्सपरिग्गहीते कन्तारे तक्किकानं विनासो अपण्णकगाहं गहितमनुस्सानं च सोत्थिभावो अम्हाकं पटिच्छन्नो [97] तुम्हाकमेव पाकटो । साधु वन नो भगवा आकासे पुण्णचन्दं उट्ठापेन्तो विय इमं कारणं पाकटं करोतू” ति ।

अथ भगवा मया खो गृहपति ! अपग्निमनकालं दसपार्गमयो पूरेत्वा लोकस्म कंखच्छेदनतथमेव सञ्चञ्चुनवाणं पटिविद्धं मीहवसाय सुवर्णपातिं पूरेन्तो विय सककच्चं सोनमोदहित्वा मुणोहीति सेटठिनो सतु-
प्पादं जनेत्वा हिमगम्भं पदाळेत्वा पुण्णचन्दं नीहरन्तो विय भवन्तरेन पटिच्छन्नं कारणं पाकटं अकासिः—[१२]

अतीतवत्थु

अनीने कासिरट्ठे वाराणसिनगरे ब्रह्मदत्तो नाम राजा अहोसि । तदा बोधिसत्तो सत्थवाहकुले पटिसन्धिं गहेत्वा अनुपुब्बेन वयप्पत्तो पञ्चहि सकटसतेहि वाणिज्जं करोन्तो विचरति । सो कदाचि पुब्बन्ततो अपरन्तं गच्छति कदाचि अपरन्ततो पुब्बन्तं । वाराणसियं येव हि अञ्जोपि सत्थवाहपुत्तो अत्थि बालो अव्यत्तो अनुपायकुसलो । तदा बोधिसत्तो वाराणसितो महग्घं भण्डं गहेत्वा पञ्चसकटसतानि पूरेत्वा गमनसज्जानि कत्वा ठपेसि । सोपि बालसत्थवाहपुत्तो तथेव पञ्चसकटसतानि पूरेत्वा गमनसज्जानि कत्वा ठपेसि ।

बोधिसत्तो चिन्तेमि, सचे अयं बालसत्थवाहपुत्तो मया सद्धिं येवग मिससति सकटसहस्से एकतो मग्गे गच्छन्ते मग्गोपि नप्पहोस्सति मनुस्सानं दारुदकादीनिपि बलिवद्धानं तिणानिपि दुल्लभानि भवि-
स्सन्ति । एतेन वा मया वा पुरतो गन्तुं वट्ठतीति ।

सो तं पक्कमापेत्वा एतमत्थं आरोचेत्वा द्वीहिपि अम्हेहि एकतो गन्तुं न सकका । किं त्वं पुरतो गमिस्समि उदाहु पच्छतोनि आह ।

सो चिन्तेमि-मयि पुरतो गच्छन्ते बहू आनिमंसा । मग्गेन अभिन्नेनेव गमिस्सामि । गोणा अनामट्ठ-
तिणं खादिस्सन्ति । मनुस्सानं अनामट्ठमूपेय्यपण्णं भविस्सति । पसन्नं उदकं भविस्सति । यथार्हं अग्घं ठपेत्वा भण्डं विक्किणिस्सामीति । सो अहं सम्म ! पुरतो गमि [१८] स्सामीति आह ।

बोधिसत्तोपि पच्छतो गमने बहू आनिमंसे अहम । एवं हिस्स अहोमि—एते पुरतो गच्छन्ता मग्गे विसमट्ठानं समं करिस्सन्ति । अहं तेहि गतमग्गेन गमिस्सामि । पुरतो गतेहि बलिवद्देहि पणिणतप्पट्ठतिणे खादिने मम गोणा पुन उट्ठितानि मधुरतिणानि खादिस्सन्ति । गहितपण्णट्ठानतो उट्ठितं मनुस्सानं मूपेय्यपण्णं मधुरं भविस्सति । अनुदके ठाने आवाटं खणित्वा एते उदकं उप्पादेस्सन्ति । परेहि कतेमु हि आवाटेमु मयं उदकं पिबिस्साम भण्डअग्घट्ठपनं नाम मनुस्सानं जीवितावोरोपनसदिमं अहं पच्छतो गत्वा एतेहि ठपितग्घेन भण्डं विक्किणिस्सामीति । सो एतके आनिमंसे दिस्वा-सम्म ! त्वं पुरतो गच्छाति आह ।

माधु सम्मानि बालसत्थवाहो सकटानि योजेत्वा निक्खन्तो अनुपुब्बेन मनुस्सवासं अतिक्कमित्वा कन्तारमुखं पापुणि ।

कन्तारं नाम चोरकन्तारं, वाळकन्तारं, निरुदककन्तारं, अमनुस्सकन्तारं, अप्पभक्खकन्तारन्ति पञ्चविधं । तत्थ चोरेहि अधिट्ठितमग्गो चोरकन्तारं नाम । सीहादीहि अधिट्ठितमग्गो वाळकन्तारं नाम । यत्थ नहायितुं वा पातुं वा [१३] उदकं नत्थि इदं निरुदककन्तारं नाम । अमनुस्साधिद्वित्तं अमनुस्सकन्तारं नाम । मूलखादनीयादिविरहितं अप्पभक्खकन्तारं नाम । इमस्मि पञ्चविधे कन्तारे तं कन्तारं निरुदककन्तारं चेव अमनुस्सकन्तारं च । तस्मा सो बालसत्थवाहपुत्तो सकटेमु महन्तमहन्ता चाटियो ठपेत्वा उदसकस्स पूरापेत्वा सट्ठियोजनिकं कन्तारं पटिपज्जि ।

अथस्स कन्तारमज्झं गतकाले कन्तारे अधिवत्थयक्खो इमेहि मनुस्सेहि गहितं उदकं छड्डापेत्वा दुब्बले कत्वा सम्बेव ते खादिस्सामीति सम्बसेतरुणबलिवद् [११] युत्तं मनोरमं यानकं मापेत्वा धनुकलाप-
फलकावुधहत्थेहि दसहि वा द्वादसहि अमनुस्सेहि परिवुत्तो उप्पलकुमुदानि पिलिन्धित्वा अल्लसीसो अल्लवत्थो इस्सरपुरिसो विय तस्मि यानके निसीदित्वा कद्दममक्खितेहि चक्केहि पटिपयं अगमासि । परिवारमनुस्सापिस्स पुरतो च पच्छतो च गच्छन्ता अल्लकेसा अल्लवत्था उप्पलकुमुदमाला पिलिन्धित्वा पटुमपुण्डरीककलापे गहेत्वा भिसमळालानि खादन्ता उदकबिन्दूहि चेव कललेन च पग्घरन्तेन अगमसु ।

सत्थवाहा च नाम यदा धुरवातो^१ वायति तदा यानके निसीदित्वा उपट्ठाकजनपरिवृता रजं परिहरन्ता पुरतो गच्छन्ति । यदा पच्छतो वायति तदा तेनेव नयेन पच्छतो गच्छन्ति । तदा पन धुरवातो अहोसि । तस्मा सो बालसत्थवाहपुत्तो पुरतो अगमासि ।

यक्खो तं आगच्छन्तं दिस्वा अत्तनो यानकं मग्गा ओक्कमापेत्वा कहं गच्छथाति तेन सद्धि पटिसन्धारं अकासि । सत्थवाहोपि अत्तनो यानकं मग्गा ओक्कमापेत्वा सकटानं गमनोकासं दत्त्वा एकमन्तं ठितो तं यक्खं अवोच-भो ! अम्हे ताव बाराणसितो आगच्छाम । तुम्हे पन उप्पलकुमुदानि पिलन्धित्वा पट्टमपुण्डरीकहत्था भिसमुळालानि खादन्ता कद्दमक्खिता उदकविन्दूहि पग्घरन्तेहि आगच्छथ । किन्नुखो तुम्हेहि आगतमग्गे देवो वस्सति उप्पलादिसञ्छन्नानि सरानि अत्थीति पुच्छि ।

यक्खो तस्स कथं सुत्वा-सम्म ! किन्नामेतं कथेसि ? एसा नीलवनराजि पञ्जायति, ततो पट्ठाय सकलं अरञ्जं एकोदकं निबद्धं वस्सति, कन्दरा पूरा, तस्मिं तस्मिं ठाने पट्टमादिसञ्छन्नानि सरानीति वत्त्वा पटिपाटिया [100] गच्छन्तेमु सकटेमु इमानि सकटानि आदाय कहं गच्छथाति पुच्छि ।

अमुकं जनपदं नामाति ।

इमस्मिं च इमस्मिं च सकटे किं नाम भण्डन्ति ?

अमुकं च अमुकं चाति

पच्छतो आगच्छन्तं सकटं अतिवियं गरुकं हुत्वा आगच्छन्ति एतस्मिं किं भण्डन्ति ?

उदकं एत्थानि ।

परतो ताव उदकं आनेन्तेहि वो मनापं कतं । इतो पट्ठाय पन उदकेन किच्चं नत्थि पुरतो बहं उदकं । चाटियो [९४] भिन्दित्वा उदकं छड्डेत्वा मल्लहुकेन सकटेन गच्छथाति आह । एवं च पन वत्त्वा तुम्हे गच्छथ अम्हाकं पपञ्चो होतीति थोकं गत्त्वा तेमं अदस्मन्तं पत्त्वा अत्तनो यक्खनगरमेव अगमासि ।

सोपि खो बालसत्थवाहो अत्तनो बालनाय यक्खस्स वचनं गहेत्वा चाटियो भिन्दापेत्वा पमतमत्तप्पि उदकं अनवमेसेत्वा सब्बं छड्डेत्वा सकटानि पाजापेसि । पुरतो अपमत्तप्पि उदकं नाहोमि । मनुस्सा पानीयं अलभन्ता किलमिमु । ते याव मुग्गियत्थगमना गत्त्वा सकटानि मोचेत्वा पग्गित्तनके ठपेत्वा गोणे चक्केमु बन्धमु । नेव गोगतं उदकं अहोसि न मनुस्मानं यागुभन्तं वा । दुव्वलमनुस्सा तत्थ तत्थ अयोनियो मनसिकत्वा निपज्जित्वा सप्पिमु^२ । रत्तिभागममनन्तरे यक्खा यक्खनगरतो आगन्त्वा सब्बेपि गोणे च मनुस्से च जीवितक्खयं पापेत्वा तेमं ममं खादित्वा अट्ठीनि अवमेसेत्वा अगमंमु ।

एवं, एकं बालसत्थवाहपुत्तं निस्साय सब्बे ते विनासं पापुणिमु । हत्थट्ठिकादीनि दिमाविदिमामु विप्पकिण्णानि अहेमु^३ । पञ्चमसकटमनानि यथापूगितानेव अट्ठंमु ।

बोधिमनोपि खो बालसत्थवाहपुत्तस्स निक्खन्तदिवमतो पट्ठाय मामद्धमामं वीतिनामेत्वा पञ्चहिं सकटसनेहि सद्धि नगरा निक्खम्म अनुपुब्बेन कन्ताग्गमुखं पापुणि । सो तत्थ उदकचाटियो पूरेत्वा बहं उदकं आदाय खन्धावारे भेरिञ्चरापेत्वा मनुस्से सप्पि [101] पापेत्वा एवमाह-अम्भो ! मं अनापुच्छित्वा पमतमत्तप्पि उदकं मा आसिञ्चित्थ । कन्तारे विमरक्खा नाम होन्ति । पत्तं वा पुष्पं वा फलं वा तुम्हेहि पुरे च अस्मादिनपुब्बं मं अनापुच्छित्वा मा खादित्थानि ।

एवं मनुस्मानं ओवादं दत्त्वा पञ्चहिं सकटसनेहि कन्तारं पटिपज्जि ।

तस्मिं कन्ताग्गञ्जे सम्पत्ते सो यक्खो पुग्गिमनयेनेव बोधिमनस्स पटिपथे अनानं दस्सेमि ।

बोधिसत्तो तं दिम्बाव अञ्जासि इमस्मिं कन्तारं उदकं नत्थि, निरुदककन्तारो नामेसो । अयञ्च निब्भयो रत्तनेत्तो, छायापिस्म न पञ्जायति । निस्संसयं इमिना पुरतो गतो बालसत्थवाहपुत्तो सव्वं उदकं छड्ढापेत्वा किलमेत्वा सपरिमो खादितो भविस्सति, मय्हं पन पण्डितभावं उपायकोसल्लं न जानाति मञ्जेति । ततो न आह गच्छथ तुम्हे मयं वाणिजा नाम अञ्जं उदकं अदिस्वा गहितउदकं न छड्ढेम । दिट्ठट्ठाने पन छड्ढेत्वा सकटानि सल्लट्ठकानि कत्वा गमिस्सामाति ।

यक्खो थोकं गन्त्वा अदस्मनं उपगम्म अत्तनो यक्खनगरमेव गतो । यक्खे पन गते सब्बे मनुस्सा बोधिसत्तं उपगन्त्वा आहंमु-अय्य ! एते मनुस्सा एसा नीलवनराजि पञ्जायति, ततो पट्ठाय [९५] देवो निबद्धं वस्सतीति वत्वा उप्पलकुमुदमालामालिनो पदुमपुण्डरीककलापे आदाय भिसमुलानि खादन्ता अल्लवत्था अल्लसीसा उदकविन्दूहि पग्घरन्तेहि आगता । उदकं छड्ढेत्वा लहुकेहि सकटेहि खिणं गच्छामाति ।

बोधिसत्तो तेसं वचनं सुत्वा सकटानि ठपापेत्वा सव्वमनुस्से सन्निपातापेत्वा तुम्हेहि इमस्मिं कान्तारे मरो वा पोक्खरणी वा अत्थीति कस्सचि मुत्तपुब्बन्ति पुच्छि ।

न अय्या ! मुत्तपुब्बं । निरुदककन्तारो नाम एसोति ।

इदानि एकच्चे मनुस्सा एताय नीलवनराजिया परतो देवो वस्सतीति वदन्ति । वुट्ठिवातो नाम कित्तक [102] ट्ठानं वायतीति ।

योजनमत्तं^१ अय्याति ।

कच्चि पन वो एकस्सपि मरीरं वुट्ठिवातो पहरतीति ?

नत्थि अय्याति ।

मेघसीसं नाम कित्तके ठाने पञ्जायतीति ?

योजनमत्ते अय्याति ।

अत्थि पन वो केनचि एकम्पि मेघसीसं दिट्ठन्ति ?

नत्थि अय्याति ।

विज्जुल्लता नाम कित्तके ठाने पञ्जायतीति ?

चतुपञ्चयोजने अय्याति ।

अत्थि पन वो केनचि विज्जुल्लतोभामो दिट्ठोति ?

नत्थि अय्याति ।

मेघसद्दो नाम कित्तके ठाने सूयतीति ?

एकद्वियोजनमत्तं अय्याति ।

अत्थि पन वो केनचि मेघसद्दो सूतोति ?

नत्थि अय्याति ।

किं तुम्हे एते जानाथाति ।

न जानाम अय्याति ।

न एते मनुस्सा । यक्खा एते । अम्हे उदकं छड्ढापेत्वा दुब्बले कत्वा खादिस्सामाति आगता भविस्सन्ति । पुरतो गतो बालसत्थवाहपुत्तो न उपायकुसलो । अद्धा सो एतेहि उदकं छड्ढापेत्वा किलमेत्वा खादितो भविस्सति, पञ्चसकटसतानि यथापूरितानेव ठितानि भविस्सन्ति । अज्ज मयं तानि पस्सिस्साम । पसतमत्तम्पि उदकं अछड्ढेत्वा सीघसीघं सकटानि पाजेथाति ।

सो गच्छन्तो यथापूरितानव पञ्चसकटसतानि गोणमनुस्सानञ्च हत्थट्ठिकादीनि दिसाविदिसामु
धिण्णकिण्णानि दिस्वा सकटानि मोचापेत्वा सकटपरिवत्तकेन खन्धावारं बन्धापेत्वा कालस्सेव मनुस्से च गोणे च
सायमासभत्तं भोजापेत्वा मनुस्सानं मज्जे गोणे निपज्जापेत्वा सयं बलनायके गहेत्वा खग्गहत्थो तियामरत्ति आर-
क्खं गहेत्वा ठितकोव अरुणं उट्ठापेसि । पुनरिदमेवेति पातोव सब्बकिच्चानि निट्ठापेत्वा गोणे भोजेत्वा दुब्बलसकटानि
छड्ढेत्वा थिरानि गाहापेत्वा अप्पगं भण्डं छड्ढापेत्वा महग्गं आरोपेत्वा यथाधिप्पेत्तं ठानं गत्वा द्विगुणतिगुणेन
मूलेन भण्डं विक्किणित्वा सब्बं परिसं आदाय पुन अत्तनो नगरमेव अगमासि । [103]

सत्था इमं धम्मकथं कथेत्वा एवं गहपति पुब्बं तक्कगाहगाहिनो महाविनासं पत्ता अपण्णकगाह-
गाहिनो पन अमनुस्सानं हत्थ[९६]तो मुञ्चित्वा सोत्थिता इच्छित्तुट्ठानं गत्वा पुन सकट्ठानमेव पच्चाग-
मिसूति द्वेपि वत्थूनि घटेत्वा इमिस्सा अपण्णकधम्मदेसनाय अभिसम्बुद्धो हुत्वा इमं गाथमाह—

“अपण्णकं ठानमेके दुतियं आहु तक्किक्का ।

एतवञ्जाय मेधावी तं गण्हे पदपण्णकन्ति ॥”

तत्थ— अपण्णकन्ति एकंसिकं अविहद्धं निव्यानिकं । ठानन्ति कारणं । कारणं हि यस्मा तदायत्त-
वृत्तिताय फलं तिट्ठति नाम तस्मा तं ठानन्ति वुच्चति । “ठानञ्च ठानतो अट्ठानञ्च अट्ठानतो”ति^१ आदिमु-
चस्स पयोगो वेदितव्वो । इति अपण्णकं ठानन्ति पदद्वयेनापि यं एकान्तहितमुखावहत्ता पण्डितेहि पटिपन्नं एकं-
सिककारणं सोभणकारणं अपण्णकनाम अविहद्धकारणं निव्यानिककारणं तं इदन्ति दीपेति । अयमेत्थ संखेपो ।
पमेदतो पन तीणि सरणागमनानि पञ्च सीलानि अट्ठ सीलानि दम सीलानि पातिमोक्खसंवरो इन्द्रियसंवरो
आजीवपारिसुद्धिसीलसंवरो पच्चयपटिसेवनं सब्बम्पि चतुपारिसुद्धिमीलं इन्द्रियेसु गुत्तद्वारता भोजने मत-
ञ्जुता जागरियानुयोगो ज्ञानं विपस्सना अभिञ्जा समापत्ति अरियमग्गो अरियफलं सब्बम्पेनं अपण्णकं ठानं
अपण्णकपटिपदा निव्यानिकपटिपदाति अत्थो । यस्मा च पन निव्यानिकपटिपदाय एतं नामं तस्मा येव भगवा अप-
ण्णकपटिपदं देमेत्तो इमं मुत्तमाह—“तीहि भिक्खवे ! धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अपण्णकपटिपदं पटिपन्नो
होति विरियो चस्स आरद्धो होति आसवानं खयाय । कतमेहि तीहि ? इध भिक्खवे ! भिक्खु इन्द्रियेसु गुत्तद्वारो
होति भोजने मतञ्जू होति जागरियं अनुयुत्तो होति । कथं च भिक्खवे ! भिक्खु इन्द्रियेसु गुत्तद्वारो होति ? इध
भिक्खवे ! भिक्खु चक्खुना रूपं दिस्वा न निमित्तगाही होति—ये—एवं खो भिक्खवे ! भिक्खु इन्द्रियेसु गुत्त-
द्वारो होति । कथं च भिक्खवे ! भिक्खु भोजने मतञ्जूहोति ? इध भिक्खवे ! भिक्खु पटिसंखायोनिस्सो आहारं
आहारति नेव दवाय न मदाय न मण्डनाय न विभूसनाय यावदेव इमस्स कायस्स ठितिया यापनाय विहिंसुपरतिया
ब्रह्मचरियानुगहाय इति पुराणञ्च वेदनं पटिसंखामि नवञ्च वेदनं न उप्पादेस्सामि यात्रा च मे भविस्सति
अनवज्जता च फामुविहारो चाति । एवं खो भिक्खवे ! भिक्खु भोजने मतञ्जूहोति । कथं च भिक्खवे ! भिक्खु
जागरियं अनुयुत्तो होति ? इध भिक्खवे ! भिक्खु दिवसं चंक्रमेन निसज्जाय आवरणीयेहि धम्मेहि चित्तं परिसोधेति
रत्तिया पठमं यामं चंक्रमेन निसज्जाय आवरणीयेहि धम्मेहि चित्तं परिमोधेति रत्तिया मज्झिमं यामं दक्खिणेन
पस्सेन सीहमेय्यं कप्पेति पादेन पादं अच्चाधाय सतो सप्पजानो उट्ठानसञ्जं मनसिकरित्वा रत्तिया पच्छिमं
यामं पच्चुट्ठाय चंक्रमेन निसज्जाय आवरणीयेहि धम्मेहि चित्तं परिमोधेति । एवं खो भिक्खवे ! भिक्खु जागरियं
अनुयुत्तो होति” ति । इमस्मिं चापि सुत्ते तयोव धम्मा वुत्ता । अयं पन अपण्णकपटिपदा याव अरहत्तफला लब्ध
[104]तेव । तत्थ अरहत्तफलम्पि फलसमापत्तिविहारस्स चेव अनुपादापरिनिव्वानस्स च पटिपदायेव नाम होति ।
एकेति एकञ्चे पण्डितमनुस्सा । तत्थ किञ्चापि अमुको नामाति नियमो नत्थि, इदं पन सपरिसं बोधिसत्तं येव[१७]
सन्धाय वुत्तन्ति वेदितव्वं । दुतियं आहु तक्किक्काति दुतियन्ति पठमं वुत्ततो^२ अपण्णकट्ठानतो निव्यानिककार-
णतो दुतियं तक्कगाहकारणं अनिव्यानिककारणं । आहु तक्किक्काति एत्थ पन सद्धि पुरिमपदेन अयं योजना,
अपण्णकट्ठानं एकान्तिककारणं अविहद्धकारणं निव्यानिककारणं एके बोधिसत्तप्यमुखा पण्डितमनुस्सा गहिंसु ।

ये पन ते बालसत्थवाहपुत्तप्पमुत्ता तक्किका आहु ते दुतियं सापराधं अनेकंसिकट्ठानं विरुद्धकारणं अनिय्या-
निककारणं अगगहेसुं । तेसु ये अपण्णकट्ठानं अगगहेसुं ते सुक्कपटिपदं पटिपन्ना ये दुतियं पुरतो भवितव्वं उदके-
नाति तक्कगाहसंखातं अनिय्यानिककारणं अगगहेसुं ते कण्हपटिपदं पटिपन्ना । तत्थ सुक्कपटिपदा अपरिहानि-
पटिपदा कण्हपटिपदा परिहानिपटिपदा तस्मा ये सुक्कपटिपदं पटिपन्ना ते अपरिहीना सोत्थिभावं पत्ता, ये
पन कण्हपटिपदं पटिपन्ना ते परिहीना अनयव्यसनं आपन्नाति इममत्थं भगवा अनाथपिण्डकस्स गहपतिनो वत्ता
उत्तरि इदमाह—“एतदञ्जाय मेधावी तं गण्हे यदपण्णक” न्ति ! तत्थ एतदञ्जाय मेधावीति मेधाति लद्धनामाय
विमुद्धाय उत्तमाय पञ्जाय समन्नागतो कुलपुत्तो एतं अपण्णके चेव सपण्णके चाति द्वीसु अपण्णकगाहतक्कगाह-
संखातेसु ठानेसु गुणदोसं बुद्धिहानिं अत्थानत्थं ठानाठानञ्च ज्ञात्वाति अत्थो । तं गण्हे यदपण्णकन्ति यं अपण्णकं
एकंसिकसुक्कपटिपदाअपरिहानियपटिपदासंखातं निय्यानिककारणं तदेव गण्हेय्य । कस्मा ? एकंसिकादिभाव-
तो येव । इतरं पन न गण्हेय्य । कस्मा ? अनेकंसिकादिभावतो येव । अयं हि अपण्णकपटिपदा नाम सब्बेसं बुद्ध-
पच्चेकबुद्धबुद्धपुत्तानं पटिपदा । सब्बबुद्धा हि अपण्णकपटिपदायमेव ठत्वा दळ्हेन विरियेन पारमियो पूरेत्वा
बोधितले बुद्धा नाम होन्ति । पच्चेकबुद्धा पच्चेकबोधिं उप्पादेन्ति । बुद्धपुत्तापि सावकपारमित्राणं पटिविज्झन्ति ।
इति भगवा तेसं उपासकानं तिस्रो कुसलसम्पत्तियो छ कामावचरसग्गे ब्रह्मलोकसम्पत्तियो च दत्वापि परियो-
साने अरहत्तफलदायिका अपण्णकपटिपदा नाम चतुसु अपायेसु पञ्चसु च नीचकुलेसु निव्वत्तिदायिका सपण्ण-
कपटिपदा नामाति । इमं अपण्णकधम्मदेसनं दस्सेत्वा उपरि चत्तारि सच्चानि सोळसहिं आकारेहिं पकासेसि ।
चतुसच्चपरियोसाने सब्बेपि ते पञ्चसता उपासका सोत्तापत्तिफले पतिट्ठहिंसु ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा दस्सेत्वा द्वे वत्थूनि कथेत्वा अनुसन्धिं घटेत्वा जातकं समोधानेत्वा
दस्सेसि । तस्मिं समये बालसत्थवाहपुत्तो देवदत्तो अहोसि, तस्स [९८] परिसा देवदत्तपरिसा व, पण्डितसत्थवाह-
पुत्तपरिसा बुद्धपरिसा, पण्डितसत्थवाहपुत्तो पन अहमेव अहोसिन्ति देसनं निट्ठपेसि ।

अपण्णकजातकं

२. वण्णपथजातकं

अकिलासुनोति इमं धम्मदेसनं भगवा सावत्थियं विहरन्तो कथेसि । कं पन आरब्भाति ? एकं ओस्स-
ट्ठविरियं भिक्खुं ।

पञ्चपन्नवत्थु

तथागते किर सावत्थियं विहरन्ते एको सावत्थिवासी कुलपुत्तो जेतवनं गत्वा सत्थु सन्तिके
धम्मदेसनं सुत्वा पसन्नचित्तो कामेसु आदीनवं नेक्खम्मे च आनिसंसं दिस्वा पब्बजित्वा उपसम्पदाय
पञ्चवस्सिको हुत्वा द्वे मातिका उग्गण्हित्वा विपस्सनाचारं सिक्खित्वा सत्थु संतिके अत्तनो चित्तरुचियं कम्म-
ट्ठानं गहेत्वा एकं अरञ्जं पविसित्वा वस्सं उपगन्त्वा तेमासं वायमन्तो ओभासमत्तं वा निमित्तमत्तं वा उप्पादेतुं
नासक्खि ।

अयस्स एतदहोसि-सत्थारा चत्तारो पुग्गला कथिता । तेसु मया पदपरमेन भवितव्वं । नत्थि
मञ्जे मय्हं इमस्मि अत्तभावे मग्गो वा फलं वा । अहं किं करिस्सामि अरञ्जवासेन ? सत्थुसन्तिकं गन्त्वा अतिविय
रूपसोभगप्पत्तं बुद्धसरीरं ओलोकेन्तो मधुरधम्मदेसनं सुणन्तो विहरिस्सामीति पुन जेतवनमेव पञ्चागमासि ।

अथ नं सन्दिट्ठा सम्भत्ता भिक्खू आहंसु-आवुसो ! त्वं सत्थु सन्तिके कम्मट्ठानं गहेत्वा समणधम्मं
करिस्सामीति गतो इदानि पन आगन्त्वा संगणिकाय अभिरममानो चरमि । किश्रु खो ते पब्बजितकिच्चं मत्थकं
पत्तं अप्पटिसन्धिको जातोसी” ति ?

आवुसो ! अहं मग्गं वा फलं वा अलभित्वा अभव्वपुग्गलेन मया भवितव्वन्ति विरियं ओस्सजित्वा
आगतोम्हीति ।

अकारणं ते आवुसो, कतं दब्धहविरियस्स सत्थु सासने पब्बजित्वा विरियं ओस्सजन्तेन । एहि
तथागतस्स तं दस्सेस्सामाति ते तं आदाय सत्थु संतिकं अगमंसु ।

सत्था तं दिस्वा एवमाह-भिक्खवे ! तुम्हे एतं भिक्खुं अनिच्छमानं आदाय आगता । किं कनं
इमिनाति ?

भन्ते ! अयं भिक्खु एवरूपे निट्थानिके सासने पब्बजित्वा समणधम्मं करोन्तो विरियं ओस्सजित्वा
आगतोति ।

अथ नं सत्था आह-सच्चं किर तथा भिक्खु ! विरियं ते ओस्सट्ठन्ति ?

सच्चं भगवाति ।

किं पन त्वं भिक्खु ! एवरूपे निट्थानिकसासने पब्बजित्वा अप्पिच्छोति वा सन्तुट्ठोति वा पवि-
वित्तोति वा असंसट्ठोति वा आरद्धविरियोति वा एवं अत्तानं अजानापेत्वा ओस्सट्ठविरियो भिक्खूति जानापेसि ।
ननु त्वं पुब्बे विरियवा अहोसि । तथा एकेन कतं विरियं निस्साय मरुक्कन्तारे[१९]पञ्चसु सकटसत्तेसु गच्छन्तेसु
मनुस्सा च गोगा च पानीयं लभित्वा सुखिता जाता ! इदानि कस्मा विरियं ओस्सजसीति ?

सो भिक्खु एतकेन उपत्थम्भितो अहोसि । तं पन कथं सुत्वा भिक्खू भगवन्तं याचिसु-भन्ते !
इदानि इमिना भिक्खुना विरियस्स ओस्सट्ठभावो अम्हाकं पाकटो, पुब्बे पन एतस्स एकस्स कतविरियं निस्साय
मरुक्कन्तारे गोगमनुस्सानं पानीयं लभित्वा सुखितभावो पटिच्छन्नो, तम्हाकं सब्बञ्जुतञ्जाणस्सेव पाकटो ।
अम्हाकम्पेतं कारणं कथेयाति ।

तेनहि भिक्खवे ! सुणाथाति ।

भगवा तेसं भिक्खून् सनुप्पादं जनेत्वा भवन्तरेण पटिच्छन्नं कारणं पाकटं अकासि—

अतीतवत्थु

अतीते कासिरट्ठे बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो सत्थवाहकुले पटिसन्धि गहेत्वा वयप्पत्तो पञ्चहि सकटसतेहि वणिज्जं करोन्तो विचरति । सो एकदा सट्ठियोजनिकं मरुकन्तारं पटिपज्जि । तस्मिं कन्तारे सुखुमवालिना मुट्ठिना गहिता हत्थे न तिठन्ति । मुरियुग्गमनतो पट्ठाय अंगाररासि विय उण्हा होति न सक्का अतिक्कमिनुं । तस्मा तं पटिपज्जन्तो दारूदकतेलत्ण्डुलादीनि सकटेहि आदाय रत्तिमेव गन्त्वा अरुणुग्गमने सकटानि परिवत्तकानि कत्वा मत्थके मण्डपं कारेत्वा कालस्सेव आहारकिच्चं निट्ठापेत्वा छायाय निसिन्ना दिवसं खेपेत्वा अत्थं गते मुरिये सायमासं भुञ्जित्वा भूमिया सीतलाय जाताय सकटानि योजेत्वा गच्छन्ति । समुद्गमनसदिसमेव गमनं तत्थ होति । फलनियामको नाम लद्धुं वट्ठति । सो तारकसञ्जाय सत्थं तारेसि ।

मोपि सत्थवाहो तस्मिं काले इमिनाव नियामेन तं कन्तारं गच्छन्तो एकूनसट्ठियोजनानि गन्त्वा इदानि एकरत्तेनेव मरुकन्तारा निक्खमनं भविस्सतीति सायमासं भुञ्जित्वा सब्बं दारूदकं खेपेत्वा सकटानि योजेत्वा पायासि । नियामको पुरिमसकटे आसन्दि सन्थरापेत्वा आकासे तारकं ओलोकेन्तो इतो पाजेथ इतो पाजेथाति वदमानो निपज्जि । सो दीघमद्धानं अनिदायनभावेन किलमन्तो निदं ओक्कमि ।

गोणो निवत्तित्वा आगतमग्गमेव गण्हन्ते न अञ्जासि । गोणा सब्बरत्ति अगमंमु । नियामको अरुणुग्गमनवेलाय पबुद्धो नक्खत्तं ओलोकेत्वा सकटानि निवत्तेथ निवत्तेथाति आह । सकटानि निवत्तेत्वा पटिपाटिं करोन्तानं येव अरुणो उग्गतो ।

मनुस्सा हिय्यो अम्हाकं निविट्ठखन्धा[१००]वारट्ठानमेवेत्तं दारूदकम्पि नो खीणं इदानि नट्ठम्हाति सकटानि मोचेत्वा परिवत्तकेन ठपेत्वा मत्थके मण्डपं कत्वा अत्तनो अत्तनो सकटस्स हेट्ठा अनुसोचन्ता निपज्जिमु ।

बोधिसत्तो मयि विरियं ओस्सजन्ते सब्बेपि विनस्सिस्सन्तीति पातोव सीतलवेलायमेव आहिण्डन्तो एकं दब्बतिणगच्छं दिस्वा इमानि तिणानि हेट्ठा उदकसिनेहेन उट्ठितानि भविस्सन्तीति चिन्तेत्वा कुदालं गाहापेत्वा तं पदेसं खणापेसि । ते सट्ठिहत्थट्ठानं खणिमु । एत्तकं ठानं खणित्वा पहरन्तानं कुदालो हेट्ठा पासाणे पटिह्विज्जि । पट्टमत्ते सब्बेपि विरियं ओस्सजिमु ।

बोधिसत्तो पन इमस्स पासाणस्स हेट्ठा उदकेन भवितब्बन्ति ओतरित्वा पासाणे ठितो ओनमित्वा सोत्तं ओदहित्वा सद्दं आवज्जेन्तो हेट्ठा उदकस्स पवत्तनसद्दं सुत्वा उत्तरित्वा चूलुपट्ठाकं आह—तात ! तया विरिये ओस्सट्ठे सब्बे विनस्सिस्साम । त्वं विरियं अनोस्सजित्वा इमं अयकूटं गहेत्वा आवाटं ओतरित्वा एतरिम पासाणे पहारं देहीति ।

सो तस्स वचनं सम्पटिच्छित्वा सब्बेमु विरियं ओस्सजित्वा ठितेमुपि विरियं अनोस्सजन्तो ओतरित्वा पासाणे पहारं अदासि । पासाणो मज्जे भिज्जित्वा हेट्ठा पतित्वा सोत्तं सन्निरुम्भित्वा अट्ठासि । तालवखन्ध-प्पमाणा उदकवट्ठि उग्गच्छि । सब्बे पानीयं पिवित्वा नह्मायिमु । अतिरेकानि अक्खयुगादीनि फालेत्वा यागुभत्तं पचित्वा भुञ्जित्वा गोणे च भोजेत्वा मुरिये च अत्थं गते उदकावाटसमीपे धज्जं बन्धित्वा इच्छितट्ठानं अगमिमु । ते तत्थ भण्डं विक्किणित्वा दिगुणचतुग्गुणं लाभं^१ लभित्वा अत्तनो वसनट्ठानमेव अगमंमु^२ ।

ते तत्थ यावतायुक्कं ठत्वा यथाकम्मं गता । बोधिसत्तोपि दानादीनि पुञ्जानि कत्वा यथाकम्मभव गतो । सम्मासम्बुद्धो इमं धम्मदेसनं कथेत्वा अभिसम्बुद्धोव इमं गाथं कथेसि—

“अकिलासुनो वण्णुपथे खणन्ता, उदंगणे तत्थ पपं अविन्दुं”^१
 एवं मुनी विरियबलूपपन्नो, अकिलासु विन्दे हृदयस्स सन्तिन्ति ॥”

तत्थ—अकिलासुनोति निक्कोसज्जा आरद्धविरिया । वण्णुपथेति वण्णु वुच्चति बालुका^२ । बालुकामग्गेति अत्थो । खणन्ताति भूमिं खणमाना । उदंगणेति एत्थ उद इति निपातो । अंगणेति अन्तो मनुस्सानं सञ्चरणट्ठाने अनावटे भूमिभागेति अत्थो।[१०१]तत्थाति तस्मिं वण्णुपथे।पपं अविन्दुन्ति उदकं लभिसु । उदकं हि पिवनभावेन पपाति वुच्चति । पविट्ठं वा आपं पपं महोदकन्ति अत्थो । एवन्ति ओपम्मपटिपादनं । मुनीति मोनं वुच्चति आणं कायमोनेय्यादिसु वा अञ्जतरंतेन समन्नागतत्ता पुग्गलो मुनीति वुच्चति । सो पनेस आगारियमुनि अनागारिय-मुनि सेखमुनि असेखमुनि पच्चेकमुनि मुनिमुनीति अनेकविधो । तत्थ आगारियमुनीति गिहीआगतफलो विञ्जा-तसासनो । अनागारियमुनीति तथारूपोव पब्बजितो । सेखमुनीति सत्त सेखा । असेखमुनीति खीणासवो । पच्चेक-मुनीति पच्चेकसम्बुद्धो । मुनिमुनीति सन्मासम्बुद्धो । इमस्मिं पनत्थे सब्वसंगाहिकवसेन मोनेय्यसंखाताय पञ्जाय समन्नागतो मुनीति वेदितव्वो । विरियबलूपपन्नोति विरियेन चैव कायबलजाणबलेन च समन्नागतो । अकिला-सूति निक्कोसज्जो । कामं तच्चो च नहारु च अट्ठी च अवसिम्सत्तु^३ उपसुस्सत्तु सरीरे मंसलोहितन्ति एवं वुत्तेन चतुरंगसमन्नागतेन विरियेन समन्नागतत्ता अनलसो अकिलासु । विन्दे हृदयस्स सन्तिन्ति चित्तस्सपि हृदयरूपस्सपि सीतलभावकरणेन सन्तिन्ति संखं गतं ज्ञानविपस्सनाभिञ्जाअरहत्तमग्गजाणसंखातं अरियधम्मं विन्दति पटिल-भतीति अत्थो ।

भगवता हि —“दुक्खं भिक्खवे ! कुसीतो विहरति वोकिण्णो पापकेहि अकुसलेहि धम्मेहि महन्तञ्च सदत्थं परिहापेति ; आरद्धविरियो च खो भिक्खवे ! सुखं विहरति पविचित्तो पापकेहि अकुसलेहि धम्मेहि महन्तञ्च सदत्थं परिपूरेति । न भिक्खवे ! हीनेन अग्गस्स पत्तिं होती” ति^४ एवं अनेकेहि मुत्तेहि कुसीतस्स दुक्खविहारो आरद्धविरियस्स च सुखविहारो संवणितो । इधापि आरद्धविरियस्स अकताभिनिवेसस्स विपस्सकस्स विरिय-बलेन अधिगन्तव्वं तमेव सुखविहारं दस्सेत्तो “एवं मुनी विरियबलूपपन्नो अकिलासु विन्दे हृदयस्स सन्ति” न्ति आह । इदं वुत्तं होति, यथा ते वाणिजा अकिलासुनो वण्णुपथे खणन्ता उदकं लभिसु एवं इमस्मिंप्पि सासने अकिलासु हुत्वा वायममानो पण्डितो भिक्खु इमं ज्ञानादिभेदं हृदयसन्ति लभति । सो त्वं भिक्खु ! पुब्बे उदकमत्तस्स अत्थाय विरियं कत्वा इदानीं एवरूपे मग्गफलत्थाय निव्यानिके सासने कस्मा विरियं ओस्सज्जसीति ? एवं इमं धम्मदेसनं दस्सेत्वा चत्तारि सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने ओस्सट्ठविरियो भिक्खु अग्गफले अरहत्ते पटिट्ठासि । [१०२]

सत्था द्वेपि वत्थूनि कथेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेत्वा दस्सेसि । तस्मिं समये विरियं अनोस्सजित्वा पासाणं भिन्दित्वा महाजनस्स उदकदायको चूलुपट्ठाको अयं ओस्सट्ठविरियो भिक्खु अहोसि अवसेसपरिसा इदानीं बुद्धपरिसा जाता सत्थवाहजेट्ठको पन अहमेव अहोसिन्ति इमं धम्मदेसनं निट्ठपेसि ।

वण्णुपथजातकं ।

३. सेरिववाणिजजातकं

इध चेहि नं विराधेसीति इदम्पि धम्मदेसनं भगवा सावत्थियं विहरन्तो एकं ओस्सट्ठविरियमेव भिक्खुं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

तं हि पुरिमनयेनेव भिक्खूहि आनीतं दिस्वा सत्था आह—“भिक्खु ! त्वं एवरूपे मग्गफलदायके सासने पब्बजित्वा विरियं ओस्सजन्तो सतसहस्सग्घनिकाय कञ्चनपातिया परिहीनो सेरिववाणिजो विय चिरं सोच्चेय्यासी” ति ।

भिक्खू तस्सत्थस्स आवीभावत्थं भगवन्तं याचिसु । भगवा भवन्तरेन पटिच्छन्नं कारणं पाकटं अकासि—

अतीतवत्थु

अतीते इतो पञ्चमे कप्पे बोधिसत्तो सेरिवरट्ठे सेरिवो नाम कच्छपुटवाणिजो अहोसि । सो सेरिवा नाम एकेन लोलकच्छपुटवाणिजेन सद्धि वोहारत्थाय गच्छन्तो नीलवाहिनि नाम नदि उत्तरित्वा अन्धपुरं^१ नाम नगरं पविसन्तो नगरवीथियो भाजेत्वा अत्तनो पत्तवीथिया भण्डं विक्किणन्तो चरि । इतरोपि अत्तनो पत्तवीथिं गण्हि ।

तस्मिं पन नगरे एकं सेट्ठिकुलं परिजिण्णं अहोसि । सब्बे पुतभातिका च धनं च परिकस्वयं अगमंसु । एका दारिका अय्यिकाय सद्धि अवसेसा अहोसि । ता द्वेपि परेसं भतिं कत्वा जीवन्ति । गेहे पन तासं महासेट्ठिना परिभुत्तपुब्बा सुवण्णपाति भाजनन्तरे निक्खित्ता दीघरत्तं अवलज्जियमाना मलग्गहिता अहोसि । ता तस्सा सुवण्णपातिभावम्पि न जानन्ति ।

सो लोलवाणिजो तस्मिं समये “मणिके^३ गण्हथ, मणिके गण्हथा” ति विचरन्तो तं घरद्वारं पापुणि ।

सा कुमारिका तं दिस्वा अय्यिकं आह—अम्म ! मय्हं एकं पिलन्धनं गण्हाति ।

अम्म ! मयं दुग्गता किं दत्त्वा गण्हस्सामाति ?

अयं नो पाति अत्थि, नो च अम्हाकं उपकारा । इमं दत्त्वा गण्हाति ।

सा वाणिजं पक्कोसापेत्वा आसने निसीदापेत्वा तं पाति दत्त्वा—अय्य ! इमं गहेत्वा तव भगिनिया किञ्चिदेव देहीति आह ।

वाणिजो पाति हत्थेन गहेत्वाव सुवण्णपाति भविस्सतीति परिवत्तेत्वा पातिपिट्ठियं सूचिया लेखं कड्ढित्वा सुवण्णभावं ज्ञात्वा इमासं किञ्चि अदत्त्वाव इमं पाति हरिस्सामीति—अयं किं च अग्घति ? अद्धमास-कोपिस्सा मूलं न होतीति भूमियं खिपित्वा उट्ठायासना पक्कामि । [१०३]

एकेन पविसित्वा निक्खन्तवीथिं इतरो पविसितुं लभतीति बोधिसत्तो तं वीथिं पविसित्वा “मणिके गण्हथ मणिके गण्हथा” ति विचरन्तो तमेव घरद्वारं पापुणि । पुन सा कुमारिका तथेव अय्यिकं आह ।

अथ नं अट्ठिका—अम्म ! पठमं आगतवाणिजो पातिं भूमियं खिपित्वा गतो इदानीं किं दत्त्वा गण्ह-स्सामाति आह ।

अम्म ! सो वाणिजो फहसवाचो अयं पन पियदस्सनो मुदुसल्लापो । अप्पेवनाम नं गण्हेय्याति । तेन हि पक्कोसाहीति ।

सा तं पक्कोसि । अथस्स गेहं पविसित्वा निसिन्नस्स तं पाति अदंसु । सो तस्सा सुवण्णपातिभावं ज्ञत्वा—अम्म ! अयं पाति सतसहस्सं अग्घति पातिअग्घनकभण्डं मय्हं हत्थे नत्थीति आह ।

अम्म ! पठमं आगतवाणिजो अयं अद्धमासकम्पि न अग्घतीति भूमियं खिपित्वा गतो । अयं पन तव पुञ्जेन सुवण्णपाति जाता भविस्सतीति । मयं इमं तुय्हं देम । किञ्चिदेव नो दत्त्वा इमं गहेत्वा याहीति ।

बोधिसत्तो तस्मिं खणे हत्थगतानि पञ्चकहापणसतानि पञ्चसतग्घनकञ्च भण्डं सब्बं दत्त्वा—मय्हं इमं तुलं च पसिञ्च कञ्च अट्ठ च कहापणे देधाति एत्तकं याचित्वा—आदाय पक्कामि । सो सीधमेव नदीतीरं गत्वा नाविकस्स अट्ठकहापणे दत्त्वा नावं अभिरुहि^१ ।

ततो लोलवाणिजोपि^२ पुन गेहं गत्वा—आहरथ तं पाति तुम्हाकं किञ्चिदेव दस्सामीति आह ।

सा तं परिभासित्वा—त्वं अम्हाकं सतसहस्सग्घनिकं सुवण्णपातिं अद्धमासकग्घनिकम्पि न अकासि । तुय्हं पन सामिकसदिसो एको धम्मिकवाणिजो अम्हाकं सहस्सं दत्त्वा तं आदाय गतोति आह ।

तं सुत्वा तस्स 'सतसहस्सग्घनिकाय हि सुवण्णपातिया परिहीनोम्हि महाजानिकरो वत मे अयन्ति' सञ्जातबलवसोको मति पच्चुपट्ठपेतुं असक्कोन्तो विसञ्जो हुत्वा अत्तनो हत्थगते कहापणे चेव भण्डकञ्च घरद्वारे येव विकिरित्वा निवासनपाखणं पहाय तुलादण्डं मुगरं कत्वा आदाय बोधिसत्तस्स अनुपदं पक्कन्तो नदीतीरं गत्वा बोधिसत्तं गच्छन्तं दिस्वा—अम्भो नाविक ! नावं निवत्तेहीति आह ।

बोधिसत्तो 'मा निवत्तयीति' पटिसेधेसि ।

इतरस्सपि बोधिसत्तं गच्छन्तं पस्सन्तस्स पस्सन्तस्स बलवसोको उदपादि । हृदयं उण्हं अहोसि । मुखतो लोहितं उग्गञ्छि । वापिकट्ठमो विय हृदयं फलि । सो बोधिसत्ते आघातं बन्धित्वा तत्थेव जीवितक्खयं पापुणि । इदं पठमं देवदत्तस्स बोधिसत्ते आघातबन्धनं । बोधिसत्तो दानादीनि पुञ्जानि करित्वा यथाकम्मं अगमासि । सम्मासम्बुद्धो इमं धम्मदेसनं कथेत्वा अभिसम्बुद्धोव इमं गाथं कथेसि —[१०४]

“इध चे हि नं विराधेसि सद्धम्मस्स नियामतं ।

चिरं त्वं अनुतपेस्ससि सेरिवायं व वाणिजो ॥” ति ।

तत्थ—इध चे हि नं विराधेसि सद्धम्मस्स नियामतन्ति इमस्मिं सासने एतं सद्धम्मस्स नियामतासंखातं सोतापत्तिमगं विराधेसि । चे यदि विराधेसि विरियं ओस्सजन्तो नाधिगच्छसि न पटिलभसीति अत्थो । चिरं त्वं अनुतपेस्ससीति एवं सन्ते त्वं दीधमद्धानं सोचन्तो परिदेवन्तो सदा अनुतपेस्ससि । अथवा ओस्सट्ठविरियताय अरियमगस्स विराधितत्ता दीधरत्तं निरयादिमु उप्पन्नो नानप्पकाराणि दुक्खानि अनुभवन्तो अनुतप्पिस्ससि किलमिस्ससीति अयमेत्थ अत्थो । कथं सेरिवायं व वाणिजोति सेरिवाति एवं नामको । अयं व वाणिजो यथा । इदं वुत्तं होति—यथा पुब्बे सेरिवा नाम वाणिजो सतसहस्सग्घनिकं सुवण्णपातिं लभित्वा तस्स गहणत्थाय विरियं अकत्वा ततोपि परिहीनो अनुतप्पि एवमेव त्वम्पि इमस्मिं सासने पटियत्तसुवण्णपातिसदिसं अरियमगं ओस्सट्ठविरियताय अनधिगच्छन्तो ततो परिहीनो—दीधरत्तं अनुतप्पिस्ससि सचे पन विरियं न ओस्सजिस्ससि पण्डित-वाणिजो सुवण्णपातिं विय मम सासने नवविधम्पि लोकुत्तरधम्मं पटिलभिस्ससीति ।

एवमस्स सत्था अरहत्तेन कूटं गण्हन्तो इमं धम्मदेसनं दस्सेत्वा चत्तारि सच्चानि पकासेसि । सच्चपरि-योसाने ओस्सट्ठविरियो भिक्खु अगगफले अरहत्ते पतिट्ठासि । सत्थापि द्वे वत्थूनि कथेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेत्वा दस्सेसि । तदा बालवाणिजो देवदत्तो अहोमि, पण्डितवाणिजो अहमेव अहोसिन्ति देसनं निट्ठपेसि

सेरिवाणिजजातकं

४. चुल्लकसेट्टिजातकं

अप्पकेनापि मेधावीति इमं धम्मदेसनं भगवा राजगहं उपनिस्साय जीवकम्बवने विहरन्तो चुल्ल-
पन्थकत्थेरं आरब्ध कथेसि ।

चुल्लपन्थकस्स निब्बत्तिकथा

तत्थ चुल्लपन्थकस्स ताव निब्बत्ति कथेतब्बा—राजगहे किर महाधनसेट्ठिकुलस्स धीता अत्तनो दासेनेव सद्धि सन्थवं कत्वा अञ्जेपि मे इमं कम्मं जानेय्युन्ति भीता एवमाह—अम्हेहि इमस्मिं ठाने वसितुं न सबका सचे मे मातापितरो इमं दोसं जानिस्सन्ति खण्डाखण्डं करिस्सन्ति, विदेसं गन्त्वा वसिस्सामाति हत्थसारं गहेत्वा अगगद्वारेन निक्खमित्वा यत्थ वा तत्थ वा अञ्जेहि अजाननट्ठानं गन्त्वा वसिस्सामाति उभोपि अगमंस्सु । तेसं एकास्मिं ठाने वसन्तानं संवासमन्वाय तस्सा [१०५] कुच्छियं गब्भो पतिट्ठासि । सा गब्भपरिपाकमागम्म सामिकेन सद्धि मत्तेसि—गब्भो मे परिपाकं गतो, ज्ञातिबन्धुविरहिते च ठाने गब्भवुट्ठानं नाम उभिन्नम्पि अम्हाकं दुक्खमेव, कुलगेहं गच्छामाति ।

सो अज्ज गच्छाम स्वे गच्छामाति दिवसे अतिक्कामेसि । सा चिन्तेसि—अयं बालो अत्तनो दोस-
महन्तताय गन्तुं न उस्सहति, मातापितरो नाम एकन्तहिता, अयं गच्छतु वा मा वा, मया गन्तुं वट्ठतीति ।
तस्मिं गेहा निक्खन्ते गेहपरिक्खारं पटिसामेत्वा अत्तनो कुलघरं गतभावं अनन्तरगेह्वासीनं आरोचेत्वा मगं पटिपज्जि ।

अथ सो पुरिसो घरं आगतो नं अदिस्वा पटिविस्सके पुच्छित्वा कुलघरं गताति सुत्वा वेगेन अनुबन्धित्वा
अन्तरामग्गे सम्पापुणि । तस्सापि तत्थेव गब्भवुट्ठानं अहोसि । सो कि इदं भदेति पुच्छि ।

सामि ! एको पुत्तो जातोति ।

इदानि किं करिस्सामाति ?

यस्सत्थाय मयं कुलघरं गच्छेय्याम तं कम्मं अन्तराव निष्फन्नं, तत्थ गन्त्वा किं करिस्साम, निवत्ता-
माति द्वेपि एकचित्ता हुत्वा निवत्तिस्सु । तस्म च दारकस्स पन्थे जातत्ता पन्थकोति नामं अकंस्सु ।

तस्सा न चिरस्सेव अपरोपि गब्भो पतिट्ठहि । सब्बं पुरिमनयेनेव वित्थारेतब्बं । तस्सापि दारकस्स
पन्थे जातत्ता पठमजातस्स महापन्थकोति नामं कत्वा इतरस्स चुल्लपन्थकोति नामं अकंस्सु । ते द्वेपि दारके गहेत्वा
अत्तनो वसनट्ठानमेव आगता ।

पच्चपन्नवत्थु

तेसं तत्थ वसन्तानं अयं पन्थकदारको अञ्जे दारके चुल्लपिताति, अय्यकोति, अय्यिकाति वदन्ते
सुत्वा मानरं पुच्छि—अम्म ! अञ्जे दारका चुल्लपिताति अय्यकोति अय्यिकाति वदन्ति । अम्हाकं ज्ञातका
नत्थीति ?

आम तात ! तुम्हाकं एत्थ ज्ञातका नत्थि । राजगहनगरे पन वो महाधनसेट्ठी नाम अय्यको तत्थ
तुम्हाकं बहू ज्ञातकाति ।

कस्मा तत्थ न गच्छाम अम्माति ?

सा अत्तनो अगमनकारणं पुत्तस्स कथेत्वा पुत्तेसु पुनप्पुनं कथेन्तेसु सामिकं आह—इमे दारका अति-
विय किलमेन्ति किं गो मातापितरो दिस्वा मंसं खादिस्सन्ति ! एहि, दारकानं अय्यककुलं दस्सेस्सामाति ।

अहं सम्मुखा गन्तुं न सक्खिस्सामि, तं पन तत्थ नयिस्सामीति आह ।

साधु, येन केनचि नयेन दारकानं अय्यककुलमेव दट्ठुं वट्ठतीति ते द्वेपि जना दारके आदाय अनुपुब्बेन राजगहं पत्वा नगरद्वारे एकिस्सा सालाय निवासं कप्पेत्वा दारकमाता द्वे दारके आदाय आगतभावं माता-पितुन्नं आरोचापेसि ।

ते तं सासनं सुत्वा—संसारे संसरन्तानं अम्हाकं न पुत्तो न धीता नाम नत्थि । ते अम्हाकं महापराधिका । न सक्का ते हि अम्हाकं चक्खुपथे ठातुं । एत्तकं पन नाम धनं गहेत्वा [१०६] द्वेपि जना फासुकट्ठानं गन्त्वा जीवन्तु । दारके पन इधेव पेसेन्तुति ।

सेट्ठीधीता मातापितृहि पेसितं धनं गहेत्वा दारके आगतदूतानं येव हत्थे दत्त्वा पेसेसि । दारका अय्यककुले वड्ढन्ति । तेसु चुल्लपन्थको अतिदहरो, महापन्थको पन अय्यकेन सद्धिं दसबलस्स धम्मकथं सोतुं गच्छति । तस्स निच्चं सत्थुसम्मुखा धम्मं सुणन्तस्स पब्बज्जाय चित्तं नमि । सो अय्यकं आह— सचे तुम्हे सम्पटिच्छथ अहं पब्बजेय्यन्ति ।

किं वदेसि तात ! मय्हं सकललोकस्सापि पब्बजिततो तवेव पब्बज्जा भट्ठिका । सचे सक्कोसि पब्बज ताताति सम्पटिच्छित्वा सत्थुसन्तिकं गतो ।

सत्था—किं महासेट्ठि ! अयं दारको ते लद्धोति ?

आम भन्ते ! अयं दारको मय्हं नत्ता, तुम्हाकं सन्तिके पब्बजामीति वदतीति आह ।

सत्था अञ्जतरं पिण्डपातिकभिक्षुं इमं दारकं पब्बाजेहीति आणापेसि । थेरो तस्स तचपञ्चककम्म-ट्ठानं आचिक्खित्वा पब्बाजेसि ।

सो बहुं बुद्धवचनं उग्गहिहत्वा परिपुण्णवस्सो उपसम्पदं लभि । उपसम्पन्नो योनिसो मनसिकारेन कम्मट्ठानं करोन्तो अरहत्तं पापुणि । सो ज्ञानमुखेन च मग्गमुखेन च वीतिनामेन्तो चिन्तेसि, सक्का नुखो इमं मुखं चुल्लपन्थकस्स दातुन्ति । ततो अय्यकसेट्ठिस्स सन्तिकं गन्त्वा-महासेट्ठि ! सचे तुम्हे सम्पटिच्छथ अहं चुल्लपन्थकं पब्बाजेय्यन्ति आह ।

पब्बाजेथ भन्तेति ।

थेरो चुल्लपन्थकदारकं पब्बाजेत्वा दमसु सीलेसु पनिट्ठापेसि । चुल्लपन्थकसामणेरो पब्बजित्वाव दन्धो अहोसि । यथाह—

“पटुमं^१ यथा कोकनवं सुगन्धं पातो सिया फुल्लमबीतगन्धं ।

अंगोरस पस्स विरोचमानं तपन्तमादिच्चमिवन्तळिक्खे ॥” ति ।

इमं एकं गाथं चतुहि मासेहि गण्हितुं नासक्खि ।

सो किर कस्सपसम्मासम्बुद्धकाले पब्बजित्वा पञ्जवा हुत्वा अञ्जतरस्स दन्धभिक्षुनो उद्देसगहण-काले परिहासकेळि अकासि । सो भिक्षु तेन परिहासेन लज्जितो नेव उद्देसं गण्हि न सज्झायमकासि । तेन कम्मे-नाथं पब्बजित्वाव दन्धो जातो । गहितगहितपदं उपरि उपरि पदं गण्हन्तस्म नस्समि । तस्स इममेव गाथं गहेतुं वायमन्तस्स चत्तारो मासा अतिक्कन्ता ।

अथ नं महापन्थको आह—चुल्लपन्थक, त्वं इमस्मि सासने अभब्बो । चतुहि मासेहि एकं गाथम्पि गहेतुं न सक्कोसि । पब्बजितकिच्चं पन त्वं कथं मत्थकं पापेस्ससि ? निक्खम इतो विहाराति निक्कड्ढि । [१०७] चुल्लपन्थको बुद्धसासने सिनेहेन गिहिभावं न पत्थेति ।

तस्मिं च काले महापन्थको भत्तुद्देसको होति । जीवको कोमारभच्चो बहुं गन्धमालं आदाय अत्तनो

अम्बवनं गत्वा सत्थारं पूजेत्वा धम्मं सुत्वा उट्ठायासना दसबलं वन्दित्वा महापन्थकं उपसंक्रमित्वा— कित्ता भन्ते ! सत्थुसन्तिके भिक्खूति पुच्छि ।

पञ्चमत्तानि भिक्खुसतानीति ।

स्वे भन्ते ! बुद्धपमुखानि पञ्च भिक्खुसतानि आदाय अम्हाकं निवेसने भिक्खं गण्हथाति ।

उपासक ! चुल्लपन्थको नाम दन्धो अवरुद्धधम्मो, तं ठपेत्वा सेसानं निमन्तणं पटिच्छामीति थेरो आह ।

तं सुत्वा चुल्लपन्थको चिन्तेसि— मय्हं भातिकत्थेरो एत्तकानं भिक्खूनं निमन्तणं पटिच्छन्तो मं बाहिरं कत्वा पटिच्छति । निस्संसयं मय्हं भातिकस्स मयि चित्तं भिन्नं भविस्सति । किं इदानीं मय्हं इमिना सासनेन ! गिही हुत्वा दानादीनि पुञ्ञानि करोन्तो जीविस्सामीति । सो पुनदिवसे पातोव गिही भविस्सामीति पायासि ।

सत्था पच्चूसकाले येव लोकं ओलोकेन्तो इमं कारणं दिस्वा पठमतरं गत्वा चुल्लपन्थकस्स गमनमग्गे ारकोट्ठके चंक्रमन्तो अट्ठासि । चुल्लपन्थको घरं गच्छन्तो सत्थारं दिस्वा उपसंक्रमित्वा वन्दि । अथ नं सत्था—कहं पन त्वं चुल्लपन्थक ! इमाय वेलाय गच्छसीति आह ।

भाता मं भन्ते ! निक्कड्ढि । तेनाहं गिही भविस्सामीति गच्छामीति ।

चुल्लपन्थक ! तव पब्बज्जा मम सन्तका । भातरा निक्कड्ढितो कस्मा मम सन्तिके नागच्छि । एहि किं ते गिहीभावेन ? मम सन्तिके भविस्ससीति चुल्लपन्थकं आदाय गत्वा गन्धकुटिप्पमुखे नं निसीदापेत्वा चुल्लपन्थक ! पुरत्थाभिमुखो हुत्वा इमं पिळोतिकं रजोहरणं रजोहरणन्ति परिमज्जन्तो इधेव होहीति । इद्धिया अभिसंखटं परिसुद्धं पिळोतिकं दत्वा काले आरोचिते भिक्खुसंघपरिवृतो जीवकस्स गेहं गत्वा पञ्ञात्तासने निसीदि ।

चुल्लपन्थकोपि सुरियं ओलोकेन्तो तं पिळोतिकाखण्डं रजोहरणं रजोहरणन्ति परिमज्जन्तो निसीदि । तस्स तं पिळोतिकाखण्डं परिमज्जन्तस्स परिमज्जन्तस्स किलिट्ठं अहोसि । ततो चिन्तेसि—इदं पिळोतिकाखण्डं अतिविय परिसुद्धं, इमं पन अत्तभावं निस्साय पुरिमपकर्ति विजहित्वा एवं किलिट्ठं जातं, अनिच्चावत संखा-राति खयवयं पट्ठपेन्तो विपस्सनं वड्ढेसि ।

सत्थापि चुल्लपन्थकस्स चित्तं विपस्सनं आरुळ्हन्ति जत्वा—चुल्लपन्थक ! त्वं एतं पिळोतिकाखण्ड-मेव संकिलिट्ठं रजोरञ्जितं जातन्ति मा सञ्ञं करि, अब्भन्तरे पन ते रागरजादयो अत्थि ते हराहीति वत्वा ओभासं विस्सज्जेत्वा पुरतो निसिन्नो विय पञ्ञायमानरूपो हुत्वा इमा गाथा अभासिः—[१०८]

“रागो रजो न च पन रेणु वुच्चति रागस्सेतं अधिवचनं रजोति ।

एतं रजं विप्पजहित्व^१ भिक्खवो विहरन्ति ते विगतरजस्स सासने ॥

दोसो रजो न च पन रेणु वुच्चति दोसस्सेतं अधिवचनं रजोति ।

एतं रजं विप्पजहित्व भिक्खवो विहरन्ति ते विगतरजस्स सासने ॥

मोहो रजो न च पन रेणु वुच्चति मोहस्सेतं अधिवचनं रजोति ।

एतं रजं विप्पजहित्व भिक्खवो विहरन्ति ते विगतरजस्स सासने ॥” ति

गाथापरियोसाने चुल्लपन्थको सह पटिसम्भिदाहि अरहन्तं पापुणि । पटिसम्भिदाहि येवस्स सब्बानि तीणि पिटकानि आगमिसु ।

सो किर पुब्बे राजा हुत्वा नगरं पदक्खिणं करोन्तो नळाटतो सेदे मुच्चन्ते परिसुद्धेन साटकेन नळाटन्तं पुञ्छि । साटको किलिट्ठो अहोसि । सो इमं सरीरं निस्साय एवरूपो परिसुद्धो साटको पकर्ति विजहित्वा

क्रिलिट्ठो जातो अनिव्वा वत संखाराति अनिव्वसञ्जं पटिलभि । तेन कारणेनस्स रजोहरणमेव पच्चयो जातो ।

जीवकोपि खो कोमारभच्चो दसबलस्स दक्खिणोदकं उपनामेसि । सत्था—ननु जीवक ! विहारे भिक्खू अत्थीति हत्थेन पत्तं पिदहि ।

महापन्थको—ननु भन्ते ! विहारे नत्थि भिक्खूति आह ।

सत्था अत्थि 'जीवकाति' आह ।

जीवको—तेन हि भणे, गच्छथ विहारे भिक्खूनं अत्थिभावं वा नत्थिभावं वा जानाहीति पुरिसं पेसेसि ।

तस्मिं खणे चुल्लपन्थको मय्हं भातिको विहारे भिक्खू नत्थीति भणति । विहारे भिक्खूनं अत्थिभाव-
मस्स पकासेस्सामीति सकलं अम्बवनं भिक्खूनञ्जेव पूरेसि । एकच्चे भिक्खू चीवरकम्मं करोन्ति एकच्चे
रजनकम्मं एकच्चे सज्जायं करोन्तीति एवं अञ्जामञ्जं असदिसं भिक्खुसहस्सं मापेसि ।

सो पुरिसो विहारे बहू भिक्खू दिस्वा निवत्तित्वा— अय्य ! सकलं अम्बवनं भिक्खूहि परिपुण्णन्ति
जीवकस्स आरोचेसि । थेरोपि खो तत्थेव—

“सहस्सकखत्तुं अत्तानं निम्मिनित्वान पन्थको ।

निसीदि अम्बवने रम्मे याव कालप्पवेदना ॥” ति । [१०९]

अथ सत्था नं पुरिसं आह—विहारं गत्वा सत्था चुल्लपन्थकं नाम पक्कोसतीति वदेहीति ।

तेन गत्वा तथा वुत्ते अहं चुल्लपन्थको अहं चुल्लपन्थकोति मुखसहस्सं उट्ठहि । पुरिसो गत्वा—
सब्बेपि किर भन्ते ! चुल्लपन्थकायेव नामाति आह ।

तेन हि त्वं गत्वा यो अहं चुल्लपन्थकोति पठमं वदति तं हत्थे गण्ह, अवसेसा अन्तरधायिस्सन्तीति ।

सो तथा अकासि । तावदेव सहस्समत्ता भिक्खू अन्तरधायिमु । थेरो गतेन पुरिसेन सद्धिं अगमासि ।
सत्था भत्तकिच्चपरियोसाने जीवकं आमन्तेसि, जीवक ! चुल्लपन्थकस्स पत्तं गण्ह । अयं ते अनुमोदनं करि-
स्सतीति । जीवको तथा अकासि । थेरो सीहनादं नदन्तो तरुणसीहो विय तीणि पिटकानि संखोभेत्वा अनुमोदनं
अकासि ।

सत्था उट्ठायासना भिक्खुसंघपरिवारो विहारं गत्वा भिक्खूहि वत्ते दस्सिते उट्ठायासना गन्ध
कुटिप्पमुखे उत्वा भिक्खुसंघस्स सुगतोवादं दत्वा कम्मट्ठानं कथेत्वा भिक्खुसंघं उय्योजेत्वा सुरभिगन्धवासवा-
सितं गन्धकुटिं पविसित्वा दक्खिणेन पस्सेन सीहसेय्यं उपगतो । अथ सायणहसमये धम्मसभायं भिक्खू इतो चित्तो
च समोसरित्वा रत्तकम्बलसाणि परिकल्पन्ता विय निसीदित्वा सत्थुगुणकथं आरंभिसु—आवुसो ! महापन्थको
चुल्लपन्थकस्स अज्जासयं अजानन्तो चतुहि मासेहि एकं गाथं गण्हितुं न सक्कोति दन्धो अयन्ति विहारा निक्क-
ड्ढि । सम्मासम्बुद्धो पन अत्तनो अनुत्तरधम्मराजताय एकस्मिं येवस्स अन्तराभत्ते सहपटिसम्भिदाहि अरहत्तं
अदासि । तीणि पिटकानि दस पटिसम्भिदाहि येव आगतानि । अहो बुद्धानं बलं नाम महन्तन्ति !

अथ भगवा धम्मसभायं इमं कथापवुत्तिं जत्वा अज्ज मया गन्तुं वट्ठतीति बुद्धसेय्याय उट्ठाय
सुरत्तदुपट्ठं निवासेत्वा विज्जुल्लता विय कायबन्धनं बन्धित्वा रत्तकम्बलसदिसं सुगतमहाचीवरं पारुपित्वा
सुरभिगन्धकुटितो निक्खम्म मत्तवरवारणसीहविककन्तविलासेन अनन्ताय बुद्धलीळाया धम्मसभं गत्वा अलंक-
तमण्डपमञ्जे सुपञ्जत्तवरबुद्धासनं अभिषट्ठ छब्बण्णबुद्धरंसियो विस्सज्जेन्तो अण्णवकुच्छि ओभासयमानो
युगन्धरमत्थके बालसुरियो विय आसनमञ्जे निसीदि ।

सम्मासम्बुद्धे पन आगतमत्ते भिक्खुसंघो कथं पच्छिन्दित्वा तुण्ही अहोसि । सत्था मुदुकेन मेत्तचित्तेन
परिसं ओलोकेत्वा अयं परिसा अतिविय सोभति एकस्सपि हत्थकुक्कुच्चं वा [११०] पादकुक्कुच्चं वा उक्का-
सितसद्दो वा खिपितसद्दो वा नत्थि सब्बेपिमे बुद्धगारवेन सगारवा बुद्धतेजेन तज्जिता मयि आयुकप्पम्पि
अकथेत्वा निसिन्ने पठमं कथं समुट्ठापेत्वा न कथेस्सन्ति कथासमुट्ठापनवत्तं नाम मयाव जानितब्बं अहमेव

पठमं कप्पेस्सामीति मधुरेन ब्रह्मस्सरेन भिक्खू आमन्तेत्वा कायं नुत्थं भिक्खवे ! एतरहि कथायं सन्निस्सिन्ना का च पन वो अन्तरा कथा विप्पकताति आह ।

भन्ते ! न मयं इमस्मिं ठाने निसिन्ना अञ्जं तिरच्छानकथं कथेम, तुम्हाकं येव पन गुणे वण्णयमाना निसीन्नम्हा—आवुसो महापन्थको चुल्लपन्थकस्स अज्झासयं अजानन्तो — पे— अहो बुद्धानं बलं नाम महन्तन्ति !

सत्था भिक्खूनं कथं सुत्वा—भिक्खवे ! चुल्लपन्थको मं निस्साय इदानीं ताव धम्मेषु धम्ममहन्तं पत्तो, पुब्बे पन मं निस्साय भोगेसुपि भोगमहन्तं पापुणिति आह ।

भिक्खू तस्सत्थस्स आवीभावत्थं भगवन्तं याचिमु । भगवा भवन्तरेन पटिच्छन्नं कारणं पाकटं अकासिः—

अतीतवत्थ

अतीते कासिरट्ठे बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो सेट्ठिकुले निब्बत्तित्वा वयप्पत्तो सेट्ठिट्ठानं लभित्वा चुल्लसेट्ठि^१ नाम अहोसि । सो पण्डितो व्यत्तो^२ सब्बनिमित्तानि जानाति । सो एकदिवसं राजुपट्ठानं गच्छन्तो अन्तरवीथियं मतमूसिकं दिस्वा तंखणे नक्खत्तं समानेत्वा इदमाह—सक्का चक्खुमता कुल-पुत्तेन इमं उन्दुरं गहेत्वा दाराभरणं वा कातुं कम्मन्ते वा पयोजेतुन्ति । अञ्जतरो दुग्गतकुलपुत्तो चूळन्तेवासिको नाम तं सेट्ठिस्स वचनं सुत्वा नायं अजानित्वा कथेस्सतीति मूसिकं गहेत्वा एकस्मिं आपणे विञ्जालस्सत्थाय विक्किणित्वा काकणिकं लभित्वा ताय काकणिकाय फाणितं गहेत्वा एकेन घटेन पानीयं गण्हि । सो अरञ्जतो आगच्छन्ते मालाकारे दिस्वा थोकं थोकं फाणितखण्डं दत्वा उलुंकेन पानीयं अदासि । ते तस्स एकेकं पुप्फमुट्ठि अदंसु । सो तेन पुप्फमूलेन पुनदिवसेपि फाणितञ्च पानीयघटञ्च गहेत्वा पुप्फाराममेव गतो । तस्स तं दिवसं मालाकारा अड्ढोचित्ते पुप्फगच्छे दत्वा अगमंसु । सो नचिरस्सेव इमिना उपायेन अट्ठ कहापणे लभि ।

पुन एकस्मिं वातवुट्ठिदिवसे राजुय्याने बहू सुक्खदण्डका च साखा च पलासञ्च वातेन पतितं होति । उय्यानपालो छड्ढेतुं उपायं न पस्सति । सो तत्थागन्त्वा—सचे इमानि दारुपण्णानि [१११] मय्हं दस्ससि अहं ते इमानि सब्बानि नीहरिस्सामीति उय्यानपालं आह ।

सो गण्ह अय्याति सम्पटिच्छि ।

चुल्लन्तेवासिको दारकानं केळिमण्डलं गन्त्वा फाणितं दत्वा मुहुत्तेन सब्बानि दारुपण्णानि नीहरा-पेत्वा उय्यानद्वारे रासिं कारेसि । तदा राजकुम्भकारो राजकुलानं^३ भाजनानं पचनत्थाय दारुनि परियेसमानो उय्यानद्वारे तानि दिस्वा तस्स हत्थतो विक्किणित्वा गण्हि । तं दिवसं चुल्लन्तेवासिको दारुविक्रयेन सोळस कहापणे चाटिआदीनि च पञ्च भाजनानि लभि । सो चतुवीसतिया कहापणेषु जातेसु अत्थि अयं उपायो मय्हन्ति नगरद्वारतो अविद्वरट्ठाने एकं पानीयचाटिं ठपेत्वा पञ्चसते तिणहारके पानीयेन उपट्ठहि ।

ते आहंसु—त्वं सम्म, अम्हाकं बहूपकारो किं ते करोमाति ?

सो—मय्हं किच्चे उप्पन्ने करिस्सथाति वत्वा इतो चितो च विचरन्तो थलपथकम्मिकेन च जलपथकम्मिकेन च सद्धिं मित्तसन्धवं अकासि ।

तस्स थलपथकम्मिको—स्वे इमं नगरं अस्सवाणिजको पञ्च अस्ससतानि गहेत्वा आगमिस्सतीति आचिक्खि ।

सो तस्स वचनं सुत्वा तिणहारके आह, अज्ज मय्हं एकेकं तिणकलापं देथ मया च तिणे अविक्किणि-ते अत्तनो तिणं मा विक्किणाथाति ।

रो०—बुल्लक । २ रो०—वयपत्तो । ३ स्या०—राजकुलालभाजनानं ।

ते साधूति सम्पटिच्छित्वा पञ्चतिणकलापसतानि आहरित्वा तस्स घरद्वारे पातयिमु ।

अस्सवाणिजो सकलनगरे अस्सानं गोचरं अलभित्वा तस्स सहस्सं दत्त्वा तं तिणं गण्हि । कतिपाहञ्च-
येनस्स जलपथकम्मिकसहायको आरोचेसि पट्टनं महानावा आगताति । सो अत्थि अयं उपायोति अट्ठहि कहापणेहि
सब्बपरिवारसम्पन्नं तावकालिकं रथं गहेत्वा महत्तेन यसेन नावापट्टनं गन्त्वा एकं अंगुलिमुद्दिकं नाविकस्स सच्च-
कारं दत्त्वा अविद्वरट्ठाने साणि परिक्रिखपापेत्वा निसिन्नो पुरिसे आणापेसि, बाहिरवाणिजेसु आगतेसु ततियेन
परिहारेन आरोचेथाति । नावा आगताति सुत्वा बाराणसितो सतमत्ता बाणिजा भण्डं गण्हामाति आगमिमु ।
भण्डं तुम्हे न लभिस्सथ अमुकट्ठाने नाम महावाणिजेन सच्चकारो दिन्तोति । ते तं सुत्वा तस्स सन्तिकं आगता ।
पादमूलिकपुरिसा पुरिमसञ्जावसेन ततियेन परिहारेन तेसं आगतभावं आरोचेसु ।

ते सतमत्तापि वाणिजा एकेकं सहस्सं दत्त्वा तेन सद्धि नावाय पत्तिका हुत्वा पुन एकेकं सहस्सं
दत्त्वा पत्ति विस्सज्जापेत्वा भण्डं अत्तनो सन्तिकं अकंसु । [११२]

चुल्लन्तेवासिको द्वे सतसहस्सानि गण्हित्वा बाराणसि आगन्त्वा कतज्जुना मे भवितुं वट्ठतीति
एकं सतसहस्सं गाहापेत्वा चुल्लकसेट्ठिस्स समीपं गतो । अथ नं सेट्ठि— किन्ते तात ! कत्वा इदं धनं लद्धन्ति
पुच्छि ।

सो—तुम्हेहि कथिनउपाये ठत्वा चतुमासब्भन्तरेयेव लद्धन्ति, मतमूसिकं आदि कत्वा सब्बं
पवुत्ति कथेमि ।

चुल्लकमहासेट्ठि तस्स वचनं सुत्वा न इदानी एवरूपकं दारकं परसन्तिकं कातुं वट्ठतीति वयप्पत्तं
अत्तनो धीतरं दत्त्वा सकलकुटुम्बस्स सामिकं अकासि ।

सो सेट्ठिनो अच्चयेन तस्मिं नगरे सेट्ठिट्ठानं लभि । बोधिसत्तोपि यथाकम्मं अगमासि । सम्मा-
सम्बुद्धोपि इमं धम्मदेसनं कथेत्वा अभिसम्बुद्धोव इमं गार्थं कथेसि—

“अप्पकेनपि मेधावी पाभतेन विचक्खणो ।

समुट्ठापेति अत्तानं अणुं अग्गिं व सम्ममन्ति ॥”

तत्थ अप्पकेनपीति थोकेनापि परित्तकेनापि । मेधावीति पञ्जवा । पाभतेनाति भण्डमूलेन । विचक्ख-
णोति वोहारकुसलो । समुट्ठापेति अत्तानन्ति महन्तं धनं च यसञ्च उप्पादेत्वा तत्थ अत्तानं सण्ठपेति पतिट्ठा-
पेति । यथा किं ? अणुं अग्गिं व सम्ममन्ति यथा पण्डितो पुरिसो परित्तकं अग्गि अनुक्कमेन गोमयचुण्णादीनि
पक्खित्वा मुखवातेन धमन्तो समुट्ठापेति वड्ढेति महन्तं अग्गिक्खन्धं करोति । एवमेवं पण्डितो थोकम्पि
पाभतं लभित्वा नानाउपायेहि पयोजेत्वा धनञ्च यसञ्च उप्पादेति वड्ढेति वड्ढेत्वा च पन तत्थ तत्थ अत्तानं
पतिट्ठापेति ताय एव वा पन धनयसमहन्तताय अत्तानं समुट्ठापेति अभिञ्जातं पाकटं करोतीति अत्थो ।

इति भगवा भिक्खवे ! चुल्लपत्थको मं निस्साय इदानी धम्मेसु धम्ममहन्तत्तं पत्तो, पुब्बे पन भोगे-
सुपि भोगमहन्तत्तं यसमहन्तत्तं पापुणीति एवं इमं धम्मदेसनं दस्सेत्वा द्वे वत्थूनि कथेत्वा अनुसन्धि घट्ठेत्वा
जातकं समोधानेसि । तदा चुल्लन्तेवासिको चुल्लपत्थको अहोसि चुल्लकमहासेट्ठी पन अहमेव अहोसिन्ति देसनं
निट्ठपेसि ।

चुल्लकसेट्ठिजातकं

५. तण्डुलनालिकातकं

किमघति तण्डुलनालिकाति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो लालुदायित्थेरं आरब्ध कथेसि।

पञ्चुपन्नवत्यु

तस्मिं समये आयस्मा दब्बो मल्लपुत्तो संघस्स भत्तुद्देसको होति । तस्मिं [११३] पातोव सलाक-
भत्तानि उद्दिसमाने लालुदायित्थेरस्स^१ कदाचि वरभत्तं पापुणाति कदाचि लामकभत्तं । सो लामकभत्तस्स
पत्तदिवसे सलाकग्गं आकुलं करोति— किं दब्बोव सलाकं दातुं जानाति, अम्हे न जानामातिपि वदति ।

तस्मिं सलाकग्गं आकुलं करोन्ते— हन्द दानि त्वमेव सलाकं देहिंति सलाकपिच्छि अदंसु ।

ततो पट्ठाय सो संघस्स सलाकं अदासि । ददन्तो पन इदं वरभत्तन्ति वा लामकभत्तन्ति वा अमुक-
वस्सग्गे वरभत्तं ठितं अमुकवस्सग्गे लामकभत्तन्ति वा न जानाति । ठितिकं करोन्तोपि अमुकवस्सग्गे ठितिकाति
न सल्लखेति । भिक्खू नं ठितवेलाय इमस्मिं ठाने अयं ठितिका ठिता इमस्मिं ठाने अयन्ति भूमियं वा भित्तिं वा
लेखं कड्ढति । पुन दिवसे सलाकग्गे भिक्खू मन्दतरा वा होन्ति बहुतरा वा । तेसु मन्दतरेसु लेखा हेट्ठा होति
बहुतरेसु उपरि । सो ठितिकं अजानन्तो लेखासञ्जाय सलाकं देति ।

अयं नं भिक्खू— आवुसो लालुदायी ! लेखा नाम हेट्ठा वा होतु उपरि वा वरभत्तं पन अमुकवस्सग्गे
ठितं लामकभत्तं अमुकवस्सग्गेति आहंसु ।

सो भिक्खू पटिक्करन्तो यदि एवं अयं लेखा कस्मा एवं ठिता, किं अहं तुम्हाकं सद्दहामि इमिस्सा
लेखाय सद्दहामीति वदति ।

अयं नं दहरा च सामगेरा च— आवुसो लालुदायी ! तयि सलाकं दन्ते भिक्खू लाभेन परिहा-
यन्ति । न त्वं दातु अनुच्छविको, निग्गच्छ इतोति सलाकगतो निक्कड्ढिंसु ।

तस्मिं खणे सलाकग्गे महन्तं कोलाहलं अहोसि । तं सुत्वा सत्या आनन्दत्थेरं पुच्छि— आनन्द !
सलाकग्गे महन्तं कोलाहलं, किं सद्दो नामेसोति ?

थेरो तथागतस्स तमत्थं आरोचेसि ।

आनन्द ! न इदमेव लालुदायी अततो बालताय परेसं लाभहानिं करोति, पुब्बेपि अकासि येवाति
आह ।

थेरो तस्सत्थस्स आविभावत्थं भगवन्तं याचि । भगवा भवन्तरेन पटिच्छन्नं कारणं पाकटं अकासि—

अतीतवत्यु

अतीते कासिरट्ठे बाराणसियं ब्रह्मदत्तो राजा अहोसि । तदा अम्हाकं बोधिसत्तो तस्स अग्घकारको^२
अहोसि, हत्थिअस्सादीनि चैव मणिमुवण्णादीनि च अग्घापेसि । अग्घापेत्वा भण्डसामिकानं भण्डानुरूपमेव मूलं
दापेसि । राजा पन लुब्धो होति । सो लोभपकतिताय एवं चिन्तेसि—अयं अग्घापनको एवं अग्घापेन्तो न चिरस्सेव
मम गेहे धनं परिवर्खयं गमेस्सति अञ्जं अग्घापनकं करिस्सामीति । सो सीहपञ्जरं उग्घाटेत्वा राजगणं ओलो-
केन्तो एकं गामिकमनुस्सं लोलबालं राजगणेन गच्छन्तं दिस्वा एस मय्हं अग्घापनकम्मं कातुं सक्खिस्सतीति तं
पक्कोसापेत्वा सक्खिस्ससि भणे ! अम्हाकं [११४] अग्घापनिककम्मं कातुन्ति आह ।

सक्खिस्सामि देवाति ।

राजा अतनो धनरक्खणत्थाय तं बालं अग्घापनिककम्मं ठपेसि । ततो पट्ठाय सो बालो हत्थिअस्सा-
दीनि अग्घापेन्तो अग्घं हापेत्वा यथारुचिया कथेति । तस्स ठानन्तरे ठितत्तायं सो कथेति तमेव मूलं होति ।

तस्मिं काले उत्तरापथतो एको अस्सवाणिजो पञ्च-अस्ससतानि आनेसि । राजा तं पुरिसं पक्को-
सापेत्वा अस्से अग्घापेसि । सो पञ्चन्नं अस्ससतानं एकं तण्डुलनालिकं अग्घमकासि, कत्वा च पन अस्सवाणिजस्स
एकं तण्डुलनालिकं देथाति वत्वा अस्से अस्ससालाय सण्ठापेसि ।

अस्सवाणिजो पोराणकअग्घापनिकस्स सन्तिकं गन्त्वा तं पवुत्ति आरोचेत्वा इदानीं किं कत्तब्बन्ति
पुच्छि ।

सो आह—तस्स पुरिसस्स लञ्चं दत्वा एवं पुच्छथ ‘अम्हाकं’ ताव अस्सा एकं तण्डुलनालिकं अग्घ-
न्तीति, ब्रातमेत्तं, तुम्हे पन निस्साय तण्डुलनालिया अग्घं जानितुकामोमिह । सक्खिस्सथ वो रञ्जो सन्तिके ठत्वा
सा तण्डुलनालिका इदं नाम अग्घतीति वत्तुन्ति ? सचे सक्कोमीति वदति तं गहेत्वा रञ्जो सन्तिकं गच्छथ ।
अहम्पि तत्थ आगमिस्सामीति ।

अस्सवाणिजो सावुत्ति बोधिसत्तस्स वचनं सम्पटिच्छित्वा अग्घापनिकस्स लञ्चं दत्वा तमत्यं
आरोचेसि ।

सो लञ्चं लभित्वा—सक्खिस्सामि तण्डुलनालि अग्घापेतुन्ति ।

तेन हि गच्छाम राजकुलन्ति तं आदाय रञ्जो सन्तिकं अगमासि । बोधिसत्तोपि अञ्जोपि बहू
अमच्चा अगमंसु ।

अस्सवाणिजो राजानं वन्दित्वा—अहं देव ! पञ्चन्नं अस्ससतानं एकं तण्डुलनालि अग्घनभावं
जानि, सा पन तण्डुलनालिका किं अग्घतीति अग्घापनिकं पुच्छथ देवाति ।

राजा तं पवुत्ति अजानन्तो अम्भो अग्घापनिक ! पञ्च अस्ससतानि किं अग्घन्तीति पुच्छि ।

तण्डुलनालि देवाति ।

होनु भणे ! पञ्च अस्ससता ताव तण्डुलनालि अग्घन्तु, सा पन किमग्घति तण्डुलनालिकाति पुच्छि ।

सो बालपुरिसो—बाराणसि सन्तरबाहिरं अग्घति तण्डुलनालिकाति आह ।

सो किर पुब्बे राजानं अनुवत्तेन्तो एकं सालिताडुलनालि अस्सानं अग्घं अकासि, पुन वाणिजकस्स
हत्थतो लञ्चं लभित्वा तस्सा तण्डुलनालिकाय बाराणसि सन्तरबाहिरं अग्घमकासि ।

तदा पन बाराणसिया पाकारपरिक्खेपो द्वादसयोजनिको होति । इदमस्सा अन्तरं बाहिरं पन तियो-
जनसतिकं रट्ठं इति सो बालो एवं महत्तं बाराणसि सन्तरबाहिरं तण्डुलनालिकाय अग्घं अकासि ।

तं सुत्वा बोधिसत्तो पुच्छन्तो इमं गाथमाह—

किमग्घति तण्डुलनालिकाय अस्सानमूलाय वदेहि राज !

बाराणसि सन्तरबाहिरन्तं अयमग्घती तण्डुलनालिका ॥ ति ।

तं सुत्वा अमच्चा पाणिं पहरित्वा हसमाना—मयं पुब्बे पठविञ्च रज्जञ्च अनग्घन्ति सज्जिनो
अहुम्हा एवं महत्तं किर सराजकं बाराणसिरज्जं तण्डुलनालिमत्तं अग्घति अहो अग्घापनिकस्स पञ्जासम्पदा!
कहं एतत्तं कालं अयं अग्घापनिको ठितोसि ? अम्हाकं रञ्जो एव अनुच्छविकोति परिहासं अकंसु ।

तस्मिं काले राजा लज्जितो नं बालं निक्कड्ढापेत्वा बोधिसत्तस्सेव अग्घापनिकट्ठानं अदासि ।
बोधिसत्तोपि यथाकम्मं गतो । सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा दस्सेत्वा द्वे वत्थूनि कथेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा
जातकं समोवानेसि । तदा गामिकबालअग्घापनिको लोळुदायी अहोसि पण्डितअग्घापनिको अहमेव अहोसिन्ति
देसनं निट्ठापेसि ।

देवी वरं इच्छितकाले गृहेतब्बं कत्वा ठपेसि । सा पुत्ते वयप्पत्ते राजानं आह— देवेन मय्हं पुत्तस्स जातकाले वरो दिन्नो, पुत्तस्स मे रज्जं देहीति ।

राजा मय्हं द्वे पुत्ता अग्गिक्खन्धा विय जलमाना विचरन्ति, न सक्का तव पुत्तस्स रज्जं दातुन्ति पटिक्खिपित्वा तं पुनप्पुनं याचमानमेव दिस्वा 'अयं मय्हं पुत्तानं पापकम्पि चिन्तेय्याति' पुत्ते पक्कोसापेत्वा आह— ताता ! अहं सुरियकुमारस्स जातकाले वरं अदासि । इदानिस्स माता रज्जं याचति । अहं तस्स न दातुकामो । मातुगामो नाम पापो, तुम्हाकं पापकम्पि चिन्तेय्य । तुम्हे अरज्जं पविसित्वा ममच्चयेन कुलसन्तके नगरे रज्जं करेय्याथाति रोदित्वा कन्दित्वा सीसे चुम्बित्वा उय्योजेसि ।

ते पितरं वन्दित्वा पासादा ओरोहन्ते राजगणे कीळमानो सुरियकुमारोपि दिस्वा तं कारणं जत्वा अहम्पि भातिकेहि सद्धिं गमिस्सामीति तेहि सद्धिं येव निक्खमि । ते हिमवन्तं पविसिंसु । बोधिसत्तो मग्गा ओक्कम्म रक्खमूले निसीदित्वा[११७] सुरियकुमारं आमन्तेसि—तात ! सुरिय ! एकं सरं गत्वा नहात्वा च पिवित्वा च पदुमिनिपण्णेहि अम्हाकम्पि पानीयं आनेहीति ।

तं पन सरं वेस्सवणस्स सन्तिका एकेन दकरक्खसेन लद्धं होति । वेस्सवणो च तं आह— ठपेत्वा देवधम्मजाननके ये अञ्जे इमं सरं ओतरन्ति ते खादितुं लभसि । अनोतिण्णे न लभसीति । ततो पट्ठाय सो रक्खसो ये तं सरं ओतरन्ति ते देवधम्मं पुच्छित्वा ये न जानन्ति ते खादति ।

अथ खो सुरियकुमारो तं सरं गत्वा अब्बीमसित्वाव ओतरि । अथ नं सो रक्खसो गृहेत्वा देवधम्मं जानासीति पुच्छि । सो देवधम्मो नाम चन्दसुरियाति आह । अथ नं त्वं देवधम्मं न जानासीति उदकं पवेसेत्वा अत्तनो वसनट्ठाने ठपेसि ।

बोधिसत्तोपि तं चिरायन्तं दिस्वा चन्दकुमारं पेसेसि । रक्खसो नम्पि गण्हित्वा देवधम्मं जानासीति पुच्छि ।

आम, जानामि । देवधम्मो नाम चतस्सो दिसाति ।

रक्खसो न त्वं देवधम्मं जानासीति तम्पि गृहेत्वा तत्थेव ठपेसि ।

बोधिसत्तो तस्मिम्पि चिरायन्ते एकेन अन्तरायेन भवितव्वन्ति सयं तत्थ गत्वा द्विन्मिम्पि ओतरण-पदवळज्जं दिस्वा रक्खसपरिगृहितेन इमिना सरेन भवितव्वन्ति खगं सन्नय्हित्वा धनुं गृहेत्वा अट्ठासि । उदकर-क्खसो बोधिसत्तं उदकं अनोतरन्तं दिस्वा वनकम्मिकपुरिसो विय हुत्वा बोधिसत्तं आह— भो पुरिस ! त्वं मग्गकिलन्तो कस्मा इमं सरं ओतरित्वा नहायित्वा पिवित्वा भिसमूलानि खादित्वा पुष्फानि पिलन्धित्वा यथा-सुखं न गच्छसीति ?

बोधिसत्तो तं दिस्वा एस सो यक्खो भविस्सतीति जत्वा-तया मे भातिका गहिताति आह ।

आम मयाति ।

किंकारणाति ?

अहं इमं सरं ओतिण्णके लभामीति ।

किं पन सब्बेव लभसीति ? ये देवधम्मं जानन्ति ते ठपेत्वा अवसेसे लभामीति ।

अत्थि पन ते देवधम्मं हि अत्थोति ?

आम अत्थि ।

यदि एवं अहं ते देवधम्मं कथेस्सामीति

तेनहि कथेहि अहं देवधम्मं सुणिस्साम

बोधिसत्तो अहं देवधम्मे कथेय्यं किलिठ्ठगतो पनम्हीति आह ।

यक्खो बोधिसत्तं नहापेत्वा भोजनं भोजेत्वा पानीयं पायेत्वा पुष्पानि पिळ्ळणापेत्वा गन्धेहि विलिम्पापेत्वा अलंकृतमण्डपमज्जे पल्लकं अत्थरित्वा अदासि । बोधिसत्तो आसने निसीदित्वा यक्खं पादमूले निसीदापेत्वा तेनहि ओहितसतो सक्कच्चं देवधम्मे सुणाहीति इमं गाथमाह—

“हिरिओत्तप्पसम्पन्ना सुक्कधम्मसमाहिता ।

सन्तो सप्पुरिसा लोके देवधम्माति वुच्चरे ॥” ति ।

तत्थ हिरिओत्तप्पसम्पन्नाति हिरिया च ओत्तप्पेन च समन्नागता । तेसु कायदुच्चरितादीहि हिरियतीति हिरि । लज्जायेतं अधिवचनं । तेहियेव ओत्तप्पतीति ओत्तप्पं । पापतो उब्बेगस्सेतं अधिवचनं ।

तत्थ अज्झत्तसमुट्ठाना हिरि, बहिद्धासमुट्ठानं ओत्तप्पं । अत्ताधिपतेय्या हिरि, लोकाधिपतेय्यं ओत्तप्पं । लज्जासभावसण्ठिता हिरि, भयसभावसण्ठितं ओत्तप्पं । सप्पतिस्सवलक्खणा हिरि, वज्जभीरुकभयदस्सावीलक्खणं ओत्तप्पं ।

तत्थ अज्झत्तसमुट्ठानं हिरिं चतुहि कारणेहि समुट्ठापेति (१) जातिं पच्चवेक्खित्वा, (२) वयं पच्चवेक्खित्वा, (३) सूरभावं पच्चवेक्खित्वा, (४) बाहुसच्चं पच्चवेक्खित्वा ।

कथं ? पापकरणं नामेतं न जातिसम्पन्नानं कम्मं । हीनजच्चानं केवट्टादीनं इदं कम्मं । तादिसस्स जातिसम्पन्नस्स इदं कम्मं कातुं न युत्तन्ति । एवं ताव जातिं पच्चवेक्खित्वा पाणातिपातादिपापं अकरोन्तो हिरिं समुट्ठापेति । तथा पापकरणं नामेतं दहरेहि कत्तब्बकम्मं । तादिसस्स वये ठितस्स इदं कम्मं कातुं न युत्तन्ति । एवं वयं पच्चवेक्खित्वा पाणातिपातादिपापं अकरोन्तो हिरिं समुट्ठापेति । तथा पापं नामेतं दुब्बलजातिकानं कम्मं । तादिसस्स सूरभावसम्पन्नस्स इदं कम्मं कातुं न युत्तन्ति । एवं सूरभावं पच्चवेक्खित्वा पाणातिपातादिपापं अकरोन्तो हिरिं समुट्ठापेति । तत्था पापकम्मं नामेतं अन्धबालानं कम्मं न पण्डितानं । तादिसस्स पण्डितस्स बहुस्सुतस्स इदं कम्मं कातुं न युत्तन्ति । एवं बाहुसच्चं पच्चवेक्खित्वा पाणातिपातादिपापं अकरोन्तो हिरिं समुट्ठापेति ।

एवं अज्झत्तसमुट्ठानं हिरिं चतुहि कारणेहि समुट्ठापेति । समुट्ठापेत्वा च पन अत्तनो चित्ते हिरिं पवेसेत्वा पापकम्मं न करोति । एवं हिरि अज्झत्तसमुट्ठाना नाम होति ।

कथं ओत्तप्पं बहिद्धासमुट्ठानं नाम ? सच्चं त्वं पापकम्मं करिस्ससि चतुमु परिसासु गरहप्पत्तो भविस्ससि—

“गरहिस्सन्ति तं विज्जू असुचि नागरिको यथा ।

विवज्जितो सीलवन्तेहि कथं भिक्खु करिस्ससी ॥” ति ।

पच्चवेक्खन्तो हि बहिद्धासमुट्ठितेन ओत्तप्पेन पापकम्मं न करोति । एवं ओत्तप्पं बहिद्धासमुट्ठानं नाम होति ।

कथं हिरि अत्ताधिपतेय्या नाम ? इधेकच्चो कुलपुत्तो अत्तानं अधिपतिं जेट्ठकं कत्वा तादिसस्स सद्धापब्बजितस्स बहुस्सुतस्स धृतवादिस्स न युत्तं पापकम्मं कातुन्ति पापं न करोति । एवं हिरि अत्ताधिपतेय्या नाम होति । तेनाह भगवा— “सो अत्तानं येव अधिपतिं कत्वा अकुसलं पजहति [११९] कुसलं भावेति सावज्जं पजहति अनवज्जं भावेति । सुद्धं अत्तानं परिहरती” ति^१ ।

कथं ओत्तप्पं लोकाधिपतेय्यं नाम ? इधेकच्चो कुलपुत्तो लोक अधिपतिं जेट्ठकं कत्वा पापकम्मं

न करोति । यथाह—“महा खो पनायं लोकसन्निवासो तस्मिं खो पन लोकसन्निवासे सन्ति समणब्राह्मणा इद्धि-
मन्तो दिब्बचक्खुका परचित्तविदुनो । ते दूरतोपि पस्सन्ति आसन्नेपि पस्सन्ति चेतसापि चित्तं पजानन्ति । तेपि
मं एवं जानिस्सन्ति पस्सथ भो ! इमं कुलपुत्तं सद्दाय अगारस्मा अनगारियं पब्बजितो समानो वोकिण्णो विहरति
पापकेहि अकुसलेहि धम्मेहीति । सन्ति देवता इद्धिमन्तिनियो दिब्बचक्खुका परचित्तविदुनियो । ता दूरतोपि
पस्सन्ति आसन्नेपि पस्सन्ति चेतसापि चित्तं पजानन्ति । तापि मं जानिस्सन्ति पस्सथ भो ! इमं कुलपुत्तं सद्दाय
अगारस्मा अनगारियं पब्बजितो समानो वोकिण्णो विहरति पापकेहि अकुसलेहि धम्मेहीति । सो लोको येव अधि-
पतिं करित्वा अकुसलं पजहति कुसलं भावेति सावज्जं पजहति अनवज्जं भावेति सुद्धं अत्तानं परिहरती” ति ।
एवं ओत्तप्यं लोकाधिपतेय्यं नाम होति ।

लज्जासभावसण्ठिता हिरि, भयसभावसण्ठितं ओत्तप्पन्ति । एत्थ पन लज्जाति लज्जनाकारो तेन
सभावेन सण्ठिता हिरि । भयन्ति अपायभयं । तेन सभावेन सण्ठितं ओत्तप्यं । तदुभयमपि पापपरिवज्जने पाकटं
होति ।

एकच्चो हि यथा नामेको कुलपुत्तो उच्चारपस्सावादीनि करोन्तो लज्जितव्वयुत्तकं एकं दिस्वा
लज्जनाकारपुत्तो भवेय्य हीलितो एवमेवं अज्झत्तं लज्जिधम्मं ओक्कमित्वा पापकम्मं न करोति । एकच्चो
अपायभयभीरुको हुत्वा पापकम्मं न करोति ।

तत्रिदं ओपम्मं । यथाहि द्वीसु अयोगुळेसु एको सीतलो भवेय्य गूथमक्खितो एको उण्हो आदित्तो ।
तत्थ पण्डितो सीतलं गूथमक्खितत्ता जिगुच्छन्तो न गण्हाति इतरं डाहभयेन । तत्थ सीतलस्स गूथमक्खितस्स
जिगुच्छाय अगण्हनं विय अज्झत्तं लज्जिधम्मं ओक्कमित्वा पापस्स अकरणं, उण्हस्स डाहभयेन अगण्हनं विय
अपायभयेन पापस्स अकरणं वेदितव्वं ।

सप्पतिस्सवलक्खणा हिरि वज्जभीरुकभयदस्साविलक्खणं ओत्तप्पन्ति । इदमपि द्वयं पापपरिवज्जने
येव पाकटं होति । एकच्चो हि (१) जातिमहत्तपच्चवेक्खणा, (२) सत्थुमहत्तपच्चवेक्खणा, (३) दायज्जमह-
त्तपच्चवेक्खणा, (४) सङ्गहाचारीमहत्तपच्चवेक्खणाति चतुहि कारणेहि सप्पतिस्सवलक्खणं हिरिं समुट्ठापेत्वा
पापं न करोति । एकच्चो (१) अत्तानुवादभयं, (२) परानुवादभयं, (३) दण्डभयं [१२०] (४) दुग्गतिभयन्ति
चतुहि कारणेहि वज्जभीरुकभयदस्साविलक्खणं ओत्तप्यं समुट्ठापेत्वा पापं न करोति । तत्थ जातिमहत्तपच्च-
वेक्खणादीनि चैव अत्तानुवादभयादीनि च वित्थारेत्वा कथेतव्वानि । तेसं वित्थारो अंगुतरट्ठकथायां वुत्तो ।

सुक्कधम्मसमाहिताति इदमेव हिरोत्तप्यं आदि कत्वा कत्तव्वा कुसला धम्मा सुक्कधम्मा नाम ।
ते सब्बसंगाहकनयेन चतुभूमिकलोकियलोकुत्तरधम्मा । तेहि समाहिता समभ्रागताति अत्थो । सन्तो सप्पुरिसा
लोकेति कायकम्मादीनं सन्तताय सन्तो । कतञ्चुकतवेदिताय सोभनपुरिसाति सप्पुरिसा । लोको पन संखारलोको
सत्तलोको ओकासलोको खन्धलोको आयतनलोको धातुलोकोति अनेकविधो । तत्थ, एको लोको सब्बे सत्ता
आहारट्ठितिका—ये—अट्ठारसलोका अट्ठारसधानुयोति एत्थ संखारलोको वुत्तो । खन्धलोकादयो तदन्तो-
गधा येव । अयं लोको परलोको देवलोको मनुस्सलोकोति आदिमु पन सत्तलोको वुत्तो—

“यावता चन्दिमसुरिया दिसा भन्ति विरोचना ।

तावता सहस्सधा लोको एत्थ ते वसती वसो ॥” ति ।

एत्थ ओकासलोको वुत्तो । तेसु इध सत्तलोको अधिप्येते । सत्तलोकास्मिं हि येव एवरूपा सप्पुरिसा
ते देवधम्माति वुच्चरे । तत्थ देवाति सम्मुतिदेवा उप्पत्तिदेवा विमुद्धिदेवाति तिविधा । तेसु महासम्मत्तकालतो
पट्ठाय लोकेन देवाति सम्मतत्ता राजराजकुमारादयो सम्मुतिदेवा नाम । देवलोकं उप्पन्ना उप्पत्तिदेवा नाम ।
खीणासवा विमुद्धिदेवा नाम । वुत्तमपि चेतं “सम्मुतिदेवा नाम राजानो देवियो कुमारा च । उप्पत्तिदेवा नाम

भूमदेवे उपादाय तदुत्तरि देवा । विसुद्धिदेवा नाम बुद्धपच्चेकबुद्धखीणासवा” ति । इमेसं देवानं धम्माति दव-
धम्माति ।

बुच्चरेति बुच्चन्ति । हिरोत्तप्पमूलका हि कुसला धम्मा कुसलसम्पदाय देवल्लोके निब्बत्तिया च विसु-
द्धिभावस्सेव कारणत्ता कारणट्ठेन ति विधानं देवानं धम्माति देवधम्मा । तेहि देवधम्मेहि समन्नागता पुग्गलापि
देवधम्मा । तस्मा पुग्गलाधिष्ठानाय देसनाय ते धम्मे दस्सेन्तो “सन्तो सप्पुरिसा लोके देवधम्माति बुच्चरे” ति
आह ।

यक्खो इमं धम्मदेसनं सुत्वा पसन्नो बोधिसत्तं आह-पण्डित ! अहं तुम्हाकं पसन्नो एकं भातरं देमि,
कतरं आनेमीति ?

कनिट्ठं आनेहीति ।

पण्डित ! त्वं केवलं देवधम्मे [१२१] जानासि येव न पन तेमु वत्तेसीति ।

किं कारणाति ?

यंकारणा जेट्ठं ठपेत्वा कनिट्ठं आनापेन्तो जेट्ठापचायिककम्मं नाम न करोसीति ।

देवधम्मे चाहं यक्ख ! जानामि तेमु च पवत्तामि । मयं हि इमं अरञ्जं एतं निस्साय पविट्ठा ।
एतस्स हि अत्थाय अम्हाकं पितरं एतस्स माता रज्जं याचि । अम्हाकं पन पिता नं वरं अदत्वा अम्हाकं अनुरक्ख-
णत्थाय अरञ्जावासं अनुजानि । सो कुमारो अनुवत्तित्वा अम्हेहि सिद्धिं आगतो, तं अरञ्जे एको यक्खो खादीति
वुत्तेपि न कोचि सद्विस्सति । तेनाहं गरहभयभीतो तमेव आनापेमीति ।

साधु साधु पण्डित ! त्वं देवधम्मे च जानासि तेमु च वत्तसीति पसन्नचित्तो यक्खो बोधिसत्तस्स साधु-
कारं दत्वा द्वेपि भातरो आनेत्वा अदासि ।

अथ नं बोधिसत्तो आह- सम्म ! त्वं पुब्बं अत्तना कतेन पापकम्मेन परेसं मंसलोहितखादको यक्खो
हुत्वा निब्बत्तो । इदानि पुनपि पापमेव करोसि । इदं ते पापकम्मं निरयादीहि मुच्चितुं न दस्सति । तस्मा इतो
पट्ठाय पापं पहाय कुसलं करोहीति असक्खि च पन नं दमेतुं । सो तं यक्खं दमेत्वा तेन संविहितारक्खो तत्थेव
वसन्तो एकदिवसं नक्खत्तं ओलोकेत्वा पितुकालकतभावं जत्वा यक्खं आदाय बाराणासि गत्वा रज्जं गहेत्वा
चन्दकुमारस्स ओपरज्जं सुरियकुमारस्स सेनापतिट्ठानं दत्वा यक्खस्स रमणीये ठाने आयतनं कारेत्वा यथा सो
अग्गमालं अग्गपुष्कं अग्गगन्धं अग्गफलं अग्गभत्तञ्च लभति तथा अकासि । सो धम्मेन रज्जं कारेत्वा यथाकम्मं
गतो ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा दस्सेत्वा सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने सो भिक्खु सोतापत्ति-
फले पतिट्ठहि । सम्मासम्बुद्धोपि द्वे वत्थूनि कथेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा उदकरक्खसो
बहुभण्डिकभिक्खु अहोसि, सुरियकुमारो आनन्दो, चन्दकुमारो सारिपुत्तो जेट्ठकभाता महिसासकुमारो पन अहमेव
अहोसिन्ति ।

देवधम्मजातकं

७. कट्टहारिजातकं

पुतो त्याहं महाराजाति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो वासभखत्तियाय वत्थुं आरब्भ कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

वासभखत्तियाय वत्थु द्वादसनिपाते भट्सालजातके आविभविस्सति । सा किर महानामस्स सक्क-
स्स धीता नागमुण्डाय नाम दासिया कुच्छिस्मिं जाता[१२२]कोसलराजस्स अगमहेसी अहोसि । सा रज्जो
पुत्तं विजायि । राजा पनस्सा पच्छा दासिभावं जत्वा ठाना परिहापेसि । पुत्तस्स विड्डभस्सापि ठाना परिहापेसि
येव । उभोपि अत्तनो निवेसने येव वसन्ति । सत्था तं कारणं जत्वा पुब्बण्हसमयं पच्चसत्तभिक्षुपरिवृतो रज्जो
निवेसनं गत्वा पच्चत्तासने निसीदित्वा—महाराज ! कहं वासभखत्तियाति आह ।

राजा तं कारणं आरोचेसि ।

महाराज ! वासभखत्तिया कस्स धीताति ?

महानामस्स भन्तेति ।

आगच्छमाना कस्स आगतानि ?

मय्हं भन्तेति ।

महाराज ! एसा रज्जो धीता रज्जो व आगता राजानं येव पटिच्च पुत्तं पटिलभि । सो पुत्तो कि
कारणा पितु सन्तकस्स रज्जस्स सामिको न होति ? पुब्बे राजानो मुहुत्तिकाय कट्टहारिकाय कुच्छिस्मिम्पि
पुत्तं लभित्वा पुत्तस्स रज्जं अदंसूति ।

राजा तस्सत्थस्साविभावत्थाय भगवन्तं याचि । भगवा भवन्तरेण पटिच्छन्नं कारणं पावटं अकासि—

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्तो राजा महन्तेन यसेन उय्यानं गत्वा तत्थं पुप्फफललोभेन विचरन्तो
उय्यानवनसण्डे गायित्वा गायित्वा दारुणि उद्धरमानं एकं इत्थि दिस्वा पटिबद्धचित्तो संवासं कप्पेसि । तं खणं
येव बोधिसत्तो तस्सा कुच्छियं येव पटिसन्धिं गण्हि । तावदेव तस्सा वजिरूपरिता विय गरुका कुच्छि अहोसि ।
सा गम्भस्स पतिट्ठितभावं जत्वा—गम्भो मे देव ! पतिट्ठितोति आह ।

राजा अंगुलिमुद्दिकं दत्वा सचे धीता होति इमं विसज्जेत्वा पोसेय्यासि सचे पुत्तो होति मुद्दिकाय
सद्धिं मम सन्तिकं आनेय्यासीति वत्वा पक्कामि ।

सापि परिपक्कगम्भा बोधिसत्तं विजायि । तस्स आधावित्वा परिधावित्वा, विचरणकाले कीळा-
मण्डले कीळन्तस्स एवं वत्तारो होन्ति—निप्पितिकेनम्हा पढाति ।

तं सुत्वा बोधिसत्तो मातु सन्तिकं गत्वा—अम्म ! को मय्हं पिताति पुच्छि ।

तात ! त्वं वाराणसिरज्जो पुत्तोति ।

अम्म ! अत्थि पन कोचि सक्खीति ?

तात ! राजा इमं मुद्दिकं दत्वा सचे धीता होति इमं विसज्जेत्वा पोसेय्यामि, सचे पुत्तो होति इमाय
मुद्दिकाय सद्धिं आनेय्यासीति वत्वा गतोति ।

अम्म ! एवं सन्ते कस्मा मं पितु सन्तिकं न नेय्यासीति ?

सा पुत्तस्स अज्झासयं जत्वा राजद्वारं गत्वा रज्जो आरोचापेसि - रज्जा च पक्कोसापिता पविसित्वा राजानं वन्दित्वा अयं ते देव ! पुत्तोति आह ।

राजा जानन्तोपि परिसमज्झे लज्जाय न मय्हं पुत्तोति आह ।

अयं ते देवमुद्दिका इमं सज्जानासीति ।

अयम्पि मय्हं मुद्दिका न होतीति ।

देव इदानि टपेत्वा सच्चकिरियं अज्जो मम सक्खी नत्थि । सचायं दारको तुम्हे पटिच्च जातो खित्तो आकासे तिट्ठतु नो चे भूमियं पतित्वा [१२३] मरतूति बोधिसत्तं पादे गहेत्वा आकासे खिपि । बोधिसत्तो आकासे पल्लवं आभुजित्वा निसिन्नो मधुरस्सरेन पितुधम्मं कथेन्तो इमं गाथमाह-

पुत्तो त्याहं महाराज ! त्वं मं पोस जनाधिप !

अज्जेपि देवो पोसेति किञ्च देवो सकं पजन्ति ॥

तत्थ पुत्तो त्याहन्ति पुत्तो ते अहं । पुत्तो च नामेस^१ अत्रजो खेत्तजो अन्तेवासिको दिन्नकोति चतुब्बिधो^२ । तत्थ अत्तानं पटिच्च जातो अत्रजो नाम । सयनपिट्ठे पल्लवं उरेति एवमादिसु निब्बत्तो खेत्तजो नाम । सन्तिके सिप्पुगण्हनको अन्तेवासिको नाम । पोसावनत्थाय दिन्नो दिन्नको नाम । इध पन अत्रजं सन्धाय पुत्तोति वुत्तं । चतुहि संकहवत्थूहि जनं रज्जयतीति राजा । महन्तो राजा महाराजा । तं आमन्तेन्तो आह महाराजाति । त्वं मं पोस जनाधिपाति जनाधिप ! महाजनजेट्ठक ! त्वं मं पोस भरस्सु वड्ढेहि । अज्जेपि देवो पोसेतीति अज्जेपि हत्थिअस्सादयो तिरच्छानगते बहुजने च देवो पोसेति । किञ्च देवो सकं पजन्ति एत्थ पन किञ्चाति गरहत्थे च अनुगहत्थे च निपातो । सकं पजं अत्तनो पुत्तं मं देवो न पोसेतीतिपि वदन्तो गरहति नाम । अज्जे बहुजने पोसेतीति वदन्तो अनुगण्हाति नाम । इति बोधिसत्तो गहरन्तोपि अनुगण्हन्तोपि “किञ्च देवो सकं पज” न्ति आह । राजा बोधिसत्तस्स आकासे निसीदित्वा एव धम्मं देसेन्तस्स सुत्वा-ऐहि तात ! अहमेव पोसेस्सामि अहमेव पोसेस्सामीति हत्थं पसारेसि । हत्थसहस्सं पसारयित्थ । बोधिसत्तो अज्जस्स हत्थे अनोतरित्वा रज्जोव हत्थे ओतरित्वा अंके निसीदि । राजा तस्स ओपरज्जं दत्वा मातरं अगमहेसि अकासि ।

सो पितु अच्चयेन कट्ठवाहनराजा नाम हुत्वा धम्मेन रज्जं कारेत्वा यथाकम्मं गतो । सत्था कोसल-रज्जो इमं धम्मदेसनं आहरित्वा द्वे वत्थूनि दस्सेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा माता महामाया अहोसि । पिता सुद्धोदनमहाराजा । कट्ठवाहनराजा अहमेव अहोसिन्ति ।

कट्टुहारजातकं

८. गामनिजातकं

अपि अतरमानानन्ति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो ओस्सट्ठविरियं भिक्खुं आरब्ध कथेसि ।
इमस्मिं पन जातके पच्चुप्पन्नवत्थुञ्च अतीतवत्थुञ्च एकादसनिपाते संवरजातके [१२४] आविभवस्सति ।
वत्थुं हि तस्मिञ्च इमस्मिञ्च एकसदिसमेव । गाथा पन नाना । गामनिकुमारो बोधिसत्तस्स ओवादे ठत्वा भातिक-
सत्तस्स कनिट्ठोपि हुत्वा भातिकसत्तपरिवारितो सेतच्छत्तस्स हेट्ठा वरपल्लंके निसिन्नो अत्तनो यससम्पत्तिं
ओलोकेत्वा अयं मय्हं यससम्पत्तिं अम्हाकं आचरियस्स सन्तकाति तुट्ठो इमं उदानं उदानेसि—

अपि अतरमानानं फलासाव समिज्झति ।

विपक्कब्रह्मचरियोस्मि एवं जानाहि गामनीति ।

तत्थ अपीति निपातमत्तं । अतरमानानन्ति पण्डितानं ओवादे ठत्वा अतुरित्वा अवैगायित्वा उपायेन
कम्मं करोन्तानं । फलासाव समिज्झतीति यथापत्थितफले आसा तस्स फलस्स निष्फत्तिया समिज्झति येव ।
अथवा, फलासाति आसाय फलं यथापत्थितं फलं समिज्झति येवाति अत्थो । विपक्कब्रह्मचरियोस्मीति एत्थ
चत्तारि संग्रहवत्थूनि सेट्ठचरियत्ता ब्रह्मचरियं नाम । तञ्च तम्मूलिकाय यससम्पत्तिया पटिलद्धत्ता विपक्कं नाम ।
योवास्स यसो निष्फन्नो सोपि सेट्ठट्ठेन ब्रह्मचरियं नाम । तेनाह— विपक्कब्रह्मचरियोस्मि । एवं जानाहि
गामनीति कत्थचि गमिकपुरिसोपि गामजेट्ठकोपि गामनि इध पन सब्बजनजेट्ठकं अत्तानं सन्धायाह अम्भो
गामनि ! त्वं एतं कारणं एवं जानाहि आचरियं निस्साय भातिकसत्तं अतिक्कमित्वा इदं महारज्जं पत्तोस्मीति
उदानं उदानेसि । तस्मिं पन रज्जं पत्ते सत्तट्ठदिवसच्चयेन सब्बेपि भातरो अत्तनो अत्तनो वसनट्ठानं गता ।
गामनि राजा धम्मेन रज्जं कारेत्वा यथाकम्मं गतो । बोधिसत्तो पुञ्ञानि कत्वा यथाकम्मं गतो ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा दस्सेत्वा सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने ओस्सट्ठविरियो
भिक्खू अरहन्ते पतिट्ठितोति । सत्था द्वे वत्थूनि कथेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं रामोधानेसि । तदा गामनिराजा
आनन्दो, आचरियो पन अहमेवाति ।

गामनिजातकं

९. मखादेवजातकं

उत्तमंगरुहा मय्हन्ति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो महाभिनिकखमनं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपसवत्थु

तं हेट्ठा निदानकथायं कथितमेव । तस्मिं पन काले भिक्खू दसबलस्स नेक्खम्मं वण्णेन्ता निसीदिसु । अथ सत्था धम्मसभं आगत्वा बुद्धासने निसिन्नो भिक्खू आमन्तेसि— काय नुत्थ भिक्खवे! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति ?

भन्ते ! न अञ्जाय कथाय, तुम्हाकं येव पन नेक्खम्मं वण्णयमाना निसिन्नमहाति । न भिक्खवे! तथागतो[१२५]एतरहि येव नेक्खम्मं निक्खन्तो, पुब्बेपि निक्खन्तो येवाति आह । भिक्खू तस्सत्थस्साविभावत्थं भगवन्तं याचिसु । भगवा भवन्तरेण पटिच्छन्नं कारणं पाकटमकासि—

अतीतवत्थु

अतीते विदेहरट्ठे मिथिलायं मखादेवो नाम राजा अहोसि धम्मिको धम्मराजा । सो चतुरासीति-वस्ससहस्सानि कुमारकीलं कीळि । तथा ओपरज्जं तथा महारज्जं कत्वा दीघमद्धानं खेपेत्वा एकदिवसं कप्पकं आमन्तेसि—वधा मे सम्म कप्पक ! सिरस्मिं पलितानि पस्सेय्यासि अथ मे आरोचेय्यासीति ।

कप्पकोपि दीघमद्धानं खेपेत्वा एकदिवसं रज्जो अञ्जनवण्णानं केसानं अन्तरे एकमेव पलितं दिस्वा देव ! एकं ते पलितं दिस्सतीति आरोचेसि ।

तेन हि मे सम्म ! तं पलितं उद्धरित्वा पाणिमिह ठपेहीति च वुत्तो सुवण्णसण्डासेन उद्धरित्वा रज्जो पाणिमिह पतिट्ठापेसि ।

तदा रज्जो चतुरासीतिवस्ससहस्सानि आयुं अवसिट्ठं होति । एवं सन्तेपि पलितं दिस्वाव मच्चु-राजानं आगत्वा समीपे ठितं विय अत्तानं आदित्तपण्णसालं पविट्ठं विय च मञ्जमानो संवेगं आपज्जित्वा—बाल मखादेव ! याव पलितस्मुप्पादाव इमे किलेसे जहितुं नासक्खीति चिन्तेसि । तस्सेवं पलितपातुभावं आव-ज्जन्तस्स आवज्जन्तस्स अन्तोडाहो उप्पज्जि । सरीरा सेदा मुच्चिसु । साटका पीळेत्वा अपनेतब्बाकारप्पत्ता अहेसु । सो अज्जेव मया निक्खमित्वा पब्बजितुं वट्ठतीति कप्पकस्स सतसहस्सुट्ठानं गामवरं दत्वा जेट्ठपुत्तं पक्कोसापेत्वा—तात ! मम सीसे पलितं पातुभूतं महल्लकोमिह जातो । भुत्ता खो पन मे मानुसका कामा इदानि दिब्बकामे परिपेसिस्सामि नेक्खम्मकालो मय्हं त्वं इमं रज्जं पटिपज्ज । अहं पन पब्बजित्वा मखादेवम्बवन्तुय्याने वसन्तो समणधम्मं करिस्सामीति आह ।

तं एवं पब्बजितुकामं अमच्चा उपसंकमित्वा— देव ! किं तुम्हाकं पब्बज्जाकारणन्ति पुच्छिसु राजा पलितं हत्थेन गहेत्वा अमच्चानं इमं गाथमाह—

उत्तमंगरुहा मय्हं इमे जाता वयोहरा ।

पातुभूता देवदूता पब्बज्जासमयो ममा ॥ ति ।

तत्थ उत्तमंगरुहाति केसा । केसा हि सब्बेसं हत्थपादादीनं अंगानं उत्तमे सिरस्मिं निरुद्धहत्ता उत्त-मंगरुहा नामाति बुच्चन्ति । इमे जाता वयोहराति पस्सथ ताता ! पलितपातुभावेन तिण्णं वयानं हरणतो इमे जाता वयोहरा । पातुभूताति निब्बत्ता । देवदूताति देवोति मच्चु तस्स दूताति देवदूता । सिरस्मिं हि पलितेसु पातुभूतेसु

मच्चुराजस्स सन्तिके ठितो विय होति तस्मा पलितानि मच्चुदेवस्स दूताति वुच्चन्ति।[१२६] देवा विय दूतातिपि देवदूता । यथाहि अलंकृतपटियत्ताय देवताय आकासे उट्वा असुकदिवमे त्वं मरिस्ससीति वुत्ते तं तथेव होति एवं सिरस्मि पलितेसु पातुभूतेसु देवताय व्याकरणसदिसमेव होति । तस्मा पलितानि देवसदिसा दूताति वुच्चन्ति । विसुद्धिदेवानं दूतातिपि देवदूता । सब्बबोधिसत्ता हि जीणव्याधिमतपब्बजिते दिस्वाव संवेगमापाज्जित्वा निक्खम्म पब्बजन्ति । यथाह—

“जिणञ्च दिस्वा दुखितं च व्याधितं मतञ्च दिस्वा गतमायुसंख्यं ।

कासाववत्थं पब्बजितञ्च दिस्वा तस्मा अहं पब्बजितोमिह राजा ॥” ति ।

इमिना परियायेन पलितानि विसुद्धिदेवानं दूतत्ता देवदूताति वुच्चन्ति । पब्बज्जासमयो ममा ति गिहीभावतो निक्खन्तट्ठेन पब्बज्जाति लद्धनामस्स समणलिंगगह्णस्स कालो मय्हन्ति दस्सेति । सो एषं वत्वा तं दिवसमेव रज्जं पहाय इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा तस्मिञ्छेव मखादेवम्बवने विहरन्तो चतुरासीतिवस्ससहस्सानि चत्तारो ब्रह्मविहारे भावेत्वा अपरिहीनज्झाने ठितो कालं कत्वा ब्रह्मलोके निब्बत्तित्वा पुन ततो चुतो मिथिलायं येव निमि^१नाम राजा हुत्वा ओस्सक्कमानं अत्तनो वंसं घटेत्वा तथेव अम्बवने पब्बजित्वा ब्रह्मविहारे भावेत्वा पुन ब्रह्मलोकूपगोव अहोसि ।

सत्थापि न भिक्खवे ! तथागतो इदानेव महाभित्तिक्खमनं निक्खन्तो, पुब्बेपि निक्खन्तो येवाति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा दस्सेत्वा चत्तारि सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने केचि स्रोतापन्ना अहेसुं केचि सकदागामिनो केचि अनागामिनो । इति भगवा इमानि द्वे वत्थूनि कथेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा कप्पको आनन्दो अहोसि, पुत्तो राहुल्लो, मखादेवराजा पन अहमेवाति ।

मखादेवजातकं

१० सुखविहारिजातकं

यञ्च अञ्जने न रक्खन्तीति इदं सत्था अनुपियनगरं निस्साय अनुपियम्बवने विहरन्तो सुखविहारिं भद्दियत्थेरं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

सुखविहारी भद्दियत्थेरो छक्खत्तियसमागम उपालिसत्तमो पब्बजितो । तेसु भद्दियत्थेरो च किम्बिलत्थेरो च भगुत्थेरो च उपालित्थेरो च अरहत्तं पत्ता । आनन्दत्थेरो सोतापन्नो जातो । अनुसुद्धत्थेरो दिब्बचक्खुको देवदत्तो आनलाभी जातो । छन्नं पन खत्तियानं [१२७] वत्थुं याव अनुपियनगरा खण्डहालजातके^१ आविभवस्सति ।

आयस्मा पन भद्दियो राजकाले अत्तानं रक्खन्तो रक्खणसंविधानञ्चेव ताव बहूहि रक्खाहि रक्खियमानस्स, उपरिपासादतले महासयने सम्परिवत्तमानस्सापि अत्तनो भयुप्पत्तिञ्च दिस्वा इदानीं अरहत्तं पत्वा अरञ्जादिसु यत्थ कत्थचि विचरन्तोपि अत्तनो विगतभयतञ्च समनुपस्सन्तो – अहो सुखं ! अहो सुखन्ति ! उदानं उदानेसि ।

तं सुत्वा भिक्खू आयस्मा भद्दियो अञ्जं व्याकरोतीति भगवतो आरोचेसुं ।

भगवा न भिक्खवे ! भद्दियो इदानीं सुखविहारी पुब्बेपि सुखविहारी येवाति आह ।

भिक्खू तस्सत्थस्साविभावत्थाय भगवन्तं याचिंसुं । भगवा भवन्तरेण पटिच्छन्नं कारणं पाकटमकासि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारयमाने बोधिसत्तो उदिच्चब्राह्मणमहासालो हुत्वा कामेसु आदीनवं नेक्खम्मे चानिसंसं दिस्वा कामे पहाय हिमवन्तं पविसित्वा इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा अट्ठसमापत्तियो निब्बत्तेसि । परिवारोपिस्स महा अहोसि पञ्चतापससतानि । सो वस्सकाले हिमवन्ततो निक्खमित्वा तापसगणपरिवृतो गामनिगमादिसु चारिकं चरन्तो बाराणसिं पत्वा राजानं निस्साय राजुय्याने वासं कप्पेसि तत्थ वस्सिके चत्तारो मासे वसित्वा राजानं आपुच्छि । अथ नं राजा तुम्हे भन्ते ! महत्तला, किं वो हिमवन्तेन । अन्तेवासिके हिमवन्तं पेसेत्वा इधेव वसथाति याचि । बोधिसत्तो जेट्ठन्तेवासिकं पञ्चतापससतानि पटिच्छापेत्वा गच्छ त्वं इमेहि सद्धिं हिमवन्ते वस अहं पन इधेव वसिस्सामीति ते उय्योजेत्वा सयं तत्थेव वासं कप्पेसि । सो पनस्स जेट्ठन्तेवासिको राजपब्बजितो महन्तं रज्जं पहाय पब्बजित्वा कसिणपरिकम्मं कत्वा अट्ठसमापत्तिलाभी अहोसि । सो तापसेहि सद्धिं हिमवन्ते वसमानो एकदिवसं आचरियं दट्ठुकामो हुत्वा ते तापसे आमन्तेत्वा तुम्हे अनुक्कण्टमाना इधेव वसथ अहं आचरियं वन्दित्वा आगमिस्सामीति आचरियस्स सन्तिकं गत्वा वन्दित्वा पटि-सन्थारं कत्वा एकं तट्टिकं अत्थरित्वा आचरियस्स सन्तिके येव निपज्जि ।

तस्मिञ्च समये राजा तापसं पस्सिस्सामीति उय्यानं गत्वा वन्दित्वा एकमन्तं निसीदि । अन्तेवासी तापसो राजानं दिस्वापि नेव उट्ठासि । निपन्नको येव पन अहो सुखं अहो सुखन्ति ! उदानं उदानेसि ।

राजा अयं तापसो मं दिस्वापि न उट्ठतोति अनत्तमनो बोधिसत्तं आह—भन्ते ! अयं तापसो यदिच्छकं भुत्तो भविस्सति उदानं उदानेन्तो सुखसेय्यमेव कप्पेतीति ।

महाराज ! अयं तापसो पुब्बे तुम्हादिसो एको राजा अहोसि । स्वायं अहं पुब्बे गिहीकाले

रज्जसिरीं अनुभवन्तो [१२८] आवुधहत्थेहि बहूहि रक्खियमानोपि एवरूपं सुखं नाम नालत्थन्ति अत्तनो पब्बज्जामुखं ज्ञानसुखं आरब्भ इमं उदानं उदानेतोति । एवञ्च पन वत्वा बोधिसत्तो रज्जो धम्मकथं कथेतुं इमं गाथमाह—

“यञ्च अञ्जे न रक्खन्ति यो च अञ्जे न रक्खति ।

स वे राज सुखं सेति कामेसु अनपेक्खवा ॥”ति ।

तत्थ यञ्च अञ्जे न रक्खन्तीति यं पुगलं अञ्जे बहु पुगला न रक्खन्ति । यो च अञ्जे न रक्खतीति यो च एको अहं रज्जं कारेमीति अञ्जे बहू न रक्खति । स वे राजा ! सुखं सेतीती महाराज ! सो पुगलो एको अदुतियो पविचित्तो कायिकचेतसिकसुखसमंगी हुत्वा सुखं सेति । इदञ्च देसनासीसमेव न केवलं पन सुखं सेति येव एवरूपो पन पुगलो सुखं गच्छति तिष्ठति निसीदति सयतीति सब्बिरियापथेसु सुखप्पत्तोव होति । कामेसु अनपेक्खवाति वत्थुकामकिलेसकामेसु अपेक्खारहितो विगतच्छन्दरागो नित्तण्हो एवरूपो पुगलो सब्बिरियापथेसु सुखं विहरति महाराजाति । राजा धम्मदेसनं सुत्वा तुट्ठमानसो वन्दित्वा निवेसनमेव गतो । अन्तेवासिकोपि आचरियं वन्दित्वा हिमवन्तमेव गतो । बोधिसत्तो पन तत्थेव विहरन्तो अपरिहीनञ्ज्ञानो कालं कत्वा ब्रह्मलोके निव्वत्ति । सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा दस्सेत्वा द्वे वत्थूनि कथेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा अन्तेवासिको भट्टियत्थेरो अहोसि गणसत्था अहमेवाति ।

सुखविहारिजातकं ।

अपण्णकवग्गो निट्ठितो

१. एककनिपातो

२. सीलवग्गवण्णना

१. लक्खणमिगजातकं

होति सीलवत्तं अत्थोति इदं सत्था राजगहं उपनिस्साय वेळुवने विहरन्तो देवदत्तं आरब्ध कथेसि । देवदत्तस्स वत्थुयाव अभिमारप्पयोजना खंडहालजातके आविभविस्सति । याव धनपालकं विस्सज्जना पन चुल्लहंसजातके आविभविस्सति । याव पठविप्पवेसना सोलसनिपाते^१ समुद्वाणिजजातके आविभविस्सति ।

पच्चुपन्नवत्थु

एकस्मिं समये देवदत्तो पच्चवत्थूनि याचित्वा अलभन्तो संघं भिदिन्त्वा पच्चभिक्षुसतानि आदाय गयासीसे विहरति । अथ तेसं भिक्षूनं आणं परिपाकं अगमासि ।

तं जत्वा [१२९] सत्था द्वे अगसावके आमन्तेसि — सारिपुत्ता ! तुम्हाकं निस्सितका पच्चसता भिक्षू देवदत्तस्स लद्धिं रोचेत्वा तेन सद्धिं गता । इदानीं पन तेसं आणं परिपाकं गतं, तुम्हे बहूहि भिक्षूहि सद्धिं तत्थ गन्त्वा तेसं धम्मं देसेत्वा ते भिक्षू मग्गफलेहि पबोधेत्वा गहेत्वा आगच्छथाति ।

ते तथेव गन्त्वा तेसं धम्मं देसेत्वा मग्गफलेहि पबोधेत्वा पुनदिवसे अरुणुभगमनवेलाय ते भिक्षू आदाय वेळुवनमेव अगमंमु । आगन्त्वा च पन सारिपुत्तत्थेरस्स भगवन्तं वन्दिता ठितकाले भिक्षू धेरं पसंसित्वा भगवन्तं आहंमू— भन्ते ! अम्हाकं जेट्ठकभातिको धम्मसेनापति पच्चभिक्षूसतेहि परिवुतो आगच्छन्तो अतिविय सोभति देवदत्तो पन पहीनपरिवारो जातोति ।

न भिक्षवे ! सारिपुत्तो इदानेव जातिसंघपरिवुतो आगच्छन्तोव सोभति पुब्बेपि सोभियेव देवदत्तोपि न इदानेव गणतो परिहीनो पुब्बेपि परिहीनो येवाति ।

भिक्षू तस्सत्थस्साविभावत्थाय भगवन्तं याचिसुं । भगवा भवन्तरेण पटिच्छन्नं कारणं पाकटमकासि—

अतीतवत्थु

अतीते मगधरट्ठे राजगहनगरे एको मगधराजा रज्जं कारेसि । तदा बोधिसत्तो मिगयोनियं पटिसन्धिं गहेत्वा बुद्धिपत्तो मिगसहस्सपरिवारो अरज्जे वसति । तस्स लक्खणो च कालो चाति द्वे पुत्ता अहेसुं । सो अत्तनो महल्लकाले — ताता ! अहं इदानीं महल्लको तुम्हे इमं गणं परिहरथाति पच्च पच्च मिगसतानि एकेकं पुत्तं पटिच्छापेसि ।

ततो पट्ठाय ते द्वे जना मिगगणं परिहरन्ति । मगधरट्ठस्मिञ्च सस्ससमये किट्ठसम्बाधे अरज्जे मिगानं परिपत्थो होति । मनुस्सा सस्सखादकानं मिभानं मारणत्थाय तत्थ तत्थ ओपातं खणन्ति मूलानि रोपेन्ति पासाणयन्तानि सज्जेन्ति कूटपासादयो पासे ओड्ढेन्ति । बहू मिगा विनासं आपज्जन्ति । बोधिसत्तो किट्ठसम्बाधसमयं जत्वा पुत्तं पक्कोसापेत्वा आह—ताता ! अयं किट्ठसम्बाधसमयो बहू मिगा विनासं पापुणन्ति । मयं महल्लका । येन केनुपायेन एकस्मिं ठाने बीतिनामेस्साय । तुम्हे तुम्हाकं मिगगणं गहेत्वा अरज्जे पब्बतपादं पविसित्वा सस्सानं उद्धट्ठकाले आगच्छेय्याथाति ।

ते साधूति पितु वचनं पटिस्सुणित्वा सपरिवारा निक्खमिंसु । तेसं पन गमनागमनमग्गे मनुस्सा जानन्ति

हमस्मि काले मिगा पब्बतं आरोहन्ति इमस्मि काले ओरोहन्तीति । ते तत्थ तत्थ पटिच्छन्नट्ठाने निळीना बहू मिगे विज्झित्वा मारेन्ति ।

काळमिगोपि अत्तनो दन्धताय इमाय नाम वेलाय गन्तब्बं इमाय वेलाय न गन्तब्बन्ति अजानन्तो मिगगणं आदाय पुब्बण्हेपि सायण्हेपि [१३०] पदोसेपि पच्चूसेपि गामद्वारेन गच्छति । मनुस्सा तत्थ तत्थ पक्कति-याव ठिता च निळीना च बहू मिगे विनासं गमेन्ति । एवं सो अत्तनो दन्धताय बहू मिगे विनासम्पापेत्वा अप्पकेहेव मिगेहि अरञ्जं पाविसि ।

लक्ष्मणमिगो पन पंडितो व्यत्तो उपायकुसलो इमाय वेलाय गन्तब्बं इमाय वेलाय न गन्तब्बन्ति जानाति । सो गामद्वारेनपि न गच्छति, दिवापि न गच्छति, पदोसेपि न गच्छति, पच्चूसेपि न गच्छति । मिगगणं आदाय अड्ढरत्तसमयमेव गच्छति । तस्मा एकम्पि मिगं अविनासेत्वा श्ररञ्जं पाविसि ।

ते तत्थ चत्तारो मासे वसित्वा सस्सेसु उद्धटेसु पब्बता ओर्त्तिसु । कालो पच्छा 'गच्छन्तोपि पुरिमन-येनेव अवसेसमिगेपि विनासं पापेन्तो एककोव आगमि । लक्ष्मणमिगो पन एकमिगम्पि अविनासेत्वा पञ्चहि मिगसतेहि परिवुत्तो मातापितुन्नं सन्तिकं आगमि । बोधिसत्तो द्वे पुत्ते आगच्छन्ते दिस्वा मिगगणेन 'सद्धिं मन्तेन्तो इमं गाथं समुट्ठापेसि—

होति सीलवत्तं अत्थो पटिसन्धारवुत्तिनं ।
लक्ष्मणं पस्स आयन्तं आतिसंघपुरक्खतं ॥
अथ पस्ससि मं कालं सुविहीनं व जातिही' ति ।

तत्थ सीलवत्तन्ति मुखसीलताय सीलवन्तानं आचारसम्पन्नानं । अत्थोति वुड्ढि । पटिसन्धारवुत्ति-नन्ति धम्मपटिसन्धारो च आमिसपटिसन्धारो च एतेसं वुत्तिनोति पटिसन्धारवुत्तिनो । तेसं पटिसन्धारवुत्तिन । एत्थ च पापनिवारणओवादानुसासनादिवसेन धम्मपटिसन्धारो च गोचरलाभापनगिलानुपट्ठाकधम्मिक-रक्खावसेन आमिसपटिसन्धारो च वेदितब्बो । इदं वुत्तं होति । इमेसु द्वीसु पटिसन्धारोसु ठितानं आचारसम्पन्नानं पण्डितानं वुड्ढि नाम होति । इदानीं तं वुड्ढिं दस्सेतुं पुत्तमातरं^३ आलपन्तो विय लक्ष्मणं पस्सति आदिमाह । तत्रायं संखेपत्थो । आचारपटिसन्धारसम्पन्नं अत्तनो पुत्तं एकमिगम्पि अविनासेत्वा आतिसंघेन पुरक्खतं परिवारितं आगच्छन्तं पस्स । ताय पन आचारपटिसन्धारसम्पदाय विहीनं दन्धपञ्जं अथ पस्ससि मं काळं एकम्पि जाति अनवसेमेत्वा^४ सुविहीनमेव जातीहि एककं आच्छन्तन्ति । एवं पुत्तं अभिनन्दित्वा पन बोधिसत्तो यावतायुकं ठत्वा यथाकम्मं गतो ।

सत्थापि न भिक्खवे! सारिपुत्तो इदानीं व आतिसंघपरिवारितो सोभति, पुब्बेपि सोभि येव । न च देवदत्तो एतरहि येव गणम्हा परिहीनो पुब्बेपि परिहीनो येवाति इमं धम्मदंसनं दस्सेत्वा द्वे वत्थूनि घटत्वा अनुसन्ध योजेत्वा जातकं समो [१३१] धानेसि । तदा काळो देवदत्तो अहोसि । परिसा पिसस देवदत्तपरिसाव लक्ष्मणो सारिपुत्तो परिसा पनस्स बुद्धपरिसा माता राहुलमाता अहोसि । पिता पन अहमेव अहोसिन्ति ।

लक्ष्मणमिगजातकं

२. निग्रोधमिगजातकं

निग्रोधमेव सेवेय्याति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो कुमारकस्सपत्थेरस्स मातरं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

सा किर राजगहनगरं महाविभवस्स सेट्ठिनो धीता अहोसि । उस्सन्नकुसलमूला परिमदितसंखारा पच्छिमभविकसत्ता । अन्तोकूटे पदीपो विय तस्सा हृदये अरहत्तुपनिस्सयो जलति । अथ सा अत्तानं जाननकालतो पट्ठाय गे हे अनभिरता पब्बजितुकामा हुत्वा मातापितरो आह—अम्म ताता ! मय्हं घरावासे चित्तं नाभिरमति अहं निय्यानिके बुद्धसासनं पब्बजितुकामा पब्बाजेथ मन्ति ।

अम्म ! किं वदेसि ? इमं कुलं बहुविभवं । त्वञ्च अम्हाकं एकधीतिका । न लब्भा तथा पब्बजितुन्ति ।

सा पुनप्पुनं याचित्वापि मातापितुन्नं सन्तिका पब्बज्जं अलभमाना चिन्तेसि— होतु पतिकुलं गता सामिकं आराधेत्वा पब्बजिस्सामीति । सा वयप्पत्ता पतिकुलं गन्त्वा पतिदेवता हुत्वा सीलवती कल्याणधम्मा अगारं अज्झावसि । अथस्सा पंवासमन्वाय कुच्छियं गम्भो पतिट्ठहि । सा गम्भस्स पतिट्ठितभावं न अज्जासि । अथ तस्सि नगरे नक्खत्तं घोसयिमु । सकलनगरवासिनो नक्खत्तं कीळिमु । नगरं देवनगरं विय अलंकतपटियत्तं अहोसि । सा पन ताव उळारायपि नक्खत्तकीळाय वत्तमानाय अत्तनो सरीरं न विलिम्पति नालं करोति पकति-वेसेनेव चरति ।

अथ नं सामिको आह—भद्रे ! सकलनगरं नक्खत्तनिस्सितं त्वं पन सरीरं नप्पटिजगसि, अलंकारं न करोसि किकारणाति ?

सा आह—अय्यपुत्त ! द्वत्तिंसाय मे कुणपेहि पूरितं सरीरं । किं इमिना अलंकतेन ! अयं हि कायो नेव देवनिम्मितो न ब्रह्मनिम्मितो, न सुवण्णमयो, न मणिमयो, न हरिचन्दनमयो, न पुण्डरीककमलुप्पलगम्भसम्भूतो न अमतोसधपूरितो । अथ खो कुणपे जातो मातापेत्तिकसम्भवो निच्चुच्छादनपरिमहनभेदनविद्धंसनधम्मो कट-सिवड्ढनो तण्हपादिन्नो सोकानं निदानं परिदेवानं वत्थु सब्बरोगानं आलयो कम्मकरणानं परिग्गहो अन्तोपूति बहिनिच्चपग्घरणो किमिकुलानं आवासो, मीवथिकपरायणो, मरणपरियोमानो सब्बलोकस्स चक्खुपथे परिवत्त-मानोपि—[१३२]

“अट्ठीनहारुसंयुत्तो

तचमंसविलेपनो ।

छविया कायो पटिच्छन्नो यथाभूतं न दिस्सति ॥

अन्तपूरो उदरपूरो यकपेळस्स वत्थिनो ।

हृदयस्स पप्फासस्स वक्कस्स पिहकस्स च ॥

सिघाणिकाय खेळस्स सेदस्स मेदस्स च ।

लोहितस्स लसिकाय पितस्स च वसाय च ॥

अथस्स नवहि सोतेहि असुची सवति सब्बदा ।

अक्खिम्हा अक्खिगूथको कण्णम्हा कण्णगूथको ॥

सिघाणिका च नासातो मुखेन वमति एकदा ।

पित्तं सेम्हं च वमति कायम्हा सेदजल्लिका ॥

अथस्स सुसिरं सीसं मत्थलुंगेन पूरितं ।
 सुभतो नं मञ्जति बालो अविज्जाय पुरस्सतो ॥
 अनन्तादीनवो कायो विसरुक्खसमूपमो ।
 आवासो सब्बरोगानं पुञ्जो दुक्खस्स केवलो ॥
 सचे इमस्स कायस्स अन्तो बाहिरतो सिया ।
 दण्डं नून गहेत्वान काके सोणे च वारये ॥
 दुग्गन्धो असुची कायो कुणपो उक्करूपमो ।
 निन्दितो चक्खूभूतेहि कायो बालाभिनन्दितो ॥”
 अल्लचम्मपरिच्छन्नो नवद्वारो महावणो ।
 समन्ततो पग्घरति असुचिपूतिगन्धियो ॥
 यदा च सो मतो सेति उद्धुमातो विनीलको ।
 अपविद्धो सुसानस्मि अनपेक्खा होन्ति आतयो ॥
 खादन्ति नं सुवाणा च सिंगाला च बका किमि ।
 काका गिज्जा च खादन्ति ये चञ्जे सब्बपाणिनो ॥
 सुत्वान बुद्धवचनं भिक्खु च जाणवा इध ।
 सो खो नं अभिजानाति यथाभूतं हि पस्सति ॥
 यथा इमं तथा एतं यथा एतं तथा इदं ।
 अज्झत्तञ्च बहिद्धा च काये नन्दं विरज्जहं ॥

अय्यपुत्त ! इमं कायं अलंकरित्वा किं करिस्सामि ? ननु इमस्स अलंकरणं गूथपुण्णघटस्स बहिचित्तकम्मकरणं विय होतीति !

सेट्ठिपुत्तो तं तस्सा वचनं सुत्वा आह—भद्दे ! त्वं इमस्स सरीरस्स इमे दोसे पस्समाना कस्मा न पब्बजसीति ?

अय्यपुत्त ! अहं पब्बज्जं लभमाना अज्जेव पब्बजेय्यन्ति ।

सेट्ठिपुत्तो साधु अहं तं पब्बाजेस्सामीति वत्वा महादानं पवत्तेत्वा महासक्कारं कत्वा महन्तेन परिवारेन भिक्खुणीउपस्सयं नेत्वा तं पब्बाजेन्तो देवदत्तपक्खियानं भिक्खुणीनं सन्तिके पब्बाजेसि । सा पब्बज्ज लभित्वा परिपुण्णसंकप्पा अत्तमना अहोसि । अथस्सा गम्भे परिपाकं गच्छन्ते इन्द्रियानं अञ्जथत्तं हत्थपादपि-ट्ठीनं बहुलत्तं उदरपटलस्स च महन्तत्तं दिस्वा भिक्खुणियो तं पुच्छिमु—अय्ये ! त्वं गम्भिनी विय पञ्जायसि, किं एतन्ति ?

अय्य ! इदं नाम कारणन्ति न जानामि, सीलं पन मे परिपुण्णन्ति ।

अथ नं ता भिक्खुणियो देवदत्तस्स सन्तिकं नेत्वा देवदत्तं पुच्छिमु—अय्य ! अय्यं कुलधीता किञ्छेन सामिकं आराधेत्वा पब्बज्जं लभि । इदानीं पनस्सा गम्भो पञ्जायति । मयं [१३३] इमस्स गम्भस्स गिहीकाले वा पब्बजितकाले वा लद्धभावं न जानाम किं दानि करोमाति ? देवदत्तो अत्तनो अबुद्धभावेन खन्तिमेत्तानुद्धानं च नत्थिताय एवं चिन्तेसि—देवदत्तस्स पक्खिका भिक्खुणी कुच्छिना गम्भं परिहरति । देवदत्तो च तं अज्झुपेक्खति येवाति मय्हं गरहा उप्पज्जिस्सति । मया इमं उप्पब्बाजेतुं वट्टतीति । सो अवीमंसित्वाव सेलगुळं पवट्टयमानो विय पक्खन्दित्वा गच्छथ इमं उप्पब्बाजेयाति आह । ता तस्स वचनं सुत्वा उट्ठाय वन्दित्वा उपस्सयं गता ।

अथ सा दहरा भिक्खुणियो आह—अय्या ! न देवदत्तत्थेरो बुद्धो, न पि मय्हं तस्स सन्तिके पब्बज्जा ।

लोके पन अगपुगलस्स सम्मासम्बुद्धस्स सन्तिके मय्हं पव्वज्जा । सा च पन मे दुक्खेन लद्धा मा नं अन्तरधापथ ।
एथ मं गहेत्वा सत्थु सन्तिकं जेतवनं गच्छथाति ।

ता तं आदाय राजगहा पञ्चचत्तालीसयोजनं मगं अतिक्कम्म अनुपुब्बेन जेतवनं पत्वा सत्थारं वन्दित्वा तमत्थं आरोचेसु । सत्था चिन्तेसि—किञ्चापि गिहीकाले एतस्सा गम्भो पतिट्ठितो एवं सन्तेपि समणो गोतमो देवदत्तेन जहितकं आदाय चरतीति तिथियानं ओकासो भविस्सति, तस्मा इमं कथं पच्छिन्दितुं सराजिकाय परिसाय मज्झे इमं अधिकरणं विनिच्छित्तुं वट्ठतीति । पुन दिवसे राजानं पसेनदिकोसलं महाअनाथपिण्डिकं चूलअनाथपिण्डिकं विसाखं महाउपासिकं अञ्जानि च अभिञ्जातानि महाकुलानि पक्कोसापेत्वा सायण्हसमये चतुसु परिसासु सन्निपतितासु उपलित्थेरं आमन्तेसि—गच्छ चतुपरिसमज्जे इमिस्सा दहरभिक्षुणिया कम्मं सोधेहीति ।

साधु भन्तेति थेरो परिसमज्जे गत्वा अत्तनो पञ्जतासने निसीदित्वा रज्जो पुरतो विसाखं उपासिकं पक्कोसापेत्वा इमं अधिकरणं पटिच्छापेसि—गच्छ विसाखे ! अयं दहरा अमुकमासे अमुकदिवसे पव्वजितानि तत्ततो अत्वा इमस्स गम्भस्स पुरे वा पच्छा वा लद्धभावं जानाहीति ।

उपासिका साधूति सम्पटिच्छित्वा साणिं परिक्खिपापेत्वा अन्तो साणियं दहरभिक्षुणिया हत्थपादनाभिउदरपरियोसानानि ओलोकेत्वा मासदिवसे समानेत्वा गिहीभावे गम्भस्स लद्धभावं तत्ततो अत्वा थेरस्स सन्तिकं गत्वा तमत्थं आरोचेसि ।

थेरो चतुपरिसमज्जे तं भिक्षुणिं मुद्धं अकासि ।

सा मुद्धा हुत्वा भिक्षुसंघं सत्थारं च वन्दित्वा भिक्षुणीहिं सद्धि उपस्सयमेव गता । सा गम्भपरिपाकमन्वाय पदुमुत्तरपादमूले पत्थितपत्थनं महानुभावं पुत्तं विजायि ।

अथेकदिवसं राजा भिक्षुणुपस्सयसमीपेन गच्छन्तो दारकसद्दं सुत्वा अमच्चे पुच्छि । अमच्चा नं कारणं अत्वा—देव ! सा दहरभिक्षुणी पुत्तं विजायि तस्सेसो सद्दोति आहंसु । [१३४]

भिक्षुणीनं भणे ! दारकपटिजगनं नाम पळिबोधो मयं नं पटिजगिस्सामाति राजा नं दारकं नाटकित्थीनं दापेत्वा कुमारपरिहारेन वड्ढापेसि । नामगहणदिवसे चस्स कस्सपोति नामं अकंसु । अथ नं कुमारपरिहारेन वड्ढितत्ता कुमारकस्सपोति संजानिसु । सो सत्तवस्सिककाले सत्थुसन्तिके पव्वजित्वा परिपुण्णवीसतिवस्सो उपसम्पदं लभित्वा गच्छन्ते गच्छन्ते काले धम्मकथिकेसु चित्रकथी अहोसि । अथ नं सत्था “एतदग्गं भिक्खवे ! मम सावकानं भिक्खून् चित्रकथीनं यदिदं कुमारकस्सपो” ति एतदग्गे ठपेसि । सो पच्छा वम्मिकमुत्ते अरहत्तं पापुणि मातापिस्स भिक्खुणी विपस्सित्वा अगगक^२लंपत्ता । कुमारकस्सपो थेरो बुद्धसासने गगनमज्जे पुण्णचन्दोविय पाकटो जातो । अथेकदिवसं तथागतो पच्छाभत्तं पिण्डपातं पटिक्कन्तो भिक्खून् ओवादं दत्वा गन्धकुट्टिं पाविसि । भिक्खू ओवादं गहेत्वा अत्तनो अत्तनो रत्तिट्ठानदिवाट्ठानेसु दिवसभागं खेपेत्वा सायण्हसमये धम्मसभायं सन्निपत्तित्वा—आवुसो ! देवदत्तेन अत्तनो अबुद्धभावेन चैव खन्तिमेत्तादीनञ्च अभावेन कुमारकस्सपत्थेरो च थेरी च उभो नासिता सम्मासम्बुद्धो पन अत्तनो धम्मराजताय चैव खन्तिमेत्तानुद्दयसम्पत्तिया च उभिन्नम्पि तेसं पच्चयो जातोति बुद्दगुणे वण्णयमाना निसीदिसु ।

सत्था बुद्धलीळ्हाय धम्मसभं आगन्त्वा पञ्जतासने निसीदित्वा—काय नुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छि ।

भन्ते ! तुम्हाकमेव गुणकथामाति सब्बं आरोचयिसु ।

न भिक्खवे ! तथागतो इदानीव इमेसं उभिन्नं पच्चयो च पतिट्ठा च जातो, पुब्बेपि अहोसि येवाति ।

भिक्षू तस्सत्थस्साविभावत्थाय भगवन्तं याचिंसु । भगवा भवन्तरेण पटिच्छन्नं कारणं पाकटमकासि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारयमाने बोधिसत्तो मिगयोनियं पटिसन्धिं गण्हि । सो मातु कुच्छित्तो निक्खन्तो सुवण्णवण्णो अहोसि । अक्खीनि चस्स मणिगुलसदिसानि अहेसु । सिंगानि रजतवण्णानि । मखं रत्तकम्बलपुञ्जवण्णं हत्थपादपरियन्ता लाखारसपरिकम्मकता विय, वाळधि चमरस्स विय अहोसि । सरीरं पनस्स महन्तं अस्सपोतप्पमाणं अहोसि । सो पञ्चसतमिगपरिवारो अरञ्जे वासं कप्पेसि । नामेण निग्रोधमिगराजा नाम । अविदूरे पनस्स अञ्जोपि पञ्चसनमिगपरिवारो साखमिगो नाम वसति । सोपि सुवण्णवण्णो व अहोसि । तेन समयेन बाराणसिराजा मिगवधप्पसुतो होति।[१३५]विना मंसेन न भुञ्जति । मनुस्सानं कम्मच्छेदं कत्वा सब्बे नेगमजानपदे सन्निपातेत्वा देवसिकं मिगवं गच्छति ।

मनुस्सा चिन्तेसुं— अयं राजा अम्हाकं कम्मच्छेदं करोति । यन्नून मयं उय्याने मिगानं निवापं वपित्वा पानीयं सम्पादेत्वा बहू मिगे उय्यानं पवेसेत्वा द्वारं बन्धित्वा रञ्जो निव्यादेस्सामाति ।

ते सब्बे उय्याने मिगानं निवापं तिणं रोपेत्वा उदकं सम्पादेत्वा द्वारं योजेत्वा वागुरानि आदाय मुग्गरादिनानावुधहत्था अरञ्जं पविसित्वा मिगे परियेसमाना मज्जे ठिते मिगे गण्हिस्सामाति योजनमत्तं ठानं परिक्खित्वा संखिपमाना निग्रोधमिगसाखमिगानं वसनट्ठानं मज्जे कत्वा परिक्खिप्पिंसु । अथ नं मिगगणं दिस्वा रुक्खगुम्वादयो च भूमिञ्च मुग्गेहि पहरन्ता मिगगणं गहनट्ठानतो नीहरित्वा असिसत्तिधनुआदीनि आवुधानि उगिरित्वा महानादं नदन्ता नं मिगगणं उय्यानं पवेसेत्वा द्वारं पिधाय राजानं उपसंकमित्वा—देव ! निबद्धं मिगवं गच्छन्ता अम्हाकं कम्मं नासेथ । अम्हेहि अरञ्जतो मिगे आनेत्वा तुम्हाकं उय्यानं पूरितं । इतो पट्ठाय तेसं मंसानि खादथाति राजानं आपुच्छित्वा पक्कमिंसु ।

राजा तेसं वचनं सुत्वा उय्यानं गत्वा मिगे ओलोकेन्तो द्वे सुवण्णमिगे दिस्वा तेसं अभयं अदासि । ततो पट्ठाय पन कदाचि सामं गत्वा एकमिगं विज्झित्वा आनेति । कदाचिस्स भत्तकारको गत्वा विज्झित्वा आहरति । मिगा धनुं दिस्वाव मरणभयेन तज्जिता पलायन्ति । द्वे तयो पहारे लभित्वा किलमन्तिपि, गिलानापि होन्ति मरणम्पि पापुणन्ति ।

मिगगणो तं पवुत्ति बोधिसत्तस्स आरोचेसि । सो साखं पक्कोसापेत्वा आह— सम्म ! बहु मिगा नस्सन्ति । एकंसेन मरितव्वे सति इतो पट्ठाय मा कण्ठेन मिगे विज्झन्तु । धम्मगण्डिकट्ठाने^१ मिगानं वारो होतु एकदिवसं मम परिसाय वारो पापुणातु, एकदिवसं तव परिसाय वारो पापुणातु । वारप्पन्तो मिगो गत्वा धम्मगण्डिकाय सोसं ठपेत्वा निपज्जतु । एवं सन्ते मिगा भीता न भविस्सन्तीति ।

सो साधूति सम्पटिच्छि ।

ततो पट्ठाय वारप्पत्तोव मिगो गत्वा धम्मगण्डिकाय गीवं ठपेत्वा निपज्जति । भत्तकारको आगन्त्वा तत्थ निपन्नकमेव गहेत्वा गच्छति ।

अयेकदिवसं साखमिगस्स परिसाय एकस्सा गम्भिनिमिगिया वारो पापुणि । सा साख उपसंकमित्वा—सामि ! अहम्हि गम्भिणी, पुत्तकं विजायित्वा द्वे जना वारं गमिस्साम, मय्हं वारं अतिक्कामेहीति आह ।

सो—न सक्का तव वारं अञ्जेसं पापेतुं, त्वमेव तुय्हं पत्तं^२ जानिस्ससि गच्छाहीति आह ।

सा तस्स[१३६]सन्तिका अनुग्गहं अलभमाना बोधिसत्तं उपसंकमित्वा तमत्थं आरोचेसि ।

सो तस्सा वचनं सुत्वा [चिन्तेसि-पुब्बे बोधिसत्ता हि परेसं दुक्खं दिस्वा अत्तनो जीवितं नापेक्खन्ति । अत्तहिततो परहितमेव तेसं गरुतरं होति ।

सयं जीवन्ति सकुणा पसू सब्बे वने मिगा ।
जीवयन्ति परे धीरा सन्तो सत्तहिते रता ॥
वित्तं अंगञ्च पाणञ्च चत्तं तेहि हिताय च ।
सो समत्थो बहू सत्ते सन्तारेस्सं सदेवके ॥
इमिना सारहीनेन कायेन च अपुञ्जता ।
अहन्ते नूनं यं लाभं लभिस्सामि अयं ध्रुव ॥ न्ति ।

इति चिन्तेत्वा आह^१]-होतु गच्छ त्व अहं ते वारं अतिक्कमिस्सामीति सयं गन्त्वा धम्मगण्डिकाय सीस कत्वा निपज्जि । भत्तकारको तं दिस्वा लद्धाभयो मिगराजा गण्डिकाय निपन्नो किन्नु खो कारणन्ति वेगेन गन्त्वा रञ्जो आरोचेसि । राजा तावदेव रथं आरुह्य महन्तेन परिवारेन आगन्त्वा बोधिसत्तं दिस्वा आह-सम्म मिगराज ! ननु मया तुम्हं अभयं दिन्नं ? कस्मा त्वं इध निपन्नोति ?

महाराज ! गम्भीणी मिगी आगन्त्वा मम वारं अञ्जस्स मिगस्स पापेहीति आह । न सकका खो पन मया एकस्स मरणदुक्खं अञ्जस्स उपरि पक्खिपितुं । स्वाहं अत्तनो जीवितं तस्सा दत्त्वा तस्सा सन्तकं मरणं गहेत्वा इध निपन्नो । मा अञ्जं किञ्चि आसंकित्थ महाराजाति ।

राजा आह-सामि ! सुवण्णवण्णमिगराज ! मया न तादिसो खन्तिमेत्तानुद्यमम्पन्नो मनुस्सेमुपि दिट्ठपुब्बो, तेन ते पसन्नोस्मि । उट्ठेहि तुय्हञ्च तस्सा च अभयं दम्मीति ।

द्वीहि अभये लद्धे अवसेसा किं करिस्सन्ति नरिन्दाति ?

अवसेसानम्पि अभयं दम्मि सामीति ।

महाराज ! एवम्पि उय्याने येव मिगा अभयं लभिस्सन्ति, सेसा किं करिस्सन्तीति ?

एतेसम्पि अभयं दम्मि सामीति ।

महाराज ! मिगा ताव अभयं लभन्तु सेसा चतुप्पदा किं करिस्सन्तीति ?

एतेसम्पि अभयं दम्मि सामीति ।

महाराज ! चतुप्पदा ताव अभयं लभन्तु दिजगणा किं करिस्सन्तीति ?

एतेसम्पि अभयं दम्मि सामीति ।

महाराज ! दिजगणा ताव अभयं लभिस्सन्ति । उदके वसन्ता मच्छा किं करिस्सन्तीति ?

एतेसम्पि अभयं दम्मि सामीति ।

एवं महासत्तो राजानं सब्बसत्तानं अभयं याचित्वा उट्ठाय राजानं पञ्चसु सीलेसु पतिट्ठापेत्वा “धम्मं चर महाराज ! मातापितुसु पुत्तधीतासु ब्राह्मणगृहपतिकेसु नेगमजानपदेसु धम्मं चरन्तो समं चरन्तो कायस्स भेदा परम्परणा सुगतिं सगं लोकं गमिस्ससीति रञ्जो बुद्धलील्लहाय धम्मं देसेत्वा कतिपाहं उय्याने वसित्वा रञ्जो ओवादं दत्त्वा मिगगणपरिवृतो अरञ्जं पाविसि । सापि खो मिगधेनु पुप्फकणिकसदिसं पुत्तं विजायि । सो कीळमानो साखमिगस्स सन्तिकं गच्छति । अथ नं माता तस्स सन्तिकं गच्छन्तं दिस्वा- पुत्त ! इतो पट्ठाय मा एतस्स सन्तिकं गच्छ निग्रोधस्सेव सन्तिकं गच्छेय्यासीति ओवदन्ती इमं गाथमाह-

निग्रोधमेव सेवेय्यं न साखमुपसंवसे ।

निग्रोर्धास्मि मतं सेय्यो यउवे साल्हास्मि जीवित ॥ न्ति । [१३७]

तत्थ निग्रोधमेव सेवेय्याति तात ! त्वं वा अञ्जो वा अत्तनो हितकामो निग्रोधमेव सेवेय्य, भजेय्य उपसंकमेय्य । न साखमपसंवसेति साखमिगं पन न उपसंवसे, उपगम्म न संवसेय्य, एतं निस्साय जीविकं न कप्पेय्य ।

निग्रोधस्मिं सतं सेय्योति निग्रोधरञ्जो पादमूले मरणम्पि सेय्यो, वरं उत्तमं । यञ्चे साखस्मिं जीवितन्ति यम्प न साखस्स सन्तिके जीवितं तं नेव सेय्यो न वरं न उत्तमन्ति अत्थो ।

ततो पट्ठाय च पन अभयलद्धका मिगा मनुस्सानं सस्सानि खादन्ति । मनुस्सा लद्धाभया इमे मिगाति पहरितुं वा पलापेतुं वा न विसहन्ति । ते राजंगणे सन्निपतित्वा रञ्जो तमत्थं आरोचेसुं । राजा मया पसन्नेन निग्रोधमिगवरस्स वरो दिन्नो । अहं रज्जं जहेय्यं न च तं पटिञ्जं । गच्छथ न कोचि मम विजिते मिगे पहरितुं लभतीति ।

निग्रोधमिगो तं पर्वत्तिं सुत्वा मिगगणं सन्निपातापेत्वा — इतो पट्ठाय परेसं सस्सं खादितुं न लभ-
थाति मिगे वारेत्वा मनुस्सानं आरोचापेसि । इतो पट्ठाय सस्सकारकमनुस्सा सस्सरक्खणत्थं वत्ति मा करोन्तु
खेतं पन आविज्झित्वा पण्णसञ्जं बन्धन्तूति । ततो पट्ठाय किर खेत्येसु पण्णबन्धनसञ्जा उदपादि । ततो पट्ठाय
पण्णसञ्जं अतिक्कमनकमिगो नाम नत्थि । अयं किर तेसं बोधिसत्ततो लद्धओवादो । एवं मिगगणं ओवदित्वा
बोधिसत्तो यावतायुकं ठत्वा सद्धि मिगेहि यथाकम्मं गतो । राजापि बोधिसत्तस्स ओवादे ठत्वा पुञ्जानि कत्वा
यथाकम्मं गतो ।

सत्था न भिक्खवे ! इदानीवाहं धेरिया च कुमारकस्सपस्स च अवस्सयो, पुब्बेपि अवस्सयो एवाति ।
इमं धम्मदेसनं आहरित्वा चतुसच्चधम्मदेसनं विनिवट्ठेत्वा द्वे वत्थूनि कथेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं
समोधानेसि । तदा साखमिगो देवदत्तो अहोसि परिसापिस्स देवदत्तपरिसाव, मिगधेनु थेरी अहोसि, पुत्तो
कुमारकस्सपो । राजा आनन्दो । निग्रोधमिगराजा पन अहमेव अहोसिन्ति ।

निग्रोधमिगजातकं

३. कण्डिनजातकं

धिरत्थुकण्डिनं सत्तलन्ति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो पुराणदुतियिकापलोभनं आरब्ध कथेसि ।
तं अट्ठनिपाते इन्द्रियजातके आविभविविस्सति ।

पच्चपन्नवत्थु

भगवा पन तं भिक्खु एतदवोच[१३८] भिक्खु! पुब्बेपि त्वं एतं मातुगामं निस्साय जीवितक्खयं पत्त्वा
वीतच्चिकेसु अंगारेसु पक्कोति ।

भिक्खू तस्सत्थस्साविभावत्थाय भगवन्तं याचिसु । भगवा भवन्तरेण पटिच्छन्नं कारणं पाकटमकासि ।

इतो परं पन भिक्खूनं याचनं भवन्तरपटिच्छन्नं तच्च अवत्वा अतीतं आहरीति एत्तकमेव ववखाम ।
एत्तके वुत्तोपि आयाचनं वलाहकगम्भतो चन्दनीहरणूपमाय भवन्तरपटिच्छन्नं कारणभावोचाति सब्बमेतं
हेट्ठा वुत्तनयेनेव योजेत्वा वेदितब्बं ।

अतीतवत्थु

अतीते मगधरट्ठे राजगहे मगधराजा रज्जं कारेति । मगधवासिकानं सस्ससमये मिगानं महापरि-
पन्थो होति । ते अरज्जे पव्वतपादं पविसन्ति । तत्थ एको अरज्जवासी पव्वतेय्यमिगो एकाय गामन्तवासिनिया
मिगपोतिकाय सद्धिं सन्धवं कत्वा तेसं मिगानं पव्वतपादतो ओम्ह्य पुन गामन्तं ओसरणकाले मिगपोतिकाय
पटिबद्धचित्तता तेहि सद्धिं येव ओतरि । अथ नं सा आह— त्वं कोसि अय्य ?

पव्वतेय्यो बालमिगो ।

गामन्तो च नाम सासंको सप्पटिभयो मा अम्हेहि सद्धिं ओतराहीति ।

सो तस्सा पटिबद्धचित्तताय अतिवत्तित्वा ताय सद्धियेव अगमासि

मगधवासिनो इदानीं मिगानं पव्वतपादा ओतरणकालोति जत्वा मग्गे पटिच्छन्नकोट्ठकेसु तिट्ठन्ति
तेसम्पि द्विन्नं आगमणम्मग्गे एको लुद्धको पटिच्छन्नकोट्ठके टितो होति । मिगपोतिका मनुस्सगन्धं घायित्वा एको
लुद्धको टितो भविस्सतीति तं बालमिगं पुरतो कत्वा सयं पच्छतो अहोसि । लुद्धको एकेन सरप्पहारेनेव मिगं तत्थेव
पातेसि । मिगपोतिका तस्स विद्धभावं जत्वा उप्पत्तित्वा वातगतिया पलायि । लुद्धको कोट्ठका निक्खमित्वा
मिगं ओक्कन्तित्वा अंगिं कत्वा वीतच्चिकेसु अंगारेसु मधुरमंसं पचित्वा खादित्वा पानीयं पिवित्वा अवसेसं
लोहितबिन्दूहि पग्घरत्तेहि काजेनादाय दारके तोसेन्तो घरं अगमासि ।

तदा बोधिसत्तो तस्मिं वनखण्डे देवता हुत्वा निब्बत्तो होति । सो तं कारणं दिस्वा इमस्स बालमिगस्स
मरणं नेव मातरं निस्साय, न पितरं निस्साय अथखो कामं विस्साय कामनिमित्तं हि सत्ता सुगतिया हत्थच्छेदादि
दुग्गतियञ्च पच्चविधबन्धनादिनानप्पकारकं दुक्खं पापुणन्ति परेसं मरणदुक्खुप्पादनम्पि नाम इमस्मिं लोके
गरहितमेव । यं जनपदं मातुगामो विचारति अनुसासति सो इत्थिपरिनायको जनपदोपि गरहितो वये सत्ता मातु-
गामस्स वसं गच्छन्ति तेपि गरहिता ये वाति एकाय गाथाय तीणि गरहवत्थूनि दस्सेत्वा वनदेवतासु साधुकारं
दत्वा गन्धपुष्पादीहि पूजयमानासु मधुरेण सरेण तं वनखण्डं उन्नादेन्तो इमाय गाथाय धम्मं देसेसि —[१३९]

धिरत्थुकण्डिनं सत्तलं पुरिसं गाळ्हबेधिनं,

धिरत्थु तं जनपदं यत्थित्थो परिनायिका ।

तेचापि धिक्किता सत्ता ये इत्थीनं वसं गताति ।

तत्थ धिरत्थूति गरहणत्थे निपातो, स्वायमिध उत्तासउब्बेगवसेन गरहणे दट्ठब्बो । उत्तसितुब्बिग्गो हि होन्तो बोधिसत्तो एवमाह । कण्डमस्स अत्थीति कण्डी । नं कण्डिनं । तंपन कण्डं अनुपविसनट्ठेन सल्लन्ति वुच्चति । तस्मा कण्डिनं सल्लन्ति एत्थ सल्लं कण्डिनन्ति अत्थो । सल्लं वा अस्स अत्थीति सल्लो । तं सल्लं च महत्तं वणमुखं कत्वा बलवप्पहारं देन्तो गाल्हं विज्झतीति गाल्हवेधी । तं गाल्हवेधिनं । नानप्पकारकेन कण्डेन कुमुदपत्तसण्ठान-फलेन उजुक्कगमनेनेव सल्लेन च समन्नागतं गाल्हवेधिनं पुरिसं धिरत्थूति अयमेत्थ अत्थो । परिनायिकाति इस्सरा-संविधायिका । धिक्किताति गरहिता । सेसमेत्थ उत्तानत्थ मेव । इतो परं पन एत्तकम्पि अवत्वा यं यं अनुत्तानं तं तदेव वण्णयिस्साम । एवं एकाय गाथाय तीणि गरहवत्थूनि दस्सेत्वा बोधिसत्तो वनं उन्नादेत्वा बुद्धलील्हाय धम्मं देसेसि ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने उक्कण्ठितभिक्खु सोतापत्ति-फले पतिट्ठहि । सत्था द्वे वत्थूनि कथेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । इतो परं पन द्वे वत्थूनि कथेत्वाति इमं अवत्वा अनुसन्धि घटेत्वाति एत्तकमेव वक्खाम । अवुत्तम्पि पन हेट्ठावुत्तनयेनेव योजेत्वा गहेतब्बं । तदा पब्बतेय्यो मिगो उक्कण्ठितभिक्खु अहोसि । मिगपोतिका पुराणदुतियिका । कामेसु दोसं दस्सेत्वा धम्मं देसिकदेवता पन अहमेव अहोसिन्ति ।

कण्डिनजातकं

४. वातमिगजातकं

न किरिथि रसेहि पापियोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो चुल्लपिण्डपातिकतिस्सत्थेरं आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

सत्थरि किर राजगहं उपनिस्साय वेळुवने विहरन्ते तिस्सकुमारो नाम महाविभवस्स सेट्ठकुलस्स पुत्तो एकदिवसं वेळुवनं गन्त्वा सत्थुधम्मदेसनं सुत्वा पब्बजितुकामो पब्बज्जं याचित्वा मातापितृहि अननुञ्जातत्ता पटिक्खित्तो सत्ताहं भत्तच्छेदं कत्वा रट्ठपालत्थेरो विय मातापितरो आनुजानापेत्वा सत्थु सन्तिके पब्बजि । सत्था तं पब्बाजेत्वा अद्धमासमत्तं वेळुवने विहरित्वा जेतवनं अगमासि । तत्रायं कुलपुत्तो तेरसधुतंगानि [१४०] समादाय सावत्थियं सपदानं पिण्डाय चरमानो कालं वीतिनामेसि । चुल्लपिण्डपातिकतिस्सत्थेरो नामाति वुत्तो गगनतले चन्दो विय बुद्धसासने पाकटो पञ्जातो अहोसि ।

तस्मिं काले राजगहे नक्खत्तकीलाय वत्तमानाय थेरस्स मातापितरो यं तस्स गिहीकाले अहोसि । आभरणभण्डकं तं रजतचंगोटके निक्खपित्वा उरे ठपेत्वा अञ्जासु नक्खत्तकीळासु अम्हाकं पुत्तो इमिना इमिना अलंकारेन अलंकतो नक्खत्तं कीळति तं नो एकपुत्तकं गहेत्वा समणो गोतमो सावत्थिनगरं गतो, कहं नुखो सो एतरहि निसिन्नो, कहं ठितोति वत्ता रोदन्ति ।

अथेका वण्णदासी तं कुलं गन्त्वा सेट्ठभरियं रोदन्तिं दिस्वा पुच्छि—किं अय्ये रोदसीति ? सा तमत्थं आरोचेसि ।

किं पन अय्ये ! अय्यपुत्तो पियायतीति ?

असुकञ्च असुकञ्चाति ।

सचे तुम्हे इमस्मिं गेहे सब्बं इस्सरियं मय्हं देथ अहं वो पुत्तं आनेस्सामीति ।

सेट्ठभरिया साधूति सम्पाटिच्छित्वा परिब्वयं दत्वा महन्तेन परिवारेन तं उय्योजेसि-गच्छ अत्तनो बलेन मम पुत्तं आनेहीति ।

सा पटिच्छन्नयाने निसिन्ना सावत्थिं गन्त्वा थेरस्स भिक्खाचारवीथियं निवासं गहेत्वा सेट्ठकुला आगतमनुस्से थेरस्स अदस्सेत्वा अत्तनो परिचारेनेव परिवुतो थेरस्स पिण्डाय पविट्ठस्स आदितोव उलुङ्कभिक्खं रसकभिक्खञ्च दत्वा रसतण्हाय बन्धित्वा, अनुक्कमेन गेहे निसीदापेत्वा भिक्खं ददमाना थेरस्स अत्तनो वसं उपगतभावं जत्वा गिलानालयं दस्सेत्वा अन्तोगब्भे निपज्जि ।

थेरोपि भिक्खाचारवेलाय सपदानं चरन्तो गेहद्वारं अगमासि । परिजनो थेरस्स पत्तं गहेत्वा थेरं घरे निसीदापेसि । थेरो निसीदित्वाव कहं उपासिकाति पुच्छि ।

गिलाना भन्ते ! तुम्हाकं दस्सनं इच्छतीति ।

सो रसतण्हाय बद्धो अत्तनो वतसमादानं भिन्दित्वा तस्सा निपन्नट्ठानं पाविसि । सा अत्तनो आगत कारणं कथेत्वा तं पलोभेत्वा रसतण्हाय बन्धित्वा उप्पब्बाजेत्वा अत्तनो वसे ठपेत्वा याने निसीदापेत्वा महन्तेन परिवारेन राजगहमेव अगमासि ।

सा पवुत्ति पाकटा जाता । भिक्खू धम्मसभायं सन्निसिन्ना चुल्लपिण्डपातिकतिस्सत्थेरं किर एका वण्णदासी रसतण्हाय बन्धित्वा आदाय गताति कथं समुट्ठापेसुं ।

सत्था धम्मसभं उपगन्त्वा अलंकतासने निसीदित्वा काय नुत्थ भिक्ख वे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति आह ।

तेतं पवृत्तिं कथयिषु।

न भिक्खवे ! इदानीं एसो भिक्खु रसतण्हाय वज्झित्वा तस्सा वसं गतो, पुब्बेपि तस्सा वसं गतो
येवाति वत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं रञ्जो ब्रह्मदत्तस्स सञ्जयो नाम उय्यानपालो आहोसि । अथेको वातमिगो तं
उय्यानं आगन्त्वा सञ्जयं दिस्वा पलायति । सञ्जयोपि न तं तज्जेत्वा [१४१] नीहरति । सो पुनप्पुनं आगन्त्वा
उय्याने येव चरति । उय्यानपालो पातोव उय्याने नानप्पकारकानि पुप्फफलानि गहेत्वा दिवसे दिवसे
रञ्जो अभिहरति ।

अथ नं एकदिवसं राजा पुच्छि-अत्थि पन सम्म उय्यानपाल ! उय्याने किञ्चि अच्छरियं पस्ससीति ।

देव ! अञ्जं न पस्सामि एको पन वातमिगो आगन्त्वा उय्याने चरति एतं पस्सामीति ।

सक्खिस्ससि पन तं गहेतुन्ति ?

थोकं मधुं लभन्तो इमं अन्तो राजनिवेसनम्पि आनेतुं सविखरसामीति ।

राजा तस्स मधुं दापेसि । सो तं गहेत्वा उय्यानं गन्त्वा वातमिगस्स चरणट्ठानं तिणानि मधुना
मक्खेत्वा निलीयि । मिगो आगन्त्वा मधुमक्खितानि तिणानि खादित्वा रसतण्हाय बद्धो अञ्जं अगन्त्वा उय्यानमेव
आगच्छति । उय्यानपालो तस्स मधुमक्खिततिणेसु पलुद्धभावं अत्वा अनुक्कमेन अत्तानं दस्सेसि ।

सो तं दिस्वा कतिपाहं पलायित्वा पुनप्पुनं पस्सन्तो विस्सासं आपज्जित्वा अनुक्कमेन उय्यानपालस्स
हत्थे ठिततिणानि खादितुं आरब्धो । सो तस्स विस्सासं आपन्नभावं अत्वा याव राजनिवेसना बीथि किलञ्जेहि
परिक्खित्वा तहं तहं साखाभंगं पातेत्वा मधुलाबुकं अंसे लग्गेत्वा तिणकलापं उपकच्छके ठपेत्वा मधुमक्खितानि
तिणानि मिगस्स पुरतो पुरतो विकिरन्तो अन्तो राजनिवेसनं येव अगमासि । मिगे अन्तो पविट्ठे द्वारं पिदिहिमु ।
मिगो मनुस्से दिस्वा कम्पमानो मरणभयभित्तो अन्तो निवेसनंगणे आधावति परिधावति ।

राजा पासादा ओरुय्ह तं कम्पमानं दिस्वा वातमिगो नाम मनुस्सानं दिट्ठट्ठानं सत्ताहं न गच्छति
तज्जितट्ठानं यावजीवं न गच्छति , सो एवरूपो गहननिस्सितो वातमिगो रसतण्हाय बद्धो इदानी एवरूपं ठानं
आगतो । नत्थि वत भो ! लोके रसतण्हाय पापकतरं नामाति इमाय गाथाय धम्मदेसनं पट्ठपेसि -

न किरत्थि रसेहि पापियो आवासेहि वा सन्थवेहि वा ।

वातमिगं गहननिस्सितं वसमानेसि रसेहि सञ्जयो ॥ ति ।

तत्थ किराति अनुस्सनवत्थे निपातो । रसेहीति जिह्वाविञ्जेय्येहि मधुरम्बिलादीहि । पापियोति
पापतरो । आवासेहि वा सन्थवेहि वाति निबद्धवसनट्ठानसंखातेसु हि आवासेसुपि भित्तसन्थवेसुपि छन्दरागो पाप-
कोव तेहि पन सच्छन्दरागपरिभोगेहि आवासेहि वा भित्तसन्थवेहि वा सतगुणेन सहस्सगुणेन च धुवपटिसेवनट्ठेन
आहारं विना जीवितिन्द्रियपालनाय अभावेन च सच्छन्दरागपरिभोगरसाव पापतराति । बोधिसत्तो पन अनुस्स-
वागतं मिगं विय इममत्थं कत्वा न किरत्थि रसेहि पापियो आवासेहि वा सन्थवेहि वाति आह । इदानी तेसं पापिय-
भावं दस्सेन्तो वातमिगन्ति आदिमाह । तत्थ गहननिस्सितन्ति [१४२] गहनट्ठाननिस्सितं, इदं वुत्तं होति-पस्सथ
रसानं पापियभावं इमं नाम अरञ्जायतने गहननिस्सितं वातमिगं सञ्जयो उय्यानपालो मधुरसेहि अत्तनो वसं
आनेसि । सब्बथापि सच्छन्दरागपरिभोगेहि रसेहि समं नाम अञ्जं पापकतरं लामकतरं नत्थीति रसतण्हाय
आदीनवं कथेसि कथेत्वा च पन तं मिगं अरञ्जमेव पेसेसि ।

सत्था न भिक्खवे ! सा वण्णदासी इदानीवेतं रसतण्हाय बन्धित्वा अत्तनो वसे करोति पुब्बेपि अकासि
येवाति । इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा सञ्जयो अयं वण्णदासी अहोसि ।
वातमिगो चुल्लपिण्डपातिको, बाराणसि राजा पन अहमेव अहोसिन्ति ।

५. खरादियजातकं

अठ्ठपुरं खरादियेति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अञ्जतरं दुब्बचभिक्षुं आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

सो किर भिक्षु दुब्बचो ओवादं न गण्हाति । अथ नं सत्था पुच्छि-सच्चं किर त्वं भिक्षु ! दुब्बचो ओवादं न गण्हासीति ?

सच्चं भगवाति ।

सत्था-पुब्बेपि त्वं दुब्बचताय पण्डितानं ओवादं अगहेत्वा पासेन बद्धो जीवितक्खयं पत्तोति वत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो मिगो हुत्वा भिगगणपरिवुतो अरञ्जे वसति ।

अथस्स भगिनी मिगी पुत्तकं दस्सेत्वा भातिक ! अयं ते भागिनेय्यो, एतं मिगमायं उग्गण्हा-
पेहीति पटिच्छापेसि ।

सो तं भागिनेय्यं असुकवेलाय नाम आगन्त्वा उग्गण्हाहीति आह ।

सो वृत्तवेलाय नागच्छति । यथा एकदिवसं एवं सत्तदिवसे सत्तोवादे अतिक्कन्तो सो मिगमायं अनु-
गण्हेत्वाव विचरन्तो पासे बज्झि । मातापिस्स भातरं उपसंकमिन्त्वा किं ते भातिक ! भागिनेय्यो मिगमायं
उग्गण्हापितोति पुच्छि ।

बोधिसत्तो च तस्स अनोवादकस्स मा चिन्तयि न ते पुत्तेन मिगमाया उग्गहिताति वत्वा इदानिपि
तं अनोवदितुकामोव हुत्वा इमं गाथमाह-

‘अट्ठखुरं खरादिये मिगं वंकातिवकिनं ।

सत्तकालेहतिक्कन्तं न नं ओवदितुस्सहे ॥’ ति ।

तत्थ अट्ठखुरन्ति एकेकस्मि पादे द्विस्सं द्विस्सं खुरानं वसेन अट्ठखुरं । खरादियेति तं नामेन आलपति ।
मिगन्ति सब्बसंगाहिकवचनं । वंकातिवकिनन्ति मूले वंकानि अग्रे अतिवंकानीति वंकातिवंकानि । तादिसानि
सिगानि अस्स अत्थीति वंकातिवंकी, तं [१४३] वंकातिवकिनं । सत्तकालेहतिक्कन्तेति सत्तहि ओवादकालेहि
ओवादं अतिक्कन्तं । न तं ओवदितुस्सहेति एवं दुब्बचमिगं अहं ओवदितुं न उस्सहामि । एतस्स मे ओवादत्थाय
चित्तम्पि न उप्पज्जतीति दस्सेति । अथ नं दुब्बचमिगं पासे बद्धं लुट्ठो मारेत्वा मंसं आदाय पक्कामि ।

सत्थापि न त्वं भिक्षु ! इदानेव दुब्बचो पुब्बेपि दुब्बचो येवाति । इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि
घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा भागिनेय्यो मिगो दुब्बचभिक्षु अहोसि । भगिनी उप्पलवण्णा । ओवादकमिगो
पन अहमेव अहोसिन्ति ।

खरादियजातकं

६. तिपल्लत्थमिगजातकं

मिगन्ति पल्लत्थन्ति इदं सत्था कोसम्बियं बदरिकारामे विहरन्तो सिक्खाकामं राहुलत्थेरं आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

एकस्मिं हि काले सत्थरि आळविनगरं निस्साय अग्गाळवे चेतिये विहरन्ते बहू उपासका च उपासिका च भिक्खू च भिक्खुणियो च विहारं धम्मसवणाय गच्छन्ति । दिवा धम्मसवनं होति । गच्छन्ते पन काले उपासिका च भिक्खुणियो च न गच्छिमु । भिक्खू चैव उपासका च अहेसु । ततो पट्ठाय रत्ति धम्मसवनं जातं । धम्मसवनपरियोसाने थेरा भिक्खू अत्तनो अत्तनो वसनट्ठानानि गच्छन्ति । दहरा उपासकेहि सद्धि उपट्ठान-सालायं सयन्ति । तेसु निदं उपगतेसु एकच्चे घुरुघुरुपस्सासा काकच्छमाना दन्ते खादन्ता निपज्जिसु । एकच्चे मुहुत्तं निदायित्वा उट्ठहिंसु । तेसं तं विप्पकारं दिस्वा भगवतो आरोचेसु ।

भगवा “यो पन भिक्खु अनुपसम्पन्नेन सह सेय्यं कप्पेय्य पाचित्तियन्ति” सिक्खापदं पञ्जापेत्वा कोसम्बि अगमासि ।

तत्थ भिक्खू आयस्मन्तं राहुलं आहंमु-आवुसो राहुल ! भगवता सिक्खापदं पञ्जत्तं, इदानीं त्वं अत्तनो वसनट्ठानं जानाहीति ।

पुब्बे पन ते भिक्खू भगवति च गारवं तस्स चायस्मतो सिक्खीकामतं पटिच्च तं अत्तनो वसनट्ठानं आगतं अतिविय संगहन्ति । खुद्दकमञ्चकं पञ्जापेत्वा उस्मीसकरणत्थाय चीवरं देन्ति । तं दिवसं पन सिक्खा-पदभयेन वसनट्ठानम्पि नादंसु ।

राहुलभट्ठोपि पिता मेति दसवलस्स वा उपज्झायो मेति धम्मसेनापतिनो वा, आचरियो मेति महा-मोग्गल्लानस्स वा चुल्लपिता मेति आनन्दत्थेरस्स वा सन्तिकं अगन्त्वा दसवलस्स वलञ्जनवच्चकुटिं ब्रह्मविमानं पविसन्तो विय पविसित्वा वासं कप्पेसि । [१४४]

बुद्धानं हि वलञ्जनकुटिया द्वारं सुपिहितं होति । गन्धधूपपरिभण्डकता भूमि गन्धदाममालादामानि ओसारितानेव होन्ति सब्बरत्ति दीपो झायति । राहुलभट्ठो पन न तस्मा कुटिया इमं सम्पत्तिं पटिच्च तत्थ वासं उपगतो । भिक्खूहि पन वसनट्ठानं जानाहीति वुत्तता ओवादगारवेन सिक्खाकामताय तत्थ वासं उपगतो ।

अन्तरन्तरा हि भिक्खूपि तं आयस्मन्तं दूरतोवागच्छन्तं दिस्वा तस्स वीमंसनत्थाय अन्तोमुट्ठि-सम्मुञ्जन्ति वा कचवरछड्डनिकं वा बहि खिपित्वा तस्मिं आगते आवुसो ! इमं केन छड्डिनन्ति वदन्ति । तत्थ केहिचि राहुलो इमिना मग्गेन गतोति वुत्ते सो आयस्मा नाहं भन्ते ! एतं जानामीति अवत्त्वा तं पटिसामेत्वा खमथ मे भन्तेति खमापेत्वा गच्छति । एवमेव सिक्खाकामो । सो तं सिक्खाकामतं येव पटिच्च तत्थ वासं उपगतो ।

अथ सत्था पुरे अरुणं येव वच्चकुटिद्वारे ठत्वा उक्कामि । सोपायस्मा उक्कामि । को एमोति ?

अहं राहुलोति निक्खमित्वा वन्दि ।

कस्मा त्वं राहुल ! इध निपन्नोति ?

वसनट्ठानस्स अभावतो । पुब्बे हि भन्ते ! भिक्खू मम संगहं करोन्ति, इदानीं अत्तनो आपत्तिभयेन वसनट्ठानं न देन्ति । स्वाहं इदं अञ्जेसं असंघट्टनट्ठानन्ति इमिना कारणेन इध निपन्नोति ।

अथ भगवतो राहुलं ताव भिक्खू एवं परिच्वजन्ता अञ्जे कुलदारके पब्बाजेत्वा किं करिस्सन्तीति धम्मसंवेगो उदपादि । अथ भगवा पातोव भिक्खू सन्निपातेत्वा धम्मसेनापतिं पटिपुच्छि—जानासि पन त्वं सारिपुत्त ! अञ्ज कत्थचि राहुलस्स वुत्थभावन्ति ?

न जानामि भन्तेति ।

सारिपुत्त ! अञ्ज राहुलो वच्चकुटियं वसि । सारिपुत्त ! तुम्हे राहुलं एवं परिच्वजन्ता अञ्जे कुलदारके पब्बाजेत्वा किं करिस्सथ ? एवं हि सन्ते इमस्मिं सासने पब्बजिता निप्पतिट्ठा भविस्सन्ति । इतोदानि पट्ठाय अनुपसम्पन्नेन एकद्वेव दिवसे अत्तनो सन्तिके वसायेत्वा ततियदिवसे तेसं वसनट्ठानं ज्ञत्वा बहि वासे-
थाति इमं अनुप्पज्जन्ति कत्वा पुन सिक्खापदं पञ्जापेमि ।

तस्मिं समये धम्मसभायं सन्निसिन्ना भिक्खू राहुलस्स गुणकथं कथेन्ति—पस्सथावुसो ! याव सिक्खा-
कामो वतायं राहुलो । ‘तव वसनट्ठानं जानाहीति’ वुत्तो नाम अहं दसवलस्स पुत्तो, तुम्हे के सेनासनस्स ? तुम्हे
येव निक्खमथाति एकभिक्खुम्पि अप्पटिप्फरित्वा वच्चकुटियं वासं कप्पेसीति । एवं तेमु कथयमानेसु सत्था
धम्मसभं उपगन्त्वा अलंकतासने निसीदित्वा काय नुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति आह ।

भन्ते ! राहुलस्स सिक्खाकामकथाय, न अञ्जाय कथायाति ।

सत्था न भिक्खवे ! राहुलो इदानीव सिक्खाकामो पुब्बे तिरच्छानयोनियं निब्बत्तोपि सिक्खाकामो
येवाति वत्वा अतीतं आहरि—[१४५]

अतीतवत्थु

अतीते राजगहे एको मगधराजा रज्जं कारेति । तदा बोधिसत्तो मिगयोनियं निब्बत्तित्वा मिगगण-
परिवृतो अरञ्जे वसति । अथस्स भगिनी अत्तनो पुत्तकं उपनेत्वा भातिक ! इमं ते भागिनेय्यं मिगमायं सिक्खा-
पेहीति आह ।

बोधिसत्तो साधूति पटिस्सुणित्वा—गच्छ तात ! असुकवेलाय नाम आगन्त्वा सिक्खेय्यासीति आह ।

सो मातुलेन वुत्तवेलं अनतिककमित्वा तं उपसंकमित्वा मिगमायं सिक्खि । सो एकदिवसं वने विचरन्तो
पासेन बद्धो वद्धरावं रवि । मिगगणो पलायित्वा—‘पुत्तो ते पासेन बद्धोति’ तस्स मातुया आरोचेसि ।

सा भातुसन्तिकं गन्त्वा— भातिक ! भागिनेय्यो ते मिगमायं सिक्खापितोति पुच्छि ।

बोधिसत्तो मा त्वं पुत्तस्स किञ्चि पापकं आसंकि । सुगहीता नेन मिगमाया । इदानी तं हासय-
मानो आगच्छिस्सतीति वत्वा इमं गाथमाह—

“मिगं तिपल्लत्थमनेकमायं अट्ठखुरं अड्ढरत्तावपायि ।

एकेन सोतेन छमास्ससन्तो छहि कलाहतिभोति भागिनेय्यो ॥” ति ।

तत्थ मिगन्ति भागिनेय्यमिगं । तिपल्लत्थन्ति पल्लत्थं वुच्चति सयनं उभोहि पस्सेहि उज्जुक्मेव च
गोनिस्सिन्नकवसेनाति तीहाकारेहि पल्लत्थं अस्स तीणि वा पल्लत्थानि अस्साति तिपल्लत्थो । तं तिपल्लत्थं ।
अनेकमायन्ति बहुमायं, बहू वज्जन्तं । अट्ठखुरन्ति एकेकस्मिं पादे द्विनं-द्विन्नं खुरानं वसेन अट्ठहि खुरेहि समन्ना-
गतं । अड्ढरत्तावपायन्ति पुरिमयामं अतिक्कमित्वा मज्झिमयामे अरञ्जतो आगम्म पानीयस्स पिवनतो अड्ढरत्ते
आपं पिवतीति अड्ढरत्तावपायी तं । अड्ढरत्ते आपं अपायिन्ति अत्थो । मम भागिनेय्यं मिगं अहं साधुकं मिगमायं
उगगण्हापेसि । कथं ? यथा एकेन सोतेन छमास्ससन्तो छहि कलाहतिभोति भागिनेय्योति । इदं वुत्तं होति अहं
हि तव पुत्तं तथा उगगण्हापेसि न यथा एकस्मिं उपरिमनासिकसोते वातं सन्निरुम्हत्वा पठविया अल्लीनेन एकेन
हेट्ठिमसोतेन तत्थेव छमायं अस्ससन्तो छहि कलाहि लुहुकं अतिभोति छहि कोट्ठासेहि अज्झोत्थरति, वज्जेतीति
अत्थो । कतमाहि छहि? चत्तारो पादे पसारित्वा एकेन पस्सेन सेय्याय, खुरेहि तिणपंसुखणनेन, जि ह्वानिन्नामनेन,

उदरस्स उद्धुमातभावकरणेन, उच्चारपस्सावविस्सज्जनेन वातसन्निरुम्भनेनाति । अपरो नयो—पादेसु^१ गहेत्वा अभिमुखाकड्ढनेन, पटिप्पणामनेन उभतो पस्सेसु सञ्चरणेन उदरं उद्धं उक्खिपनेन अधो अवक्खिपनेनाति इमाहि छहि कलाहि यथा अतिभोति मतो अयन्ति सञ्चं उप्पादेत्वा वञ्चेति । एवं तं मिगमायं उग्गण्हापेसिन्ति दीपेति । अपरो नयो— तथा नं उग्गण्हापेसिं [१४६] यथा एकेन सोतेन छमास्ससन्तो छहि कलाहति द्वेसुपि नयेसु दस्सितेहि छहि कारणेहि कलाहति कलायिस्सति ळुद्धकं वञ्चेस्सतीति अत्थो । भोतीति भगिनि आलपति । भागिनेय्योति एवं छहि कारणेहि वञ्चनकं भागिनेय्यं निदिसति ।

एवं बोधिसत्तो भागिनेय्यस्स मिगमायाय साधुकं उग्गहितभावं दस्सेन्तो भगिनि समस्सासेसि । सोपि मिगपोतको पासे बद्धो अविप्फन्दित्वा येव भूमियं महाफासुकपस्सेन पादे पसारत्वा निपन्नो पादानं आसन्न-
दठाने सुरेहेव पहरित्वा पंमुं च तिणानि च उप्पाटेत्वा उच्चारपस्सावं विस्सज्जेत्वा सीसं पातेत्वा जिह्वं निन्नामेत्वा सरीरं खेलकिलिन्नं कत्वा वानग्गहणेन उदरं उद्धुमातकं कत्वा अक्खीनि परिवत्तेत्वा हेट्ठानासिका-
सोतेन वातं सञ्चरापेन्तो उपरिमनासिकासोतेन वातं सन्निरुम्भित्वा सकलसरीरं थद्धभावं गाहापेत्वा मनाकारं दस्सेसि । नीलमक्खिकापि नं परिवारेसुं । तस्मिं तस्मिं ठाने काका निलीयिमु ।

ळुद्धो आगन्त्वा उदरे हत्थेन पहरित्वा पातोव बद्धो भविस्सति पूतिको जातोति तस्स बन्धनरज्जुकं मोचेत्वा एत्थेवदानि नं उक्कन्तित्वा मंसं आदाय गमिस्सामीति निरासंको हुत्वा साखापलासं गहेतुं आरद्धो ।

मिगपोतकोपि उट्ठाय चतुहि पादेहि ठत्वा कायं विधुनित्वा गीवं पसारत्वा महावातेन छिन्नबलाहको विद्य वेगेन मानुसन्तिकं अगमासि ।

सत्थापि न भिक्खवे ! राहुलो इदानीव सिक्खाकामो पुब्बेपि सिक्खाकामोयेवाति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा भागिनेय्यमिगपोतको राहुलो अहोसि, माता उप्पल-
वण्णा, मातुलमिगो पन अहमेव अहोसिन्ति ।

तिपल्लत्थमिगजातकं

७. मालुतजातकं

काले वा यदि वा जुण्हेति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो द्वे बुद्धपब्बजिते आरब्भ कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

ते किर कोसलजनपदे एकस्मिं अरञ्जवासे वसन्ति । एको काळत्थेरो नाम, एको जुण्हत्थेरो नाम । अथेकदिवसं जुण्हो काळं पुच्छि—भन्ते काल ! सीतं नाम कस्मिं काले होतीति ?

सो काळे सीतं होतीति आह ।

अथेकदिवसं काळो जुण्हं पुच्छि— भन्ते जुण्ह ! सीतं नाम कस्मिं काले होतीति ?

सो जुण्हे होतीति आह ।

ते उभोपि अत्तनो कंखं छिन्दितुं असक्कोन्ता सत्थु सन्तिकं [१४७] गत्त्वा सत्थारं वन्दित्वा— भन्ते ! सीतं नाम कस्मिं काले होतीति पुच्छिसु ।

सत्था तेसं कथं सुत्वा पुब्बेपाहं भिक्खवे ! तुम्हाकं इमं पञ्चं कथेसि, भवसंखेपगतत्ता पन न सत्तलक्ख- यित्थाति वत्ता अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते एकस्मिं पब्बतपादे सीहो च व्यग्घो च द्वे सहायका एकस्सा येव गुहाय वसन्ति । तदा बोधि- सत्तोपि इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा तस्मिं येव पब्बतपादे वसति । अथेकदिवसं तेसं सहायकानं सीतं निस्साय विवादो उदपादि । व्यग्घो काळे येव सीतं होतीति आह—सीहो जुण्हे येवाति । ते उभोपि अत्तनो कंखं छिन्दितुं असक्कोन्ता बोधिसत्तं पुच्छिसु । बोधिसत्तो इमं गाथमाह—

“काळे वा यदि वा जुण्हे यदा वायति मालुतो ।

वातजानि हि सीतानि उभोत्थमपराजिता !” ति ।

तत्थ काले वा यदि वा जुण्हेति काळपक्खे वा जुण्हपक्खे वा । यदा वायति मालुतोति यस्मिं समये पुरत्थिमादिभेदो वातो वायति तस्मिं समये सीतं होति । किं कारणा ? वातजानि हि सीतानि यस्मा वाते विज्ज- न्तेयेव सीतानि होन्ति, काळे पक्खे वा जुण्हपक्खे वा एत्थ अप्पमाणन्ति वुत्तं होति । उभोत्थमपराजिताति उभोपि तुम्हे इमस्मिं पञ्चे अपराजिताति । एवं बोधिसत्तो ते सहायके पञ्जापेसि ।

सत्थापि भिक्खवे ! पुब्बेपि मया तुम्हाकं अयं पञ्चो कथितोति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेसि, सच्चपरियोसाने द्वेपि ते थेरा सोतापत्तिफले पतिट्ठहिंसु । सत्था अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा व्यग्घो काळो अहोसि, सीहो जुण्हो अहोसि । पञ्चविस्सजनकतापसो पन अहमेव अहोसिन्ति ।

मालुतजातकं

८. मतकभत्तजातकं

एवं चे सत्ता जानेयुन्ति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो मतकभत्तं आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

तस्मिं हि काले मनुस्सा बहू अजेळकादयो मारेत्वा कालकते जातके उद्दिस्स मतकभत्तं नाम देन्ति । भिक्खू ते मनुस्से तथा करोन्ते दिस्वा सत्थारं पुच्छिमु—एतरहि भन्ते ! मनुस्सा बहू पाणे जीवितक्खयं पापेत्वा मतकभत्तं नाम देन्ति । अत्थि नु खो भन्ते ! एत्थ वड्ढीति ?

सत्था न भिक्खवे ! मतकभत्तं दस्सामीति कतेपि पाणातिपाते काचि वड्ढि नाम अत्थि । पुब्बेपि पण्डिता आकासे निसज्ज[१४८]धम्मं देसेत्वा एत्थ आदीनवं कथेत्वा सकलजग्गुदीपवासिके एतं कम्मं जहापेसु । इदानि पन भवसंखेपगतत्ता पुन पानुभूतन्ति वत्वा अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते एको तिण्णं वेदानं पारगू दिसापामोक्खो आचरियब्राह्मणो मतकभत्तं दस्सामीति एकं एळकं गाहापेत्वा अन्तेवासिके आह—ताता ! इमं एळकं नदि नेत्वा नहापेत्वा कण्ठे मालं परिक्षिपित्वा पच्चंगुलिकं दत्वा मण्डेत्वा आनेथाति ।

ते साधूति पटिस्सुणित्वा तं आदाय नदिं गन्त्वा नहापेत्वा मण्डेत्वा नदितीरे उपेसु । सो एळको अत्तनो पुब्बकम्मं दिस्वा एवरूपा नाम दुक्खा अज्ज मुञ्चिस्सामीति सोमनस्सजातो घटं भिन्दन्तो विय महाहसितं हसित्वा, पुन अयं ब्राह्मणो मं घातेत्वा मया लद्धं दुक्खं लभिस्सतीति ब्राह्मणे कारुञ्ज उप्पादेत्वा महन्तेन सदेन परोदि ।

अय नं ते माणवका पुच्छिमु—सम्म एळक ! त्वं महासदेन हसि चेव रोदि च । केन नुखो कारणेन हसि केन कारणेन रोदीति ?

तुम्हे मं इमं कारणं अत्तनो आचरियस्स सन्तिके पुच्छेय्याथाति ।

ते तं आदाय गन्त्वा इदं कारणं आचरियस्स आरोचेसु । आचरियो तेसं वचनं सुत्वा एळकं पुच्छि—कस्मा त्वं एळक ! हसि, कस्मा रोदीति ?

एळको अत्तनो कतकम्मं जातिस्सरजाणेन अनुस्सरित्वा ब्राह्मणस्स कथेसि—अहं ब्राह्मण ! पुब्बे तादिसोव मन्तज्जायकब्राह्मणो हुत्वा मतकभत्तं दस्सामीति एकं एळकं मारेत्वा अदासि । स्वाहं एकस्स एळकस्स घातितत्ता एकेनूनेसु पच्चसु अत्तभावसतेसु सीसच्छेदं पापुणि । अयं भे कोटियं ठितो पच्चसतिमो अत्तभावो । स्वाहं अज्ज एवरूपा दुक्खा मुञ्चिस्सामीति सोमनस्सजातो । इमिना कारणेन हसि । रोदन्तो पन अहं ताव एकं एळकं मारेत्वा पच्चजातिसतानि सीसच्छेददुक्खं पत्वा अज्ज तस्मा दुक्खा मुञ्चिस्सामि । अयं पन ब्राह्मणो मं मारेत्वा अहं विय पच्चजातिसतानि सीसच्छेददुक्खं लभिस्सतीति तयि कारुञ्जेन रोदिन्ति ।

एळक ! मा भायि । नाहं तं मारेस्सामीति ।

ब्राह्मण ! किं वदेसि ? तयि मारेन्तेपि अमारेन्तेपि न सक्का अज्ज मया मरणा मुञ्चितुन्ति ।

एळक ! मा भायि ! अहं ते आरक्खं गहेत्वा तया सद्धि येव विचरिस्सामीति ।

ब्राह्मण ! अप्पमत्तको तव आरक्खो मया कतपापं पन महत्तं बलवन्ति ।

ब्राह्मणो एलकं मुञ्चित्वा इमं एलकं कस्सचिपि मारेतुं न दस्सामीति अन्तेवासिके आदाय एलकेनेव सद्धिं विचरि । एलको विस्सट्ठमतोव एकं पासाणपिट्ठिं निस्साय जातगुम्बे गीवं उक्खि[१४९] पित्वा पण्णानि खादितुं आरद्धो । तं खणं येव तस्मिं पासाणपिट्ठे असनि पति । ततो एका पासाणसकलिका छिज्जित्वा एलकस्स पसारितगीवाय पतित्वा सीसं छिन्दि । महाजनो सन्निपति । तदा बोधिसत्तो तस्मिं ठाने रुक्खदेवता हुत्वा निब्बत्तो । सो पस्सन्तस्सेव तस्स महाजनस्स देवतानुभावेन आकासे पल्लंकेन निसीदित्वा इमे सत्ता एवं पापस्स फलं जानमाना अप्पेव नाम पाणातिपातं न करेय्युन्ति मधुरेन सरेन धम्मं देसेतो इमं गायमाह—

एवं चे सत्ता जानेय्युं दुक्खायं जातिसम्भवो ।

न पाणो पाणिनं हञ्जे पाणघाती हि सोचती ॥ ति ।

तत्थ एवञ्चे सत्ता जानेय्युन्ति इमे सत्ता एवञ्चे जानेय्युं । कथं ? दुक्खाय जातिसम्भवोति अयं तत्थ तत्थ जाति च जातस्स अनुक्कमेन वड्ढिसंखातो सम्भवो च जराव्याधिमरणअप्पियसम्पयोगपियविप्पयोगहत्थ-पादच्छेदादीनं दुक्खानं वत्थुभूतत्ता दुक्खोति यदि जानेय्युं । न पाणो पाणिनं हञ्जेति परं वधेन्तो जातिसम्भवे वधं लभति पीळेन्तो पीळं लभतीति जातिसम्भवस्स दुक्खवत्थुताय दुक्खभावं जानन्तो कोचि पाणो अञ्जं पाणिनं न हञ्जे सत्तो सत्तं न हनेय्याति अत्थो । किं कारणा ? पाणघाती हि सोचतीति यस्मा साहत्थिकादिसु छसु पयोगेसु येन केनचि पयोगेन परस्स जीवितन्द्रियुपच्छेदनेन पाणघाती पुग्गलो अट्ठसु महानिरयेसु सोळससु उस्सदनिरयेसु नानप्पकाराय तिरच्छानयोनिया पेत्तिविसये असुरकायेति इमेसु चतुसु अपायेसु महादुक्खं अनुभवमानो दीघरत्तं अन्तोनिज्झायनलक्खणेन सोकेन सोचति । यथा वा अयं एलको मरणभयेन सोचि एवं दीघरत्तं सोचतीतिपि अत्वा न पाणो पाणिनं हञ्जे कोचि पाणातिपातकम्मं नाम न करेय्य । मोहेन पन मूल्हा अविज्जाय अन्धीकता इमं आदीनवं अपस्सन्ता पाणातिपातं करोन्तीति ।

एवं महासत्तो निरयभयेन तज्जेत्वा धम्मं देसेसि । मनुस्सा तं धम्मदेसनं सुत्वा निरयभयभीता पाणा-तिपाता विरमिसु । बोधिसत्तोपि धम्मं देसेत्वा महाजनं सीले पतिट्ठापेत्वा यथाकम्मं गतो । महाजनोपि बोधि-सत्तस्स ओवादे ठत्वा दानादीनि पुञ्जानि कत्वा देवनगरं पूरेसि । सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटत्वा जातकं समोधानेसि । अहं तेन समयेन रुक्खदेवता अहोसिन्ति ।

मतकभत्तजातकं

६. आयाचितभक्तजातकं

सचे मुञ्चेति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो देवतानं आयाचनबलिकम्मं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

तदा किर मनुस्सा वणिज्जाय गच्छन्ता पाणे वधित्वा देवतानं बलिकम्मं कत्वा मयं अनन्तरायेन अत्थसिद्धिं पत्वा आगन्त्वा पुन तुम्हाकं बलिकम्मं करिस्सामाति आयाचित्वा गच्छन्ति । तत्थ अनन्तरायेन अत्थ-सिद्धिं पत्वा आगन्त्वा देवतानुभावेन इदं जातन्ति मञ्जमानी बहू पाणे वधित्वा आयाचनतो मुच्चित्तुं बलिकम्मं करोन्ति । तं दिस्वा भिक्खू— अत्थि नु खो भन्ते ! एत्थ अत्थोति भगवन्तं पुच्छिमु ।

भगवा अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते कासिरट्ठे एकस्मिं गामके एको कुटुम्बिको गामद्वारे ठितनिग्रोधरुक्खे अधिवत्थाय देवताय बलिकम्मं पटिजानित्वा अनन्तरायेन आगन्त्वा बहू पाणे वधित्वा आयाचनतो मुच्चिस्सामीति रुक्खमूलं गतो । रुक्खदेवता खन्धविट्ठे टत्वा इमं गाथमाह—

सचे मुञ्चे पेच्च मुञ्चे मुच्चमानो हि बज्जति ।

न हेवं धीरा मुच्चन्ति मुत्ति बालस्स बन्धन ॥ न्ति ।

तत्थ सचे मुञ्चे पेच्च मुञ्चे ति भो पुरिस ! त्वं सचे मुञ्चे यदि मुच्चित्तुकामोसि पेच्च मुञ्चे यथा परलोकेन बज्जसि एवं । मुच्चमानो हि बज्जतीति यथा पन त्वं पाणं वधित्वा मुच्चित्तुं इच्छसि एवं मुच्चमानो हि पापकम्मेन बज्जतीति । तस्मा न हेवं धीरा मुच्चन्तीति ये पण्डितपुरिसा ते एवं पटिस्सवतो न मुच्चन्ति । किं कारणा ? एवरूपा हि मुत्ति बालस्स बन्धनं एसा पाणातिपातं कत्वा मुत्ति नाम बालस्स बन्धनमेव होतीति धम्मं देसेसि ।

ततो पट्ठाय मनुस्सा एवरूपा पाणातिपातकम्मा विरता धम्मं चरित्वा देवनगरं पूरयिमु । सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । अहं तेन समयेन रुक्खदेवता अहोसिन्ति ।

आयाचितभक्तजातकं

१० नलपानजातकं

विस्वा पदमनुत्तिष्ठन्ति इदं सत्या कोसलेसु चारिकं चरमानो नलकपाणगामं पत्वा नलकपाण-
पोक्खरणिं केतकवने विहरन्तो नलदण्डके आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

तदा किर भिक्खू नलकपाणपोक्खरणिं नहात्वा सूचिघरत्थाय सामणेरेहि [१५१] नलदण्डके
गाहापेत्वा ते सब्बत्थकमेव छिद्दे दिस्वा सत्थारं उपसंक्रमित्वा—भन्ते ! मयं सूचिघरत्थाय नलदण्डके गण्हापेम ।
ते मूलतो याव अग्गा सब्बत्थकमेव छिद्दा, किन्नुखो एतन्ति पुंच्छमु ।

सत्था इदं भिक्खवे ! मय्हं पोराणकाधिठानन्ति वत्वा अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

पुब्बे किर सो वनसण्डो अरञ्जो अहोसि । तस्सापि पोक्खरणिं एको दकरक्खसो ओतिण्णोतिण्णे
खादति ।

तदा बोधिसत्तो रोहितमिगपोतकप्पमाणो कपिराजा हुत्वा असीतिसहस्समत्तवानरपरिवृतो यूथं
परिहरन्तो तस्मिं अरञ्जे वसति । सो वानरगणस्स ओवादं अदासि—ताता ! इमस्मिं अरञ्जे विसरुक्खापि
अमनुस्सपटिग्गहिता पोक्खरणिं योपि तत्थेव होन्ति तुम्हे अखादितपुब्बं पलाफलं खादन्ता वा अपीतपुब्बं पानीयं
पिवन्ता वा मं पटिपुच्छेय्याथाति ।

ते साधूति पटिस्मुणित्वा एकदिवसं अगतपुब्बट्ठानं गता ।

तत्थ बहुदेव दिवसं चरित्वा पानीयं गवेसमाना एकं पोक्खरणिं दिस्वा पानीयं अपिवित्वाव
बोधिसत्तस्स आगमनं ओलोकेयमाना निसीदिमु । बोधिसत्तो आगन्त्वा—किं ताता ! पानीयं न पिवथाति आह ।

तुम्हाकं आगमनं ओलोकेमाति । सुट्ठु ताताति बोधिसत्तो तं पोक्खरणिं आविज्झित्वा पदं परि-
च्छिन्दन्तो ओतिण्णमेव पस्सि न उत्तिण्णं ।

सी निस्संसयं एसा अमनुस्सपरिग्गहिताति अत्वा—सुट्ठु वो कतं तात ! पानीयं अपिवन्तेहि,
अमनुस्सपरिग्गहिता अयन्ति आह ।

दकरक्खसोपि तेमं अनोतरणभावं अत्वा नीलोदरो पण्डरमुखो सुरत्तहत्थपादो बीभच्छदस्सनो हुत्वा
उदकं द्विधा कत्वा निकलमित्वा—कस्मा निसीदथ ? इमं पोक्खरणिं ओतरित्वा पानीयं पिवथाति आह ।

अथ नं बोधिसत्तो पुच्छि-त्वं इध निव्वत्तदकरक्खसोति ?

आम अहं निव्वत्तोम्हीति ।

त्वं पोक्खरणिं ओतिण्णके लभसीति ?

आम लभामि । अहं इधोतिण्णं अन्तमसो सकुणिकं उपादाय न किञ्चि मुञ्चामि । तुम्हेपि सब्बे
खादिससामीति !

न मयं अत्तानं तुय्हं खादितुं दस्सामाति ।

पानीयं पन किं पिविस्सथाति ।

आम, पानीयं च पिविस्साम, न च ते वसं गमिस्सामाति ।

अथ कथं पानीयं पिविस्सथाति ?

किं पन त्वं मञ्जसि ओतरित्वा पिबिस्सन्तीति ? मयं हि अनोतरित्वा असीतिसहस्सापि एकमेकं नलदण्डकं गहेत्वा उप्पलनाल्लेन उदकं पिबन्ता विय तव पोक्खरणिया पानीयं पिबिस्साम । एवं नो त्वं खादितुं न सक्खिस्ससीति । एतमत्थं विदित्वा सत्था अभिसम्बुद्धो हुत्वा इमिस्सा गाथाय पुरिमपदद्वयं अभासि—

दिस्वा पदमनुत्तिण्णं दिस्वा नोतरितं पदं ।

नलेन वारिं पिबिस्साम नेव मं त्वं वधिस्ससी ॥ ति । [१५२]

तस्सत्थो—भिक्षवे ! सो कपिराजा तस्सा पोक्खरणिया एकम्पि उत्तिण्णं पदं नादस । ओतरितं पदं ओतिण्णपदमेव अदस, एवं दिस्वा पदं अनुत्तिण्णं दिस्वान ओतरितं पदं अद्धा अयं पोक्खरणी अमनुस्सपरिग्ग-हीताति अत्वा तेन सद्धिं सल्लपन्तो महापुरिसो आह—नलेन वारिं पिबिस्सामाति तस्सत्थो मयं तव पोक्खरणिया नलेन पानीयं पिबिस्सामाति । पुन महासत्तोव आह—नेव मं त्वं वधिस्ससीति एवं नलेन पाणीयं पिबन्तं सपरि-सम्पि मं त्वं नेव वधिस्ससीति अत्थो ।

एवं वत्वा पन बोधिसत्तो एकं नलदण्डकं आहरापेत्वा पारमियो आवज्जेत्वा सच्चकिरियं कत्वा मुखेन धमि । नल्लो अन्तो किञ्चि गण्ठि असेसेत्वा सब्बत्थकमेव सुसिरो अहोसि । इमिना नियामेन अपरम्पि अपरम्पि आहरापेत्वा धमित्वा अदासीति एवं सन्ते पन न सकका निट्ठपेतुं । तस्मा एवं न गहेतब्बं । बोधिसत्तो पन “इमं पोक्खरणिं परिवारेत्वा जाता सब्बेपि नल्ला एकच्छिद्दा होन्तु” ति अधिट्ठासि । बोधिसत्तानं हि हित्तु-पचारस्स महन्तताय अधिट्ठानं समिज्जति । ततो पट्ठाय सब्बेपि न पोक्खरणिं परिवारेत्वा उट्ठिता नल्ला एकच्छिद्दाव जाता ।

इमस्मिं हि कण्णे चत्तारि कप्पट्ठियपाटिहारियानि नाम । कतमानि चत्तारि? (१) चन्दस्स ससल-क्खणं सकलम्पि इमं कप्पं ठस्सति । (२) वट्टकजातके अग्गिनो निब्बुतट्ठानं सकलम्पि इमं कप्पं अग्गि न ज्ञापे-स्सति । (३) घटिकारनिवेसनट्ठानं सकलम्पि इमं कप्पं अनोवस्सकं ठस्सति । (४) इमं पोक्खरणिं परिवारेत्वा उट्ठितनल्ला सकलम्पि इमं कप्पं एकच्छिद्दा भविस्सन्तीति इमानि चत्तारि कप्पट्ठितियपाटिहारियानि नाम ।

बोधिसत्तो एवं अधिट्ठित्वा एकं नल्लं आदाय निसीदि । तेपि असीतिसहस्सा वानरा एकेकं नल्लं आदाय पोक्खरणिं परिवारेत्वा निसीदिसु । तेपि बोधिसत्तस्स नलेन आकड्ढित्वा पानीयं पिबनकाले सब्बे तीरे निसिन्नाव पिबिसु । एवं तेहि पानीये पीते दकरक्खसो कञ्चि अलभित्वा अनत्तमनो सकनिवेसनमेव गतो । बोधि-सत्तोपि सपरिवारो अरञ्जमेव पाविसि ।

सत्था पन इमेसं भिक्षवे ! नल्लानं एकच्छिद्दभावो नाम मय्हमेवेतं पोरानकं अधिट्ठानन्ति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा दकरक्खसो देवदत्तो अहोसि । असीतिसहस्स-वानरा बुद्धपरिसा । उपायकुसलो पन कपिराजा अहमेव अहोसिन्ति ।

नलपानजातकं

सोलवग्गो बुतियो [१५३]

३. कुरुंगवग्गवण्णना

१. कुरुंगमिगजातकं

जातमेतं कुरुंगस्साति इदं सत्था वेळुवने विहरन्तो देवदत्तं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

एकस्मिं हि समये धम्मसभायं सन्निपतिता भिक्खू—आवुसो ! देवदत्तो तथागतस्स घातनत्थाय धनुग्गहे पयोजेसि, सिलं पविज्जि, धनपालकं विस्सज्जेसि, सब्बथापि दसवलस्स वधाय परिसक्कतीति देवदत्तस्स अवण्णं कथेन्ता निसीदिमु । सत्था आगन्त्वा पञ्चत्तासने निसिन्नो कायनुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्नि-
सिन्नाति पुच्छि ।

भन्ते ! देवदत्तो तुम्हाकं वधाय परिसक्कतीति देवदत्तस्स अगुणकथाय सन्निसिन्नम्हाति ।

सत्था न भिक्खवे ! देवदत्तो इदानीव मम वधाय परिसक्कति पुब्बेपि परिसक्कि येव नच पन वधितुं असक्खीति वत्वा अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो कुरुंगमिगो हुत्वा एकस्मिं अरञ्जायतने फला-
फलानि खादन्तो वसति। सो एकस्मिं काले फलसम्पन्ने सेपणिंरुक्खे सेपणिफलानि खादति । अथेको गामवासी
अट्ठकलुद्दको फलरुक्खमूलेसु मिगानं पदानि उपधारेत्वा उपरिरुक्खे अट्ठकं बन्धित्वा तत्थ निसीदित्वा
फलानि खादितुं आगतागते मिगे सत्तिया विज्जित्वा तेसं मंसं विक्किणन्तो जीविकं कप्पेसि ।

सो एकदिवसं तस्मिं रुक्खमूले बोधिसत्तस्स पदवलञ्जं दिस्वा तस्मिं सेपणिंरुक्खे अट्ठकं बन्धित्व ।
पातोव भुञ्जित्वा सत्तिं आदाय वनं पविसित्वा तं रुक्खं अभिरुहित्वा अट्ठके निसीदि । बोधिसत्तोपि पातोव
वसनट्ठाना निक्खमित्वा सेपणिफलानि खादिस्सामीति आगमम तं रुक्खमूलं सहसाव अपविसित्वा कदाचि
अट्ठकलुद्दहारुक्खेसु अट्ठकं बन्धन्ति अत्थो नु खो एवरूपो उपद्द्वोति परिगणहन्तो बाहिरतोव अट्ठासि। लुद्दकोपि
बोधिसत्तस्स अनागमनभावं अत्वा अट्ठके निसिन्नोव सेपणिफलानि खिपित्वा खिपित्वा तस्स पुरतो पातेसि ।

बोधिसत्तो इमानि फलानि आगन्त्वा मय्हं पुरतो पतन्ति, अत्थि नुखो तस्स उपरि लुद्दकोति पुनप्पुनं
ओलोकेन्तो लुद्दकं दिस्वा अपस्सन्तो विय हुत्वा—अम्भो रुक्ख ! पुब्बे त्वं ओलम्बकं ओतारेन्तो^१ विय उजुकमेव
फलानि पातेसि । अज्ज पन ते रुक्खधम्मो परिच्चत्तो एवं तया रुक्खधम्मो परिच्चत्ते अहम्पि अञ्ज रुक्खमूलं
उपसंकमित्वा मय्हं आहारं परियेसिस्सामीति वत्वा इमं गाथमाह—

जातमेतं कुरुंगस्स यं त्वं सेपणि ! सेय्यसि ।

अञ्जं सेपणिं गच्छामि न मे ते रुक्खते फलन्ति ॥ [१५४]

तत्थ ज्ञातन्ति पाकटं जातं । एतन्ति इदं कम्मं । कुरुंगस्साति कुरुंगमिगस्स । यं त्वं सेपणि !
सेय्यसीति यं त्वं हम्भो सेपणिंरुक्ख ! पुरतो पुरतो फलानि पातमयानो सेय्यसि, विसेय्यसि, विसिण्णफलो

अहोसि । तं सब्बं कुरुंगस्स पाकटं जातं । न मे ते रुच्चते फलन्ति एवं फलं ददमानाय मे तव फलं न रुच्चति तिट्ठत्वं अहं अञ्जत्थ गच्छिस्सामीति अगमासि ।

अथस्स लुद्धको अट्टके निसिन्नोव सत्ति खिपित्वा गच्छ विरद्धोदानिम्हि तन्ति आह । बोधिसत्तो निवत्तित्वा ठितोव आह-हम्भो पुरिस! इदानिपि किञ्चापि मं विरद्धो अट्ठ पन महानिरये सोळस उस्सदनिरये पञ्चविधबन्धनादीनि च कम्मकरणानि अविरद्धो येवासीति । एवञ्च पन वत्वा पलायित्वा यथारुचि गतो । लुद्धकोपि ओतरित्वा यथारुचि गतो ।

सत्थापि न भिक्खवे! देवदत्तो इदानीव मम वधाय परिसक्कति पुब्बेपि परिसक्कि नच पन वधितुं असक्खीति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा अट्टकलुद्धो देवदत्तो अहोसि । कुरुंगमिगो पन अहमेवाति ।

कुरुंगमिगजातकं

२. कुक्कुरजातकं

ये कुक्कुराति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो आनत्थचरियं आरब्ध कथेसि । सा द्वादसनिपाते भद्-
साळजातके आविभविस्सति । इदं पन वत्थुं पटिठ्ठपेत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो तथारूपं कम्मं पटिच्च कुक्कुरयोनियं निब्ब-
त्तित्वा अनेकसत्तकुक्कुरपरिवृतो महासुसाने वसति । अथेकदिवसं राजा सेतसिन्धवयुत्तं सब्बालंकारपति
मण्डितं रथं अभिरुह्य उय्यानं गन्त्वा तत्थ दिवसभागं कीळित्वा अत्थंगते सुरिये नगरं पाविसि । तस्स तं रथवरत्तं
यथानद्धमेव राजंगणे ठपयिमु । सो रत्ति देवे वस्सन्ते तित्तो । उपरि पासादतो कोलेय्यकमुणखा ओतरित्वा तस्स
चम्मञ्च नन्दिञ्च खादिमु ।

पुन दिवसे रज्जो आरोचयिमु-देव ! निद्धमनमुखेन सुनखा पविसित्वा रथस्स चम्मञ्च
नन्दिञ्च खादिमूति ।

राजा सुनखानं कुञ्जित्वा दिट्ठदिट्ठट्ठाने सुनखे घातेथाति आह ।

ततो पट्ठाय सुनखानं महाव्यसनं उदपादि । ते दिट्ठदिट्ठट्ठाने घातयिमाना पलायित्वा सुसानं गन्त्वा
बोधिसत्तस्स सन्तिकं अगमंमु । बोधिसत्तो-तुम्हे बहू सन्तिपतिता किन्नुखो कारणन्ति पुच्छि ।

ते-अन्तेपुरे किर रथस्स चम्मञ्च नन्दिञ्च [१५५] सुनखेहि खादिताति कुद्धो राजा सुनखवधं
आणापेसि । बहू सुनखा विनस्सन्ति, महाभयं उप्पन्नन्ति आहंमु ।

बोधिसत्तो चिन्तेसि-आरक्खट्ठाने ब्रहि सुणखानं ओकासो नत्थी अन्तोराजनिवेसने कोलेय्यकमुन-
खानं येवेत्तं कम्मं भविस्सति । इदानी पन चोरा नं किञ्चि भयं नत्थि । अचोरा मरणं लभन्ति । यन्नूनाहं चोरे रज्जो
दस्सेत्वा आतिसंघस्स जीवितदानं ददेय्यन्ति । सो जातके समस्सासेत्वा-तुम्हे मा भायित्थ अहं धो अभयं आह-
रिस्सामि । याव राजानं पस्सामि ताव इधेव होथाति पारमियो आवज्जेत्वा मेत्ताभावनं पुरेचारिकं कत्वा मय्हं
उपरि लेड्डुं वा मुग्गरं वा मा कोचि खिपितुं उस्सहीति अधिट्ठाय एककोव अन्तो नगरं पाविसि ।

अथ नं दिस्वा एकसत्तोपि कुञ्जित्वा ओलोकेन्तो नाम नाहोसि । राजापि सुनखवधं आणापेत्वा सयं
विनिच्छये निसिन्नो होति । बोधिसत्तो तत्थेव गन्त्वा पक्खन्दित्वा रज्जो आसनस्स हेट्ठा पाविसि । अथ नं राज-
पुरिसा नीहरितुं आरद्धा । राजा पन निवारेसि ।

सो थोकं विसमेत्वा हेट्ठासना निक्खमित्वा राजानं वन्दित्वा-सच्चं किर तुम्हे कुक्कुरे
मारापेथाति पुच्छि ।

आम मारापेमि हन्ति ।

को तेसं अपराधो नरिन्दाति ?

रथस्स मे परिवारचम्मञ्च नन्दिञ्च खादिमूति ।

ये खादिमु ते जानाथाति ?

न जानामाति ।

इमे नाम चम्मखाश्चकोराति तत्ततो अजानित्वाव दिट्ठदिट्ठट्ठाने येव मारापनं न युत्तं दवाति ।

रथचम्मस्स कुक्कुरहि खादित्ता दिट्ठदिट्ठे सब्बेव मारेथाति सुनखवधं अणापेसिन्ति ।

किं पन वो मनुस्सा सब्बेव कुक्कुरे मारेन्ति उदाहु मरणं अलभन्तापि अत्थीति ?

अत्थि अम्हाकं घरे कोलेय्यका मरणं न लभन्तीति ।

महाराज ! इदानीं तुम्हे रथचम्मस्स कुक्कुरेहि खादित्ता दिट्ठदिट्ठे सब्बेव मारेथाति सुनखवधं अणापेसिन्ति अवोचुत्थ । इदानीं पन अम्हाकं घरे कोलेय्यका मरणं न लभन्तीति वदेथ । ननु एवं सन्ते तुम्हे छन्दा-
दिवसेन अगतिगमनं गच्छथाति? अगतिगमनञ्च नाम न युत्तं, न च राजधम्मो । रञ्जो^२ नाम कारणगवेसकेन तुलासदिसेन भवितुं वट्टति । इदानीं च कोलेय्यका मरणं न लभन्ति, दुब्बलसुनखाव लभन्ति । एवं सन्ते नायं सब्बसुनखघच्चा दुब्बलघातिका नामेसाति ।

एवञ्च पन वत्वा महासत्तो मधुरस्सरं निच्छारेत्वा—महाराज ! यं तुम्हे करोथ नायं धम्मोति रञ्जो धम्मं देसेन्तो इमं गाथमाह—

ये कुक्कुरा राजकुलम्हि बद्धा कोलेय्यका वण्णबलूपपन्ना ।

तेमे न वज्झा मयमस्म वज्झा नायं सघच्चा दुब्बलघातिकायन्ति [१५६]

तत्थ ये कुक्कुराति ये सुनखा । यथा हि धारुण्होपि पस्सावो पूतिमुत्तन्ति, तदहुजातोपि सिगालो जरसि-
गालोति, कोमलापि गळोचि-लता पूतिलताति, सुवण्णवण्णोपि कायो पूतिकायोति वुच्चति, एवमेवं वस्सस-
तिकोपि सुनखो कुक्कुरोति वुच्चति । तस्मा महल्लका कायबलूपपन्नापि ते कुक्कुरात्वेव वुत्ता । वद्धाति
वड्ढिता । कोलेय्यकाति राजकुले जाता सम्भूता संवद्धा । वण्णबलूपपन्नाति सरीरवण्णेन चैव कायबलेन
च सम्पन्ना । तेमे न वज्झाति ते इमे सस्सामिका सारक्खा न वज्झा । मयमस्म वज्झाति अस्सामिका
अनारक्खा मयं वज्झा नाम जाता । नायं सघच्चाति एवं सन्ते अयं अविसेसेन सघच्चा नाम न होति ।
दुब्बलघातिकायन्ति अयं पन दुब्बलानं येव घातनतो दुब्बलघातिका नाम होति । राजूहि नाम चोरा
निग्गण्हित्वा नो अचोरा इध पन चोरानं किञ्चि नत्थि अचोरा मरणं लभन्ति अहो ! इमस्मिं लोके अयुत्तं
वत्तति अहो ! अधम्मो वत्ततीति ।

राजा बोधिसत्तस्स वचनं सुत्वा आह-जानासि पन त्वं पण्डित ! असुकेहि नाम रथचम्मं खादितन्ति ।
आम जानामीति ।

केहि खादितन्ति ?

तुम्हाकं गेहे वसनकेहि कोलेय्यकसुनखेहीति ।

कथं तेहि खादितभावो जानितव्वोति आह ?

अहं तेहि खादितभावं दस्सेस्सामीति ।

दस्सेहि पण्डिताति ।

तुम्हाकं घरे कोलेय्यकसुनखे आनापेत्वा थोकं तक्कञ्च दव्वतिणानि च आहारापेयाति ।

राजा तथा अकासि ।

अथ नं महासत्तो इमानि तिणानि तक्केन महापेत्वा एते सुनखे पायेथाति आह ।

राजा तथा कत्वा पायापेसि । पीतपीता सुनखा सद्धिं चम्मेहि वमिसु । राजा सब्बञ्जुबुद्धस्स व्याकरणं
वियाति तुट्ठो बोधिसत्तस्स सेतच्छत्तेन पूजं अकासि । बोधिसत्तो “धम्मं चर महाराज ! मातापितुसु खत्तिया”
ति आदीहि तेसकुणजातके आगताहि दसहि धम्मचरियगाथाहि रञ्जो धम्मं देसेत्वा—महाराज ! इतो पट्ठाय
अप्पमत्तो होहीति राजानं पञ्चसु सीलेसु पतिट्ठापेत्वा सेतच्छत्तं रञ्जोव पटिअदासि ।

३. भोजाजानीयजातकं

अपि पस्सेन सेमानोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं ओस्सट्ठविरियं भिक्खुं आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

तस्मिं हि समये सत्था नं भिक्खुं आमन्तेत्वा भिक्खु ! पुब्बे पण्डिता अनायतनेपि विरियं अकंसु, पहारं लद्धापि नेव ओस्सजिसूति वत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो भोजाजानीयसिन्धवकुले निव्वत्तो सब्बाकार-सम्पन्नो बाराणसिरज्जो मंगलस्सो अहोसि । सो सतसहस्सग्घनिकाय सुवण्णपातियं येव नानग्गरससम्पन्नं तिवस्सि-कगन्धसालिभोजनं भुञ्जति । चतुजातिकगन्धूपलित्तायमेव भूमियं तिट्ठति । तं ठानं रत्तकम्बलसाणिपरिक्खित्तं उपरि सुवण्णतारखचितं चेलवितानं समोसरितगन्धदामयालादामं अविजहितगन्धतेलप्पदीपं होति । बाराणसि-रज्जं पन अपत्थेन्ता राजानो नाम नत्थि । एकं समयं सत्त राजानो बाराणसिं परिक्खिपित्वा अम्हाकं रज्जं वा देतु युद्धं वाति बाराणसिरज्जो पणं पेसयिसु । राजा अमच्चे सन्निपातापेत्वा तं पवुत्ति आचिक्खित्वा इदानि किं करोम ताताति पुच्छि ।

देव ! तुम्हेहि ताव आदितोव युद्धाय न गन्तब्बं , असुकं नाम अस्सारोहं पेसेत्वा युद्धं कारेथ । तस्मिं असक्कोन्ते पच्छा जानिस्सामाति ।

राजा तं पक्कोसापेत्वा-सक्खिस्ससि तात ! सत्तहि राजूहि सद्धि युद्धं कातुन्ति आह ।

देव ! सचे भोजाजानीयसिन्धवं लभामि, तिट्ठन्तु सत्त राजानो सकलजम्बुदीपे राजूहि सद्धि युज्झितुं सक्खिस्सामाति ।

तात ! भोजाजानीयसिन्धवो वा होतु अज्जो वायं इच्छसि तं गहेत्वा युद्धं करोहीति ।

सो साधु देवाति राजानं वन्दित्वा पासादा ओरुय्ह भोजाजानीयसिन्धवं आहरापेत्वा सुवम्मितं कत्वा अत्तनापि सब्बसन्नाहसन्नद्धो खग्गं बन्धित्वा सिन्धवपिट्ठिवरगतो नगरा निक्खम्म विज्जुलता विय चरमानो पठमं बलकोट्ठकं भिन्दित्वा एकं राजानं जीवगाहमेव गहेत्वा आगन्त्वा नगरे बलस्स निय्यादेत्वा पुन गन्त्वा दुतियं बलकोट्ठकं भिन्दित्वा दुतियत्ति एवं पच्च राजानो जीवगाहं गहेत्वा छट्ठं बलकोट्ठकं [१५८] भिन्दित्वा छट्ठस्स रज्जो गहितकाले भोजाजानीयो पहारं लभि । लोहितं पग्घरति । वेदना वलवतियो वत्तन्ति । अस्सारोहो तस्स पहरभावं अत्वा भोजाजानीयसिन्धवं राजद्वारे निपज्जापेत्वा सन्नाहं सिथिलं कत्वा अज्जं अस्सं सन्नय्हितुं आरद्धो ।

बोधिसत्तो महाफासुकपस्सेन निपन्नोव अक्खीनि उम्मीलेत्वा अस्सारोहं दिस्वा अयं अज्जं अस्सं सन्नय्हति अयञ्च अस्सो सत्तमं बलकोट्ठकं भिन्दित्वा सत्तमं राजानं गण्हितुं न सक्खिस्सति मया कतकम्मं विनस्सिस्सति अप्पटिसमो अस्सारोहोपि नस्सिस्सति राजापि परहत्थं गमिस्सति, ठपेत्वा मं अज्जो अस्सो सत्तमं बलकोट्ठकं भिन्दित्वा सत्तमं राजानं गहेत्तुं समत्थो नाम नत्थीति निपन्नकोव अस्सारोहं पक्कोसापेत्वा-सम्म अस्सारोह ! सत्तमं बलकोट्ठकं भिन्दित्वा सत्तमं राजानं गहेत्तुं समत्थो ठपेत्वा मं अज्जो अस्सो नाम नत्थि । नाहं मया कतकम्मं नासेस्सामि ममज्जेव उट्ठापेत्वा सन्नय्हति वत्वा इमं गाथमाह-

अपि पस्सेन सेमानो सल्लेहि सल्ललीकतो ।

सेय्योव बलवा भोज्जो युञ्ज मञ्जेव सारथीति ॥

तत्थ अपि पस्सेन सेमानोति एकेन पस्सेन सयमानवोपि । सल्लेहि सल्ललीकतोति सल्लेहि विद्धोपि समानो । सेय्योव बलवा भोज्जोति बलवोति सिन्धवकुले अजातो खलुंक्स्सो । भोज्जोति भोजाजानीय-सिन्धवो । इति एतस्मा बलवा सल्लेहि विद्धोपि भोजाजानीयसिन्धवोव इति एतस्मा बलवा सल्लेहि विद्धोपि भोजाजानीयो सेय्यो वरो, उत्तमो । युञ्ज मञ्जेव सारथीति यस्मा एवं गतोपि अहमेव सेय्यो तस्मा ममञ्जेव योजेहि, मा अञ्जेपीति वदति ।

अस्सारोहो बोधिसत्तं जट्ठापेत्वा वणं बन्धित्वा सुसन्नद्धं सन्नयित्वा तस्स पिट्ठयं निसीदित्वा सत्तमं बलकोट्ठकं भिन्दित्वा सत्तमं राजानं जीवगाहं गहेत्वा राजबलस्स निय्यादेसि । बोधिसत्तम्पि राजद्वारं आनयिंस्सु । राजा तस्स दस्सनत्थाय निक्खमि । महासत्तो राजानं आह—महाराज ! सत्त राजानो मा घातयित्थ । सपथं कारेत्वा विस्सज्जेथ । मय्हञ्च अस्सारोहस्स च दातब्बं यसं अस्सारोहस्सेव देथ । सत्त राजानो गहेत्वा दिन्नं योधं नाम नासेत् न वट्ठति । तुम्हेहि दानं देथ । सीलं रक्खथ । धम्मेन समेन रज्जं कारेथाति ।

एवं बोधिसत्तेन रञ्जो ओवादे दिन्ने बोधिसत्तस्स सन्नाहं मोचयिंस्सु । सो सन्नाहे मुञ्चते मुञ्चन्ते येव निरुज्झि । राजा तस्स सरीरकिच्चं कारेत्वा अस्सारोहस्स महन्तं यसं दत्त्वा सत्त राजानो पुन अत्तनो अद्व-भाय सपथं कारेत्वा सकट्ठानानि पेसेत्वा धम्मेन समेन रज्जं कारेत्वा जीवितपरियोसाने यथाकम्मं गतो । [१५९]

सत्था—एवं भिक्खु ! पुब्बे पण्डिता अनायतनेपि विरियं अकंसु एवरूपं पहारं लद्धापि न ओस्सजिंस्सु । त्वं पन एवरूपे नीयानिकसासने पब्वजित्वा कस्मा विरियं ओस्सजसीति वत्वा चत्तारि सच्चानि पकासेसि । मच्चपरियोसाने ओस्सट्ठविरियो भिक्खु अरहत्तफले पतिट्ठासि ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा राजा आनन्दो अहोसि । अस्सारोहो सारिपुत्तो, भोजाजानीयसिन्धवो पन अहमेव अहोसिन्ति ।

भोजाजानीयजातकं ।

४. आजञ्जजातकं

यदा यदाति इदम्पि सत्था जेतवने विहरन्तो ओस्सट्ठविरियमेव भिक्खुं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

तं पन भिक्खुं सत्था आमन्तेत्वा भिक्खु ! पुब्बे पण्डिता अनायतनेपि लद्धप्पहारापि हुत्वा विरियं अकंसू ति वत्वा अतीतं आहरिः-

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते पुरिमनयेनेव सत्त राजानो नगरं परिवारयिंसु । अथेको रथिकयोधो द्वेभातिकसिन्धवे रथे योजेत्वा नगरा निक्खम्म छ बलकोट्ठके भिन्दित्वा छ राजानो अगहेसि । तस्मिं खणे जेट्ठकअस्सो पहारं लभि । रथिको रथं योजेत्वा पाजेन्तो^१ राजद्वारं आगन्त्वा जेट्ठकभातिकं रथा मोचेत्वा सन्नाहं सिथिलं कत्वा एकेन पस्सेन निपज्जापेत्वा अञ्जं अस्सं सन्नयित्तुं आरब्धो । बोधिसत्तो तं दिस्वा पुरिमनयेनेव चिन्तेत्वा रथिकं पक्कोसापेत्वा निपन्नकोव इमं गाथमाह-

यदा यदा यत्थ यदा यत्थ यत्थ यदा यदा ।

आजञ्जो कुरुते वेगं हायन्ति तत्थ बालवाति ॥

तत्थ यदा यदाति पुब्बण्हादिसु यस्मिं यस्मिं काले । यत्थाति यस्मिं ठाने मग्गे वा संगमसीसे वा । यदाति यस्मिं खणे । यत्थ यत्थाति सत्तन्नं बलकोट्ठकानं वसेन बहुसु युद्धमण्डलेसु । यदा यदाति यस्मिं यस्मिं काले पहारं लद्धकाले वा अलद्धकाले वा । आजञ्जो कुरुते वेगन्ति सारथिस्स चित्तरुचितं कारणं आजाननसभावो आजञ्जो वरसिन्धवो वेगं करोति वायमति विरियं आरभति । हायन्ति तत्थ बालवाति तस्मिं वेगे कयिरमाने इतरे वळवसंखाता खळुंक्कसा हायन्ति परिहायन्ति । तस्मा इमस्मिं मञ्जेव योजेहीति आह ।

सारथी बोधिसत्तं उट्ठापेत्वा योजेत्वा सत्तमं बलकोट्ठकं भिन्दित्वा सत्तमं राजानं आदाय रथं पाजेन्तो^२ [१६०] राजद्वारं आगन्त्वा सिन्धवं मोचेसि । बोधिसत्तो एकेन पस्सेन निपन्नो पुरिमनयेनेव रज्जं ओवादां दत्वा निरुज्झि । राजा तस्स सरीरकिच्चं कारेत्वा रथिकस्स सम्मानं कत्वा धम्मेन रज्जं कारेत्वा यथाकम्मं गतो ।

सत्था इम धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेत्वा जातकं समोधानेसि । सच्चपरियोसाने सो भिक्खु अरहत्ते पतिट्ठासि । तदा राजा आनन्दत्थेरो अहोसि । अस्सो पन अहमेव सम्मासम्बुद्धोति ।

आजञ्जजातकं

५. तिड्डजातकं

अञ्जमञ्जेहि तित्थेहीति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो धम्मसेनापतिस्स सद्धिविहारिकं एकं सुवण्ण-
कारपुत्तं भिक्खुं आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

आसयानुसयञ्जाणं हि बुद्धानं येव होति न अञ्जेसं । तस्मा धम्मसेनापति अत्तनो आसयानुसयञ्जा-
णस्स नत्थिताय सद्धिविहारिकस्स आसयानुसयञ्जाणं अजानन्तो असुभकम्मट्ठानमेव कथेसि । तस्स तं न सप्पाय-
महोसि । कस्मा ? सो किर पटिपाटिया पच्चजातिसतानि सुवण्णकारगेहे येव पटिसन्धि गण्हि । अथस्स दीघ-
रत्तं परिमुद्धसुवण्णदस्सनस्सेव परिचितत्ता असुभं न सप्पायमहोसि । सो तत्थ निमित्तमत्तम्पि उप्पादेतुं असक्कोन्तो
चत्तारो मासे खेपेसि । धम्मसेनापति अत्तनो सद्धिविहारिकस्स अरहत्तं दातुं असक्कोन्तो अद्धार्यं बुद्धवेनेय्यो
भविस्सति तथागतस्स सन्तिकं नेस्सामीति चिन्तेत्वा पातोव तं आदाय सयं सत्थु सन्तिकं अगमासि ।

सत्था— किन्नुखो सारिपुत्त ! एकं भिक्खुं आदाय आगतोसीति पुच्छि ।

अहम्भन्ते ! इमस्स कम्मट्ठानं अदासि । अयम्पन चतुहि मासेहि निमित्तमत्तम्पि न उप्पादेसि ।
स्वाहं बुद्धवेनेय्यो एसो भविस्सतीति चिन्तेत्वा तुम्हाकं सन्तिकं आदाय आगतोति ।

सारिपुत्त ! कतरं पन ते कम्मट्ठानं सद्धिविहारिकस्स दिन्नन्ति ?

असुभकम्मट्ठानं भगवाति ।

सारिपुत्त ! नत्थि तव सन्ता^१ने आसयानुसयञ्जाणं, गच्छ त्वं सायण्हसमये आगत्वा तव सद्धि-
विहारिकं आदाय गच्छेय्यासीति ।

एवं सत्था थेरं उय्योजेत्वा तस्स भिक्खुस्स मनापनिवासनञ्च चीवरं च दापेत्वा तं आदायेव पिण्डाय
पविसित्वा पणीतं खादनीयभोजनीयं दापेत्वा महाभिक्खुसंघपरिवारो पुन विहारं आगन्त्वा गन्धकुटियं दिवस-
भागं खेपेत्वा सायण्हसमये तं भिक्खुं गहेत्वा विहारचारिकं चरमानो अम्बवने एकं पोक्खरणि [१६१]
मापेत्वा तत्थ महन्तं पदुमिनिगच्छं, तत्रापि च महन्तं एकं पदुमपुष्पं मापेत्वा भिक्खु ! इमं पुष्पं ओलोकेन्तो
निसीदाहीति निसीदापेत्वा गन्धकुटि पाविसि ।

सो भिक्खु नं पुष्पं पुनप्पुनं ओलोकेसि । भगवा तं पुष्पं जरं पापेसि । तं तस्स पस्सन्तस्सेव जरं पत्वा
विवण्णं अहोसि । अथस्स परियन्ततो पट्ठाय पत्तानि पतन्तानि मुहुत्तेन सब्बानि पतिसु । ततो किञ्जक्खं पति,
कण्णिकाव अवसिरिसि । सो भिक्खु तं पस्सन्तो चिन्तेसि, इदं पदुमपुष्पं इदानीव अभिरूपं अहोसि दस्सनीयं ।
अथस्स वण्णो परिणतो पत्तानि च किञ्जक्खञ्च पतितं कण्णिकमतमेव ठितं । एवरूपस्स नाम पदुमस्स जरा पत्ता,
मय्हं सरीरस्स किं न पापुणिस्सति ? सब्बे संखारा अचिच्चाति विपस्सनं पट्ठपेसि । सत्था तस्स चित्तं विपस्सनं
आरब्धहन्ति जत्वा गन्धकुटियं निसिन्नो व ओभासं फरित्वा इमं गाथमाह—

उच्छिन्द सिनेहमत्तनो कुमुदं सारदिकं व पाणिना ।

सन्तिमग्गमेव ब्रूह्य निब्बाणं सुगतेन देसितन्ति^२ ॥

सो भिक्खु गाथापरियोसाने अरहत्तं पत्वा मुत्तो वतम्हि सब्बभवेहीति चिन्तेत्वा—

सो वुत्थवासो परिपुण्णमानसो, खीणासवो अन्तिमदेहधारी ।
विमुद्धसीलो सुसमाहितिन्द्रियो चन्दो यथा राहुमुखा पमुत्तो ॥
तमोततं मोहमहन्धकारं विनोदयिं सब्बमलं असेसं ।

आलोकमुज्जोतकरो पभंकरो सहस्सरंसी विय भानुमा नभेति ॥

आदीहि गाथाहि उदानं उदानेसि । उदानेत्वा च पन गन्त्वा भगवन्तं वन्दि । थेरोपि आगन्त्वा सत्थारं
वन्दित्वा अत्तनो सद्धिविहारिकं गहेत्वा आगमासि ।

अयं पवुत्ति भिक्खून् अन्तरे पाकटा जाता । भिक्खू धम्मसभायं दसवलस्स गुणे वण्णयमाना निसी-
दिमु-आवुसो ! सारिपुत्तत्थेरो आसयानुसयजाणस्स अभावेन अत्तनो सद्धिविहारिकस्स आसयं न जानाति ।
सत्था पन जत्वा एकदिवसेनेव तस्स सहपटिसम्भिदाहि अरहत्तं अदासि । अहो ! बुद्धो नाम महानुभावोति !

सत्था आगन्त्वा पञ्जत्तासने निसीदित्वा-कायनुत्थ भिक्खवे एतरहि कपाय सन्निस्सिन्नाति पुच्छि ।

न भगवा ! अञ्जाय, तुम्हाकञ्जेव पन धम्मसेनापनिनो सद्धिविहारिकस्स आसयानुसय-
[१६२] जाणकथायाति ।

सत्था न भिक्खवे ! एतं अच्छरियं स्वाहं एतरहि बुद्धो हुत्वा तस्स आसयं जानामि । पुब्बेपाहं तस्स
आसयं जानामि येवाति वत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्तो रज्जं कारेसि । तदा बोधिसत्तो तं राजानं अत्थे च धम्मं च अनुसासति ।
तदा रज्जो मंगलस्स नहानतित्थे अञ्जतरं पठमं वळवं खलुं कस्सं^१ नहापेसुं । मंगलस्सो वळवेन नहातित्थं
ओतारियमानो जिगुच्छित्वा ओतरितुं न इच्छि । अस्सगोपको गन्त्वा रज्जो आरोचेसि-देव । मंगलस्सो तित्थं
ओतरितुं न इच्छतीति ।

राजा बोधिसत्तं पेसेसि- गच्छ पण्डित ! जानाहि केन कारणेन अस्सो तित्थं ओतारियमानो न
ओतरतीति ।

बोधिसत्तो साधु देवाति नदीतीरं गन्त्वा अस्सं ओलोकेत्वा निरोगभावञ्चस्स^२ जत्वा केन नुखो
कारणेन अयं इमं तित्थं न ओतरतीति उपधारेन्तो पठमतरं एत्थ अञ्जो नहापितो भविस्सति तेनेस जिगुच्छ-
मानो^३ तित्थं न ओतरति मञ्जेति चिन्तेत्वा अस्सगोपके पुच्छि-हम्मो ! इमस्मिं तित्थे कं पठमं
नहापयित्थाति ?

अञ्जतरं वळवस्सं सामीति ।

बोधिसत्तो 'एस अत्तनो सिंगारताय जिगुच्छन्तो एत्थ नहायितुं न इच्छति । इमं अञ्जस्मिं तित्थे
नहापेतुं वट्ठीति' तस्स आसयं जत्वा- भो अस्सगोपक ! सप्पिमधुफाणिताभिसंखतपायामप्पि ताव पुनप्पुनं
भुञ्जन्तस्स तिति होति । अयं अस्सो बहू वारे इध तित्थे नहातो अञ्जाम्पि ताव न तित्थं ओतरेत्वा नहापेथ
पायेथ चाति वत्वा इमं गाथमाह-

अञ्जमञ्जेहि तित्थेहि अस्सं पायेहि सारथि ।

अच्चासनस्स पुरिसो पायासस्सपि तप्पतीति ॥

तत्थ अञ्जमञ्जेहीति अञ्जेहि अञ्जेहि । पायेहीति देसनासीसमेतं, नहापेहि च पायेहि चाति अत्थो ।
अच्चासनस्साति करणत्थे सामिवचनं । अतिअसनेन अतिभुत्तेनाति अत्थो । पायासस्सपि तप्पतीति सप्पिआदीहि

अभिसंखतेन मधुरपायासेन तप्पति तित्तो होति धातो सुहितो न पुन भुञ्जितुकामतं आपज्जति तस्मा अयम्पि अस्सो इमस्मि तित्थे निबद्धं नहानेन परियत्ति आपन्नो भविस्सति । अञ्जत्थ तं नहापेयाति ।

ते तस्स वचनं सुत्वा अस्सं अञ्जं तित्थं ओतारेत्वा पार्यिसु चेव नहापेसुञ्च । बोधिसत्तो अस्सस्स पानीयं पिवित्वा नहानकाले रञ्जो सन्तिकं अगमासि । राजा किं तात ! अस्सो नहातो च पीतो चाति पुच्छि ? आम देवाति । पठमं किं कारणा न इच्छतीति ? इमिना नाम कारणेनाति सब्बं आचिक्खि । राजा एवरूपस्स तिरच्छानस्सापि नाम आसयं जानाति । अहो पण्डितोति ! बोधिसत्तस्स महत्तं यसं दत्त्वा जीवितपरियोसाने यथाकम्मं गतो । बोधिसत्तोपि यथाकम्ममेव गतो ।

सत्था न भिक्खवे ! अहं एतस्स इदानीव आसयं जानामि, पुब्बेपि जानामि येवाति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा मंगलस्सो अयं भिक्खु अहोसि, राजा आनन्दो, पण्डितअ-मच्चो पन अहमेवाति अहोसिन्ति ।

तिट्ठजातकं

६. महिलामुखजातकं

पुराणचोरान बचो निसम्माति इदं सत्था वेळुवने विहरन्तो देवदत्तं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

देवदत्तो अजातसत्तुकुमारं पसादेत्वा लाभसक्कारं निष्पादेसि^१ । अजातसत्तुकुमारो देवदत्तस्स गयासीसे विहारं कारेत्वा नानगरसेहि तिवस्सिकगन्धसालिभोजनस्स दिवसे दिवसे पञ्चथालिपाकसतानि अभिहरि । लाभसक्कारं निस्साय देवदत्तस्स परिवारो महन्तो जातो । देवदत्तो परिवारेण सद्धिं विहारेयेव होति ।

तेन समयेन राजगहवासिका द्वे सहाया । तेसु एको सत्थु सन्तिके पब्बजितो, एको देवदत्तस्स । ते अञ्जामञ्जा तस्मिं तस्मिं ठानेपि पस्सन्ति विहारं गन्त्वापि पस्सन्ति येव ।

अथेकदिवसं देवदत्तस्स निस्सितको इतरं आह—आवुसो ! किं त्वं देवसिकं सेदेहि मुञ्चमानेहि पिण्डाय चरसि ? देवदत्तो गयासीसे विहारे निसीदित्वाव नानगरसेहि सुभोजनं भुञ्जति । एवरूपो पायासो इध नत्थि^२ । किं त्वं दुक्खं अनुभोसि ? किं ते पातोव गयासीसं आगन्त्वा सउत्तरिभंगं यागुं पिक्त्वा अट्ठारसविधं खज्जकं खादित्वा नानगरसेहि सुभोजनं भुञ्जितुं न बट्ठीति ?

सो पुनप्पुनं उच्चमानो गन्तुकामो हुत्वा ततो पट्ठाया गयासीसं गन्त्वा भुञ्जित्वा भुञ्जित्वा कालस्सेव वेळुवनं आगच्छति । सो सब्बकाले पटिच्छादेतुं नासक्खि । गयासीसं गन्त्वा देवदत्तस्स पट्ठपितं भत्तं भुञ्जतीति न चिरस्सेव पाकटो जातो । अयं नं सहाया पुच्छिसु—सच्चं किर त्वं आवुसो ! देवदत्तस्स पट्ठपितं भत्तं भुञ्जसीति ?

को एवमाहाति ?

असुको च असुको चाति ।

सच्चं अहं आवुसो ! गयासीसं गन्त्वा भुञ्जामि । न पण मे देवदत्तो भत्तं देति, अञ्जे मनुस्सा देन्तीति ।

आवुसो ! देव [१६४] दत्तो बुद्धानं पटिकण्ठको, दुस्सीलो अजातसत्तुं पसादेत्वा अधम्मेन अत्तनो लाभसक्कारं उप्पादेसि । त्वं एवरूपे निय्यानिकसासने पब्बजित्वा देवदत्तस्स अधम्मेन उप्पन्नं भोजनं भुञ्जसि । एहि तं सत्थुसन्तिकं नेस्सामाति तं भिक्खुं आदाय धम्मसभं आगमिसु ।

सत्था तं दिस्वाव—किं भिक्खवे ! एतं भिक्खुं अनिच्छन्तञ्जेव आदाय आगतत्थाति ?

आम भन्ते ! अयं भिक्खु तुम्हाकं सन्तिके पब्बजित्वा देवदत्तस्स अधम्मेन उप्पन्नं भोजनं भुञ्जतीति ।

सच्चं किर त्वं भिक्खु ! देवदत्तस्स अधम्मेन उप्पन्नं भोजनं भुञ्जसीति ?

न भन्ते ! देवदत्तो मय्हं भत्तं देति, अञ्जे मनुस्सा देन्ति तमहं भुञ्जामीति ।

सत्था—मा भिक्खु ! एत्थ परिहारं करि । देवदत्तो अनाचारो दुस्सीलो । कथं हि नाम त्वं इध पब्बजित्वा मम सासनं भजन्तो येव देवदत्तस्स भत्तं भुञ्जसि ? निच्चकालम्पि भजनसीलकोव त्वं दिट्ठदिट्ठे येव भजसीति वत्ता अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो तस्स अमच्चो अहोसि । तदा रज्जो महिला-मुखो नाम मंगलहत्थी अहोसि सीलवा आचारसम्पन्नो न किञ्चि विहेठेति । अथेकदिवसं तस्स सालाय समीपे रत्तिभागसमनन्तरे चोरा आगन्त्वा तस्स अविदूरे निसिन्ना चोरमत्तं^३ मन्तयिसु—एवं उम्मगो^४ भिन्दितब्बो

१ रो०—निष्पादेसि । २ सी०—एवरूपो उपायो नत्थि । ३ रो०—चोरा । ४ स्या०—उम्मगो ।

एवं सन्धिच्छेदकम्भं कत्तब्धं उम्ममगञ्च सन्धिच्छेदञ्च मगसदिसं तित्थसदिसं निज्जटं निग्गुम्भं कत्वा भण्डं हरितुं वट्ठति । हरन्तेन मारेत्वाव हरितब्धं एवं उट्ठातुं समत्थो नाम न भविस्सति । चोरेन च नाम सीलाचारयुत्तेन न भवितब्धं कक्खलेन फरुसेन साहसिकेन भवितब्धन्ति । एवं मन्तेत्वा अञ्जमञ्जं उग्गण्हापेत्वा अगमंसु । एतेनेव उपायेन पुन दिवसे पुन दिवसेति बहू दिवसे तत्थ आगन्त्वा मन्तायंसु ।

सो तेसं वचनं सुत्वा मं सिक्खापेन्तीति सञ्जाय इदानीं मया कक्खलेन फरुसेन साहसिकेन भवितब्धन्ति तथारूपोव अहोसि । पातोव आगतं हत्थिगोपकं सोण्डाय गहेत्वा भूमियं पोथेत्वा मारेसि । अपरम्पि तथा अपरम्पि तथाति आगतागतं मारेति येव ।

महिळामुखो उम्मत्तको जातो दिट्ठदिट्ठे मारेतीति रञ्जो आरोचयिसु । राजापि बोधिसत्तं पहिणि-गच्छ पण्डित ! जानाहि केन कारणेन सो दुट्ठो जातोति ।

बोधिसत्तो गन्त्वा तस्स सरिरे रोगाभावं जत्वा केन नुखो कारणेनेस दुट्ठो जातोति उपधा-रेन्तो^१ अद्धा अविदूरे केसञ्चि वचनं सुत्वा मं [१६५] एते सिक्खापेन्ति सञ्जाय दुट्ठो जातोति सन्निट्ठानं कत्वा हत्थिगोपके पुच्छि-अत्थि नुखो हत्थिसालासमीपे रत्तिभागे केहिचि किञ्चि कथितपुब्बन्ति ?

आम सामि ! चोरा आगन्त्वा कथयिसुति ।

बोधिसत्तो गन्त्वा रञ्जो आरोचेसि- देव ! अञ्जो हत्थिस्स सरिरे विकारो नत्थि । चोरानं कथं सुत्वा दुट्ठो जातोति ।

इदानीं किं कातुं वट्ठतीति ?

सीलवन्ते समणब्राह्मणे हत्थिसालायं निसीदापेत्वा सीलाचारकथं कथापेतुं वट्ठतीति ।

एवं कारेहि ताताति ।

बोधिसत्तो गन्त्वा सीलवन्ते समणब्राह्मणे हत्थिसालाय निसीदापेत्वा सीलकथं कथेथ भन्तेति आह ।

ते हत्थिस्स अविदूरे निसिन्ना- न कोचि परामसितब्बो, न मारेतब्बो सीलाचारसम्पन्नेन खन्ति-मेतानुद्दयायुत्तेन भवितुं वट्ठतीति सीलकथं कथयिसु ।

सो तं सुत्वा मं एते सिक्खापेन्ति इतोदानि पट्ठाय सीलवता भवितब्धन्ति सीलवा अहोसि । राजा बोधिसत्तं पुच्छि-किं ताता ! सीलवन्तो जातोति ? बोधिसत्तो आह-आम देवाति । एवरूपो दुट्ठहत्थी पण्डिते निस्साय पोरानकधम्मे येव पत्तिट्ठितोति वत्वा इमं गाथमाह-

पुराणचोरान वचो निसम्म महिळामुखो पोथयमानुचारि ।

सुसञ्जतानं हि वचो निसम्म गजुत्तमो सब्बगुणेषु अट्ठाति ॥

तत्थ पुराणचोरानाति पुराणचोरानं । निसम्माति सुत्वा । पठमं चोरानं वचनं सुत्वानाति अत्थो । महिळामुखोति हत्थिनिमुखेन सदिसमुखो । अथवा-यथा महिला पुरतो ओलोकियमाना सोभति न पच्छतो तथा सोपि पुरतो ओलोकियमानो सोभति । तस्मा महिळामुखोतिस्स नामं अकंसु । पोथयमानुचारीति पोथयन्तो मारेन्तो अन्वचारी । अयमेव वा पाठो । सुसञ्जतानन्ति सुट्ठु सञ्जतानं सीलवन्तानं । गजुत्तमोति उत्तमगजो मंगलहत्थी । सब्बगुणेषु अट्ठाति सब्बेषु पोरानकगुणेषु पत्तिट्ठितोति । राजा तिरञ्छानगतस्सापि आसयं जानातीति बोधिसत्तस्स महन्तं यसं अदासि । सो यावतायुक्कं ठत्वा र्साद्धिं बोधिसत्तेन यथाकम्मं गतो ।

सत्था पुब्बेपि त्वं भिक्खु ! दिट्ठदिट्ठे येव भजि । चोरानं वचनं सुत्वा चोरे भजि, धम्मिकानं वचनं सुत्वा धम्मिके भजीति । इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा महिळामुखो विपक्खसेवकभिक्खु अहोसि । राजा आनन्दो । अमच्चो पन अहमेवाति । [१६६]

महिलामुखजातकं

१ रो०-उपधातेत्वा ।

७. अभिण्डजातकं

नालं कबलं पदातवेति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं उपासकञ्च महल्लकत्थेरञ्च आरम्भ कथेसि ।

पच्चुपस्रवत्थु

सावत्थियं किर द्वे सहायका । तेसु एको पब्बजित्वा देवसिकं इतरस्स घरं गच्छति । सो तस्स भिक्खं इत्वा सयम्पि भुञ्जित्वा तेनेव सद्धिं विहारं आगन्त्वा याव सुरियस्सत्थंगमा अल्लापसत्लापेन निसीदित्वा नगरं गविसति । इतरोपि नं याव नगरद्वारा अनुगन्त्वा निवत्तति । सो तेसं विस्सासो भिक्खूनं अन्तरे पाकटो जातो । अथेकदिवसं भिक्खू तेसं विस्सासकथं कथेन्ता धम्मसभायं निसीदिसु ।

सत्था आगन्त्वा—काय नुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छि ।

ते—इमाय नाम भन्तेति कथयिंसु ।

सत्था—न भिक्खवे ! इमे इदानीं विस्सासिका, पुब्बेपि विस्सासिकाव अहेमुन्ति वत्ता अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो तस्स अमच्चो अहोसि । तदा एको कुक्कुरो मंगलहत्थिसालं गन्त्वा मंगलहत्थिस्स भुञ्जनट्ठाने पतितानि भत्तसित्थानि खादति । सो तेनेव भोजनेन संबद्ध-मानो^१ मंगलहत्थिस्स विस्सासिको जातो हत्थिस्सेव सन्तिके भुञ्जति । उभोपि विना वत्तितुं न सक्कोन्ति । सो हत्थी नं सोण्डाय गहेत्वा अपरापरं करोन्तो कीळति । अथेकदिवसं एको गामिकमनुस्सो हत्थिगोपकस्स मूलं दत्वा नं कुक्कुरं आदाय अत्तनो गामं अगमासि ।

ततो पट्ठाय सो हत्थी कुक्कुरं अपस्सन्तो नेव खादति न पिवति न नहायति । तमत्थं रज्जो आरो-चयिंसु । राजा बोधिसत्तं पहिण्णि—गच्छ पण्डित ! जानाहि किं कारणा हत्थी एवं करोतीति ?

बोधिसत्तो हत्थिसालं गन्त्वा हत्थिस्स दुम्मनभावं जत्वा इमस्स सरीरे रोगो न पञ्जायति केनचि पनस्स सद्धिं मित्तसन्थवेन भवितव्वं, तं अपस्सन्तो एभ मज्जे सोकाभिभूतोति हत्थिगोपके पुच्छि—अत्थि नुखो इमस्स केनचि सद्धिं विस्सासोति ?

आम सामि ! एकेन सुनखेन सद्धिं बलवा मेत्तीति ।

कहं सो एतरहीति ?

एकेन मनुस्सेन नीतोति ।

जानाथ पनस्स निवासनट्ठानन्ति ?

न जानाम सामीति ।

बोधिसत्तो रज्जो सन्तिकं गन्त्वा—नत्थि देव ! हत्थिस्स कोचि आबाधो एकेन पनस्स मुनखेन सद्धिं बलवविस्सासो । तं अपस्सन्तो न भुञ्जति मज्जेति वत्ता इमं गाथमाह—

नालं कबलं पदातवे न च पिण्डं न कुसे न घंसतुं ।

मज्जाभि अभिण्डवस्सना नागो सिनेहमकासि कुक्कुरेति ॥ [१६७]

तत्थ नालन्ति न समत्थो । कबलन्ति भोजनकाले पठममेव दिन्नं कबलं । पवातथेति पादातवे । सन्धि-
वसेन आकारलोपो वेदितब्बो । गहेतुन्ति अत्थो । न च पिण्डन्ति खादनत्थाय वट्टेट्वा दीयमानं भत्तपिण्डम्पि
नालं गहेतुं । न कुसेति खादनत्थाय दिन्नानि तिणानिपि नालं गहेतुं । न धंसितुन्ति नहापियमानो सरीरम्पि
धंसितुं नालं । एवं यं यं सो हत्थी कातुं न समत्थो तं तं सब्बं रञ्जो आरोचेत्वा तस्स असमत्थभावे अत्तना सल्ल-
क्खितकारणं आरोचेन्तो मञ्जामीति आदिमाह ।

राजा बोधिसत्तस्स वचनं सुत्वा—इदानीं किं कातब्बं पण्डिताति पुच्छि ।

‘अम्हाकं किर मंगलहत्थिस्स सहायसुनखं एको मनुस्सो गहेत्वा गतो यस्स घरे तं सुनखं पस्सन्ति तस्स
अयं अयं नाम दण्डोति’ भेरि चरापेथ देवाति ।

राजा तथा कारेसि । तं पवुत्ति सुत्वा सो पुरिसो सुनखं विस्सज्जेसि । सुनखो वेगेन गत्वा हत्थिसन्ति-
कमे वअगमासि । हत्थी तं सोण्डाय गहेत्वा कुम्भे ठपेट्वा रोदित्वा परिदेवित्वा कुम्भा ओतारेत्वा तेन भुत्तं पच्छा
अत्तना भुञ्जि । तिरच्छानगतस्स आसयं जानीति राजा बोधिसत्तस्स महन्तं यसं अदासि ।

सत्था न भिक्खवे ! इमे इदानीं विस्सासिका पुब्बेपि विस्सासिका येवाति इमं धम्मदेसनं आह-
रित्वा चतुसच्चकथाय विनिवट्टेट्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । इदं चतुसच्चकथाय विनिवट्टनं
नाम सब्बजातकेमुपि अत्थि येव । मयम्पन यत्थस्स आनिसंसो पञ्जायति तत्थेव दस्सयिस्सामाति । तदा सुनखो
उपासको अहोसि, हत्थी महल्लकत्थेरो, राजा आनन्दो, अमच्चपण्डितो पन अहमेव अहोसिन्ति ।

अभिण्णजातकं

८. नन्दिविसालजातकं

मनुञ्जमेव भासेय्या ति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो छब्बग्गियानं भिक्खून् ओमसवादं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

तस्मिं हि समये छब्बग्गिया भिक्खू कलहं करोन्ता पेसले भिक्खू खुंसेन्ति, वम्भेन्ति, ओविज्झन्ति, दसहि अक्कोसवत्थूहि अक्कोसन्ति । भिक्खू भगवतो आरोचेसु । भगवा छब्बग्गिये भिक्खू पक्कोसापेत्वा 'सच्चं किर तुम्हे कलहं करोथ भिक्खवोति पुच्छित्वा सच्चन्ति वुत्ते विगरहित्वा— भिक्खवे ! फरसा वाचा नाम अनत्यकारिका तिरच्छानगतानम्पि अमनापा । पुब्बेपि एको तिरच्छानगतो अत्तानं फरसेन समुदाचरन्तं सहस्सं पराजेसीति वत्वा अतीतं आहरि—[१६८]

अतीतवत्थु

अतीते गन्धाररट्ठे तक्कसिलायं गन्धारराजा रज्जं कारेसि । तदा बोधिसत्तो गोयोनियं निब्बत्ति । अथ नं तरुणवच्छककाले येव एको ब्राह्मणो गोदक्खिणादायकानं सन्तिकं गत्वा गोणं लभित्वा नन्दिविसालोति नामं कत्वा पुत्तट्ठाने ठपेत्वा सम्पियायमानो यागुभत्तादीनि दत्वा पोसेसि ।

बोधिसत्तो वयप्पत्तो चिन्तेसि—अहं इमिना ब्राह्मणेन किञ्छेन पटिजगितो मया च सदिसो सकलजम्बुदीपे अञ्जो समधुरो गोणो नाम नत्थि, यन्नूनाहं अत्तनो बलं दस्सेत्वा ब्राह्मणस्स पोसावनियं ददेय्यन्ति ।

सो एकदिवसं ब्राह्मणं आह—गच्छ ब्राह्मण ! एकं गोविन्दकं सेट्ठि उपसंकमित्वा मय्हं बलिबद्धो अतिबद्धं सकटसतं पवट्ठेतीति वत्वा सहस्सेन अब्भुतं करोहीति ।

सो ब्राह्मणो सेट्ठिस्स सन्तिकं गत्वा कथं समुट्ठापेसि इमस्मिं नगरे कस्स गोणो थामसम्पन्नोति ? अथ नं सेट्ठी असुकस्स च असुकस्स चाति वत्वा सकलनगरे पन अम्हाकं गोणेहि सदिसो नाम नत्थीति आह ।

ब्राह्मणो—मय्हं एको गोणो अतिबद्धं सकटसतं पवट्ठेतुं समत्थो अत्थीति आह ।

सेट्ठी गहपति—कुतो एवरूपो गोणोति आह ।

ब्राह्मणो—मय्हं गेहे अत्थीति ।

तेन हि अब्भुतं करोहीति ।

साधु करोमीति सहस्सेन अब्भुतं अकासि ।

सो सकटसतं वालिकासक्खरपासाणादीनं येव पूरेत्वा पटिपाटियो ठपेत्वा सब्बानि अक्खबन्धन-योत्तेन एकतो बन्धित्वा नन्दिविसालं नहापेत्वा गन्धेन पञ्चगुलं दत्वा कण्ठे मालं पिळ्ळित्वा पुरिमसकटधुरे एककमेव योजेत्वा सयं धुरे निसीदित्वा पतोदं उक्खिपित्वा—अञ्छ कूट ! वहुस्सु कूटाति आह ।

बोधिसत्तो अयं मं अकूटं कूटवादेन समुदाचरतीति चत्तारो पादे थम्भे विय निच्चलं कत्वा अट्ठासि ।

सेट्ठी तं खणञ्जेव ब्राह्मणं सहस्सं आहरापेसि । ब्राह्मणो सहस्सपराजितो गोणं मुञ्चित्वा घरं गत्वा सोकाभिभूतो निपज्जि । नन्दिविसालो चरित्वा आगतो ब्राह्मणं सोकाभिभूतं दिस्वा उपसंकमित्वा—किं ब्राह्मण ! निदायसीति आह ।

कुतो मे निदा सहस्सं पराजितस्साति ?

ब्राह्मण ! मया एतकं कालं तव गेहे वसन्तेन अत्थि किञ्चि भाजनं वा भिन्नपुब्बं, कोचि वा मद्दित-
पुब्बो, अट्ठाने वा पन उच्चारपस्सावो कतपुब्बोति ?

नत्थि ताताति ।

अथ मं कस्मा कूटवादेन समुदाचरसि ? तवेवेसो दोसो मय्हं दोसो नत्थि । गच्छ, तेन सद्धि द्वीहि
सहस्सेहि अभुतं करोहि, केवलं मं अकूटं कूटवादेन न समुदाचरीति ।

ब्राह्मणो तस्स वचनं सुत्वा गत्वा द्वीहि सहस्सेहि अभुतं कत्वा पुरिमनयेनेव सकटसतं अतिबन्धित्वा
नन्दिविसालं मण्डेत्वा पुरिमसकटधुरे योजेसि । कथं योजेसीति ? युगं [१६९] धुरे निच्चलं बन्धित्वा एकाय
कोटिया नन्दिविसालं योजेत्वा एकं कोटिं धुरयोत्तेन पळिवेदेत्वा युगकोटिञ्च अक्खानि पादञ्च निस्साय
मण्डरुक्खदण्डकं दत्वा तेन योत्तेन निच्चलं बन्धित्वा ठपेसि । एवं हि कते युगं एत्तो वा इत्तो वा न गच्छति ।
सक्का होति एकेनेव गोणेन आकड्ढितुं । अथस्स ब्राह्मणो धुरे निसीदित्वा नन्दिविसालस्स पिट्ठि परिम-
ज्जित्वा— गच्छ भद्र ! वहस्सु भद्राति आह ।

बोधिसत्तो अतिबद्धं सकटसतं एकवेगेनेव आकड्ढित्वा पच्छा ठितं सकटं पुरतो ठितस्स सकटस्स ठाने
ठपेसि । गोविन्दकसेट्ठी पराजितो ब्राह्मणस्स द्वे सहस्सानि अदासि । अञ्ज्रेपि मनुस्सा बोधिसत्तस्स वहुं धनम-
दंसु । तं सब्बं ब्राह्मणस्सेव अहोसि । एवं सो बोधिसत्तं निस्साय वहुं धनं लभि ।

सत्था— न भिक्खवे ! फरुसवचनं नाम कस्सचि मनापन्ति छब्बग्गिये भिक्खू गरहित्वा सिक्खापदं
पञ्जापेत्वा अभिसम्बुद्धो हुत्वा इमं गाथमाह—

मनुञ्जमेव भासेय्य नामनुञ्जं कुवाचनं ।

मनुञ्जं भासमानस्स गरुभारं उदद्धरी ॥

धनञ्च नं अलब्भेसि तेन चत्तमनो अहूति ।

तत्थ मनुञ्जमेव भासेय्याति परेन सद्धि भासमानो चतुदोसविरहितं मधुरं मनापं सण्हं मुदुकं पिय-
वचनमेव भासेय्य । गरुभारं उदद्धरीति नन्दिविसालबलिवद्दो अमनापं भासमानस्स भारं अनुद्धरित्वा पच्छा मनापं
पियवचनं भासमानस्स ब्राह्मणस्स गरुं भारं उद्धरि उद्धरित्वा कड्ढित्वा पवट्ठेसीति अत्थो । दकारो पनेत्थ
व्यञ्जनसन्धिवसेन पदसन्धिकरोति ।

इति सत्था मनुञ्जमेव भासेय्याति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा ब्राह्मणो
आनन्दो अहोसि, नन्दिविसालो पन अहमेवाति ।

नन्दिविसालजातकं

९. कण्ठजातकं

यतो यतो गरुधुरन्ति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो यमकपाटिहारियं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

तं सद्धि देवोरोहणेन तेरसनपाते सरभमिगजातके^१ आविभविस्सति । सम्मासम्बुद्धो पन यमकपाटि-
हारियं कत्वा देवलोके वसित्वा महापवारणाय संकस्सनगरद्वारे^२ ओरुय्ह महन्तेन परिवारेन जेतवनं पविट्ठे भिक्खू
धम्मसभायं सन्निपतिता— आवुसो ! तथागतो नाम असमधुरो । तेन तथागतेन वूळ्हं धुरं अञ्जो वहितुं समत्थो
[१७०] नाम नत्थि । छ सत्थारो मयमेव पाटिहारियं करिस्साम मयमेव पाटिहारियं करिस्सामाति वत्वा एकम्पि
पाटिहारियं न अकंसु । अहो, सत्था असमधुरोति सत्थुगुणकथं कथेन्तो निसीदिसु ।

सत्था आगन्त्वा काय नुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निभिन्नाति पुच्छि ।

न भन्ते ! अञ्जाय कथाय एवर्त्तपाय नाम तुम्हाकमेव गुणकथायाति ।

सत्था भिक्खवे ! इदानी मया वूळ्हधुरं को वहिस्सति ? पुब्बेपि तिरच्छानयोनियं निब्बत्तोपि अहं
अत्तना समधुरं कञ्चि नालत्थन्ति वत्वा अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो गोयोनियं पटिसन्धि गण्हि । अथ नं सामिका
तरुणवच्छककाले येव एकिस्सा महल्लिकाय घरे वसित्वा निवासवेतनतो^३ परिच्छिन्दित्वा अदंसु । सा तं यागु-
भत्तादिहि पटिजग्गमाना पुत्तट्ठाने ठपेत्वा वड्ढेसि । सो अय्यकाकाळकोत्वेव पञ्जायित्थ । वयप्पत्तो च अञ्ज-
नवण्णो हुत्वा गामगोणेहि सद्धिं चरति । सीलाचारसम्पन्नो अहोसि । गामदारका सिंगेसुपि कण्णेसुपि गळेपि
गहेत्वा ओलम्बन्ति, नंगुट्ठेपि गहेत्वा कीळन्ति, पिट्ठियम्पि निसीदन्ति । सो एकदिवसं चिन्तेसि— मय्हं माता
दुग्गता मं पुत्तट्ठाने ठपेत्वा दुक्खेन पोसेसि, यन्नूनाहं भति कत्वा इमं दुग्गतभावतो मोचेय्यन्ति । सो ततो पट्ठाय
भति उपधारेन्तो चरति ।

अथेकदिवसं एको सत्थवाहपुत्तो पञ्चहि सकटसतेहि विसमत्तित्थं सम्पत्तो । तस्स गोणा सकटानि
उत्तारेतुं न सक्कोन्ति । पञ्चसु सकटसतेसु गोणा युगपरम्पराय योजिता एकम्पि सकटं उत्तारेतुं नासक्खिसु ।
बोधिसत्तोपि गामगोणेहि सद्धिं तित्थसमीपं चरति । सत्थवाहपुत्तोपि गोसुतवित्तको । सो अत्थि नुखो एतेसं गुत्रं
अन्तरे इमानि सकटानि उत्तारेतुं समत्थो उसभाजानिय्योति उपधारयमानो बोधिसत्तं दिस्वा अयं आजानिय्यो
सक्खिस्सति मय्हं सकटानि उत्तारेतुं को नुखो अस्स सामिकोति गोपालके पुच्छि—को नु खो भो ! इमस्स सामिको
अहं इमं सकटेसु योजेत्वा सकटेसु उत्तारितेसु वेतनं दस्सामीति ।

ते आहंसु—गहेत्वा नं योजेथ नत्थि इमस्स इमस्मि ठाने सामिकोति ।

सो तं नासाय रज्जुकेन बन्धित्वा कड्ढेन्तो चालेतुं नासक्खि । बोधिसत्तो किर भतिया कथिताय
गमिस्सामीति न अगमासि । सत्थवाहपुत्तो तस्साधिप्पायं जत्वा— सामि ! तया पञ्चसु सकटसतेसु उत्तारि-
तेसु एकेकसकटस्स द्वे द्वे कहापणानि भति कत्वा सहस्सं दस्सामीति आह ।

तदा बोधिसत्तो सयमेव अगमासि ।

अथ नं पुरिसा सकटेसु योजेसु । अथ नं एकवेगेनेव उक्खिपित्वा थले पतिट्ठापेसि । एतेनुपा-
[१७१] येन सम्बसकटानि उत्तारेसि । सत्यवाहपुत्तो एकेकस्स सकटस्स एकं कत्वा पञ्चसतानि भण्डिक
कत्वा तस्स गळे बन्धि ।

सो अयं मय्हं यथापरिच्छिन्नं भति न देति न दानिस्स गन्तुं दस्सामीति गन्त्वा सम्बपुरिमस्स सकटस्स
पुरतो मगं निवारेत्वा अट्ठासि । अपनेतुं वायमन्तापि नं अपनेतुं नासक्खिसु । सत्यवाहपुत्तो जानाति मञ्जे
एस अत्तनो भतिया ऊनभावन्ति एकस्मि साटके सहस्सभण्डिकं बन्धित्वा-अयं ते सकटुत्तारणभतीति गीवाय
लग्गेसि ।

सो सहस्सभण्डिकं आदाय मातु सन्तिकं अगमासि । गामदारका किं नामेतं अय्यिकाकाळस्स गळेति
बोधिसत्तस्स सन्तिकं आगच्छन्ति । सो तेहि अनुबन्धितो दूरतोव पलायन्तो मातुसन्तिकं गतो । पञ्चन्नं पन सकट-
सतानं उत्तारितत्ता रत्तेहि अक्खीहि किलन्तरूपो पञ्चायित्थ । उपासिका तस्स गीवाय सहस्सत्यविकं दिस्वा
तात ! अयं ते कहं लद्धाति गोपालदारके पुच्छित्वा तमत्थं सुत्वा तात ! किं अहं तथा लद्धभतिया जीवितुकामा ?
किंकारणा एवरूपं दुक्खं अनुभोसीति वत्वा बोधिसत्तं उण्होदकेन नहापेत्वा सकलसरीरं तेलेन मक्खेत्वा पानीयं
पायेत्वा सप्पायं भोजनं भोजेत्वा जीवितपरियोसाने सद्धिं बोधिसत्तेन यथाकम्मं गता ।

सत्या न भिक्खवे ! तथागतो इदानीं असमधुरो पुब्बेपि असमधुरो येवाति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा
अनुसन्धि घटेत्वा अभिसम्बुद्धो हुत्वा इमं गाथमाह-

यतो यतो गरुधुरं यतो गम्भीरवत्तनी ।

तवस्सु कण्हं युञ्जन्ति स्वास्सु तं वहते धुरन्ति ॥

तत्थ यतो यतो गरुधुरन्ति यस्मिं यस्मिं ठाने धुरं गरुभारियं होति अञ्जे बलिबद्धा उक्खिपितुं न सक्कोन्ति ।
यतो गम्भीरवत्तनीति वत्तन्ति एत्थाति वत्तनी । मग्गस्सेतं नामं । यस्मिं ठाने उवकचिक्खल्लमहन्तताय वा विसम-
च्छिन्नतटभावेन वा मग्गो गम्भीरो होतीति अत्थो । तवस्सु कण्हं युञ्जन्तीति अस्सूति निपातमत्तं । तदा कण्हं
युञ्जन्तीति अत्थो । यदा धुरञ्च गरु होति, मग्गो च गम्भीरो तदा अञ्जे बलिबद्धे अपनेत्वा कण्हमेव योजेन्तीति
वुत्तं होति । स्वास्सु तं वहते धुरन्ति एत्थापि अस्सूति निपातमत्तमेव । सो तं धुरं वहतीति अत्थो ।

एवं भगवा तदा भिक्खवे ! कण्होव तं धुरं वहतीति दस्सेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोचानेसि ।
तदा महल्लिका उप्पलवण्णा अहोसि, अय्यिकाकाळको पन अहमेवाति ।

कण्हजातकं [१७२]

१०. मुनिकजातकं

मा मुनिकस्साति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो थुल्लकुमारिकपलोभनं आरब्ध कथेसि । तं तेरसनिपाते चुल्लनारदकस्सपजातके आविभवस्सति ।

पच्चुपन्नवत्थु

सत्था पन तं भिक्खुं— सच्चं किर त्वं भिक्खु ! उक्कण्ठितोति पुच्छि । आम भन्तेति । किं निस्सायाति ? थुल्लकुमारिकपलोभनं भन्तेति ।

सत्था— भिक्खु ! एसा तव अनत्थकारिका, पुब्बेपि त्वं इमिस्सा विवाहदिवसे जीवितक्खयं पत्वा महाजनस्स उत्तरिभंगभावं पत्तोति वत्वा अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो एकस्मिं गामके एकस्स कुटुम्बिकस्स गेहे गोयोनियं निव्वत्ति महालोहितोति नामेन । कणिट्ठभातापिस्स चुल्ललोहितो नाम अहोसि । तेयेव द्वे भातिके निस्साय तस्मिं कुले कम्मधुरं वड्ढति । तस्मिं पन कुले एका कुमारिका अत्थि । नं एको नगरवासी कुलपुत्तो अतनो पुत्तस्स वारेसि । तस्सा मातापितरो कुमारिकाय विवाहकाले आगतानं पाहुनकानं उत्तरिभंगो भविस्सतीति यागुभत्तं दत्वा मुनिकं नाम सूकरं पोसेसु । तं दिस्वा चुल्ललोहितो भातरं पुच्छि — इमस्मिं कुले कम्मधुरं वड्ढमानं अम्हेद्वे भातिके निस्साय वड्ढति, इमे पन अम्हाकं तिणपलालादीनेव देन्ति सूकरं यागुभत्तेन पोसेन्ति । केन नुखो कारणेनेस एतं लभतीति ?

अथस्स भाता— तात चुल्ललोहित ! मा त्वं एतस्स भोजनं पिहयि । अयं सूकरो मरणभत्तं भुञ्जति । एतिस्साय हि कुमारिकाय विवाहकाले आगतानं पाहुनकानं उत्तरिभंगो भविस्सतीति इमे एतं सूकरं पोसेन्ति । इतो कतिपाहस्सच्चयेने ते मनुस्सा आगमिस्सन्ति अथ नं सूकरं पादेसु गहेत्वा कड्ढेन्ता हेट्ठा मञ्चतो नीहरित्वा जीवितक्खयं पापेत्वा पाहुनकानं सूपव्यञ्जनं करीयमानं पस्सिस्ससीति वत्वा इमं गाथमाह—

मा मुनिकस्स पिहयि आतुरस्सानि भुञ्जति ।

अप्पोस्सुक्को भुसं खाद एतं दीघायुलक्खणन्ति ॥

तत्थ मा मुनिकस्स पिहयीति मुनिकस्स भोजनं पिहं मा उप्पादयि । एस सुभोजनं भुञ्जतीति मा मुनिकस्स पिहयि—कदा नुखो अहम्पि एवं सुखितो भवेय्यन्ति । मा मुनिकभावं पत्थयि । अयं हि आतुरस्सानि भुञ्जतीति आतुरस्सानीति मरणभोजनानि । अप्पोस्सुक्को भुसं खादति तस्स भोजने निरुस्सुक्को हुत्वा अत्तना लद्धं भुसं खाद । एतं दीघायुलक्खणन्ति एतं दीघायुभावस्स कारणं ।

ततो नचिरस्सेव ते मनुस्सा आर्गमिसु । मुनिकं घातेत्वा नानप्पकारेहि पर्विसु । बोधिसत्तो चुल्ललोहितं आह—दिट्ठो ते तात ! मुनिकोति ? दिट्ठं मे भातिक ! मुनिकस्स भोजनं [१७३] फलन्ति । एतस्स भत्ततो सतगुणेन सहस्सगुणेन अम्हाकं तिणपलालभुसमेव उत्तमञ्च अनवज्जञ्च दीघायुलक्खणञ्चाति ।

सत्था एवं खो त्वं भिक्खु पुब्बेपि इमं कुमारिकं निस्साय जीवितक्खयम्पत्वा महाजनस्स उत्तरिभंगिकभावं गतोति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने उक्कण्ठितभिक्खु सोतापत्ति-फले पतिट्ठासि । सत्थापि अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा मुनिकसूकरो उक्कण्ठितभिक्खु अहोसि । थुल्लकुमारिका एसा एव, चुल्ललोहितो आनन्दो, महालोहितो पन अहमेवाति ।

मुनिकजातकं

कुवक्खवग्गो तत्तिवो निट्ठितो

४. कुलावकवग्गवण्णना

१. कुलावकजातकं

कुलावकाति इदं सत्था जंतवने विहरन्तो अपरिस्सावेत्वा पानीयं पीतं भिक्खुं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपञ्चवत्थु

सावत्थितो किर द्वे सहायका दहरभिक्खू जनपदं गन्त्वा एकस्मिं फामुकट्ठाने यथाज्झासयं वसित्वा सम्मासम्बुद्धं पस्सिस्सामाति पुन ततो निक्खमित्वा जेतवनाभिमुखा पायिसु । एकस्स हत्थं परिस्सावणं अत्थि एकस्स नत्थि । द्वेपि एकतो पानीयं परिस्सावेत्वा पिवन्ति । ते एकदिवसं विवादं अकंसु । परिस्सावनसामिको इतरस्स परिस्सावनं अदत्त्वा सयमेव पानीयं परिस्सावेत्वा पिवि । इतरो पन परिस्सावनं अलमित्वा पिपासं सन्धारेतुं असक्कोन्तो अपरिस्सावेत्वा पानीयं पिवि । ते उभोपि अनुपुब्बेन जेतवनं आगन्त्वा सत्थारं वन्दित्वा निसीदिसु । सत्था सम्मोदनीयं कथं कत्वा—कुतो आगतत्थाति पुच्छि ।

भन्ते ! मयं कोसलजनपदे एकस्मिं गामके वसित्वा ततो निक्खमित्वा तुम्हाकं दस्सनत्थाय आगताति ।

कच्चि पन वो समग्गा आगतत्थाति ?

अपरिस्सावनको आह—अयं भन्ते अन्तरामग्गे मया सद्धि विवादं कत्वा परिस्सावनं नादासीति ।

इतरो आह—अयं भन्ते ! अपरिस्सावेत्वाव जानं सप्पाणकं उदकं पिवीति ।

सच्चं किर त्वं भिक्खु ! जानं सप्पाणकं उदकं पिवीति ?

आम भन्ते ! अपरिस्सावितं उदकं पीतं मयाति ।

सत्था भिक्खु ! पुब्बे पण्डिता देवनगरे रज्जं कारेन्ता युद्धपराजिता समुद्दिप्पेन पलायन्ता इस्सरियं निस्साय पाणवधं न करिस्सामाति ताव महन्तं यसं परिच्चजित्वा सुपण्णोत्तकानं जीवितं दत्त्वा रथं निवत्तयिभूति वत्ता अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते मगधरट्ठे राजगहे एको मगधराजा रज्जं कारेसि । तदा बोधिसत्तो यथा एतरहि सक्को पुरिमे अत्तभावे मगधरट्ठे मचलगामके निब्बत्ति । एवं तस्मिं येव मचलगामके [१७४] महाकुलस्स पुत्तो हुत्वा निब्बत्ति । नामगहण-दिवसे चस्स मघकुमारोत्वेव नामं अकंसु । सो वयप्पत्तो मघमाणवोति पञ्छायित्थ । अथस्स मातापितरो समानजा-तिया कुलतो दारिकं आनयिस्सु । सो पुत्तधीताहि वड्डमानो दानपति अहोसि । पञ्च सोलानि रक्खति । तस्मिञ्च गामे तिसेव कुलानि होन्ति । ते च तिस कुला मनुस्सा एकदिवसं गाममज्जे ठत्वा गामकम्मं करोन्ति । बोधिसत्तो ठितट्ठाने पादेहि पंसुं वियुद्धित्वा तं पदेसं रमणीयं कत्वा अट्ठाभि । अथञ्चो एको आगन्त्वा तस्मिं ठाने ठितो । बोधिसत्तो अपरं ठानं रमणीयं कत्वा अट्ठासि । सत्थापि अञ्चो ठितो । बोधिसत्तो अपरमिप अपरम्पीति सञ्जे-सम्पि ठितट्ठानं रमणीयं कत्वा अपरेन समयेन तस्मिं ठाने मण्डपं कारेसि । मण्डपमिप अपनेत्वा सालं कारेसि । तत्थ फलकासनानि सन्थरित्वा पानीयचाटिं ठपेसि । अपरेन समयेन तेपि तिस जना बोधिसत्तेन समानच्छन्वा अहेसु । ते बोधिमनो पञ्चसु सीलेसु पतिट्ठापेत्वा ततो पट्ठाय तेहि सद्धि पुञ्जानि करोन्तो विचरति । तेपि

तेनेव सद्धिं पुञ्जानि करोन्ता कालस्तेव वुट्ठाय वासिफरसुमूसलहत्था चतुमहापयादिसू मूसलेन पासाणे उब्बत्तेत्वा पवट्ठेन्ति । यानानं अक्खपटिघातरक्खे हरन्ति । विसमं समं करोन्ति । सेतुं अत्थरन्ति । पोक्खरणियो खणन्ति । सालं करोन्ति । दानानि देन्ति । सीलानि रक्खन्ति । एवं येभुण्णेन सकलगामवासिनो बोधिसत्तस्स ओवादे ठत्वा सीलानि रक्खिसु ।

अथ नेसं गामभोजको चिन्तेसि—अहं पृब्बे एतेसु सुरं पिवन्तेसु पाणातिपातादीनि करोन्तेसु चाटिकहा-पणादिवसेन चैव दण्डबलिवसेन च धनं लभामि, इदानीं पन मघो माणवो सीलं रक्खापेसीति, तेसं पाणातिपातादीनि कातुं न देति । इदानीं पन नो पञ्च सीलानि रक्खापेस्सतीति कुद्धो राजानं उपसंक्रमित्वा—देव बहू चोरा गामघातादीनि करोन्ता विचरन्तीति आह ।

राजा तस्स वचनं सुत्वा—गच्छ ते आनेहीति आह ।

सो गत्वा सब्बेपि ते बन्धित्वा आनेत्वा आनीता आनीता देव ! चोराति रञ्जो आरोचेसि ।

राजा तेसं कम्मं असोधेत्वाव हत्थिना ते मद्दापेयाति आह ।

ततो सब्बेपि ते राजगणे निपज्जापेत्वा हत्थि आनयिंसु । बोधिसत्तो तेसं ओवादं अदासि तुम्हे सीलानि आवज्जेथ पेसुञ्जकारके च रञ्जे च हत्थिम्हि च अत्तनो सरीरे च एकसदिसमेव मेतं भावेयाति । ते तथा अकंसु ।

अथ तेसं मदनत्थाय हत्थि उपनेसुं । सो उपनीयमानोपि न उपगच्छति, महाविरवं विरवित्वा पलायति । अथ अञ्जामञ्जं हत्थि आनयिंसु । तेपि तथेव पलायिंसु ।

राजा—एतेसं हत्थे किञ्चि ओसधं भविस्सतीति चिन्तेत्वा विचिनथाति आह ।

विचिनन्ता अदिस्वा नत्थि देवाति आहंसु ।

तेन हि किञ्चि मन्तं परिवत्तेस्सन्ति [१७५] पुच्छथ ते अत्थि वो परिवत्तनामन्तोति ।

राजपुरिसा पुच्छिंसु ।

बोधिसत्तो अत्थीति आह ।

राजपुरिसा अत्थि किर देवाति आरोचयिंसु ।

राजा सब्बेपि तं पक्कोसापेत्वा तुम्हाकं जाननमन्तं कथेयाति आह ।

बोधिसत्तो अबोच—देव ! अञ्जो अम्हाकं मन्तो नाम नत्थि, अम्हे पन तिसमत्ता जना पाणं न हनाम, अदिन्नं नादियाम, मिच्छा न चराम, मुसावादं न भणाम, मज्जं न पिवाम, मेतं भावेम, दानं वेम, मगं समं करोम, पोक्खरणियो खणाम, सालं करोम । अयं अम्हाकं मन्तो च परित्तञ्च वड्ढि चाति ।

राजा तेसं पसन्नो पेसुञ्जकारकस्स सब्बं गेहे विभयं तञ्च तेसञ्जेव दासं कत्वा अदासि । तं हत्थिञ्च तेसञ्जेव अदासि । ते ततो पट्ठाय यथाश्रयिया पुञ्जानि करोन्ता चतुमहापथे महन्तं सालं कारेस्सामाति वड्ढकि पक्कोसापेत्वा सालं पट्ठपेसुं । मातुगामेसु पन विगतच्छन्दताय तस्सा सालाय मातुगामानं पत्तिं नादंसु । तेन च समयेन बोधिसत्तस्स गेहे सुधम्ममा सुचित्ता सुनन्दा सुजाताति चतस्सो इत्थियो होन्ति । तासु सुधम्ममा वड्ढकिना सद्धिं एकतो हुत्वा भातिक ! इमिस्सा सालाय मं जेट्ठिकं करोहीति वत्वा लञ्चं अदासि । सो साधूति सम्पटिच्छित्त्वा पठममेव कण्णिकरक्खं सुक्खापेत्वा तच्छेत्वा विज्झित्वा कण्णिकं निट्ठापेत्वा वत्थेन पळिबेठेत्वा ठपेसि । अथ सालं निट्ठापेत्वा कण्णिकारोपनकाले—अहो अय्या ! एकं न सरिम्हाति आह ।

किं नाम होति ?

कण्णिकं लद्धं वट्ठतीति ।

हीतु आहरिस्सामाति ।

इदानीं छिन्नरक्खेन कातुं न सक्का, पुब्बे येव छिन्दित्वा तच्छेत्वा विज्झित्वा ठपितकण्णिकं लद्धं वट्ठतीति ।

इदानीं किं कातम्बन्ति ?

सचे कस्सवि गेहे निट्ठापेत्वा ठपितविक्कायिककण्णिका अत्थि सा परियेसितम्बाति ।

ते परियेसन्ता सुधम्माय गेहे दिस्वा मूलेन न लभिसु । सचे मं सालायं पत्तिकं करोथ दस्सामीति वुत्तं पन मयं मातुगामानं पत्तिं नादम्हाति आहंमु । अथ ने वद्धकी आह-अय्या तुम्हे किं कथेय ? ठपेत्वा ब्रह्मलोकं अञ्चं मातुगामरहितट्ठानं नाम नत्थि । गण्हथ कण्णिकं एवं सन्ते अम्हाकं कम्मं निट्ठं गमिस्सतीति । ते साधूति कण्णिकं गहेत्वा सालं निट्ठापेत्वा आसनफलकानि सन्थरित्वा पानीयचाटियो ठपेत्वा यागुभत्तं निबन्धिसु । सालं पाकारेन परिक्खित्वा द्वारं योजेत्वा अन्तोपाकारे वालुकं आकिरित्वा बहिपाकारे तालपन्ति रोपेसु । सुचित्तापि तस्मिं ठाने उय्यानं कारेसि । पुष्पूपगफलूपगरुक्खो असुको नाम तस्मिं नत्थीति नाहोसि । सुनन्दापि तस्मिं येव ठाने पोक्खरणिं कारेसि पञ्चवण्णेहि पदुमेहि सञ्छन्नं रमणीयं । सुजाता किञ्चि न अकासि । बोधिसत्तो मातुगण्डठानं पितुगण्डठानं कुलजेट्ठापचायिककम्मं सच्चवाचं अफरुसवाचं अपिसुणवाचं मच्छेरविनयन्ति इमानि सत्तवतपदानि पूरेत्वा-

“मातापेत्तिभरं जन्तुं कुल जेट्ठापचायिनं ।

सण्हं सखिलसम्भासं पेसुणेत्यपहायिनं ॥

मच्छेरविनये युत्तं सच्चं कोधाभिभुं नरं ।

तं वे देवा तावत्तिता आहु सप्पुरिसो इती ॥”^१ ति ।

एवं पासंसियभावं आपज्जित्वा जीवितपरियोसाने तावत्तिसभवने सक्को देवराजाहुत्वा निम्बन्ति । तेपिस्स सहाया तत्थेव निम्बन्तिस्सु । तस्मिं काले तावत्तिसभवने असुरा पटिवसन्ति । सक्को देवराजा किं नो साधारणेन रज्जनाति असुरे दिम्बपानं पायेत्वा मत्ते समाने पादेसु गाहापेत्वा सिनेरुगपाते खिपापेसि । ते असुरभवनमेव सम्पापुणिंसु । असुरभवनं नाम सिनेरुस्स हेट्ठिमतले तावत्तिसदेवलोकप्पमाणमेव । तत्थ देवानं पारिच्छत्तको विय चित्तपाटली नाम कप्पट्ठियरुक्खो होति । तं चित्तपाटलिया पुप्फिताय जानन्ति नायं अम्हाकं देवलको देवलोकस्मिं हि पटिच्छत्तको पुप्फतीति । अथ ते जरसक्को अम्हे मत्ते कत्वा महासमुद्दपिट्ठे खिपित्वा अम्हाकं देवनगरं गण्हि । ते मयं तेन सद्धि युज्जित्वा अम्हाकं देवनगरमेव गण्हिस्सामाति किपिल्लिका विय थम्भं सिनेरुं अनुसञ्चरमाना उट्ठीहंसु । सक्को असुरा किर उट्ठिताति सुत्वा समुद्दपिट्ठे येव अम्भुग्गन्त्वा युज्जमानो तेहि पराजितो दियहुद्वयोजनसतिकेन वेजयन्तरथेन दक्खिणसमुद्दस्स मत्थकमत्थकेन पलायितुं आरब्धो । अथस्स रथो समुद्दपिट्ठेन वेगेन गच्छन्तो सिम्बलिवनं पक्खन्तो तस्स गमनमग्गे सिम्बलिवनं तालवनं^२ विय छिज्जित्वा छिज्जित्वा समुद्दपिट्ठे पतति । सुपण्णपोतका समुद्दपिट्ठे परिपतन्ता महारवं रविंसु । सक्को मातलिं पुच्छि-सम्म मातलि ! किं सद्धो नामेस अतिकरुणो रवो वत्ततीति ? देव ! तुम्हाकं रथवेगविच्छुण्णिते सिम्बलिवने पतन्ते सुपण्णपोतका मरणभयतज्जिता एकविरवं विरवन्तीति । महासत्तो सम्म मातलि ! मा अम्हे निस्साय एते किल-मन्तु न मयं इस्सरियं निस्साय पाणबधकम्मं करोम । एतेसं पन अत्थाय मयं जीवितं परिच्छजित्वा असुरानं दस्साम निवत्तयेत्तं रथन्ति वत्वा इमं गायमाह-

कुलावका मातलि ! सिम्बलिस्मिं ईसामुखेन परिवज्जयस्सु ।

कामं चजाम असुरेसु पाणं मायिमे बिजा विकुलावा अहेसुन्ति ॥

तत्थ कुलावकाति सुपण्णपोतका । मातलीति सारथि आमन्तेसि । सिम्बलिस्मिन्ति पस्स एते सिम्बलिरुक्खे ओलम्बन्ता ठिताति दस्सेति । ईसामुखेन परिवज्जयस्सुति एते एतस्स रथस्स [१७७] ईसामुखेन यथा न हञ्चन्ति एवं ते परिवज्जयस्सु । कामं चजाम असुरेसु पाणन्ति यदि अम्हेसु असुरानं पाणं चजन्तेसु एतेसं सोत्थि होति कामं

चजाम एकसेनेव मयं असुरेसु अम्हाकं पाणं चजाम । मयिमे विजा विजुलावा अहेसुन्ति इमे पन दिजा इमे पन गरुल-
पोतका विद्वस्तविचुण्णितकुलवकताय विजुलावा मा अहेसुं, मा अम्हाकं दुक्खं एतेसं उपरि खिप निवत्तय निवत्तय
रथन्ति । मातलिसंगाहको तस्स वचनं सुत्वा रथं निवत्तत्वा अञ्जेन मग्गेन देवलोकाभिमुखं अकासि । असुरा पन
तं निवत्तयमानमेव विस्वा अद्वा अञ्जेहिपि चक्कवाळेहि सक्का आगच्छन्ति, बलं लभित्वा रथो निवत्तो भविस्स-
तीति मरणभयभीता पलायित्वा असुरभवनमेव पविसिंसु । सक्कोपि देवनगरं पविसित्वा द्वीसु देवलोकेसु देवगणेन
परिवृतो नगरमञ्जे अट्ठासि । तस्मिं खणे पठवि भिन्दित्वा योजनसहस्रमुब्बधो वेजयन्तपासादो उट्ठहि । विजयन्ते
उट्ठितत्ता वेजयन्तो त्वेव नाम अकंसु । अथ सक्को पुन असुरानं अनागमनत्थाय पञ्चसु ठानेसु आरक्खं ठपेसि ।
यं सन्धाय वृत्तं-

“अन्तरा द्विन्नं अयुञ्जपुरानं पञ्चविधा ठपिता अभिरक्खा ।

उरगो करोति पयस्स च हारी मदनयुत्ता चतुरो च महन्ता ॥” ति ।

द्वे नगरानिपि युद्धेन गहेतुं असक्कुण्येय्यताय अयुञ्जपुरानि नाम जातानि, देवनगरञ्च असुरनगरञ्च । यदा
हि असुरा बलवन्ता होन्ति अथ देवेहि पलायित्वा देवनगरं पविसित्वा द्वारे पिहिते असुरानं सतसहस्रसम्पि किञ्चि
कातुं न सक्कोति । यदा देवा बलवन्ता होन्ति अथ असुरेहि पलायित्वा असुरनगरस्स द्वारे पिहिते सक्कानं सत-
सहस्रसम्पि किञ्चि कातुं न सक्कोति । इति इमानि द्वे नगरानि अयुञ्जपुरानि नाम । तेसं अन्तरा एतेसु उरगादिमु
पञ्चसु ठानेसु सक्केन रक्खा ठपिता ।

तत्थ उरगसद्देन नागा गहिता । ते उरगा उदके बलवन्ता होन्ति । तस्मा सिनेहस्स पठमालिन्दे तेसं
आरक्खा । करोति सद्देन सुपण्णा गहिता तेसं किर करोटि नाम पानभोजनं तेन तं नामं लभिसुं । दुतियालिन्दे
तेसं आरक्खा । पयस्सहारिसद्देन कुम्भण्डा गहिता दानवरक्खसा किरते । ततियालिन्दे तेसं आरक्खा । मदन-
युतसद्देन यक्खा गहिता । विसमचारिणो किर ते युद्धसोण्डा चतुत्थालिन्दे तेसं आरक्खा । चतुरो च महन्ताति
चत्तारो महाराजानो वृत्ता पञ्चमालिन्दे तेसं आरक्खा । तस्मा यदि असुरा कुपिता आविलचित्ता देवपूरं उपयन्तिं
पञ्चविधेषु युद्धेसु यं गिरिणो पठमं परिमण्डं तं उरगा पट्टिवाहिय तिट्ठन्ति । एवं सेसेसु मेसा । [१७८]

इमेसु पन पञ्चसु ठानेसु आरक्खं ठपेत्वा सक्के^३ देवानमिन्दे दिब्बसम्पत्तिं अनुभवमाने सुधम्मा
चवित्वा तस्सेव पादपरिचारिका हुत्वा निब्बत्ति । कणिकाय दिन्ननिस्सन्देन चस्सा पञ्चयोजनसत्तिका
सुधम्मा नाम देवमणिसभा उदपादि यत्थ दिब्बसेतच्छतस्स हेट्ठा योजनप्पमाणे कञ्चनपल्लंके निसिन्नो
सक्को देवानमिन्दो देवमनुस्सानं कत्तब्बकिञ्चानि करोति । सुचित्तापि चवित्वा तस्सेव पादपरिचारिका हुत्वा
निब्बत्ति । उय्यानस्स करणनिस्सन्देन चस्सा चित्तलतावनं नाम उय्यानं उदपादि । सुनन्दापि चवित्वा तस्सेव पाद-
परिचारिका हुत्वा निब्बत्ति । पोक्खरणिनिस्सन्देन चस्सा नन्दा नाम पोक्खरणी उदपादि ।

सुजाता पन कुसलकम्मस्स अकतत्ता एकस्मि अरञ्जे कन्दराय बकसकुणिका हुत्वा निब्बत्ता ।
सक्को सुजाता न पञ्चायति, कत्थं नुखो निब्बत्ता ति आवज्जेन्तो दिट्वा तत्थ गन्त्वा तं आदाय देवलोकं गन्त्वा
तस्सा रमणीयं देवनगरं सुधम्मादेवसभं चित्तलतावनं नन्दापोक्खरणिञ्च दस्सेत्वा एता कुसलं कत्वा मय्हं पाद-
परिचारिका हुत्वा निब्बत्ता त्वं पन कुसलं अकत्वा तिरच्छानयोनियं निब्बत्ता इतो पट्ठाय सीलं रक्खाहीति तं
ओवदित्वा पञ्चसु सीलेसु पटिट्ठापेत्वा तत्थेव नेत्वा विस्सज्जेसि । सापि ततो पट्ठाय सीलं रक्खति । सक्को
कतिपाहञ्चयेन सक्का नुखो सीलं रक्खितुन्ति गन्त्वा मच्छरूपेन उत्तानो हुत्वा पुरतो निपज्जि । सा मतमच्छकोति
सञ्जाय सीसे अगहेसि । मच्छो नंगुट्ठं चालेसि । अथ न जीवति मञ्जेति विस्सज्जेसि । सक्को साधु साधु सक्खि-
स्ससि सीलं रक्खितुन्ति देवलोकं अगमासि । सा ततो चुता बाराणसियं कुम्भकारगेहे निब्बत्ति । सक्को कहन्नुखो

निब्वत्ताति तत्थ निब्वत्तभावं अत्वा सुवण्णएलालुकानं यानकं पूरेत्वा मज्जे गामस्स महल्लकवेसेन निसीदित्वा एलालुकानि गण्हथाति एलालुकानि गण्हथाति उग्घोसेसि । मनुस्सा आगन्त्वा देहि ताताति आहंसु । अहं सील-रक्खकानं देमि, तुम्हे सीलं रक्खथाति ? मयं सीलं नाम न जानाम मूलेन देहीति । न मय्हं मूलेन अत्थो । सीलं रक्खकानञ्जेवाहं दम्मीति । मनुस्सा को चार्यं^२ एलालुकोति पक्कमिसु । सुजाता तं पवत्ति सुत्वा मय्हं आनीतं भविस्सतीति गन्त्वा देहि ताताति आह । सीलं रक्खसि अम्माति ? आम रक्खामीति । इदं मया तुय्हमेव अत्थाय आभतन्ति सद्धि यानकेन गेहद्वारे ठपेत्वा पक्कामि । सापि यावतायुकं सीलं रक्खित्वा ततो चुता वेपचित्तिस्स असुरि-न्दस्स धीता हुत्वा निब्वत्ति सीलानिसंसेन अभिरूपा अहोसि । सो तस्सा वयप्पत्त[१७१] काले मय्हं धीता अत्तनो चित्तरुचितं सामिकं गण्हतूति असुरे सन्निपातेसि । सक्को कहन्नुखो सा निब्वत्ताति ओलोकेन्तो तत्थ निब्वत्तभावं अत्वा सुजाता चित्तरुचितं गण्हन्ती मं गण्हस्सतीति असुरवण्णं मापेत्वा तत्थ अगमासि । सुजातं अलंकरित्वा सन्नि-पातट्ठानं आनेत्वा चित्तरुचितं सामिकं गण्हाति आहंसु । सा ओलोकेन्ती सक्कं दिस्वा पुब्बेपि सिनेहवसेन अयं मे सामिकोति अग्गहेसि । सो तं देवनगरं आनेत्वा अद्दुत्तियानं नाटिकाकोटीनं जेट्ठिकं कत्वा यावतायुकं टत्वा यथाकम्मं गतो ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा एवं भिक्खवे पुब्बे पण्डिता देवरज्जं कारयमाना अत्तनो जीवितं परिच्चजन्तापि पाणातिपातं न करिंसु । त्वं नाम एवरूपे निय्यानिकसासने पब्बजित्वा अपरिस्सावितं सम्पाणकं उदकं पिबिस्ससीति तं भिक्खुं गरहित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा मातलिसंगाहको आनन्दो अहोसि , सक्को पन अहमेवाति ।

कुलावकजातकं

२. नञ्जजातकं

रुदं मनुञ्जन्ति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं बहुभण्डिकं भिक्खुं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

वत्थु हेट्ठा देवधम्मजातके वुत्तसदिसमेव । सत्था तं भिक्खुं सच्चं किर त्वं भिक्खु ! बहुभण्डोति पुच्छि । आम भन्तेति । किं कारणा त्वं भिक्खु ! बहुभण्डो जातोति ?

सो एत्तकं सुत्वाव कुड्डो निवासनपारुपनं छड्ढेत्वा इमिनादानि नीहारेन विचरामीति सत्थु पुरतो नगो अट्ठासि । मनुस्सा धिधीति आहंसु । सो ततो पलायित्वा हीनायावत्तो । भिक्खू धम्मसभायं सन्निसिन्ना सत्थु नाम पुरतो एवरूपं करिस्सतीति तस्स अगुणकथं कथेसुं ।

सत्था आगन्त्वा— काय नुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छि ।

भन्ते ! सो हि नाम भिक्खु तुम्हाकं पुरतो चतुपरिसमज्जे हिरौत्तप्यं पहाय गामदारको विय नगो ठत्वा मनुस्सेहि जिगुच्छियमानो हीनायावत्तित्वा सासना परिहीनोति तस्स अगुणकथाय निसिन्नम्हाति ।

सत्था— न भिक्खवे ! इदनेव सो भिक्खु हिरौत्तप्पाभावेन रतनसासना परिहीनो, पुब्बेपि इत्थिरतन-पटिलाभतोपि परिहीनो येवाति वत्वा अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते पठमकप्पे चतुप्पदा सीहं राजानं अकंसु, मच्छा आनन्दमच्छं, सकुणा सुवण्णहंसं । तस्स पन सुव-ण्णहंसराजस्स धीता हंसपोतिका अभिरूपा अहोसि । सो तस्सा वरं अदासि । [१८०] सा अत्तनो चित्तरुचितं सामिकं वारेसि । हंसराजा तस्सा वरं दत्वा हिमवन्ते सब्बसकुणे सन्निपातापेसि । नानप्यकारा हंसमोरादयो सकुणगणा समा-गन्त्वा एकस्मि महन्ते पासाणतले सन्निपत्तिसु । हंसराजा अत्तनो चित्तरुचितं सामिकं आगन्त्वा गण्हतूति धीतरं पक्कोसापेसि । सा सकुणसंघं ओलोकेन्ती मणिवण्णगीत्रं चित्रपेखुणं मोरं दिस्वा अयं मे सामिको होतूति आरोचेसि । सकुणसंघा मोरं उपसंकमित्वा आहंसु—सम्म मोर ! अयं राजधीता एत्तकानं सकुणानं मज्जे सामिकं रोचेन्ती तथि रुचि उप्पादेसीति । मोरो अज्जापि ताव मे बलं न पस्ससीति ^१ अतितुट्ठिया हिरौत्तप्यं भिन्दित्वा ताव महतो सकुणसंघस्स मज्जे पक्खे पसारत्वा नच्चितुं आरभि । नच्चन्तो अप्पटिञ्छन्तो अहोसि । सुवण्णहंसराजा लज्जितो इमस्स नेव अज्जत्तसमुट्ठाना हिरि अत्थि न बहिद्धासमुट्ठानं ओत्तप्यं । नास्स भिन्नहिरौत्तप्यस्स मम धीतरं दस्सामीति सकुणसंघमज्जे इमं गाथमाह—

रुदं मनुञ्जं रचिरा च पिट्ठी वेळुरियवण्णूपनिभा ^२ च गोवा ।

व्याममत्तानि च पेक्खुणानि नञ्चेन ते धीतरं नो ददामीति ॥

तत्थ रुदं मनुञ्जन्ति तकारस्स दकारो कतो । रुदं मनायं वस्सितसद्दो मधुरोति अत्थो । रचिरा च पिट्ठीति पिट्ठीपि ते चित्रा चैव सोभना च । वेळुरियवण्णूपनिभाति वेळुरियमणिवण्णसदिसा । व्याममत्तानीति एकस्यामप्यमाणानि । पेक्खुणानीति पिञ्जानि । नञ्चेन ते धीतरं नो ददामीति हिरौत्तप्यं भिन्दित्वा नच्चितभा-वेनेव ते एवरूपस्स निल्लज्जस्स धीतरं नो ददामीति वत्वा हंसराजा तस्मि येव परिसमज्जे अत्तनो भागिनेय्य-हंसपोतकस्स धीतरं अदासि । मोरो हंसपोतिकं अलभित्वा लज्जित्वा ततोव उड्ढेत्वा ^३ पलायि । हंसराजापि अत्तनो वसनट्ठानमेव गतो ।

सत्था न भिक्खवे ! इदनेवेस हिरौत्तप्यं भिन्दित्वा रतनसासना परिहीनो पुब्बे इत्थिरतनपटिलाभतोपि परिहीनोयेवाति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि धटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा मोरो बहुभण्डिको भिक्खु अहोसि । हंसराजा पन अहमेवाति ।

नञ्जजातकं [१८१]

३. सम्मोदमानजातकं

सम्मोदमानाति इदं सत्या कपिलवत्थुं उपनिस्साय निग्रोधारामे विहरन्तो आतककलहं^१ आरब्ध कथेसि । सो कुणालजातके आविभविस्सति । तदा पन सत्या जातके आमन्तेत्वा महाराजानो जातकानं अञ्ज-
मञ्जं विग्गहो नाम न युत्तो तिरच्छानगतापि हि पुब्बे समग्गकाले पच्चामित्ते अभिमवित्वा सोत्थिम्पत्ता यदा
विवादमापन्ना तदा महाविनासं पत्ताति वत्था जातिराजकुलेहि याचितो अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो वट्टकयोनिनं निब्बत्तित्वा अनेकवट्टकसह-
स्सपरिवारो अरञ्जे वसति । तदा एको वट्टकलुहुको तेसं वसनट्ठानं गन्त्वा वट्टकवस्सितं कत्वा तेसं सन्नि-
पतितभावं ज्ञात्वा तेसं उपरि जालं खिपित्वा परियन्तेसु भद्दन्तो सब्बे एकतो कत्वा पच्छिं पूरेत्वा धरं गन्त्वा ते
विक्रिणित्वा तेन मूलेन जीविकं कप्पेति ।

अथेकदिवसं बोधिसत्तो ते वट्टके आह-- अयं साकुणिको अम्हाकं जातके विनासं पापेति अहं
एकं उपायं जानामि येनेस अम्हे गण्हितुं न सक्खिस्सति । इतोदानि पट्ठाय एतेन अम्हाकं उपरि जाले खित्तमत्ते
एकेका एकेकस्मिं जालक्खिके सीसं ठपेत्वा जालं उक्खिपित्वा इच्छितट्ठानं हरित्वा एकस्मिं कण्टकगुम्बे
पक्खिपथ । एवं सन्ते हेट्ठा तेन तेन ठानेन पलायिस्सामाति ।

ते सब्बे साधूति पटिसुणिसु ।

दुतियदिवसे उपरि जाले^२ खित्ते बोधिसत्तेन वुत्तनयेनेव जालं उक्खिपित्वा एकस्मिं कण्टकगुम्बे खिपित्वा
सयं हेट्ठाभागेन ततो ततो पलायिसु । साकुणिकस्स गम्बतो जालं मोचेन्तस्सेव विकालो जातो । सो तुच्छहत्थोव
अगमासि । पुनरिद्वसतो पट्ठायापि ते वट्टका तथेव करोन्ति । सोपि याव सुरियस्सत्थंगमना जालमेव मोचेन्तो
किञ्चि अलभित्वा तुच्छहत्थोव गेहं गच्छति ।

अथस्स भरिया कुज्झित्वा त्वं दिवसे दिवसे तुच्छहत्थो आगच्छसि, अञ्जम्पि ते बहि पोसितब्बट्ठानं
अत्थि मञ्जेति आह ।

साकुणिको-- भद्दे ! मम अञ्जं पोसितब्बट्ठानं नत्थि । अपि च खो पन ते वट्टका समग्गा हुत्वा
विचरन्ति, मया खित्तमत्तं जालं आदाय कण्टकगुम्बे खिपित्वा गच्छन्ति । नखो पनेते सब्बकालमेव सम्मोदमाना
विहरिस्सन्ति । त्वं म! चिन्तयि । यदा ते विवादमापज्जिस्सन्ति तदा ते सब्बेव आदाय तव मुखं हासयमानो
आगच्छिस्सामीति वत्था भरियाय इमं गाथमाह--

सम्मोदमाना गच्छन्ति जालमावाय पक्खिनो ।

यदा ते विवदस्सन्ति तदा एहिन्ति मे वसन्ति ॥

तत्थ यदा ते विवदस्सन्तीति यस्मिं काले ते वट्टका नाना लद्धिका नानागाहा हुत्वा विवदस्सन्ति
कलहं करिस्सन्तीति अत्थो । तदा एहिन्ति मे वसन्ति तस्मिं काले सब्बेपि ते मम वसं आगच्छिस्सन्ति । अथाहं
त गहेत्वा तव मुखं हासयन्तो आगच्छिस्सामीति भरियं समस्सासेसि ।

कतिपाहस्सेव पन अच्चयेन एको वट्टको गोचरभूमि ओतरन्तो असलक्खेत्वा अञ्जस्स सीसं अब्बमि ।

तरो को मं सीसे अक्कमीति कुज्झि । अहं असल्लेक्खेत्था अक्कमिमा कुज्झिति वुत्तेपि च कुज्झयेव । ते पुनप्पुनं कथेन्ता त्वमेव मञ्जे जालं उक्खिपसीति अञ्जमञ्जं विवादं करिं सु । तेसु विवदन्तेसु बोधिसत्तो चिन्तेसि-विवादके सोत्थिभावो नाम नत्थि, इदानीं ते जालं न उक्खिपिस्सन्ति, ततो महन्तं विनासं पाप्पुणिस्सन्ति, साकुणिको ओकासं लभिस्सति, मया इमस्मि ठाने न सक्का वसितुन्ति । सो अत्तनो परिसं आदाय अञ्जत्थ गतो ।

साकुणिकोपि खो कतिपाहञ्चयेन आगन्त्वा वट्टकवस्सितं वस्सित्वा तेसं सन्निपतितानं उपरि जालं उक्खिपि । अथेको वट्टको—तुम्हं किर जालं उक्खिपन्तस्सेव मत्थके लोमानि पतितानि इदानीं उक्खिपाति आह ।

अपरो तुम्हं किर जालं उक्खिपन्तस्सेव द्वीसु पक्खेसु पत्तानि पतितानि इदानीं उक्खिपाति आह ।

इति तेसं त्वं उक्खिप त्वं उक्खिपाति वदन्तानञ्जेव साकुणिको जालं संखिपित्वा सम्बेव ते एकतो कत्वा पच्छि पूरेत्वा भरियं हासयमानो गेहं अगमासि ।

सत्था एवं महाराजा ! आतकानं कलहो नाम न युत्तो, कलहो हि विनासमूलमेव होतीति इमं धम्मवेसनं आहरित्वा अनुसन्धि बटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा अपण्डितवट्टको देवदत्तो अहोसि । पण्डित-वट्टको पन अहमेवाति ।

सम्मोदमानजातकं

४. मच्छजातकं

न मं सीतं न मं उण्हन्ति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो पुराणदुतियिकापलोभनं आरब्धुं कथसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

तदा हि सत्था तं भिक्षुं सच्चं किर त्वं भिक्षु ! उक्कण्ठितोति पुच्छि । सच्चं भगवाति । केनासि उक्कण्ठापितोति ? पुराणदुतियिका मे भन्ते ! मधुरहत्थरसा तं जहितुं न सक्कोमीति ।

अथ नं सत्था—भिक्षु ! एसा हि इत्थी तव अनत्थकारिका । पुब्बेपि त्वं एतं निस्साय मरणं पापुणन्तो मं आगम्म मरणा मुत्तोति वत्वा अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो तस्स पुरोहितो अहोसि । तदा केवट्टा नदियं जालं खिप्पिमु । अथेको महामच्छो रतिवसेन अत्तनो मच्छिया सद्धिं कीटमानो आगच्छति । तस्स सा मच्छी पुरतो गच्छमाना जाल[१८३]गन्धं धायित्वा जालं परिहरमाना गता । सो पन कामगिद्धो लोलमच्छो जालकुच्छिमेव पविट्ठो । केवट्टा तस्स जालं पविट्ठभावं वत्वा जालं उक्खिपित्वा मच्छं गहेत्वा अमारेत्वाव वालिकापिट्ठे खिपित्वा इमं अंगारेसु पचित्वा खादिस्सामाति अंगारे करोन्ति, मूलं तच्छेन्ति । मच्छो एतं अंगारतापनं वा मूलवेधनं वा अञ्जं वा पन दुक्खं न मं किलमेति । यं पन सा मच्छी अञ्जं सो नून रतिवसेन गतोति मयि दोमनस्स आपज्जति तदेव मं बाधतीति परिदेवमानो इमं गाथमाह—

न मं सीतं न मं उण्हं न मं जालस्मि बाधनं ।

यं च मं मञ्जते मच्छी अञ्जं सो रतिया गतोति ॥

तत्थ न मं सीतं न मं उण्हन्ति मच्छानं उदका नीहट्टकाले सीतं होति, तस्मिम्पि गते उण्हं होति । उदुभयं सन्धाय न मं सीतं न मं उण्हं बाधतीति परिदेवति । यम्पि अंगारेसु पच्चनमूलकं दुक्खं भविस्सति तम्पि सन्धाय न मं उण्हन्ति परिदेवतेव । न मं जालस्मि बाधनन्ति यम्पि मे जालस्मि बाधनं अहोसि तम्पि मं न बाधेतीति परिदेवति । यं च मन्ति आदिमु अयं पिण्डत्थो—सा मच्छी मम जाले पतितस्स इमेहि केवट्टेहि गहितभावं अजानन्ती मं अपस्समाना सो मच्छो इदानीं अञ्जं मच्छिं कामरतिया गतो भविस्सतीति चिन्तेति तं तस्सा दोमनस्सप्पत्ताय चिन्तनं मं बाधतीति वालिकापिट्ठे निपन्नो परिदेवति ।

तस्मिं समये पुरोहितो दासपरिसपरिवृतो नहानत्थाय नदीतीरं आगतो । सो पन सब्बरुतञ्जु होति । तेनस्स मच्छपरिदेवनं सुत्वा एतदहोसि—अयं मच्छो किलेसपरिदेवनं परिदेवति । एवं आतुरचित्तो खो पनेस भिय्यमानोपि निरयेयेव निव्वत्तिस्सति, अहमस्स अवस्सयो भविस्सामीति केवट्टानं सन्तिकं गत्वा—हम्भो ! तुम्हे अम्हाकं एकदिवसम्पि व्यञ्जनत्थाय मच्छं न देथाति आह ।

केवट्टा—किं वदथ सामि ! तुम्हाकं गच्चनकमच्छं गण्हित्वा गच्छथाति आहंसु ।

अम्हाकं अञ्जेन कम्मं नत्थि, इमञ्जेव देथाति ।

गण्हथ सामीति ।

बोधिसत्तो तं उभोहि हत्थेहि गहेत्वा नदीतीरे निसीदित्वा—अम्भो मच्छ ! सच्चे ताहं अञ्ज न पस्सेय्यं जीवितक्खयं पापुण्य्यासि । इदानीं इतो पट्ठाय मा किलेसवसिको अहोसीति ओवदित्वा उदके विस्सज्जेत्वा नगरं पाविसि ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकामेसि । सच्चपरियोसाने उक्कण्ठितभिक्षु सोतापत्ति-फले पतिट्ठासि । सत्थापि अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा मच्छी पुराणदुतियिका अहोसि, मच्छो उक्कण्ठितभिक्षु, पुरोहितो अहमेव अहोसिन्ति ।

५. वट्टकजातकं

सन्ति पक्खाति इदं सत्था मगधेसु चारिकं चरमानो दावगिनिब्बापनं आरब्भ कथेसि ।

पच्छुपन्नवत्थु

एकस्मिं हि समये सत्था मगधेसु चारिकं चरमानो अञ्जतरस्मिं मगधगामके पिण्डाय चरित्वा पच्छाभत्तं पिण्डपातपटिक्कन्तो भिक्खुगणपरिवृतो मगं पटिपज्जि । तस्मिं समये महादात्रो उट्ठहि । पुरतो च पच्छतो च बहू भिक्खू दिस्सन्ति । सोपि खो अग्गि एकधूमो एकजालो हुत्वा अवत्थरमानो आगच्छतेव । तत्थेके पुथुज्जनभिक्खू मरणभयभीता पटग्गि दस्साम, तेन दद्धट्ठानं इतरो अग्गि न ओत्थरिस्सतीति अरणिमहितं नीहरित्वा अग्गि करोन्ति । अपरे आहंमु – आवुसो ! तुम्हे किं नाम करोथ ? गगनमध्ये ठितं चन्दं पाचीन-लोकधातुतो उगगच्छन्तं सहस्सरंसिपतिमण्डितं सुरियमण्डलं वेलातीरे ठिता, समुद्दं सिनेरं निस्साय ठिता सिनेरु-ञ्च अपस्सन्ता विय सदेवके लोकं अगगपुग्गलं अत्तना सद्धिं गच्छन्तमेव सम्भासग्गुबुद्धं अनोलोकेत्वा पटग्गि देमाति वदथ, बुद्धबलं नाम न जानाथ ? एथ सत्थु सन्तिकं गमिस्सामाति । ते पुरतो च पच्छतो च गच्छन्ता सम्भेपि एकतो हुत्वा दसबलस्स सन्तिकं अगमंमु ।

सत्था महाभिक्खुसंघपरिवारो अञ्जतरस्मिं पदेसे अट्ठासि । दावगि अभिभवन्तो विय विरवन्तो आगच्छति । आगन्त्वा तथागतस्स ठितट्ठानं पत्वा तस्स पदेसस्स सभन्ता सोलसकरीसमतं ठानं पत्तो उदके ओपिलापिततिणुक्का विय निब्बायि । विनिब्बेधतो वृत्तिसकरीसमतट्ठानं अवत्थरितुं नासक्खि । भिक्खू सत्थु गुणकथं आरभिसु—अहो ! बुद्धानं गुणा^१ नाम अयं हि नाम अचेतनो अग्गि बुद्धानं ठितट्ठानं अवत्थरितुं न सक्कोति, उदके तिणुक्का विय निब्बायति । अहो ! बुद्धानं आनुभावो नामाति ।

सत्था तेसं कथं सुत्वा न भिक्खवे ! एतं एतरहि मय्हं बलं यं इमं भूमिपदेसं पत्वा एस अग्गि निब्बायति । इदं पन मय्हं पोरानकसच्चबलं । इमस्मिं हि पदेसे सकलम्पि इमं कप्पं अग्गि न जलिस्सति कप्पट्ठियपाटि-हारियं नामेतन्ति आह ।

अथायस्मा आनन्दो सत्थु निसीदनत्थाय चतुग्गुणं संघाटि पञ्जपेसि । निसीदि सत्था पल्लकं आभुजित्वा । भिक्खुसंघोपि तथागतं वन्दित्वा परिवारेत्वा निसीदि । अथ सत्था इदं ताव मन्ते ! अम्हाकं पाकटं अतीतं पटिच्छन्नं तं नो पाकटं करोथाति भिक्खूहि आयाचितो अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते मगधरट्ठे तस्मियेव पदेसे महाबोधिसत्तो वट्टकयोनिं पटिसन्धिं गहेत्वा मातुकुच्छितो जातो अण्डकोसं पदायेत्वा निक्खन्तकाले महाभेण्डुकप्पमाणे^२ वट्टकपोतको अहोसि । अथ नं मातापितरो कुलावके निपज्जापेत्वा [१८५] मुखतुण्डकेन गोचरं आहरित्वा पोसेन्ति । तस्स पक्खे पसारेत्वा आकासेन गमनबलं वा पाद उक्खिपित्वा थले गमनबलं वा नत्थि । तञ्च पदेसं संवच्छरे संवच्छरे दावगि गण्हति । सो तस्मिं समये महारवं वन्तो तं पदेसं गण्हि । सकुणसंघा अत्तनो अत्तनो कुलावकेहि निक्खमित्वा मरणभयभीता विरवन्ता पलायन्ति । बोधिसत्तस्सापि मातापितरो मरणभयभीता बोधिसत्तं छड्डेत्वा पलायिसु । बोधिसत्तो कुलावके निपन्नको ब गीवं उक्खिपित्वा अवत्थरित्वा आगच्छन्तं अग्गि दिस्वा चिन्तेसि— सचे मय्हं पक्खे पसारेत्वा आकासेन

गमनबलं भवेय्य उपपत्तित्वा अञ्जत्थ गच्छेय्यं, सचे पादे उक्खिपित्वा गमनबलं भवेय्य पदवारं अञ्जत्थ गच्छेय्यं । मातापितरोपि खो मे मरणभयभीता मं एकं पहाय अत्तानं परित्तायन्ता पलाता । इदानीं मे अञ्जं पटिसरणं नत्थि अत्ताणोमिह असरणो, किन्नुखो अज्ज मया कातुं वट्टतीति । अथस्स एतदहोसि— इमस्मि लोके सीलगुणो नाम अत्थि, सच्चगुणो नाम अत्थि । अतीते पारमियो पूरेत्वा बोधितले निसीदित्वा अभिसम्बुद्धा सीलसमाधिप-
ञ्जाविमुत्तिविमुत्तिआणदस्सनसम्पन्ना सच्चानुद्दयकारञ्जन्तिसमन्नागता सब्बसत्तेसु च समप्पवत्तमेत्ताभावना सब्बञ्जुबुद्धो नाम अत्थि, तेहि च पटिविद्धा धम्मगुणा नाम अत्थि, मयि चापि एकं सच्चं अत्थि संविज्जमानो एको सभावधम्मो पञ्जायति तस्मा अतीते बुद्धे चेव तेहि पटिविद्धगुणे च आवज्जित्वा मयि विज्जमानं सच्च-
सभावधम्मं गहेत्वा सच्चकिरियं कत्वा अग्गि पटिक्कमापेत्वा अज्ज मया अत्तनो चेव सेससकुणानं च सोत्थिभावं कातुं वट्टतीति । तेन वुत्तं—

“अत्थि लोके सीलगुणो सच्चं सोचेय्यनुद्दया ।

तेन सच्चेन काहामि सच्चकिरियमनुत्तरं ॥

आवज्जित्वा धम्मबलं सरित्वा पुब्बके जिने ।

सच्चबलमवस्साय सच्चकिरिय अकासह ॥” न्ति^१ ।

अथ बोधिसत्तो अतीते परिनिब्बुतानं बुद्धानं गुणे आवज्जित्वा अत्तनि विज्जमानं सच्चसभावं आरब्ध सच्चकिरियं करोन्तो इमं गाथमाह—

सन्ति पक्खा अपतना सन्ति पादा अवञ्चना ।

माता पिता च निक्खन्ता जातवेद ! पटिक्कमाति ॥

तत्थ सन्ति पक्खा अपतनाति मय्हं पक्खा नाम अत्थि उपलब्धन्ति । नो च खो सक्का एतेहि उपपत्तिनुं आकासेन गन्तुन्ति अपतना । सन्ति पादा अवञ्चनाति पादापि मे अत्थि । तेहि पन मे वञ्चितुं पादचारगमनेन गन्तुं न सक्काति [१८६] अवञ्चना । मातापिता च निक्खन्ताति ये च मं अञ्जत्थ नेय्युं तेपि मरणभयेन मातापितरो निक्खन्ता । जातवेदाति अग्गि आलपति । सो हि जातोव वेदियति पञ्जायति तस्मा जातवेदोति वुच्चति — पटिक्कमाति पटिगच्छ निवत्ताति जातवेदं आणापेति ।

इति महासत्तो सचे मय्हं पक्खानं अत्थिभावो ते च पसारत्वा आकामे अपतनभावो च सच्चं पादानं अत्थिभावो चेव^२ उक्खिपित्वा अवञ्चनभावो मातापितुन्नं मं कुलावके येव छड्ढेत्वा पलातभावो च सब्बो सभाव-
भूतो येव जातवेद ! एतेन सच्चेन त्वं इतो पटिक्कमाति । कुलावके निपन्नको व सच्चकिरियं अकासि । तस्स सह सच्चकिरियाय सोळसकरीसमत्ते ठाने जातवेदो पटिक्कमि पटिक्कमन्तो च पन ज्ञायमानो वने अञ्जं गतो उदके पन ओपिलापिता उक्का विथ तत्थेव निब्बायि । तेन वुत्तं—

“सह सच्चकते मय्हं महापज्जलितो सिखी ।

वज्जेसि सोळसकरीसानि उदकं पत्वा यथा सिखी ॥” ति^३ ।

तं पनेतं ठानं सकलेपि इमस्मि कप्पे अग्गिना अनभिभवतीयता कप्पट्ठियपाटिहारियं नाम जातं । एवं बोधिसत्तो सच्चकिरियं कत्वा जीवितपरियोसाने यथाकम्मं गतो ।

सत्था न भिक्खवे ! इमस्स वनस्स अग्गिना अनज्झोत्थरणं एतरहि मय्हं बलं पोराणं पनेतं वट्टक-
पीनकाले मय्हमेव सच्चबलन्ति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने केचि सोतापन्ना अहेसुं केचि सकदागामिनो, केचि अनागामिनो अहेसुं, केचि अरहत्तं पत्ताति । सत्थापि अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा मातापितरो एतरहि मातापितरोव अहेसुं । वट्टकराजा पन अहमेवाति ।

वट्टकजातकं

६. सकुणजातकं

यं निस्सिताति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो दड्ढपण्णसालं भिक्खुं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

एको किं भिक्खु सत्थुसन्तिके कम्मट्ठानं गहेत्वा जेतवनतो निक्खम्म कोसलेसु एकं पच्चन्तगामं उपनिस्साय एकस्मिं अरञ्जे सेनासने वसति । अथस्स पठममासे येव पण्णसाला डड्ढत्था सो पण्णसाला मे दड्ढा दुक्खं वसामीति मनुस्सानं आचक्खि । मनुस्सा इदानि नो खेतं परिमुक्खं केदारे पायेत्वा करिस्साम एतस्मिं पायिते बीजं वपित्वा बीजे वपिते वतिकत्वा वतिया कताय निड्डायित्वा लायित्वा महित्वाति एवं तं तं कम्मं अपदिसन्ता [१८७] येव तेमासं वीतिनामेसु । सो भिक्खु तेमासं अब्भोकासे दुक्खं वसन्तो कम्मट्ठानं वड्ढेत्वा विसेसं निब्बत्तेतुं नासक्खि । पवारत्त्वा पन सत्थु सन्तिकं गन्त्वा वन्दित्वा एकमन्ने निसीदि ।

सत्था तेन सद्धि पटिसन्थारं कत्वा— किं भिक्खु ! सुखेन वस्सं वुत्थोमि ? कम्मट्ठानं ते मत्थकं पत्तन्ति पुच्छि ।

सो तं पवुत्ति आचिक्खित्वा सेनासनसप्पायस्स मे अभावेन कम्मट्ठानं मत्थकं न पत्तन्ति आह ।

सत्था— पुब्बे भिक्खुः निरञ्छानगतापि अन्नो सप्पायामप्पायं जानिसु त्वं कस्मा न अञ्जामीति वत्वा अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो सकुणयोनियं निवृत्तित्वा सकुणसंघपरिवृतो अरञ्जायतने साखाविटपसम्पन्नं महारुक्खं निस्साय वसति । अथेकदिवसं तस्स रुक्खवस्स साखासु अञ्जमञ्जं घंसन्तिमु चुण्णं पतति धूमो उट्ठाति । तं दिस्वा बोधिसत्तो चिन्तेसि— इमा द्वे साखा एवं घंसमाना अग्निं विस्स-
ज्जेस्सन्ति सो पतित्वा पुराणपण्णानि गण्हिस्सति । ततो पट्ठाय इमम्पि रुक्खं आपेस्सति । न सक्का इध अम्हेहि वसितुं । इतो पलायित्वा अञ्जत्थ गन्तुं वट्ठतीति । सो सकुणसंघस्स इमं गाथमाह—

यं निस्सिता जगतिरुहं विहंगमा स्वायं अग्निं पमुञ्चति ।

दिसा भजथ वक्कंगा ! जातं सरणतो भयन्ति ॥

तत्थ जगतिरुहन्ति जगती वुच्चति पट्ठी । तत्थ जातरुक्खो जगतिरुहोति वुच्चति । विहंगमाति विहं वुच्चति आकासं तत्थ गमनतो पक्खी विहंगमाति वुच्चन्ति । दिसा भजथाति इमं रुक्खं मुञ्चित्वा अञ्जतो पलायन्ता चतस्सो दिसा भजथ । वक्कंगाति सकुणे आलपति ते हि उ जुग्गं^१ गलं कदाचि कदाचि वकं करोन्ति तस्मा वक्कंगाति वुच्चन्ति । वंका वा तं सं उभोसु पस्सेसु पक्खा जातातिपि वक्कंगा । जातं सरणतो भयन्ति अम्हाकं अवस्सयरुक्खतो येव भयं निब्बत्तं । एथ अञ्जत्थ गच्छामाति ।

बोधिसत्तस्स वचनकरा पण्डितसकुणा तन सद्धि एकप्पहारेनेव उप्पतित्वा अञ्जत्थ गता । ये पन अपण्डिता ते एवमेवं आहंसु एस बिन्दुमत्ते उदके कुम्भीले पस्सनीति । तस्स वचनं अगहेत्वा तत्थेव वसिसु । ततो

नचिरस्सेव बोधिसत्तेन चिन्तिताकारेणेव अग्निं निब्वत्तित्वा तं रुक्खं अगगहेसि । धूमं च जालामु च उट्ठितासु धूमन्वा सकुणा अञ्जत्थ गन्तुं नासक्खिसु अग्निमिह पतित्वा विनासं पापुणिसु ।

सत्था एवं भिक्खु ! पुब्बे तिरच्छानगतापि रुक्खगगे वसन्ता अत्तनो सप्पयासप्पायं जानन्ति, त्वं कस्मा न अञ्जासीति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने [१८८] सो भिक्खु सोतापत्तिफले पतिट्ठितो सत्थापि अनुसन्धिं घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा बोधिसत्तस्स वचनकरा सकुणा बुद्धपरिसा अहेसुं पण्डितसकुणो पन अहमेवाति ।

सकुणजातकं

७. तिसिरजातकं

ये बद्धमपचायन्तीति^१ इदं सत्था सार्वत्थि गच्छन्तो सारिपुत्तत्थेरस्स सेनासनपटिवाहनं आरब्भ कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

अनाथपिण्डकेन हि विहारं कारेत्था दूते पेसिते सत्था राजगहा निक्खम्म वेसारिं पत्वा तत्थ यथानिरन्तं विहरित्वा सार्वत्थि गमिस्सामीति मगं पटिपज्जि । तेन च समयेन छब्बग्गियानं अन्तेवासिका पुरतो पुरतो गन्त्वा थेरानं सेनासनेसु अगहितेस्वेव इदं सेनासनं अम्हाकं उपज्झायस्स इदं आचरियस्स इदं अम्हाकमेव भविस्सतीति सेनासनानि पळिबुज्झन्ति । पच्छा आगता थेरा सेनासनानि न लभन्ति । सारिपुत्तत्थेरस्सापि अन्तेवासिका थेरस्स सेनासनं परियेसन्ता न लभिसु ।

थेरो सेनासनं अलभन्तो सत्थु सेनासनस्स अविदूरे एकस्मिं रुक्खमूले निसज्जाय च चंक्रमेन च वीतिनामेसि । सत्था पच्चूससमये निक्खमित्वा उक्कासि । थेरोपि उक्कासि । को एसोति ?

अहं भन्ते ! सारिपुत्ताति ।

सारिपुत्त ! इमाय वेलाय इध किं करोसीति ?

सो तं पवुत्ति आरोचेसि ।

सत्था थेरस्स वचनं सुत्वा इदानीं ताव मयि जीवन्ते येव भिक्खू अञ्जमञ्जं अगारवा अप्पतिस्सा विहरन्ति, परिनिब्बुते नुखो किं करिस्सन्तीति आवज्जेन्तस्स धम्मसंवेगो उदपादि । सो पभासाय रत्तिया भिक्खु-संघं सन्निपातापेत्वा भिक्खू पुच्छि— सच्चं किर भिक्खवे ! छब्बग्गिया पुरतो पुरतो गन्त्वा थेरानं भिक्खूनं सेनासनं पटिवाहन्तीति ?

सच्चं भगवाति ।

ततो छब्बग्गिये गरहित्वा धम्मि कथं कत्वा भिक्खू आमन्तेसि— को नुखो भिक्खवे ! अगामनं अगोदकं अगपिण्डं अरहतीति ?

एकच्चे भिक्खू खत्तियकुला पब्बजितोति आहंमु, एकच्चे ब्राह्मणकुला, एकच्चे गहपतिकुला पब्बजितोति । अपरे विनयधरो, धम्मकथिको, पठमस्स ज्ञानस्स लाभो, दुतियस्स, ततियस्स, चतुत्थस्स ज्ञानस्स लाभोति । अपरे सोतापन्नो, सकदागामी, अनागामी, अरहा तेविज्जो छल्लभिज्जोति आहंमु ।

एवं तेहि भिक्खूहि अत्तनो अत्तनो रुचिवसेन अगासनादिरहानं कथितकाले सत्था आह— न भिक्खवे ! मय्हं सासने अगासनादीनि पत्वा खत्तियकुला पब्बजितो पमाणं, न ब्राह्मणकुला, न गहपतिकुला पब्बजितो, न विनयधरो, न सुतन्तिको, नाभिषम्मिको, न पठमज्झानादिलाभिन्नो, न सोतापन्नादयो पमाणं । अथ खो भिक्खवे ! इमस्मिं सासने यथाबुद्धं अभिवादनपच्चुट्ठानं अञ्जलिकम्मं सामीचिकम्मं कातब्बं अगासनं अगोदकं अगपिण्डो लद्धब्बो, इदमेत्थ पमाणं । तस्मा बुद्धतरो भिक्खु एतेसं अनुच्छविको, इदानीं खो पन भिक्खवे ! सारिपुत्तो मय्हं अगसावको अनुधम्मचक्कप्पवत्तको ममानन्तरं सेनासनं लद्धं अरहति । सो इमं रत्ति सेनासनं अलभन्तो रुक्खमूले वीतिनामेसि । तुम्हे इदानीं एव अगारवा अप्पतिस्सा गच्छन्ते-गच्छन्ते काले किन्ति कत्वा विहरिस्सथाति !

अथ तेसं ओवाददानत्थाय— पुब्बे भिक्खवे ! तिरच्छानगतापि नखो पनेतं अम्हाकं पतिरूपं य मयं अञ्जमञ्जं अगारवा अप्पतिस्सा असभागवुत्तिनो विहरेय्याम । अम्हेसु महल्लकतरो जानित्वा तस्स अभिवादानादीनि करिस्सामाति साधुकं वीमसित्वा अयं नो महल्लकोति ज्ञत्वा तस्स अभिवादानादीनि कत्वा देवपथं पूरयमाना गताति वत्वा अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते हिमवन्तपस्से एकं महानिग्रोधं उपनिस्साय तयो सहाया विहरिंसु—तित्तिरो मक्करो हत्थीति । ते अञ्जमञ्जं अगारवा अप्पतिस्सा असभागवुत्तिनो अहेसु । अथ नेसं एतदहोसि—न युत्तं अम्हाकं एवं विहरितुं । यन्नून मयं यो नो महल्लकतरो तस्स अभिवादानादीनि करोन्ता विहरेय्यामाति ।

को पन नो महल्लकतरोति चिन्तेत्वा एकदिवसं अत्थेसो उपायोति तयोपि जना निग्रोधमूले निसीदित्वा तित्तिरो च मक्कटो च हत्थि पुच्छिंसु— सम्म हत्थि ! त्वं इमं निग्रोधरुक्खं कीवप्पमाणकालतो पट्ठाय जानासीति ?

सो आह— सम्मा ! अहं तरुणपोतककाले इमं निग्रोधगच्छं अन्तरसत्थीसु कत्वा गच्छामि । अन्तरित्वा ठितकाले च पन मे एतस्स अगसाखा नाभि घट्टेति । एवाहं इमं गच्छकालतो पट्ठाय जानामीति ।

पुन उभोपि जना पुरिमनयेनेव मक्कटं पुच्छिंसु ।

सो आह— अहं सम्मा ! मक्कटच्छापको समानो भूमियं निसीदित्वा गीवं अनुक्खिपित्वाव इमस्स निग्रोधपोतकस्स अगंगुरं खादामि । एवाहं इमं खुदककालतो पट्ठाय जानामीति आह ।

अथ इतरे उभोपि पुरिमनयेनेव तित्तिरं पुच्छिंसु ।

सो आह—सम्मा ! पुब्बे असुकस्मि नाम ठाने महानिग्रोधरुक्खो अहोसि । अहं तस्स फलानि खादित्वा एतस्मिं ठाने वच्चं पातेसि, ततो एस रुक्खो जातो । एवाहं इमं अजातकालतो पट्ठाय जानामि । तस्मा अहं तुम्हेहि जातिया महल्लकतरोति ।

एवं वुत्ते मक्कटो च हत्थी च तित्तिरपण्डितं आहंसु— सम्म ! त्वं अम्हेहि महल्लकतरो । इतो पट्ठाय मयं तव सक्कारगरुकारमाननवन्दनपूजनानि चैव अभिवादनपच्चुट्ठानं अञ्जलिकम्मसामीच्चिकम्मनि च करिस्साम, अपवादे च ते ठस्साम । त्वं पन इतो पट्ठाय अम्हाकं ओवादानुसासिनि ददेय्यासीति ।

ततो पट्ठाय तित्तिरो तेसं ओवादं अदासि, सीलेसु पतिट्ठापेसि, सयम्पि सीलानि समादियि । ते तयोपि जना पञ्चसु सीलेसु पतिट्ठाय अञ्जमञ्जं सगारवा सप्पतिस्सा सभागवुत्तिनो हुत्वा जीवितपरियोसाने देवलोकपरायणा अहेसु ।

तेसं तिण्णं समादानं तित्तिरियन्नहं मचरियं नाम अहोसि । ते हि नाम भिक्खवे ! तिरच्छानगता अञ्जमञ्जं सगारवा सप्पतिस्सा विहरिंसु । तुम्हेहि एवं स्वाक्खाते धम्मविनये पब्वजित्वा कस्मा अञ्जमञ्जं अगारवा अप्पतिस्सा विहरथ ? अनुजानामि भिक्खवे ! इतो पट्ठाय तुम्हाकं यथाबुद्धं अभिवादनपच्चुट्ठानं अञ्जलिकम्मसामीच्चिकम्मं यथाबुद्धं अगासनं अगोदकं अगपिण्डं । न इतो पट्ठाय च नवकतरेन बुद्धतरो सेनासनेन पटिबाहितब्बो । यो पटिबाहेय्य आपत्ति दुक्कटस्साति । एवं सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अभि-सम्बुद्धो हुत्वा इमं गायमाह—

ये वद्धमपचायन्ति नरा धम्मस्स कोविदा ।

दिट्ठेव धम्मे पासंसा सम्पराये च सुगतीति ॥

तत्थ ये वद्धमपचायन्तीति जातिवद्धो वयोवद्धो गुणवद्धोति तयो वद्धा । तेसु जातिसम्पन्नो जातिवद्धो नाम । वये ठितो वयोवद्धो नाम । गुणसम्पन्नो गुणवद्धो नाम । तेसु गुणसम्पन्नो वयोवद्धो इमस्मिं ठाने वद्धोति

अधिप्पेतो । अपचायन्तीति जेट्ठापचायिकम्ममेन पूजेन्ति । धम्मस्स कोविदाति जेट्ठापचायनधम्मे कोविदा कुसला दिट्ठेव धम्मेति इमस्मिं येव अत्तभावे । पासंसाति पंससाति पंससारहा । सम्पराये च मुग्गतीति सम्परेतब्बो इमं लोकं हित्वा गन्तब्बो परलोकोपि तेसं सुगति येव होतीति । अयं पनेत्थ पिण्डत्थो! भिक्खवे! खत्तिया वा होन्तु ब्राह्मणा वा वेस्सा वा सुद्धा वा गहट्ठा वा पब्बजिता वा तिरच्छानगता वा ये केचि सत्ता जेट्ठापचितिकम्मं छेका कुसला, गुणसम्पन्नानं वयोबुद्धानं अपचितिं करोन्ति, ते इमस्मिं च अत्तभावे जेट्ठापचितिकारकाति पसंसं वण्णनं थोमनं लभन्ता कायस्स च भेदा सग्गे निब्बत्तन्तीति ।

एवं सत्था जेट्ठापचितिकम्मस्स गुणं कथेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा हत्थिनागो मोग्गल्लानो अहोसि । मक्कटो सारिपुत्तो । तित्तिरपण्डितो पन अहमेवाति ।

८. वक्त्रजातकं

नाचक्षन्तनिकतिप्यञ्जोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो चीवरवड्डकं भिक्खुं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपञ्चवत्थु

एको किर जेतवनवासिको भिक्खु यं किञ्चि चीवरे कत्तब्बं छेदनघट्टनविचारणसिब्बनादिकं कम्मं तत्थ मुकुसलो । सो ताय कुसलताय चीवरं वड्डेति । तस्मा चीवरवड्डकोत्वेव पन्नायित्थ । किं पनेस करोतीति ? जिण्णपिलोतिकासु हत्थकम्मं दस्सेत्वा सुफस्सितं मनापं चीवरं कत्वा रजनपरियोसाने पिट्ठोदकेन रजित्वा संखेन घंसित्वा उज्जलं मनुञ्जां कत्वा निक्खिपति । चीवरकम्मं कातुं अजानन्ता भिक्खू अहते साटके गहेत्वा तस्स सन्तिकं आगन्त्वा मयं चीवरं कातुं न जानाम चीवरं नो कत्वा देथाति वदन्ति । सो चीवरं आवुसो ! कथिर-मानं चिरेन निट्ठाति । मया कतचीवरमेव अत्थि इमे साटके ठपेत्वा गण्हित्वा गच्छथाति नीहरित्वा दस्सेति । ते तस्स वण्णसम्पत्तिं येव दिस्वा अन्तरं अजानन्ता थिरन्ति सञ्जाय अहतसाटके चीवरवड्डकस्स दत्वा गण्हित्वा गच्छन्ति । तं तेहि धोकं किलिट्ठकाले उण्होदकेन धोवियमानं अत्तनो पकतिं दस्सेति । तत्थ तत्थ जिण्णट्ठानं पञ्जायति । ते विप्पटिसारिनो होन्ति । एवं आगतागते पिलोतिकाहि वञ्चेन्तो सो भिक्खु सब्बत्थ पाकटो जातो ।

यया चेस जेतवने तथा अञ्जातरस्मिं गामकेपि एको चीवरवड्डको लोकं वञ्चेतीति । तस्स सम्भत्ता भिक्खू- भन्ते ! जेतवने किर एको चीवरवड्डको एवं लोकं वञ्चेतीति आरोर्चायिमु ।

अथस्स एतदहोसि हन्दाहं तं नगरवासिकं वञ्चेमीति पिलोतिकचीवरं अतिमनापं कत्वा मुरत्तं रजित्वा तं पारुपित्वा जेतवनं अगमासि ।

इनरो तं दिस्वाव लोभं उप्पादेत्वा-भन्ते ! इमं चीवरं तुम्हेहि कतन्ति पुच्छि ।

आम आवुसोति ।

भन्ते चीवरं मय्हं देथ, तुम्हे अञ्जं लभिस्सथाति ।

आवुसो ! मयं गामवासिका दुल्लभप्पच्चया इमाहं तुम्हं दत्वा अत्तना किं पारुपित्तामीति ?

भन्ते ! मम सन्तिके अहतसाटका अत्थि, ते गहेत्वा तुम्हाकं चीवरं करोथाति ।

आवुसो ! मया एत्थ हत्थकम्मं दस्सितं तयि पन एवं वदन्ते किं सक्का कातुं ? गण्हाहि नन्ति तस्स पिलोतिकचीवरं दत्वा अहतसाटके आदाय तं वञ्चेत्वा पक्कामि । जेतवनवासिकोपि तं चीवरं पारुपित्वा कति-पाहच्चयेन उण्होदकेन धोवन्तो जिण्णपिलोतिकभावं दिस्वा लज्जितो । गामवासिचीवरवड्डकेन किर जेतवन-वासिको वञ्चितोति तस्स वञ्चितभावो संघमज्जे पाकटो जातो । अथेक दिवसं भिक्खू धम्मसभायं तं कथं कथेन्ता निसीदिसु ।

सत्था आगन्त्वा- कायनुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छि ।

ते तमत्थं आरोर्चायिमु ।

सत्था- न भिक्खवे ! जेतवनवासी चीवरवड्डको इदानीव अञ्जे वञ्चेति पुब्बेपि वञ्चेसि येव । न गामवासिकेनपि इदानीव एस जेतवनवासी चीवरवड्डको वञ्चितो पुब्बेपि वञ्चितो येवाति वत्ता अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते एकास्मि अरञ्जायतने बोधिसत्तो अञ्जतरं पदुमसरं निस्साय ठिते रुक्खे रुक्खदेवता द्रुत्वा

निब्वति । तदा अञ्जतरस्मि नातिमहन्ते सरे निदाघसमये उदकं मन्दं अहोसि, बहू चेत्य मच्छा होन्ति । अथेको बको ते मच्छे दिस्वा एकेनुपायेन इमे मच्छे वञ्चेत्वा खादिस्सामीति गन्त्वा उदकपरियन्ते चिन्तेन्तो निसीदि । अथ नं मच्छा दिस्वा— किं अय्य ! चिन्तेन्तो निसिन्नोसीति पुञ्छिंसु । तुम्हाकं चिन्तेन्तो निसिन्नोम्हीति ।

अम्हाकं किं चिन्तेसि अय्याति ?

इमस्मि सरे उदकं परित्तं गोचरो च मन्दो निदाघो च महन्तो । इदानिमे मच्छा किं नाम करिस्सन्तीति तुम्हाकं चिन्तेन्तो निसिन्नोम्हीति ।

अथ किं करोम अय्याति ?

तुम्हे सचे मय्हं वचनं करेय्याथ अहं वो एकेकं मुखतुण्डकेन गहेत्वा एकं पञ्चवण्णपदुमसञ्छन्नं महासरं नेत्वा विस्सज्जेय्यन्ति ।

अय्य ! पठमकप्पिकतो पट्ठाय मच्छानं चिन्तनकबको नाम नत्थि । त्वं अम्हेसु एकेकं खादितुकामोसीति, न मयं तुय्हं सद्दहामाति ।

नाहं खादिस्सामि । सचे पन सरस्स अत्थिभावं मय्हं न सद्दहथ एकं मच्छं मया सद्दि सरं पस्सितुं पेसेथाति ।

मच्छा तस्स सद्दहित्वा अयं जलेपि थलेपि समत्थोति एकं काणमहामच्छं अदंसु—इमं गहेत्वा गच्छथाति ।

सो तं गहेत्वा नेत्वा सरे विस्सज्जेत्वा सब्बं सरं दस्सेत्वा पुनानेत्वा तेसं मच्छानं सन्तिके विस्सज्जेसि । सो नेसं मच्छानं सरस्स सम्पत्तिं वण्णेसि । ते तस्स कथं सुत्वा गन्तुकामा हुत्वा साधु अय्य ! अम्हे गण्हित्वा गच्छाहीति आहंसु । बको पठमं तं काणमहामच्छमेव गहेत्वा सरतीरं नेत्वा सरं दस्सेत्वा सरतीरे जाते वरणरक्खे निलीयित्वा तं विटपन्तरे पक्खिपित्वा तुण्डेन विज्झन्तो जीवितक्खयं पापेत्वा मसं खादित्वा कण्टके रुक्खमूले पातेत्वा पुन गन्त्वा विस्सट्ठो मे सो मच्छो अञ्जो आगच्छतूति एतेनुपायेन एकेकं गहेत्वा सब्बमच्छके खादित्वा पुन आगतो एकमच्छम्पि नाहस ।

एको पनेत्थ कक्कटको अवसिट्ठो । बको तम्पि खादितुकामो हुत्वा— भो ! कक्कटक ! मया सब्बे मच्छे नेत्वा पदुमसञ्छन्ने महासरे विस्सज्जिता । एहि तम्पि नेस्सामीति ।

मं गहेत्वा गच्छन्तो कथं गण्हिस्ससीति ?

डसित्वा गण्हिस्सामीति ।

त्वं एवं गहेत्वा गच्छन्तो मं पातेस्ससि । नाहं तथा सद्दि गमिस्सामीति ।

मा भायि अहं तं सुगहितं गहेत्वा गमिस्सामीति ।

कक्कटको चिन्तेसि—इमस्स मच्छे नेत्वा सरे विस्सज्जनं नाम नत्थि । सचे पन मं सरे विस्सज्जेस्सति इच्चेतं कुसलं नो चे विस्सज्जेस्सति गीवमस्स छिन्दित्वा जीवितं हरिस्सामीति । अथ नं एवमाह— सम्म बक ! न खो त्वं सुगहितं गहेतुं सक्खिस्ससि । अम्हाकं पन गहनं सुगहणं— सचाहं अलेन तव गीवं गहेतुं लभिस्सामि, तव गीवं सुगहितं कत्वा तथा सद्दि गमिस्सामीति ।

सो तं वञ्चेतुकामो एस मन्ति अजानन्तो साधूति सम्पटिच्छि । कक्कटको अत्तनो अलेहि कम्मारसण्डासेन विय तस्स गीवं सुगहितं कत्वा इदानि गच्छाति आह । सो तं नेत्वा सरं दस्सेत्वा वरणरक्खाभिमुखो पायासि । कक्कटको आह— मातुल ! अयं सरो एत्तो त्वं पन इतो नेसीति ।

बको पियमातुलको अति भगिनिपुत्तोसि मे त्वन्ति वत्तात्वं एस मं उक्खिपित्वा विचरन्तो मय्हं दासोति सञ्जं करोसि मञ्जे पस्सेतं वरणरक्खमूले कण्टकरासि. यथा मे सब्बमच्छा खादित्वा तस्मिन् नज्जेन खादिस्सामीति आह ।

कक्कटको एते मच्छा अत्तनो बालताय तथा खादिता । अहं पन ते मं खादितुं न दस्सामि । तञ्ज्जेव पन विनासं पापेस्सामि । त्वं हि बालताय मया वञ्चितभावं न जानासि । मरन्ता उभोपि मरिस्सामि । एस ते सीसं छिन्दित्वा भूमियं खिपिस्सामीति वत्वा सण्डासेन विय अलेहि तस्स गीवं निप्पीलेसि ।

सो वत्तकतेन मुखेन अक्खीहि अस्सुना पग्घरन्तेन मरणभयतज्जितो— सामि ! अहं तं न खादिस्सामि । जीवितं मे देहीति आह ।

यदि एवं, ओतरित्वा सरस्मिं मं विस्सज्जेहीति ।

सो निवत्तित्वा सरमेव ओतरित्वा कक्कटकं सरपरियन्ते पंकपिट्ठे ठपेसि ।

कक्कटको कत्तरिकाय कुमुदनालं कप्पेन्तो विय तस्स गीवं कप्पेत्वा उदकं पाविसि । तं अच्छरियं दिस्वा वरणरुक्खे अधिवत्था देवता साधुकारं ददमाना वनं उन्नादयमाना मधुरस्सरेन इमं गायमाह—

नाच्चन्तनिकतिप्पञ्जो निकत्या सुखमेधति ।

आराधेति निकतिप्पञ्जो बको कक्कटकामिवाति ॥

तत्थ नाच्चन्तनिकतिप्पञ्जो निकत्यासुखमेधतीति निकति वुच्चति वञ्चना । निकतिप्पञ्जो वञ्चन-पञ्जो पुग्गलो, ताय निकत्या निकतिया वञ्चनाय, न अच्चन्तं सुखमेधतीति निच्चकाले सुखस्मिञ्ज्जेव पतिट्ठातुं न सक्कोति एकंसेन पन विनासं पापुणाति येवाति अत्थो । आराधेतीति पटिलभति । निकतिप्पञ्जोति केराटिक-भावा सिक्खितपञ्जो पापपुग्गलो अत्तना कतस्स पापस्स फलं पटिलभति विन्दतीति अत्थो । कथं ? बको कक्क-टकामिव यथा बको कक्कटका गीवच्छेदनं पापुणाति एवं पापपुग्गलो अत्तना कतपापतो दिट्ठधम्मे वा सम्प-रायं वा भयं आगधेति पटिलभतीति । इममत्थं पकामेन्तो महासत्तो वनं उन्नादेन्तो धम्मं देसेसि ।

मत्था—न भिक्खवे ! इदागेव गामवासीचीवरवड्ढकेनेम वञ्चितो । अतीतेपि वञ्चितो येवाति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा सो बको जेतवनवासी चीवरवड्ढको अहोसि । कक्कटको गामवासी चीवरवड्ढको अहोसि । रुक्खदेवता पन अहमेवाति ।

बकजातकं

६. नन्दजातकं

मञ्जे सोवण्यो रासीति—इदं सत्था जेतवने विहरन्तो सारिपुत्तथेरस्स सद्धिविहारिकं आरब्ध कथेसि ।

पक्खपन्नवत्थु

सो किर भिक्खु सुवचो अहोसि वचनक्खमो थेरस्स महन्तेनुस्साहेन उपकारं करोति । अथेकं समयं थेरो सत्थारं आपुच्छित्वा चारिकं चरन्तो दक्खिणागिरिजनपदं अगमासि । सो भिक्खुतत्थगतकाले मानत्थद्धो हुत्वा थेरस्स वचनं न करोति । आवुसो ! इदं नाम करोहीति वुत्ते पन थेरस्स पटिपक्खो होति । थेरो तस्स आसयं न जानाति । सो तत्थ चारिकं चरित्वा पुन जेतवनं आगतो । सो भिक्खु थेरस्स जेतवनविहारं आगतकालोतो पट्ठाय पुन तादिसोव जातो । थेरो तथागतस्स आरोचेसि— भन्ते ! मय्हं एको सद्धिविहारिको एकास्मि ठाने सतेन कीतदासो विय होति, एकास्मि ठाने मानत्थद्धो हुत्वा इदं नाम करोहीति वुत्ते पटिपक्खो होतीति ।

सत्था— नायं सारिपुत्त ! भिक्खु इदानेव एवंसीलो, पुब्बेपेस एकं ठानं गतो सतेन कीतदासो विय होति, एकं ठानं गतो पटिपक्खो पटिसत्तु होतीति वत्वा थेरेन याचिनो अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो एकास्मि कुटुम्बिकुले पटिसन्धि गण्हि । तस्सेको सहायको कुटुम्बिको सयं महल्लको । भरिया पनस्स तरुणी । सातं निस्साय पुत्तं पटिलभि । सो चिन्तेसि— अयं इत्थिका तरुणत्ता ममच्चयेन किञ्चिदेव पुरिसं गहेत्वा इमं धनं विनासेय्य पुत्तस्स मे न ददेय्य । यन्नूनाहं इमं धनं पठविगतं करेय्यन्ति ।

घरे नन्दं नाम दासं गहेत्वा अरञ्जं गन्त्वा एकास्मि ठाने तं धनं निदहित्वा तस्स आचिक्खित्वा— तात नन्द ! इमं धनं मम अच्चयेन मय्हं पुत्तस्स आचिक्खेय्यासि । मा च नं परिच्चजित्था ति ओवदित्वा कालमकासि ।

पुत्तोपिस्स अनुक्कमेन वयप्पत्तो जातो । अथ नं माता आह— तात ! तव पिता नन्दं दासं गहेत्वा धनं निधेसि तं आहरापेत्वा कुटुम्बं सण्ठपेहीति ।

सो एकदिवसं नन्दं आह— मातुल ! अत्थि किञ्चि मय्हं पितरा धनं निदहित्तं ?

आम सामीति ।

कुहिं तं निदहित्तं ?

अरञ्जे सामीति । तेनहि गच्छामानि कुद्दालपिटकं आदाय निधिट्ठानं गन्त्वा— कहं मातुल ! धनन्ति आह ।

नन्दो आरुह्ण धनमत्थके ठत्वा धनं निस्साय मानं उप्पादेत्वा—अरे ! दामिपुत्त ! चेटक ! कुतो ते इमस्मि ठाने धनन्ति कुमारं अक्कोसति ।

कुमारो तस्स फरुसवचनं सुत्वा असुणन्तो विय— तेनहि गच्छामानि— तं गहेत्वा पटिनिवन्तित्वा पुन द्वे तयो दिवसे अतिक्कमित्वा अगमासि । नन्दो तथेव अक्कोसति ।

कुमारो तेन सद्धिं फरुसवचनं अवत्वाव निवन्तित्वा अयं दामो इतो पट्ठाय धनं आचिक्खिस्साभीति

गच्छति गन्त्वा पन अक्कोसति । तत्थ कारणं न जानामि । अत्थि नु खो पन मे पितुसहायो कुटुम्बिको तं पटि-
पुच्छित्वा जानिस्सामीति । बोधिसत्तस्स सन्तिकं गन्त्वा सब्बं तं पवत्ति आरोचेत्वा— किन्नु खो तात ! कारणन्ति
पुच्छि ।

बोधिसत्तो— यस्मिं ते तात ! ठाने ठितो नन्दो अक्कोसति तत्थेव ते पितुसन्तकं धनं । तस्मा ते यदा
नन्दो अक्कोसति तदा नं एहि दास ! किं अक्कोसीति आकड्ढित्वा कुदालं गहेत्वा तं ठानं भिन्दित्वा कुलसन्तकं
धनं नीहरित्वा दासं उक्खिपापेत्वा धनं आहराति वत्वा इमं गाथमाह—

मञ्जे सोवण्णयो रासि सोवण्णमाला च नन्दको ।

यत्थ दासो आमजातो ठितो थुल्लानि गज्जतीति ॥

तत्थ मञ्जेति एवं अहं जानामि । सोवण्णयोति सुन्दरो वण्णो एतेसन्ति सोवण्णानि । कानि
तानि? रजतमणिकञ्चनपवालादिरतनानि । इमस्मिं हि ठाने सब्बानेतानि सुवण्णानीति अधिप्पेतानि । तेसं रासि
सोवण्णयो रासि । सोवण्णमाला चाति तुय्हं पितु सन्तका सुवण्णमालापि च एत्थेवाति मञ्जामि । नन्दको यत्थ
दासोति यस्मिं ठाने ठितो नन्दको दासो । आमजातोति आम अहं वो दासीति एवं दासव्यं उपगताय आमदासी-
संखाताय दासिया पुत्तो । ठितो थुल्लानि गज्जतीति सो यस्मिं ठाने ठितो थुल्लानि फरुसवचनानि वदति तत्थेव
ते कुलधनं एवमहन्तं मञ्जामीति । बोधिसत्तो कुमारस्स धनगहणुपायं आचिक्खि ।

कुमारो बोधिसत्तं वन्दित्वा घरं गन्त्वा नन्दं आदाय निधिट्ठानं गन्त्वा यथानुसिद्धं पटिपज्जित्वा
तं धनं आहरित्वा कुटुम्बं सण्ठपेत्वा बोधिसत्तस्स ओवादे ठितो दानादीनि पुञ्जानि कत्वा जीवितपरियोसाने
यथाकम्मं गतो ।

सत्था—पुब्बपेस एवंसीलो येवाति वत्वा इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समो-
धानेसि । तदा नन्दो सारिपुत्तस्स सद्धिविहारिको अहोसि । कुटुम्बिकपुत्तो सारिपुत्तो पण्डितकुटुम्बिको पन अह-
मेवाति ।

नन्दजातकं

१०. खदिरङ्गारजातकं

कामं पतामि निरयन्ति—इदं सत्या जेतवने विहरन्तो अनाथपिण्डकस्स दानं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

अनाथपिण्डको हि विहारमेव आरब्ध चतुपण्णासकोटिधनं बुद्धसासने परिच्चजित्वा विकिरित्वा उपेतवा तीणि रतनानि अञ्जत्थ रतनसञ्जमेव अनुप्पादेत्वा सत्थरि जेतवने विहरन्ते देवसिकं तीणि महाउपट्ठानानि गच्छति । पातोव एकवारं गच्छति, कतपातरासो एकवारं, सायणहे एकवारं । अञ्जानिपि अन्तरूपट्ठानानि होन्ति येव । गच्छन्तो च किन्नुखो आदाय आगतोति सामणेरा वादहरावा हत्थम्पि मे ओलोकेयुन्ति तुच्छहत्थो नाम न गतपुब्बो । पातो व गच्छन्तो यागुं गाहापेत्वा गच्छति । कतपातरासो सप्पिनवनीतमधुफाणितादीनिपि सायणहसमये गन्धमालावत्थहत्थोति । एवं दिवसे दिवसे परिच्चजन्तस्स पनस्स परिच्चागे पमाणं नत्थि । बहु वोहारूपजीविनोपिस्स हत्थतो पण्णे आरोपेत्वा अट्ठारसकोटिसिखं धनं इणं गण्हिसुं । ते महासेट्ठि न आहरापेति । अञ्जा पनस्स कुलसन्तका अट्ठारसकोटियो नदीतीरे निदहित्वा ठपिता वातोदकेन नदीकूले भिन्ने महासमुद्धं पविट्ठा । ता यथापिहितलञ्छिता व लोहचाटियो अण्णवकुच्छियं पवट्ठन्ता विचरन्ति । गेहे पनस्स पञ्चन्नं भिक्खुसतानं निच्चभत्तं निबद्धमेव होति । सेट्ठिनो हि गेहं भिक्खुसंघस्स चातुमहापथे खणितपोक्खरणीसदिसं सब्बभिक्खूनं मातापितुट्ठाने ठितं । तेनस्स घरं सम्मासम्बुद्धोपि गच्छति, असीतिमहाधेरापि गच्छन्ति येव । सेसभिक्खूनं पन आगच्छन्तानं च पमाणं नत्थि । तं पन घरं सत्तभूमकं सत्तद्वारकोट्ठकपतिमण्डितं ।

तस्स चतुत्थे द्वारकोट्ठके एका मिच्छादिट्ठिका देवता वसति । सा सम्मासम्बुद्धे गेहं पविसन्ते अत्तनो विमाने ठातुं न सक्कोति, दारके गहेत्वा ओतरित्वा भूमियं तिट्ठति । असीतिमहाधेरेसुपि अवसेसधेरेसुपि पविसन्तेसु च निक्खमन्तेसु च तथेव करोति । सा चिन्तेसि—समणे च गोतमे सावकेसु चस्स इमं गेहं पविसन्तेसु मय्हं सुखं नाम नत्थि, निच्चकालं ओतरित्वा ओतरित्वा भूमियं ठातुं न सक्खिस्सामि । यथा इमे एतं घरं नप्पविसन्ति तथा मया कातुं वट्ठतीति ।

अथेकदिवसं सयनूपगतस्सेव महाकम्मन्तिकस्स सन्तिकं गन्त्वा ओभासं फरित्वा अट्ठासि । को एत्थाति च वुत्ते अहं चतुत्थद्वारकोट्ठके निब्बत्तदेवताति ।

कस्मा आगतासीति ?

तुम्हे सेट्ठिस्स किरियं न पस्सथ अत्तनो पच्छिमकालं अनोलोकेत्वा धनं नीहरित्वा समणं गोतमं येव पूजेति, न वणिज्जं पयोजेति, न कम्मन्ते पट्ठपेति । तुम्हे सेट्ठिं तथा ओवदथ यथा अत्तनो कम्मं करोति यथा च समणो गोतमो ससावको इमं घरं नप्पविसति तथा करोथाति ।

अथ नं सो आह—बालदेवते ! सेट्ठी धनं विस्सज्जेन्तो निव्यानिके बुद्धसासने विस्सज्जेति । सो सचे मं चूलायं गहेत्वा विक्किणस्सति नेवाहं किञ्चि कथेस्सामि । गच्छ त्वन्ति ।

सा पुनेकदिवसं सेट्ठिनो जेट्ठपुत्तं उपसंकमित्वा तथेव ओवदि । सो पि नं पुरिमनयेनेव तज्जेसि । सेट्ठिना पन सद्धि कथेतुं येव न सक्कोति ।

सेट्ठिनोपि निरन्तरं दानं देन्तस्स वोहारे अकरोन्तस्स अये मन्दीभूते धनं परिक्खयं अगमासि । अथस्स अनुक्कमेन दालिद्वियप्पत्तस्स परिभोगसाटकसयनभोजनानिपि पराणसदिसानि न भविसि । एवंभतोपि

हृत्थेन गहेत्वा निक्खमि । निक्खमित्वा च पन अञ्जत्थ वसनट्ठानं अलभमाना सेट्ठि खमापेत्वा तत्थेव वसिस्सामीति नगरपरिगाहकदेवपुत्तस्स सन्तिकं गत्वा तं वन्दित्वा अट्ठासि ।

केनत्थेन आगतासीति च वुत्ता अहं सामि ! अनुपधारेत्वा अनाथपिण्डकेन सद्धि कथेसि, सो मं कुञ्जित्वा वसनट्ठाना निक्कड्ढि । मं सेट्ठिस्स सन्तिकं नेत्वा खमापेत्वा वसनट्ठानं मे देथाति ।

किं पन तथा सेट्ठि वुत्तो ति ?

इतो पट्ठाय बुद्धपट्ठानं संघुपट्ठानं माकरि, समणस्स गोतमस्स घरे पवेसनं मा अदासीति । एवं मे वुत्तो सामीति ।

अयुत्तं तथा वुत्तं, सासने पहारो दिस्सो । अहं तं आदाय सेट्ठिनो सन्तिकं गन्तुं न उस्सहामीति ।

सा तस्स सन्तिका संगहं अलभित्वा चतुष्मं महाराजानं सन्तिकं अगमासि । तेहिपि तथेव पटिक्खित्ता सक्कं देवराजं उपसंकमित्वा तं पर्वति आचिक्खित्वा— अहं देव ! वसनट्ठानं अलभमाना दारके हृत्थेन गहेत्वा अत्ताणा विचरामि तुम्हाकं सिरिया मरुहं वसनट्ठानं दापेथाति सुट्ठुतरं याचि ।

सोपि नं आह—तथा अयुत्तं कतं, जिनसासने पहारो दिस्सो । अहम्पि तं निस्साय सेट्ठिना सद्धि कथेतुं न सक्कोमि । एकं पन ते सेट्ठिस्स खमनूपायं कथेस्सामीति ।

साधु देव ! कथेहीति ।

महासेट्ठिस्स हृत्थतो मनुस्सेहि पण्णे आरोपेत्वा अट्ठारसकोटिसंखं धनं गहितं अत्थि त्वं तस्स आयुत्तकवेमं गहेत्वा कच्चि अजानापेत्वा तानि पण्णानि आदाय कतिपयेहि यक्खतरुणेहि परिवारिता एकेन हृत्थेन पण्णं एकेन लेखनि गहेत्वा तेसं गेहं गत्वा गेहमज्जे ठिना अत्तनो यक्खानुभावेन ते उत्तासेत्वा इदं तुम्हाकं इण-पण्णं, अम्हाकं सेट्ठी अत्तनो इस्सरकाले तुम्हे न किञ्चि आह इदानि दुग्गतो जातो तुम्हेहि गहितकहापणानि देथाति अत्तनो यक्खानुभावं दस्सेत्वा सब्बापि ता अट्ठारसहिरञ्जकोटियो साधेत्वा सेट्ठिस्स तुच्छकोट्ठके पूरेत्वा अञ्जं अचिरवतीनदीतीरे निहितधनं नदीकूले भिन्ने समुदं पविट्ठं अत्थि तम्पि अत्तनो आनुभावेन आहरित्वा कोट्ठे पूरेत्वा अञ्जम्पि असुकट्ठाने नाम अस्सामिकं अट्ठारसकोटिमत्तमेव धनं अत्थि तम्पि आहरित्वा तुच्छ-कोट्ठके पूरेहि, इमाहि चतुपण्णासकोटीहि इमं तुच्छकोट्ठके पूरणेन दण्डकम्मं कत्वा महासेट्ठिं खमापेहीति ।

सा साधु देवाति तस्स वचनं सम्पटिच्छित्वा वुत्तनयेनेव सब्बं धनं आहरित्वा अड्ढरत्तसमये सेट्ठिस्स सिरिगम्भं पविसित्वा ओभासं फरित्वा आकासे अट्ठासि ।

को एसोति वुत्ते अहं ते महासेट्ठि ! चतुत्थद्वारकोट्ठके अधिवत्था अन्धबालदेवता मया महामोहमू-ल्हाय बुद्धगुणे अजानित्वा पुरिमेसु दिवसेसु तुम्हेहि सद्धि किञ्चि कथितं अत्थि तं मे दोसं खमथ सक्कस्स हि मे देवराजस्स वचनेन तुम्हाकं इणं सोधेत्वा अट्ठारसकोटियो समुदं गता अट्ठारसकोटियो तस्मिं तस्मिं ठाने अस्सामिकधनस्स अट्ठारसकोटियोति चतुपण्णासकोटियो आहरित्वा तुच्छकोट्ठं पूरणेन दण्डकम्मं कतं जेतव-नविहारं आरब्ध परिकखयं गतधनं सब्बं सम्पिण्डितं वसनट्ठानं अलभमाना किलमामि मया अञ्जाणताय कथितं मनसि अकत्वा खमथ महासेट्ठीति आह ।

अनाथपिण्डको तस्सा वचनं सुत्वा चिन्तेसि— अयं च देवता दण्डकम्मं च मे कतन्ति वदति अत्तनो च दोसं पटिजानाति सत्था इमं चिन्तेत्वा अत्तनो गुणे जानापेस्सति सम्मासम्बुद्धस्स नं दस्सेस्सामीति । अथ नं आह— अम्म देवते ! सचेसि मं खमापेतुकामा सत्थुसन्तिके मं खमापेहीति ।

साधु एवं करिस्सामि सत्थु पन मं सन्तिकं गहेत्वा गच्छाहीति ।

सो साधूति वत्वा विभाताय रत्तिया पातोव तं गहेत्वा सत्थुसन्तिकं गत्वा ताय कतकम्मं सब्बं तथागतस्स आरोचेसि ।

सत्था तस्स वचनं सुत्वा इध गहपति ! पापपुग्गलोपि याव पापं न पच्चति ताव भद्रानि पस्सति यदा पनस्स पापं पच्चति तदा पापमेव पस्सति । भद्रपुग्गलोपि याव भद्रं न पच्चति ताव पापानि पस्सति, यदा पनस्स भद्रं पच्चति तदा भद्रमेव पस्सतीति वत्वा इमा धम्मपदे द्वे गाथा अभसि—

“पापोपि पस्सति भद्रं याव पापं न पच्चति ।

यदा च पच्चति पापं अथ पापो पापानि पस्सति ॥

भद्रोपि पस्सति पापं याव भद्रं न पच्चति ।

यदा च पच्चति भद्रं अथ भद्रो भद्रानि पस्सती” ति ।

इमासं च पन गाथानं परियोसाने सा देवता सोतापत्तिफले पतिट्ठासि । सा चक्कच्चित्तेसु सत्थु पादेसु निपतित्वा मया भन्ते ! रागरत्ताय दोसदुट्ठाय मोहमूलहाय अविज्जन्धाय तुम्हाकं गुणे अजानन्तिया पापकं वचनं वुत्तं तं मे खमथाति सत्थारं खमापेत्वा महासेट्ठि खमापेसि ।

तस्मिं समये अनाथपिण्डको सत्थु पुरतो अत्तनो गुणं कथेसि— भन्ते ! अयं देवता बुद्धपट्ठानादीनि मा करोहीति वारयमानापि मं वारेतुं नासक्खि दानं न दातव्वन्ति इमाय वारियमानोपहं अदासिमेव ननु एस भन्ते ! मय्हं गुणोति ?

सत्था— त्वं खोसि गहपति ! सोतापन्नो अरियसावको अचलसद्धो विमुद्धदस्सनो तुय्हं इमाय अप्सक्खदेवताय वारन्तिया अवारितभावो नाच्छरियो यं पन पुब्बे पण्डिता अनुप्पन्ने बुद्धे अपरिपक्के आणे ठिता कामावचरिस्सरेन मारेन आकासे ठत्वा सचे दानं दस्ससि इमस्मिं निरये पच्चिस्ससीति असीतिहत्थगम्भीरं अंगारकासुं दस्सेत्वा मा दानं अदासीति वारिता पदुमकण्णिकमज्जे ठत्वा अदंसु इदं अच्छरियन्ति वत्वा अनाथ-पिण्डकेन याचितो अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो बाराणसीसेट्ठिस्स कुले निव्वत्तित्वा नानप्पकारेहि सुखूपकरणेहि देवकुमारो विय संवड्ढियमानो अनुक्कमेन विव्वुत्तं पत्वा सोलसवस्सकाले येव सब्ब-सिप्पेसु निप्फत्ति पत्तो । सो पितु अच्चयेन सेट्ठिट्ठाने ठत्वा चतुसु नगरद्वारेसु चतस्सो दानसालायो मज्जे नगरस्स एकं अत्तनो निवेसनद्वारे एकन्ति छ दानसालायो कारेत्वा महादानं देति, सीलं रक्खति, उपोसथकम्मं करोति । अथेकदिवसं पातरासवेलाय बोधिसत्तस्स नानगरसे मनुञ्जभोजने उपनीयमाने एको पच्चेकबुद्धो सत्ताहच्चयेन निरोषा उट्ठाय भिक्खाचारवेलं सल्लक्खेत्वा अज्ज मया बाराणसीसेट्ठिस्स गेहद्वारं गन्तुं वट्ठतीति नागलतादन्तकट्ठं खादित्वा अनोतत्तदहे मुखं धोवित्वा मनोसिलातले ठितो निवासेत्वा कायबन्धनं बन्धित्वा चीवरं पारुपित्वा इद्धिमयमत्तिकपत्तं आदाय आकासेनागन्त्वा बोधिसत्तस्स भत्ते उपनीतमत्ते गेहद्वारे अट्ठासि ।

बोधिसत्तो तं दिस्वाव आसना वुट्ठाय निपच्चाकारं दस्सेत्वा कम्मकारकं ओलोकेसि । किं करोमि सामीति च वुत्ते अय्यस्स पत्तं आहरथाति आह । तं खणञ्जेव मारो पापिमा विकम्पमानो उट्ठाय अयं पच्चेक-बुद्धो इतो सत्तमे दिवसे आहारं लभि । अज्ज अलभन्तो विनस्सिस्ससति इमं च विनासेस्सामि सेट्ठिनो च दानन्त-रायं करिस्सामीति तं खणञ्जेव आगन्त्वा अन्तरवत्थुमिह असीतिहत्थमत्तं अंगारकासुं निम्मणि । सा खदि-रंगारपुण्णा सम्पज्जलिता सजोतिभूता अबीचिमहानिरयो विय खायित्थ । तं पन मापेत्वा सयं आकासे अट्ठासि । पत्तहरणत्थाय गच्छमानो पुरिसो तं दिस्वा महाभयप्पत्तो निवत्ति ।

बोधिसत्तो— किं तात ! निवत्तोसीति पुच्छि ।

अयं सामि ! अन्तरवत्थुमिह महती अंगारकासु सम्पज्जलिता सजोतिभूताति ।

अथञ्जो अथञ्जोति एवं आगतागता सब्बेपि भयप्पत्ता वेगेन पलायिंसु ।

बोधिसत्तो चिन्तेसि— अज्ज मय्हं दानन्तरायं कातुकामो वसवत्ती मारो उय्युत्तो भविस्सति, न खो पन जानाति मारस्सेन मारसहस्सेनापि मय्हं अकम्पियभावं । अज्जदानि मय्हं वा मारस्स वा बलमहन्ततं आनुभावमहन्ततं जानिस्सामीति तं यथासज्जितमेव भत्तपातिं सयं आदाय गेहा निक्खम्म अंगारकासुतटे ठत्वा आकासं उल्लोकेत्वा मारं दिस्वा— कोसि त्वन्ति आह ।

अहं मारोति ।

अयं अंगारकासु तथा निम्मिताति ?

आम मयाति ।

किमत्थायाति ?

तव दानस्स अन्तरायकरणत्थाय च पच्चेकबुद्धस्स च जीवितनासनत्थायाति ।

बोधिसत्तो— नेव त अहं अत्तनो दानस्स अन्तरायं न पच्चेकबुद्धस्स जीवितन्तरायं कातुं दस्सामि । अज्जदानि मय्हं वा तुय्हं वा बलमहन्ततं आनुभावमहन्ततं जानिस्सामीति अंगारकासुया तटे ठत्वा— भन्ते ! पच्चेकवरबुद्ध ! अहं इमिस्सापि अंगारकासुया अधोसीसो पतमानोपि न निवत्तिस्सामि केवलं तुम्हे मया दिग्भ-भोजनं पतिगण्हाति वत्वा इमं गाथमाह—

कामं पतामि निरयं उद्धपादो अवंसिरो ।

नानरियं करिस्सामि हन्द पिण्डं पटिग्गहाति ॥

तत्रायं पिण्डत्थो भन्ते ! पच्चेकवरबुद्ध ! सचे अहं तुम्हाकं पिण्डपातं देन्तो एकसेनेव इमं निरयं उद्धपादो अवंसिरो हुत्वा पतामि तथापि यदिदं अदानं च असीलियं च अरियेहि अकातब्बत्ता अनरियेहि च कात-ब्बत्ता अनरियन्ति बुच्चति न तं अनरियं करिस्सामि हन्द इमं मया दीयमानं पिण्डं पटिग्गह पतिगण्हाहीति । एत्थ च हन्दाति ववस्सग्गत्ये निपातो ।

एवं वत्वा बोधिसत्तो दल्हसमादानेन भत्तपातिं गहेत्वा अंगारकासुमत्थकेन पक्खन्तो । तावदेव असीतिहत्थगम्भीराय अंगारकासुया तलतो उपरूपपरि जातं अत्तसत्तमं एकं महापदुमं उगगन्त्वा बोधिसत्तस्स पादं सम्पटिच्छि । ततो महातुम्बमत्ता रणुउगगन्त्वा महासत्तस्स मुद्धनि ठत्वा पतित्वा सकलसरीरं सुवण्णचुण्ण-समोकिण्णमिव अकासि । सो पदुमकर्णिकाय ठत्वा नानगगरसभोजनं पच्चेकबुद्धस्स पत्ते पतिट्ठापेसि । सो तं पटिग्गहेत्वा अनुमोदनं कत्वा पत्तं आकासे खिपित्वा पस्सन्तस्सेव महाजनस्स सयम्पि वेहासं अब्भुगगन्त्वा नान-प्पकारं वलाहकपन्ति मद्मानो विय हिमवन्तमेव गतो ।

मारोपि पराजितो दोमनस्स पत्वा अत्तनो वसनट्ठानमेव गतो । बोधिसत्तो पन पदुमकर्णिकाय ठितकोव महाजनस्स दानसीलसंवण्णेनेन धम्मं देसेत्वा महाजनेन परिवुत्तो अत्तनो निवेसनमेव पविसित्वा यावजीवं दानादीनि पुञ्जानि करित्वा यथाकम्मं गतो ।

सत्था-न इदं गहपति ! अच्छरियं यं त्वं एवं दस्सनसम्पन्नो एतरहि देवताय न कम्पितो पुब्बेपि पण्डि-तेहि कतमेव अच्छरियन्ति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा पच्चेकबुद्धो तत्थेव परिनिब्बायि । मारं पराजेत्वा पदुमकर्णिकाय ठत्वा पच्चेकबुद्धस्स पिण्डपातदायको बाराणसीसेट्ठि पन अहमेवाति ।

लविरङ्गारजातकं

कुलावकवग्गो वत्तुत्थो

५. अथकामवगवण्णना

१. लोसकजातकं

यो अथकामस्साति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो लोसकतिससत्थेरं नाम आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

को पनेस लोसकतिससत्थेरो नामाति ? कोसलरट्ठे एको अत्तनो कुलनासको केवट्टपुत्तको अलाभी भिक्खू । सो किर निब्बत्तट्ठानतो चवित्वा कोसलरट्ठे एकस्मिं कुलसहरसवासे केवट्टगामे एकस्सा केवट्टिया कुच्छिस्मि पटिसन्धि गण्हि । तस्स पटिसन्धिग्गहणदिवसे तं कुलसहरसं जालहत्थं नदियं च तलाकादिमु व मच्छे परियेसन्तं एकं खुद्दकमच्छम्पि नालत्थ । ततो पट्ठाय च ते केवट्टे परिहायन्ति येव तस्मिम्पि कुच्छिगते येव तेसं गामो सत्तवारे अग्गिना दड्ढो सत्तवारे रञ्ज्रा दड्ढितो । एवं अनुक्कमेन दुग्गता जाता । ते चिन्तियिमु-पुब्बे अम्हाकं एवरूपं नत्थि इदानीं पन परिहायाम अम्हाकं अन्तरे एकाय कालकण्णिंया भवितव्वं द्वे वग्गा होमाति । पञ्च पञ्च कुलसतानि एकतो अहेसु । ततो यत्थ तस्स मातापितरो सो कोट्ठासो परिहायति इतरो वड्ढति । ते तम्पि कोट्ठासं द्विधा, तम्पि द्विधाति एवं याव तमेव कुलं एकं अहोसि ताव विभजित्वा तेसं कालकण्णिभावं जत्वा पोथेत्वा निक्कड्ढिसु ।

अथस्स माता किञ्छेन जीवमाना परिपक्वे गम्भे एकस्मिं ठाने विजायि । पच्छिमभक्किसत्तं न सक्का नासेतुं अन्तोषटे दीपो विय हिस्स हृदये अरहत्तस्स उपनिस्सथो जलति । सा तं दारकं पटिजग्गित्वा आधावित्वा परिधावित्वा विचरणकाले एकमस्स कपालकं हत्थे दत्वा पुत्तं एकं घरं पविसाति पेसेत्वा पलाता ।

सो ततो पट्ठाय एककोव हुत्वा तत्थ भिक्खं परियेसित्वा एकस्मिं ठाने सयति । न नहायति न सरीरं पटिजग्गति, पंसुपिसाचको विय किञ्छेन जीविकं कपेति । सो अनुक्कमेन सत्तवस्सिको हुत्वा एकस्मिं गेहद्वारे उक्खलिधोवनस्स छड्ढितट्ठाने काको विय एकेकं सित्थकं उच्चिनित्वा खादति ।

अथ नं धम्मसेनापति सावत्थियं पिण्डाय चरमानो दिस्वा अयं सत्तो अतिकारञ्जप्पत्तो कतरगाम-वासिको नु खोति तस्मिं वड्ढेत्वा एहि रेति आह । सो गन्त्वा थेरं वन्दित्वा अट्ठासि । अथ नं थेरो-कतरगाम-वासिकोसि कहं वा ते मातापितरोति पुच्छि ।

अहं भन्ते । निप्पच्चयो, मय्हं मातापितरो मं निस्साय किलन्तम्हाति मं छड्ढेत्वा पलाताति ।

अपि पन पब्बजिस्ससीति ?

भन्ते ! अहं ताव पब्बजेय्यं मादिसं पन कपणं को पब्बाजेस्सतीति ।

अहं पब्बाजेस्सामीति ।

साधु पब्बाजेथाति ।

थेरो तस्स खादनीयं भोजनीयं दत्वा तं विहारं नेत्वा सहत्थेनेव नहापेत्वा पब्बाजेत्वा परिपुण्णवस्सं उपसम्पादेसि । सो महल्लककाले लोसकतिससत्थेरोति पञ्जायित्थ निप्पुञ्जो अप्पलाभो । तेन किर असदिसदानेपि कुच्छिपूरो न लद्धपुब्बो, जीवितघटनमत्तकमेव लभति । तस्स हि पत्ते एकस्मिञ्ज्जेय यागुउलुंके दिन्ने पत्तो समतित्तिको विय हुत्वा पञ्जायति । अथ मनुस्सा इमस्स पत्तो पूरोति हेट्ठा यागुं देन्ति । तस्स पत्ते यागुं दानकाले मनुस्सानं भाजने यागुं अन्तरधायातीतिपि वदन्ति । खज्जकादिसुपि एसेव नयो । सो अपरेन समयेन विपस्सनं वड्ढेत्वा अग्गफले अरहत्ते पटिट्ठितोपि अप्पलाभोव अहोसि । अथस्स अनुपुब्बेन आयुसंखारेसु परिही-नेसु परिनिब्बाणदिवसो सम्पापुणि ।

धम्मसेनापति आवज्जेत्तो तस्स परिनिब्बाणभावं ज्ञात्वा अयं लोसकतिस्सत्थेरो अज्ज परिनिब्बा-
यिस्सति । अज्ज मया एतस्स यावदत्थं आहारं दातुं वट्ठतीति नं आदाय सावत्थि पिण्डाय पाविसि । थेरो तं निस्साय
ताव बहुमनुस्साय सावत्थिया हत्थं पसारेत्वा वन्दनमत्तम्पि नालत्थ । अथ नं थेरो गच्छावुसो ! आसनसालाय
निसीदाति उय्योजेसि । ततो आगतमेव मनुस्सा अय्यो आगतोति आसने निसीदापेत्वा भोजेन्ति । थेरो पि
इमं लोसकस्स देथाति लद्धाहारं पेसेसि । तं गहेत्वा गता लोसकत्थेरं असरित्वा सयमेव भुञ्जिमु ।
अथ थेरस्स उट्ठाय विहारं गमनकाले लोसकतिस्सत्थेरो गन्त्वा थेरं वन्दि, थेरो निवत्तित्वा ठितकोव
लद्धं ते आवुसो ! भत्तन्ति पुच्छि ।

थेरो संवेगपत्तो कालं ओलोकेसि । कालो अतिक्कन्तो । थेरो- होतावुसो ! इधेव निसीदाति
लोसकत्थेरं आसनसालाय निसीदापेत्वा कोसलरज्जो निवेसनं अगमासि । राजा थेरस्स पत्तं गाहापेत्वा भत्तस्स
अकालोति पत्तपूरं चतुमधुरं दापेसि ।

थेरो तमादाय गन्त्वा एहावुसो तिस्स ! इमं चतुमधुरं भुञ्जाति वत्ता पत्तं गहेत्वाव अट्ठासि ।
सो थेरे गारवेन लज्जन्तो न परिभुञ्जति, अयनं थेरो सहावुसो तिस्स ! अहं इमं पत्तं गहेत्वाव ठस्सामि त्वं
निसीदित्वा परिभुञ्ज, सचे इमं पत्तं हत्थतो मुञ्चेय्यं किञ्चि न भवेय्याति आह ।

अथायस्मा लोसकतिस्सत्थेरो अग्गिस्सरे धम्मसेनापतिमिह पत्तं गहेत्वा ठिते चतुमधुरं परिभुञ्जि ।
तं थेरस्स अरियिद्विबलेन परिकख्यं न अगमासि । तदा लोसकतिस्सत्थेरो यावदत्थं उदरपूरं कत्वा परिभुञ्जि ।
तं दिवसमेव च अनुपादिसेसाय निब्बाणधातुया परिनिज्वायि । सम्मासम्बुद्धो तस्स सन्तिके ठत्वा सरीरनिक्खेपं
कारेसि । धातुयो गहेत्वा चेतियं करिमुं ।

तदा भिक्खू धम्मसभायं सन्निपतित्वा-आवुसो ! लोसकत्थेरो अपुञ्जो अप्पलाभी एवरूपेन नाम
अपुञ्जेन अप्पलाभिना कथं अरियधम्मो लद्धोति कथेन्ता निसीदिमु ।

सत्था धम्मसभायं गन्त्वा- काय नुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छि ।
ते इमाय नाम भन्तेति आरोचेमुं ।

सत्था-भिक्खवे एसो भिक्खु अत्तनो अप्पलाभिभावञ्च अरियधम्मलाभीभावं च अत्तनाव अकासि ।
अयं हि पुब्बे परेसं लाभन्तरायं कत्वा अप्पलाभी जातो अनिच्चं दुक्खं अनत्ताति विपस्सनाय युत्तभावस्स
फलेन अरियधम्मलाभी जातोति वत्ता अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते कस्सपसम्मासम्बुद्धकाले अञ्जतरो भिक्खु एकं कुटुम्बिकं निस्साय गामकावासे वसति
पकतत्तो सीलवा विपस्सनाय युत्तपयुत्तो । अथेको खीणासवत्थेरो समवत्तवासं वसमानो अनुपुब्बेन तस्स
भिक्खुनो उपट्ठाककुटुम्बिकस्स वसनगामं सम्पत्तो । कुटुम्बिको थेरस्स इरियापथे येव पसीदित्वा पत्तं
आदाय घरं पवेसेत्वा सक्कच्चं भोजेत्वा थोकं धम्मकथं सुत्वा थेरं वन्दित्वा- भन्ते ! अम्हाकं धुरविहारमेव
गच्छथ मयं सायण्हसमये आगन्त्वा पस्सिस्सामाति आह ।

थेरो विहारं गन्त्वा नेवासिकत्थेरं वन्दित्वा आपुच्छित्वा एकमन्तं निसीदि । सोपि तेन सद्धि पटि-
सन्थारं कत्वा- लद्धो ते आवुसो ! भिक्खाहारोति पुच्छि ।

आम लद्धोति ।

कहं लद्धोति ?

तुम्हाकं धुरंगामे कुटुम्बिकधरेति । एवञ्च पन वत्ता अत्तनो सेनासनं पुच्छित्वा पटिजगित्वा पत्त-
चीवरं पटिसामेत्वा ज्ञानमुखेन फलमुखेन वीतिनामेन्तो निसीदि ।

सोपि कुटुम्बिको सायण्हे गन्धमालञ्चेव दीपतेलञ्च गाहापेत्वा विहारं गन्त्वा नेवासिकत्थेरं वन्दित्वा भन्ते ! एको आगन्तुकत्थेरो अत्थि आगतो नु खोति पुच्छि ।

आम आगतोति ।

इदानीं कहन्ति ?

अमुकसेनासने नामाति ।

सो तस्स सन्तिकं गन्त्वा वन्दित्वा एकमन्तं निसिन्नो धम्मकथं सुत्वा सीतलवेलाय चेतियं च बोधिं च पूजेत्वा दीपे जालेत्वा उभोपि जने निमन्तेत्वा गतो । नेवासिकत्थेरोपि खो अयं कुटुम्बिको परिभिन्नो सचायं भिक्खु इमस्मिं विहारे वसिस्सति न मं एस किंस्मिं च गणयिस्सतीति थेरे अनत्तमनतं आपज्जित्वा इमस्मिं विहारे एतस्स अवसनाकारो मया कातुं वट्ठीतीति तेन उपट्ठानवेलाय आगतेन सद्धिं किञ्चि न कथेसि ।

खीणासवत्थेरो तस्स अज्झासयं जानित्वा अयं थेरो मम कुले वा लाभेत्वा गणे वा अपनिबुद्धभावं न जानीतीति अत्तनो वसनट्ठानं गन्त्वा ज्ञानसुखेन फलसुखेन वीतिनामेसि ।

नेवासिकोपि पुनरिवसे नखपिट्ठेन गण्डं पहरित्वा, नखेन द्वारं आकोटेत्वा, कुटुम्बिकस्स गेहं अगमासि । सो तस्स पत्तं गहेत्वा पञ्चत्तासने निसीदापेत्वा—आगन्तुकत्थेरो कुहि भन्तेति, पुच्छि ।

नाहं तव कुलूपकस्स पवत्तिं जानामि, । गण्डं पहरन्तो द्वारं आकोटेन्तो पबोधेतुं नासक्खि । हिय्यो तव गेहे पणीतभोजनं भुञ्जित्वा जीरापेतुं असक्कोन्तो इदानीं निदं ओक्कन्तो येव भविस्सति । त्वं पसीदमानो एवरूपेसु ठानेसु येव पसीदसीति आह ।

खीणासवत्थेरोपि अत्तनो भिक्खाचारवेलं सल्लक्खेत्वा सरीरं पटिजग्गित्वा पत्तचीवरमादाय आकासे उपपतित्वा अञ्जत्थ अगमासि ।

सो कुटुम्बिको नेवासिकत्थेरं सप्पिमधुसक्कराभिसंखतं पायासं पायेत्वा पत्तं गन्धचुण्णेहि उब्बट्ठेत्वा पुन पूरेत्वा— भन्ते ! सो थेरो मग्गकिलन्तो भविस्सति इदमस्स हरथाति अदासि ।

इतरो अप्पटिक्खित्वाव गहेत्वा गच्छन्तो सचे सो भिक्खु इमं पायासं पिबिस्सति गीवाय गहेत्वा निक्कड्डियमानोपि न गमिस्सति । सचे पनाहं इमं पायासं मनुस्सस्स दस्सामि पाकटं मे कम्मं भविस्सति । सचे उदके ओपिलापेस्सामि उदकपिट्ठे सप्पि पञ्चायिस्सति । सचे भूमियं छड्डेस्सामि काकसन्निपातेन पञ्चायिस्सति । कत्थं नु खो इमं छड्डेय्यन्ति उपधारेन्तो एकं ज्ञामक्खेतं दिस्वा अंगारे वियूहित्वा तत्थ पक्खि-पित्वा उपरि अंगारेहि पटिच्छादेत्वा विहारं गतो । तं भिक्खुं अदिस्वा चिन्तेसि— अद्धा सो भिक्खु खीणासवो मम अज्झासयं विदित्वा अञ्जत्थ गतो भविस्सति । अहो ! मया उदरहेतु अयुतं कतन्ति । तावदेवस्स महन्तं दोमनस्सं उदपादि । ततो पट्ठायेव च मनुस्सपेतो हुत्वा तच्चिरस्सेव कालं कत्वा निरये निब्बत्ति ।

सो बहूनि वस्ससतसहस्सानि निरये पच्चित्वा पक्कावसेसेन पटिपाटिया पञ्चजातिसतेसु यक्खो हुत्वा एकदिवसम्पि उदरपूरं आहारं न लभि । एकदिवसं पन गम्भमलं उदरपूरं लभि । पुन पञ्चजातिसतेसु सुनखो अहोसि । तदापि एकदिवसं भत्तवमनं उदरपूरं लभि । सेसकाले पन तेन उदरपूरो आहारो नाम न लद्ध-पुब्बो । सुनखयोनितो पन चवित्वा कासिरट्ठे एक्किं गामे दुग्गतकुले निब्बत्ति । तस्स निब्बत्तितो पट्ठाय तं कुलं परमदुग्गतमेव जातं । नाभितो उद्धं उदककज्जिकमतम्पि न लभि । तस्स पन मित्तविन्दकोति नामं अहोसि । मातापितरो छातकदुक्खं अधिवासेतुं असक्कोन्ता गच्छ कालकण्णिकाति तं पोथेत्वा नीहूरिंसु । सो अप्परिसरणो विचरन्तो बाराणसि अगमासि ।

तदा बोधिसत्तो बाराणसियं दिसापामोक्खो आचरियो हुत्वा पञ्चमाणवकसतानि सिप्पं वाचेति । तदा बाराणसिवासिनो दुग्गतानं परिब्बयं दत्वा सिप्पं सिक्खापेन्ति । अयम्पि मित्तविन्दको

बोधिसत्तस्स सन्तिके पुञ्ञसिपपं सिक्खति । सो फरुसो अनोवादक्खमोतं तं पहरन्तो विचरति बोधिसत्तेन ओवदियमानोपि ओवादं न गण्हाति । तं निस्साय आयोपिस्स मन्दो जातो । अथ सो माणवकेहि सद्धिं भण्डित्वा ओवादं अगण्हन्तो ततो पलायित्वा आहिण्डन्तो एकं पच्चन्तगामं गन्त्वा भतिं कत्वा जीवति । सो तत्थ एकाय दुग्गतित्थिया सद्धिं संवासं कपेसि । सा तं निस्साय द्वे दारके विजायि । गामवासिनो अम्हाकं सुसासनं दुस्सासनं आरोचेय्यासीति मित्तविन्दकस्स भतिं दत्त्वा तं गामं द्वारे कुटिकाय वसापेसुं । तं पन मित्तविन्दकं निस्साय ते [२०७] पच्चन्तगामवासिनो सत्तक्खत्तुं राजदण्डं अदंसु । सत्तक्खत्तुं तलाकं छिज्जि ।

ते चिन्तयिंसु अम्हाकं पुब्बे इमस्स मित्तविन्दकस्स अनागमनकाले एवरूपं नत्थि इदानीं पनस्स आगतकालतो पट्ठाय परिहायामाति तं पोथेत्वा नीहरिंसु । सो अत्तनो दारके गहेत्वा अञ्जत्थ गच्छन्तो एकं अमनुस्सपरिगहं अट्ठविं पाविसि । तत्थस्स अमनुस्सा द्वे दारके च भरियञ्च मारेत्वा मंसं खादिसु ।

सो ततो पलायित्वा ततो ततो आहिण्डन्तो एकं गम्भीरं नाम पट्टनगामं नावाविस्सज्जनदिवसे येव पत्त्वा कम्मकरो हुत्वा नावं अभिरुहि । नावा समुद्दपिट्ठे सत्ताहं गन्त्वा सत्तमे दिवसे समुद्दमज्जे आकोटेत्वा ठपित्वा विय अट्ठासि । ते कालकणिसलाकं विचारेसुं^१ । सत्तक्खत्तुं मित्तविन्दकस्सेव पापुणि । मनुस्सा तस्सेकं वेणुकलापकं दत्त्वा हत्थे गहेत्वा समुद्दे खिंपिसु । तस्मिं खित्तमत्ते नावा अगमासि । मित्तविन्दको वेणुकलापे निपज्जित्वा समुद्दपिट्ठे गच्छन्तो कस्सपसम्मासम्बुद्धकाले रक्खितसीलस्स फलेन समुद्दपिट्ठके एक्किंम फल्लिकविमाने चतस्सो देवधीतरो पटिलभित्त्वा तासं सन्तिके सुखं अनुभवमानो सत्ताहं वसि ।

ता पन विमानपेतियो सत्ताहं सुखं अनुभवन्ति सत्ताहं दुक्खं । दुक्खं अनुभवितुं गच्छमाना 'याव मयं आगच्छाम ताव इधेव होहीति' वत्त्वा अगमंसु ।

मित्तविन्दको तासं गतकाले वेणुकलापे निपज्जित्वा पुरतो गच्छन्तो रजतविमाने अट्ठदेवधीतरो लभि । ततोपि परं गच्छन्तो मणिविमाने सोल्लस, कणकविमाने द्वत्तिस देवधीतरो लभि । तामप्पि वचनं अकत्वा परतो गच्छन्तो अन्तरदीपके एकं यक्खनगरं अट्ठसु । तत्थेका यक्खिणी अजरूपेन विचरति । मित्तविन्दको तस्सा यक्खिणीभावं अजानन्तो अजमंसं खादिस्सामीति तं पादे अगाहेसि । सा यक्खानुभावेन तं उक्खिपित्वा खिपि । सो ताय खित्तो समुद्दमत्थकेन गन्त्वा बाराणसियं परिखापिट्ठे एक्किंम कण्टकगुम्बमत्थके पतित्वा पवट्टमानो भूमियं पटिट्ठासि ।

तस्मिं च समये तस्मिं परिखापिट्ठे रज्जो अजिका चरमाना चोरा हरन्ति । अजिकगोपका चोरे गण्हिस्सामाति एकमन्तं निलीना अट्ठंसु । मित्तविन्दको पवट्टित्वा भूमियं ठितो ता अजिका दिस्वा चिन्तेसि—अहं समुद्दे एक्किंम दीपके अजिकं पादे गहेत्वा ताय खित्तो इध पतितो । स चेपनिदानीं एकं अजिकं पादे गहेस्सामि सा मं परतो समुद्दपिट्ठे विमानदेवतानं सन्तिके खिपिस्सतीति । सो एवं अयोनिस्सो मनसिकरित्वा अजिकं पादे गण्हि । सा गहितमत्ता विरवि । अजिकगोपका इतोचितो च आगन्त्वा तं गहेत्वा एत्तकं कालं राजकुले अजिकाय खादको एस चोरोति तं कोट्टेत्वा बन्धित्वा रज्जो सन्तिकं नेत्ति । [२०८]

तस्मिं खणे बोधिसत्तो पञ्चसत्तमाणवकपरिवृतो नगरा निकखम्म नहायितुं गच्छन्तो मित्तविन्दकं दिस्वा सञ्जानित्वा ते मनुस्से आह । ताता ! अयं अम्हाकं अन्नेवामिको कम्मा तं गण्हित्थानि ? अजिकचोरको अय्य ! एकं अजिकं पादे गण्हि तस्मा गहितोति । तेनहेतं अम्हाकं दासं कत्वा देथ अम्हे निस्साय जीविस्सतीति । ते साधु अय्याति तं विस्सज्जेत्वा अगमंसु । अथ नं बोधिसत्तो मित्तविन्दक त्वं एत्तकं कालं कहं वसीति पुच्छि । सो सब्बं अत्तना कतकम्मं आरोचेसि । बोधिसत्तो अत्थकामानं वचनं अकरोन्तो एतं दुक्खं पापुणन्तीति वत्त्वा इमं गाथमाह—

यो अत्थकामस्स हितानुकम्पिनो ओवज्जमानो न करोति सासनं,
अजिया पादमोलुब्ध मित्तको विय सोचतीति ।

तत्थ अत्थकामस्साति वुड्ढिं इच्छन्तस्स । हितानुकम्पिनोति हितेन अनुकम्पमानस्स । ओवज्जमानोति मुदुकेन हितचित्तेन ओवदियमानो । न करोति सासनन्ति अनुसत्थि न करोति दुब्बचो अनोवादको होति । मित्तको विय सोचतीति यथा अयं मित्तविन्दको अजाय पादं गहेत्वा सोचति किलमति एवं निच्चकालं सोचतीति इमाय गाथाय बोधिसत्तो धम्मं देसेसि ।

एवं तेन थरेन एत्तके अदाने तीसु येव अत्तभावेसु कुच्छिपूरो लद्धपुब्बो यक्खेन हुत्वा एकदिवसं गब्भ-
मलं लद्धं, सुनखेन हुत्वा एकदिवसं भत्तवमनं, परिनिब्बाणदिवसे धम्मसेनापतिस्सानुभावेन चतुमधुरं लद्धं ।
एवं परस्स लाभन्तरायकरणं नाम महादोसन्ति वेदितब्बं ।

तस्मिं पन काले सोपि आचरियो मित्तविन्दकोपि यथाकम्मं गता^१ । सत्था एवं भिक्खवेः अत्तना अप्प-
लाभीभावञ्च अरियधम्मलाभीभावञ्च सयमेव एसो अकासीति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धिं घटेत्वा
जातकं समोधानेसि । तदा मित्तविन्दको लोसकतिस्सत्थेरो अहोसि । दिसापामोक्खाचरियो पन अहमेवाति ।

लोसकजातकं ।

२. कपोतजातकं

यो अत्थकामस्साति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अञ्जतरं लोलभिक्षुं आरम्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

तस्स लोलभावो नवकनिपाते काकजातके आवीभविस्सति । तदा पन तं भिक्षुं अयं [२०९] भन्ते ! भिक्षु लोलोति सत्थु आरोचेसुं ।

अथ नं सत्था सच्चं किर त्वं भिक्षु ! लोलोति पुच्छि ।

आम भन्तेति ।

सत्था पुब्बेपि त्वं भिक्षु ! लोलो लोलकारणा जीवितक्खयं पत्तो पण्डितापि तं निस्साय अत्तनो वसनट्ठाना परिहीनाति वत्वा अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो पारापतयोनियं निब्बत्ति । तदा बाराणसीवासिनो पुञ्जाकामताय तस्मिं तस्मिं ठाने सकुणानं सुखवासत्थाय थुमपच्छियो ओलम्बेन्ति । बाराणसिसेट्ठिनोपि भत्तकारको अत्तनो महानसे एकं थुसपच्छि ओलम्बेत्वा ठपेसि । बोधिसत्तो तत्थ वासं कप्पेसि । सो पातोव निक्खमित्वा गोचरे चरित्वा सायं आगन्त्वा तत्थ वसन्तो कालं खेपेति । अथेकदिवसं एको काको महानसमत्थ-केन गच्छन्तो अम्बिलानम्बिलमच्छमंसानं धूपनवासं घायित्वा लोभं उप्पादेत्वा किन्नु खो निस्साय इमं मच्छ-मंसं लभिस्सामीति अविदूरे निसीदित्वा परिगण्हन्तो सायं बोधिसत्तं आगन्त्वा महानसं पविसन्तं दिस्वा इमं पारापतं निस्साय मच्छमंसं लभिस्सामीति पुन दिवसे पातोव आगन्त्वा बोधिसत्तस्स निक्खमित्वा गोचरत्थाय गमनकाले पिट्ठितो पिट्ठितो अगमासि ।

अथ नं बोधिसत्तो—कस्मा त्वं सम्म ! अम्हेहि सद्धिं चरसीति आह ।

सामि ! तुम्हाकं किरिया मय्हं रुच्चति । इतो पट्ठाय तुम्हे उपट्ठहिस्सामीति ।

सम्म ! तुम्हे अञ्जगोचरा, मयं अञ्जगोचरा । तुम्हेहि अम्हाकमुपट्ठानं दुक्करन्ति ।

सामि ! तुम्हाकं गोचरगहणकाले अहम्पि गोचरं गहेत्वा तुम्हेहि सद्धिं येव गमिस्सामीति ।

साधु, केवलन्ते अप्पमत्तेन भवितव्वन्ति ।

एवं बोधिसत्तो काकं ओवदित्वा गोचरे चरन्तो तिण्णीजादीनि खादति । बोधिसत्तस्स पन गोचर-गहणकाले काको गन्त्वा गोमयपिण्डं अपनेत्वा पाणके खादित्वा उदरं पूरेत्वा बोधिसत्तस्स सन्तिकं आगन्त्वा-सामि ! तुम्हे अतिवेलं चरथ अतिबहुभक्खेन नाम भवितुं न वट्ठीति वत्वा बोधिसत्तेन गोचरं गहेत्वा सायं आगच्छन्तेन सद्धिं येव महानसं पाविसि । भत्तकारको अम्हाकं कपोतो अञ्जम्पि गहेत्वा आगतोति वत्वा काकस्सपि पच्छि ठपेसि । ततो पट्ठाय द्वे जना वसन्ति ।

अथेकदिवसं सेट्ठिस्स बहू मच्छमंसं आहरिस्सु । तं आदाय भत्तकारको महानसे तत्थ तत्थ ओलम्बे-सि । काको तं दिस्वा लोभं उप्पादेत्वा स्वे गोचरभूमिं अगन्त्वा मया इदमेव खादितव्वन्ति रत्तिं तिंतिणन्तो^१ निप-ज्जि । पुन दिवसे बोधिसत्तो गोचराय गच्छन्तो—एहि सम्म ! काकाति आह ।

सामि ! तुम्हे गच्छथ मय्हं कुच्छिरोगो अत्थीति ।

सम्म ! काकानं कुच्छिरोगो नाम कदाचि न भूतपुब्बो । रत्तिं तीसु यामेसु एकेकस्मि [२१०] यामे

मुच्छिता होन्ति । दीपवट्टं गलितकाले पन नेसं मुहुत्तं तित्ति होति । त्वं इमं मच्छमंसं खादितुकामो भविस्ससि, एहि मनुस्सपरिभोगो नाम तुम्हाकं दुप्परिभुञ्जियो मा एवरूपं अकासि, मया सद्धि येव गोचराय गच्छाहीति ।

न सक्कोमि सामीति ।

तेनहि पञ्चायिस्ससि सकेन कम्मेन लोभवसं अगन्त्वा अप्पमत्तो होहीति तं ओवदित्वा बोधिसत्तो गोचराय गतो । भत्तकारको नानप्पकारं मच्छमंसविकर्त्ति सम्पादेत्वा उसुमं निब्बापनत्थं भाजनानि थोकं विवरित्वा रसपरिस्सावनकरोटिं भाजनमत्थके ठपेत्वा बहि निक्खमित्वा सेदं पुच्छमानो अट्ठासि ।

तस्मिं खणे काको पच्छितो सीसं उक्खिपित्वा भत्तगेहं ओलोकेन्तो तस्स निक्खमितभावं ज्ञत्वा— अयं दानि मय्हं मनोरथं पूरेत्वा मंसं खादितुं कालो किन्नुखो महामंसं खादामि उदाहु चुण्णिकमंसन्ति चिन्तेत्वा चुण्णिकमंसेन नाम खिप्पं कुञ्चि पूरेतुं न सक्का महन्तं मंसखण्डं आहरित्वा पच्छियं निक्खिपित्वा खादमानो निपज्जिस्सामीति पच्छितो उप्पत्तित्वा रसकरोटियं निलीयि । सा किलीति सट्ठमकासि । भत्तकारको तं सट्ठं सुत्वा किन्नुखो एतन्ति पविट्ठो काकं दिस्वा अयं दुट्ठकाको मया सेट्ठिनो पक्कमंसं खादितुकामो अहं खो पन सेट्ठि निस्साय जीवामि न इमं बालं, किम्मे इमिनाति द्वारं पिधाय काकं गहेत्वा सकलसरीरे पत्तानि लुञ्चित्वा अट्ठसिगिवेरं लोणजीरकाय कोट्टेत्वा अम्बिलतक्केन आलोळेत्वा तेनस्स सकलसरीरं मक्खेत्वा तं काकं पच्छियं खिपि । सो अधिमत्तवेदनाभिभूतो तित्तिणायन्तो निपज्जि । बोधिसत्तो सायं आगत्वा तं व्यसनप्पत्तं दिस्वा लोल काक ! मम वचनं अक्त्वा तव लोभं निस्साय महादुक्खं पत्तोसीति वत्वा इमं गाथमाह—

यो अत्थकामस्स हितानुकम्पिनो ओवज्जमानो न करोति सासनं ।

कपोतकस्स वचनं अक्त्वा अमित्तहत्थत्थगतोव सेतीति ॥

तत्थ कपोतकस्स वचनं अक्त्वाति पारापतस्स हितानुसासनिं वचनं अक्त्वा अमित्तहत्थत्थगतो व सेतीति अमित्तानं अनत्थकारकानं दुक्खूप्पादकपुगलानं हत्थपथं गतो । अयं काको विय पुगलो महन्तं व्यसनं पत्वा अनुसोचमानो सेतीति ।

बोधिसत्तो इमं गाथं वत्वा इदानि मया च एतस्मिं ठाने न सक्का वसितुन्ति अञ्जात्थ गतो । काको पि तत्थेव जीवितक्खयं पत्तो । अथ नं भत्तकारको सद्धि पच्छिया गहेत्वा संकारट्ठाने छड्डेसि । [२११]

सत्थापि न त्वं भिक्खु ! इदानीव लोलो पुब्बेपि लोलो येव तञ्च पन ते लोलं निस्साय पण्डितापि सकम्हा आवासा पग्गिहीना ति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने सो भिक्खू अनागामिफलं पत्तो । सत्था अनुमन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेमि । तदा काको लोलभिक्खु अहोसि । पारापतो पन अहमेवाति ।

कपोतजातकं ।

३. वेलुकजातकं

यो अत्थकामस्साति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अञ्जातरं दुब्बचभिक्षुं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

तं हि भगवा सच्चं किर त्वं भिक्षु! दुब्बचोति पुच्छित्वा सच्चं भन्तेति वुत्ते न त्वं भिक्षु । इदानीव दुब्बचो पुब्बेपि दुब्बचो येव दुब्बचत्ता येव पण्डितानं वचनं अक्त्वा सप्पमुखे जीवितक्खयं पत्तोसीति वत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो कासिरट्ठे महाभोगकुले निव्वत्तो । विञ्जुतं पत्वा कामेसु आदीनवं नेक्खम्मे चानिसंसं दिस्वा कामे पहाय हिमवन्तं पविसित्वा इसिपव्वज्जं पव्वजित्वा कसिण-परिकम्मं कत्वा पञ्च अभिञ्जा अट्ठ समापत्तियो उप्पादेत्वा ज्ञानमुखेन वीतिनामेत्तो अपरभागे महापरिवारो पञ्चहि तापससतेहि परिवृतो गणस्स सत्था हुत्वा विहासि ।

अथेको आसिविसपोतको अतनो धम्मताय चरन्तो अञ्जतरस्स तापसस्स अस्समपदं पत्तो । तापसो तस्मिं पुत्तसिनेहं उप्पादेत्वा तं एकस्मिं वेळुपव्वे सयापेत्वा पटिजग्गति । तस्स वेळुपव्वे सयनतो वेळुको त्वेव नामं अकंसु । तं पुत्तसिनेहेन पटिजग्गनतो तापसस्स वेळुकपितात्वेव नामं अकंसु । तदा बोधिसत्तो एको किर तापसो आसीविसं पटिजग्गतीति सुत्वा पक्कोसित्वा सच्चं किर त्वं आसिविसं जग्गसीति पुच्छित्वा सच्चन्ति वुत्ते आसिविसेन सद्धिं विस्सामो नाम नत्थि, मा एवं जग्गसीति आह । तापसो आह-सो मे आचरिय ! पुत्तो नाहं तेन विना वत्तितुं सक्खिस्सामीति ।

तेनहि एतस्सेव सन्तिका जीवितक्खयं पापुणिस्ससीति ।

तापसो बोधिसत्तस्स वचनं न गण्हि, आसिविसम्पि जहितुं नासक्खि ।

ततो कतिपाहृच्चयेनेव सब्बे तापसा फलाफलत्थाय गत्वा गतट्ठाने फलाफलस्स सुलभभावं दिस्वा द्वे तयो दिवसे तत्थेव वसिंसु । वेळुकपितापि तेहि सद्धिं गच्छन्तो [२१२] आसीविसं वेळुपव्वे येव सयापेवा पिदहित्वा गतो । सो पुन तापसेहि सद्धिं द्वीहीतोहृच्चयेन आगत्वा वेळुकस्स गोचरं दस्सामीति वेळुपव्वं उग्घाटेत्वा -एहि पुत्त ! छातकोसीति हत्थं पसारेसि ।

आमिविसो द्वीहं तीहं निराहारताय कुञ्जित्वा पमागितहत्थे डसित्वा तापसं तत्थेव जीवितक्खयं पापेत्वा अरञ्जं पाविसि । तापसा नं दिस्वा बोधिसत्तस्स आरोचेसुं । बोधिसत्तो तस्स सरीरकिच्चं कारेत्वा इसिगणस्स मज्जे निसीदित्वा इसीनं ओवादवसेन इमं गाथमाह-

यो अत्थकामस्स हितानुकम्पिनो ओवज्जमानो न करोति सासनं ।

एवं सो निहतो सेति वेळुकस्स तथा पिताति ॥

तत्थ एवं सो निहतो सेतीति यो हि इसीनं ओवादं न गण्हति सो यथा एस तापसो आसीविसमुखे पूतिभावं पत्वा निहतो सेति एवं महाविनासं पत्वा निहतो सेतीति अत्थो । एवं बोधिसत्तो इसिगणं ओवदित्वा चत्तारो ब्रह्मविहारे भावेत्वा आयुपरियोसाने ब्रह्मलोके उप्पज्जि ।

सत्थापि न त्वं भिक्षु ! इदानीव दुब्बचो पुब्बेपि दुब्बचो येव । दुब्बचभावेनेव च आसीविसमुखे पूतिभावं पत्तोति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जानकं ममोधानेमि । तदा वेळुकपिता दुब्बचभिक्षु अहोसि, सेसपरिमा बुद्धपरिमा, गणसत्था पन अहमेवाति ।

वेळुकजातकं

४. मकसजातकं

सेय्यो अमित्तोति इदं सत्था मग्घेसु चारिकं चरमानो अञ्जातरस्मि गामके बालगामिकमनुस्से आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

तथागतो किर एकस्मिं समये सावत्थितो मग्घरट्ठं गत्वा तत्थ चारिकं चरमानो अञ्जातरं गामकं सम्पापुणि । सो च गामको येभुय्येन अन्धबालमनुस्सेहि येव उस्सन्नो । तत्थेकदिवसं ते अन्धबालमनुस्सा सन्नि-
पतित्वा—भो ! अम्हे अरञ्जं पविसित्वा कम्मं करोन्ते मकसा खादन्ति तप्पच्चया अम्हाकं कम्मच्छेदो
होति । सव्वेष धनूनि चैव आवुधानि च आदाय गत्वा मकसेहि सद्धिं युज्झित्वा सब्बमकसे विज्झित्वा
छिन्दित्वा च मारेमाति मन्तयित्वा अरञ्जं गत्वा मकसे विज्झिस्सामाति अञ्जामञ्जं विज्झित्वा च पहरित्वा
च दुक्खप्पत्ता आगत्वा अन्तोगामे च गाममज्जे च गामद्वारे च निपज्जिमु । [२१३]

सत्था भिक्खुसंघपरिवृतो तं गामं पिण्डाय पाविसि । अवसेसा पण्डितमनुस्सा भगवन्तं दिस्वा
गामद्वारे मण्डपं कत्वा बुद्धप्मुखस्स भिक्खुसंखस्स महादानं दत्वा सत्थारं वन्दित्वा निसीदिसु । सत्था तस्मिं तस्मिं
ठाने पतितमनुस्से दिस्वा ते उपासके पुच्छि-बहू इमे गिलानमनुस्सा कि एतेहि कतन्ति ?

भन्ते ! एते मनुस्सा मकसयुद्धं करिस्सामाति गत्वा अञ्जामञ्जं विज्झित्वा सयं गिलाना जाताति ।

सत्था—न इदानेव अन्धबालमनुस्सा मकसे पहरिस्सामाति अत्तानं पहरन्ति पुब्बेपि मकसं पहरिस्सा-
माति परं पहरणकमनुस्सा अहेसुं येवाति क्त्वा तेहि मनुस्सेहि याचितो अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो वणिज्जाय जीविकं कप्पेति । तदा कासिरट्ठे
एकस्मिं पच्चन्तगामे बहू वड्ढकी वसन्ति । तत्थेको खल्लातवड्ढकी^१ रुक्खं तच्छति । अथस्स एको मकसो तम्ब-
लोहथालकपिट्ठिसदिसे सीसे निसीदित्वा सत्तिया पहरन्तो विय सीसं मुखतुण्डकेन विज्झि । सो अत्तनो सन्तिके
निसिन्नं पुत्तं आह—तात ! मय्हं सीसं मकसो सत्तिया पहरन्तो विय विज्झति निवारेहि नन्ति ।

तात ! अधिवासेहि एकप्पहारेन तं मारेस्सामीति ।

तस्मिं समये बोधिसत्तो पि अत्तनो भण्डं परियेसमानो तं गामं पत्वा तस्स वड्ढकीसालाय निसिन्नो
होति । अथ सो वड्ढकी पुत्तं आह—तात ! इमं मकसं वारेहीति । सो वारेस्सामि ताताति तिखिणं महाफरसुं
उक्खिपित्वा पितु पिट्ठिपस्से ठत्वा मकसं पहरिस्सामीति पितुमत्थकं द्विधा भिन्दि । वड्ढकी तत्थेव जीवितक्खयं
पत्तो । बोधिसत्तो तस्स तं कम्मं दिस्वा पच्चामित्तोपि पण्डितोव सेय्यो । सो हि दण्डभयेनापि मनुस्से न मारे-
स्सतीति चिन्तेत्वा इमं गाथमाह—

सेय्यो अमित्तो मतिया उपेतो न त्वेव मित्तो मतिविप्पहीनो ।

मकसं वधिस्सन्ति हि एलमूगो पुत्तो पितु अग्भिदा उत्तमंगन्ति ॥

तत्थ सेय्योति पवरो उत्तमो । मतिया उपेतोति पञ्जाय समन्नागतो । एलमुगोति लालामुखो^२ वालो ।

पुत्तो पितु अग्भिदा उत्तमंगन्ति अत्तनो बालताय पुत्तोपि हुत्वा पितु उत्तमंगं मत्थकं मकसं मारिस्सामीति द्विधा
भिन्दि । तस्मा बालमित्तो पण्डितो अमित्तोव सेय्योति । इमं गाथं वत्वा बोधिसत्तो उट्ठाय यथाकम्मं गतो
वड्ढकिस्सापि जातका सरीरकिच्चं अकंसु ।

सत्था एवं उपासका ! पुब्बेपि मकसं पहरिस्सामाति परं पहरणकमनुस्सा अहेसुं येवाति । इमं
धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समीधानेसि । तदा गाथं वत्वा पक्कन्तो पण्डितवाणिजो
पन अहमेव अहोसिन्ति ।

मकसजातकं [२१४]

५. रोहिणीजातकं

सेय्यो अमिन्नोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं अनाथपिण्डकसेट्ठिनो दासिं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

अनाथपिण्डकस्स किर एका रोहिणी नाम दासी अहोसि । तस्सा वीहिपहरणट्ठाने आगन्त्वा महल्लिका माता निपज्जि । तं मक्खिका परिवारेत्वा सूचिया विज्झमाना विय खादन्ति । सा धीतरं आह—
अम्म ! मक्खिका मं खादन्ति । एता वारेहीति ।

सा वारेस्सामि अम्माति मुसलं उक्खिपित्वा मातुसरीरे मक्खिका मारेत्वा विनासं पापेस्सामीति मातरं मुसलेन पहरित्वा जीवितक्खयं पापेसि । नं दिस्वा माता मे मताति रोदितुं आरभि । तं पवुत्तिं सेट्ठिस्स आरोचेमुं । सेट्ठी तस्सा सरीरकिच्चं कारेत्वा विहारं गन्त्वा सब्बं तं पवुत्तिं सत्थु आरोचेसि । सत्था—नखो गहपति ! एसा मातुसरीरे मक्खिका मारेमीति इदानेव मूसलेन पहरित्वा मातरं मारेसि पुब्बेपि मारेसि येवाति वत्ता तेन याचितो अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो सेट्ठिकुले निब्बत्तित्वा पितु अच्चयेन सेट्ठिट्ठानं पापुणि । तस्सापि रोहिणी नाम दासी अहोसि । सापि अत्तनो वीहिपहरणट्ठानं आगन्त्वा निपन्नाय १ मातरा मक्खिका मे अम्म वारेहीति वुत्ता एवमेवं मुसलेन पहरित्वा मातरं जीवितक्खयं पापेत्वा रोदितुं आरभि । बोधिसत्तो तं पवुत्तिं सुत्वा अमिन्नोपि हि इमस्मिं लोके पण्डितो व सेय्योति चिन्तेत्वा इमं गाथमाह—

सेय्यो अमिन्नो मेधावी यञ्चे बालानुकम्पको ।

पस्स रोहिणिकं जम्म मातरं हन्त्वान सोचतीति ॥

तत्थ मेधावीति पण्डितो जाणी विभावी । यञ्चे बालानुकम्पकोति एत्थ एत्थ यन्ति लिगविपत्तासो कतो । चेति नामत्थे निपातो । यो नाम बालो अनुकम्पको ततो सतगुणेन सहस्सगुणेन पण्डितो अमिन्नो होन्तोपि सेय्यो येवाति अत्थो । अथवा—यन्ति पटिसेधनत्थे निपातो नो चे बालानुकम्पकोति अत्थो । जम्मिन्ति लामिकं दन्धं । मातरं हन्त्वा सोचतीति मक्खिका मारेस्सामीति मातरं हन्त्वान इदानी अयं बाला—सयमेव रोदति परिदेवति । इमिना कारणेन इमस्मिं लोके अमिन्नोपि पण्डितो व सेय्योति । बोधिसत्तो पण्डितं पसंसन्तो इमाय गाथाय धम्मं देसेसि ।

सत्था न खो गहपति ! एसा इदानेव मक्खिका मारेस्सामीति मातरं घातेसि पुब्बेपि घातेसि येवाति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धिं घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा माता येव माता अहोसि, धीता येव धीता, महासेट्ठी पन अहमेव अहोसिति ।

रोहिणीजातकं [२१५]

६, आरामदूसकजातकं

न वे अनत्यकुसलेनाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अञ्जतरस्मिं कोसलगामके उय्यानदूसकं आरम्भ कथेसि ।

पच्छपन्नवत्थु

सत्था किर कोसलेसु चारिकं चरमानो अञ्जतरं गामकं सम्पापुणि । तत्थेको कुटुम्बको तथागतं निमन्तेत्वा अत्तनो उय्याने निसीदापेत्वा बुद्धपमुखस्स संघस्स दानं दत्त्वा—भन्ते ! यथाहचिया इमस्मिं उय्याने विचरथाति आह ।

भिक्षू उट्ठाय उय्यानपालं गहेत्वा उय्याने विचरन्ता एकं अंगणट्ठानं दिस्वा उय्यानपालं पुच्छिसु—उपासक ! इमं उय्यानं अञ्जत्थ सन्दच्छायं^१ इमस्मिं पन ठाने कोचि रुक्खो वा गच्छो वा नत्थि, किन्तु खो कारणंति ?

भन्ते ! इमस्स उय्यानस्स रोपनकाले एको गामदारको उदकं सिञ्चिन्तो इमस्मिं ठाने रुक्खपोतके उम्मूलं कत्वा मूलप्पमाणेन उदकं सिञ्चि । ते रुक्खपोतका मिलायित्वा मता । इमिना कारणेन इदं ठानं अंगणं जातन्ति । भिक्षू सत्थारं उपसंकमित्वा एतमत्थं आरोचेसुं । सत्था न भिक्षवे ! सो गामदारको इदानेव आरामदूसको पुब्बेपि आरामदूसको येवाति वत्ता अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बाराणसियं नक्खत्तं घोसयिसु । नक्खत्तभेरिसद्सवण-कालतो पट्ठाय सकलनगरवासिनो नक्खत्तनिस्सितका हुत्वा विचरन्ति । तदा रज्जो उय्याने बहू मक्कटा वसन्ति । उय्यानपालो चिन्तेसि—नगरे नक्खत्तं घुट्ठं । इमे वानरे उदकं सिञ्चथाति वत्ता अहं नक्खत्तं कीळिस्सामीति जेट्ठकवानरं उपसंकमित्वा—सम्म वानरजेट्ठक ! इमं उय्यानं तुम्हाकम्पि बहूपकारं, तुम्हे एत्थ पुप्फफलपल्लवानि खादथ । नगरे नक्खत्तं घुट्ठं, अहं नक्खत्तं कीळिस्सामि । यावाहं न आगच्छामि ताव इमस्मिं उय्याने रुक्खपोतकेसु उदकं सिञ्चितुं सक्खिस्सथाति पुच्छि ।

साधु सिञ्चिस्सामीति ।

तेनहि अप्पमत्ता होथाति उदकं सिञ्चनत्थाय तेसं चम्मकूटे^२ चैव दारुकूटे च दत्त्वा गतो ।

वानरा चम्मकूटे चैव दारुकूटे च गहेत्वा रुक्खपोतकेसु उदकं सिञ्चन्ति । अथ ने वानरजेट्ठको एवमाह—भो वानरा ! उदकं नाम रक्खितत्वं, तुम्हे रुक्खपोतकेसु उदकं सिञ्चन्ता उप्पाटेत्वा उप्पाटेत्वा मूलं ओलोकेत्वा गम्भीरगतेसु मूलेसु बहुं उदकं सिञ्चथ, अगम्भीरगतेसु अप्पं । पच्छा अम्हाकं उदकं दुल्लभं भविस्सतीति ।

ते साधूति सम्पटिच्छित्वा तथा अकंसु । तस्मिं समय एको पण्डितपुरिसो राजुय्याने ते वानरे तथा करोन्ते दिस्वा एवमाह—भो वानरा ! कस्मा तुम्हे रुक्खपोतके उप्पाटेत्वा उप्पाटेत्वा मूलप्पमाणेन उदकं सिञ्चथाति ? ते एवं नो वानरजेट्ठको ओवदतीति आहंसु । सो तं वचनं सुत्वा—अहो वत भो ! बाला अपण्डिता अत्थं करिस्सामाति अनत्थमेव करोन्तीति चिन्तेत्वा इमं गाथमाह—[२१६]

न वे अनत्यकुसलेन अत्थचरिया सुखावहा ।

हापेति अत्थं दुग्धेधो कपि आरामिको यथाति ॥

तत्थ वेति निपातमत्तं । अनत्थकुसलेनाति अनत्थे अनायतने कुसलेन अत्थे आयतने कारणे अकुस-
लेन चाति अत्थो । अत्थचरियाति वड्ढिकिरिया । सुखावहाति एवरूपेन अनत्थकुसलेन कायिकचेतसिकसुख-
संखातस्स अत्थस्स चरिया न सुखावहा, न सक्का आवहितुत्ति अत्थो । किं कारणा ? एकन्तेनेव हि हापेति अत्थं
दुम्मेधोति बालपुग्गलो अत्थं करिस्सामीति अत्थं हापेत्वा अनत्थमेव करोति । कपि आरामिको यथाति यथा
आरामे नियुत्तो आरामरक्खणको मक्कटो अत्थं करिस्सामीति अनत्थमेव करोति । एवं यो कोचि अनत्थकुसलो
तेन न सक्का अत्थचरियं आवहितुं । सो तञ्जेव^१ अत्थं हापेति येवाति ।

एवं सो पण्डितपुरिसो इमाय गाथाय वानरजेट्ठकं गरहित्वा अत्तनो परिसं आदाय उय्याना निक्ख-
मि । सत्था न भिक्खवे ! एस गामदारको इदानेव आरामदूसको पुब्बेपि आरामदूसको येवाति वत्वा इमं धम्म-
देसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा वानरजेट्ठको आरामदूसकगामदारको अहोसि ।
पण्डितपुरिसो पन अहमेवाति ।

आरामदूसकजातक ।

७. वारुणिजातकं

न वे अनत्थकुसलेनाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो वारुणीदूसकं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चुपन्नवत्थु

अनाथपिण्डकस्स किर सहायो एको वारुणिवाणिजो तिखिणं वारुणिं योजेत्वा हिरञ्जासुवण्णा-
दीनि गहेत्वा विक्किणन्तो महाजने सन्निपतिते तात ! त्वं दातब्बमूलं गहेत्वा वारुणिं देहिति अन्तेवासिकं
आणापेत्वा सयं नहायितुं अगमासि । अन्तेवासिको महाजनस्स वारुणिं देन्तो मनुस्से अन्तरन्तरा लोणसक्खरं
आहरापेत्वा खादन्ते दिस्वा सुरा अलोणिका भविस्सति लोणमेत्थ पक्खिपिस्सामीति सुराचाटियं नाळिमत्तं
लोणं पक्खिपित्वा तेसं सुरं अदासि । ते मुखं पूरेत्वा छड्डेत्वा—किं ते कतन्ति पुच्छिमु ।

तुम्हे सुरं पिपित्वा लोणं आहरापेन्तो दिस्वा लोणेन योजेसिन्ति ।

एवरूपं नाम मनापं वारुणिं नासेसि बालाति तं गरहित्वा उट्ठायुट्ठाय पक्कन्ता ।

वारुणिवाणिजो आगन्ता एकम्पि अदिस्वा—वारुणिपायका कहं गताति पुच्छि ।

सो तमत्थं आरोचेसि ।

अथ नं आचरियो—बाल ! एवरूपा नाम ते सुरा नासितीति गरहित्वा गन्त्वा इमं कारणं अनाथपि-
ण्डकस्स आरोचेसि ।

अनाथपिण्डको अत्थि नो इदं कथापारभतन्ति जेतवनं गन्त्वा [२१७] सत्थारं वन्दित्वा एतमत्थं
आरोचेसि ।

सत्था—न एस गहपति ! इदानेव वारुणीदूसको पुब्बेपि वारुणीदूसको येवाति वत्वा तेन याचितो
अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो बाराणसियं सेट्ठी अहोसि । तं उपनिस्साय
एको वारुणीवाणिजो जीवति । सो तिखिणं सुरं योजेत्वा इमं विक्किणाहीति अन्तेवासिकं वत्वा नहायितुं गतो ।
अन्तेवासिको तस्मिं गतमत्ते येव सुराय लोणं पक्खिपित्वा इमिनाव नयेन सुरं विनासेसि । अथस्स आचरियो
आगन्त्वा तं कारणं जत्वा सेट्ठिस्स आरोचेसि । सेट्ठि अनत्थकुसला नाम बाला अत्थं करिस्सामाति
अनत्थमेव करोन्तीति वत्वा इमं गाथमाह—

न वे अनत्थकुसलेन अत्थचरिया सुखवहा ।

हापेति अत्थं दुम्मेधो कोण्डञ्जो वारुणिं यथाति ॥

तत्थ कोण्डञ्जो वारुणिं यथाति यथा अयं कोण्डञ्जनामको अन्तेवासिको अत्थं करिस्सामीति
लोणं पक्खिपित्वा वारुणिं हापेसि परिहापेसि विनासेसि एवं सब्बोपि अनत्थकुसलो अत्थं हापेतीति । बोधिसत्तो
इमाय गाथाय धम्मं देसेसि ।

सत्थापि न एस गहपति ! इदानेव वारुणीदूसको पुब्बेपि वारुणीदूसको येवाति वत्वा अनुसन्धिं घटेत्वा
जातकं समोधानेसि । तदा वारुणीदूसको इदानिपि वारुणीदूसको अहोसि । बाराणसीसेट्ठि पन अहमेवाति ।

वारुणिजातकं

८. वेदबभजातकं

अनुपायेन यो अत्यन्ति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो दुब्वचं भिक्खुं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

तं हि भिक्खुं सत्या न त्वं भिक्खु ! इदानेव दुब्वचो पुब्बेपि दुब्वचो येव । तेनेव च कारणेन पण्डितान वचनं अक्त्वा तिण्हेन असिना द्विधा क्त्वा छिन्नो हुत्वा मग्गे निपतित्थ । तं च एककं निस्साय पुरिससहस्सं जीवितक्खयं पत्तन्ति वत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते एकस्मिं गामके अञ्जातरो ब्राह्मणो वेदबभं^१ नाम मन्तं जानाति । सो किर मन्तो अनग्घो महारहो नक्खत्तयोगे लद्धे तं मन्तं परिवत्तेत्वा आकासे उल्लोकिते आकासतो सत्तरतनवस्सं वस्साति । तदा बोधिसत्तो तस्स ब्राह्मणस्स सन्तिके सिप्पं उग्गण्हाति । अथेकदिवसं ब्राह्मणो बोधिसत्तं आदाय कोन चिदेव करणीयेन अत्तनो गामा निक्खमित्वा [२१८] चेतिरट्ठं^२ अगमासि । अन्तरामग्गे च एकस्मिं अरञ्जट्ठाने पञ्चसता पेसनकचोरा नामपन्थघातं करोन्ति । ते बोधिसत्तं च वेदबभब्राह्मणं च गण्हिंसु ।

कस्मा पनेते पेसनकचोराति वुच्चन्ति ? ते किर द्वे जने गहेत्वा एकं धनाहरणत्थाय पेसेन्ति तस्मा पेसनकचोरातेव वुच्चन्ति । तेपि च एकस्मिं अरञ्जट्ठाने ठिता पितापुत्ते गहेत्वा पितरं त्वं अम्हाकं धनं आहरित्वा पुत्तं गहेत्वा याहीति वदन्ति । एतेनुपायेन मातुधीतरो गहेत्वा मातरं विस्सज्जेन्ति । जेट्ठकणिट्ठे गहेत्वा जेट्ठकभातिकं विस्सज्जेन्ति । आचरियन्तेवामिके गहेत्वा अन्तेवासिकं विस्सज्जेन्ति । ते तस्मिं काले वेदबभब्राह्मणं गहेत्वा बोधिसत्तं विस्सज्जेसु ।

बोधिसत्तो आचरियं वन्दित्वा-अहमेकाहद्वीहच्चयेन आगमिस्सामि तुम्हे मा भायित्थ, अपि च खो पन मम वचनं करोथ । अज्ज धनवस्सापनकनक्खत्तयोगो भविस्सति । मा खो तुम्हे दुक्खं असहन्ता मन्तं परिवत्तेत्वा धनं वस्सापयित्थ । सचे वस्सापेस्सथ तुम्हे विनासं पापुणिस्सथ इमे च पञ्चसता चोराति एवं आचरियं ओवदित्वा धनत्थाय अगमासि ।

चोरापि सुरिये अत्थंगते ब्राह्मणं बन्धित्वा निपज्जापेसु । तं खणञ्जेव पाचीनलोकधातुतो परिपुण्णं चन्दमण्डलं उट्ठहि । ब्राह्मणो नक्खत्तं ओलोकेन्तो, धनवस्सापनकनक्खत्तयोगो लद्धो, किम्मे दुक्खेन अनुभूतेन मन्तं परिवत्तेत्वा रतनवस्सं वस्सापेत्वा चोरानं धनं दत्त्वा यथामुखं गमिस्सामीति चिन्तेत्वा, चोरे आमन्तेसि-भो चोरा ! तुम्हे मं किमत्थाय गण्हित्थाति ?

धनत्थाय अय्याति ।

सचे वो धनेन अत्थो खिप्पं मं बन्धना मोचेत्वा सीसं नहापेत्वा अहतवत्थाति अच्छादेत्वा गन्धेहि विलिम्पापेत्वा पुप्फानि पिलन्धापेत्वा ठपेथाति ।

चोरा तस्स कथं सुत्वा तथा अकंसु । ब्राह्मणो नक्खत्तयोगं जत्वा मन्तं परिवत्तेत्वा आकासं उल्लोकेसि । तावदेव आकासा रतनानि पतिसु । चोरा तं धनं संकड्ढित्वा उत्तरासंगेसु भण्डिकं क्त्वा पायिसु । ब्राह्मणोपि तेसं पच्छतोव अगमासि ।

१. स्या०-वेदबभ । २. सी०-चेतिरट्ठं ।

अथ ते चोरे अञ्जे पञ्चसता चोरा गण्हसु । किमत्थं अम्हे गण्हयाति च वुत्ते धनत्थायाति आहंसु ।
यदि वो धनेन अत्थो एतं ब्राह्मणं गण्हथ एसो अकासं उल्लोकेत्वा धनं वस्सापेसि । अम्हाकम्पेत्तं
एतेनेव दिप्पन्ति ।

चोरा चोरे विस्सज्जेत्वा अम्हाकम्पि धनं देहीति ब्राह्मणं गण्हसु ।

ब्राह्मणो—अहं तुम्हाकं धनं ददेय्यं धनवस्सापनकनक्खत्तयोगो पन इतो संवच्छरमत्थके भविस्सति ।
यदि वो धनेन अत्थो अधिवासेथ तदा धनवस्सं वस्सापेस्सामीति आह ।

चोरा कुञ्जित्वा—अम्हो दुट्ठब्राह्मण ! [२१९] अञ्जेसं इदानीं धनं वस्सापेत्वा अम्हे अञ्जं
संवच्छरं अधिवासापेसीति—तिण्हेन असिना ब्राह्मणं द्विधा छिन्दित्वा मग्गे छड्ढेत्वा वेगेन अनुबन्धित्वा तेहि
चोरेहि सद्धिं युञ्जित्वा ते सब्बेपि मारेत्वा धनं आदाय पुन द्वे कोट्ठासा हुत्वा अञ्जमञ्जं युञ्जित्वा अड्ढ-
तियानि पुरिससत्तानि घातेत्वा एतेन उपायेन याव द्वे जना अवसिट्ठा अहेसुं ताव अञ्जमञ्जं घातयिषु ।

एवं तं पुरिससहस्सं विनासं पत्तं । ते पन द्वे जना उपायेन तं धनं आहरित्वा एकस्मिं गामसमीपे
गहनट्ठाने धनं पटिच्छादेत्वा एको खग्गं गहेत्वा रक्खन्तो निसीदि । एको तण्डुले गहेत्वा भत्तं पचापेतुं गामं
पाविसि । लोभो च नामेस विनासमूलमेवाति । धनसन्तिके निसिन्धो चिन्तेसि—तस्मिं आगते इमं धनं द्वे कोट्-
ठासा^१ भविस्सन्ति यन्नूनाहं तं आगतमत्तमेव खग्गेन पहरित्वा घातेय्यन्ति । सो खग्गं सन्नयित्वा तस्स आगमनं
ओलोकेन्तो निसीदि ।

इतरोपि चिन्तेसि—त धनं द्वे कोट्ठासा भविस्सन्ति यन्नूनाहं भत्ते विसं पक्खित्वा तं पुरिसं
भोजेत्वा जीवितक्खयं पापेत्वा एककोव धनं गण्हेय्यन्ति । सो निट्ठिते भत्ते सयं भुञ्जित्वा सेसके विसं पक्खि-
पित्वा तं आदाय तत्थ अगमासि ।

तं भत्तं ओतारेत्वा ठितमत्तमेव इतरो खग्गेन द्विधा तं पटिच्छन्ने ठाने छड्ढेत्वा तं च भत्तं भुञ्जित्वा
सयम्पि तत्थेव जीवितक्खयं पापुणि ।

एवं तं धनं निस्साय सब्बेपि विनासं पापुणिषु । बोधिसत्तोपि खो एकाहद्वीहच्चयेन धनं आदाय
आगतो । तस्मिं ठाने आचरियं अदिस्वा विप्पकिण्णं पन धनं दिस्वा आचरियेन मम वचनं अक्त्वा धनं वस्सापितं
भविस्सति सब्बेहि विनासं पत्तेहि भवितव्वन्ति महामग्गेन पायासि । गच्छन्तो आचरियं महामग्गे द्विधा छिन्नं
दिस्वा मम वचनं अक्त्वा मतोति दारुणि उद्धरित्वा चित्तकं कत्वा आचरियं ज्ञापेत्वा वनपुप्फेहि पूजेत्वा
पुरतो गच्छन्तो जीवितक्खयं पत्ते पञ्चसते पुरतो अड्ढतियसतेति अनुक्कमेन अवसाने द्वे जने जीवितक्खयं
पत्तं दिस्वा चिन्तेसि—इमं द्वीहि ऊनं पुरिससहस्सं विनासं पत्तं अञ्जेहि द्वीहि चोरेहि भवितव्वं । तेपि सन्थम्भितुं
न सक्खिस्सति कहन्नुखो ते गताति गच्छन्तो तेसं धनं आदाय गहणट्ठानपविट्ठमग्गं दिस्वा गच्छन्तो भण्डक-
बद्धस्स धनस्स रासि दिस्वा एकं भत्तपाति अवत्थरित्वा मतं अट्ठस । ततो इदं नाम तेहि कत्तं भविस्सतीति सब्बं
जत्वा कहन्नुखो सो पुरिसोति विचिनन्तो तम्पि पटिच्छन्ने ठाने अपविट्ठं^२ दिस्वा अम्हाकमाचरियो मम वचनं
अक्त्वा अत्तनो दुब्बचभावेन [२२०] अत्तनापि विनासं पत्तो अपरम्पि तेन पुरिससहस्सं विनासितं अनुपायेन
बत अकारणेन अत्तनो वुड्ढिं पत्थयमाना^३ अम्हाकमाचरियो विय महाविनासमेव पापुणिस्सन्तीति चिन्तेत्वा
इमं गाथमाह—

अनुपायेन यो अत्थं इच्छति सो विहज्जति ।

चेता हनिस्सु वेदवभं सब्बे ते व्यसनमज्झमूति ॥

तत्थ सो विहज्जतीति सो अनुपायेन अत्तनो अत्थं वुड्ढिं सुखं इच्छामीति अकाले वायामं करोन्तो

पुगलो विहञ्जाति किलमति महाविनासं पापुणाति । चेताति चेतियरट्ठवासिनो चोरा । हनिंस्सु वेदभन्ति वेदभमन्तवसेन वेदभोति लद्धनामं ब्राह्मणं हनिंस्सु । सब्बे ते व्यसनमज्झगूति ते पि च सब्बे अनवसेसा अञ्ज-मञ्जं घातयमाना व्यसनं अधिगच्छिंस्सु पटिलभिसूति ।

एवं बोधिसत्तो—यथा अम्हाकं आचरियो अनुपायेन अट्ठाने परक्कमं करोन्तो धनं वस्सापेत्वा अत्तना जीवितक्खयं पत्तो अञ्जेसञ्च पञ्चन्नम्पि जनसतानं विनासप्पच्चयो जातो । एवमेव यो अञ्जोपि अनुपायेन अत्तनो अत्थं इच्छित्वा वायामं करिस्सति सब्बो सो अत्तना च विनस्सिस्सति परेसं च विनासप्पच्चयो भविस्सतीति—वनं उन्नादेत्वा देवतासु साधुकारं ददमानासु इमाय गाथाय धम्मं देसेत्वा तं धनं उपायेन अत्तनो गेहं आहरित्वा दानादीनि पुञ्जानि करोन्तो यावतायुक्कं ठत्वा जीवितपरियोसाने सग्गपथं पूरयमानो अगमासि ।

सत्थापि न त्वं भिक्खु ! इदानीं दुब्बचो, पुब्बेपि दुब्बचोव, दुब्बचत्ता पन महाविनासं पत्तोति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा वेदभब्राह्मणो दुब्बचभिक्खु अहोसि, अन्तेवासिको पन अहमेवाति ।

नक्खत्तजातकं

नक्खत्तं पतिमानेन्तति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अञ्जतरं आजीवकं^१ आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपक्षवत्थु

सावत्थियं किरेकं कुलधीतरं जनपदे एको कुलपुत्तो अत्तनो पुत्तस्स वारेत्वा असुकदिवसे नाम गण्हि-
स्सामीति दिवसं ठपेत्वा तस्मिं दिवसे सम्पत्ते अत्तनो कुलूपकं आजीवकं पुच्छि-भन्ते ! अञ्ज मयं एकं मंगलं
करिस्साम सोभनं नुखो नक्खत्तन्ति ?

सो अयं मं पठमं अपुच्छित्वाव दिवसं ठपेत्वा इदानीं पटिपुच्छति[२२१]होतु, सिक्खापेस्सामि नन्ति
कुज्झित्वा-अञ्ज असोभनं नक्खत्तं । मा अञ्ज मंगलं करित्थ । सचे करिस्सथ महाविनासो भविस्सतीति आह ।

तस्मिं कुले मनुस्सा तस्स सद्वित्त्वा तं दिवसं न गच्छिमु । नगरवासिनो सब्बं मंगलकिरियं कत्वा तेसं
अनागमनं दिस्वा तेहि अञ्ज दिवसो ठपितो नो च खो आगता अम्हाकम्पि बहुं खयं कम्मं गतं । किं नो तेहि ?
अम्हाकं धीतरं अञ्जस्स दस्सामीति यथाकतेनेव मंगलेन धीतरं अञ्जस्स अदंसु ।

इतरे पुनदिवसे आगन्त्वा देथ नो दारिकन्ति आहंसु ।

अथ ते सावत्थिवासिनो जनपदवासिनो नाम तुम्हे छिन्नगहपतिका पापमनुस्सा । दिवसं ठपेत्वा
अवञ्ज्राय नागता । आगतमग्गेनेव पटिगच्छथ । अम्हेहि अञ्जेसं दारिका दिस्वाति परिभासिमु । ते तेहि
सद्धिं कलहं कत्वा दारिकं अलभित्वा यथागतमग्गेनेव गता ।

तेनपि आजीवकेन तेसं मनुस्सानं मंगलन्तरायकतभावो भिक्खूनमन्तरे पाकटो जातो । ते भिक्खू
धम्मसभायं सन्निपतिता आवुसो ! आजीवकेन कुलस्स मंगलन्तरायो कतोति कथयमाना निसीदिमु ।

सत्था आगन्त्वा-काय नुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छि ?

ते-इमाय नामाति कथयिंसु ।

न भिक्खवे ! इदानेव आजीवको तस्स कुलस्स मंगलन्तरायं करोति । पुब्बेपि एस तेसं कुज्झित्वा
मंगलन्तरायं अकासि येवाति वत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते नगरवासिनो जनपदवासिनं धीतरं वारेत्वा दिवसं ठपेत्वा
अत्तनो कुलूपकं आजीवकं पुच्छिमु-भन्ते ! अञ्ज अम्हाकं एका मंगलकिरिया, सोभनं नुखो नक्खत्तन्ति ?

सो इमे अत्तनो रुचिया दिवसं ठपेत्वा इदानीं मं पुच्छन्तीति कुज्झित्वा अञ्ज नेसं मंगलन्तरायं करि-
स्सामीति चिन्तेत्वा-अञ्ज असोभनं नक्खत्तं । सचे करोथ महाविनासं पापुणिस्सथाति आह । ते तस्स सद्वित्त्वा
नागमिंसु ।

जनपदवासिनो तेसं अनागमनं वत्वा-ते अञ्ज दिवसं ठपेत्वापि न आगता किन्नो तेहीति, अञ्जे-
सं धीतरं अदंसु ।

नगरवासिनो पुनदिवसे आगन्त्वा दारिकं याचिंसु । जनपदवासिनो-तुम्हे नगरवासिनो नाम
छिन्नहिरिका गहपतिका दिवसं ठपेत्वा दारिकं न गण्हित्थ । मयं तुम्हाकं अनागमनभावेन अञ्जेसं अदम्हाति ।

मयं आजीवकं पटिपुच्छित्वा नक्खत्तं न सोभनन्ति नागता । देथ नो दारिकन्ति ।

अम्हेहि तुम्हाकं अनागमनभावेन अञ्जेसं दिन्ना । इदानीं दिन्नदारिकं कथं पुन आनेस्सामाति ।

एवं तेसु अञ्जमञ्जं कलहं करोन्तेसु एको नगरवासी पण्डितपुरिसो एकेन कम्मेन जनपदं गतो । तेसं नगरवासीनं मयं आजीवकं पुच्छित्वा नक्खत्तस्स असोभनभावेन नागताति कथेन्तानं सुत्वा—नक्खत्तेन को अत्थो ! ननु दारिकाय लद्धभावोव नक्खत्तन्ति वत्वा इमं गाथमाह—

नक्खत्तं पतिमानेन्तं^१ अत्थो बालं उपच्चगा ।

अत्थो अत्थस्स नक्खत्तं किं करिस्सन्ति तारकाति ॥

तत्थ पतिमानेन्तन्ति ओलोकेन्तं । इदानीं नक्खत्तं भविस्सति इदानीं भविस्सतीति आगमयमानं । अत्थो बालं उपच्चगाति एवं नगरवासिकं बालं दारिकटिलाभसंखातो अत्थो अतिवकन्तो । अत्थो अत्थस्स नक्खत्तन्ति यं अत्थं परियेसन्तो चरति सो पटिलद्धो अत्थोव अत्थस्स नक्खत्तं नाम । किं करिस्सन्ति तारकाति इतरे पन आकासे तारका किं करिस्सन्ति ! कतरत्थं साधेन्तीति अत्थो । नगरवासिनो कलहं कत्वा दारिकं अलभित्वाव अगमंसु ।

सत्थापि न भिक्खवे ! एस आजीवको इदानीवस्स कुलस्स मंगलन्तरायं करोति पुब्बेपि अकासि ये-वाति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा आजीवको एतरहि आजीवकोव अहोमि । तानिपि कुलानि इदानीं कुलानेव गाथं वत्वा ठितो, पण्डितपुरिसो पन अहमेवाति ।

नक्खत्तजातकं

१०. दुम्मेधजातकं

दुम्मेधानन्ति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो लोकत्यचरियं आरब्ध कथेसि । सा द्वादसनिपाते महा-
कण्हजातके आवीभवस्सति ।

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो तस्स रज्जो अगमहेसिया कुच्छिस्मिं
पटिसन्धिं गण्हि । तस्स मातु कुच्छितो निक्खन्तस्स नामगहणदिवसे ब्रह्मदत्तकुमारोति नामं अकंसु । सो सोळ-
^१सवस्सुद्देसिको हुत्वा तक्कसिलायं सिप्पं उग्गण्हित्वा तिण्णं वेदानं पारं गत्त्वा अट्ठारसन्नं विज्जट्ठानानं निप्फ-
त्तिं पापुणिं । अथस्स पिता ओपरज्जं अदासि ।

तस्मिं समये बाराणसिवासिनो देवतामंगलिका ह्योन्ति । देवतं नमस्सन्ति । बहूअजेळककुक्कुटसूक-
रादयो वधित्वा नानप्पकारेहि पुप्फगन्धेहि चैव मंसलोहितेहि च बलिकम्मं करोन्ति । बोधिसत्तो चिन्तेसि-
इदानीं सत्ता देवतामंगलिका बहुं पाणवधं करोन्ति । महाजनो येभ्य्येन अधम्मस्मियेव निविट्ठो । अहं पितु
अच्चयेन रज्जं लभित्वा एकम्पि अकिलमेत्वा उपायेनेव पाणवधं कातुं न दस्सामीति ।

सो एकदिवसं रथमभिरुह्य नगरा निक्खन्तो अद्दस एकस्मिं महन्ते वटरुक्खे महाजनं सन्निपतितं
तस्मिं रुक्खे निव्वत्तदेवताय सन्तिके पुत्तधीतुयसधनादिसु यं यं इच्छति तं तं पत्थेन्तं^२ । सो रथा [२२३]
ओरुह्य तं रुक्खं उपसंकमित्वा गन्धपुप्फेहि पूजेत्वा उदकेन अभिसेकं कत्वा रुक्खं पदक्खिणं कत्वा देवता-
मंगलिको विय हुत्वा देवतं नमस्सित्वा रथं आरुह्य नगरभैव पाविसि ।

ततो पट्ठाय इमिनाव नियामेन अन्तरन्तरे तत्थ गत्त्वा देवतामंगलिको विय पूजं करोति । सो
अपरेन समयेन पितु अच्चयेन रज्जे पतिट्ठाय चतस्सो अगतियो वज्जेत्वा दस राजधम्मे अकोपेन्तो धम्मेन
रज्जं कारेन्तो चिन्तेसि-मय्हं मनोरथो मत्थकं पत्तो । रज्जे पतिट्ठितोस्मि । यं पनाहं पुब्बे एकं अत्थं चिन्तयिं
इदानीं तं मत्थकं पापेस्सामीति । अमच्चे च ब्राह्मणगहपतिकादयो च सन्निपातापेत्वा आमन्तेसि-जानाय
भो ! मया केन कारणेन रज्जं पत्तन्ति ?

न जानाम देवाति ।

अपि वोहं असुकं नाम वटरुक्खं गन्धादीहि पूजेत्वा अज्जलिं पगहेत्वा नमस्समानो दिट्ठपुब्बोति ?
आम देवाति ।

तदाहं पत्थनं अकासिं-सच्चे रज्जं पापुणिस्सामि बलिकम्मं ते करिस्सामीति तस्सा मे देवताय
आनुभावेन इदं रज्जं लद्धं । इदानीं तस्सा बलिकम्मं करिस्सामि तुम्हे पपञ्चं अकत्वा खिप्पं देवताय बलिकम्मं
सज्जेयाति ।

किं गण्हाम देवाति ?

भो ! अहं देवताय आयाचमानो ये च मय्हं रज्जे पाणातिपातादीनि पञ्चदुस्सीलकम्मानि दस अकु-
सलकम्मपथे समादाय वत्तिस्सन्ति ते घातेत्वा अन्तवट्ठिमंसलोहितादीहि बलिकम्मं करिस्सामीति आयाचिं ।
तस्मा तुम्हे एवं भेरिं चरापेथ, अम्हाकं राजा उपराजकाले येव एवं आयाचिं सच्चाहं रज्जं पापुणिस्सामि ये मे

रज्जे दुस्सीला भविस्सन्ति ते सब्बे धातेत्वा बलिकम्मं करिस्सामीति । सो इदानीं पञ्चविधं दसविधं दुस्सीलकम्मं समादाय वत्तमानानं दुस्सीलानं सहस्सं धातापेत्वा तेसं हृदयमंसादीनि गाहापेत्वा देवताय बलिकम्मं कारेतुकामो — एवं नगरवासिनो जानन्तूति । एवञ्च पन वत्वा ये दानि इतो पट्ठाय दुस्सीलकम्मे वत्तिस्सन्ति तेसं सहस्सं धातेत्वा यञ्जं यजित्वा आयाचनतो मुच्चिस्सामीति एतमत्थं पकासेन्तो इमं गाथमाह—

दुग्धमेधानं सहस्सेन यञ्जो मे उपयाचितो ।

इवानि लो हं यजिस्सामि बहू अधम्मिको जनोति ॥

तत्थ दुग्धमेधानं सहस्सेनाति इदं कम्मं कातुं वट्ठति इदं न वहतीति अजाननभावेन दससु वा पन अकुसलकम्मपथेसु समादाय वत्तनभावेन दुट्ठा मेधा एतेसन्ति दुग्धमेधा । तेसं दुग्धमेधानं निष्पञ्जानं बालपुग्गलानं गणित्वा गहितेन सहस्सेन । यञ्जो मे उपयाचितोति मया देवतं उपसंकमित्वा एवं यजिस्सामीति यञ्जो याचितो । इवानि लो हं यजिस्सामिति सो अहं इदानीं आयाचनेन रज्जस्स पटिलद्धत्ता इदानीं यजिस्सामि किं कारणा ? इदानीहि बहू अधम्मिको जनो [२२४] तस्मा इदानीं नं गहेत्वा बलिकम्मं करिस्सामीति ।

अमच्चा बोधिसत्तस्स वचनं सुत्वा साधु देवाति द्वादसयोजनिके बाराणसीनगरे भेरिं चरापेसुं । भेरिया आणं सुत्वा एकम्पि दुस्सीलकम्मं समादाय ठितो एको पुरिसोपि नाहोसि । इति याव बोधिसत्तो रज्जं कारेसि ताव एकपुग्गलोपि पञ्चसु वा दससु वा दुस्सीलकम्मेसु एकम्पि कम्मं करोन्तो न पञ्जायित्थ । एवं बोधिसत्तो एकपुग्गलम्पि अकिलमेन्तो सकलरट्ठवासिनो सीलं रक्खापेत्वा सयम्पि दानादीनि पुञ्जानि करित्वा जीवितपरियोसाने अत्तनो परिसं आदाय देवनगरं पूरेन्तो अगमासि ।

सत्थापि न भिक्खवे ! तथागतो इदानीं लोकस्स अत्थं चरति पुब्बेपि चरि येवाति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा परिसा बुद्धपरिसा अहेसुं । बाराणसीराजा पन अहमेवाति ।

दुग्धमेधजातकं

अत्थकामवग्गो पञ्चमो पठमपण्णासको

६. आसिसवग्गवण्णना

१. महासीलवजातकं

आसिसेथेव पुरिसोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो ओस्सट्ठविरियं भिक्खुं आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

तं हि सत्था सच्चं किर त्वं भिक्खु ! ओस्सट्ठविरियोति पुच्छि । आम भन्तेति च वुत्ते-कस्मा त्वं भिक्खु ! एवरूपे निय्यानिकसासने पब्बजित्वा विरियं ओस्सज्जि ? पुब्बे पण्डिता रज्जा परिहायित्वापि अत्तनो विरिये ठत्वाव नट्ठम्पि यसं पुन उप्पादयिमुत्ति वत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो रज्जो अगमहेसिया कुच्छिस्मि निब्बत्तो । तस्स नामगहणदिवसे सीलवकुमारोति नामं अकमु । सो सोळसवस्सपदेसिकोव सब्बसिप्पेसु निप्फत्ति पत्वा अपरभागे पितु अच्चयेन रज्जे पतिट्ठितो महासीलवराजा नाम अहोसि धम्मिको धम्मराजा । सो नगरस्स चतुसु द्वारेसु चतस्सो, मज्जे एकं निवेशनद्वारे एकन्ति छ दानसालायो कारेत्वा कपणद्धिकानं दानं देति सीलं रक्खति उपोसथकम्मं करोति । खन्तिमेत्तानुदयसम्पन्नो अंके निसिन्नं पुत्तं विय सब्बसत्ते परितोसयमानो धम्मेन रज्जं कारेति । तस्सेको अमच्चो अन्तेपुरे पडुब्भित्वा^३ अपरभागे पाकटो जातो । अमच्चा रज्जो आरोचेसु ।

राजा परिगण्हन्तो अत्तना[२२५]पच्चक्खतो जत्वा तं अमच्चं पक्कोसापेत्वा-अन्धबाल! अयुत्तं ते कतं न त्वं मम विजिते वसितुं अरहसि, अत्तनो धनं च पुत्तदारे च गहेत्वा अज्जत्थयाहीति रट्ठा पब्बाजेसि ।

सो कासिरट्ठं अतिककम्म कोसलराजानं उपट्ठहन्तो अनुक्कमेन रज्जो अब्भन्तरे विस्सासिको जातो । सो एकदिवसं कोसलराजानं आह-देव ! बाराणसीरज्जं नाम निम्मक्खिकमधुपटलसदिसं राजा अतिमुदुको अप्पेनेव बलवाहनेन सक्का बाराणसीरज्जं गण्हितुन्ति ।

राजा तस्स वचनं सुत्वा बाराणसीरज्जं नाम महा अयं च अप्पेनेव बलवाहनेन सक्का गण्हितुन्ति आह । किन्नुखो पयुत्तकचोरो सियाति चिन्तेत्वा-पयुत्तकोसि मज्जेति आह ।

नाहं देव ? पयुत्तको, सच्चमेव वदामि । सचे मे न सदृहथ मनुस्से पेसेत्वा पच्चन्तगामं हनापेथ । ते मनुस्से गहेत्वा अत्तनो सन्तिकं नीते चोरानं धनं दत्वा विस्सज्जेस्सतीति ।

राजा अयं अतिविय सूरौ हुत्वा कथेति वीमंसिस्सामि तावाति-अत्तनो पुरिसे पेसेत्वा पच्चन्तगामं हनापेसि । ते चोरे गहेत्वा बाराणसीरज्जो दस्सेसु । राजा ते दिस्वा-ताता ! कस्मा गामं हनथाति पुच्छि ।

जीवितुं असक्कोन्ता देवाति ।

अथ कस्मा मम सन्तिकं न आगमित्थ ? इतो दानि पट्ठाय एवरूपं माकरित्थाति तेसं धनं दत्वा विस्सज्जेसि ।

ते गन्त्वा कोसलरज्जो तं पवुत्ति आरोचेसु । सो एत्तकेनापि गन्तुं अविशहन्तो पुन मज्जे जनपदं हनापेसि । तेपि चोरे राजा तथेव धनं दत्वा विस्सज्जेसि । सो एत्तकेनापि अगन्त्वा पुन पेसेत्वा अन्तरवीथियं विलुम्पापेसि । राजा तेसम्पि चोरानं धनं दत्वा विस्सज्जेसि येव । तदा कोसलराजा अतिविय धम्मिको राजाति जत्वा बाराणसीरज्जं गहेस्सामीति बलवाहनं आदाय निय्यासि ।

तदा पन बाराणसीरञ्जो मत्तवारणेपि अभिमुखं आगच्छन्ते अनिवत्तनधम्मा, असनियापि सीसे पतन्तिया असन्तसनसभावा सीलवमहाराजस्स रुचियासति सकलजम्बुदीपे रज्जं गहेतुं समत्था सहस्स-मत्ता अभेज्जवरसूरमहायोधा होन्ति । ते कोसलराजा आगच्छतीति सुत्वा राजानं उपसंकमित्रा-देव ! कोसलराजा किर बाराणसीरज्जं गण्हस्सामीति आगच्छति । गच्छाम मयं अम्हाकं रज्जसीमं अनोक्कन्त-मत्तमेव नं पोथेत्वा गण्हामाति वदिमु ।

ताता ! मं निस्साय अज्जेसं किलमनकिच्चं नत्थि । रज्जत्थिका रज्जं गग्गहन्तु । मा गमित्थाति निवारेसि ।

कोसलराजा रज्जसीमं अतिवकमित्रा जनपदमज्जं पाविसि । अमच्चा पुनपि राजानं उपसंकमित्रा तथेव वदिमु । राजा पुग्गिमनयेनेव निवारेमि । कोसलराजा बाहनगरेठत्वा रज्जं वा देतु युद्धं वाति सीलव[२२६] महाराजस्स सामनं पेसेसि । राजा तं सुत्वा नत्थि मया सद्धि युद्धं, रज्जं गण्हानूति पटिसासनं पेसेसि ।

पुनपि अमच्चा राजानं उपसंकमित्रा-देव ! न मयं कोसलरञ्जो नगरं पविसितुं देम, बहिनगरे येव नं पोथेत्वा गण्हामाति आहंमु ।

राजा पुरिमनयेनेव निवारेत्वा नगरद्वारानि अवापुरापेत्वा सद्धि अमच्चसहस्सेन महातले पल्लक-मज्जे निसीदि ।

कोसलराजा महत्तेन बलवाहनेन वागणंसि पाविसि । सो एकम्पि पटिसत्तुं अपस्सन्तो रञ्जो निवेमनद्वारं गत्वा अमच्चगणपरिवृतो अपारुतद्वारे निवेमने अलंकतपटियन्नं महानलं आरुह्य निसिन्नं निरप-राधं सीलवमहाराजानं सद्धि अमच्चसहस्सेन गण्हापेत्वा गच्छथ इमं राजानं अमच्चेहि पच्छाबाहं^१ गाळ्हबन्धनं बन्धित्वा आमकसुमानं नेत्वा गळप्पमाणे आवाटे खणित्वा यथा एकोपि हत्थं उक्खिपितुं न सक्कोति एवं पंसुं पक्खिपित्वा निखणथ । रत्ति सिगाला आगन्त्वा एतेसं कातव्वयुत्तकं करिस्सन्तीति आह ।

मनुस्सा चोररञ्जो आणं सुत्वा राजानं सद्धि अमच्चेहि पच्छाबाहं गाळ्हबन्धनं बन्धित्वा निक्ख-मिसु । तस्मिम्पि काले सीलवमहाराजा चोररञ्जो आघातमत्तम्पि नाकासि । तेसुपि अमच्चेसु एवं बन्धित्वा नीयमानेसु एकोपि रञ्जो वचनं भिन्दितुं समत्थो नाम नाहोमि । एवं सुविनीता किरस्स परिसा । अथ ते राजपुरिसा सामच्चं सीलवराजानं आमकसुमानं नेत्वा गळप्पमाणे आवाटे खणित्वा सीलवमहाराजानं मज्जे उभोसु पस्सेसु सेमामच्चेति एवं सब्बेपि आवाटे ओतारेत्वा पंसुं आकिरित्वा घनं आकोटेत्वा अगमंसु । सीलव-राजा अमच्चे आमन्तेत्वा चोररञ्जो उपरि कोपं अकत्वा मेत्तमेव भावेथ ताताति ओवदि ।

अथ अड्डगत्तसमये मनुस्समंसं खादिस्सामाति सिगाला^२ आगमिसु । ते दिस्वा राजा च अमच्चा च एकप्पहारेनेव सद्धमकंसु । सिगाला भीता पलायिसु । ते निवत्तित्वा ओलोकन्ता पच्छतो कस्मचि अनागमनभावं जत्वा पुन पच्छागमिसु । इतरेपि तथेव सद्धमकंसु । एवं याव नतियं पलायित्वा पुन ओलोकन्तो तेसु एकस्मापि अनागमनभावं जत्वा वज्जप्पत्ता एते भविस्सन्तीति मृग हुत्वा निवत्तित्वा पुन तेसु मद्दं करोन्तेमुपि न पलायिसु । जेट्ठकसिगालो राजानं उपगच्छि । मेसा सेमानं सन्निकं अगमंसु । उपायकुमलो राजा तस्म अत्तनो मन्तिकं आगतभावं जत्वा डसितुं ओकासं देन्तो विय गीवं उक्खिपित्वा तं गीवाय इसमानं हनुकट्टिकेन आकड्ढित्वा यन्ते पक्खिपित्वा विय गाळ्हकं गण्ह । नागबलेन रञ्जा हनुकट्टिकेन आकड्ढित्वा गीवायं दळ्हं गहितसिगालो अत्तानं मोचेतुं [२२७] असक्कोन्तो मरणभयतज्जितो महाविरवं विरविं । अब्बेससिगाला तस्म तं अट्ट-स्सरं सुत्वा एकेन पुरिमेन गहितो भविस्सतीति अमच्चे उपसंकमितुं असक्कोन्तो मरणभयतज्जिता सब्बे पला-

यिसु । रञ्जो हनुकट्टिकेन यन्ते पक्खिपित्वा विय दळ्हं कत्वा गहितसिगाले अपरापरं सञ्चरन्ते पंसु सिथिलो अहोसि । सोपि सिगालो मरणभयभीतो चतुहि पादेहि रञ्जो उपरिमभागे पंसु अपब्बूहि । राजा पंसुनो सिथिलभावं जत्वा सिगालं विस्सज्जेत्वा नागबलो थामसम्पन्नो अपरापरं संचरन्तो उभो हत्थे उक्खिपित्वा आवाटमुखवट्ठियं ओलुब्धं वातच्छिन्नवलाहको विय निक्खमित्वा ठितो अमच्चे अस्सासेत्वा पंसु वियूहित्वा सब्बे उद्धरित्वा अमच्चपरिवृतो आमकसुसाने अट्ठासि ।

तस्मिं समये मनुस्सा एकं मतमनुस्सं आमकसुसाने छड्डेन्ता द्विन्नं यक्खानं सीमन्तरिकाय छड्डेसु^१ । ते यक्खा तं मतमनुस्सं भाजेतुं असक्कोन्ता—मयं इमं भाजेतुं न सक्कोम अयं सीलवराजा धम्मिको एस नो भाजेत्वा दस्सति एतस्स सन्तिकं गच्छामाति—तं मतमनुस्सं पादे गहेत्वा आकड्डेन्ता रञ्जो सन्तिकं गत्वा—देव ! अम्हाकं इमं भाजेत्वा देहीति आहंसु ।

भो यक्खा ! अहं इमं तुम्हाकं भाजेत्वा ददेय्यं, अपरिसुद्धो पनम्हि नहायिस्सामि तावाति ।

यक्खा चोररञ्जो ठपितवासितउदकं अत्तनो आनुभावेन आहरित्वा रञ्जो नहानत्थाय अदंसु । नहात्वा ठितस्स संहरित्वा ठपिते चोररञ्जो साटके आहरित्वा अदंसु । ते निवासेत्वा ठितस्स चतुजातिगन्धसमुग्गं आहरित्वा अदंसु । गन्धे विलिम्पित्वा ठितस्स सुवण्णसमुग्गे मणितालवण्टेसु ठपितानि नानापुष्पानि आहरित्वा अदंसु । पुष्पानि पिलिन्धित्वा ठितकाले—अञ्जं किं करोमाति पुच्छिसु ।

राजा अत्तनो छातकाकारं दस्सेसि ।

ते गत्वा चोररञ्जो सम्पादितं नानगरसभोजनं आहरित्वा अदंसु । राजा नहानानुलितो^१ मण्डितपसाधितो नानगरसभोजनं भुञ्जि । यक्खा चोररञ्जो ठपितवासितपानीयं सुवण्णभिकारेनेव सुवण्णसरकेनपि सिद्धिं आहरिंसु । अथस्स पानीयं पिवित्वा मुखं विक्खालेत्वा हत्थे धोवितकाले चोररञ्जो सम्पादितं पञ्चसुगन्धिकपरिवासं^२ तम्बूलं आहरित्वा अदंसु । तं खादित्वा ठितकाले—अञ्जं किं करोमाति पुच्छिसु ।

गत्वा चोररञ्जो उस्सीसके निक्खित्तं मंगलखग्गं आहरथाति ।

ते तम्पि गत्वा आहरिंसु । राजा खग्गं गहेत्वा तं मतमनुस्सं उजुकं ठपापेत्वा मत्थकमज्जे असिना पहरित्वा द्वे कोट्ठासे कत्वा द्विन्नं यक्खानं समविभत्तमेव विभजित्वा अदासि । दत्त्वा च पन खग्गं धोवित्वा सन्नयहित्वा अट्ठासि । अथ ते यक्खा मनुस्समसं खादित्वा सुहिता हुत्वा तुट्ठचित्ता—[२२८] अञ्जं ते महाराज ! किं करोमाति पुच्छिसु ।

तेनहि तुम्हे अत्तनो आनुभावेन मं चोररञ्जो सिरिगम्भे ओतारेथ । इमे च अमच्चे अत्तनो अत्तनो गेहे पतिट्ठापेथाति ।

ते साधु देवाति सम्पटिच्छित्वा तथा अकंसु ।

तस्मिं समये चोरराजा अलंकृतसिरिगम्भे सिरिसयनपिट्ठे निपन्नो निद्रायति । राजा तस्स पमत्तस्स निद्रायन्तस्स खग्गतलेन उदरं पहरि । सो भीतो पबुज्झित्वा दीपालोकेन सीलवमहारराजानं सञ्जानित्वा सयना बुट्ठाय सति^३ उपट्ठेत्वा ठितो राजानं आह—महाराज ! एवरूपाय रत्तिया गहितारक्खे पिहितद्वारे भवने आरक्खमनुस्सेहि निरोकासे ठाने खग्गं सन्नयित्वा अलंकृतपटियत्तो कथं नाम त्वं इमं सयनपिट्ठं आगतोति ?

राजा अत्तनो आगमनाकारं सब्बं वित्थारतो कथेसि ।

तं सुत्वा चोरराजा संविग्गमानसो—महाराज ! अहं मनुस्सभूतोपि समानो तुम्हाकं गुणं न जानामि । परेसं लोहितमंखादकेहि पन कक्खळेहि फरुसेहि यक्खेहि तव गुणा ज्ञाता ! न दानाहं नरिन्द ! एवरूपे सील-

सम्पन्ने तयि दुब्भिस्सामीति-खग्गं आदाय सपथं कत्वा राजानं खमापेत्वा महासयने निपज्जापेत्वा अत्तनो खुद्-
कमञ्चके निपज्जित्वा पभाताय रत्तिया उट्ठिते मुरिये भेरिञ्चरापेत्वा सब्बसेनियो च अमच्चब्राह्मणगहपतिके
च सन्निपातापेत्वा तेसं पुरतो आकासे पुण्णचन्दं उक्खिपन्तो विय सीलवरञ्जो गुणे कथेत्वा परिसमज्जे येव
पुन राजानं खमापेत्वा रञ्जं पटिच्छापेत्वा इतो पट्ठाय तुम्हाकं उप्पन्नो चोरूपद्दवो मय्हं भारो मया गहितार-
क्खा तुम्हाकं रज्जं कारेथाति वत्वा पेसुञ्जकारस्स आणं कत्वा अत्तनो बलवाहनं आदाय सकरट्ठमेव गतो ।

सीलवमहाराजापि खो अलंकतपटियत्तो सेतच्छत्तस्स हेट्ठा सरभपादके कञ्चनपल्लंके निसिन्नो
अत्तनो सम्पत्ति ओलोकेत्वा अयं च एवरूपा सम्पत्ति अमच्चसहस्सस्स च जीवितपटिलाभो मयि विरियं अकरो-
न्ते न किञ्चि अभविस्स, विरियवलेन पनाहं नट्ठं च इमं यसं पटिलभि, अमच्चसहस्सस्स च जीवितदनं अदासि,
आसाच्छेदं वत अकत्वा विरियमेव कत्तब्बं, कतविरियस्स हि फलं नाम एवं समिज्जतीति चिन्तेत्वा उदानवसेन
इमं गाथमाह—

आसिसेथेव पुरिसो न निब्बिन्देय पण्डितो ।

पस्सामि बोहं अत्तानं यथा इच्छि तथा अहूति ॥

तत्थ आसिसेथेवाति एवाहं विरियं आरभन्तो इमम्हा दुक्खा मुञ्चिस्सामीति अत्तनो विरियबले
आसं करोथेव । न निब्बिन्देय पण्डितोति पण्डितो उपायकुसलो युत्तट्ठाने विरियं करोन्तो अहं इमस्स विरियस्स
फलं न लभिस्सामीति न उक्कड्ढेय्य, आसाच्छेदकम्मं न करेय्याति अत्थो । पस्सामि बोहं अत्तानन्ति एत्थ वोति
निपातमत्तं । अहं अज्ज अत्तानं पस्सामि । यथा इच्छि तथा अहूति अहं हि आवाटे निखातो तम्हा दुक्खा मुञ्चित्वा
पुन अत्तनो रज्जसम्पत्तिं इच्छि सो अहं इमं सम्पत्तिं पत्तं अत्तानं पस्सामि यथेवाहं पुब्बे इच्छि तथेव मे अत्ता
जातोति । एवं बोधिसत्तो अहो वत भो ! सीलसम्पन्नानं विरियफलं नाम समिज्जतीति इमाय गाथाय उदानं
उदानेत्वा यावजीवं पुञ्जानि करित्वा यथाकम्मं गतो ।

सत्थापि इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने ओस्सट्ठविरियो भिक्खु
अरहत्ते पतिट्ठासि । सत्था अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा पटुट्ठामच्चो देवदत्तो अहोसि ; अमच्च-
सहस्सं बुद्धपरिसा, सीलवमहाराजा पन अहमेवाति ।

२. चूलजनकजातकं

वायमेथेव पुरिसोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो ओस्सट्ठविरियमेव आरब्भ कथेसि । तत्थ यं वत्तब्बं तं सब्बं महाजनकजातके आवीभविस्सति । जनकराजा पन सेतच्छत्तस्स हेट्ठा निसिन्नो इमं गाथमाह—

वायमेथेव पुरिसो न निदिब्बन्धेय्य पण्डितो ।

पस्सामि वोहं अत्तानं उदका थलमुब्भतन्ति ॥

तत्थ वायमेथेवाति वायामं करोथेव । उदका थलमुब्भतन्ति उदकतो थलमुत्तिण्णं थले पतिट्ठितं अत्तानं पस्सामीति । इधापि ओस्सट्ठविरियो भिक्खु अरहत्तपत्तो । जनकराजा सम्मासम्बुद्धोव अहोसीति ।

चूलजनकजातकं

३. पुष्पपातिजातकं

तत्थ पुष्पपातियोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो विसवारुणि आरब्भ कथेसि ।

पञ्चपक्षवत्थु

एकं समयं सावत्थियं सुराधुत्ता सन्निपत्तिवा मन्तयिषु—सुरामूलं नो खीणं कहन्नु खो लभिस्सामाति ।
अथेको कक्खलधुत्तो आह—मा चिन्तयित्थ, अत्थेको उपायोति ।

कतरुपायो नामाति ?

अनाथपिण्डको अंगुलिमुट्टिका पिलन्धोत्त्वा मट्ठमाटकनिवत्थो राजुपट्ठानं गच्छति, मयं सुरा-
पातियं^१ विसञ्जीकरणभेमज्जं पक्खिपित्वा आपाणं मज्जेत्वा निमीदित्वा अनाथपिण्डकस्म आगमनकाले इतो
एहि महासेट्ठीति पक्कोमित्वा तं मुरं पायेत्वा विसञ्जीभूतस्म अंगुलिमुट्टिका च माटके च गहेत्वा सुरामूलं
करिस्सामाति ।

ते माधूति सम्पटिच्छित्वा तथा कत्वा सेट्ठिस्म आगमनकाले पटिमगं गन्त्वा—सामि ! इतो
ताव आगच्छथ अयं अम्हाकं सन्तिके अतिमनापा मृग, थोकं पिवित्वा गच्छथानि वदिमु ।

सोतापन्नो अग्रियमावको किं मुरं पिविस्सति ! अनत्थिको ममानोपि पन इमे धुत्ते पग्गिण्हिस्सामीति
तेसं आपाणभूमिं गन्त्वा तेसं किरियं ओलोकेत्वा अयं मुरा इमेहि इमिना नाम कारणेन योजिताति जत्वा इतो-
दानि पट्ठाय इमे इतो पलापेस्सामीति चिन्तेत्वा आह—अरे दट्ठधुत्ता ! तुम्हे सुरापातियं भेमज्जं पक्खिपित्वा
आगतागते पायेत्वा विसञ्जी कत्वा विळुम्पिस्सामाति आपाणमण्डलं मज्जेत्वा तिमिन्ना केवलं इमं मुरं वण्णेथ ।
एकोपि वो उक्खिपित्वा पिवितुं न उस्सहति । सचे अयं अयोजितका अस्म तुम्हे च पिवेय्याथानि ।

ते धुत्ते तज्जेत्वा ततो पलापेत्वा अत्तनो गेहं गन्त्वा धुत्तेहि कतकारणं तथागतस्म आरोचेस्सामीति
जेटवन् गन्त्वा सत्थु आरोचेमि ।

सत्था—न इदानीं ताव गहपति ! ते धुत्ता तं वञ्चेनुकामा जाता पुब्बे पन पण्डितेपि वञ्चेनुकामा
अहेमुन्ति वत्ता तेन याचितो अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीने बाराणमियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ने बोधिमन्नो बाराणसीमेट्ठि अहोमि । तदापने धुत्ता एव-
मेव सम्मन्नेत्वा मुरं योजेत्वा बाराणसीमेट्ठिस्म आगमनकाले पटिमगं गन्त्वा एवमेव कर्यायमु । मेट्ठि अनत्थि-
को हुत्वा ते पटिगण्हितुकामो गन्त्वा तेसं किरियं ओलोकेत्वा इदमाम एने कानुकामा पलापेस्सामि ते इतोनि
चिन्तेत्वा एवमाह—भो धुत्ता ! मुरं पिवित्वा राजकुलं गन्तुं नाम न युत्तं । राजानं दिम्वा पुन आगच्छन्तो
जानिस्सामि । तुम्हे इधेव निसीदथानि ।

राजुपट्ठानं गन्त्वा पच्चागच्छि । धुत्ता—इतो एथ सामीति ।

सो तत्थ गन्त्वा भेमज्जयोजिता पातियो ओलोकेत्वा एवमाह—भो धुत्ता ! तुम्हाकं किरिया मय्हं
न रुच्चति तुम्हाकं मुरापातियो यथापूरिताव ठिता, तुम्हे केवलं मुरं वण्णेथ न पन पिवथ । म चायं मनापा अस्स
तुम्हेपि पिवेय्याथ इमाय पन विससंयुत्ताय भवितव्वन्ति तेसं मनोरथं भिन्दन्तो इमं गाथमाह—

तथेव पुण्णपातियो अञ्जायं वत्तते कथा ।

आकारकेन जानामि न चायं भट्टिका^१ सुराति ॥

तत्थ तथेवाति यथा मया गमनकाले दिट्ठा इदानीपि इमा सुरापातियो तथेव पुण्णा । अञ्जायं वत्तते कथाति या अयं तुम्हाकं सुरावण्णनकथा वत्तति, सा अञ्जाव अभूता अतच्छा यदि हि एसा सुरा मनापा अस्स तुम्हेपि पिवेय्याथ उपड्ढपातियो अवसिस्सेय्युं । तुम्हाकं पन एकेनापि सुरा न पीता । आकारकेन जानामीति तस्मा इमिना कारणेन जानामि । न चायं भट्टिका सुराति नेव अयं भट्टिका सुरा, विसयोजिताय एताय भवित-
व्वन्ति । धुत्ते गहेत्वा यथा न पुन एवरूपं करोन्ति तथा ते तज्जेत्वा विस्सज्जेसि । सो यावजीवं दानादीनि पुञ्ञानि करित्वा यथाकम्मं गतो ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा धुत्ता एतरहि धुत्ता बाराणसीसेट्ठि पन अहन्तेन समयेनाति ।

पुण्णपातिजातकं

४. फलजातकं

नायं रुक्खो बुराह्णोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं फलकुसलं उपासकं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

एको किर सावत्थिवासी कुटुम्बिको बुद्धपमुखं संघं निमन्तेत्वा अत्तनो आरामे निसीदापेत्वा यागुख-
ज्जकं दत्त्वा उय्यानपालं आणापेसि—भिक्षूहि सद्धि उय्याने विचरित्वा अय्यानं अम्बादीनि नानाफलानि देहीति ।

सो साधूति सम्पटिच्छित्वा भिक्षुसंघं आदाय उय्याने विचरन्तो रुक्खं ओलोकेत्वा एनं फलं
आमं एतं न सुपक्कं एतं सुपक्कन्ति जानाति । यं सो वदति तं तथेव होति ।

भिक्षू गत्त्वा तथागतस्स आरोचेमु—भन्ते ! अयं उय्यानपालो फलकुसलो । भूमियं ठितोव रुक्खं
ओलोकेत्वा एतं फलं आमं एतं न सुपक्कं एतं सुपक्कन्ति जानाति । यं सो वदति तं तथेव होतीति ।

सत्था—न भिक्खवे ! अयमेव उय्यानपालो फलकुसलो पुब्बे पन पण्डितापि फलकुसला अहेमुन्ति
वत्वा अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिमत्तो सत्थवाहकुले निव्वत्तित्वा वयप्पत्तो पञ्चहि
सकटसनेहि वणिज्जं करोन्तो एकस्मिं काले महावत्तनिअट्ठविं पत्त्वा अट्ठविमुखे ठत्वा सब्बे मनुस्से सन्निपाता-
पेत्वा—इमिस्मा अट्ठविया विसरुक्खा नाम होन्ति विसपत्तानि विसपुप्फानि विसफलानि विसमधूनि होन्ति
येव । पुब्बे तुम्हेहि अपरिभुत्तं यं किञ्चि पत्तं वा पुप्फं वा फलं वा मं अनापुच्छित्वा मा खादित्थाति आह ।

ते साधूति सम्पटिच्छित्वा अट्ठविं ओत्तरिमु ।

अट्ठविमुखे च एकस्मिं गामद्वारे किम्फलरुक्खो नाम अत्थि । तस्स खन्धसाखापलासपुप्फफलानि
सब्बानि अम्बसदिसानेव होन्ति, न केवलं वण्णसण्ठानतो गन्धरसेहिप्पस्स आमपक्कानि फलानि अम्बफल-
सदिसानेव । खादितानि पन ह्लाहलविसं विय तं खणं येव जीवितक्खयं पापेन्ति ।

पुरत्तो गच्छन्ता एकच्चे लोलपुरिसा [२३२] अम्बरुक्खो अयन्ति सञ्जाय फलानि खादिमु ।
एकच्चे सत्थवाहं पुच्छित्वा व खादिस्सामानि हत्थेन गहेत्वा अट्ठंमु । ते सत्थवाहे आगते—अय्य ! इमानि अम्बर-
फलानि खादामाति पुच्छिमु ।

बोधिमत्तो नायं अम्बरुक्खोति ब्रत्वा—किम्फलरुक्खो नामेस नायं अम्बरुक्खो मा खादित्थाति—वा-
रेत्वा ये खादिमु तेपि वमापेत्वा चतुमधुरं पायेत्वा अरोगे अकामि ।

पुब्बे पन इमस्मिं रुक्खमूले मनुस्सा निवासं कप्पेत्वा अम्बरुफलानीति इमानि विसफलानि खादित्वा
जीवितक्खयं पापुणन्ति । पुन दिवसे गामवासिनो निक्खमित्वा मतमनुस्से दिस्वा पादे गणित्वा पटिच्छन्नट्ठाने
छेड्ढेत्वा सकटेहि सद्धि येव सब्बन्तेसं सन्तकं गहेत्वा गच्छन्ति ।

ते तं दिवसम्पि अरुणुगमनकाले येव मय्हं बलिवद्दा भविस्सन्ति मय्हं सकटं मय्हं भण्डन्ति वेगेन
तं रुक्खमूलं गत्त्वा मनुस्से निरोगे दिस्वा—कथं तुम्हे इमं रुक्खं नायं अम्बरुक्खोति जानित्थाति पुच्छिमु ।

ते मयं न जानाम सत्थवाहजेदठको नो जानातीति आहंमु ।

मनुस्सा बोधिसत्तं पुच्छिमु—पण्डित, किन्ति कत्वा त्वं इमस्स रुक्खस्स अनम्बरुक्खभावं अञ्जासीति ?

सो द्वीहि कारणेहि अञ्जासिन्ति वत्वा इमं गाथमाह—

नायं रुक्खो दुरारूहो नपि गामतो आरका ।

आकारकेन जानामि नायं साधुफलो दुमोति ॥

तत्थ नायं रुक्खो दुरारूहोति अयं विसरुक्खो न दुक्खारूहो होति । उक्खपित्वा ठपितनिस्सेणि विय सुखेन आरोहितुं सक्काति वदति । नपि गामतो आरकाति गामतो दूरे ठितोपि न होति गामद्वारे ठितो येवाति दीपेति । आकारकेन जानामीति इमिना दुविधेन कारणेनाहं इमं रुक्खं जानामि किन्ति ! नायं साधुफलो दुमोति सचे हि अयं मधुरफलो अम्बरुक्खो अभविस्स एवं सुखारूहे अविदूरे ठिते एतस्मि एकम्पि फलं न तिट्ठेय्य, फलखादकमनुस्सेहि निच्चं परिवृतोव अस्स । एवं अहं अत्तनो जाणेन परिच्छिन्दित्वा इमस्स विसरुक्खभावं अञ्जासिन्ति महाजनस्स धम्मं देसेत्वा सोत्थिगमनं गतो ।

सत्थापि एवं भिक्खवे ! पुब्बे पण्डिता फलकुसला अहेमुन्ति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा परिसा बुद्धपरिसा अहेमुं सत्थवाहो पन अहमेवाति ।

फलजातकं

५. पञ्चावुधजातकं

यो अलीनेन चित्तेनाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं ओस्सट्ठविरियं भिक्खुं आरब्धं कथेसि ।

पट्चपन्नवत्थु

तं हि भिक्खुं सत्था आमन्तेत्वा—सच्चं किर त्वं भिक्खु ! ओस्सट्ठविरियोति पुच्छित्वा [२३३] सच्चं भगवाति वुत्ते—भिक्खु ! पुब्बे पण्डिता विरियं कातुं युत्तट्ठाने विरियं कत्वा रज्जसम्पत्तिं पापुणिं सति वत्वा अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो तस्स रज्जो अगमहेसिया कुच्छिस्मि निब्बसि । तस्स नामगहणदिवसे अट्ठसत्तं ब्राह्मणे सव्वकामेहि सन्तप्पेत्वा लक्खणानि पटिपुच्छिमु । लक्खणकुसला ब्राह्मणा लक्खणसम्पत्तिं दिस्वा पुञ्ञसम्पन्नो महाराज ! कुमारो तुम्हाकं अच्चयेन रज्जं पापुणिस्सति पञ्चावुधकम्मे पञ्जातो पाकटो जम्बुदीपे अगपुरिसो भविस्सतीति व्याकरिमु । ब्रह्मणानं वचनं सुत्वा कुमारस्स नामं गणहन्ता पञ्चावुधकुमारोति नामं अकमु ।

अथ नं विञ्जुतं पत्वा सोळसवस्सप्पदेसे ठितं राजा आमन्तेत्वा—तात ! सिप्पं उग्गण्हाहीति आह ।

कस्स सन्तिके उग्गण्हामि देवाति ?

गच्छ तात ! गन्धाररट्ठे तक्कसिलानगरे दिसापामोक्खस्स आचारियस्स सन्तिके सिप्पं उग्गण्ह, इदमस्स आचारियस्स भागं ददेय्यासीति सहस्सं दत्वा उय्योजेसि ।

सो तत्थ गन्त्वा सिप्पं सिक्खित्वा आचारियेन दिशं पञ्चावुधं गहेत्वा आचारियं वन्दित्वा तक्कसिलानगरतो निक्खमित्वा सन्नद्धपञ्चावुधो वाराणसीमगं पटिपज्जि । सो अन्तरामग्गे सिलेसलोमयक्खेन नाम अधिट्ठितं एकं अट्ठवि पापुणि । अथ नं अट्ठविमुखे मनुस्सा दिस्वा—भो माणव ! मा इमं अट्ठवि पाविसि सिलेसलोमयक्खो नामेतथ अत्थि सो दिट्ठदिट्ठमनुस्से जीवितक्खयं पापेतीति वारयिमु ।

बोधिसत्तो अत्तानं तक्केन्तो असम्भीतकेसरसीहो विय अट्ठवि पाविसि येव । तस्मिं अट्ठविमज्जं सम्पत्ते सो यक्खो तालमत्तो हुत्वा कूटागरमत्तं सीसं चक्कप्पमाणानि ^१ अक्खिनि कन्दळमकुलमत्ता द्वे दाठा च मापेत्वा सेतमुखो कवरकुच्छि नीलहत्थपादो हुत्वा बोधिसत्तस्स अत्तानं दस्सेत्वा—कहं यासि, तिट्ठ भक्खो मेति आह ।

अथ नं बोधिसत्तो—यक्ख ! अहं अत्तानं तक्केत्वा इध पविट्ठो । त्वं अप्पमत्तो हुत्वा मं उपगच्छेय्यासि । विसपीतेन हि तं सरेन विज्झित्वा एत्थेव पातेस्सामीति सन्तज्जेत्वा हलाहलविसपीतं सरं सन्नय्हित्वा मुञ्चि । सो यक्खस्स लोमेसु येव अल्लीयि । ततो अञ्जन्ति एवं पञ्जा सरे मुञ्चि । सव्वे तस्स लोमेसु येव अल्लीयिमु ।

यक्खो सब्बेपि ते सरे पोठेत्वा अत्तनो पादमूले येव पातेत्वा बोधिसत्तं उपमंक्रमि । बोधिसत्तो पुनपि तं तज्जेत्वा खगं कड्ढित्वा पहरि । तेत्तिसंगुलायतो खग्गो लोमेसु येव अल्लीयि । अथ नं कणपेन पहरि । सोपि लोमेसु येव अल्लीयि । तस्स अल्लीन [२३४] भावं जत्वा मुग्गरेन पहरि । सोपि लोमेसु येव अल्लीयि । तस्स अल्लीनभावं जत्वा—भो यक्ख ! न ते अहं पञ्चावुधकुमारो नामानि सुतपुब्बो ? अहं तथा अधिट्ठितं अट्ठवि पविसन्तो न धनुआदीनि तक्केत्वा पविट्ठो अत्तानं येव पन तक्केत्वा पविट्ठो, अज्ज तं पोठेत्वा चुण्णविचुण्णं करिस्सामीति अभीतसीहनादं नाम दस्सेत्वा उन्नदित्वा दक्खिणहत्थेन यक्खं पहरि । हत्थो लोमेसु येव अल्लीयि

वामहृत्थेन पहरि, सोपि अल्लीयि । दक्खिणपादेन पहरि, सोपि अल्लीयि । वामपादेन पहरि, सोपि अल्लीयि । सीसेन तं पोठेत्वा चुण्णविचुण्णं करिस्सामीति सीसेन पहरि, तम्पि लोमेसु येव अल्लीयि । सो पञ्चसु ठानेसु बद्धो ओलम्बन्तोपि निम्भयो निस्सारज्जोव अहोसि ।

यक्खो चिन्तेसि—अयं एको पुरिससीहो पुरिसाजानीयो न पुरिसमत्तोव । मादिसेन नामस्स यक्खेन गहितस्स सन्तासमत्तम्पि न भविस्सति । मया इमं मग्गं हनन्तेन एकोपि एवरूपो पुरिसो न दिट्ठपुब्बो । कस्मा नुखो एस न भायतीति ! सो तं खादितुं अविसहन्तो—कस्मा नुखो त्वं माणव ! मरणभयं न भायसीति पुच्छि ।

किं कारणा यक्ख भायिस्सामि ? एकस्मिं हि अत्तभावे एकं मरणं नियतमेव, अपि च मय्हं कुच्छिम्हि वजिरावुधं अत्थि, सचे मं खादिस्ससि तं च आवुधं जीरेतुं न सक्खिस्ससि । तं ते अन्तानि खण्डाखण्डं छिन्दित्वा जीवितक्खयं पापेस्सति । इति उभोपि नस्सिस्साम । इमिना कारणेनाहं न भायामीति । इदं किर बोधिसत्तो अत्तनो अब्भन्तरे जाणावुधं सन्धाय कथेसि ।

तं सुत्वा यक्खो चिन्तेसि—अयं माणवो सच्चमेव भणति इमस्स पुरिससीहस्स सरीरतो मृगबीजमत्तम्पि मंसखण्डं मय्हं कुच्छि जीरेतुं न सक्खिस्सति विस्सज्जेस्सामि नन्ति मरणभयतज्जितो बोधिसत्तं विस्सज्जेत्वा—माणव ! पुरिससीहो त्वं । न ते अहं मंसं खादिस्सामि । त्वं अज्ज राहुमुखा मुत्तचन्दो विय मम हत्थतो मुञ्चित्वा जातिसुहज्जमण्डलं तोसेन्तो याहीति आह ।

अथ नं बोधिसत्तो आह—यक्ख ! अहं ताव गच्छिस्सामि त्वं पन पुब्बेपि अकुसलं कत्वा लुद्धो लोहितपाणी पररुधिरमंसभक्खो यक्खो हुत्वा निब्बत्तो । सचे इधापि ठत्वा अकुसलमेव करिस्ससि अन्धकारा अन्धकारमेव गमिस्ससि । मं दिट्ठकालतो पट्ठाय पन न सक्का तथा अकुसलं कातुं पाणातिपातकम्मं नाम निरये तिरच्छानयोनियं पेट्तिविसये असुरकाये च निब्बत्तेति मनुस्सेसु निब्बत्तट्ठाने अप्पायुकसंवत्तनिकं होतीति ।

एवमादिना नयेन पञ्चन्नं दुस्सील्यकम्मानं [२३५] आदीनवं पञ्चन्नं सीलानं आनिसंसं च कथेत्वा नानाकारणेहि यक्खं तज्जेत्वा धम्मं देसेत्वा दमेत्वा निब्बिसेवनं कत्वा पञ्चसु सीलेसु पतिट्ठापेत्वा तस्सा येव नं अटविया बलिपटिग्गाहकं देवतं कत्वा अम्पमादेन ओवदित्वा अटवितो निक्खमन्तो अटवीमुखे मनुस्सानं आचिक्खित्वा सन्नद्धपञ्चावुधो बाराणसि गन्त्वा मातापितरो दिस्वा अपरभागे रज्जे पतिट्ठाय धम्मेन रज्जं कारेन्तो दानादीनि च पुञ्ञानि करित्वा यथाकम्मं अगमासि । सत्थापि इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अभिसम्बुद्धो हुत्वा इमं गाथमाह—

यो अलीनेन चित्तेन अलीनमनसो नरो ।

भावेति कुसलं धम्मं योगक्खेमस्स पत्तिया ॥

पापुणे अनुपुब्बेन सब्बसंयोजनक्खयन्ति ।

तत्थायं पिण्डत्थो । यो पुरिसो अलीनेन असंकुचितेन चित्तेन पकितियापि अलीनमनो अलीनज्ज्ञासयो हुत्वा अनवज्जट्ठेन कुसलं सत्ततिसबोधिपक्खियभेदं धम्मं भावेति वड्ढेति विसालेन चित्तेन विपस्सनं अनुयुञ्जति । चतुहि योगेहि खेमस्स निब्बानस्स पत्तिया सो एवं सब्बसंखारेसु अनिच्चं दुक्खं अनत्ता ति तिलक्खणं आरोपेत्वा तरुणविपस्सनतो पट्ठाय उप्पन्ने बोधिपक्खियधम्मे भावेन्तो अनुपुब्बेन एकं संयोजनम्पि अनवसेसेत्वा सब्बसंयोजनानं खयकरस्स चतुत्थमग्गस्स परियोसाने उत्पन्नता सब्बसंयोजनक्खयोति संखं गतं अरहत्तं पापुण्ययाति ।

एवं सत्था अरहत्तेन धम्मदेसनाय कूटं गहेत्वा मत्थके चत्तारि सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने सो भिक्खु अरहत्तं पापुणि । सत्थापि अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा यक्खो अंगुलिमालो अहोसि । पञ्चावुधकुमारो नाम अहमेवाति ।

पञ्चावुधजातकं

६. कञ्चनकरंधजातकं

यो पण्डितेन चित्तेनाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अञ्जतरं भिक्षुं आरम्भ कथेसि ।

पञ्चपञ्चवत्थु

एको किर सावत्थिवासी कुलपुत्तो सत्थु धम्मदेसनं सुत्वा रतनसासने उरं दत्त्वा पब्बजि । अथस्स आचरियुपज्झाया—आवुसो ! एकविधेन सीलं नाम, दुविधेन, त्रिविधेन, चतुर्विधेन, पञ्चविधेन, छव्विधेन, सत्तविधेन, अट्ठविधेन, नवविधेन, दसविधेन, बहुविधेन सीलं नाम; इदं चुल्लसीलं नाम, इदं मज्झिमसीलं नाम, इदं महासीलं नाम, इदं पातिमोक्खसंवरसीलं नाम, इदं इन्द्रियसंवरसीलं नाम, इदं आजोवपारिसुद्धिसीलं नाम, इदं पञ्चयपटिसेवनसीलं नामाति सीलं आचिक्खन्ति ।

सो [२३६] चिन्तेसि—इदं सीलं नाम अतिबहुं । अहं एतत्तं समादाय वत्तितुं न सक्खिस्सामि । सीलं पूरेतुं असक्कोत्तस्स नाम पब्बज्जाय को अत्थो ? अहं गिही हुत्वा दानादीनि पुञ्ञानि च करिस्सामि पुत्तदारञ्च पोसेस्सामीति ।

एवञ्च पन चिन्तेत्वा—भन्ते ! अहं सीलं रक्खितुं न सक्खिस्सामि, असक्कोत्तस्स च नाम पब्बज्जाय को अत्थो ? अहं हीनायावत्तिस्सामि । तुम्हाकं पत्तचीवरं गण्हायाति आह ।

अथ नं आचरियुपज्झाया आहंसु—आवुसो ! एवं सन्ते दसवलं वन्दित्वा याहीति ।

ते तं आदाय सत्थु सन्तिकं धम्मसभं अगमंसु ।

सत्था तं दिस्वाव—किं भिक्खवे ! अनत्थिकं भिक्षुं आदाय आगतत्थाति आह ।

भन्ते ! अयं भिक्षु अहं सीलं रक्खितुं न सक्खिस्सामीति पत्तचीवरं नित्यादेति । अथ नं मयं गहेत्वा आगताति ।

कस्मा पन तुम्हे भिक्खवे ! इमस्स भिक्खुनो बहुं सीलं आचिक्खथ ? यत्तकं एस रक्खितुं सक्कोति तत्तकमेव रक्खिस्सति । इतो पट्ठाय तुम्हे एवं मा किञ्चि अवचुत्थ । अहमेत्थ कत्तब्बं जानिस्सामीति । एहि त्वं भिक्खु ! किन्ते बहुना सीलेन ? तीणि येव सीलानि रक्खितुं सक्खिस्ससीति ?

सक्खिस्सामि भन्तेति ।

तेन हि त्वं इतो पट्ठाय कायद्वारं वचीद्वारं मनोद्वारन्ति तीणि द्वारीणि रक्ख । मा कायेन पापकम्मं करि । मा वाचाय, मा मनसा । गच्छ, मा हीनायावत्ति । इमानि तीणि येव सीलानि रक्खानि ।

एत्तावता सो भिक्खू तुट्ठमानसो—साधु भन्ते, रक्खिस्सामि इमानि तीणि सीलानीति सत्थांरं वन्दित्वा आचरियुपज्झायेहि सद्धि येव अगमासि ।

सो तानि तीणि सीलानि पूरेन्तोव अञ्ञासि—आचरियुपज्झायेहि मय्हं आचिक्खितं सीलम्पि एत्तकमेव । ते पन अत्तनो अबुद्धभावेन मं बुज्झापेतुं नासक्खिंसु । सम्मासम्बुद्धो अत्तनो बुद्धमुबुद्धताय अनुत्तरधम्मराजताय एत्तकं सीलं तीसु येव द्वारेसु पक्खिपित्वा मं गण्हापेसि । अवस्सयो वत मे सत्था जातोति विपस्सनं वड्ढेत्वा कतिपाहेनेव अरहन्ते पतिट्ठासि ।

तं पवुत्ति अत्त्वा धम्मसभायं सन्निपतिता भिक्खू—आवुसो ! तं किर भिक्खुं सीलानि रक्खितुं न सक्कोमीति हीनायावत्तन्तं सब्बसीलानि तीहि कोट्ठासेहि पक्खिपित्वा गाहापेत्वा सत्था अरहत्तं पापेसि । अहो ! बुद्धा नाम अच्छरियमनुस्साति बुद्धगुणे कथेन्ता निसीदिसु ।

सत्था आगन्त्वा—काय नुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छि ।

इमाय नामाति वुत्ते—भिक्खवे ! अतिगरुकोपि भारो कोट्ठासवसेन भाजेत्वा दिन्नो लहुको विय होति । पुब्बेपि पण्डिता महन्तं कञ्चनक्खन्धं लभित्वा उक्खिपितुं असक्कोन्ता विभागं कत्वा उक्खिपित्वा अगमंमूति वत्वा अतीतं आहरि— [२३७]

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारन्ते बोधिसत्तो एकस्मिं गामके कस्सको अहोसि । सो एकदिवसं अञ्जतरस्मिं छड्डितगामके खेत्ते कसिं कसति । पुब्बेपि च तस्मिं गामे एको विभवसप्पन्नो सेट्ठी ऊरुमतपरिमाणं^२ चतुहत्थायामं कञ्चनक्खन्धं निदहित्वा कालमकासि । तस्मिं बोधिसत्तस्स नंगलं लगित्वा अट्ठासि । सो मूलसन्तानकं भविस्सतीति पंसुं वियूहन्तो तं दिस्वा पंसुना पटिच्छादेत्वा दिवसं कसित्वा अत्थं गते सुरिये युगनंगलादीनि एकमन्ते निक्खिपित्वा कञ्चनक्खन्धं गणित्वा गच्छिस्सामीति तं उक्खिपितुं नासक्खि ।

असक्कोन्तो निसीदित्वा—एत्तकं कुच्छिभरणाय भविस्सति, एत्तकं निदहित्वा ठपेस्सामि, एत्तकेन कम्मन्ते संयोजेस्सामि, एत्तकं दानादिपुञ्जक्रियाय भविस्सतीति चत्तारो कोट्ठासे अकासि ।

तस्सेवं विभक्तकालेसो कञ्चनक्खन्धो सल्लहुको विय अहोसि । सो तं उक्खिपित्वा घरं नेत्वा चतुधा विभजित्वा दानादीनि पुञ्जानि कत्वा यथाकम्मं गतोति । भगवा इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अभिसम्बुद्धो हुत्वा इमं गाथमाह—

यो पहट्ठेन चित्तेन पहट्ठमनसो नरो ।

भावेति कसलं धम्मं योगक्खेमस्स पत्तिया ॥

पापुणं अनुपुब्बेन सब्बसंयोजनं बल्लयन्ति ॥

तत्थ पहट्ठेनाति विनीवरणेन । पहट्ठमनसोति ताय एव विनीवरणताय पहट्ठमनसो सुवणं विय पहंसित्वा समुज्जोतितसप्पमासकतचित्तो हुत्वाति अत्थो ।

एवं सत्था अरहत्तनिकूटेन देसनं निट्ठपेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा कञ्चनक्खन्धं लद्धपुरिसो अहमेव अहोसिन्ति ।

कञ्चनक्खन्धजातकं

७. वानरिन्द्रजातकं

यस्सेते चतुरो धम्माति इदं सत्था वेळुवने विहरन्तो देवदत्तस्स वधाय परिसक्कनं आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

तस्मिं हि समये सत्था देवदत्तो वधाय परिसक्कतीति सुत्वा न भिक्खवे ! इदानीव देवदत्तो मय्हं वधाय परिसक्कति पुब्बेपि परिसक्कि येव, तासमत्तम्मि पन कातुं न सक्खीति वत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो कपियोनिधं निब्बत्तिवा बुद्धिमन्वाय अस्स-पोतकप्पमाणो थामसम्पन्नो एकचरो हुत्वा नदीतीरे विहरति । तस्सा पन नदिया वेमज्जे एको दीपको नानप्प-कारेहि अम्बपणसादीहि फलरुक्खेहि सम्पन्नो । बोधिसत्तो नागबलो थामसम्पन्नो नदिया ओरिमतीरतो उप्पत्तिवा दीपकस्स ओरतो [२३८] नदीमज्जे एको पिट्ठिपासाणो अत्थि तस्मिं निपतति । ततो उप्पत्तिवा तस्मिं दीपके पतति । तत्थ नानप्पकारानि फलानि खादित्वा सायं तेनेव उपायेन पच्चागन्त्वा अत्तनो वसनट्ठाने वसित्वा पुनदिवसेपि तथेव करोति । इमिना नियामेन तत्थ वासं कप्पेति ।

तस्मिं पन काले एको कुम्भीलो सपजापतिको तस्सा नदिया वसति । तस्स सा भरिया बोधिसत्तं अपरापरं गच्छन्तं दिस्वा बोधिमतस्स हृदयमसे दोहळं उप्पादेत्वा कुम्भीलं आह-मय्हं खो अय्य ! इमस्स वानरि-न्दस्स हृदयमसे दोहळो उप्पन्नोति ।

कुम्भीलो-साधु भोति ! लच्छसीति वत्वा-अज्ज तं सायं दीपकतो आगच्छन्तमेव गण्हस्सामीति गत्वा पिट्ठिपासाणे निपज्जि ।

बोधिसत्तो दिवसं चरित्वा सायण्हसमये दीपके ठितोव पासाणं ओलोकेत्वा-अयं पासाणो इदानी उच्चतरो खायति, किन्नुखो कारणन्ति चिन्तेसि ।

तस्स किर उदकप्पमाणञ्च पासाणप्पमाणञ्च सुववत्थापितमेव होति । तेनस्स एतदहोसि-अज्ज इमिस्सा नदिया उदकं नेव हायति न वड्ढति, अथ च पनायं पासाणो महा हुत्वा पञ्जायति कच्चिनुखो एत्थ मय्हं गहणत्थाय कुम्भीलो निपन्नोति, सो वीमंसाभि ताव नन्ति तत्थेव ठत्वा पासाणेन सद्धि कथेन्तो विय भो पासाणाति वत्वा पटिवचनं अलभन्तो यावततियं पासाणाति आह । पासाणो किं पटिवचनं न दस्सति ? पुनपि नं वानरो-किं भो पासाण ! अज्ज मय्हं पटिवचनं न देसीति आह ।

कुम्भीलो-अद्धा अज्जेसु दिवसेसु अयं पासाणो वानरिन्दस्स पटिवचनं अदासि, दस्सामिदानिस्स पटिवचनन्ति चिन्तेत्वा-किं भो ! वानरिन्दाति आह ।

कोसि त्वन्ति ?

अहं कुम्भीलोति ।

किमत्थं एत्थ निपन्नोसीति ?

तव हृदयमंसं पत्थयमानोति ।

बोधिसत्तो चिन्तेसि-अज्जो मे गमनमग्गो नत्थि, अज्ज मया एस कुम्भीलो वञ्चेतब्बोति । अथ नं

८. तयोधम्मजातकं

यस्स एतेति इदम्पि सत्था वेळुवने विहरन्तो वधाय परिसक्कनमेव आरब्ध कथेसि ।

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते देवदत्तो वानरयोनियं निब्वत्तित्वा हिमवन्तपदेसे यूथं परिहरन्तो अत्तानं पटिच्चजातानं वानरपोतकानं बुद्धिप्पत्तानं इमे यूथं परिहरेय्युन्ति भयेन दन्तेहि डसित्वा तेसं बीजानि उप्पाटेति ।

तदा बोधिसत्तोपि तं येव पटिच्च एकस्सा वानरिया कुच्छिम्हि पटिसन्धि गण्हि । अथ सा वानरी गब्भस्स पटिट्ठितभावं वत्वा अत्तनो गब्भं अनुरक्खमाना अञ्जं पब्बतपादं अगमासि । सा परिपक्कगब्भा बोधिसत्तं विजायि । सो बुद्धिमन्वाय विञ्चुत्तं पत्तो थामसम्पन्नो अहोसि । सो एकदिवसं मानरं पुच्छि— अम्म ! मय्हं पिता कहन्ति ?

तात ! अमुकस्मि नाम पब्बतपादे यूथं परिहरन्तो वसतीति ।

अम्म ! तस्स मं सन्तिकं नेहीति ।

तात ! न सक्का तया [२४०] पितु सन्तिकं गन्तुं । पिता हि ते अत्तानं पटिच्च जातानं वानरपोतकानं यूथपरिहरणभयेन दन्तेहि डमित्वा बीजानि उप्पाटेतीति ।

अम्म ! नेहि मं तत्थ, अहं जानिस्सामीति । ।

मा पुत्तं आदाय तस्म सन्तिकं अगमासि । सो वानरो अत्तनो पुत्तं दिस्वाव अयं वड्ढन्तो मय्हं परिहरितुं न दस्मति । इदानेव मारेतब्बोति एतं आलिगन्तो विय गाळ्हं पीळेत्वा जीविक्खयं पापेस्सामीति चिन्तेत्वा—एहि तान ! एत्तकं कालं कहं गतोसीति—बोधिसत्तं आलिगन्तो विय निप्पीळेमि । बोधिसत्तो पन नागवलो थामसम्पन्नो । सोपि तं निप्पीळेसि । अथस्स अट्ठीनि भिज्जनाकारणत्तानि अहेमुं ।

अथस्स एतदहोसि—अयं वड्ढन्तो मं मारेस्मति । केन नुखो उपायेन पुरेतरञ्जेव मारेय्यन्ति । ततो चिन्तेसि—अयं अविदूरे रक्खसपरिग्गहीतो सरो तत्थ नं रक्खमेन खादापेस्सामीति । अथ नं एवमाह—तात ! अहं महल्लको, इमं यूथं तुय्हं निरुद्धादेमि । अज्जेव तं राजानं करोमि । अमुकस्मि नाम ठाने सरो अत्थि । तत्थ द्वे कुमुदिनियो तिस्सो उप्पलिनियो पञ्च पदुमिनियो पुप्फन्ति । गच्छ ततो पुप्फानि आहराति ।

सो साधु तात ! आहरिस्सामीति गत्वा सहसा अनोतरित्वा समन्ता पदं परिच्छिन्दन्तो ओत्तिण्णपदं येव अह्म न उत्तिण्णपदं । सो—इमिना सरेन रक्खसपरिग्गहितेन भविस्सं, मय्हं पिता अत्तना वधितुं असक्कोन्तो रक्खमेन मं खादापेतुक्कामो भविस्सति, अहं इमं च सरं न ओतरिस्सामि, पुप्फानि च गहेस्सामीति—निरुद्धकं ठानं गत्वा वेगं गहेत्वा उप्पतित्वा पुरतो गच्छन्तो निरुद्धके आकामे ठितानेव द्वे पुप्फानि गहेत्वा परतीरे पति । परतो च ओरिमतीरं आगच्छन्तो तेनेवुपायेन द्वे गण्हि । एवं उभोमु पस्सेमु रागि करोन्तो पुप्फानि च गण्हि रक्खस्स च आणट्ठानं न ओतरि ।

अथस्स इतो उत्तरि उक्खपितुं न सक्खिस्सामीति तानि पुप्फानि गहेत्वा एकस्मि ठाने रागि करोन्तस्स सो रक्खसो मया एत्तकं कालं एवरूपो पञ्चवा अच्छरियपुरिसो न दिट्ठपुब्बो । पुप्फानि च नाम यावदि-

च्छकं गहितानि, मय्हं च आणट्ठानं न ओतरीति उदकं द्विधा भिन्दन्तो उदकतो उट्ठाय बोधिसत्तं उपसंकमित्वा—
वानरिन्द ! इमस्मिं लोके यस्स तयो धम्मा अत्थि सो पच्चामित्तं अभिभोति ते सब्बेपि तव अब्भन्तरे अत्थि
मञ्जेति वत्वा बोधिसत्तस्स थुतिं करोन्तो इमं गायमाह—

यस्स एते तयो धम्मा वानरिन्द ! यया तव ।

बक्खियं सूरियं पञ्जा विट्ठं सो अतिवत्ततीति ॥ [२४१]

तत्थ बक्खियन्ति दक्खभावो सम्पत्तभयं विधमितुं जाननपञ्जाय सम्पयुत्तउत्तमविरियस्सेतं नामं ।
सूरियन्ति सूरभावो निब्भयभावस्सेतं नामं । पञ्जाति पञ्जापन पट्ठपनाय उपायपञ्जायेतं नामं ।

एवं सो दकरक्खसो इमाय गाथाय बोधिसत्तस्स थुतिं कत्वा—इमानि पुष्पानि किमत्थं हरसीति
पुच्छि ।

पिता मं राजानं कातुकामो, तेन कारणेन हरामीति ।

न सक्का तादिसेन उत्तमपुरिसेन पुष्पानि गहितुं, अहं गण्हिस्सामीति उक्खिपित्वा तस्स पच्छतो
पच्छतो अगमासि ।

अथस्स पिता दूरतोव तं दिस्वा अहं इमं रक्खसभत्तं भविस्सतीति पहिणि, सो दानेस रक्खसं पुष्पानि
गाहापेन्तो आगच्छति इदानीमिह नट्ठोति चिन्तेन्तो सत्तथा हृदयफालनं पत्वा तत्थेव जीवितक्खयं पत्तो । सेस-
वानरा सन्निपतित्वा बोधिसत्तं राजानं अकमु ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा यूथपति देवदत्तो
अहोसि, यूथपतिपुत्तो पन अहमेवाति ।

तयोधम्मजातकं

६. भेरिवादजातकं

धमे धमेति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अञ्जतरं दुब्बचं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपल्लवत्थु

तच्चि भिक्खुं सत्था-सच्चं किर त्वं दुब्बचोसीति पुच्छित्वा सच्चं भगवाति वृत्ते— न त्वं भिक्खु !
इदानव दुब्बचो पुब्बेपि दुब्बचो येवाति वत्वा अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो भेरिवादककुले निव्वत्तित्वा गामके वसति ।
सो बाराणसियं नक्खत्तं घुट्ठन्ति सुत्वा समज्जमण्डले भेरि वादेत्वा धनं आहरिस्सामीति पुत्तं आदाय तत्थ
गन्त्वा भेरि वादेत्वा बहुं धनं लभि । तं आदाय अत्तनो गामं गच्छन्तो चोराट्ठि पत्वा पुत्तं निरन्तरं भेरि वादे-
न्तं वारेसि—तात ! निरन्तरं अवादेत्वा मग्गपटिपन्नं इस्सरभेरिं विय अन्तरन्तरा वादेहीति । सो पितरा
वारियमानोपि भेरिसद्देनेव चोरे पलापेस्सामीति वत्वा निरन्तरमेव वादेसि ।

चोरा पठमञ्जेव भेरिसद्दं सुत्वा इस्सरभेरि भविस्सतीति पलायित्वा अतिविय एकाबद्धं सद्दं सुत्वा
नायं इस्सरभेरि भविस्सतीति आगन्त्वा उपधारेत्वा द्वे येव जने दिस्वा पोथेपेत्वा विळुम्पिमु^१ ।

बोधिसत्तो किच्छेन वत नो लद्धं धनं एकाबद्धं कत्वा वादेन्तो नासेमीति वत्वा इमं गाथभाह—

धमे धमे नातिधमे अतिधन्तं हि पापकं ।

धन्तेन सत्तं लद्धं अतिधन्तेन नासितन्ति ॥ [२४२]

तत्थ धमे धमेति धमेय्य नो न धमेय्य । भेरि वादेय्य । न न वादेय्याति अत्थो । नातिधमेति अतिक्क-
मेत्वा पन निरन्तरमेव कत्वा न वादेय्य । किं कारणा ? अतिधन्तं हि पापकन्ति निरन्तरं भेरिवादं इदानीं अम्हाकं
पापकं लामकं जातं । धन्तेन सत्तं लद्धन्ति नगरे भेरिवादानेन कहापणमतं लद्धं । अतिधन्तेन नासितन्ति इदानीं पन
मे पुत्तेन वचनं अकत्वा यमिदं अटवियं अतिधन्तं तेन अतिधन्तेन सब्बं नासितन्ति ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेमि । तदा पुत्तो दुब्बचभिक्खु
अहोसि । पिता पन अहमेवाति ।

भेरिवादजातकं

१०. सङ्खधमनजातकं

धमे धमेति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो दुब्बचमेव आरब्भ कथेसि ।

अतीतवत्यु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मादत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो सङ्खधमककुले निब्बत्तित्वा बाराणसियं नक्खत्ते घुट्ठे पितरं आदाय सङ्खधमनकम्मेन धनं लभित्वा आगमनकाले चोराटवियं पितरं निरन्तरं सङ्ख धमन्तं वारेसि । सो सङ्खसद्देन चोरे पलापेस्सामीति निरन्तरमेव धमि । चोरा पुरिमनयेनेव आगन्त्वा विळुम्पिसु । बोधिसत्तोपि पुरिमनयेनेव गाथं अभसि—

धमे धमे नातिधमे अतिधन्तञ्जिह पापकं ।

धन्तेनाधिगता भोगा ते तातो विधमी धमन्ति ॥

तत्थ ते तातो विधमी धमन्ति ते सङ्ख धमित्वा लद्धभोगे मम पिता पुनप्पुनं धमेन्तो विधमीति विद्धं-
सेसि विनासेसीति ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा पिता दुब्बचभिव्वु
अहोसि, पुत्तो पन अहमेवाति ।

सङ्खधमनजातकं

आसिसवग्गो छट्ठो

७. इस्थीषगवण्णना

१. असातमन्तजातकं

असा लोकित्थियो नामाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो उक्कण्ठितभिक्षुं आरब्ध कथेसि ।
तस्स वत्थु उम्मदन्तिजातके^१ आवीभविस्सति ।

पच्चुपक्षवत्थु

तं पन भिक्षुं सत्था-भिक्षु ! इत्थियो नाम असा असतियो लामिका पच्छिमिका । त्वं एवरूपं
लामिकं इत्थिं निस्साय कस्मा उक्कण्ठितोति वत्ता अतीतं आहरि- [२४३]

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो गन्धाररट्ठे तक्कसिलायं ब्राह्मणकुले निब्ब-
त्तित्वा विञ्जुतं पत्तो । तीसु वेदेषु सब्बसिप्पेषु च निष्फत्तिम्पत्तो दिसापामाक्खो आचरियो अहोसि । तदा बारा-
णसियं एकस्मिं ब्राह्मणकुले पुत्तस्स जातदिवसे अग्गि गहेत्वा अनिब्बायन्तं ठपयिमु । अथ नं ब्राह्मणकुमारं सोळस-
वस्सकाले मातापितरो आहंसु -पुत्त ! मयं तव जातदिवसे अग्गि गहेत्वा ठपयिम्हा सच्चे ब्रह्मलोकपरायणो
भवितुकामो तं अग्गि आदाय अरज्जं पविमित्वा अग्गि भगवन्तं नमस्समानो ब्रह्मलोकपरायणो होहि ।
सच्चे अगारं अज्झावमितुकामो तक्कसिलं गत्वा दिसापामोक्खस्स आचरियस्स सन्तिके सिप्पं उग्गहित्वा कुटुम्बं
सण्ठपेहीति ।

माणवो-नाहं सक्खिस्सामि अरज्जे अग्गि परिचरितुं, कुटुम्बमेव सण्ठपेस्सामीति-माता-
पितरो वन्दित्वा आचरियभागं सहस्सं गहेत्वा तक्कसिलं गत्वा सिप्पं उग्गहित्वा पच्चागमि । मातापितरो
पनस्स अनत्थिका घरावासेन । अरज्जे अग्गि परिचरापेतुकामा होन्ति ।

अथ नं माता इत्थीनं दोसं दस्सेत्वा अरज्जं पेसेतुकामा सो आचरियो पण्डितो व्यत्तो मक्खिस्समनि
मे पुत्तस्स इत्थीनं दोसं कथेतुन्ति चिन्तेत्वा आह-उग्गहितन्ते तात ! सिप्पन्ति ?

आम अम्माति ।

असातमन्तापि ते उग्गहितानि ?

न उग्गहिता अम्माति ।

तात ! यदि ते असातमन्ता न उग्गहिता किन्नाम ते सिप्पं उग्गहितं ? गच्छ उग्गहेत्वा एहीति ।
सो साधूति पुन तक्कसिलाभिमुखो पायासि ।

तस्सपि आचरियस्स माता महल्लिका वीमं वस्समतिका । सो तं सहत्था नहापेन्तो भोजेन्तो पायेन्तो
पटिजगन्ति । अज्जे मनुस्सा तं तथा करोन्तं जिगुच्छन्ति । सो चिन्तेसि यन्नूनाहं अरज्जं पविमित्वा तत्थ मातरं
पटिजगन्तो विहरेय्यन्ति । अथेकस्मिं विवित्ते अरज्जे उदकफामुकट्ठाने पण्णमालं कारेत्वा सप्पितण्डुलादीनि
आहरापेत्वा मातरं उक्खिपित्वा तत्थ गत्वा मातरं पटिजगन्तो वामं कप्पेमि ।

सोपि खो माणवो तक्कसिलं गत्वा आचरियं अपस्सन्तो कहं आचरियोति पुच्छित्वा तं पवन्ति
मुत्वा तत्थ गत्वा वन्दित्वा अट्ठासि ।

१. स्या०-उम्मादयतिजातके ।

अथ नं आचरियो-किन्नुखो तात ! अतिसीधं आगतोसीति ?

ननु अहं तुम्हेहि असातमन्तो नाम न उग्गण्हापितोति ?

को पन ते असातमन्ते उग्गण्हितब्बे कत्वा कथेसीति ?

मय्हं माता आचरियाति ।

बोधिसत्तो चिन्तेसि असातमन्ता नाम केचि नत्थि । इमस्स पन माता इमं इत्थिदोसे जानापेतुकामा भविस्सतीति । [२४४]

अथ नं-साधु तात ! दस्सामि ते असातमन्ते । त्वं अज्ज आदिं कत्वा मम ठाने ठत्वा मम मातरं सहत्था नहापेन्तो भोजेन्तो पायेन्तो पटिजग्गहि । हत्थपादसीसपिट्ठिसम्बाहनादीनि चस्सा करोन्तो-अय्ये ! जरं पत्तकालेपि ताव ते एवरूपं सरीरं, दहरकाले कीदिसं अहोसीति हत्थपरिकम्मादिकरणकाले हत्थपादादीनं वण्णं कथेय्यासि । यं च ते मम माता कथेति तं अलज्जन्तो अनिगूहन्तो मय्हं आरोचेय्यासि एवं करोन्तो असातमन्ते लच्छसि । अकरोन्तो न लच्छसीति ।

सो साधु आचरियाति तस्स वचनं सम्पटिच्छित्वा ततो पट्ठाय सब्बं यथावुत्तविधानं अकासि ।

अथस्सा तस्मि माणवे पुनपुनं वण्णयमाणे अयं मया सद्धि अभिरमितुकामो भविस्सतीति अन्धाय जराजिण्णाय अब्भन्तरे किलेसो उप्पज्जि । सा एकदिवसं अत्तनो सरीरवण्णं कथयमानं माणवं आह-मया सद्धि अभिरमितुं इच्छसीति ?

अय्ये ! अहं ताव इच्छेय्यं आचरियो पन गरुकोति ।

सचे मं इच्छसि पुत्तं मे मारेहीति ।

अहं आचरियस्स सन्तिके एत्तकं सिप्पं उग्गण्हित्वा किलेसमत्तं निस्साय किन्ति कत्वा आचरियं मारेस्सामीति ?

तेनहि सचे त्वं मं न परिच्चजसि अहमेव नं मारेस्सामीति ?

एवं इत्थियो नाम असा लामिका पच्छिमिका तथा रूपे नाम वये ठिता रागचित्तं उप्पादेत्वा किलेसं अनुवत्तमाना एवं उपकारकं पुत्तं मारेतुकामा जाता । माणवो सब्बं तं कथं बोधिसत्तस्स आरोचेसि । बोधिसत्तो सुट्ठु ते माणव ! कतं मय्हं आरोचेन्तेनाति वत्वा, मातुआयुसंखारं ओलोकेन्तो अज्जेव मरिस्सतीति अत्वा-एहि माणव ! वीमसिस्सामि नन्ति एकं उदुम्बररुक्खं छिन्दित्वा अत्तनो पमाणेन कट्ठरूपकं कत्वा ससीसं पारुपित्वा अत्तनो सयनट्ठाने उत्तानं निपज्जापेत्वा रज्जुकं बन्धित्वा अन्तेवासिकं आह-तात ! फरमुं आदाय गत्वा मम मातु सज्जं देहीति ।

माणवो गत्वा-अय्ये ! आचरियो पण्णसालायं अत्तनो सयनट्ठाने निपन्नो । रज्जुसज्जा मे बद्धा, इमं फरमुं आदाय गत्वा सचे सक्कोसि मारेहि नन्ति आह ।

त्वं मं न परिच्चजिस्ससीति ?

किं कारणा परिच्चजिस्सामीति ?

सा फरमुं आदाय पवेधमाना उट्ठाय रज्जुसज्जाय गत्वा हत्थेन परामसित्वा अयं मे पुत्तोति सज्जाय कट्ठरूपकस्स मुखतो साटके अपनेत्वा फरमुं आदाय एकप्पहारेनेव मारेस्सामीति गीवायमेव पहरित्वा टन्ति सदे^१ उप्पन्ने रुक्खभावं अज्जासि ।

अथ बोधिसत्तेन किं करोसि अम्माति वुत्ते बञ्चितम्हीति तत्थेव मरित्वा पतिता । अत्तनो किर पण्णसालाय निपन्नायपि तं खणं ताय मरितब्बमेव । सो तस्सा मतभावं अत्वा सरीर [२४५] किच्चं कत्वा

आळाहनं ' निब्बापेत्वा वनपुष्पेहि पूजेत्वा माणवं आदाय पण्णसालद्वारे निसीदित्वा—तात! पाटियेक्को असात-
मन्तो नाम नत्थि । इत्थियो असाता नाम तव माता असातमन्ते उग्गण्हाति मम सन्तिकं पेसयमाना इत्थीनं दोसं
जाननत्थं पेसेसि । इदानीं पन ते पच्चक्खमेव मम मातु दोसा दिट्ठा । इमिना कारणेन इत्थियो नाम असा-
लामिकाति जानेय्यासीति तं ओवदित्वा उय्योजेसि ।

सोपि आचरियं वन्दित्वा मातापितुश्च सन्तिकं अगमासि । अथ नं माता पुच्छि—उग्गहिता ते असातमन्ताति?
आम अम्माति ।

इदानीं किं करिस्ससि पब्बजित्वा अग्निं वा परिचरिस्ससि अगारमज्जे वा वसिस्ससीति ?

माणवो—मया अम्म ! पच्चक्खतो इत्थीनं दोसा दिट्ठा । अगारेन मे किञ्चं नत्थि पब्बजिस्सामह-
न्ति अत्तनो अधिप्पायं पकासेन्तो इमं गाथमाह—

असा लोकित्थियो नाम वेला तासं न विज्जति ।

सारत्ता च पगग्भा च सिखी सब्बघसो यथा ।

ता हित्वा पब्बजिस्सामि विवेकमनुब्रूह्यन्ति ॥

तत्थ असाति असतियो लामिका । अथवा, मातं वुच्चति सुखं । तं तामु नत्थि अत्तनि पटिवद्धचित्तानं
असातमेव देन्तीतिपि असाता दुक्खा दुक्खवत्थुभूताति अत्थो । इमस्स पनत्थस्स दीपनत्थाय इदं सुत्तं आहरितब्बं —

“माया चेसा मरीची च सोको रोगो चुपद्दो,

खरा च बन्धना चेता मच्चुपामो गुहासयो ।

तामु यो विस्ससे पोमो सो नरेमु नगधमो ति ॥”

लोकित्थियोति लोके इत्थियो । वेला तासं न विज्जतीति अम्म ! तासं इत्थीनं किलेमुप्पत्तिं पत्वा
वेला संवरो मरियादा पमाणन्नामेतं नत्थि । सारत्ता च पगग्भा चाति वेला च एतासं नत्थि । पच्चमु कामगु-
णेसु सारत्ता अल्लीना तथा कायपागग्भियेन वाचापागग्भियेन मनोपागग्भियेनाति तिविधेन पागग्भियेन
समन्नागतत्ता पगग्भा चेता । एतासं हि अन्तरे कामद्वारादीनि पत्वा संवरो नाम नत्थि । लोला काकप-
टिभागाति दस्सेति । सिखी सब्बघसो यथाति अम्म ! यथा जालसिखाय सिखीति मङ्गं गतो । अग्नि
नाम गूथगतादिभेदं असुचिम्पि सप्पिमधुफाणितादिभेदं सुचिम्पि इट्ठम्पि अनिट्ठम्पि यं यदेव लभति सब्बं
घसति खादति तस्मा सब्बघसोति वुच्चति । तथेव ता इत्थियोपि हत्थिमेण्डगोमेण्डादयो वा होन्तु हीनजच्चा
हीनकम्मन्ता खत्तियादयो वा होन्तु उत्तमकम्मन्ता हीनुक्कट्ठभावं अचिन्तेत्वा लोकस्मादवसेन किलेससन्थवे
उप्पन्ने यं यं लभन्ति सब्बमेव सेवन्तीति सब्बघससिखीसदिसा होन्ति तस्मा सिखी सब्बघसो यथा तथा-
वेताति वेदितब्बा । ता हित्वा पब्बजिस्सामीति [२४६] अहं ता लामिका दुक्खवत्थुभूता इत्थियो हित्वा
अरञ्जं पविस्सित्वा इसिपव्वज्जं पब्बजिस्सामी । विवेकमनुब्रूह्यन्ति कायविवेको चित्तविवेको उपधिविवेकोति
तयो विवेका । तेसु इध कायविवेकोपि वट्ठति चित्तविवेकोपि । इदं वुत्तं होति अहं अम्म ! पब्बजित्वा
कसिणपरिकम्मं कत्वा अट्ठसमापत्तियो पच्चअभिञ्जायो च उप्पादेत्वा गणतो कायं किलेसेहि च चित्तं
विवेचेत्वा इमं विवेकं ब्रूहेन्तो वड्ढेन्तो ब्रह्मलोकपरायणो भविस्सामि । अलं मे अगारेनाति । एवं इत्थियो
गरहित्वा मातापितरो वन्दित्वा पब्बजित्वा वुत्तप्पकारं विवेकं ब्रूहेन्तो ब्रह्मलोकपरायणो अहोसि ।

सत्थापि एवं भिक्खु ! इत्थियो नाम असालामिका दुक्खदायिकाति इत्थीनं अगुणं कथेत्वा सच्चानि
पकासेसि । सच्चपरियोसाने सो भिक्खु सोतापत्तिफले पतिट्ठहि । सत्था अनुमन्धि घटेत्वा जातकं समोधा-
नेसि । तदा माता भट्टाकापिलानी, पिता महाकस्सपो अहोसि, अन्तेवासिको आनन्दो, आचरियो पन अहमेवाति ।

असातमन्तजातकं

२. अण्डभूतजातकं

यं ब्राह्मणोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो उक्कण्ठितमेव आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

तं हि सत्था सच्चं किर त्वं भिक्खु ! उक्कण्ठितोति पुच्छित्वा सच्चन्ति वुत्ते-भिक्खु इत्थियो नाम अरक्खिया । पुब्बे पण्डिता इत्थि गम्भतो पट्ठाय रक्खन्ता रक्खितुं नासक्खिसूति वत्ता अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो तस्स अगमहेसिया कुच्छिस्मि निब्बत्तित्वा वयप्पत्तो सब्बसिप्पेसु निष्फत्तिं पत्वा पितु अच्चयेन रज्जे पतिट्ठाय धम्मेन रज्जं कारेसि । सो पुरोहितेन सद्धिं दूतं कीळति । कीळन्तो पन-

सब्बा नदी वंकगता सब्बे कट्ठमया वना ।

सब्बित्थियो करे पापं लभमाना निवातकेति ॥

इमं दूतगीतं गायन्तो रजतफलके सुवण्णपासके खिपति । एवं कीळन्तो पन राजा निच्चं जिनाति । पुरोहितो पराजियति । सो अनुक्कमेन घरे विभवे परिक्खयं गच्छन्ते चिन्तेसि-एवं सन्ते सब्बं इमस्मिं घरे खीयि-स्सति परियेसित्वा पुरिसन्तरं अगतं एकं मातुगामं घरे करिस्सामीति । अथस्स एतदहोसि-अञ्जपुरिसं दिट्ठपुब्बं इत्थि रक्खितुं न सक्खिस्सामि गम्भतो पट्ठायकं मातुगामं रक्खित्वा तं वयप्पत्तं वसे [२४७] ठपेत्वा एकपुरिसिकं कत्वा गाळ्हं आरक्खं संविदहित्वा राजकुलतो धनं आहरिस्सामीति ।

सो च अंगविज्जाय छेको होति । अथेकं दुग्गतिं गम्भिणि दिस्वा धीतरं विजायिस्सतीति अत्वा तं पक्कोसापेत्वा परिब्बयं दत्वा घरे येव वसापेत्वा विजातकाले धनं दत्वा उय्योजेत्वा तं कुमारिकं अञ्जेसं पुरिसानं दट्ठुं अदत्वा इत्थीनं येव हत्थे दत्वा पोसापेत्वा वयप्पत्तकाले तं अत्तनो वसे ठपेसि । यावचेसा वड्ढति ताव रज्जा सद्धिं दूतं न कीळि ।

तं पन वसे ठपेत्वा-महाराज ! दूतं कीळामाति आह ।

राजा साधूति पुरिमनयेनेव कीळि ।

पुरोहितो रज्जा गायित्वा पासकं खिपनकाले ठपेत्वा मम माणविकन्ति आह ।

ततो पट्ठाय पुरोहितो जिनाति, राजा पराजियति । बोधिसत्तो इमस्स घरे एकपुरिसिकाय एकाय, इत्थिया भवितव्वन्ति परिगण्हापेन्तो अत्थिभावं अत्वा सीलमस्सा भिन्दापेस्सामीति एकं धुत्तं पक्कोसापेत्वा-सक्खसि पुरोहितस्स इत्थिया सीलं भिन्दितुन्ति आह । सक्कोमि देवाति । अथस्स राजा धनं दत्वा तेन हि खिप्पं निट्ठापेहीति तं पहिणि ।

सो रज्जो सन्तिका धनं आदाय गन्धधूपचुण्णकप्पूरादीनि गहेत्वा तस्स घरतो अविदूरे सब्बगन्धा-पणं पसारेसि । पुरोहितस्सपि गेहं सत्तभूमकं सत्तद्वारकोट्ठकं हेति । सब्बेसुपि द्वारकोट्ठकेसु इत्थीनञ्जेव आर-क्खो । ठपेत्वा पन ब्राह्मणं अञ्जो पुरिसो गेहं पविसितुं लभन्तो नाम नत्थि । कचवरछड्डनपच्छिम्पि सोधेत्वायेव

पवेसेन्ति । तं माणविकं पुरोहितो चेव ददुं लभति, तस्सा च एका परिचारिका इत्थि । अथस्सा सा परिचारिका गन्धपुष्पमूलं गहेत्वा गच्छन्ती तस्सेव धुत्तस्स आपणसमीपेन गच्छति ।

सो अयं तस्सा परिचारिकाति सुदुठ्ठु अत्वा एकदिवसं तं आगच्छन्ति दिस्वाव आपणा उट्ठाय गत्वा तस्सा पादमूले पतित्वा उभोहि हत्थेहि पादे गाळ्हं गहेत्वा—अम्म ! एत्तकं कालं कहं गतासीति परिदेवि ।

अथ सेसापि पयुत्तकधुत्ता एकमन्तं ठत्वा—हत्थपादमुखसण्ठानेहि च आकप्पेन च मातापुत्ता एकसदिसा येवाति आहंसु ।

सा इत्थी तेसु तेसु कथेन्तेसु अत्तनो असद्वहिवा अयं मे पुत्तो भविस्सतीति सयम्पि रोदितुं आरभि । ते उभोपि कन्दित्वा रोदित्वा अञ्जमञ्जं आलिङ्गित्वा अट्ठंसु ।

अथ सो धुत्तो आह—अम्म ! कहं वससीति ?

किन्नरलीळ्हाय वसमानाय रूपसोभगपत्ताय पुरोहितस्स दहरित्थिया उपट्ठानं कुरुमाना वसाभि ताताति ।

इदानीं कहं यासि अम्माति ?

तस्सा गन्धमालादीनं अत्थायाति ।

अम्म ! किन्ते अञ्जत्थ गतेन इतो पट्ठाय ममेव सन्तिका हराति मूलं अगहेत्वाव बहूनि तम्बूल-तक्कोलादीनिचेव नाना पुष्पानि च अदासि । [२४८]

माणविका बहूनि गन्धपुष्पादीनि आहरन्ति दिस्वा—किं अम्म ! अज्ज अम्हाकं ब्राह्मणो पसन्नाति आह ।

कस्मा एवं वदसीति ?

इमेसं बहुभावं दिस्वाति ।

न ब्राह्मणो बहुं मूलं अदासि , मया पनेतं मय्हं पुत्तस्स सन्तिका आनीतन्ति ।

ततो पट्ठाय सा ब्राह्मणेन दिशं मूलं अत्तनाव गहेत्वा तस्सेव सन्तिका गन्धपुष्पादीनि आहरति । धुत्तो कतिपाह्चयेन गिलानालयं क्त्वा निपज्जि ।

सा तस्स आपणद्वारं गत्वा तं अदिस्वा—कहं मे पुत्तोति पुच्छि ।

पुत्तस्स ते अफामुकं जातन्ति ।

सा तस्स निपन्नट्ठानं गत्वा निसीदित्वा पिट्ठिं परिमज्जन्ती—किन्ते नात ! अफामुकन्ति पुच्छि,

सो तुण्ही अहोसि ।

किं न कथेसि पुत्ताति ?

अम्म ! मरन्तेनापि तुय्हं कथेतुं न सक्काति ।

मय्हं अकथेत्वा कस्स कथेसि ताताति ?

अम्म ! मय्हं अञ्जं अफामुकं नत्थि, तस्सा पन माणविकाय वण्णं सुत्वा पटिवद्धचित्तोस्मि जातो तं लभन्तो जीविस्सामि अलभन्तो इधेव मरिस्सामीति ।

तात ! मय्हं एस भारो मा त्वं एतं निस्साय चिन्तयीति ।

तं अस्सासेत्वा बहूनि गन्धपुष्पादीनि आदाय माणविकाय सन्तिकं गत्वा—पुत्तो मे अम्म ! मम सन्तिका तव वण्णं सुत्वा पटिवद्धचित्तो जातो किं कातब्बन्ति ?

सचे आनेतुं सक्कोथ मया कतोकासो येवाति ।

सा तस्सा वचनं सुत्वा ततो पट्ठाय तस्स गेहस्स कण्णकण्णेहि बहुं कच्चव्वरं संकड्ढित्वा पुष्पपच्छि-

या गहेत्वा गच्छन्ती सोधनकाले आरक्खित्थिया उपरि छड्डेसि । सा तेन अट्टियमाना अपेति । इतरा तेनेव निया-
मेन या या किञ्चि कथेति तस्सा तस्मा उपरि कचवरं छड्डेति । ततो पट्ठाय यं यं सा आहरति वा हरति
वा तं न काचि सोधेतुं उस्सहति । तस्मिं काले सा तं धुत्तं पुप्फपच्छियं निपज्जापेत्वा माणविकाय सन्तिकं
अतिहरि । धुत्तो माणविकाय सीलं भिन्दित्वा एकाहद्वीहं पासादे येव अहोसि । पुरोहिते बहि निक्खन्ते उभो
अभिरमन्ति । तस्मिं आगते धुत्तो निलीयति ।

अथ नं सा एकाहद्वीहच्चयेन-सामि ! इदानीं तव गन्तुं वट्ठतीति आह ।

अहं ब्राह्मणं पहरित्वा गन्तुकामोति ।

सा-एवं होतूति-धुत्तं निलीयापेत्वा ब्राह्मणे आगते एवमाह-अहं अय्य ! तुम्हेसु वीणं वादेन्तेसु
नच्चित्तुं इच्छामीति ।

साधु भदे ! नच्चस्सूति वीणं वादेसि ।

तुम्हेसु ओलोकेन्तेसु लज्जामि मुखं पन वो साटकेन बन्धित्वा नच्चिस्सामीति ।

सचे लज्जासि एवं करोहीति ।

माणविका घनसाटकं गहेत्वा तस्स अक्खीनि पिदहमाना मुखं बन्धि । ब्राह्मणो मुखं बन्धापेत्वा
वीणं वादेसि । सा मुहुत्तं नच्चित्त्वा-अय्य ! अहं ते एकवारं सीसे पहरितुकामाति आह ।

इत्थिलोलो ब्राह्मणो किञ्चि कारणं अजानन्तो-पहराहीति आह ।

माणविका धुत्तस्स सज्जमदासि । [२४९] सो सणिकं आगन्त्वा ब्राह्मणस्स पिट्ठिपस्से ठत्वा
सीसे कप्परेन^१ पहरि । अक्खीनि पतनाकारप्पत्तानि अहेसुं । सीसे गण्डो उट्ठहि ।

सो वेदनट्ठो हुत्वा -आहर ते हत्थन्ति आह ।

माणविका अत्तनो हत्थं उक्खिपित्वा तस्स हत्थे ठपेसि ।

ब्राह्मणो-हत्थो मुदुको पहारो पन थद्धोति आह ।

धुत्तो ब्राह्मणं पहरित्वा निलीयि । माणविका तस्मिं निलीने ब्राह्मणस्स मुखतो साटकं मोचेत्वा तेलं
आदाय सीसे पहारं सम्बाहि^२ । ब्राह्मणे बहि निक्खन्ते पुन सा इत्थी धुत्तं पच्छियं निपज्जापेत्वा नीहरि । सो
रज्जो सन्तिकं गन्त्वा सब्बं तं पवत्ति आरोचेसि ।

राजा अत्तनो उपट्ठानं आगतं ब्राह्मणं आह-दूतं कीळाम ब्राह्मणाति ।

साधु महाराजाति ।

राजा दूतमण्डलं सज्जापेत्वा पुरिमनयेनेव दूतगीतं गायित्वा पासे खिपति । ब्राह्मणो माणविकाय
तपस्स भिन्नभावं अजानन्तो-ठपेत्वा मम माणविकन्ति आह । एवं वदन्तोपि पराजितो येव ।

राजा जानित्वा-ब्राह्मण ! किं ठपेसि ? माणविकाय ते तपो भिन्नो । त्वं मातुगामं गन्धतो
पट्ठाय रक्खन्तो सत्तमु ठानेसु आरक्खं करोन्तो रक्खितुं सक्खिस्सामीति मज्जसि ? मातुगामो नाम कुच्छियं
पक्खिपित्वा चरन्तेनापि रक्खितुं न सक्का एकपुरिसिका इत्थी नाम नत्थि । तव माणविका नच्चित्तुकामाप्तीति
वत्वा वीणं वादेन्तस्स तव साटकेन मुखं बन्धित्वा अत्तनो जारं तव सीसे कप्परेन पहरापेत्वा उय्योजेसि ।
इदानीं किं ठपेसीति वत्वा इमं गायमाह-

यं ब्राह्मणो अवादेसी वीणं सम्मुखवेठितो ।

अण्डभूता भता भरिया तामु को जातु विस्ससेति ॥

तत्थ यं ब्राह्मणो अवादेसि वीणं सम्मुखवेठितोति येन कारणेन ब्राह्मणो घनसाटकेन सह मुखेन

वेठितो हुत्व। वीणं वादेसि । तं कारणं न जानातीति अत्थो । तम्पि हि सा वञ्चेतुकामा एवमकासि । ब्राह्मणो पन तं इत्थीनं बहुमायाभावं न जानन्तो मातुगामस्स सद्दहित्वा मं एसा लज्जतीति एवं सञ्जी अहोसि । तेनस्स अञ्जाणभावं पकासेन्तो राजा एवमाह । अयमेत्थ अधिप्पायो । अण्डभूता भता भरियाति अण्डं वुच्चति बीजं बीजभूता मातु कुच्छित्तो अनिक्खन्तकालेयेव आभता आनीता । भताति वा पुट्ठाति अत्थो । का सा ? भरिया पजापती पादपरिचारिका । सा हि भत्तवत्थादीहि भरितब्बताय भिन्नसंवरताय लोकधम्महि भरितब्बताय वा भरियाति वुच्चति । तासु को जातु विस्ससेति जातूति एकंसाधिवचनं । तासु मातु कुच्छित्तो पट्ठाय रक्खियमानासुपि एवं विकारं आपज्जन्तीसु भरियासु को [२५०] नाम पण्डितपुरिसो एकंसेन विस्ससे ? निब्बिकारा एता मय्हन्ति को सद्दहेय्याति अत्थो । असद्धम्मवसेन हि आमन्तकेसु निमन्तकेसु विज्जमानेसु मातुगामो नाम न सक्का रक्खितुन्ति ।

एवं बोधिसत्तो ब्राह्मणस्स धम्मं देसेसि । ब्राह्मणो बोधिसत्तस्स धम्मदेसनं सुत्वा निवेसनं गन्त्वा तं माणविकं आह—तया किर एवरूपं पापकम्मं कतन्ति ?

अय्य ! को एवमाह ? न करोमि, अहमेव पहरिं न अञ्जो कोचि । सचे न सद्दहथ अहं तुम्हे ठपेत्वा अञ्जस्स पुरिसस्स हत्थसम्फस्सं न जानामीति सच्चकिरियं कत्वा अंगि पविसित्वा तुम्हे सद्दहपेस्सामीति ।

ब्राह्मणो एवं होतूति महन्तं दारुरासि कारेत्वा अंगि दत्वा तं पक्कोमापेत्वा—सचे अत्तनो मद्दहसि अंगि पविसाति आह ।

माणविका अत्तनो परिचारिकं पठममेव सिक्खापेसि—अम्म ! तव पुत्तं तत्थ गन्त्वा मम अंगि पविसनकाले हत्थगहणं कातुं वदेहीति । सा गन्त्वा तथा अवव । धुत्तो आगन्त्वा परिसमज्जे अट्ठासि । सा माणविका ब्राह्मणं वञ्चेतुकामा महाजनमज्जे ठत्वा ब्राह्मण ! तं ठपेत्वा अञ्जस्स पुरिसस्स हत्थसम्फस्सं नाम न जानामि । इमिना सच्चेन अयं अंगि मा मं ज्ञापेसीति—अंगि पविसितुं आरद्धा ।

तस्मिं खणे धुत्तो—पस्सथ भो पुरोहितब्राह्मणस्स कम्मं एवरूपि माणवि अंगि पवेसापेतीति—गन्त्वा तं माणविकं हत्थे गण्ह । सा हत्थं विस्सज्जापेत्वा पुरोहितं आह—अय्य ! मम सच्चकिरिया भिन्ना । न सक्का अंगि पविसितुन्ति ।

किं कारणाति ?

अज्ज मया एवं सच्चकिरिया कता ठपेत्वा मम सामिकं अञ्जं पुरिसस्स हत्थसम्फस्सं न जानामीति । इदानीं चम्हि इमिना पुरिसेन हत्थे गहिताति ।

ब्राह्मणो वञ्चितो अहं इमायाति त्वा तं पोथेत्वा नीहरापेसि । एवं असद्धम्मसमन्नागता किरेता इत्थिया कीवमहन्तम्पि पापकम्मं कत्वा अत्तनो सामिकं वञ्चेतुं नाहं एवरूपं करोमीति दिवसाम्पि सपथं कुरुमाना नानाचित्ताव होन्ति । तेन वुत्तं—

“चोरीनं बहुबुद्धीनं यासु सच्चं मुदुल्लभं,
थीनं भावो दुराजानो मच्छस्सेवोदके गतं ।
मुसा तासं यथा सच्चं सच्चं तासं यथा मुसा,
गावो बहुतिणस्सेव ओमसन्ति वरं वरं ।
चोरियो कठिना हेता वाळा चपलसक्कवा,
न ता किञ्चि न जानन्ति यं मनुस्सेसु वञ्चन”न्ति ।

सत्था एवं अरक्खियो मातुगामोति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा मच्चानि पकासेमि । मच्चपरियो-साने उक्कण्ठितभिक्षु सोतापत्तिफले पतिट्ठहि । सत्थापि अनुसन्धि घट्त्वा जातकं समोधानेसि । तदा बारा-णसीराजा अहमेव अहोसिन्ति ।

३. तक्कजातकं

कोशना अकतञ्जूचाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो उक्कण्ठितभिकवुञ्जेव आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

तञ्हि सत्था सच्चं किर त्वं भिक्खु ! उक्कण्ठितोति पुच्छित्वा सच्चन्ति वुत्ते इत्थियो नाम अकत-
सञ्जू मित्तदुभा कस्मा ता निस्साय उक्कण्ठितोसीति वत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो इसिपव्वज्जं पव्वजित्वा गंगातीरे अस्समं
भापेत्वा समापत्तियो चैव अभिञ्जा च निव्वत्तेत्वा ज्ञानरतिसुखेन विहरति । तस्मिं समये बाराणसीसेट्ठिनो
धीता दुट्ठकुमारी नाम चण्डा अहोसि फरुसा दासकम्मकरे अक्कोसति पहरति । अथ नं एकदिवसं परिवार-
मनुस्सा गहेत्वा गंगाय कीळिस्सामाति अगमसु । तेसं कीळन्तानं येव सुरियत्थंगमनवेला जाता । मेघो उट्ठहि ।
मनुस्सा मेघं दिस्वा इतोचितो च वेगेन पलायिसु । सेट्ठिधीताय दासकम्मकरा अज्जम्हेहि एतिस्सा पिट्ठि
पस्सितुं वट्ठतीति तं अन्तो उदकस्मिञ्जेव छड्डेत्वा उत्तरिसु । देवो पावस्सि । सुरियोपि अत्थं गतो । अन्ध-
कारो जातो । ते ताय विनाव गेहं गन्त्वा कहं साति वुत्ते गंगातो ताव उत्तिण्णा अथ नं न जानाम कहं गताति ।
जातका विचिन्तिवा पि न पस्सिमु ।

सा महाविरवं विरवन्ती उदकेन वृहमाना अङ्गरत्तसमये बोधिसत्तस्स पण्णसालासमीपं पापुणि ।
सो तस्सा सद्दं सुत्वा मानुगामस्स सद्दो परित्तागमस्सा करिस्सामीति तिणुक्कं आदाय नदीतीरं गन्त्वा तं दिस्वा
मा भायि मा भायीति अस्सासेत्वा नागब्रलो थामसम्पन्नो नदिं तरमानो गन्त्वा तं उक्खिपित्वा अस्समपदं आने-
त्वा अग्गि कत्वा अदासि । सीते विगते मधुरानि फलाफलानि उपनामेसि । तानि खादित्वा ठितं कत्थ वासि-
कासि ? कथं च गंगायं पतितोसीति पुच्छि । सा तं पर्वति आरोचेसि । अथ नं त्वं एत्थेव वसाति पण्णसालाय
वसापेन्तो द्वीहीतीहं सयं अब्भोकासे वसित्वा इदानीं गच्छाति आह । सा इमं तापसं सीलभेदं पापेत्वा गहेत्वा
गमिस्सामीति न गच्छति । अथ गच्छन्ते काले इत्थिकुत्तं इत्थिलीळ्हं दस्सेत्वा तस्स सीलभेदं कत्वा ज्ञानं अन्तर-
धापेसि । सो तं गहेत्वा अरञ्जे येव वसति । [२५२]

अथ नं सा आह-अय्य ! किं नो अरञ्जवासेन ? मनुस्सपथं गमिस्सामाति ।

सो तं आदाय एकं पच्चन्तगामकं गन्त्वा तक्कभतियाव जीविकं कप्पेत्वा तं पोसेति । तस्स तक्कं
विकिणित्वा जीवतीति तक्कपण्डितोति नामं अकंसु । अथस्स ते गामवासिनो परिव्वयं दत्वा अम्हाकं सुयुत्त-
दुयुत्तकं आचिक्खन्तो एत्थ वसाति गामद्वारे कुटियं वासेमु ।

तेन च समयेन चोरा पव्वता ओरुह्य पच्चन्तं पहरन्ति । ते एकदिवसं तं गामं पहरित्वा गामवासि-
केहियेव भण्डानि उक्खिपापेत्वा गच्छन्ता तम्पि सेट्ठिधीतरं गहेत्वा अत्तनो वसनट्ठानं गन्त्वा सेसजनं विस्म-
ज्जेसु । चोरजेट्ठको पन तस्सा रूपे वज्झित्वा तं अत्तनो भरियं अकासि । बोधिसत्तो इत्थिन्नामा कहन्ति पुच्छि ।
चोरजेट्ठकेन गहेत्वा अत्तनो भरिया कताति च सुत्वापि न सा तत्थ मया विना वसिस्सति पलायित्वा आगच्छि-
स्सतीति तस्सा आगमनं ओलोकेन्तो तत्थेव वसि । सेट्ठिधीतापि चिन्तेसि-अहं इध सुखं वसामि । । कदाचि मं
तक्कपण्डितो किञ्चिदेव निस्साय आगन्त्वा इतो आदाय गच्छेय्य अथेतस्मा सुखा परिहायिस्सामि यन्नूनाहं

सम्पियायमाना विय तं पक्कोसापेत्वा घातापेय्यन्ति । सा एकं मनुस्सं पक्कोसित्वा—अहं इध दुक्खं जीवामि, तक्कपण्डितो मं आगन्त्वा आदाय गच्छतूति—सासनं पेसेसि ।

सो तं सासनं सुत्वा सद्दहित्वा तत्थ गन्त्वा गामद्वारे ठत्वा सासनं पेसेसि । सा निक्खमित्वा तं दिस्वा अय्य ! सचे मयं इदानीं गच्छिस्साम चोरजेट्ठको अनुबन्धित्वा उभोपि अम्हे घातेस्सति रत्तिभागे गच्छिस्सामाति तं आनेत्वा भोजेत्वा कोट्ठके निसीदापेत्वा सायं चोरजेट्ठकस्स आगन्त्वा सुरं पिवित्वा मत्तकाले—सामि ! सचे इमाय वेलाय तव सपत्तं^१ पस्सेय्यासि किन्ति नं करेय्यासीति आह ।

इदञ्चिदञ्च करिस्सामीति ।

किं पन सो दूरे ? ननु कोट्ठके निसिन्नोति ?

चोरजेट्ठको उक्कं आदाय तत्थ गन्त्वा तं दिस्वा गहेत्वा गेहमज्जे पातेत्वा कप्परादीहि यथार्हं च पोथेमि । सो पोथियमानोपि अञ्जं किञ्च अवत्वा “कोधना अकतञ्जू च पिसुणा मित्तदूभिकाति” एतकमेव वदति । चोरो तं पोथेत्वा बन्धित्वा निपज्जापेत्वा सायमासं भुञ्जित्वा सयि । पबुद्धो जिण्णाय सुराय पुन तं पोथेनुं आरभि । सोपि तानेव चत्तारि पदानि वदति । चोरो चिन्तेमि—अयं एवं पोथियमानोपि अञ्जं किञ्च अवत्वा इमानेव चत्तारि पदानि वदति पुच्छिस्सामि नन्ति तं पुच्छि—अम्भो पुरिम ! त्वं एवं पोथियमानोपि कस्मा एतानेव पदानि वदसीति ? [२५३]

तक्कपण्डितो—तेनहि सुणाहीति तं कारणं आदितो पट्ठाय कथेमि—अहं पुब्बे अरञ्ज-वासिको एको तापसो ज्ञानलाभी । स्वाहं एतं गंगाय बृह्मा तं उत्तारेत्वा पटिजग्गि । अथ मं एसा पलोभेत्वा ज्ञाना परिहापेमि । स्वाहं अरञ्जं पहाय एतं पोसेन्तो पच्चन्तगामके वसामि । अथेसा चोरेहि इधानीता अहं दुक्खं वसामि, आगन्त्वा मं नेतूति मय्हं सासनं पेसेत्वा इदानीं तव हत्थे पातेमि । इमिना कारणेनाहं एवं कथेमि ।

चोरो चिन्तेमि—या एसा एवरूपे गुणसम्पन्ने उपकारके एवं विप्पटिपज्जि सा मय्हं कतरन्नाम उपद्वं न करेय्य ? हारेतब्बा एमाति । सो तक्कपण्डितं अस्सासेत्वा तं पबोधेत्वा खगं आदाय निक्खम्म एवं पुरिसं गाम-द्वारे घातेस्सामीति वत्वा ताय सद्धिं बहिगामं गन्त्वा एतं हत्थे गण्हाति तं ताय हत्थे गाहापेत्वा खगं आदाय तक्क-पण्डितं पहरन्तो विय तं द्विधा छिन्दित्वा ससीमं नहात्वा^२ तक्कपण्डितं कतिपाहं पणीतभोजनेन सन्तप्पेत्वा—इदानीं कहं गमिस्समीति आह ।

तक्कपण्डितो—घरावासेन मे किञ्चं नत्थि इमिपव्वज्जं पव्वजित्वा तत्थेव अरञ्जे वसिस्सामि-मीति आह ।

तेन हि अहमि पव्वजिस्सामीति । उभोपि पव्वजित्वा तं अरञ्जायतनं गन्त्वा पञ्चअभिञ्जा अट्ठ च समापत्तियो निव्वन्तेत्वा जीवितपरिगोमाने ब्रह्मलोकपरायणा अहेमुं ।

सत्था इमानि द्वे वत्थून कथेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा अभिमम्बुद्धो हुत्वा इमं गाथमाह—

कोधना अकतञ्जू च पिसुणा च विभेदिका ।

ब्रह्मचरियं चर भिक्खु ! सो सुखं न विहाहिसीति ॥

तत्रायं पिण्डत्यो—भिकवु ! इत्थियो नामेता कोधना उपपन्नं कोधं निवारयेतुं न सककोन्ति । अकत-ञ्जू च अतिमहन्तमिप उपकारं न जानन्ति । पिसुणा च पियमुञ्जभावकरणमेव कथं कथेन्ति । विभेदिका मित्ते भिन्दन्ति मित्तभेदनकथं कथनसीलायेव । एवरूपेहि पापकम्मेहि समन्नागता एता किन्ते एताहि? ब्रह्मचरियं चर भिक्खु ! अयं हि मेथुनविरति परिसुद्धट्ठेन ब्रह्मचरियं नाम तं चर सो सुखं न विहाहिसि सो त्वं एतं ब्रह्म-

चरियवासं वसन्तो ज्ञानमुखं मग्गमुखं फलमुखं च न विहाहिंसि । एतं सुखं न विजहिस्ससि । एतस्मा सुखा न परिहायिस्ससीति अत्थो । न परिहायसीतिपि पाठो । अयमेवत्थो ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने उक्कण्ठितभिक्षू सोतापत्तिफले पत्तिट्ठहि । सत्थापि जातकं समोधानेसि । तदा चोरजेट्ठको आनन्दो अहोसि । तक्कपण्डितो पन अहमेवाति ।

तक्कजातकं [२५४]

४. दुराजानजातकं

मासु नन्द इच्छति मन्ति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं उपासकं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

एको किर सावत्थिवासी उपासको तीसु सरणेसु पञ्चसु च सीलेसु पतिट्ठितो बुद्धमामको धम्म-
मामको संघमामको । भरिया पनस्स दुस्सीला पापधम्मा । यं दिवसं मिच्छाचारं चरति तं दिवसं सतकीता
दासी विय होति । मिच्छाचारस्स पन अकतदिवसे सामिनी विय होति चण्डा फरुसा । सो तस्सा भावं जानितुं
न सक्कोति । अथ ताय उब्बाल्हो बुद्धपट्टानं न गच्छति । अथ नं एकदिवसं गन्धपुष्पानि आदाय आगन्त्वा
वन्दित्वा निसिन्नं सत्था आह—किन्नु खो त्वं उपासक ! सत्तट्ठदिवसे बुद्धपट्टानं नागच्छसीति ?

घरणी मे भन्ते ! एकस्मिं दिवसे सतकीता दासी विय होति एकस्मिं सामिनी विय चण्डा फरुसा ।
अहं तस्सा भावं जानितुं न सक्कोमि । स्वाहं ताय उब्बाल्हो बुद्धपट्टानं नागच्छामीति ।

अथस्स वचनं सुत्वा सत्था—उपासक ! मातुगामस्स भावो नाम दुज्जानोति । पुद्बेपि ते पण्डिता
कथयिंसु । त्वं पन तं भवसंखेपगतत्ता सत्त्वखेतुं न सक्कोसीति वत्वा तेन याचितो अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो दिसापामोक्खो आचरियो हुत्वा पञ्चमाणव-
कसतानि सिप्पं सिक्खापेति । अथेको तिरोरट्टवासिको ब्राह्मणमाणवको आगन्त्वा तस्स सत्तिके सिप्पं उग्ग-
ण्हन्तो एकाय इत्थिया पटिबद्धचित्तो हुत्वा तं भरियं कत्वा तस्मिं येव बाराणसीनगरे वसन्तो द्वे तस्सो वेला
आचरियस्स उपट्टानं न गच्छति । सा पनस्स भरिया दुस्सीला पापधम्मा । मिच्छाचारं चिण्णदिवसे दासी विय
होति । आचिण्णदिवसे सामिनी विय चण्डा फरुसा होति । सो तस्सा भावं जानितुं असक्कोन्तो ताय उब्बाल्हो
आकुलचित्तो आचरियस्स उपट्टानं न गच्छति । अथ नं सत्तट्ठदिवसे अतिक्कमित्वा आगतं—किं माणव !
न पञ्जायसीति आचरियो पुच्छि । सो—भरिया मं आचरिय ! एकदिवसं इच्छति पत्थेति दासी विय निहत-
माना होति एकदिवसे सामिनी विय थद्धा चण्डा फरुसा । अहं तस्सा भावं जानितुं न सक्कोमि । ताय
उब्बाल्हो आकुलचित्तो तुम्हाकं उपट्टानं नागतोम्हीति ।

आचरियो—एवमेतं माणव ! इत्थियो नाम दुस्सीला अनाचारं चिण्णदिवसे सामिकं अनुवत्तन्ति
दासी विय निहतमाना होन्ति । अनाचिण्णदिवसे पन मानत्थद्धा हुत्वा सामिकं न गणेन्ति । एवं इत्थियो
नामेता अनाचारा दुस्सीला तासं भावो नाम दुज्जानो । तासु इच्छन्तीसुपि अनिच्छन्तीसुपि मज्झत्तेनेव भवि-
तव्वन्ति वत्वा तस्सोवादवसेन इमं गाथमाह—

मा सु नन्दि इच्छति मं मा सु सोचि न इच्छति ।

थीनं भावो दुराजानो मच्छस्सेवोदके गतन्ति ॥

तत्थ मासु नन्दि इच्छति मन्ति सुकारो निपातमत्तं । अयं इत्थी मं इच्छति पत्थेति मयि सिनेहं करो-
तीति मा तुस्सि । मा सु सोचि न इच्छतीति अयं मं न इच्छतीतिपि मा सोचि । तस्सा इच्छमानाय नन्दि,
अनिच्छमानाय च सोकं अक्त्वा मज्झत्तोव होहीति दीपेति । थीनं भावो दुराजानोति इत्थीनं भावो नाम इत्थि-
मायाय पटिच्छन्नता दुराजानो । यथा किं ? मच्छस्सेवोदके गतन्ति यथा मच्छगमनं उदकेन पटिच्छन्नत्ता
दुज्जानं तेनेव सो केवट्टे आगते उदकेन गमनं पटिच्छादेत्वा पलायति । अत्तानं गण्हितुं न देति ।
एवमेव इत्थियो महन्तस्मिं दुस्सीलकम्मं कत्वा मयं एवरूपं न करोमाति अत्तना कतकम्मं इत्थिमायाय
पटिच्छादेत्वा सामिके वञ्चेन्ति । एवं इत्थियो नामेता पापकम्मा दुराचारा । तासु मज्झत्तो येव
सुखितो होतीति ।

एवं बोधिसत्तो अन्तेवासिकस्स ओवादं अदासि । ततो पट्टाय सो तस्सा उपरि मज्झत्तो अहोसि । सापिस्स भरिया आचरियेन किर मे दुस्सीलभावो जातोति ततो पट्टाय न अनाचारं चरि । सापि तस्स उपासकस्स इत्थी सम्मासम्बुद्धेन किर मय्हं दुराचारभावो जातोति ततो पट्टाय पापकम्मं नाम न अकासि ।

सत्थापि इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने उपासको सोतापत्तिफले पतिट्ठहि । सत्था अनुसन्धिं घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा जयम्पतिका येव इदानि जयम्पतिका । आचरियो पन अहमेव अहोसिन्ति ।

दुराजानजातकं ।

५. अनभिरतिजातकं

यथा नदी च पन्थो चाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो तथारूपं येव उपासकं आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

सो पन परिगणहन्तो तस्सा दुस्सीलभावं अत्वा च भण्डितो चित्तव्याकुलताय सत्तट्टदिवसे उपट्ठानं न आगमासि । सो एकदिवसं विहारं गत्वा तथागतं वन्दित्वा निसिन्नो कस्मा सत्तट्टदिवसानि नागतोसीति वुत्ते-भरिया मे भन्ते ! दुस्सीला । तस्सा उपरि व्याकुलचित्तताय नागतोमहीति ।

सत्था-उपासक ! इत्थीसु अनाचारा एताति कोपं अक्त्वा मज्झत्तेनेव भवितुं वट्टतीति । पुब्बेपि ते पण्डिता कथयिस्सु । त्वं पन भवन्तरेण पटिच्छन्नत्ता तं कारणं न सल्लक्खेसीति वत्वा तेन याचितो अतीतं आहरि-

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो पुरिमनयेनेव दिसापामोवखो आचरियो अहोसि । अथस्स अन्तेवासिको भरियाय दोसं दिस्वा व्याकुलचित्तताय कतिपाहं अनागन्त्वा एकदिवसं आचरियेण पुच्छित्तो तं कारणं निवेदेसि । (२५६)

अथस्स आचरियो-तात ! इत्थियो नाम सब्बसाधारणा । तासु दुस्सीला एताति पण्डिता कोपं न करोन्तीति वत्वा ओवादवसेन इमं गाथमाह-

यथा नदी च पन्थो च पानागारं सभा पपा ।

एवं लोकित्थियो नाम नासं कुञ्चन्ति पण्डिताति ॥

तत्थ यथा नदीति यथा अनेकतित्था नदी नहानत्थाय सम्पत्तसम्पत्तानं चण्डालादीनं खत्तियादीनम्पि साधारणा, न तत्थ कोचि नहायितुं न लभति नाम । पन्थोति आदीसुपि यथा महामग्गोपि सब्बेसं साधारणो, न कोचि तेन गन्तुं न लभति । पानागारम्पि सुरागेहं सब्बेसं साधारणं । यो यो पातुकामो सब्बो तत्थ पविसतेव । पुञ्जत्थिकेहि तत्थ तत्थ मनुस्सानं निवासत्थाय कता सभापि साधारणा । न तत्थ कोचि पविसितुं न लभति । महामग्गे पानीयचाटियो ठपेत्वा कता पपापि सब्बेसं साधारणा । न तत्थ कोचि पानीयं पिवितुं न लभति । एवं लोकित्थियो नाम एवमेवं तात माणव ! इमस्मिं लोके इत्थियोपि सब्बसाधारणा । तेनेव साधारणट्ठेन नदीपन्थपानागारसभापपासदिसा । तस्मा नासं कुञ्चन्ति पण्डिता एतासं इत्थीनं लामिका एता अनाचारा दुस्सीला सब्बसाधारणाति चिन्तेत्वा पण्डिता छेका बुद्धिसम्पन्ना न कुञ्चन्तीति ।

एवं बोधिसत्तो अन्तेवासिकस्स ओवादं अदासि । सो तं ओवादं सुत्वा मज्झत्तो अहोसि । भरिया-पिस्स आचरियेण किरिम्ह ज्ञाताति ततो पट्ठाय पापकम्मं न अकासि । तस्सापि उपासकस्स भरिया सत्थारा किरिम्ह ज्ञाताति ततो पट्ठाय पापकम्मं न अकासि ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने उपासको सोतापत्तिफले पतिट्ठासि । सत्थापि अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा जयम्पतिकाव एतरहि जयम्पतिका । आचरियब्राह्मणो पन अहमेव अहोसिन्ति ।

६. मुहुलक्षणेजानकं

एका इच्छा पुरे आसीति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो संकिलेसं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्यु

एको किर सावत्थिवासी कुलपुत्तो सत्थु धम्मदेसनं सुत्वा रतनसासने उरं^१ दत्वा पट्वजित्वा पटि-
पन्नको योगावचरो अविस्सट्ठकम्मट्ठानो हुत्वा एकदिवसं सावत्थियं पिण्डाय चरमानो एकं अलंकतपटियत्तं
इत्थि दिस्वा सुभवसेन इन्द्रियाणि भिन्दित्वा ओलोकेसि । तस्सवन्तरे किलेसो चलि । वासिया आकोटि-
तखीरुखो विय अहोसि । सो ततो पट्टाय किलेसवसिको हुत्वा नेव कायस्सादं न चित्तस्सादं (२५७) लभति ।
भन्तमिगसप्पटिभागो सासने अनभिरतो परूल्लहेसलोमो दीघनखो किलिट्ठचीवरो अहोसि ।

अथस्स इन्द्रियविकारं दिस्वा सहायका भिक्खू—किंनू खो ते आवुसो ! न यथा पोरानानि इन्द्रिया-
नीति पुच्छिसु ।

अनभिरतोस्मि आवुसोति ।

अथ नं ते सत्थु सन्तिकं नयिसु । सत्था किं भिक्खवे ! अनिच्छमानं भिक्खुं आदाय आगतत्थाति
पुच्छि ।

अयं भन्ते ! भिक्खु अनभिरतोति ।

सच्चं किर त्वं भिक्खु ! अनभिरतोति ?

सच्चं भगवाति ।

को तं उक्कण्ठापेसीति ?

अहं भन्ते ! पिण्डाय चरन्तो एकं इत्थि इन्द्रियाणि भिन्दित्वा ओलोकेसि । अथ मे किलेसो चलि ।
तेनम्ह उक्कण्ठतोति ।

अथ नं सत्था—अनच्छरियमेतं भिक्खु ! यं त्वं इन्द्रियाणि भिन्दित्वा धिसभागारम्मणं सुभवसेन
ओलोकेन्तो किलेसेहि कम्पितो । पुब्बे पञ्चाभिञ्जाअट्टसमापत्तिलाभिणो ज्ञानवलेन किलेसे विवखम्भेत्वा
विसुद्धचित्ता गगनतलचरा बोधिसत्तापि इन्द्रियाणि भिन्दित्वा विसभागारम्मणं ओलोकयमाना ज्ञाना परि-
हायित्वा किलेसेहि कम्पिता महादुक्खं अनुभविंसु । नहि सिनेरुउप्पाटनकवातो हत्थिमत्तमुण्डपव्वतकं महा-
जम्बुउम्मूलकवातो छिन्नतटे विरुल्लहगच्छकं महासमुदं वा पन सोसनकवातो खुदकतलाकं किस्मिचि देव गण्हति,
एवं उत्तमब्रुद्धीनं नाम विसुद्धचित्तानं बोधिसत्तानं अञ्जाणभावकरा किलेसा तथि किं लज्जिस्सन्ति ? विसु-
द्धापि सत्ता संकिलिस्सन्ति । उत्तमयससमगिंनोपि अयसं पापुणन्तीति वत्वा अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीने बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तोकासिरट्ठे एकस्स महाविभवस्स ब्राह्मणस्स कुले
निब्वत्तित्वा विञ्जुनं पत्तो सब्बसिप्पानं पारं गत्वा कामे पहाय इसिपव्वज्जं पव्वजित्वा कसिणपरिकम्मं
कत्वा अभिञ्जा च समापत्तियो च उप्पादेत्वा ज्ञानसुखेन वीतिनामेन्तो हिमवन्तप्पदेसे वासं कप्पेसि । सो
एकस्मिं काले लोणम्बलसेवनत्थाय हिमवन्ता ओतरित्वा बाराणसियं पत्वा राजुय्याने वसित्वा पुनदिवसे कत-
सरीर-पटिजगगो रत्तवाकमयं निवासनपारुपनं सण्ठपेत्वा अजिनं एकस्मिं अंसे कत्वा जटामण्डलं बन्धित्वा
खारिकामजादाय बाराणसियं भिक्खाय चरमानो रज्जो घरद्वारं पापुणि ।

राजा चस्स चरियाविहारो^१ येव पसीदित्वा पक्कोसापेत्वा महारहे आसने निसीदापेत्वा पणीतेन खादनीयभोजनीयेन सन्तप्पेत्वा तं कतानुमोदनं उय्याने वसनत्थाय याचि ।

सो सम्पटिच्छित्वा राजगेहे भुञ्जित्वा राजकुलं ओववदमानो तस्मिं उय्याने सोलसवस्सानि वसि । अथेकदिवसं राजा कुपितं पच्चन्तं वूपसमेतुं गच्छन्तो मुदुलक्खणं नाम अगममहेसिं (२५८) अप्पमत्ता अय्यस्स उपट्टानं करोहीति वत्वा अगमासि । बोधिसत्तो रञ्जो गतकालतो पट्टाय अत्तनो रुच्चनवेलाय गेहं गच्छति । अथेकदिवसं मुदुलक्खणा बोधिसत्तस्स आहारं सम्पादेत्वा अज्ज अय्यो चिरायतीति गन्धोदकेन नहायित्वा सब्बालंकारपतिमण्डिता महातले चुल्लसयनं पञ्चापेत्वा बोधिसत्तस्स आगमनं ओलोकयमाना निपज्जि ।

बोधिसत्तोपि अत्तनो वेलं सल्लक्खेत्वा ज्ञाना वट्टाय आकासेनेव राजनिवेसनं अगमासि । मुदुलक्खणा वाकचीरसद्दं सुत्वाव अय्यो आगतोति वेगेन उट्ठहि । तस्सा वेगेन उट्ठहन्तिया महसाटको भस्सि । तापसो सीहपञ्जरेण पविसन्तो देविया विसभागरूपारम्मणं दिस्वा इन्द्रियाणि भिन्दित्वा सुभवसेन ओलोकेसि । अथस्स अब्भन्तरे किलेसो चलि । वासिया पहट्खीरुक्खो विय अहोसि । तावदेवस्स ज्ञानं अन्तरधायि । छिन्नपक्खो काको विय अहोसि । सो टितकोव आहारं गहेत्वा अभुञ्जित्वाव किलेसकम्पितो पासादा ओरुह् उय्यानं गन्त्वा पण्णसालं पविसित्वा फलकत्थरसयनस्स हेट्ठा आहारं ठपेत्वा विसभागारम्मणे बद्धो किलेसग्गिना ड्य्हमानो निराहारताय सुखमानो सत्तदिवसानि फलकत्थरके निपज्जि ।

सत्तमे दिवसे राजा पच्चन्तं वूपसमेत्वा आगतो नगरं पदविखणं कत्वा निवेसनं अगन्त्वाव अय्यं परस्सामीति उय्यानं गन्त्वा पण्णसालं पविसित्वा तं निपन्नकं दिस्वा एकं अफासुकं जातं मञ्जोति पण्णसालं सोधापेत्वा पादे परिमज्जन्तो—किं अय्य ! अफासुकन्ति पुच्छि ।

महाराज ! अञ्जं मे अफासुकं नत्थि, किलेसवमेन पनम्हि पटिबद्धचित्तो जातोति ।

कहं पटिबद्धन्ते अय्य ! चित्तन्ति ?

मुदुलक्खणाय महाराजाति ।

साधु अय्य ! अहं मुदुलक्खणं तुम्हाकं दम्मीति तापसं आदाय निवेसनं पविसित्वा देवि सब्बालंकारपतिमण्डितं कत्वा तापसस्स अदासि । ददमानो येव मुदुलक्खणाय सञ्जामदासि तया अत्तनो वलेन अय्यं रक्खितुं वायमित्तवन्ति ।

साधु देव ! रक्खिस्सामीति ।

तापसो देवि गहेत्वा राजनिवेसना ओतरि । अथ नं महाद्वारतो निक्खन्तकाले—अय्य ! अम्हाकं एकं गेहं लद्धुं वट्ठति । गच्छ राजानं गेहं याचाहीति आह ।

तापसो गन्त्वा गेहं याचि । राजा मनुस्सानं वच्चकुटिकिच्चं साधयमानं एकं छड्डितं गेहं दापेसि । सो देवि गहेत्वा तत्थ अगमासि । सा पविसित्तुं न इच्छति ।

किं कारणा न पविससीति ?

असुचिभावेनाति ।

इदानीं किं करोमीति ?

पटिजग्गाहि नन्ति वत्वा रञ्जो सन्निकं पेसेत्वा गच्छ, कुद्दालं आहर, पच्छिं आहराति आहरापेत्वा अमुचिं च संकारञ्च छड्डापेत्वा गोमयं आहरापेत्वा लिम्पापेत्वा पुनपि गच्छ मञ्चं आहर, दीपं आहर, अत्थरणं आहर, चाटि (२५९) आहर, घटं आहराति एकमेकं आहरापेत्वा पुन उदकाहरणादीनं अत्थाय आणापेसि । सो घटं आदाय उदकं आहरित्वा चाटिं पूरेत्वा नहानीदकं सज्जेत्वा सयनं अत्थरि ।

अथ नं सयने एकतो निसीदन्तं फासुकासु गहेत्वा आकड्डित्वा तव समणभाक्कं वा ब्राह्मणभावं वा न जानासीति ओनमेत्वा अत्तनो अभिमुखं आकड्डि । सो तस्मिं काले सति पटिलभि । एत्तके पन काले अञ्जा-

णो अहोसि । एवं अञ्जाणकरणा किलेसा नाम । “कामच्छन्दनीवरणं भिक्खवे ! अन्धकरणं अञ्जाण-
करणं”न्ति आदिमेत्थ वत्तव्वं । सो सति पटिलभित्वा चिन्तेसि । अयं तण्हा वड्ढमाना मम चतूहि अपायेहि
सीसं उक्खिपितुं न दस्सति अञ्जेव मया इमं रञ्जो निय्यादेत्वा हिमवन्तं पविमितुं वट्ठतीति । सो तं आशय
राजानं उपसंकमित्वा—महाराज ! तव देविया मय्हं अत्थो नत्थि, केवलं मे इमं निस्साय तण्हा वड्ढिताति
वत्वा इमं गाथमाह :-

एका इच्छा पुरे आसि अलद्धा मुदुलक्खणं ।

यतो लद्धा अलारक्खी इच्छा इच्छं विजायथाति ॥

तत्रायं पिण्डत्थोः—महाराज ! मय्हं इमं तव देवि मुदुलक्खणं अलभित्वा पुरे अहो वताहं एतं
लभेय्यन्ति एका इच्छा आसि एकाव तण्हा उप्पज्जि । यतो पन मे अयं अलारक्खी विमालनेत्ता सोभनलोचना
लद्धा अथ मे सा पुग्गिमिका इच्छा गेहण्हं उपकरणण्हं उपभोगण्हन्ति उपरूपरि अञ्जं नानप्पकारं इच्छं
विजायथ जनेमि, उप्पादेमि । सा खो पन मे एवं वड्ढमाना इच्छा अपायतो सीसं उक्खिपितुं न दस्सति ।
अलम्मे इमाय भग्गियाय त्वं येव तव भग्गियं गण्ह । अहं पन हिमवन्तं गमिस्सामीति ।

तावदेव नट्ठं ज्ञानं उप्पादेत्वा आकामे निमिन्नो धम्मं देसेत्वा रञ्जो ओवावं दत्वा आकासेनेव हिम-
वन्तं गत्वा पुन मनुस्सपथं नाम नागमामि । ब्रह्मविहारे पन भावेत्वा अपग्गिहीनज्ज्ञानो ब्रह्मलोके निव्वति ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेमि । सच्चपग्गियोसाने सो भिक्खु अग्गहत्ते येव पत्ति-
ट्ठासि । सत्थापि अनुमन्थि घटेत्वा जातकं समोधानेमि । तदा राजा आनन्दो, मुदुलक्खणा उप्पलवण्णा,
इसि पन अहमेवाति ।

मुदुलक्खणा जातकं ।

७. उच्छृङ्खलातकं

उच्छृङ्गे देव ! मे पुत्तोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अञ्जातरं जानपदित्थिं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपञ्चवत्थु

एकस्मिं हि समये कोसलरट्ठे तयो जना अञ्जातरस्मि अटविमुखे कसन्ति । (२६०) तस्मिं समये अन्तोअटवियं चोरा मनुस्से विलुम्पित्वा पलायिंसु । मनुस्सा ते चोरे परियेसित्वा अपस्सन्ता तं ठानं आगन्त्वा तुम्हे अटवियं विलुम्पित्वा इदानीं कस्सका विय होथाति । ते चोरा इमेति बन्धित्वा आनेत्वा कोसलरञ्जो अदंसु । अथेका इत्थी आगन्त्वा अच्छादनम्मे देथ, अच्छादनम्मे देथाति परिदेवन्ती पुनप्पुनं राजनिवेसनं परियाति । राजा तस्सा सद्दं सुत्वा देथिमिस्सा अच्छादनन्ति आह । साटकं गहेत्वा अदंसु । सा तं दिस्वा नाहं एतं अच्छादनं याचामि, सामिकच्छादनं याचामीति आह । मनुस्सा गन्त्वा रञ्जो निवेदयिंसु न किरेसा इमं अच्छादनं कथेति सामिकच्छादनं कथेतीति ।

अथनं राजा पक्कोसापेत्वा—त्वं किर सामिकच्छादनं याचसीति पुच्छि ।

आम देव ! इत्थिया हि सामिको अच्छादनं नाम । सामिकम्हि असति सहस्समूलम्पि साटकं निवत्था इत्थी नग्गा येव नाम । इमस्स पत्तत्थस्स साधनत्थं :—

“नग्गा नदी अनोदिका नग्गं रट्ठं अराजिकं,
इत्थीपि विधवा नग्गा यस्सापि दस भातरो”ति ।

इदं सुत्तं आहरितव्वं । राजा तस्सा पसन्नो इमे ते तयो जना के होन्तीति पुच्छि ।

एको मे देव ! सामिको, एको भाता, एको पुत्तोति ।

राजा-अहन्ते तुट्ठो इमेसु तीसु एकं देमि । कतमं इच्छसीति पुच्छि ।

सा आह—अहं देव ! जीवमाना एकं सामिकं लभिस्सामि, पुत्तम्पि लभिस्सामेव, मातापितुष्वं पन मे मतत्ता भाताव दुल्लभो । भातरम्मे देहि देवाति ।

राजा तुस्सित्वा तयोपि विस्सज्जेमि । एवं तं एकिकं निस्साय तयो जना दुक्खतो मुत्ता । तं कारणं भिक्खुसङ्घे पाकटं जातं । अथेकदिवसं भिक्खू धम्मसभायं सन्निपतिता—आवुमो ! एकं इत्थि निस्साय तयो जना दुक्खा मुत्ताति तस्सा गुणकथाय निसीदिमु ।

सत्था आगन्त्वा कायनुत्थ भिक्खवे एतरहि कथाय सन्निमिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते—
न भिक्खवे ! एमा इत्थी इदानेव ते तयो जने दुक्खा मोचेमि, पुब्बेपि मोचेमि येवानि वत्वा अनीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदाने रज्जं कारेन्ते तयो जना अटविमुखे कसन्तीति सब्बं पुरिममदिसमेव । तदा पन रञ्जा तीसु जनेसु कं इच्छसीति वुत्ते सा आह—तयोपि दातुं न मक्कोथ देवानि ।

आम न सक्कोमीति ।

मचे तयो दातुं न सक्कोथ, भातरम्मे देथानि ।

पुत्तकं वा सामिकं वा गण्ह, किन्ते भातरानि च वुत्ता—एते नाम देव ! सुलभा, भाता पन दुल्लभोति वत्वा इमं गाथमाहः—

उच्छृङ्गे देव ! मे पुत्तो पथे धावन्तिया पति ।

तच्च देसं न पस्सामि यतो सोवरियमानयेति ॥ (२६१)

तत्थ उच्छङ्गे देव ! मे पुत्तोति देव ! मय्हं पुत्तो उच्छङ्गे येव । यथा हि अरञ्जं पविसित्वा उच्छङ्गे कत्वा साकं^१ उच्चिनित्वा तत्थ पक्खपन्तिया उच्छङ्गे साकं नाम सुलभं होति, एवं इत्थिया पुत्तोपि सुलभो । उच्छङ्गेसाकसदिसोव । तेन वृत्तं—उच्छङ्गे देव ! मे पुत्तोति । पथे धावन्तिया पतीति मग्गं आरुह् एकिकाय गच्छमानायपि हि इत्थिया पति नाम सुलभो दिट्ठादिट्ठे येव होति । तेन वृत्तं—पथे धावन्तिया पतीति । तञ्च देसं न पस्सामि यतो सोऽरियमानयेति यस्मा पन मे मातापितरो नत्थि तस्मा इदानीं तं मातुकुच्छिसङ्खानं अञ्जं देसं न पस्सामि यतो अहं समाने उदरे जातत्ता सहउदरियसङ्खातं भातरं आनेय्यं, तस्मा भातरं येव मे देयाति । राजा सच्चं एमा वदतीति तुट्ठचित्तो तयोपि जने बन्धनागारतो आनेत्वा अदासि । सा तयोपि ते जने गहेत्वा गता ।

सत्थापि न भिक्खवे ! इदानेव पुब्बपेमा इमे तयो जने दुक्खा मोचेसि येवाति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेमि । अतीते चत्तारो एतरहि चत्तारोव । राजा पन अहं तेन समयेनानि ।

उच्छङ्गजातकं ।

८. साकेतजातकं

यस्मिं मनौ निविसतीति इदं सत्था साकेतं निसाय अञ्जनवने विहरन्तो एकं ब्राह्मणं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपुत्रवत्थु

भगवतो किर भिक्खुसङ्घपरिवृतस्स साकेतं निस्साय अञ्जनवनं पविसनकाले एको साकेतनगरवासी महल्लकब्राह्मणो नगरतो बहि गच्छन्तो अन्तरद्वारे दसवलं दिस्वा पादेसु पतित्वा गोप्फकेसु गाल्हं गहेत्वा—तात ! ननु नाम पुत्तेहि जिण्णकाले मातापितरो पटिजगितब्बा ? कस्मा एत्तकं कालं अम्हाकं अत्तानं न दस्सेसि ? मया ताव दिट्ठोसि मातरं पन पस्सितुं एहीति—सत्थारं गहेत्वा अत्तनो गेहं अगमासि । सत्था तत्थ गन्त्वा निसीदि पञ्चत्ते आसने सद्धि भिक्खुसङ्घेन । ब्राह्मणीपि इदानि मे पुत्तो आगतोति आगन्त्वा सत्थु पादेसु पतित्वा—तात ! एत्तकं कालं कहां गतोसि ? ननु नाम मातापितरो महल्लका उपट्ठातब्बाति परिदेवि । पुत्तधीतरोपि एत्थ भातरं वन्दथाति वन्दापेसि । उभो तुट्ठमानसा महादानं अदंसु । सत्था भत्तकिच्चं निट्ठापेत्वा तेसं द्विन्नम्पि जनानं जरासुत्तं कथेसि । सुत्तपरियोसाने उभोपि अनागामिफले पतिट्ठहिमु । सत्था उट्ठायासना अञ्जनवनमेव अगमासि ।

भिक्खू धम्मसभायं सन्निसिन्ना कथं समुट्ठापेसुं—आवुसो ! ब्राह्मणो तथागतस्स पिता सुद्धोदनो, माता (२६२) महामायाति जानाति । जानन्तोव सद्धि ब्राह्मणिया तथागतं अम्हाकं पुत्तोति वदति । सत्थापि अधिवामेति । किन्नु खो कारणन्ति ?

सत्था तेसं कथं सुत्वा—भिक्खो ! उभोपि ते अत्तनो पुत्तमेव पुत्तोति वदन्तीति वत्वा अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

भिक्खवे ! अयं ब्राह्मणो अतीते निरन्तरं पञ्चजातिसतानि मय्हं पिता अहोसि । पञ्चजातिसतानि चुल्लपिता, पञ्चजातिसतानि महापिता, एसापि ब्राह्मणी निरन्तरमेव पञ्चजातिसतानि माता अहोसि, पञ्चजातिसतानि चुल्लमाता, पञ्चजातिसतानि महामाता । एवाहं दियड्ढजातिसहस्सं ब्राह्मणस्स हत्थे संवड्ढो दियड्ढजातिसहस्सं ब्राह्मणिया हत्थे संवड्ढोति तीणि जातिसहस्सानि कथेत्वा अभिसम्बुद्धो हुत्वा इमं गाथमाहः—

यस्मिं मनो निविसति चित्तं वापि पसीदति,

अदिट्ठपुब्बके पोसे कामं तस्मिम्पि विस्ससेति ।

तत्थ—यस्मिं मनो निविसतीति यस्मिं पुगले दिट्ठमत्ते येव चित्तं पतिट्ठाति । चित्तं वापि पसीदतीति यस्मिं दिट्ठमत्ते चित्तं पसीदति मुदुकं होति । अदिट्ठपुब्बके पोसेति पकनिया तस्मिं अत्तभावे अदिट्ठपुब्बेपि पुगले । कामं तस्मिम्पि विस्ससेति अनुभूतपुट्ठवसिनेहेनेव तस्मिम्पि पुगले एकसेन विस्समेति विम्सासं आपज्जति येवाति अत्थो ।

एवं सत्था इमं धम्मदेमनं आहरित्वा अनुसन्धिं घटेत्वा जानकं समोधानेसि । तदा ब्राह्मणो च ब्राह्मणी च एते एव अहेसुं । पुत्तोपि अहमेवाति ।

साकेतजानकं ।

९. विसवन्तजातकं

धिरत्यु तं विसं वन्तन्ति इदं सत्था जतवने विहरन्तो धम्मसेनापति आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

थेरस्स किर पिट्ठखज्जकं खादनकाले मनुस्सा संघस्स बहुं पिट्ठखादनीयं गहेत्वा विहारं अगमंमु । भिक्खुमङ्गलस्स गहितावसेसं बहुं अनिरित्तं अहोसि । मनुस्सा—भन्ते ! अन्तोगामगतानम्पि गण्हथाति आहंसु । तस्मि खणे थेरस्स सद्धिविहारी दहरो अन्तोगामं गतो होति । तस्म कोट्टामं गहेत्वा तस्मि आनागच्छन्ते अति-दिवाहोतीति थेरस्स अदंम् । थेरेन तस्मि परिभुत्ते दहरो आगमासि ।

अथ नं थेरो—मयं आवुसो ! तुय्हं ठपितखादनीयं परिभुज्जिम्हाति आह ।

सो—मत्तुरं नाम भन्ते ! कस्स अप्पियन्ति आह ।

महाथेरस्स संवेगो उदपादि । गो इतो पट्ठाय पिट्ठखादनीयं न खादिस्सामीति अधिट्ठहि । ततो पट्ठाय किर सारिपुत्तयेरेन पिट्ठखादनीयं नाम न खादिनपुव्वं । तस्म पिट्ठखादनीयं अखादनभावो भिक्खुसङ्घे [२६३] पाकटो जातो । भिक्खु तं कथं कथेन्ता धम्मसभायं सन्निमीदिम् ।

अथ सत्था—कायनुत्थ भिक्खवे ! एतर्हि कथाय सन्निष्ठाति पुच्छि । इमाय नामाति च वुत्ते भिक्खवे ! सारिपुत्तो एकवारं जहितकं जीवितं परिच्चजन्तोपि न गण्हति येवानि वत्वा अतीतं आहरि :—

अतीतवत्थु

अतीने वाराणमियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तोपि विसवेज्जकुले निव्वन्तित्वा वेज्जकम्मेन जीविकं कप्पेति । अथेकं जनपदमनुस्सं सप्पो डमि । तस्स ज्ञातका पमादं अकत्वा खिप्पं वेज्जं आनयिसु ।

वेज्जो आह—किन्ताव ओसथेन, परिभावित्वा विसं हगमि । दट्ठमप्पं आवाहेत्वा दट्ठानतो तेनेव विसं आकड्ढापेमीति ।

मप्पं आवाहेत्वा विसं आकड्ढापेहीति ।

सो सप्पं आवाहेत्वा तथा अयं दट्ठोति आह ।

आम मयाति ।

तथा दट्ठानतो त्वं येव मुखेन विसं आकड्ढाहीति ।

मया एकवारं जहितकविसं पुन न गहितपुव्वं । नाहं मया जहितविसं कड्ढिस्सामीति ।

सो दारुणि आहरापेत्वा अग्गि कत्वा आह—सवे अत्तनो विमं नाकड्ढसि इमं अग्गिं प विसाति । सप्पो अपि अग्गि पविसिस्सामि नेवत्तना एकवारं जहितविसं पच्चावमिस्सामीति वत्वा इमं गाथमाहः—

धिरत्यु तं विसं वन्तं यमहं जीवितकारणा,

वन्तं पच्चावमिस्सामि मतम्मे जीविता वरन्ति ।

तत्थ धिरत्युति गरहणत्थे निपातो । तं विसन्ति यमहं जीवितकारणा वन्तं विसं पच्चावमिस्सामि तं वन्तं विसं धिरत्यु । मतम्मे जीविता वरन्ति तस्स विमस्स अपच्चावमनकारणा यं अग्गि पविसित्वा मरणं, तं मम जीविततो वरन्ति अत्थो ।

एवञ्च पन वत्वा अग्गि पविसितु पायासि । अथ नं वेज्जो निवारेत्वा नं पुरिसं ओसधेहि च मन्तेहि च निव्विसं अरोगं कत्वा सप्पस्स सीलानि दत्वा इतो पट्ठाय मा कञ्चि विहेठेहीति विस्सज्जेसि ।

सत्थापि न भिक्खवे ! सारिपुत्तो एकवारं जहितकं जिवितम्पि परिच्चजन्तो पुन गण्हतीति इमं धम्म-देसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा सप्पो सारिपुत्तो अहोसि । वेज्जो पन अहमेवाति ।

विसवन्तजातकं ।

१०. कुदालजातकं

न तं जितं साधु जितन्ति इदं सत्था जेतवर्णे विहरन्तो चित्तहृत्थसारिपुत्तथेरं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

सो किर सावत्थियं एको कुलदारको । अथकदिवसं कसित्वा आगच्छन्तो विहारं पविसित्वा एकस्स थेरस्स पत्ततो सिनिद्धं मधुरं पणीतभोजनं लभित्वा चिन्तेसि—मयं रत्तिं दिवं सहत्थेन नाना कम्मानि कुरु-
मानापि एवरूपं मधुराहारं न लभाम, मयापि समणेन भवितव्वन्ति ।

सो पव्वजित्वा मासद्वमासच्चयेन अयोनिस्सो मनसिकरोन्तो किलेसवसिको हुत्वा विव्वभमित्वा पुन भत्तेन किलमन्तो आगन्त्वा पव्वजित्वा अभिधम्मं उग्गण्ह । इमिनाव उपायेन छ्वारे विव्वभमित्वा पव्वजितो । ततो सत्तमे भिक्खुभावे सत्तप्पकरणिको हुत्वा बहूभिक्खू धम्मं वाचेन्तो विपस्सनं वड्ढेत्वा अरहत्तं पापुणि । अथस्स सहायका भिक्खू—किन्नुखो आवुसो ! चित्त ! पुव्वे विय ते एतरहि किलेसा न वड्ढेन्तीति परिहासं करिस्सु ।

आवुसो ! अभव्वो दानाहं इतो पट्ठाय गिहीभावस्साति ।

एवं तस्मिं अरहत्तं पत्ते धम्मसभायं कथा उदपादि—आवुसो ! एवरूपस्स नाम अरहत्तस्स उपनिस्सये सति आयस्मा चित्तहृत्थसारिपुतो छक्खत्तुं उप्पव्वजितो । अहो ! महादोसो पुथुज्जनभावोति ।

सत्था आगन्त्वा कायनुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते—
भिक्खवे ! पुथुज्जनचित्तं नाम लहुकं दुन्निग्गहं, आरम्भणवसेन गन्त्वा अल्लीयति । एक वारं अल्लीनं न सक्का होति खिप्पं मोचेत्तु । एवरूपस्स चित्तस्स दमथो साधु । दन्तमेव हि तं सुखं आवहतीति वत्वा आह—

“दुन्निग्गहस्स लहुतो यत्थ कामनिपातिनो,
चित्तस्स दमथो साधु चित्तं दन्तं सुखावहं” ।^१

तस्स पन दुन्निग्गहणताय पुव्वेपि पण्डिता एकं कुदालकं निस्साय तं जहितुं असक्कोन्ता लोभवसेन छक्खत्तुं उप्पव्वजित्वा सत्तमे पव्वजितभावे भानं उप्पादेत्वा तं लोभं निग्गण्हिम्मूति वत्वा अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो मणिककुले निव्वन्त्तिवा विञ्जुत्तं पापुणि । कुदालपण्डितोतिस्स नाम अहोसि । सो कुदालकेन भूमिपरिकम्मं कत्वा साकञ्चेव अलावुकुब्भण्डिणालुकादीनि च वपित्वा तानि विक्रिणन्तो कपणजीविकं कप्पेति । तं हिम्म एकं कुदालकं ठपेत्वा अञ्जं धनं नाम नत्थि । सो एकदिवसं चिन्तेसि किम्मे घरावासेन ? निक्खमित्वा पव्वजिस्सामीति । अथेकदिवसं तं कुदालकं पटि-
च्छन्नट्टाने ठपेत्वा इमिपव्वज्जं पव्वजित्वा तं कुदालकमनुस्मरित्वा लोभं छिन्दितुं अमक्कोन्तो कुण्ठ-
कुदालकं निस्साय उप्पव्वजि । एवं दुतियं ततियम्पीति छ वारे तं कुदालकं पटिच्छन्ने ठाने निक्खिपित्वा पव्वजितो चेवुप्पव्वजितो च । [२६५]

सत्तमे पन वारे चिन्तेसि अहं मम इमं कुण्ठकुदालकं निस्साय पुत्तपुत्तं उप्पव्वजितो । इदानि तं महा-
नदियं पक्खिपित्वा पव्वजिस्सामीति । नदीतीरं गत्वा सच्चस्स पतितट्टानं पस्मिस्सामि पुनागन्त्वा उद्धरितु-
कामता भेदेय्यानि तं कुदालकं दण्डे गहेत्वा नागबलो थामसम्पन्नो सीमस्म उपरिभागे तिक्खत्तुं
आविञ्जेत्वा^२ अक्खीनि निम्मीलेत्वा नदीमज्जे खिपित्वा जितं मे जितं मेति तिक्खत्तुं सीहनादं नदि ।

१ धम्मपद, चित्तवग्गो ।

२ स्या०—आविज्झित्वा ।

तस्मिन् खणे बाराणसीराजा पञ्चन्तं वूपसमेत्वा आगतो नदिया सीसं नहायित्वा सब्बालङ्कारपति—मण्डितो हृत्थिक्खन्धेन गच्छमानो तं बोधिसत्तस्स सद्दं सुत्वा अयं पुरिसो जितं मेति वदति, कोनुखो एतेन जितो ? पक्कोसथ नन्ति पक्कोमापेत्वा—भो ! पुरिस ! अहं ताव विजितसङ्गामो इदानीं जयं गहेत्वा आगच्छामि, तथा पन को जितोति पुच्छि ।

बोधिसत्तो—महाराज ! तथा सङ्गाम-सहस्सम्पि सङ्गामसत्तसहस्सम्पि जिनन्तेन दुज्जितमेव किलेसानं अजितत्ता । अहं पन अब्भत्तरे लोभं निग्गण्हन्तो किलेसे जिणन्ति कथेन्तो येव महानदि ओलोकेत्वा आपोकसिणारम्मणं भानं निव्वत्तेत्वा सम्पत्तानुभावो आकासे निसिदित्वा रञ्जो धम्मं देसेन्तो इमं गाथमाह—

न तं जितं साधु जितं यं जितं श्रवजीयति,
तं खो जितं साधु जितं यं जितं नावजीयतीति ।

तत्थ न तं जितं साधु जितं यं जितं श्रवजीयतीति यं पञ्चामित्ते पराजित्वा रट्टं जितं पटिलद्धं पुन जितेहि पञ्चामित्तेहि अवजीयति तं जितं साधु नाम न होति । कस्मा ? पुन अवजीयनतो । अपरो नयो-जितं बुच्चति जयो । यो पञ्चामित्तेहि सद्धिं युज्झित्वा अधिगतो जयो पुन तेसु जिनन्तेसु पराजयो होति सो न साधु, न सोभनो । कस्मा ? यस्मा पुन पराजयोव होति । तं खो जितं साधु जितं यं जितं नाव जीयतीति यं खो पन पञ्चामित्ते निम्मथत्वा जितं पुन तेहि नावजीयति, यो वा एकवारं लद्धो जयो पुन पराजयो न होति तं जितं साधु जितं सोभनं । सो जयो साधु सोभनो नाम होति । कस्मा ? पुन नावजीयनतो । तस्मा त्वं महाराज ! सहस्सक्खन्तुम्पि सत्तसहस्सक्खन्तुम्पि सङ्गामसीमं जिणित्वापि सङ्गामयोधो नाम न होति । किं कारणा ? अत्तनो किलेसानं अजितत्ता । यो पन एकवारम्पि अत्तनो अब्भन्तरे किलेसे जिनाति अयं उत्तमो सङ्गामसीमयोधोति आकासे निसिन्नको एवं बुद्धलील्हाय रञ्जो धम्मं देसेसि । उत्तमसङ्गामयोध-भावो पनेत्थ :—

“यो सहस्सं सहस्सेन सङ्गामे मानुमे जिने,
एकं च जेय्यं मत्तानं स वे सङ्गामजुत्तमो”ति ।^१

इदं सुत्तं साधकं । रञ्जो पन धम्मं सुणन्तस्सेव तदङ्गपहानवसेन किलेमा पहीणा पव्वज्जाय चित्तं नमि । राजबलस्सापि तथेव किलेसा पहीयिसु ।

राजा—इदानीं तुम्हे कहं गमिस्सथाति ? बोधिसत्तं पुच्छि ।

हिमवन्तं पविसित्वा इसिपव्वज्जं पव्वजिस्सामि महाराजाति ।

राजा तेनहि अहम्पि पव्वजिस्सामीति बोधिसत्तेनेव सद्धिं निक्खमि । बलकायो ब्राह्मणगहपतिका सब्बा सेणियोति सब्बोपि तस्मिन् ठाने सन्निपतितो जनकायो रञ्जो सद्धिं येव निक्खमि । बाराणसीवासिनो अम्हाकं किर राजा कुद्दालपण्डितस्स धम्मदेसनं सुत्वा पव्वज्जाभिमुखो हुत्वा सद्धिं बलकायेनेव निक्खन्तो मयं इध किं करिस्सामाति द्वादसयोजनिकाय बाराणसिया सकलनगरवासिनो निक्खमिस्सु । द्वादसयोजनिका परिसा अहोसि । तं आदाय बोधिसत्तो हिमवन्तं पाविसि तस्मिन् खणे सक्कस्स देवरञ्जो निसिन्नासनं उण्हा-कारं दस्सेसि ।

सो आवज्जमानो कुद्दालपण्डितो महाभिनिक्खमणं निक्खन्तोति दिस्वां महासमागमो भविस्सति वसनट्टानं लद्धुं वट्ठतीति विस्सकम्मं^२ आमन्तेत्वा—तात ! कुद्दालपण्डितो महाभिनिक्खमणं निक्खन्तो वसन-ट्टानं लद्धुं वट्ठति । त्वं हिमवन्तप्पदेसं गत्वा समभूभिभागे दीघसो तिसयोजनं वित्थारतो पण्णरसयोजनं अस्समपदं मापेहीति आह । सो साधु देवाति पटिस्सुत्वा गत्वा तथा अकासि । अयमेत्थ सङ्खेपो । वित्थारो पन हृत्थीपालजातके आवीभविस्सति । इदञ्च हि तञ्च एकपरिच्छेदमेव ।

१ धम्मपद, सहस्सवग्गो ।

२. स्या०—विस्सुकम्मं

विस्सकम्मोपि अस्समपदे पणसालं मापेत्वा दुस्सद्दे मिगे च सकुणे च अमनुस्से च पटिक्कमापेत्वा तेन तेन दिसाभागेन एकपदिकमगं निम्मिनित्वा अत्तनो वसनट्टानमेव अगमासि । कुट्टालपण्डितोपि तं परिसं आदाय हिमवन्तं पविसित्वा सक्कदत्तियं अस्समपदं गन्त्वा विस्सकम्मेन मापितं पब्बजित-परिक्खारं गहेत्वा पठमं अत्तना पब्बजित्वा पच्छा परिसं पब्बाजेत्वा अस्समपदं भाजेत्वा अदासि । सत्त राजानो सत्त रज्जानि छड्डुयिसु । तिसयोजनं अस्समपदं पूरि । कुट्टालपण्डितो सेसकसिणेषुपि परिकम्मं कत्वा ब्रह्मविहारे भावेत्वा परिसाय कम्मट्टानं आचिक्खि । सब्बे समापत्तिलाभिनो हुत्वा ब्रह्मविहारे भावेत्वा ब्रह्मलोक-परायणा अहेसु । ये पन तेसं पारिचरियं अकंसु ते देवलोकपरायणा अहेसु । (२६७)

सत्था एवं भिक्खवे ! चित्तन्नामेतं किलेसवसेन अल्लीनं दुम्मोचयं होति उप्पन्ना लोभधम्मा दुप्पजहा एवरूपेपि पण्डिते अज्झाणे करोन्तीति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेसि । सच्च परियोसाने केचि सोतापन्ना अहेसु, केचि सकदागामिनो, केचि अनागामिनो, केचि अरहत्तं पापुणिसु । सत्थापि अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा राजा आनन्दो अहोसि । परिसा बुद्धपरिसा, कुट्टालपण्डितो पन अहमेवाति ।

कुट्टालजातकं ।

इत्थिवग्गो सत्तमो ।

८. “वरणवग्गवणना”

१. वरणजातकं

यो पुब्बे करणीयानीति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो कुटुम्बियपुत्ततिस्सत्थेरं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

एकस्मि किर दिवसे सावत्थिवासिनो अञ्जामञ्जं साहायका तिसमत्ता कुलपुत्ता गन्धपुप्फवत्थादीनि गहेत्वा सत्थु धम्मदेसनं सुणिस्सामाणि महाजनपरिवृता जेतवनं गत्वा नागमालक—विसालमालकादिसु शोकं निसीदित्वा सायण्हममये सत्थरि सुग्गिभि-गन्धवासिताय गन्धकुटितो निक्खमित्वा धम्मसभं गत्वा अल-ङ्कनबुद्धासने निसिन्ने सपग्गिवारा धम्मसभं गत्वा सत्थारं गन्धपुप्फेहि पूजेत्वा चक्कड्किततलेसु फुल्लपदुम-ससिरीकेसु पादेसु वन्दित्वा एकमन्तं निसिन्ना धम्मं सुणिंसु । अथ नेसं एतदहोसि यथा यथा खो मयं भगवता धम्मं देमितं आजानाम्.....पे.....पव्वजेय्यामाति । ते तथागतस्स धम्मसभातो निक्खन्तकाले तथागतं उपसङ्गमित्वा वन्दित्वा पव्वज्जं याचिंसु । तेसं सत्था पव्वज्जं अदासि ।

ते आचरियुपज्जाये आगधेत्वा उपमम्पदं लभित्वा पच्च वस्सानि आचरियुपज्जायानं सन्तिके वसित्वा द्वे मानिका पगुणं कत्वा कप्पियाकप्पियं ज्ञत्वा तिस्सो अनुमोदना उग्गण्हित्वा चीवरानि सिब्बेत्वा रजित्वा समणधम्मं करिस्सामाति आचरियुपज्जाये आपुच्छित्वा सत्थारं उपसङ्गमित्वा वन्दित्वा एकमन्तं निसीदित्वा—मयं भन्ते ! भवेसु उक्कण्ठिता जातिजराव्याधिमरणभयभीता तेसं नो संसारपरिमोचनत्थाय कम्मट्ठानं कथेथाति याचिंसु । सत्था तेसं अट्ठतिसाय कम्मट्ठानेसु सप्पायं विदित्वा एकं कम्मट्ठानं कथेसि ।

ते सत्थु सन्तिके कम्मट्ठानं गहेत्वा सत्थारं वन्दित्वा पदक्खिणं कत्वा परिवेणं गत्वा आचरियुपज्जाये ओलोकेत्वा पत्तचीवरं आदाय समणधम्मं करिस्सामाति निक्खमिंसु ।

अथ नेसं अब्भन्तरे एको भिक्खु नामेन कुटुम्बियपुत्त तिस्सत्थेरो नाम कुमीतो हीनविरियो रसगिद्धो । सो एवं चिन्तेसि अहं नेव अरञ्जो वसितु न पधानं पदहितुं न [२६८] भिक्खाचरियाययापेतुं सक्खिस्सामि, को मे गमनेन अत्थो निवत्तिस्सामीति । सो विरियं ओस्सजित्वा ते भिक्खू अनुगन्त्वा निवत्ति । तेपि खो भिक्खू कोसलेसु चाग्गिकं चरमाना अञ्जातरं पच्चन्तगामं गत्वा तं उपनिस्साय एकस्मि अरञ्जायाने वस्सं उपगन्त्वा अन्तो तेमासं अप्पमत्ता घटेन्ता वायमन्ता विपस्सनागम्भं गाहापेत्वा पठविं उन्नादयमाना अरहन्तं पत्वा वुत्थ-वस्सा पवारेत्वा पटिलद्धगुणं सत्थु आरोचेस्सामाति ततो निक्खमित्वा अनुपुव्वेन जेतवनं पत्वा पत्तचीवरं पटि-सामेत्वा आचरियुपज्जाये दिस्वा तथागतं दट्ठुकामा सत्थु सन्तिकं गत्वा वन्दित्वा निसीदिसु । सत्था तेहि सिद्धिं मधुरपटिसत्थारं अकासि । ते कतपटिसत्थारा अत्तनो पटिलद्धगुणं तथागतस्स आरोचेसु । सत्था ते भिक्खू पसंसि ।

कुटुम्बियपुत्ततिस्सत्थेरो सत्थारं तेसं गुणकथं कथेत्तं दिस्वा सयम्पि समणधम्मं कानुक्कामो जातो । तेपि खो भिक्खू मयम्पि भन्ते ! तमेव अरञ्जावामं गत्वा वसिस्सामाति सत्थारं आपुच्छिंसु । सत्था साधूति अनुजानि । ते सत्थारं वन्दित्वा परिवेणं अगमंसु । अथ सो कुटुम्बियपुत्ततिस्सत्थेरो रत्तिभागसमनन्तरे अच्चारद्धविरियो हुत्वा अतिवेगेन समणधम्मं करोन्तो मज्झिमयामसमनन्तरे आलम्बणफलकं निस्साय ठित-कोव निहायन्तो परिवत्तित्वा पति । उरट्ठिकं तस्स भिज्जि । वेदना महन्ता जाता । तेसं भिक्खून् तं पटि-जग्गन्तानं गमनं न सम्पज्जि ।

अथ ने उपट्ठानवेलायं आगते सत्था पुच्छि—ननु तुम्हे भिक्खवे ! स्वे गमिस्सामाति हिय्यो आपुच्छि थाति ?

आम भन्ते ! अपि च खो पनम्हाकं सहायको कुटुम्बियपुत्ततिस्सत्थेरो अकाले अतिवेगेन समणधम्मं करोन्तो निहाभिभूतो परिवत्तित्वा पतितो उरट्ठिकस्स भिन्ना तं निस्साय अम्हाकं गमनं न सम्पन्नन्ति ।

सत्था न भिक्खवे ! इदानीं वेस अत्तनो हीनविरियभावेन अकाले अतिवेगेन विरियं करोन्तो तुम्हाकं गमनन्तरायं करोति पुब्बेपेसं तुम्हाकं गमनन्तरायं अकासि येवाति वत्वा तेहि याचितो अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते गन्धाररट्टे तक्कसिलायं बोधिसत्तो दिसापामोक्खो आचरियो हुत्वा पञ्चमाणवकसतानि सिप्पं उग्गण्हापेति । अथस्स ते माणवा एक-दिवसं दारुं आहरणत्थाय अरञ्जं गन्त्वा दारुनि उद्धरिस्सु । तेसं अन्तरे एको कुसीतमाणवो महत्तं वरणरुक्खं दिस्वा सुक्खरुक्खो एसोति सञ्जाय मुहुत्तं ताव निपज्जित्वा पच्छा रुक्खं अभिरुहित्वा दारुनि पातेत्वा आदाय गमिस्सामीति उत्तरसाटकं पत्थरित्वा निपज्जित्वा काकच्छमानो निदं ओक्कमि । इतरे माणवका दारुकलापे बन्धित्वा आदाय गच्छन्ता तं पादेन पिट्ठियं पहरित्वा पबोधेत्वा अगमंसु । [२६६]

कुसीतमाणवो उट्ठाया अक्खीनि पुञ्छित्वा पुञ्छित्वा अविगतनिदोव तं रुक्खं अभिरुहित्वा साखं गहेत्वा अत्तनो अभिमुखं आकड्ढित्वा भञ्जन्तो भिज्जित्वा उट्ठितकोटिया अत्तनो अक्खं भिन्दापेत्वा एकेन हत्थेन तं पिधाय एकेन हत्थेन अल्लदारुनि भञ्जित्वा रुक्खतो ओरुह् दारुकलापं बन्धित्वा उक्खिपित्वा वेगेन गन्त्वा तेहि पातितानं दारुनं उपरि पातेसि । तं दिवसं च जनपदगामके एकं कुलं स्वे ब्राह्मणवाचकं करिस्सामाति आचरियं निमन्तेसि । आचरियो माणवके आह—ताता ! स्वे एकं गामं गन्तव्वं तुम्हे पन निराहारा न सक्खिस्सथ गन्तुं पातोव यागुं पचापेत्वा तत्थ गन्त्वा अत्तनो लद्धकोट्टासं च अम्हाकं पत्तकोट्टासं च सब्बं आदाय आगच्छथाति ।

ते पातोव यागुपाचनत्थाय दासि उट्ठापेत्वा खिप्पं नो यागुं पचाहीति आहंस् । सा दारुनि गण्हन्ती उपरि ठितानि अल्लवरणदारुनि गहेत्वा पुनप्पुनं मुखवानं ददमानापि अग्गि उज्जालेतुं अमक्कोन्ती सुरियं उट्ठापेसि । माणवका अति दिवा जातो इदानीं न सक्का गन्तुन्ति आचरियस्स सन्तिकं अगमिस्सु । आचरियो किं ताता ! न गतत्थाति ? आम आचरिय ! न गतम्हाति । किं कारणाति ? असुको नाम कुसीतमाणवो अम्हेसि सद्धिं दारुवनं गन्त्वा वरणरुक्खमूले निदायित्वा पच्छा वेगेनारुह् अक्खं भिन्दापेत्वा अल्लवरणदारुनि आहरित्वा अम्हेहि आनीतदारुनं उपरि पक्खिपि । यागुपाचिका तानि सुक्खदारुसञ्जाय गहेत्वा याव सुरियस्सुग्गमना उज्जालेतुं नासक्खि । इमिना नो कारणेन गमनन्तरायो जातोति । आचरियो माणवेन कत्तकम्मं सुत्वा अन्धवालानं कम्मं निस्साय एवरूपाव परिहानि होतीति वत्वा इमं गाथं समुट्ठापेसिः—

यो पुब्बे कारणीयानि पच्छा सो कातुमिच्छति,

वरणकट्ठभञ्जोव स पच्छा अन्तुत्पत्तीति ।

तत्थ—स पच्छा अन्तुत्पत्तीति यो कोचि पुग्गलो इदं पुत्थे कन्तव्वं इदं पच्छाति अवीमसित्वा पुत्थे करणीयानि पठममेव कत्तव्वकम्मानि पच्छा करोति अयं वरणकट्ठभञ्जो अम्हाकं माणवको विय सो बालपुग्गलो पच्छा अन्तुत्पत्तिं सोचति परिदेवतीति अत्थो । एवं बोधिमत्तो अन्नेवामिकानं इमं कार्णं कथेत्वा दानादीनि पुञ्जानि कत्वा जीवितपरियोसाने यथाकम्मं गतो ।

सत्था न भिक्खवे ! इदानीं वेस तुम्हाकं अन्तगयं करोति पुत्थेपि अकामि येवाति वत्वा इमं धम्म-देसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि तदा अक्खिभेदम्पत्तो माणवो उरुभेदम्पत्तो भिक्खु अहोमि । सेममाणवा वुद्धपरिमा, आचरियव्राह्मणो पन अहमेवाति । (२७२)

२. सीलवनागजातकं

अकतञ्जुस्स पोसस्साति इदं सत्था वेलुवने विहरन्तो देवदत्तं आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

धम्मसभायं भिक्खू आवुसो ! देवदत्तो अकतञ्जु तथागतस्स गुणे न जानातीति कथेन्ता निसीदिसु । सत्था आगन्त्वा कायनुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते—न भिक्खवे ! इदानेव देवदत्तो अकतञ्जु पुच्चपि अकतञ्जुयेव । न कदाचि मय्हं गुणं जानातीति वत्वा तेहि याचितो अतीतं आहरि :—

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो हिमवन्तप्पदेसे हत्थियोनियं निव्वसति । सो मातु-कुच्छितो निक्खन्तो सब्बसेतो अहोसि रजतपुञ्जसन्निभो । अक्खीनि पनस्म मणिगुलमदिसानि पञ्जायमान-पञ्चप्पसादानि अहेसं, मुखं रत्तकम्बलसदिमं, सोण्डं सुवण्णविन्दुपतिमण्डितं रजतदामं विय चत्तारो पादा कत-लाखापरिकम्मा विय, एवमस्स दसहि पारमीहि अलङ्कतो रूपगण्णत्तो अत्तभावो अहोसि । अथ नं विञ्जुत्तं पत्तं सकलहिमवन्ते वारणा सन्निपत्तिवा उपट्टहन्ता विचरिसु । एवं सो असीतिसहस्सवारणपरिवारो हिम-वन्तप्पदेसे वसमानो अपरभागे गणे दोसं दिस्वा गणम्हा कायविवेकं गन्त्वा एकोव अरञ्जे वासं कप्पेसि । सीलवन्तताय च पनस्ससीलवनागराजात्वेण नामं अहोसि । अथेको वाराणसीवासिको वनचरको हिमवन्तं पविसित्वा अत्तनो आजीवभण्डकं मवेसमानो दिसा ववत्थापेतुं असक्कोन्तो मग्गमूल्हो हुत्वा मरणभयभीतो बाहा पग्गय्ह परिदेवमानो चरति ।

बोधिसत्तो तस्स तं बलवपरिदेवितं सुत्वा इमं पुरिसं दुक्खा मोचेस्सामीति कारुञ्जेन चोदितो तस्स सन्तिकं अगमासि । सो तं दिस्वाव भीतो पलायि । बोधिसत्तो तं पलायन्तं दिस्वा तत्थेव अट्ठासि । सो पुरिसो बोधिसत्तं ठितं दिस्वा अट्ठासि । बोधिसत्तो पुन अगमासि । सो पुन पलायित्वा तस्स ठितकाले उत्वा चिन्तेसि । अयं वारणो मम पलायनकाले तिट्ठति ठितकाले आगच्छति नायं मय्हं अनत्थकामो इमम्हा पन मं दुक्खा मोचतुकामोव भविस्सतीति सूरौ हुत्वा अट्ठासि । बोधिसत्तो तं उपसङ्कमित्वा—कस्मा भो ! त्वं पुरिस ! परिदेवमानो विचरसीति पुच्छि ।

सामि ! दिसा ववत्थापेतुं असक्कोन्तो मग्गमूल्हो हुत्वा मरणभयेनाति ।

अथ नं बोधिसत्तो अत्तनो वसनट्टानं नेत्वा कतिपाहं फलाफलेहि सन्तप्पेत्वा भो पुरिस ! मा भायि अहं तं मनुस्सपथं नेस्सामीति अत्तनोपिट्ठे निसीदापेत्वा मनुस्सपथं पायासि । (२७१) अथ खो सो मित्तदुभी पुरिसो सचे कोचि पुच्छिस्सति आचिक्खितव्वं भविस्सतीति बोधिसत्तस्स पिट्ठे निसिन्नो येव रुक्खनिमित्तं पब्बतनिमित्तं उपधारेन्तोव गच्छति । अथ नं बोधिसत्तो अरञ्जा नीहरित्वा वाराणसीगामी महामग्गे ठपेत्वा भो पुरिस ! इमिना मग्गेन गच्छ मय्हं पन वसनट्टानं पुच्छितोपि अपुच्छितोपि मा कस्सचि आचिक्खीति तं उय्योजेत्वा अत्तनो वसनट्टानं येव अगमासि ।

अथ सो पुरिसो वाराणसि गन्त्वा अनुविचरन्तो दन्तकारवीथीं पत्वा दन्तकारे दन्तविक्रियो कुरुमाने दिस्वा—किम्पन भो ! जीवदन्तमि लभित्वा गण्हेय्याथाति ?

भो किं वदसि ? जीवदन्तो नाम मतहत्थिदन्ततो महग्घतरौति ।

तेनहि अहं वो जीवदन्तं आहरिस्सामीति पाथेय्यं गहेत्वा खरककचं आदाय बोधिसत्तस्स वसनट्टानं अगमासि । बोधिसत्तो तं दिस्वा—किमत्थं आगतोसीति पुच्छि ।

अहं सामि ! दुग्गतो कपणो जीवितुमसक्कोन्तो तुम्हे दन्तखण्डं याचित्वा सचे दस्सथ तं आदाय गन्त्वा विविकणित्वा तेन मूलेन जीविस्सामीति आगतोति ।

होतु भो ! दन्तं ते दस्सामि सचे दन्तकप्पनत्थाय ककचं अत्थीति ।

ककचं गहेत्वा आगतोमिह सामीति ।

तेनहि दन्ते ककचेन कन्तित्वा आदाय गच्छाति ।

बोधिसत्तो पादे सम्मिञ्जेत्वा गोतिसिन्नकं निसीदि । सो तस्स द्वेपि अग्गदन्ते छिन्दि ।

बोधिसत्तो ते दन्ते सोण्डाय गहेत्वा—भो ! पुरिस ! नाहं एते दन्ता मय्हं अप्पिया अमनापाति दम्मि, इमेहि पन मे दन्तेहि सहस्सगुणेन सतसहस्सगुणेन सब्बधम्मपटिवेधनसमत्थं सब्बञ्जुतञ्जाणं पियतरं, तस्स मे इदं दन्तदानं सब्बञ्जुतञ्जाणपटिविज्जनत्थाय होतूति सब्बञ्जुतञ्जाणस्स आवज्जनं^१ कत्वा दन्तयुगलं अदासि ।

सो तं आदाय गन्त्वा विक्किणित्वा तस्मि मूले खीणे पुन बोधिसत्तस्स सन्तिकं गन्त्वा—सामि ! तुम्हाकं दन्ते विक्किणित्वा लद्धमूलं मय्हं इणसोधनमत्तमेव जातं, अवसेसदन्ते मे देथाति आह ।

बोधिसत्तो साधूति पटिस्सुणित्वा पुरिमनयेनेव कप्पापेत्वा अवसेसदन्ते अदासि । सो तेपि विक्किणित्वा पुन आगन्त्वा—सामि ! जिवित् न सवकोमि, मूलदाठा मे देहीति आह ।

बोधिसत्तो साधूति वत्वा पुरिमनयेनेव निसीदि । सो पापपुग्गिम्हो महामत्तस्स रजतदामसदिसं सोण्डं महमानो केलासकूटसदिसं कुम्भं अभिम्हत्वा उभो दन्तकोटियो गण्हया पहरन्तो ममं वियूहत्वा कुम्भं आरूढ खरककचेन मूलदाठा कप्पेत्वा पक्कामि । बोधिसत्तस्म दस्सनूपचारं विजहन्ते विजहन्ते येव पन तस्मि पाप-पुरिमे चतुनहुताधिकानि द्वियोजनमतसहस्मानि बहलघनपठवी भिनेरुयुगन्धरादयो महाभारे दुग्गन्धजेगुच्छानि [२७२] गूयमुत्तादीनि च धारेतुं समत्थापि तस्म अगुणरासि धारेतुं अमक्कोन्ति विय भिज्जित्वा विवरग्गदासि । तावदेव अविचिमहानिरयतां जाला निक्खमित्वा तं मित्तदुभीपुरिमं कुलमन्नकेन कम्बलेन पारुपन्ति विय परिकिखपित्वा गण्हि । एवं तस्स पापपुग्गलस्स पठवि, पविट्टुकाले तस्मि वनमण्डे अधिवत्था रुक्खदेवता अकतञ्जु मित्तदुभीपुग्गलं चक्कवतिरज्जं दत्वापि तोमेतु न सक्कोतीति वनं उन्नादेत्वा धम्मं देसयमाना इमं गाथमाहः—

अकतञ्जुस्स पोसस्स निच्चं विवरदस्सिनो,

सब्बं चे पठवि दज्जा नेव नं अभिराधयेति ।

तत्थ—अकतञ्जुस्साति अत्तनो कतगुणं अजानन्तस्म । पोसस्साति पुरिसस्स । विवरदस्सिनोति छिद्मेव ओकासमेव ओलोकेन्तस्स । सब्बं चे पठवि दज्जाति सचेपि तादिमस्स पुग्गलस्स सकलं चक्कवतिरज्जं इमं वा पन महापठवि परिवन्तेत्वा पठवोजं ददेय्य । नेव नं अभिराधयेति एवं करोन्तोपि एवरूपं कतगुणविद्धमकं कोचि परितोमेतुं वा पमादेतुं वा न सक्कुण्येयाति अत्थो । एवं सा देवता तं वनं उन्नादेत्वा धम्मं देसेसि । बोधिसत्तो यावतायुक्कं ठत्वा यथाकम्मं अगमामि ।

सत्था न भिक्खवे ! देवदत्तो इदानीव अकतञ्जु पुव्वेपि अकतञ्जुयेवाति वत्वा इमं धम्मदेसनं आहारेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा मित्तदुभी पुग्गलो देवदत्तो अहोसि रुक्खदेवता सारिपुत्तो, सीलवनागराजा पन अहमेवाति ।

सीलवनागराजजातकं ।

३. सच्चंकिरजातकं

सच्चं किरवमाहंसति इदं सत्था वेलुवने विहरन्तो वधाय परिसक्कनं आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

भिक्षुसङ्घस्मिं हि धम्मसभायं निसीदित्वा आवुसो ! देवदत्तो सत्थु गुणं न जानाति वधायेव परि-
सक्कतीति देवदत्तस्स अगुणं कथेन्ते सत्था आगन्त्वा कायनुत्थ भिक्षवे ! एतरहि कथाय मन्त्रिसिन्नाति पुच्छित्वा
इमाय नामाति वुत्ते न भिक्षवे ! इदानीव देवदत्तो मय्हं वधाय परिसक्कनि पुच्चेपि परिसक्कि येवानि वत्ता
अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीने वाराणसियं बह्मदने रज्जं कारेन्ते तस्म दुट्ठकुमारो नाम पुत्तो अहोमि । कवखलो फरुसो
पह्णसीविसोपमो अनक्कोसित्वा वा अपहृरित्वा वा केनचि मद्धि न कथेति । सो अन्तोजनस्म च बहिजनस्स
च अक्खिम्हि पतितरजं विय खादितुं आगतपिसाचो विय च अमनापो अहोसि उव्वेजनीयो ।

सो एकदिवसं नदीकीलं कीलितुकामो महन्तेन पग्गिवारेन नदी तीरं अगमासि । तस्मि खणे महामेघो
उट्ठहि । दिमा अन्धकारा जाता । सो दासपेस्सजनं आह—एत्थ भणे ! मं गहेत्वा नदीमज्जं नेत्वा नहापेत्वा
आनेथाति ।

ते तं तत्थ नेत्वा किं नो राजा करिस्सति, इमं पापपुरिसं एत्थेव मारेमाति-मन्नयित्वा एत्थ गच्छ
कालकण्णीति उदके नं ओपिलापेत्वा पच्चत्तरित्वा तीरे अट्ठंसु ।

कहं कुमारोति च वुत्ते न मयं कुमारं पस्साम मेघं उट्ठितं दिस्वा उदके निम्ज्जित्वा पुत्तो आगतो
भविस्सतीति । अमच्चा रज्जो सन्तिकं अगमंसु ।

राजा—कहं मे पुत्तोति पुच्छि ।

न जानाम देव ! मेघे उट्ठिते पुरतो आगतो भविस्मतीति सज्जाय आगतम्हाति ।

राजा द्वारं विवरापेत्वा नदीतीरं गन्त्वा विचिण्ठाति तत्थ तत्थ विचिण्णापेसि । कोचि कुमारं नादसि ।
सो पि खो मेघन्धकारे देवे वस्सन्ते नदिया बुद्दमानो एकं दारुखन्धं दिस्वा तत्थ निसीदित्वा मरणभयतज्जितो
परिदेवमानो गच्छति ।

तस्मि पन काले वाराणसीवामी एको सेट्ठी नदीतीरे चत्तालीसकोटिधनं निदहित्वा धनतण्हाय धन-
पिट्ठे सप्पो हुत्वा निब्बति । अपरो तस्मि येव पदेसे तिसकोटियो निदहित्वा धनतण्हाय तत्थेव उन्दुरो हुत्वा
निब्बति । तेसं वसनट्ठानं उदकं पाविसि । ते उदकस्स पविट्ठमग्गेनेव निक्खमित्वा सोतं छिन्दन्ता गन्त्वा
नं राजकुमारेन अभिनिसिन्नं रुक्खखन्धं पत्वा एको एकं कोटिं इतरो इतरं आरुह्ण खन्धपिट्ठेव निपज्जिसु ।
तस्सायेव खो पन नदिया तीरे एको सिम्बलीरुक्खो अत्थि । तत्थेको सुवपोतको वसति । सोपि रुक्खो
उदकेन धोतमूलो नदीपिट्ठे पति सुवपोतको देवे वस्सन्ते उप्पतित्वा गन्तुं असक्कोन्नो गन्त्वा तस्सेव खन्धस्स
एकपस्से निलीयि । एवं ते चत्तारो जना एकतो बुद्दमाना गच्छन्ति ।

बोधिसत्तोपि खो तस्मि काले कासिरट्ठे उदिच्च ब्राह्मणकुले निब्बत्तित्वा वुद्धिप्पत्तो इसिपव्वज्जं पव्व-
जित्वा एकस्मि नदीनिवत्तने पण्णसालं मापेत्वा वसति । सो अड्ढरत्तसमये चङ्कममानो तस्स राजकुमारस्स
बलवपरिदेवनसदं सुत्वा चित्तेसि—मादिसे नाम मेत्तानुद्दयसम्पन्ने तापसे पस्सन्ते एतस्स पुरिसस्स मरणं अयुत्तं
उदकतो उद्धरित्वा तस्स जीवितदानं दस्सामीति । सो तं मा भायि मा भायीति अस्सासेत्वा उदकसोतं छिन्दन्तो
गन्त्वा तं दारुखन्धं एकाय कोटिया गहेत्वा आकड्डन्तो नागबलो थामसम्पन्नो एकवेगेन तीरं पत्वा कुमारं उक्खि-
पित्वा तीरे पतिट्ठापेसि । तेपि सप्पादयो दिस्वा [२७४] उक्खिपित्वा अस्समपदं नेत्वा अग्गिं जालेत्वा ते
दुब्बलतराति पठमं सप्पादीनं सरीरं सेदेत्वा पच्छा राजकुमारस्स सरीरं सेदेत्वा तस्मि अरोगं कत्वा आहारं
देत्तोपि पठमं सप्पादीनं येव दत्वा पच्छा तस्स फलाफलानि उपनामेसि ।

राजकुमारो अयं कूट तापसो मं राजकुमारं अगणत्वा तिरच्छानगतानं सम्मानं करोतीति बोधिसत्ते आघातं बन्धि । ततो कतिपाहचवयेन सब्बेसुपि तेसु थामबलप्पत्तेसु नदिया ओघे पच्छिन्ने सप्पो तापसं वन्दित्वा आहः—

भन्ते ! तुम्हेहि मय्हं महाउपकारो कतो न खो पनाहं दलिद्दो । असुकट्टाने मे चत्तालीस हिरञ्जकोटियो निदहित्वा ठपिता । तुम्हाकं धनेन किच्चे सति सब्बमेतं धनं तुम्हाकं दातुं सक्कोमि, तं ठानं आगन्त्वा दीघाति पक्कोसेय्याथाति वत्वा पक्कामि ।

उन्दुरोपि तथेव तापसं निमन्तेत्वा अत्थे सति असुकट्टाने ठत्वा—उन्दुराति पक्कोसेय्याथाति वत्वा पक्कामि ।

सुवो पन तापसं वन्दित्वा—भन्ते ! मय्हं धनं नत्थि रत्तसालीहि पन वो अत्थे सति असुकन्नाम मय्हं वसन्नट्ठानं तत्थ गन्त्वा सुवाति पक्कोसेय्याथ । अहं ज्ञातकानं आरोचेत्वा अनेकसकटपूरमत्ता रत्तसालियो आहरापेत्वा दातुं सक्कोमीति वत्वा पक्कामि ।

इतरो पन मित्तदुभीधम्मेषु धम्मताय किञ्चि अवत्वा एव तं अत्तनो सन्निकं आगतं मारेस्सतमीति चित्तेत्वा—भन्ते ! मयि रज्जे पतिट्ठिते आगच्छेय्याथ अहं वो चतुहि पच्चयेहि उपट्ठहिस्सामीति वत्वा पक्कामि ।

सो गन्त्वा न चिरस्मेव रज्जे पतिट्ठासि । बोधिसत्तो वीमंमिस्सामि ताव नेति पठमं सप्पस्स सन्निके आगन्त्वा अविदूरे ठत्वा दीघाति पक्कोसि । सो एकवचनेनेव निक्खमित्वा बोधिसत्तं वन्दित्वा भन्ते ! इमस्मिं ठाने चत्तालीसहिरञ्जकोटियो ता सब्बापि नीहरित्वा गण्हथाति आह । बोधिसत्तो एवमत्थु उपपन्ने किच्चे जानिस्सामीति तं निवत्तापेत्वा उन्दुरस्स सन्निकं गन्त्वा सद्दमकासि । सोपि खो तथेव पटिपज्जि । बोधिसत्तो तम्पि निवत्तापेत्वा मुवस्स सन्निकं गन्त्वा सुवाति पक्कोसि । सोपि एकवचनेनेव रुक्खगगतो ओतगित्वा बोधिसत्तं वन्दित्वा किं भन्ते ! मय्हं ज्ञातकानं वत्वा हिमवन्तप्पदेसतो तुम्हाकं सयं जातसाली आहरापेमीति पुच्छि । बोधिसत्तोपि अत्थे सति जानिस्सामीति तम्पि निवत्तापेत्वा इदानीं राजानं परिगण्हिस्सामीति गन्त्वा राजयुयाने वसित्वा पुनरिदमेगे आक्कप्पम्पत्तिं कत्वा भिक्खाचारवत्तेन नगरं पाविसि ।

तस्मिं खणे सो मित्तदुभी राजा अलंकतहत्थिक्खववरगतो महन्नेन परिवारेन नगरं पदक्खणं करोति । सो बोधिसत्तं दूरतोव दिस्वा—अयं कूटतापसो मम सन्निके [२७५] भुत्वा भुत्वा वसितुकामो आगतो, याव परिमज्जे अत्तनो मय्हं कतगुणं नप्पकासेति तावदेवस्स सीसं छिन्दापेस्सामीति पुरिसे ओलोकेसि । किं करोम देवाति च वुत्ते—एस कूटतापसो मं किञ्चि याचितुकामो आगच्छति मज्जे । एतस्स कालकण्णिक तापसस्स मं पस्सितुं अदत्ताव एतं गहेत्वा पच्छाबाहं बन्धित्वा चतुक्के चतुक्के पहरन्ता नगरा निक्खामेत्वा आघातने सीसमस्स छिन्दित्वा सरीरं मूले उत्तासेथाति आह ।

ते साधूति सम्पटिच्छित्वा गन्त्वा निरपराधं महासत्तं बन्धित्वा चतुक्के चतुक्के पहरन्ता आघातनं नेतुं आरभिम् । बोधिसत्तो पट्टपट्टट्ठाने अम्म ताताति अकन्दित्वा निव्विकारो इमं गाथमाहः—

सच्चं किरवमाहंसु नरा एकच्चिया इध,
कट्ठं निप्फविनं सेय्यो नत्वेवेकच्चियो नरोति ।

तत्थ—सच्चं किरवमाहंसुति अवितथमेव किर एवं वदन्ति । नरा एकच्चिया इधाति इधकच्चे पण्डितपुरिसा । कट्ठं निप्फविनं सेय्योति नदिया बृह्मानं सुक्खदारं निप्फविनं उत्तारेत्वा थले ठपितं सेय्यो—सुन्दरतरो, एवं हि वदमाना ते पुरिसा सच्चं किर वदन्ति । किं कारणा ? तं हि यागुभत्तादीनं पचनत्थाय सीतातुरानं विसीवनत्थाय अज्जोस्मिं च परिस्सयानं हरणत्थाय उपकारं होति । नत्वेवेकच्चियो नरोति एकच्चो पन मित्तदुभी अकतज्जू पापपुरिसो ओघेन बृह्मानो हत्थे गहेत्वा उत्तारितो नत्वेव वरं । तथाहि अहं इमं पापपुरिसं उत्तारेत्वा इमं अत्तनो दुक्खं आहरिन्ति ।

एवं पट्टपट्टट्ठाने इमं गाथमाह ।

तं सुत्वा ये तत्थ पाण्डितपुरिसा ते आहंसु किं पन भो ! पव्वजित ! तया अम्हाकं रञ्जो अत्थि कोचि गुणो कतोति ?

बोधिसत्तो तं पवन्ति आरोचेत्वा एवमिमं महोधतो उत्तारेन्तो अहमेव अत्तनो दुक्खं अकासि । न वत मे पोराणक पाण्डितानं वचनं कतन्ति अनुस्सरित्वा एवं वदामीति आह ?

तं सुत्वा खत्तियन्नाह्मणादयो नगरवासिनो स्वायं मित्तदुभी राजा एवं गुणसम्पन्नस्स अत्तनो जीवित-
दायकस्स गुणमत्तभि न जानाति तं निस्माय कृतो अम्हाकं वडिड्ढ । गण्हथ नन्ति कुपिता समन्ततो उट्ठित्वा
उसुसत्तिपामाणमुग्गरादिप्पहारेहि हत्थिक्खन्धगतमेव तं घातेत्वा पादे गहेत्वा कडिड्ढत्वा परिखापिट्ठे छड्ढेत्वा
बोधि सत्तं अभिसिञ्चित्वा रज्जे पटिट्ठापेसु ।

सो धम्मेन रज्जं कारेन्तो पुन एकदिवसं सप्पादयो पग्गिण्हितुकामो महन्तेन परिवारेन सप्पस्स वसन-
ट्ठानं गन्त्वा—दीघाति पक्कोमि ।

सप्पो आगन्त्वा वन्दित्वा—इदन्ते मामि ! धनं गण्हाति आहं ।

राजा चत्तालीमहिग्गञ्जकोटिधनं अमच्चे [२७६] पटिच्छापेत्वा उन्दुरस्स सत्तिकं गन्त्वा उन्दुराति
पक्कोमि ।

सोपि आगन्त्वा वन्दित्वा तिसकोटिधनं निरयादेसि । राजा तस्मि अमच्चे पटिच्छापेत्वा सुवस्स
वसनट्ठानं गन्त्वा मुवाति पक्कोमि ।

सोपि आगन्त्वा पादे वन्दित्वा—किं मामि ! सालि आहरामीति आह ।

राजा सालीहि अत्थे सति आहग्गिस्समि एहि गच्छामाति सत्ततिया हिग्गञ्जकोटीहि सद्धि ते तयोपि
जने गाहापेत्वा नगरं गन्त्वा पासादवरे महातलं आरुह्य धनं संगोपापेत्वा सप्पस्स वसनत्थाय सुवण्णनालि
उन्दुरस्स फलिकगुहं सुवस्स सुवण्णपञ्जरं कागपेत्वा सप्पस्स च सुवस्स च भोजनत्थाय देवसिकं कञ्चनतट्टके
मधुलाजे उन्दुरस्स गन्धसालितण्डुले दापेसि । दानादीनि च पुञ्जानि करोति । एवं ते चत्तारोपि जना
यावजीवं समग्गा सम्मोदमाना विहरित्वा जीवितक्खये यथाकम्मं अगमंसु ।

सत्था न भिक्खवे ! देवदत्तो इदानेव मय्हं वधाय पग्गिक्कन्ति पुट्ठेपि पग्गिक्कन्ति येवाति वत्ता इमं
धम्मदेसनं आहरित्वा अनुमन्थि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा दृढराजा देवदत्तो अहोसि, सप्पो सारि-
पुत्तो, उन्दुरो मोग्गल्लानो, मुवो आनन्दो, रज्जं पत्तो धम्मराजा पन अहमेवाति ।

सच्चकिरजातकं ।

४. रुक्खधम्मजातकं

साधु सम्बहुला ज्ञातीति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो उदककलहेन अत्तनो ज्ञातकानं महाविनासं पच्चु-
पट्टितं जत्वा आकासेन गन्त्वा रोहिणिया नदिया उपरि पल्लङ्केन निसीदित्वा नीलरंसि विस्सज्जेत्वा ज्ञातके
संवेजेत्वा आकासा ओरुट्ठ नदीतीरे निसिन्नो तं कलहं आरब्ध कथेसि । अयमेत्थ सङ्खेपो । वित्थारो पन
कुणालजानके आवीभविस्सति ।

पच्चुपन्नवत्थु

तदा पन सत्था ज्ञातके आमन्तेत्वा—महाराजा ! तुम्हेहि ज्ञातकेहि नाम समग्गेहि सम्मोदमानेहि
भवितुं वट्ठति ज्ञातकानं हि सामग्गिया सति पच्चामित्ता न ओकासं लभन्ति । तिट्ठन्तु ताव मनुस्सभूता अचेत-
नानं रुक्खानम्पि सामग्गी । लद्धुं वट्ठति । अतीतस्मिं हि हिमवन्तप्पदेसे महावातो सालवनं पहरि । तस्स
पन सालवनस्स अञ्जामञ्जं रुक्खगच्छुग्गुम्बलताहि सम्बद्धता एकरुक्खम्पि पातेतु असक्कोन्तो मत्थकमत्थकेनेव
अगमासि । एकं पन अङ्गणे ठितं साखाविटपसम्पन्नम्पि महारुक्खं अञ्जो हि रुक्खेहि असम्बद्धता उम्मुलेत्वा
भूमियं पातेसि । इमिना कारणेन तुम्हेहिपि समग्गेहि सम्मोदमानेहि भवितुं वट्ठतीति वत्वा तेहि याचितो अतीतं
आहरि [२७७] ।

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते पठमं उप्पन्नो वेस्सवणो महाराजा चवि । सक्को अञ्जं
वेस्सवणं ठपेसि । एतस्मिं वेस्सवणे परिवत्ते पच्छा निब्बत्तवेस्सवणो रुक्खगच्छुग्गुम्बलतानं अत्तनो अत्तनो
रुच्चनट्टाने विमानं गण्हन्तूति सासनं पेसेसि ।

तदा बोधिसत्तो हिमवन्तप्पदेसे एकास्मि सालवने रुक्खदेवता हुत्वा निब्बत्ति । सो ज्ञातके आह—तुम्हे
विमानानि गण्हन्ता अङ्गणठितरुक्खेसु मा गण्हित्थ, इमस्मिं पन सालवने मया गहितविमानं परिवारेत्वाव
गण्हयाति । तत्थ बोधिसत्तस्स वचनकरा पण्डितदेवता बोधिसत्तस्स विमानं परिवारेत्वाव ठित विमानानि
गण्हसु । अपण्डिता पन किं अम्हाकं अरञ्जो विमानेहि ? मयं मनुस्सपथे व गामनिगमराजधानिद्वारेसु
विमानानि गण्हिस्साम, गामादयो हि उपनिस्साय वसमाना देवता लाभगयसगणपत्ता होन्तीति वत्वा मनुस्स-
पथे अङ्गणट्टाने निब्बत्तमहारुक्खेसु विमानानि गण्हिमु ।

अथेकस्मिं दिवसे महती वातवुट्ठि उप्पज्जि । वातस्स अतिथद्धताय दल्हमूला वनजेट्टकरुक्खापि
सम्भग्गसाखाविटपा समूला निपत्तिस्सु । तं पन अञ्जामञ्जं सम्बन्धनेन ठित सालवनं पत्वा इतोचितो च
पहरन्तो एकरुक्खम्पि पातेतुं नासक्कि । भगविमाना देवता निप्पटिसरणा दारकं हत्थेसु गहेत्वा हिमवन्तं
गन्त्वा अत्तनो पवत्ति सालवने देवतानं कथयिमु । ता तामं एवं आगनभावं बोधिसत्तस्स आगेचेसु ।

बोधिसत्तो पण्डितानं वचनं अगहेत्वा निप्पच्चयट्टानं गता नाम एवरूपाव होन्तीति वत्वा धम्मं देसेन्तो
इमं गाथमाहः—

साधु सम्बहुला ज्ञाती अपि रुक्खा अरञ्जजा ।

वातो वहति एकट्ठं ब्रह्मन्तम्पि वनप्पत्तिन्ति ।

तत्थ—सम्बहुला ज्ञातीति चत्तारो उपादाय तनुत्तरि सतमहस्सम्पि सम्बहुला नाम । एवं सम्ब-
हुला अञ्जामञ्जं निस्साय वसन्ता ज्ञातका । साधूति सोभना पसत्था परेहि अप्पधंसियाति अत्थो । अपि
रुक्खा अरञ्जजाति तिट्ठन्तु मनुस्सभूता अरञ्जो जातरुक्खापि सम्बहुला अञ्जामञ्जपत्थम्भेन ठिता साधु-
येव रुक्खानम्पि हि सम्पच्चयभावावे लद्धुं वट्ठति । वातो वहति एकट्ठन्ति पुरत्थिमादिभेदो वातो वायन्तो
अङ्गणट्टाने ठितं एकट्ठं एककमवे ठितं । ब्रह्मन्तम्पि वनप्पत्तिन्ति साखा विटपसम्पन्नं महारुक्खम्पि वहति
उम्मुलेत्वा पातेतीति अत्थो ।

बोधिसत्तो इमं कारणं कथेत्वा आयुक्खये यथाकम्मं गतो । सत्थापि एवं महाराजा ! ज्ञातकानं
ताव सामग्गियेव [२७८] लद्धुं वट्ठति । समग्गा सम्मोदमाना पियसंवासमेव वसयाति इमं धम्मदेसनं आह-
रित्वा ज्ञातकं समोधानेसि । तदा देवता बुद्धपरिसा अहेसुं । पण्डितदेवता पन ब्रह्मेवाति ।

५. मच्छजातकं

अभित्यनय पञ्जुन्नाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अत्तना वस्सापितवस्सं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

एकस्मिं किर समये कोसलरट्ठे देवो न वस्सि । सस्सानि मिलायन्ति । तेसु तेसु ठानेसु तलाकपोक्ख-
रणिसरा सुस्सन्ति । जेतवनद्वारकोट्टकसमीपे जेतवनपोक्खरणियापि उदकं छिज्जि । कललगहनं पविसित्वा
निपन्ने मच्छकच्छपे काककुल्लादयो कणयग्गसदिसेहि तुण्डेहि कोट्टत्वा नीहरित्वा नीहरित्वा विप्फन्दमाने
खादन्ति ।

सत्था मच्छकच्छपानं तं व्यसनं दिस्वा महाकरुणाय उस्साहितहृदयो अज्ज मया देवं वस्सापेतुं वट्टतीति
पभाताय रत्तिया सरीरपटिजग्नं कत्वा भिक्खाचारवेलं सल्लक्खेत्वा महाभिक्खुसङ्घपरिवृतो बुद्धलीलहाय
सावत्थि पण्डाय पविमित्वा पच्छाभत्तं पिण्डपातपटिक्कन्तो सावत्थितो विहारं गच्छन्तो जेतवनपोक्खरणिया
सोपाने ठत्वा आनन्दत्थेरं आमन्तेसि—आनन्द ! उदकसाटिकं आहर जेतवन पोक्खरणियं नहायिस्समीति ।

ननु भन्ते ! जेतवन पोक्खरणियं उदकं छिन्नं कललमत्तमेव अवसिट्ठन्ति ?

आनन्द ! बुद्धवलं नाम महन्तं आहर त्वं उदकसाटिकन्ति ।

थेरो आहरित्वा अदामि । सत्था एकेन अन्तेन उदकसाटिकं निवासेत्वा एकेनन्तेन सरीरं पारुपित्वा
जेटवनपोक्खरणियं नहायिस्सामीति सोपाने अट्ठासि ।

तं खणञ्चोव सक्कस्स पण्डुकम्बलसिलासनं उण्हाकारं दस्सेसि । सो किञ्चु खोति आवज्जेन्तो तं
कारणं जत्वा वस्सवलाहकदेवराजानं पक्कोसापेत्वा तात ! सत्था जेतवनपोक्खरणियं नहायिस्समीति धुर-
सोपाने ठितो, खिप्पं सकलकोसलरट्ठं एकमेघं कत्वा वस्सापेहीति ।

सो साधूति सम्पटिच्छित्वा एकं बलाहकं निवासेत्वा एकं पारुपित्वा मेघगीतं गायन्तो पाचीनलोक-
धातुमुखो पक्खन्दि । पाचीनदिसाभागे खलमण्डलमत्तं एकं मेघपटलं उट्ठाय सपतपटलसहस्सपटलं हुत्वा
अभित्यनन्तं विज्जुलतं निच्छारेन्तं अधोमुखं ठपित उदककुम्भाकारेन वस्समानं सकलं कोसलरट्ठं महोधेन
विय अज्भोत्थरि । देवो अच्छिन्नधारं वस्सन्तो मुहुत्तेनेव जेतवनपोक्खरणि पूरेसि । धुरसोपानं आहच्च
उदकं अट्ठासि । [२७६]

सत्था पोक्खरणियं नहायित्वा रत्तदुपट्टं निवासेत्वा कायबन्धनं बन्धित्वा सुगतमहाचीवरं एकसं कत्वा
भिक्खुसङ्घपरिवृतो गन्त्वा गन्धकुटिपरिवेणे पञ्जत्तवरबुद्धासने निसीदित्वा भिक्खुसङ्घेन वत्ते दस्सिते
उट्ठाय मणि पाणफलके ठत्वा भिक्खुसङ्घस्स ओवादं दत्वा उय्योजेत्वा सुरभिगन्धकुटिं पविसित्वा दक्खि-
णेन पस्सेनसीहसेय्यं कप्पेत्वा सायण्हसमये धम्मसभायं सन्निपतितानं भिक्खून्—पस्सथावुसो ! दसबलस्स
खन्तिमेत्तानुद्दयस्सत्तं विविधस्सस्सेसु मिलायन्तेसु नानाजलासयेसु सुस्सन्तेसु मच्छकच्छपेसु महादुक्खं पापु-
णन्तेसु कारुञ्जं पटिच्च महाजनं दुक्खा मोचेस्सामीति उदक साटिकं निवासेत्वा जेतवनपोक्खरणिया धुर-
सोपाने ठत्वा मुहुत्तेन सकलकोसलरट्ठं महोधेन ओपिलापेन्तो विय देवं वस्सापेत्वा महाजनं कायिकचेतसिक-
दुक्खतो मोचेत्वा विहारं पविट्ठोति कथाय वत्तमानाय—गन्धकुटितो निक्खमित्वा धम्मसभं आगन्त्वा काय-
नुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निपिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामात्ति वुत्ते न भिक्खवे ! तथागतो इदानीव
महाजने किलमन्ते देवं वस्सापेसि पुब्बे तिरच्छानयोनिनं निब्बत्तित्वा मच्छराजकालेपि वस्सापेसि येवात्ति
वत्वा अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते इमस्मिं येव कोसलरट्ठे इमिस्साव सावत्थिया इमस्मिं येव जेतवनपोक्खरणिट्टाने एका वल्लि-
गहनपरिक्खित्ता कन्दरा अहोसि । तदा बोधिसत्तो मच्छपोनियं निब्बत्तित्वा मच्छगणपरिवृतो तत्थ पटिवसति ।
यथा पन इदानि एवमेवं तदापि तस्मिं रट्ठे देवो न वस्सि । मनुस्सानं सस्सानि मिलायिसु । वापि आदिसु

उदकं छिज्जि । मच्छकच्छपा कललगहनं पविसिंसु । इमिस्सापि कन्दराय मच्छा कललगहनं पविसित्वा तस्मिं तस्मिं ठाने निलीयिंसु । काकादयो तुण्डेन कोट्टेट्वा नहिरित्वा खादिंसु ।

बोधिसत्तो जातिसङ्घस्स तं व्यसनं दिस्वा इमं हि एतेसं दुक्खं ठपेट्वा मं अञ्जोमोचेतुं समत्थो नाम नत्थि, सच्चकिरियं कत्वा देवं वस्सापेट्वा जातके मरणदुक्खा मोचेस्सामीति कालवण्णं कद्दमं द्विधा वि्यूहित्वा निक्खमित्वा अञ्जनरूक्खसारघटिकवण्णमहामच्छो सुधोतलोहितङ्कमणि सदिसानि अक्खीनि उम्मीलेत्वा आकासं उल्लोकेत्वा पज्जुन्नदेवराजस्स सद्दं दत्वा—भो पज्जुन्न ! अहं जातके निस्साय दुक्खितो, त्वं मयि सोल-वन्ते किलमन्ते कस्मा देवं न वस्सापेसि ? मया समानजातिकानं खादनट्टाने निब्बत्तित्वा तण्डुलप्पमाणम्पि मच्छं आदि कत्वा खादितपुब्बो नाम नत्थि, अञ्जोपि [२८०] मे पाणो सञ्चिच्च जीविता न वोरोपित-पुब्बो । इमिना सच्चेन देवं वस्सापेट्वा जातिसङ्घं मे दुक्खा मोचेहीति वत्वा परिचारकचेटकं आणापेत्तो विय पज्जुन्नं देवराजानं आलपन्तो इमं गाथमाहः—

अभित्थनय पज्जुन्न ! निधिं काकस्स नासय,
काकं सोकाय रन्धेहि मञ्च सोका पमोचयाति ।

तत्थ—अभित्थनय पज्जुन्नाति पज्जुन्नो वुच्चति मेघो, अयं पन मेघवसेन लद्धनामं वस्सवलाहकदेवरा-जानं आलपति । अयं किरस्स अधिप्पायो । देवो नाम अनभित्थनन्तो विज्जुलतं अनिच्छारेन्तो पवस्सन्तोपि न सोभति, तस्मा त्वं अभित्थनन्तो विज्जुलतं निच्छारेन्तो वस्सापेहीति । निधिं काकस्स नासयाति काका कललं पविसित्वा ठिते मच्छे तुण्डेन कोट्टेट्वा नीहरित्वा खादन्ति, तस्मा नेसं अन्तो कलले मच्छा निधीति वुच्चन्ति, तं काकसङ्घस्स निधिं देवं वस्सापेन्तो उदकेन पटिच्छादेत्वा नासेहीति । काकं सोकाय रन्धेहीति काकसङ्घो इमिस्सा कन्दराय उदकेन पुण्णाय मच्छे अलभमानो सोचिस्सति, तं काकगणं त्वं इमं कन्दरं पूरेन्तो-पि सोकाय रन्धेहि । सोकस्सत्थाय पापय । यथा अन्तो निज्झानलक्खणं सोकं पापुणाति एवं करोहीति अत्थो । मञ्च सोका पमोचयाति एत्थ चकारो सम्पिण्डनत्थो । एवं मं च मम जातके च सब्बेव इमम्हा मरणसोका मोचेहीति ।

एवं बोधिसत्तो परिचारकचेटकं आणापेत्तो विय पज्जुन्नं आलपित्वा सकलकोसलरट्टे महावस्सं वस्सापेट्वा महाजनं मरणदुक्खा मोचेत्वा जीवितपरियोसाने यथाकम्मं गतो ।

सत्था न भिक्खवे ! तथागतो इदानीव देवं वस्सापेति, पुब्बेपि मच्छयोनियं निब्बत्तोपि वस्सापेसि ये-वाति वत्वा इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धिं घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा मच्छगणो बुद्धपरिसा अहोसि, पज्जुन्नदेवराजा आनन्दो, मच्छराजा पन अहमेवाति ।

मच्छजातकं ।

तत्थ—असङ्खिकयोमिह गामम्हीति सङ्काय निधुत्तो पतिट्ठितोति सङ्कियो, न सङ्कियो असङ्कियो, अहं गामे वसन्तोपि सङ्काय अप्पतिट्ठितत्ता असङ्कियो निव्वभयो निरासङ्कोति दीपेति । अरञ्जेति गाम-गामूपचारविनिम्मुत्ते ठाने । उजुमग्गं समारुहो मेत्ताय करुणाय चाति अहं तिकचतुक्कज्झानिकाहि मेत्ताकरुणाहि कायवंकादिविरहितं उजु ब्रह्मलोकगामीमग्गं आरुहोति वदति । अथ वा—परिसुद्धसीलताय कायवचीमनोवङ्कविरहितं उजु देवलोकमग्गं आरुहोम्हीति दस्सेत्वा ततो उत्तरिं मेत्ताय करुणाय च पतिट्ठितत्ता उजु ब्रह्मलोकमग्गमिपि आरुहोम्हीतिपि दस्सेति । अपरिहीनज्झानत्स हि एकन्तेन ब्रह्मलोकपरायणत्ता मेत्ताकरुणादयो उजुमग्गा नाम ।

एवं बोधिसत्तो इमाय गाथाय धम्मं देसेत्वा तुट्ठचित्तेहि तेहि मनुस्सेहि सक्कतपूजितो यावजीवं चत्तारो ब्रह्मविहारे भावेत्वा ब्रह्मलोके निव्वत्ति ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा सत्थवासिनो बुद्धपरिसा अहेसूं, तापसो पन अहमेवाति ।

असङ्ख्यजातकं ।

७. महासुपिनजातकं

लापूनि सीदन्तीति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो सोलसमहासुपिने आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

एकादिवसं किर कोसलमहाराजा रत्तिं निदूषगतो पच्छिमे यामे सोलस महासुपिने दिस्वा भीततसितो पवुज्झित्वा इमेसं सुपिनानं दिट्ठत्ता किन्नुखो मे भविस्सतीति मरणभयतज्जितो सयनपिट्ठे निसिन्नकोव वीति-
नामेसि ।

अथ नं पभाताय रत्तिया ब्राह्मणपुरोहिता उपसङ्कमित्वा सुखमसयित्थ महाराजाति पुच्छिसु ।

कुतो मे आचरिया सुखं ? अज्जाहं पच्चूससमये सोलस महासुपिने पस्सि । सोमिह तेसं दिट्ठकालतो पट्ठाय भयप्पत्तोति ।

वदेथ महाराज ! सुत्वा जानिस्सामाति वुत्ते ब्राह्मणानं दिट्ठसुपिने कथेत्वा—किन्नुखो मे इमेसं दिट्ठका-
रणा भविस्सतीति पुच्छि ।

ब्राह्मणा हत्थे विधूनिस्सु । कस्मा हत्थे विधून्थाति च वुत्ते—कक्खला महाराज ! सुपिनाति ।

का नेमं निप्फन्ति भविस्सतीति ?

रज्जनन्तरायो जीवितन्तरायो भोगन्तरायोति' इमेसं तिण्ण अन्तरायानं अज्जतरोति ।

सप्पटिकम्मा अप्पटिकम्माति ?

कामं एते सुपिना अतिफरुसत्ता [२८३] अप्पटिकम्मा, मयं पन ते सप्पटिकम्मे करिस्साम, एते पटि-
क्कमापेतुं असक्कोन्तानं अम्हाकं सिक्खितभावो नाम किं करिस्सतीति ?

किं पन कत्वा आचरिया पटिक्कमापेस्सथाति ?

मव्वचतुक्केन यज्जं यजिस्साम महाराजाति ।

राजा भीततसितो तेन हि आचरिया मम जीवितं तुम्हाकं हत्थे, खिप्पं मे सोत्थि करोथाति आह ।

अथ खो मल्लिका देवी तं कारणं जत्वा राजानं उपसङ्कमित्वा पुच्छि किन्नु खो महाराज ! ब्राह्मणा
पुनप्पुनं सज्जरन्तीति ?

सुखिता त्वं अम्हाकं कण्णमूले आसीविसं चरन्तं न जानासीति ।

किं एतं महाराजाति ?

मया एवरूपा दुस्सुपिना दिट्ठा ब्राह्मणा तिण्णं अन्तरायानं अज्जतरो पज्जायतीति वत्वा तेसं पटि-
घाताय यज्जं यजामाति वत्वा पुनप्पुनं सज्जरन्तीति ।

किं पन ते महाराज ! सदेवके लोके अगगब्राह्मणो सुपिनपटिक्कम्मं पुच्छितोति ?

कतरो पनेस भदे सदेवके लोके अगगब्राह्मणोति ?

सदेवके लोके अगगपुग्गलं सब्बज्जं विसुदं निक्किलेसं तथागतं गोतमं महाब्राह्मणं न जानासि ?
सो हि भगवा सुपनन्तरं जानेय्य, गच्छ तं पुच्छ महाराजाति ।

साधू देवीति राजा विहारं गन्त्वा सत्थारं वन्दित्वा निसीदि ।

सत्था भधुरस्सरं निच्छारेत्वा—किन्नुखो महाराज ! अतिप्पगेव आगतोसीति ?

अहं भन्ते ! पच्चूससमये सोलस महासुपिने दिस्वा भीतो ब्राह्मणानं आरोचेसि । ब्राह्मणा कक्खला
महाराज ! सुपिना, एतेसं पटिघादतन्तथाय सब्बचतुक्केन यज्जं यजिस्सामाति यज्जं सज्जेन्ति । बह
पाणा मरणभयतज्जिता । तुम्हे च सदेवके लोके अगगपुग्गलो, अतीतानागत पच्चुप्पन्नं उपादाय नत्थि सो
ज्जेय्यधम्मो यो वो ज्ञानमुखे आपाथं नागच्छति । एतेसं मे सुपिनानं निप्फन्ति कथेथ भगवाति ।

एवमेतं महाराज ! सदेवके लोके मं ठपेत्वा अञ्जो एतेसं सुपिनानं अन्तरं वा निष्फत्ति वा जानितुं समत्थो नाम नत्थि अहं ते कथेस्सामि । अपि च खो त्वं दिट्ठनियामेनेव सुपिने कथेहीति ।

साधु ! भन्तेति राजा दिट्ठनियामेनेव कथेतुं आरभिः—

“उसभा रुक्खा गावियो गवा च
अस्सो कंसो सिगाली च कुम्भो
पोक्खरणी च अपाकचन्दनं [२८४]
लापूनि सीदन्ति सिला प्लवन्ति
मण्डूकियो कण्हसप्पे गिलन्ति;
काकं सुवण्णा परिवारयन्ति
तसावका एलकानं भयाहीति ।”

इमं मातिकं निव्वणित्वा कथेसि ।

(१) भन्ते ! एकं ताव सुपिनं एवं अद्दसं—चत्तारो अञ्जनवण्णा कालउसभा युज्झिस्सामाति चतूहि दिसाहि राजङ्गणं आगत्वा उसभयुद्धं पस्सिस्सामाति महाजने सन्निपतिते युज्झनाकारं दस्सेत्वा नदित्वा गज्जित्वा अयुज्झित्वाव पटिक्कन्ता । इमं पठमं सुपिनं अद्दसं । इमस्स को विपाकोति ?

महाराज ! इमस्सविपाको नेव तव न मम काले भविस्सति । अनागते पन अधम्मिकानं कपणराजूनं अधम्मिकानं च मनुस्सानं काले लोके विपरिवत्तमाने कुसले ओस्सन्ने अकुसले उस्सन्ने लोकस्स परिहायनकाले देवो न सम्मा वस्सिस्सति मेघपादा च छिज्जिस्सन्ति, सस्सानि मिलायिस्सन्ति दुद्धिभवत्वं भविस्सति वरिसतु-कामा विय चतूहि दिसाहि मेघा उट्ठित्वा इत्थिकाहि आतपे पत्थटानं वीहिआदीनं नेमनभयेन अन्तो पवेगित-काले, पुरिसेसु कुदालपिटकहत्थेसु आलिं बन्धनत्थाय निव्वन्नेसु वस्सनाकारं दस्सेत्वा गज्जित्वा विज्जुलता निच्छारेत्वा ते उसभा विय अयुज्झित्वा अवस्सित्वाव पलायिस्सन्ति अयमेतस्स विपाको । तुहं पन तप्पच्चया कोचि अन्तरायो नत्थि, अनागतं आरब्धं दिट्ठमुपिनो एस । ब्राह्मणा पन अत्तनो जीवितवृत्तिं निग्गाय कथयि-सूति ।

एवं सत्था सुपिनस्स निष्फत्ति कथेत्वा आह—दुतियं कथेहि महाराजाति ।

(२) दुतियं भन्ते ! एवं अद्दसं—खुद्दका रुक्खा चेव गच्छा च पठवि भिन्दिवा विदत्थिमत्तम्पि रतनमत्तम्पि अनुगत्वा व पुप्फन्ति चेव फलन्ति च । इमं दुतियं अद्दसं । इमस्स को विपाकोति ?

महाराज ! इमस्सापि विपाको लोकस्स परिहीनकाले मनुस्सानं परिन्नायुककाले भविस्सति । अनागतस्मिं हि सत्ता निव्वरागा भविस्सन्ति, अमप्पत्तवयाव कुमागियो पुरिमन्तरं गत्वा उतुनियो चेव गट्ठिभ-नियो च हुत्वा पुत्तधीताहि वड्ढिस्सन्ति । खुद्दक रुक्खानं पुप्फं विय हि तामं उतुनीभावो, फलं विय च पुत्त-धीतरो भविस्सन्ति । इतोनिदानम्पि ते भयं नत्थि । ततियं कथेहि महाराजाति ।

(३) महागावियो भन्ते तदहज्जातानं वच्छानं खीरं पिबन्तियो अद्दसं । अयं मे ततियो सुपिनो । इमस्स को विपाकोति ?

इमस्सापि विपाको अनागते एव मनुस्सानं जेट्ठापचायिककम्मस्स नट्टकाले भविस्सति । अनागतस्मिं हि सत्ता मातापितुसु वा सस्सुसस्मुरेसु वा लज्जं अनुपट्ठेत्वा सयमेव कुटुम्बं संविदहित्वा व घासच्छादनमत्तम्पि महल्लकानं दातुकामा दस्सन्ति [२८५] अदातु कामा न दस्सन्ति । महल्लका अनाथा असयंवसी दारके आरा-धेत्वा जीविस्सन्ति । तदहज्जातानं वच्छकानं खीरं पिबन्तियो महागावियो विय । इतोनिदानम्पि ते भयं नत्थि । चतुत्थं कथेहीति ।

(४) धुरवाहे भन्ते ! आरोहपरिणाहसम्पन्ने महागोणे युगपरम्पराय अयोजेत्वा तरुणे गोदम्मे धुरे योजेत्ते अद्दसं । ते धुरं बहितुं असक्कोन्ता छड्डेत्वा अट्ठसु । सकटानि नप्पवत्तिंसु । अयं मे चतुत्थो सुपिनो । इमस्स को विपाकोति ?

इमस्सापि विपाको अनागते एव अधम्मिकराजूनं काले भविस्सति । अनागतस्मिं हि अधम्मिकक-
पणराजानो पाण्डितानं पवेणिकुसलानं कम्मं नित्थरणसमत्थानं महामत्तानं यसं न दस्सन्ति धम्मसभायं विनि-
च्छयट्टानेपि पण्डिते बोहारकुसले महल्लके अमच्चे न ठपेस्सन्ति, तद्विपरीतानं पन तरुणतरुणानं यसं दस्सन्ति,
तथा रूपे एव च विनिच्छयट्टाने ठपेस्सन्ति । ते राजकम्मानि चैव युत्तायुत्तञ्च अजानन्ता नेव तं यसं उविख-
पितुं सक्खिस्सन्ति, न राजकम्मानि नित्थारितुं । ते असक्कोन्ता कम्मधुरं छड्डेस्सन्ति महल्लकापि पण्डितामच्चा
यसं अलभन्ता किच्चानि नित्थारितुं समत्थापि किं अम्हाकं एतेहि ? मयं बोहिरका जाता, अब्भन्तरिका तरुण-
दारका जानिस्सन्तीनि उप्पन्नानि कम्मानि न करिस्सन्ति, एवं सव्वथापि तेसं राजूनं हानियेव भविस्सति, धुरं
वहितुं असमत्थानं वच्छदम्मानं धुरे याजितकालो विय धुरवाहानं महागोणनं युगपरम्पराय अयोजितकालो
विय भविस्सति । इतोनिदानमपि ते भयं नत्थि । पञ्चमं कथेहीति ।

(५) भन्ते ! एकं उभतो मुखं अस्सं अहसं तस्स द्वीमु पस्सेसु यवसं देन्ति । सो द्वीहि मुखेहि खादति ।
अयं मे पञ्चमो सुपिनो । इमस्स को विपाकोति ?

इमस्सापि अनागते अधम्मिकराजकाले येव विपाको भविस्सति । अनागतस्मिं हि अधम्मिकबाल-
राजानो अधम्मिके लालमनुस्से विनिच्छये ठपेस्सन्ति । ते पापपुञ्जोसु अनादरा बाला सभायं निसीदित्वा
विनिच्छयं देन्ता उभिन्नमपि अत्थपच्चत्थिकानं हत्थतो लञ्चं गहेत्वा खादिस्सन्ति । अस्सो विय द्वीहि मुखेहि
यवसं । इतोनिदानमपि ते भयं नत्थि । छट्ठं कथेहीति ।

(६) भन्ते ! महाजनो सतसहस्सग्घनिकं सुवण्णपातिं सम्मज्जित्वा इध पस्सावं करोहीति एकस्स
जरसिगालस्स उपनामेसि । तं तत्थ पस्सावं करोन्तं अहसं । अयं मे छट्ठो सुपिनो । इमस्स को विपाकोति ?

इमस्सापि विपाको अनागते येव भविस्सति । अनागतस्मिं हि अधम्मिका विजातिराजानो जाति-
सम्पन्नानं कुलपुत्तानं आसंकाय यसं न दस्सन्ति अकुलीनानमेव वड्ढेस्सन्ति । एवं महाकुलानि दुग्गतानि
भविस्सन्ति लामक [२८६] कुलानि इस्सरानि । ते च कुलीन-पुरिसा जीवितुं असक्कोन्ता इमे निस्साय
जीविस्सामाति अकुलीनानं धीतरो दस्सन्ति । इति तासं कुलधीतानं अकुलीनेहि सद्धि संवासो जरसिगा-
लस्स सुवण्णपातियं पस्सावकरण्णोदसो भविस्सति । इतोनिदानमपि ते भयं नत्थि । सत्तमं कथेहीति ।

(७) भन्ते ! एको पुरिसो रज्जु वट्टेत्वा वट्टेत्वा पादमूले निक्खिपति, तेन निसिन्नपीठस्स हेट्ठा सयिता
एका छातसिगाली तस्स अजानन्तस्सेव तं खादति । एवाहं अहसं । अयं मत्तमो सुपिनो । इमस्स को विपाकोति ?

इमस्सापि अनागते येव विपाको भविस्सति । अनागतस्मिं हि इत्थियो पुरिसलोला सुरालोलाअलं-
कारलोला विसिखालोला आमिसलोला भविस्सन्ति दुस्सीला दुराचारा । ता सामिकेहि कसिगोरवखादीनि
कम्मानि कत्वा किच्छेन कसिरेन सम्भतं धनं जारेहि सद्धि सुरम्पिवन्तियो मालागन्धविलेपनं धारयमाना
अन्तोगेहे अच्चायिकमपि किच्चं अनोलोकेत्वा गेहे परिकखेपस्स उपरिभागेन छिद्दट्टानेहिपि जारे उपधारयमाना
स्वे वपितब्बयुत्तकं बीजमपि कोट्टेत्वा यागुभत्तखज्जकादीनि सम्पादेत्वा खादमाना विलुम्पिस्सन्ति हेट्ठा पीठके
निपन्नछातसिगाली विय वट्टेत्वा वट्टेत्वा पादमूले निक्खित्तरज्जुं । इतो निदानमपि ते भयं नत्थि ।
अट्ठमं कथेहीति ।

(८) भन्ते ! राजद्वारे बहूहि तुच्छकुम्भेहि परिवारेत्वा ठपितं एकं महन्तं पूरितकुम्भं अहसं, चत्ता-
रोपि पन वण्णा चतुहि दिसाहि चतुहि अनुदिसाहि च घटेहि उदकं आहरित्वा आहरित्वा पूरितकुम्भमेव पूरन्ति,
पूरितपूरितं उदकं उत्तरित्वा पलायति, ततोपि पुनप्पुनं तत्थेव उदकं आसिञ्चन्ति, तुच्छकुम्भे ओलोकेन्तापि
नत्थि । अयं मे अट्ठमो सुपिनो । इमस्स को विपाकोति ?

इमस्सापि अनागते देव विपाको भविस्सति, अनागतस्मिं हि लोको परिहायिस्सति, रट्ठं निरोजं भवि-
स्सति, राजानो दुग्गता कपणा भविस्सन्ति, यो इस्सरो भविस्सति तस्स भण्डागारे सतसहस्समत्ता कहापणा
भविस्सन्ति, ते एवं दुग्गता सब्बे जानपदे अत्तनोव कम्मे' कारेस्सन्ति उपददुता मनुस्सा सके कम्मन्ते छड्डेत्वा

राजूनञ्जेव अत्थाय पुब्बन्नापरन्नानि च वपेन्ता रक्खन्ता लायन्ता मद्दन्ता पवेसेन्ता उच्छुक्खेत्तानि करोन्ता यन्तानि करोन्ता यन्तानि वाहेन्ता फाणितादीनि पचन्ता पुप्फारामे च फलारामे च करोन्ता तत्थ तत्थ निप्फ-
न्नानि पुब्बन्नादीनि आहरित्वा रञ्जो कोट्टागारमेव पूरेस्सन्ति, अत्तनो गेहेसु तुच्छकोट्टकेसु ओलोकेन्तापि न
भविस्सन्ति, तुच्छतुच्छकुम्भे अनोलोकेत्वा पूरितकुम्भे पूरणसदिसमेव भविस्सन्ति । इतो निदानम्पि ते भयं
नत्थि । नवमं कथेहीति । [२८७]

(६) भन्ते ! एकं पञ्चवणपदुमसञ्छन्नं गम्भीरं सव्वतोत्तित्थं पोक्खरणिं अद्दसं, समन्ततो द्विपद-
चतुप्पदा ओतरित्वा तत्थ पानीयं पिबन्ति । तस्सा मज्जे गम्भीरट्टाने उदकं आविलं, तीरप्पदेसेसु द्विपद-
तुप्पदानं अवकमनट्टाने अच्छं विप्पसन्नमत्ताविलं, एवाहं अद्दसं । अयम्मे नवमो सुपिनो । इमस्स को विपा-
कोति ?

इमस्सापि अनागते एव विपाको भविस्सन्ति । अनागतास्मिं हि राजानो अधम्मिका भविस्सन्ति छन्दा-
दि वसेन अर्गातिं गच्छन्ता रज्जं कारेरस्सन्ति धम्मेन विनिच्छयं नाम न दस्सन्ति लञ्चवित्तका भविस्सन्ति धन-
लोला, रट्टवासिकेसु नेसं खन्तिमेत्तानुद्दया नाम न भविस्सन्ति, कवखला फरसा उच्छयन्ते उच्छगण्टिका विय
मनुस्से पीलेन्ता पीलेन्ता नानप्पकारेहि वलिं उप्पादेत्वा धनं गण्हिस्सन्ति । मनुस्सा बलिपीलिता किञ्चि दातुं
असक्कोन्ता गामनिगमादयो छुड्डेत्वा पच्चन्तं गत्वा वासं कप्पेरस्सन्ति, मज्झिमजनपदो सुञ्जो भविस्सन्ति ।
पच्चन्तो घनवामो सेय्यथापि पोक्खरणिया मज्जे उदकं आविलं पण्यन्ते विपसन्नं । इतो निदानम्पि ते भयं
नत्थि । दसमं कथेहीति ।

(१०) भन्ते ! एकस्मा येव कुम्भिया पच्चमानं ओदनं अपाकं अद्दसं । अपाकन्ति विचारेत्वा
विभजित्वा ठपितं विय तीहाकारेहि पच्चमानं एकास्मि पस्से अतिकिलिन्नो होति, एकास्मि उत्तण्डुलो एकास्मि
सुपक्कोति । अयम्मे दसमो सुपिनो । इमस्स को विपाकोति ?

इमस्सापि अनागते येव विपाको भविस्सन्ति । अनागतास्मिं हि राजानो अधम्मिका भविस्सन्ति,
तेसु अधम्मिकेसु राजपुत्तापि ब्राह्मणगृहपतिकापि नेगमजानपदापीति समणब्राह्मणे उपादाय सव्वे मनुस्सा
अधम्मिका भविस्सन्ति । ततो नेमं आरवखदेवता बलिपटिग्गाहिका देवता खखदेवता आका-
सट्टदेवता अधम्मिका भविस्सन्ति । एवं देवतापि अधम्मिका भविस्सन्ति । अधम्मिकराज्जं रज्जे वाता विसमा
खरा वायिस्सन्ति, ते आकामट्ट विमानानि कम्पेस्सन्ति, तेसु कम्पितेसु देवता क्पिता देवं वस्सितुं न दस्सन्ति ।
वस्समानोपि सकलरट्ठे एकप्पहारेन न वस्सिस्सन्ति । वस्समानोपि सव्वत्थं कमिकम्मसस वा वप्पकम्मस्स वा
उपकारो हुत्वा न वस्सिस्सन्ति, यथा च रट्ठे एवं जनपदेपि गामेपि एकतलाकसरेपि एकप्पहारेन
न वस्सिस्सन्ति, तलाकस्म उपरिभागेवस्सन्तो हेट्ठाभागे न वस्सिस्सन्ति, हेट्ठा वस्सन्तो उपरि न वस्सिस्सन्ति, एक-
स्मि भागे सस्सं अतिवस्सेन नासेस्सन्ति, एकास्मि अवस्सनेन मिलापेस्सन्ति, एकास्मि सस्मा वस्समानो सम्पादेस्सन्ति ।
एवं एकस्स रञ्जो रज्जे वुत्तसस्सा तिप्पकारा भविस्सन्ति, एककुम्भिया ओदनो विय । इतो निदानम्पि
ते भयं नत्थि । एकादसमं कथेहीति । [२८८]

(११) भन्ते ! सतसहस्सघनिकं चन्दनसारं पूतितक्केन विक्किणन्ते अद्दसं । अयं मे एकादसमो
सुपिनो । इमस्स को विपाकोति ?

इमस्सापि अनागते एव मय्हं सामने परिहायन्ते विपाको भविस्सन्ति । अनागतास्मिं हि पच्चयलोला
अलज्जिभिकखू बहू भविस्सन्ति, ते मया पच्चयलोलुप्पं निम्मथेत्वा कथितधम्मदेसनं चीवरादिचतुपच्चयहेतु
परेसं देमेस्सन्ति, पच्चयेहि मुञ्चित्वा नित्थरणपक्खे ठिता निव्वाणाभिमुखं कत्वा देमेतुं न सविक्खस्सन्ति ।
केवलं पदव्यञ्जनसम्पत्तिं चेव मधुरसहं च सुत्वा महग्घानि चीवरादीनि दस्सन्ति चेव दातुकामा च होन्तीति,
अपरे अन्तरवीथिचतुक्कगजट्टागदिमू निमीदित्वा कट्ठापण्डुक्कट्ठापण पाद मासकरूपादीनिपि निस्साय
देसिस्सन्ति, इति मया निव्वाणघनकं कत्वा देमितं धम्मं चतुपच्चयत्थाय चेव कट्ठापण्डुक्कट्ठा-
पणादीनं अत्थाय च विक्किणित्वा देमेन्ता मनसहस्सघनिकं चन्दनसारं पूतितक्केन विक्किणन्ता विय
भविस्सन्ति । इतो निदानम्पि ते भयं नत्थि । द्वादसमं कथेहीति ।

(१२) भन्ते ! तुच्छलापूनि उदके सीदन्तानि अहंसं । इमस्स को विपाकोति ?

इमस्सापि अनागते अधम्मिकराजकाले लोके विपरिवत्तन्ते येव विपाको भविस्सति, तदा हि राजानो जातिमम्पन्नानं कुलपुत्तानं यमं न दस्सन्ति, अकुलीनानं येव दस्सन्ति, ते इस्मरा भविस्सन्ति । इतरे दलिदां राजसम्मूखेपि राजद्रारेपि अमच्चसम्मूखेपि विनिच्छयट्टानेपि तुच्छलावुसदिसानं अकुलीनानञ्जोव कथा ओमीदित्वा ठिता विय निच्चला मुप्पनिट्ठिता भविस्सन्ति, सङ्घसन्निपातेमुपि सङ्घकम्मगणकम्मट्टानेस्सु चेव पत्तचीवरपरिवेणादिविनिच्छयट्टानेस्सु च दुस्सीलानं पापपुग्गलानञ्जोव कथा निव्यानिका भविस्सति न लज्जी-भिकवून्ति एवं सव्वथापि तुच्छलापुसीदनकालो विय भविस्सति । इतो निदानमपि ते भयं नत्थि । तेरस्समं कथेहीति ।

(१३) भन्ते ! महन्तमहन्ता कूटागारप्पमाणा घनमिला नावा विय उदके प्लवमाना अहंसं । इमस्स को विपाकोति ?

इमस्सापि तादिमे येव काले विपाको भविस्सति । तदा हि अधम्मिकराजानो अकुलीनानं वसं दस्सन्ति, ते डग्गम भविस्सन्ति, कुलीना दुग्गता नेस्सु न केचि गाग्गं करिस्सन्ति इतरेस्सु येव करिस्सन्ति राजसम्मूखे वा अमच्चसम्मूखे वा विनिच्छयट्टाने वा विनिच्छयकुमलानं घनमिलामदिमानं कुलपुत्तानं कथा न ओगाहित्वा पतिट्ठहिस्सन्ति । नेस्सु कथेन्तेस्सु किं इमे कथेन्तीति इतरे परिह्मासमेव करिस्सन्ति, भिक्खुसन्निपातेपि वुत्तप्प कारेस्सु ठानेस्सु नेव पेमले भिक्खुं गरुकातव्वे मञ्जीम्मसन्ति, नापि तेमं कथा परियोगाहित्वा पतिट्ठहिस्सन्ति । मिलानं प्लवतकालो विय भविस्सति । इतो निदानमपि ते भयं नत्थि । चद्दुग्गमं कथेहीति । [२८६]

(१४) भन्ते ! खुट्ठकमधुकपुण्णप्पमाणा मण्डूकियो महन्ते कण्हसप्पे वेगेन अनुबन्धित्वा उप्पलनाले विय छिन्दित्वा छिन्दित्वा ममं खादित्वा गिलन्तियो अहंसं अयं चद्दुग्गमो मुपिनो । इमस्स को विपाकोति ?

इमस्सापि लोके परिहायन्ते अनागते एव विपाको भविस्सति । तदा हि मनुस्सा निव्वरागा दुज्जातिका किलेमानुवत्तिका हुत्वा तरुणतरुणानं अत्तनो भग्गियानं वसे वत्तिस्सन्ति गेहे दासकम्मकरादयोपि गोमहिमादयोपि हिग्गज्जामवण्णमपि सव्वं तामं येव आयत्तं भविस्सति । अस्सुं हिग्गज्जामवण्णं वा परिच्छेदादि जानं वा कट्ठान्ति वृत्ते यत्थ वा तत्थ वा होनु किं नुत्तिहिमिना व्यापारेन ? त्वं मट्ठं घरे सन्तं वा असन्तं वा जानितुकामो जानोति वत्ता नानपक्वारेहि अक्कोमित्वा मुखमत्तीहि कोट्टेवा दामचेट्ठके विय च अत्तनो वसे कत्वा अत्तनो इस्सरियं पवत्तेस्सन्ति । एवं मधुकपुण्णप्पमाणानं मण्डूकपोत्तिकानं आसीविसे कण्हसप्पे गिलनकालो विय भविस्सति । इतो निदानमपि ते भयं नत्थि । पण्णरममं कथेहीति ।

(१५) भन्ते ! दमहि अमद्धम्मेहि समन्नागतं गामगोचरं काकं कञ्चनवण्णताय^१ स्वण्णाति लद्धनामेवुवण्णराजहंमे परिवारेन्ते अहंसं । इमस्स को विपाकोति ?

इमस्सापि अनागते दुब्बलराजकाले येव विपाको भविस्सति । अनागतस्मिं हि राजानो हत्थिसिप्पादिमु अकुमला युद्धेस्सु अविगारदा भविस्सन्ति । ते अत्तनो रज्जे विपत्ति आसंकमाना समानजातिकानं कुलपुत्तानं इस्सरियं अदत्त्वा अत्तनो पादमूलिकनहापककप्पकादीनं दस्सन्ति । जातिगोत्तमपन्ना कुलपुत्ता राजकुले पतिट्ठं अलभमाना जीविकं कप्पन्तु असमत्था हुत्वा इस्सरिये ठिते जातिगोत्तहीने अकुलीने उपट्ठहन्ता विनरिस्सन्ति । गुवण्णराजहंमेहि काक्कस्स परिवारितकालो विय भविस्सति । इतो निदानमपि ते भयं नत्थि । सोलरामं कथेहीति ।

(१६) भन्ते ! पुब्बे दीपिनो एलके खादन्ति । अहं पन एलके दीपिनो अनुबन्धित्वा मुरुमुरूति खादन्ते अहंसं, अथञ्ज्जे तसावका एलके दूरतो दिस्वा तसिता भयप्पत्ता हुत्वा एलकानं भया पलायित्वा गुम्बगहनानि पविसित्वा निलीयिस्सु । एवाहं अहंसं । इमस्स को विपाकोति ।

इमस्सापि अनागते अधम्मिकराजकाले येव विपाको भविस्सति । तदा हि अकुलीना राजवल्लभा इस्सरा भविस्सन्ति कुलीना अप्पञ्जाता दुग्गता । ते राजवल्लभा राजानं अत्तनो कथं गाहापेत्वा विनिच्छ-

यदुनादिषु बलवन्तो हुत्वा कुलीनानं पवेणिआगतानं खेत्तवत्थादीनि अम्हाकं सन्तकानि एतानीति अभियुज्झित्वा ते न तुम्हाकं अम्हाकन्ति आगन्त्वा विनिच्छयदुनादिषु विवदन्ते वेत्तलतादीहि पहरापेत्वा गीवाय गहेत्वा अप-
कड्ढापेत्वा [२६०] अत्तनो पमाणं न जानाथ अम्हेहि सद्धि विवदथ ? इदानी वो रज्जो कथेत्वा हत्थपाद-
च्छेदनादीनि कारेस्सामाति सन्तज्जेस्सन्ति । ते तेसं भयेन अत्तनो सन्तकानि बत्थूनि तुम्हाकं येवेतानि गणह-
धाति नीय्यादेत्वा अत्तनो गेहानि पविसित्वा भीता निपज्जिस्सन्ति । पापभिक्षवूप्पि पेसले भिक्षू यथारुचि
विहेठेस्सन्ति ते पेसला भिक्षू पटिसरणं अलभमाना अरज्जं पविसित्वा गहणट्टानेसु निलीयिस्सन्ति । एवं
हीनजच्चेहि चवे पापभिक्षवूहि च उपदुत्तानं जातिमन्तकुलपुत्तानं चव पेसलानं भिक्खूनं च एलवानं भयेन
तमावकानं पलायनकालो विय भविस्सन्ति । इतो निदानमि ते भयं नत्थि । अयमि हि सुपिनो अनागतज्जो व
आरुत्थ दिट्ठो । ब्राह्मणा पन न धम्मे सुधम्मनाय तयि मिनेहेन तं कथयिमु । बहुं धनं लभिस्सामाति आमि-
चक्खुताय जीवितवर्त्ति निस्साय कथयिस्सूति ।

एवं सत्था सोलमन्नं महासुपिनानं निष्फन्ति कथेत्वा न खो महाराज ! एतर्हि त्वज्जोव इमे सुपिने
अट्ठम, पोरारगकगजानोपि अट्ठमं । ब्राह्मणापि तेसं एवमेव इमे सुपिने गहेत्वा यज्जामःथके विपिस्सु, ततो
पण्डितेहि दिन्नेन नयेन गत्वा बोधिमत्तं पुच्छिमु । पोरारगकापि तेसं इमे सुपिने कथेत्वा इमिनाव नियामेन
कथेस्सुन्ति वत्ता तेन याचिनो अतीतं आहरिः—

अनीतवत्थ

अनीते वागगमियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारन्ते बोधिमत्तो उदिच्च ब्राह्मणकुले निव्वन्त्तिवा वरप्पन्नो इमि-
पव्वज्जं पव्वजित्वा अभिज्जा चव समापत्तियो च निव्वत्तेत्वा हिमवन्तण्डेमे भानकीलं कीरन्तो विहरन्ति ।
तदा वागगमियं ब्रह्मदत्तो इमिनाव नियामेन इमे सुपिने दिस्वा ब्राह्मणे पुच्छि । ब्राह्मणा एवमेव यज्जं यजितुं
आरब्धिमु ।

तेमु पुरोहितम्म अन्नेवामी मागवो पण्डितो व्यत्तो आचरियं आह—आचरिय ! तुम्हेहि मयं तयो वेदे
उग्गण्हापिता । ननु तेमु एकं मारेत्वा एकम्म मोत्थिकम्मस्स कण्णमाम नत्थीति ?

नात ! इमिना उपायेन अम्हाकं बहुं धनं उप्पज्जिस्सन्ति । त्वं पन रज्जो धनं रक्खितुकामो मज्जो ति ।

मागवो—तेन हि आचरिय ! तुम्हे तुम्हाकं कम्मं करोथ अहं तुम्हाकं सन्निके किं कम्मामीति विच-
रन्तो रज्जो उय्यानं अगमामि ।

तं दिवमज्जोव बोधिमत्तोपि तं कारणं जत्वा अज्ज मयि मनुस्सपयं गते महाजनम्म वन्धना मोक्खो
भविस्समीति आकामेन गत्वा उय्याने ओत्तरित्वा सुवण्णपटिमा विय मज्ज्गलमिवातले निमीदि । मागवो
बोधिमत्तं उपमङ्कमित्वा वन्दित्वा एकमन्नं निमीदित्वा पटिमन्थारं अकामि ।

बोधिमत्तोपि तेन [२६१] सद्धि मधुग्गपटिमन्थारं कत्वा—किन्नुवो मागव ! राजा धम्मेन रज्जं
करोतीति पुच्छि ।

भन्ते ! राजा नाम धम्मिको अपि च खो पन तं ब्राह्मणा अनित्थे पक्खन्दापेन्ति । राजा सोलसमुपिने
दिस्वा ब्राह्मणानं आरोचेमि । ब्राह्मणा यज्जं यजिस्सामाति आरुद्धा । किन्नु खो भन्ते ! अयं नाम इमेसं
सुपिनानं निष्फन्तीति राजानं मज्जापेत्वा तुम्हाकं महाजनं भया मोचन्तुं न वट्ठतीति ?

मयं खो मागव ! राजानं न जानाम, राजापि अम्हे न जानाति । मचे पन इधागन्त्वा पुच्छेय्य कथ-
य्यामम्म मयन्ति ।

मागवो अहं भन्ते ! आनेस्सामि । तुम्हे मयागमनं उदिक्खन्ता महुत्तं निसीदथानि बोधिमत्तं पटि-
जानापेत्वा रज्जो सन्निकं गत्वा—महाराज ! एको आकामचारिको तापमो तुम्हाकं उय्याने ओत्तरित्वा
तुम्हेहि दिट्ठमुपिनानं निष्फन्ति कथेस्सामीति तुम्हे पक्कोसतीति आह ।

राजा तस्स कथं सुत्वा तावदेव महन्तेन परिवारेन उय्यानं गत्वा तापमं वन्दित्वा एकमन्नं निमिस्सो
पुच्छि—तुम्हे किर भन्ते ! मया दिट्ठमुपिनानं निष्फन्ति जानाथानि ?

आम महाराजाति !

तेन हि कथेथाति ।

कथेमि महाराज ! यथादिदृष्टे ताव सुपिने मं सावेहीति ।

साधु भन्तेति राजा—

उसभा रुक्खा गावियो गवा च
अस्सो कंसो सिगाली च कुम्भो,
पोक्खरणी च अपाकचन्दनं ।
लापूनि सीदन्ति सिला प्लवन्ति
मण्डूकियो कण्हसप्पे गिलन्ति,
काकं सुवण्णा परिवारयन्ति
तमावका एलकानं भयाहीति ।

वत्वा पसेनदि कोसल रज्ज्वा कथितनियामेनेव सुपिने कथेसि ।

बोधिमत्तोपि तेसं इदानीं सत्थारा कथितनियामेनैव वित्थारतो निष्फत्ति कथेत्वा परियोसाने सयं
इदं कथेमिः—

“विपरियासो वत्तति न इधमत्थीति”

तत्रायं अत्थो—अयं महाराज ! इमेसं सुपिनानं निष्फत्ति । यं पनेनं तेसं पट्टिघातत्थाय यज्जकम्मं वत्तति तं विपरियासो वत्तति विपरीततो वत्तति, विपल्लामेन वत्ततीति वृत्तं होति । किं कारणा ? इमेसं हि निष्फत्ति नाम लोकस्स विपरिवत्तनकाले अकारगगस्स कारणन्ति गहणकाले कारणस्स अकारणन्ति छड्डनकाले अभूतस्स भूतन्ति गहणकाले भूतस्स अभूतन्ति जहनकाले अलज्जीनं उस्सन्नकाले लज्जीनं च परिहीनकाले भविस्सति । नयिधमत्थि इदानीं पन तव वा मम वा [२६२] काले इध इमस्मि पुगिसयुगे वत्तमाने एतेसं निष्फत्ति नत्थि । तस्मा एतेसं पट्टिघाताय वत्तमानं यज्जकम्मं विपल्लासेन वत्तति । अलन्तेन, नत्थि ते इतो निदानं भयं वा छम्भितत्तं वाति । महापुरिमो राजानं समरसासेत्वा महाजनं बन्धना मोचेत्वा पुन आकासे ठत्वा रज्ज्वा ओवादं दत्वा पञ्चमु सीलेसु पनिट्ठापेत्वा इतो पट्टाय महाराज ! ब्राह्मणेहि सद्धि एकतो हुत्वा पसुघातयज्जं नाम मा यजीति धम्मं देसेत्वा आकासेनेव अत्तनो वसनट्टानं अगमासि ।

राजापि तस्म ओवादे ठितो दानादीनि पुज्जानि कत्वा यथाकम्मं गतो । सत्था इमं धम्मदेसनं आह-
रित्वा सुपिनपञ्चया ते भयं नत्थि हारेत्थ यज्जान्ति यज्जं हारेत्वा महाजनस्स जीवितदानं दत्वा अनुमन्धि
घटेत्वा जातकं समोधानेमि । तदा राजा आनन्दो अट्ठोसि, माणवो मारिपुत्तो, तापसो पन अहमेवाति ।

परिनिव्वुत्ते पन भगवति सङ्गीतिकारका उसभा रुक्खादीनि एकादस' पदानि अट्टकथं आरोपेत्वा “लापूनी”
ति आदीनि पञ्चपदानि एकं गाथं कत्वा एककनिपातपालि आरोपेमुन्ति ।

महासुपिनजातकं ।

८. इल्लीसजातकं

उभो खञ्जाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो मच्छरिय कोसियसेट्ठि आरब्भ कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

राजगहनगरस्स किर अविदूरे सक्खरं नाम निगमो । तत्थेको मच्छरियकोसियो नाम सेट्ठी असीति-
कोटिविभवो पटिवसति । सो तिग्गणेन तेलविन्दुमत्तम्पि नेव परेसं देति न अत्तना परिभुञ्जति । इति तस्स
नं विभवजातं नेव पुत्तदारादीनं न समग्गन्नाद्दग्गानं अत्थं अनुभोति । रक्खसपरिग्गहितपोक्खरणी विय अपरि-
भोगं तिट्ठति ।

मत्था एक दिवसं पच्चूससमये महाकरुणाममापत्तितो वुट्ठाय सकललोकधानुयं बोधनेय्यवन्धवे ओलो-
केन्तो पञ्चवत्तानीसयोजन-मत्थके वसन्तस्स तस्स सेट्ठिनो सपजापतिकस्म सोतापत्तिफलस्सूपनिस्सयं अद्स ।

ततो पुरिमत्तरदिवसे पन सो राजानं उपट्ठातुं राजगेहं गत्वा राजुपट्ठानं कत्वा आगच्छन्तो एकं छात-
ज्झत्तं जनपदमनुस्सं कुम्मासपूरं कपल्लपूर्वं खादन्तं दिस्वा तत्थ पिपासं उप्पादेत्वा अत्तनो घरं गत्वा चिन्तेसि
मचाहं कपल्लपूर्वं खादितुकामोम्हीति वक्खामि बहू मया सद्धिं खादितुकामा भविस्सन्ति एवं मे बहूनि तण्डुल-
सप्पिफाणितादीनि परिक्खयं गमिम्मन्ति । न कस्मचि कथेस्सामीति तण्हं अधिवासेन्तो विचरति । सो गच्छन्ते
काले (२६३) उप्पण्डुप्पण्डुकजातो धमनिमन्थतगत्तो जातो । ततो तण्हं अधिवासेतुं असक्कोन्तो गग्गं
पविसित्वा मञ्चकं उपगूहित्वा निपज्जि । एवं गतोपि धनहानिभयेन कस्सचि किञ्चि न कथेसि ।

अयं नं भरिया उमड्कमित्वा पिट्ठि परिमज्जित्वा—किं ते मामि ! अफामुकन्ति पुच्छि ।

न मे किञ्चि अफामुकं अत्थीति ।

किन्नु खो ते राजा कुपितोति ?

राजापि मे न कुप्पतीति ।

अथ किं ते पुत्तधीताहि वा दासकम्मकरादीहि वा किञ्चि अमनापं कतं अत्थीति ?

एवरूपम्पि मे नत्थि ।

किस्मिचि पन ते तण्हा अत्थीति ?

एवं वृत्तेपि धनहानिभयेन किञ्चि अवत्वा निस्सट्ठोव निपज्जि ।

अथ नं भरिया—कथेहि सामि ! किस्मिं ते तण्हाणि आह ।

सो वचनं परिगिलन्तो विय अत्थि मे एका तण्हाति आह ।

किं ते तण्हा सामीति ? कपल्लपूर्वं खादितुकामोम्हीति ।

अथ किमत्थं न कथेमि किं त्वं दलिद्दो ? इदानीं सकलमक्खरनिगमवासीनं पहोनके कपल्लपवे पचि-
स्सामीति ?

किं ते तेहि, ते अत्तनो कम्मं कत्वा खादिस्सन्तीति ।

तेन हि एकरच्छवासीनं पहोनके पचामीति ?

जानामहन्तव महद्धनभावन्ति ।

इमिस्मिं गेहमत्ते^१ मग्ग्वेसं पहोनकं कत्वा पचामीति ?

जानामहन्तव महज्झासयभावन्ति ।

तेन हि ते पुत्तदारमत्तस्सेव पहोनकं कत्वा पचामीति ?

किं ते एतेहीति ?

१. स्या० गेहसामत्ते ।

किं पन तुय्हं च मय्हं च प्होनकं कत्वा पचामीति ?

त्वं किं करिस्ससीति ?

तेन हि एकस्सेव ते प्होनकं कत्वा पचामीति ।

इमस्मिं ठाने पच्चमाने बहू पच्चासिस्सन्ति । सकलतण्डुले ठपेत्वा भिन्नतण्डुले च उद्धनकपल्लादीनि च आदाय थोकं खीरसप्पिमधुफाणितं च गहेत्वा सत्तभूमकस्स पासादस्स उपरि महातलं आरुह्य पच । तत्थाहं एककोव निसीदित्वा खादिस्सामीति ।

सा साधूति पटिस्सुगित्वा गहेतव्वं गाहापेत्वा पासादं अभिरुह्य दासियो विस्मज्जेत्वा सेट्ठि पक्कोसा-पेसि । सो आदितो पट्टाय द्वारानि पिदहन्तो सव्वद्वारेसु सूचिघटिकानि दत्वा सत्तमं तलं अभिरुहित्वा तत्थपि द्वारं पिदहित्वा निसीदि । भरियापिस्स उद्धने अग्गि जालत्वा कपल्लकं आरोपेत्वा पूवे पच्चितुं आरभि ।

अथ सत्था पातोव महामोग्गल्लानत्थेरं आमन्तेसि—एसो मोग्गल्लान ! राजगहस्स अविदूरे सक्ख-रनिगमे मच्छरियकोमियसेट्ठी कपल्लपूवे खादिस्सामीति अज्जोसं दस्सनभयेन सत्तभूमकपासादे कपल्लपूवे पाचापेति । त्वं तत्थ गन्त्वा तं सेट्ठि दमेत्वा निव्विसेवनं कत्वा उभोपि जयम्पतिके पूवे च खीरसप्पिमधुफाणि-तादीनि च गाहापेत्वा अत्तनो बलेन जेतवनं आनेहि । अज्जाहं पच्चहि भिक्खूसनेहि सद्धि विहारे येव निसी दिस्सामी, पूवेहेव भत्तकिच्चं करिस्सामीति आह । थेरो साधु भन्तेति सत्थु वचनं सम्पटिच्छित्वा तावदेव इद्धि-बलेन तं निगमं गन्त्वा तस्स पासादस्स सीहपञ्जग्गद्वारे मुनिवत्थो मुपारुतो आकासे येव मग्निरूपकं विय अट्ठासि । [२६४]

महासेट्ठिनो थेरं दिस्वा हृदयमंसं कम्पि । सो अहं एवरूपानज्जोव भयेन इमं ठानं आगतो, अयं च आगन्त्वा वातपानद्वारे ठितोति गहेतव्वगहरणं अपस्सन्तो अग्गिभिह पक्खित्तलोणसक्खरा विय रोसेन तटतटायन्तो एवमाह—समरण ! आकासे ठत्वा ताव किं लभिस्ससि ? आकासे अपदे पदं दस्सेत्वा चङ्कमन्तोपि नेव लभिस्ससीति आह ।

थेरो तस्मिं येव ठाने अपरापरं चङ्कमि ।

सेट्ठि—चङ्कमन्तो किं लभिस्ससि ? आकासे पल्लङ्केन निसीदमानोपि न लभिस्ससि येवाति आह ।

थेरो पल्लङ्कं आभुजित्वा निसीदि ।

अथ नं—निसिन्नो किं लभिस्ससि ? आगन्त्वा वातपानउम्मारो ठितोपि न लभिस्ससीति आह ।

अथ थेरो उम्मारो अट्ठासि ।

अथ नं—उम्मारो ठितोपि किं लभिस्ससि ? धूमायन्तोपि न लभिस्ससि येवाति आह ।

थेरो धूमायि । सकलपासादो एकधूमो अहोसि । सेट्ठिनो अक्खीनं सूचिया विज्झनकालो विय जातो । गेहज्झायनभयेन पज्जलन्तोपि न लभिस्ससीति अवत्वा चिन्तेसि अयं समरणो सुट्ठु लग्गो अलद्धा न गमिस्सति, एकमस्स पूवं दापेस्सामीति, भरियं आह—भद्दे ! एकं खुद्दपूवं पचित्वा समरास्स दत्वा उय्योजेहि नन्ति ।

सा थोकज्जोव पिट्ठं कपल्लपातियं पक्खपि । महापूवो हुत्वा सकलं पातिं पूरेत्वा उद्धुमातो अट्ठासि । सेट्ठी तं दिस्वा बहुं तया पिट्ठं गहितं भविस्सतीति सयमेव दब्बिकण्णेन थोकं पिट्ठं गहेत्वा पक्खपि । पूवो पुरिमपूवतो महन्ततरो जातो, एवं यं यं पचिति सो सो महन्तमहन्तोव होति ।

सो निव्विन्नो भरियं आह—भद्दे ! इमस्स एकं पूवं देहीति ।

तस्सा पच्छित्तो एकं पूवं गण्हन्तिया सब्बे एकाबद्धा अल्लीयिसु । सा सेट्ठि आह—सामि ! सब्बे पूवा एकतो लग्गा विसुं कातुं न सक्कोमीति ।

अहं करिस्सामीति सोपि कातुं नासक्खि । उभो जना कोटियं गहेत्वा कड्ढन्तापि वियोजेतुं नास-क्खिसु येव । अथस्स पूवेहि सद्धि वायमन्तस्सेव सरीरतो सेदा मुच्चिसु । पिपासा च पच्छिज्जि ।

ततो भरियं आह—भद्दे ! न मे पूवेहि अत्थो, पच्छिया सद्धि येव इमस्स भिक्खुस्स देहीति ।

सा पच्छि आदाय थेरं उपसङ्कमित्वा सब्बे पूवे थेरस्स अदासि ! थेरो उभिन्नम्पि धम्मं देसेसि । तिण्णं रतनानं गुणे कथेसि । अत्थि दिन्नं अत्थि यिट्ठन्ति दानादीनं फलं गगनतले पुण्णचन्दं विय दस्सेसि ।

तं सुत्वा पसन्नचित्तो सेट्ठी-भन्ते ! आगन्त्वा इमस्मि पल्लङ्के निसीदित्वा पूवे परिभुञ्जथाति आह ।

थेरो-महासेट्ठि ! सम्मासम्बुद्धो पूवे खादिस्सामीति पञ्चहि भिक्खुसतेहि सद्धिं विहारे निसिन्नो तुम्हाकं रुचिया सति सेट्ठिभरियं पूवे च खीरादीनि च गण्हापेथ सत्थु सत्तिकं गमिस्सामाति [२६५] आह ।

कहं पन भन्ते ! एतरहि सत्थाति ?

इतो पञ्चचत्तालीसयोजनमत्थके जेतवनविहारे सेट्ठीति ।

भन्ते ! कालं अनतिक्रमिन्त्वा एत्तकं अद्धानं कथं गमिस्सामाति ?

महासेट्ठि ! तुम्हाकं रुचिया सति अहं वो अत्तनो इद्धिबलेन नेस्सामि, तुम्हाकं पासादे सोपाणसीसं अत्तनो ठाने येव भविस्सति सोपाणपरियोसानं पन जेतवनद्वारकोट्टके भविस्सति । उपरि पासादा हेट्ठापासादं ओत्तरणकालमत्तेन वो जेतवनं नेस्सामीति ।

सो साधु भन्तेति सम्पटिच्छि ।

थेरो सोपाणसीसं तत्थेव कत्वा सोपाणपादमूलं जेतवनद्वारकोट्टके होतूति अधिट्ठासि । तथेव अहोसि । इति थेरो सेट्ठिं च सेट्ठिभरियं च उपरिपासादा हेट्ठा पासादं ओत्तरणकालतोव खिप्पतरं जेतवनं सम्पापेसि । ते उभोपि सत्थारं उपसङ्कमिन्त्वा कालं आरोचेमुं । सत्था भत्तगं पविसित्वा पञ्चात्तवरबुद्धासने निसीदि सद्धिं भिक्खुसङ्घेन । महासेट्ठी बुद्धपमुखस्स भिक्खु सङ्घस्स दक्खिणोदकं अदासि । सेट्ठिभरिया तथागतस्स पत्ते पूवे पतिट्ठापेसि । सत्था अत्तनो यापनमत्तं गण्हि । पञ्चसता भिक्खूपि तथेव गण्हिमु । सेट्ठी खीरसप्पिमधुफाणितसक्खरादीनि ददमानो अगमासि ।

सत्था पञ्चहि भिक्खुसतेहि सद्धिं भत्तकिच्चं निट्ठापेसि । महासेट्ठीपि सद्धिं भरियाय यावदत्थं खादि । पूवानं परियोसानमेव न पञ्चायति । सकलविहारे भिक्खून् च विघासादानं च दिन्नेपि परियन्तो न पञ्चायति । भन्ते ! पूवा परिक्रवयं न गच्छन्तीति भगवतो आरोचेम । तेन हि जेतवनद्वारकोट्टके छड्डेथाति । अथ ने द्वारकोट्टकस्स अविदुरे पव्भारट्ठाने छड्डयिमु । अज्जापि तं ठानं कपल्लपूवपव्भारन्तेव पञ्चायति । महासेट्ठि सह भरियाय भगवन्तं उपसङ्कमिन्त्वा एकमन्तं अट्ठासि । भगवा अनुमोदनं अकासि । अनुमोदनापरियोसाने उभोपि सोतापत्तिफले पतिट्ठाय सत्थारं वन्दित्वा द्वारकोट्टके सोपाणं आरुह्य अत्तनो पासादे येव पतिट्ठहिमु । ततो पट्ठाय महासेट्ठि असीतिकोटिधनं बुद्धसासने येव विकिरि ।

पुन दिवसे सम्मासम्बुद्धे सावत्थियं पिण्डाय चरित्वा जेतवनं आगम्म भिक्खून् सुगतोवादं दत्वा गन्धकटिं पविसित्वा पतिसल्लीने सायण्हसमये धम्मसभायं सन्नपित्त्वा भिक्खू-पस्सथावुसो ! महामोगाल्लान्तये रस्सानुभावं मच्छरियसेट्ठिं मुहुत्तेनव दमेत्वा निब्बिसेवनं कत्वा पूवे गाहापेत्वा जेतवनं आनेत्वा सत्थु सम्मुखं कत्वा सोतापत्तिफले पतिट्ठापेसि । अहो ! महानुभावो थेरोति थेरस्स गुणकथं कथेन्ता निसीदिसु ।

सत्था आगन्त्वा कायानुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते भिक्खवे ! कुलदमकेन [२६६] नाम भिक्खुना कुलं अविहेठेत्वा अकिलमेत्वा पुप्फतो रेणुं गण्हन्तेन भमरेन विय उपसङ्कमिन्त्वा बुद्धगुणे जानापेतव्वन्ति वत्वा थेरं पसंसन्तो :-

यथापि भमरो पुप्फं वण्णगन्धं अहेठयं,

पलेति रसमादाय एवं गामे मुनी चरे'ति ।

इमं धम्मपदे गाथं वत्वा उत्तरिम्पि थेरस्स गुणं पकासेतु-न भिक्खवे ! इदानेव मोग्गल्लानेन मच्छरियसेट्ठी दमितो पुव्वेपि तं दमेत्वा कम्मफलसम्बन्धं जानापेसि येवाति वत्वा अतीतं आहरि:-

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते वाराणमियं इल्लीसो नाम सेट्ठि अहोसि, असीतिकोटिविभावो पुरिसदोससमन्नागतो खञ्जो कुणी विसमअक्खिमण्डलो अस्सद्धो अप्पसन्नो मच्छरी, नेव अज्जो सं देतिन सयं परिभुञ्जति । रक्खसपरिगहितपोक्खरणी वियस्स गेहं अहोसि । मातापितरो पनस्स याव सत्तमा कुलपरिवट्ठा

दायका दानपतिनो, सो सेट्टिट्ठानं लभित्वा येव कुलवंसं नामेत्वा दानमालं आपेत्वा याचके पोथेत्वा निक्कड्डित्वा धनमेव सण्ठापेसि । सो एकदिवसं राजपट्ठानं गत्वा अत्तनो घरं आगच्छन्तो एकं मग्गकिलन्तं जानपदमनुस्सं एकं सुरावारकं आदाय पीठके निसीदित्वा अम्बलसुराय कोसकं पूरेत्वा पूरेत्वा पूतिमच्छकेन उत्तरिभङ्गेन पिवन्तं दिस्वा सुरं पातुकामो हुत्वा चिन्तेसि सचाहं सुरं पिविस्सामि मयि पिवन्ते बहू पिवितुकामा भविस्सन्ति एवं मे धनपरिक्खयो भविस्सतीति सो तण्हं अधिवासेन्तो विचरित्वा गच्छन्ते गच्छन्ते काले अधिवासेतुं असक्कोन्तो विहतकप्पासो विय पण्डुकसरीरो अहोमि धमनिसन्थनगतो जातो । अथेकदिवसं गम्भं पविसित्वा मञ्चकं उपगूहित्वा निपज्जि । तमेनं भरिया उपसङ्कमत्वा पिठं परिमज्जित्वा किल्ले सामि अफासुकन्ति पुच्छि । सव्वं हेट्ठा कथितनियामेनेव वेदितव्वं ।

तेन हि एककस्सेव ते पढोनकं सुरं करोमीति पन वुत्ते गेहे सुराय कागियमानाय ब्रह्म पच्चासिंसन्ति । अन्तरापणतो आहुरापेत्वापि न मक्का इध निम्मिन्नेन पातुन्ति मामकमत्तं दत्त्वा अन्तरापणतो सुरावारकं आहुरापेत्वा चेटकेन गाहापेत्वा नगरा निक्खम्म नदीनीरं गत्वा महामग्गमपीपे एकं गुम्बं पविमत्त्वा सुरावारकं ठपयित्वा गच्छ त्वन्ति चेटकं दूरे निमीदापेत्वा कोमकं पूरेत्वा सुरं पातु आरभि ।

पिता पनस्स दानादीनं पुज्जानं कतन्ता देवलोके मक्को हत्वा निव्वन्ति । सो तस्मिं खणे पवत्तति नुवो मे दानग्गं उदाहु नोति आवज्जेन्तो तस्म च अप्पवन्ति दिस्वा पुत्तस्स च [२६७] कुलवंसं नामेत्वा दानमालं आपेत्वा याचके निक्कड्डित्वा मच्छगियभावे पतिट्ठाय अज्जोमं दातव्वं भविस्सतीति भगेन गुम्बं पविमत्त्वा एककस्मेव सुरं पिवनभावञ्च दिस्वा गच्छामि तं सङ्खोभेत्वा दमेत्वा कम्मफलसम्बन्धं जानापेत्वा दानं दापेत्वा देवलोके निब्बत्तनारहं करोमीति मनुस्सपथं ओतरित्वा इल्लीससेट्ठित्वा निव्विसेसं^१ खज्जकुंगिं विसमचक्खुलं अत्तभावं निम्मिन्ति राजगहनगरं^२ पविसित्वा रज्जोनिवेसनद्वारे ठत्वा अत्तनो आगतभावं आरोचापेत्वा पविसतूति वुत्ते पविसित्वा राजानं वन्दित्वा अट्ठासि ।

राजा किं महासेट्ठि ! अवेलाय आगतोमीति आह ।

आम आगतोमिह देव ! घरे मे असीतिकोटिमत्तं धनं अत्थि, तं देवो आहुरापेत्वा अत्तनो भण्डागारे पूरापेतूति ।

अलं महासेट्ठि ! तव धनतो अम्हाकं गेहे बहुतरं धनन्ति ।

सचे देव ! तुम्हाकं कम्मं नत्थि यथारुचिया नं गहेत्वा दानं दम्मीति ।

देहि महासेट्ठीति ।

सो साधु देवाति राजानं वन्दित्वा निक्खमित्वा इल्लीससेट्ठिनो गेहं अगमासि । सव्वे उपट्ठाकमनुस्सा परिवारेसु । एकोपि नायं इल्लीमोति जानितुं समत्थो नत्थि । सो गेहं पविसित्वा अन्तो उम्मारे ठत्वा दोवारिकं पक्कोसापेत्वा—यो अज्जो मया समानरूपो आगत्त्वा ममेतं गेहन्ति पविसितुं आगच्छति तं पिट्ठियं पहरित्वा नीहरेय्याथाति वत्वा, पासादं आरुह्य महारहे आसने निसीदित्वा सेट्ठिभगियं पक्कोसापेत्वा सिताकारं^३ दस्सेत्वा—भट्टे ! दानं देमाति आह ।

तस्स तं वचनं सुत्वाव सेट्ठिभरिया च पुत्तधीतरो च दासकम्मकरादयो च एत्तकं कालं दानं दातुं चित्तम्पि नत्थि, अज्ज पन सुरं पवित्वा मुदुचित्तो हुत्वा दातुकामो जातो भविस्सतीति वदिसु ।

अथ नं सेट्ठिभरिया—यथारुचिया देथ सामीति आह ।

तेन हि भेरिवादकं पक्कोसापेत्वा सुवण्णरजतमणिमुत्तादीहि अत्थिका इल्लीससेट्ठिस्स घरं गच्छन्तूति सकलनगरे भेरिं चरापेहीति ।

सा तथा कारेसि । महाजनो पच्छिपसिम्बकादीनि गहेत्वा गेहद्वारे सन्निपति । सक्को सत्तरतनपूरे गम्भे विवरापेत्वा तुम्हाकं दम्मि यावदत्थं गहेत्वा गच्छथाति आह । महाजनो धनं नीहरित्वा महातले रासि कत्वा आभतभाजनानि पूरेत्वा गच्छति । अज्जतरो पन जनपदमनुस्सो इल्लीससेट्ठिनो गोणे तस्सेव रथे योजेत्वा सत्तहि रतनेहि पूरेत्वा नगरा निक्खम्म महामग्गं पटिपज्जित्वा तस्स गुम्बस्स अविदूरेन रथं पाजेन्तो—

वस्ससतं जीव सामि इल्लीससेट्ठि ! तन्निस्सायदानि मे यावजीवं कम्मं अकत्वा जीवितब्बं जातं, तवेव रथो तवेव गोणा तवेव गेहे सत्तरतनानि ! नेव मातरा [२६८] दिन्नानि न पितरा तन्निस्साय लद्धानि सामोति-सेट्ठिनो गुराकथं कथेन्तो गच्छति ।

सो तं सट्ठं सुत्वा भीततसितो चिन्तेसि अयं मम नामं गहेत्वा इदञ्चिदञ्च वदति, कच्चि नुखो रञ्जा मम धनं लोकस्स दिन्नन्ति गुम्बा निक्खमित्वा गोणे च रथञ्च सञ्जानित्वा-अरे ! दुट्ठचेटक ! मय्हं गोणा मय्हं रथोति वत्वा गत्वा गोणे नासारज्जुयं गण्हि ।

गहपतिको रथा ओरुह-अरे ! दुट्ठचेटक ! इल्लीसमहासेट्ठी सकलनगरस्स दानं देति, त्वं किं अहोसीति ? पक्खन्दित्वा असनिं पातेन्तो विय खन्धे पहरित्वा रथं आदाय अगमासि ।

सो पन कम्पमानो उट्ठाय पंसुं, पुञ्छित्वा पुञ्छित्वा वेगेन गत्वा रथं गण्हि । गहपतिको रथा ओत-रित्वा केसेसु गहेत्वा नामेत्वा कप्परप्पहारेहि गले गहेत्वा आगतमग्गाभिमुखं खिपित्वा पक्कामि । एत्तावता-पिस्स सुरामदो छिज्जि ।

सो कम्पमानो वेगेन निवेसनद्वारं गत्वा धनं आदाय गच्छन्ते महाजने दिस्वा-अम्भो ! किं नामेतं ? किं राजा मम धनं विलुम्पापेतीति तं तं गत्वा गण्हाति । गहितगहिता पहरित्वा पादमूले येव पातेन्ति । सो वेदनामतो^१ गेहं पविसितुं आरभि ।

द्वारपाला-अरे दुट्ठगहपति ! कहं पविसीति वंसपेसिकाहि पोथेत्वा गीवायं गहेत्वा नीहरिसु ।

सो ठपेत्वा इदानि राजानं नत्थि मे अञ्जो कोचि पटिसरणोति रञ्जो सन्तिकं गत्वा-देव ! मम गेहं तुम्हे विलुम्पापेयाति ।

नाहं सेट्ठि ! विलुम्पापेमि ननु त्वमेव आगन्त्वा सत्ते तुम्हे न गण्हथ अहं मम धनं दानं दस्सामीति नगरे भेरि चरापेत्वा दानं अदासीति ?

नाहं देव ! तुम्हाकं सन्तिकं आगच्छामि, किं तुम्हे मय्हं मच्छरियभावं न जानाथ ? अहं तिरग्गेन तेलबिन्दुम्पि न कस्सचि देमि । यो सो दानं देति तं पक्कोसापेत्वा वीमंसथ देवाति ।

राजा सक्कं पक्कोसापेसि । द्विन्नं जनानं विसेसं नेव राजा जानाति न अमच्चा ।

मच्छरियसेट्ठी-किं देव ! न जानाथ अहं सेट्ठी, अयं न सेट्ठीति आह ।

मयं न सञ्जानाम, अत्थि ते कोचि सञ्जाननकोति ?

भरिया मे देवाति ।

भरियं पक्कोसापेत्वा कतरो ते सामिकोति पुञ्छिमु । सा अयन्ति सक्कस्सेव सन्तिके अट्ठासि । पुत्त-धीतरो दासकम्मकरादयो पक्कोसापेत्वा पुञ्छिमु । सव्वे सक्कस्सेव सन्तिके निट्ठन्ति ।

पुन सेट्ठी चिन्तेसि मय्हं सीमे पिलका अत्थि केसेहि पटिच्छन्ना । तं खो पन कप्पको एव जानाति तं पक्कोसापेस्सामीति । सो-कप्पको मं देव ! सञ्जानाति तं पक्कोसापेहीति आह ।

तस्मिं पन काले बोधिसत्तो तस्म कप्पको होति । राजा तं पक्कोसापेत्वा-इल्लीससेट्ठि जानासीति पुञ्छि । [२६९]

सीसं ओलोकेत्वा सञ्जानामि देवाति ।

तेन हि द्विन्नम्पि सीसं ओलोकेहीति ।

तस्मिं खणे सक्को सीसे पिलकं मापेमि । बोधिसत्तो द्विन्नम्पि सीसं ओलोकेन्तो पिलका दिस्वा महा-राज ! द्विन्नम्पि सीसे पिलका अत्येव । नाहं एतेसु एकस्सापि इल्लीसभावं सञ्जानितुं सक्कोमीति वत्वा इमं गायमाह :-

उभो खञ्जा उभो कुणी उभो विसमचक्खुता,^२

उभिन्नं पिलका जाता नाहं पस्सामि इल्लिसन्ति ।

१. स्या०--वेदनापत्तो ।

२ स्या०--विसमचक्खुता ।

तत्थ—उभोति द्वेपि जना । खञ्जाति कुण्ठकपादा । कुणोति कुण्ठहत्था । विसमचक्षुलाति विस-
मअक्खिमण्डला केकरा । पिलकाति द्विन्नम्पि एक्कस्मिं येव सीसप्पदेसे एकसण्ठानाव द्वे पिलका जाता ।
नाहं पस्सामीति अहं इमेसु अयं नाम इल्लीसोति न पस्सामि । एकस्सापि इल्लीसभावं न जानामीति अबोच ।

बोधिसत्तस्स वचनं सुत्वा सेट्ठी कम्पमानो धनमोकेन सति पच्चुपट्ठापेतुं असक्कोन्तो तत्थेव पति ।
तस्मिं खरो सक्को—नाहं महाराज ! इल्लीसो सक्कोहमस्मीति महत्तिया सक्कलील्हाय आकासे अट्ठासि ।
इल्लीसस्स मुग्वं पुञ्छित्वा उदकेन सिञ्चिसु । सो उट्ठाय सक्कं देवराजानं वन्दित्वा अट्ठासि । अथ नं सक्को
आह—इल्लीम ! इदं धनं मम सन्तकं न तव । अहं हि ते पिता त्वं मम पुत्तो । अहं दानादीनि पुञ्जानि
कत्वा सक्कत्तं पत्तो त्वम्पन मे वंसं उपच्छिन्दित्वा अदानसीलो हुत्वा मच्छरिये पतिट्ठाय दानसालायो भापेत्वा
याचके निक्कड्ढित्वा धनमेव सण्ठपेसि । तं नेव त्वं परिभुञ्जसि न अञ्जोसं देति । रक्खसपरिग्गहितं विय
सरं तिट्ठति । सचे मे दानसाला पाकतिका कत्वा दानं दस्ससि इच्चेतं कुसलं, नो चे दस्ससि सब्बं ते धनं अन्तर-
धापेत्वा इमिना इन्दवजिरेन सीसं छिन्दित्वा जीवितक्खयं पापेस्सामीति आह ।

इल्लीससेट्ठी मग्गभयेन सन्तज्जितो इतो पट्ठाय दानं दस्सामीति पटिञ्जं अदामि । सक्को तस्स
पटिञ्जं गहेत्वा आकासे निसिन्नकोव धम्मं देसेत्वा तं सीलेसु पतिट्ठापेत्वा सकट्टानमेव अगमासि । इल्लीसोपि
दानादीनि पुञ्जानि कत्वा मग्गपरायणो अहोसि ।

सत्था न भिक्खवे ! इदानेव मोग्गल्लानो मच्छरियसेट्ठि दमेति, पुब्बेपेस इमिना दमितो येवाति वत्वा
इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेमि । तदा इल्लीसो मच्छरियसेट्ठी अहोसि ।
सक्को देवराजा मोग्गल्लानो । राजा आनन्दो । कप्पको पन अहमेवाति । [३००]

इल्लीसजातकं ।

६. खरस्सरजातकं

यतो विलुत्ता च हता च गावोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अञ्जतरं अमच्चं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

कोसलरञ्जो किर एको अमच्चो राजानं आराधेत्वा पच्चन्तगामे राजलबलि^१ लभित्वा चोरेहि सद्धि एकतो हुत्वा अहं मनुस्से आदाय अरञ्जं पविसिस्सामि तुम्हे गामं विलुम्पित्वा उपड्डं मय्हं ददेय्याथाति वत्वा पगेव मनुस्से सन्निपातेत्वा अरञ्जं गन्त्वा चोरेसु आगन्त्वा गावियो धातेत्वा मंसं खादित्वा गामं विलुम्पित्वा गतेसु सायण्हसमये महाजनपरिवृतो आगच्छति । तस्स न चिरेनेव तं कम्मं पाकटं जातं । मनुस्सा रञ्जो आरोचेसु । राजापि तं पक्कोसापेत्वा दोसं पतिट्ठापेत्वा सुनिगाहितं निग्गहेत्वा अञ्जं गामभोजकं पेसेत्वा जेतवन् गन्त्वा तथागतं वन्दित्वा भगवतो एतमत्थं आरोचेसि ।

भगवा—न महाराज ! इदानीव एस एवंसीलो, पुब्बेपि एवंसीलो येवाति वत्वा तेन याचितो अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्तो रज्जं कारेन्तो एकस्स अमच्चस्स पच्चन्तगामं अदासि । सब्बं पुरिमस-दिसमेव । तदा पन बोधिसत्तो वणिज्जाय पच्चन्ते विचरन्तो तस्मिं गामके निवासं कप्पेसि । सो तस्मिं गाम-भोजके सायण्हसमये महाजनपरिवारेन भेरिया वज्जमानाय आगच्छन्ते अयं दुट्ठगामभोजको चोरेहि एकतो हुत्वा गामं विलुम्पापेत्वा चोरेसु पलायित्वा अट्ठिं पविट्ठेसु इदानी उपसन्तुपसन्तो विय भेरिया वज्जमानाय आगच्छतीति इमं गाथमाहः—

यतो विलुत्ता च हता च गावो
दड्ढानि गेहानि जनो च नीतो,
अथागमा पुत्तहताय पुत्तो
खरस्सरं देण्डमं वादयन्तोति ।

तत्थ—यतोति यदा । विलुत्ता च हता चाति विलुम्पित्वा च नीता मंसं खादनत्थाय च हता । गावोति गोरूपानि । दड्ढानीति अंगि दत्वा भाषितानि । जनो च नीतोति करमरगाहं गहेत्वा नीतो । पुत्तहताय पुत्तोति हतपुत्ताय पुत्तो । निल्लज्जोति अत्थो । छिन्नहिरोत्तप्पस्स हि माता नाम नत्थि । इति सो तस्सा जीवन्तोपि हतपुत्तद्वाने तिट्ठतीति हतपुत्ताय पुत्तो नाम होति । खरस्सन्ति थद्धसद्धं । देण्डमन्ति पट्टभेरि ।

एवं बोधिसत्तो इमाय गाथाय तं परिभासि । न चिरेनेव च तस्स तं कम्मं पाकटं जातं । अथस्स राजा दोसानुरूपं निगाहं अकासि ।

सत्था—न महाराज ! इदानीव एस एवंसीलो पुब्बेपि [३०१] एवं सीलो येवाति वत्वा इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा अमच्चो इदानी अमच्चो येव, गाथाय उदाहारण-कपण्डितमनुस्सो पन अहमेवाति ।

खरस्सरजातकं ।

१०. भीमसेनजातकं

यं ते पवित्रकथितं पुरेति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो अञ्जतरं विकल्पिकं भिक्षुं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्यु

एको किर भिक्षु-आवुसो ! अम्हाकं जातिसमा जाति, गोत्तसमं गोत्तं नाम नत्थि । मयं एवरूपे नाम महाखत्तियकुले जाता, गोत्तेन वा धनेन वा कुलप्पदेसेन वा अम्हेहि सदिसो नाम नत्थि । अम्हाकं सुवण्णा-रजतादीनं अन्तो नत्थि । दासकम्मकरापि नो सालिमंसोदनं भुञ्जन्ति । कासिकवत्थं निवासेन्ति, कासि-कविलेपनं विलिम्पन्ति, मयं पव्वजितभावेन एतरहि एवरूपानि लूखानि भोजनानि भुञ्जाम, लूखानि चीवरानि धारेमाति-थेरनवकमज्झिमानं भिक्षून् अन्तरे विकल्पेन्तो जाति आदिवसेन वम्भेन्तो वञ्चेन्तो विचरति ।

अथस्स एको भिक्षु कुलप्पदेसं परिगण्हित्वा तं विकल्पनभावं भिक्षून् कथेसि । भिक्षू धम्मसभायं सन्निपतिता-आवुसो ! असुको नाम भिक्षु एवरूपे नित्यानिकसासने पव्वजित्वा विकल्पेन्तो वम्भेन्तो वञ्चेन्तो विचरतीति एतस्स अगुणं कथयिंसु ।

सत्या आगन्त्वा कायनुत्थ भिक्षवे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते न भिक्षवे ! सो भिक्षु इदानेव विकल्पेन्तो वम्भेन्तो वञ्चेन्तो विचरति, पुव्वेपि विकल्पेन्तो वम्भेन्तो वञ्चेन्तो विचरीति क्त्वा अतीतं आहरिः—

अतीतवत्यु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेत्ते बोधिसत्तो एकस्मि निगमगामे उदिच्च-ब्राह्मणकुले निव्व-त्तित्वा वयप्पत्तो तत्कसिलायं दिसापामोक्खस्स आचरियस्स सन्तिके तयो वेदे अट्टारस विज्जाट्टानानि उग्ग-हेत्वा सब्वसिप्पे निष्फात्ति पत्वा चुल्लधनुग्गहण्डितो नाम अहोमि । सो तत्कसिलातो निक्खमित्वा सब्व-समयसिप्पानि परियेसमानो महिसकट्ठं अगमासि । इमस्मि पन जातके बोधिसत्तो थोकं रस्सो ओनता-कारो अहोसि । सो चिन्तेसि सच्चाहं कच्च राजानं उपसङ्कमिस्सामि सो एवं रस्ससरीरो त्वं किं अम्हाकं कम्मं करिस्ससीति वक्खति । यन्नूनाहं आरोहणरिनाहसम्पन्नं अभिरूपं एकं पुरिसं फलकं क्त्वा तस्स पिच्छि-याय जीविकं कप्पेय्यन्ति । [३०२]

सो तथारूपं पुरिसं परियेसमानो भीमसेनस्स नामेकस्स तन्तवायस्स तन्तविननट्टानं गत्वा तेन सद्धि पटिसन्थारं क्त्वा सम्म ! त्वं किं नामोसीति पुच्छि । अहं भीमसेनो नामाति । किं पन त्वं एवं अभिरूपो उपधिसम्पन्नो हुत्वा इमं लामककम्मं करोसीति ? जीवितुं असक्कोन्तोति । सम्म ! मा एतं कम्मं करि सकलजम्बुदीपे मया सदिसो धनुग्गहो नाम नत्थि ; सचे पनाहं कच्च राजानं पस्सेय्यं सो मं एवं रस्सो अयं किं अम्हाकं कम्मं करिस्सतोति कोपेय्य । त्वं राजानं दिस्वा अहं धनुग्गहोति वक्खेय्यासि । राजा ते परिब्रयं दत्वा वुत्ति निब्रह्मं दस्सति । अहं ते उप्पन्नकम्मं करोन्तो तव पिट्ठिच्छायाय जीविस्सामि एवं उभोपि सुखिता भविस्साम । करोहि मम वचनन्ति आह । सो साधूति सम्पटिच्छि ।

अथ नं आदाय वाराणसिं गत्वा सयं चुल्लधनूपट्टाको हुत्वा तं पुरतो क्त्वा राजद्वारे ठत्वा रज्जो आरोचापेसि । आगच्छतूति च वुत्ते उभोपि पविसित्वा राजानं वन्दित्वा अट्ठंसु । किं कारणा आगत्थाति च वुत्ते भीमसेनो आह-अहं धनुग्गहो मया सदिसो नाम सकलजम्बुदीपे धनुग्गहो नत्थीति । किं पन भणे ! लभन्तो मं उपट्ठहिस्ससीति ? अद्धमासे सहस्सं लभन्तो उपट्ठहिस्सामि देवाति । अयं ते पुरिसो को होतीति ? चुल्लउपट्टाको देवाति । साधु उपट्ठहाति । ततो पट्टाय भीमसेनो राजानं उपट्ठहति । उप्पन्नं किच्चं पनस्स बोधिसत्तोव नित्थरति ।

तेन खो पन समयेन कासिरट्ठे एकस्मिं अरञ्जो बहुन्नं मनुस्सानं सञ्चरणागमगं व्यग्घो छड्डापेति । बहू मनुस्से गहेत्वा गहेत्वा खादति । तं पवत्ति रञ्जो आरोचेसुं । राजा भीमसेनं पक्कोसापेत्वा—सक्खिस्ससि तात ! नं व्यग्घं गण्हनुन्ति आह ।

देव ! किं धनुग्गहो नामाहं यदि व्यग्घं गहेतुं न सक्कोमीति ?

राजा तस्स परिब्वयं दत्त्वा उय्योजेसि । सो धरं गत्त्वा बोधिसत्तस्स कथेसि । बोधिसत्तो—साधु सम्म ! गच्छाति आह ।

त्वम्पन न गमिस्ससीति ?

आम न गमिस्सामि, उपायं पन ते आचिक्खिस्सामीति ।

आचिक्ख सम्माति ।

त्वं व्यग्घस्स वसनट्ठानं सहसा एकाकोव मा अगमासि । जानपदमनुस्से पन सन्निपातेत्वा एकं वा द्वे वा धनुसहस्सानि गाहापेत्वा तत्थ गत्त्वा व्यग्घस्स उट्ठितभावं ज्ञत्वा पलायित्वा एकं गुम्बं पविसित्वा उदरेन निप-ज्जेय्यासि । जानपदाव व्यग्घं पोथेत्वा गण्हस्सन्ति तेहि व्यग्घे गहिंते त्वं दन्तेहि एकं वल्लिं छिन्दित्वा कोटियं गहेत्वा मतव्यग्घस्स सत्तिकं गत्त्वा—भो ! केनेस व्यग्घो मारितो ? अहं इमं व्यग्घं गोरां विय वल्लिया बन्धित्वा रञ्जो सत्तिकं नेस्सामीति वल्लि [३०३] अत्थाय गुम्बं पविट्ठो । मया वल्लिया अनाभताय एव केनेस व्यग्घो मारितोति कथेय्यासि । अथ ते जानपदा भीततसिता सामि ! मा रञ्जो आचिक्खाति बहुं धनं दस्सन्ति । व्यग्घो तया गहितो भविस्सति रञ्जोपि सत्तिका बहुं धनं लभिस्ससीति ।

सो साधूति गत्त्वा बोधिसत्तेन कथितनियामेनेव व्यग्घं गहेत्वा अरञ्जं खेमं कत्वा महाजनपरिवृतो वाराणसियं आगत्त्वा राजानं दिस्वा गहितो मे देव ! व्यग्घो अरञ्जं खेमं कतन्ति आह । राजा तुट्ठो बहुं धनं अदासि ।

पुनेकदिवमं एकं मगं महिसो छड्डापेतीति रञ्जो आरोचयिमु । राजा तथेव भीमसेनं पेसेसि । सोपि बोधिसत्तेन दिन्ननयेन व्यग्घं विय तम्पि गहेत्वा आगच्छि । राजा पुन बहुं धनं अदासि । महत्तं इस्सरियं जातं । सो इस्सरियमदमत्तो बोधिसत्ते अवञ्जं कत्वा तस्स वचनं न गण्हाति । नाहं तं निस्साय जीवामि, किं त्वञ्जोव पुरिसोति आदीनि फरुसवचनानि वदति ।

अथ कतिपाहच्येनेवेको सपत्तराजा 'आगत्त्वा वाराणसि उपरुन्धित्वा रज्जं वा देतु युद्धं वाति रञ्जो सासनं पेसेसि । राजा यूज्झाहीति भीमसेनं पेसेसि । सो मव्वसन्नाहमन्नद्धो भट्ठेसं गहेत्वा सुसन्नद्धस्स वारणस्स पिट्ठे निसीदि । बोधिमतोपि तस्स मरणभयेन सव्वसन्नाहमन्नद्धो भीमसेनस्सेव पच्छिमासने निसीदि । वाराणो महाजनपरिवृतो नगरद्वारेन निक्खमित्वा सङ्गामसीसं पापुणि । भीमसेनो युद्धभेरिसदं सुत्वाव कम्पितुं आरब्धो । बोधिसत्तो इदानीम हत्थिपिट्ठा पतित्वा मरिस्सतीति हत्थितो अपतनत्थं भीमसेनं योत्तेन परिकिखित्वा गण्हि । भीमसेनो सम्पहारट्ठानं दिस्वा मरणभयतज्जितो सरीरवलञ्जेन हत्थिपिट्ठि दूसेसि ।

बोधिसत्तो—न खो ते भीमसेन ! पुरिमेन पच्छिमं समेति । त्वं पुब्बे सङ्गामयोधो विय अहोसि । इदानीं हत्थिपिट्ठि दूसेसीति वत्त्वा इमं गाथमाहः—

यं ते पविकत्थितं पुरे

अथ ते पूतिसरा सजन्ति पच्छा.

उभ यं न समेति भीमसेन !

युद्धकथा च हदञ्च ते विहञ्जन्ति ।

तत्थ—यं ते पविकत्थितं पुरेति यं तथा पुब्बे किं त्वञ्जोव पुरिसो नाहं पुरिसो । संगामयोधोति विकत्थितं, वम्भवचनं वुत्तं इदं ताव एकं । अथ ते पूतिसरा सजन्ति पच्छाति अथ ते इमे पतिभावेन सरणभावेन च

पूतिसराति लद्धनामा सरीरबलञ्जधारा सजन्ति बलञ्जन्ति पग्घरन्ति । पच्छाति ततो (३०४) पुर विकत्थिततो अपरभागे इदानी इमस्मि सङ्गामसीसेति अत्थो । उभयं न समेति भीमसेनाति इदं भीमसेन ! उभयं न समेति । कतरं ? युद्धकथा च हवं च ते विहञ्जन्ति या च पुरे कथिता युद्धकथा यं च ते इदानी विहञ्जं किलमथो हत्थिपिट्ठं दूसनाकारप्पत्तो विघातोति अत्थो ।

एवं बोधिसत्तो तं गरहित्वा मा भायि सम्म ! कस्मा मयि ठिते विहञ्जसीति भीमसेनं हत्थिपिट्ठितो ओतारेत्वा नहायित्वा गेहमेव गच्छाति उय्योजेत्वा अज्ज मया पाकटेन भवितुं वट्ठतीति सङ्गामं पविसित्वा सीहनादं उभ्रदित्वा बलकोट्टकं भिन्दित्वा सप्तराजानं जीवगाहं गाहापेत्वा बाराणसिरञ्जो सत्तिकं अगमासि ।

राजा तुट्ठो बोधिसत्तस्स महन्तं यसं अदासि । ततो पट्ठाय चुल्लधनुग्गहपण्डितोति सकलजम्बुदीपे पाकटो अहोसि । सो भीमसेनस्स परिब्बयं दत्वा सकट्टानमेव पेसेत्वा दानादीनि पुञ्जानि कत्वा यथाकम्मं गतो ।

सत्था—न भिक्खवे ! इदानीवेस भिक्खु विकत्थेति पुब्बेपि विकत्थि येवाति वत्वा इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा भीमसेनो विकत्थिकभिक्खु अहोसि, चुल्लधनुग्गहपण्डितो पन अहमेवाति ।

भीमसेनजातकं ।

वरणवग्गो अट्ठमो ।

६. अपायिम्हवग्गवणना

१. सुरापानजातकं

अपायिम्ह अनच्चिम्हाति इदं सत्था कोसम्बियं उपनिस्साय घोसितारामे विहरन्तो सागतत्थेरं आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

भगवति सावत्थियं वस्सं वसित्वा चारिकागमनेन भद्वतिकं नाम निगमं सम्पत्ते गोपालका पसु-
पालका कस्सका पथाविनो च सत्थारं दिस्वा वन्दित्वा—मा भन्ते ! भगवा अम्बतित्थं अगमासि । अम्ब-
तित्थे जटिलस्स अस्समे अम्बतित्थको नाम नागो आसीविसो घोरविसो, सो भगवन्तं विहेठेय्याति वारयिसु ।

भगवा तेसं कथं असुणन्तो विय तेसु यावतित्थं वारयमानेसुपि अगमासियेव । तत्र सुदं भगवति भद्व-
वतिकाय अविदूरे अञ्जतरस्मि वनसण्डे विहरन्ते तेन समयेन बुद्धुपट्ठाको सागतो नाम थेरो पोथुज्जनिकाय
इद्धिया समन्नागतो तं अस्समं उपसङ्कमित्वा तस्स नागराजस्स वसनट्टाने तिणसन्धारकं^१ पञ्जापेत्वा पल्ल-
ङ्केन निसीदि । नागो मक्खं असहमानो धूमायि [३०५] । थेरोपि धूमायि । नागो पज्जलि, थेरोपि पज्जलि ।
नागस्स तेजो थेरं न बाधति । थेरस्स तेजो नागं बाधति । एवं सो खणेन तं नागराजानं दमेत्वा सरणेसु चेव
पटिट्ठापेत्वा सत्थु सन्तिकं अगमासि ।

सत्थापि भद्ववतिकायं यथाभिरन्तं विहरित्वा कोसम्बि अगमासि । सागतत्थेरेन नागस्स दमितभावो
सकलजनपदं पत्थरि । कोसम्बिनगरवासिनो सत्थु पच्चुग्गमनं कत्वा सत्थारं वन्दित्वा सागतत्थेरस्स सन्तिकं
गन्त्वा वन्दित्वा एकमन्तं ठिता एवमाहंसु—भन्ते ! यं तुम्हाकं दुल्लभं तं वेदय्याथ तदेव मयं पटियादेस्सामाति ।

थेरो तुण्ही अहोसि । छब्बगिया पनाहंसु—आवुसो ! पब्बजितानं नाम कापोतिका सुरा दुल्लभा
चेव मनापा च सचे तुम्हे थेरस्स पसन्ना कापोतिकं सुरं पटियादेथाति ।

ते साधूति सम्पटिच्छित्वा सत्थारं स्वातनाय निमन्तेत्वा नगरं पविसित्वा अत्तनो अत्तनो गेहे थेरस्स
दस्सामाति कापोतिकं सुरं पसन्नं पटियादेत्वा थेरं निमन्तेत्वा घरे घरे पसन्नं अदंसु । थेरो पिवित्वा सुरामदमत्तो
नगरतो निक्खमन्तो द्वारन्तरे पतित्वा विप्पलपमानो निपज्जि ।

सत्था कतभत्तकिच्चो नगरा निक्खमन्तो थेरं तेनाकारेन निपन्नं दिस्वा—गण्हथ भिक्खवे ! सागतन्ति
गाहापेत्वा आरामं अगमासि । भिक्खू थेरस्स सीसं तथागतस्स पादमूले कत्वा तं निपज्जापेसुं । सो परिवत्तित्वा
पादे तथागताभिमुखे कत्वा निपज्जि । सत्था भिक्खू पटिपुच्छि—किन्नुखो भिक्खवे ! यं पुब्बे सागतस्स
मयि गारवं तं इदानी अत्थीति ?

नत्थि भन्तेति ।

भिक्खवे ! अम्बतित्थकं नागराजानं को दमेसीति ?

सागतो भन्तेति ।

किं पनेतरहि भिक्खवे ! सागतो उदकदेड्डुभकम्पि दमेतुं सक्कुणेय्याति ?

नोहेतं भन्ते !

अपि नु खो भिक्खवे ! एवरूपं पातुं युत्तं यं पिवित्वा एवं विसञ्जी होतीति ?

अयुतं भन्तेति ।

अथ खो भगवा थेरं गरहित्वा भिक्खू आमन्तेत्वा सुरामेरयपाने पाचित्तिरयन्ति सिक्खापदं पञ्चापेत्वा उट्ठायासना गन्धकुट्टि पाविसि । धम्मसभायं सन्निपतिता भिक्खू सुरामेरयपानस्स अवण्णं कथयिंसु । याव महादोसञ्चेतं आवुसो ! सुरापानभ्राम ताव पञ्चासम्पन्नं नाम इद्धिमन्तं सागतं यथा सत्थु गुग्गुमत्तम्पि न जानाति तथा अकासीति ।

सत्था आगत्वा कायनुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निभिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते न भिक्खवे ! इदानेव सुरं पिबित्वा पब्बजिता विसञ्जिनो होन्ति ! पुब्बेपि अहेसुं येवाति वत्ता अतीतं आहरि :- [३०६]

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारन्ते बोधिसत्तो कासिरट्ठे उदिच्च-ब्राह्मणकुले निब्वत्तित्वा वयप्पत्तो इसिपव्वज्जं पव्वजित्वा अभिञ्जा च समापत्तियो च उपादेत्वा भानकीलं कीलन्तो हिमवन्तत्पदेसे वसति पञ्चहि अन्तेवासिकमतेहि । अथ नं वस्मानममये सम्मत्ते अन्तेवासिका आहंसु-आचरिय ! मनुस्सपथं गत्वा लोगम्बिनं सेवित्वा आगच्छामाति ।

आवुसो ! अहं इधेव वसिस्सामि नुम्हे पन गत्वा मरीरं मन्नप्पेत्वा वस्सं वीतिनामेत्वा आगच्छथाति ।

ते साधूति आचरियं वन्दित्वा वाराणसियं गत्वा राजुय्याने वमित्वा पुनदिवमे बहिद्वारगामे येव भिक्खाय चरित्वा सुहिता हुत्वा पुनदिवसे नगरं पविमिमु । मनुस्सा समियायमाना भिक्खं अदंसु । कतिपाहच्चयेन च रज्जोपि आरोचेमु-देव ! हिमवन्ततो पञ्चमता इसयो आगत्वा उय्याने वसन्ति घोरतपा परिवारितिन्द्रिया' सीलवन्तोति । राजा तेसं गुणे सुत्वा उय्यानं गत्वा वन्दित्वा कतपटिसन्थारो वस्सानं चातुमासं तत्थेव वसनत्थाय पटिञ्जं गहेत्वा निमन्तेसि । ते ततो पट्टाय राजगेहे येव भुञ्जित्वा उय्याने वसन्ति ।

अथेकदिवसं नगरे सुरानक्खत्तं नाम अहोमि । राजा पव्वजितानं सुरा दुल्लभाति बहु उत्तमं सुरं दापेसि । तापसा सुरं पिबित्वा उय्यानं गत्वा सुगमदमना हुत्वा एकच्चे उट्ठाय नच्चिमु, एकच्चे गायिमु । नच्चित्वा गायित्वा खारियादीनि अवत्थित्वा निहायित्वा सुरामदे छिन्ने पव्वजित्वा तं अत्तनो विप्पकारं दिस्वा न अम्हेहि पव्वजितमारुपं कनन्ति रोदित्वा परिदेवित्वा मयं आचरियेन विना एवरूपं पापं करिम्हाति तं खण्णञ्चो व उय्यानं पहाय हिमवन्तं गत्वा पटिसामितपरिक्खारा आचरियं वन्दित्वा निसीदित्वा-किन्नु खो ताता ! मनुस्सपथे अकिनममाना मुखं वमित्थ समग्गवासं च पन वसित्थाति पुच्छिता-आचारिय ! सुखं वसिम्ह अपि च खो मयं अगतव्वयुत्तकं पिबित्वा विमञ्जो भूता सति पच्चुपट्टपेतुं असक्कोन्ता नच्चिम्ह चेव गायिम्ह चाति एतमत्थं आरोचेन्ता इमं गार्थं समुट्ठापित्वा आहंसु:-

अपायिम्ह अनच्चिम्ह अगायिम्ह रुदिम्ह च,

विसञ्जाकरणि पोत्वा विट्ठा नाहुम्ह वानराति ।

तत्थ अपायिम्हाति सुरम्पिविम्ह । अनच्चिम्हाति तं सुरं पिबित्वा हृत्युपादे लोलेन्ता नच्चिम्ह । अगायिम्हाति मुखं विवरित्वा आयतकेन सरेन गायिम्ह । रुदिम्ह वाति पुन विप्पटिसारिनो एवरूपं नाम अम्हेहि कतन्ति रोदिम्ह । विट्ठानाहुम्ह वानराति एवरूपं सञ्जाविनासनतो विसञ्जाकरणि सुरं पीत्वा एतदेव साधु यं वानरा नाहुम्हाति ।

एवं ते अत्तनो अगुणं कथेसु । बोधिसत्तो गरुसंवासरहितानं नाम एवरूपं होति येवाति ते तापसे गरहित्वा पुन एनरूपं मा करित्थाति तेसं ओवादे दत्वा अपरिहीनञ्जानो ब्रह्मलोकपरायणो अहोसि ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । इतो पट्टाय हि अनुसन्धि घटेत्वाति इदम्पि न वक्खाम । तदा इसिगणो बुद्धपरिसा अहोसि, गणसत्था पन अहमेवाति ।

सुरापानजातकं ।

२. मित्तविन्दजातकं

अतिक्कम्म रमणकति इदं सत्था जेवने विहरन्तो एकं दुब्बचभिक्खुं आरब्भ कथेसि । इमस्स पन जातकस्स कस्सपसम्मासम्बुद्धकालिकं वत्थुं दसकनिपाते महामित्तविन्दजातके आवीभविस्सति । तदा पन बोधिसत्तो इमं गाथमाहुः—

अतिक्कम्म रमणकं सदामत्तं च दूभकं,
स्वासि पासाणमासीनो यस्मा जीवनं मोक्खसोति ।

तत्थ—ररमणकन्ति तस्मिं काले फलिकस्स नामं फलिकपासादं च अतिक्कन्तोसीति दीपेति । सदा-
मत्तं चाति रजतस्स नामं, रजतपासादं च अतिक्कन्तोसीति दीपेति । दूभकन्ति मग्गिनो नामं, मग्गिपासादं
च अतिक्कन्तोसीति दीपेति । स्वासीति सोसि त्वं । पासाणेमासीनोति उरचक्कं नाम पासागमयं वा होति
रजतमयं वा मग्गिमयं वा तं पन पासागमयं सो च तेन आसीनो अभिनिविट्ठो अज्झोत्थटो, तस्मा पासाणेन
आसीनत्ता पासाणासीनोति वत्तव्वे व्यञ्जनमन्धिवसेन मकारं आदाय पासाणमासीनोति वुत्तं । पासाणं वा
आसीनो तं उरचक्कं आसज्ज पापुगित्वा ठितोति अत्थो । यस्मा जीवं न मोक्खसोति, यस्मा उरच्च्का याव
ते पापं न खीयति ताव जीवन्तो येव न मुच्चिस्ससि तं आसीनोसीति ।

इमं गाथं वत्वा बोधिमत्तो अत्तनो देवट्टानमेव गतो । मित्तविन्दकोपि उरचक्कं उक्खिपित्वा महा-
दुक्खं अनुभवमानो पापकम्मे परिकखीगे यथाकम्म गतो । सत्था इमं धम्मदेमनं आहरित्वा जातकं समोधा-
नेसि । तदा मित्तविन्दको दुब्बचभिक्खु अहोसि । देवराजा पन अहमेवाति ।

मित्तविन्दजातकं ।

३. कालकण्णिजातकं

मित्तो हवे सत्तपवेन होतीति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं अनाथपिण्डकस्स मित्तं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चुपन्नवत्थु

सो किर अनाथपिण्डकेन सद्धिं सहपंसुकीलितो एकाचरियस्सेव [३०८] सन्तिके उग्गहितसिप्पो नामेन कालकण्णी नाम । सो गच्छन्ते काले दुग्गतो हुत्वा जीवितुं असक्कोन्तो सेट्ठिनो सन्तिकं अगमासि । सो तं समम्मासेत्वा परिब्रमयं दत्वा अत्तनो कुटुम्बं पटिच्छापेसि । सो सेट्ठिनो उपकारको हुत्वा सब्बकिच्चानि करोति । तं सेट्ठिस्स सन्तिकं आगतकाले—तिट्ठ कालकण्णि ! निसीद कालकण्णि ! भुञ्ज कालकण्णीति वदन्ति ।

अथेक दिवसं सेट्ठिनो मित्तामच्चा सेट्ठि उपसङ्कमित्त्वा एवमाहंसु—महासेट्ठि ! मा एतं तव सन्तिके करि । तिट्ठ कालकण्णि ! निमीद कालकण्णि ! भुञ्ज कालकण्णीति हि इमिना सदेन यक्खोपि पलायेय्य न चेस तया समानो दुग्गतो दुरुपेतो किं ने इमिनाति ?

अनाथपिण्डको—नामं नाम बोहारमत्तं न तं पण्डिता पमाणं करोन्ति । सुतमङ्गलिकेन नाम भवितु न वट्ठति । न सक्का मया नाममत्तं निस्साय सहपंसुकीलितं सहायं परिच्चजितुन्ति । तेसं वचनं अनादाय एकदिवसं अत्तनो भोगगामं गच्छन्तो तं गेहरक्खकं कत्वा अगमासि ।

चोरा सेट्ठी किर गामकं गतो गेहमस्स विलुम्पिस्सामाति नानावुधहत्था रत्तिभागे आगत्त्वा गेहं परिवारेसुं । इतरोपि चोरानञ्जोव आगमनं आसङ्कमानो अनिदायन्तोव निसीदि । सो चोरानं आगतभावं जत्वा मनुस्से पबोधेत्वा त्वं सङ्खं धम, त्वं आलिङ्गं^१ वादेहीति महासमज्जं कारेन्तो विय सकलनिवेसनं एकसहं कारेसि । चोरा मुञ्जं गेहन्ति दुस्सुन्तं अम्हेहि इधेव महासेट्ठीति पासाणमुग्गरादीनि तत्थेव छड्डेत्वा पलायिसु ।

पुनदिवसे मनुस्सा तत्थ तत्थ छड्डित्ते पासाणमुग्गरादयो दिस्वा संवेगप्पत्ता हुत्वा—सच्चे अज्ज एवरूपो बुद्धिसम्पन्नो घरविचारको नाभविस्स चोरेहि यथारुचिया पविसित्वा सब्बगेहं विलुम्पितं अस्स । इमं दल्हमित्तं निस्साय सेट्ठिनो वड्ढि जाताति तं पसंसित्वा सेट्ठिस्स भोगगामतो आगतकाले सब्बं तं पवत्ति आरोचयिस्सु ।

अथ ते सेट्ठी अवोच—तुम्हे एवरूपं मम गेहरक्खकं मित्तं निक्कड्डापेथ । सचायं तुम्हाकं वचनेन मया निक्कड्डितो अस्स अज्ज मे कुटुम्बं किञ्चि नाभविस्स । नामं नाम अप्पमाणं, हितचित्तमेव पमाणान्ति । तस्स उत्तरितरं परिब्रमयं दत्वा अत्थि दानि मे इदं कथापाभतन्ति मत्थु सन्तिकं गत्त्वा आदितो पट्ठाय सब्बं तं पवत्ति भगवतो आरोचेसि ।

सत्था—न खो गहपति ! इदानेव कालकण्णिमित्तो अत्तनो मित्तस्स घरकुटुम्बं रक्खति पुब्बेपि रक्खियेवाति वत्ता तेन याचितो अतीतं आहरिः—[३०९]

अतीतवत्थु

अतीतं बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो महायसो सेट्ठी अहोसि । तस्स कालकण्णी नाम मित्तोति सब्बं पञ्चुपन्नसदिसमेव । बोधिसत्तो भोगगामतो आगतो तं पवत्ति सुत्वा सच्चे मया तुम्हाकं वचनेन एवरूपो मित्तो निक्कड्डितो अस्स अज्ज मे कुटुम्बं किञ्चि नाभविस्साति वत्ता इमं गाथमाहः—

कालकणिजातकं

मित्तो हवे सत्तपदेन होति
सहायो पन द्वादसकेन होति,
मासद्धमासेन च जाति होति ।
तदुत्तरि अत्तसमोपि होति
सोहं कथं अत्तसुखस्स हेतु,
चिरसन्धुतं^१ कालकण्णो जहेय्यन्ति ।

तत्थ हवेति निपातमत्तं, मेत्तायतीति मित्तो । मेत्ति पच्चुपट्टापेति सिनेहं करोतीति अत्थो । सो पनेस सत्तपदेन होतीति एकतो सत्तपदवीतिहारगमनमत्तेन होतीति अत्थो । सहायो पन द्वादसकेन होतीति सव्वक्किच्चानं एकतो करणावसेन सव्विगियापथेसु । सह गच्छतीति सहायो । सो पनेस द्वादसकेन होति । द्वादसाहं एकतो निवासेन होतीति अत्थो^२ । मासद्धमासेन चाति मासेन वा अद्धमासेन वा । जाति होतीति जाति-समो होति । तदुत्तरि^३ ततो उत्तरि एकतो निवासेन । अत्तसमोपि होति येष । जहेय्यन्ति एवरूपं सहायं कथं जहेय्यन्ति मित्तग्मे गुणं कथेसि ।

ततो पट्टाय पुन कोचि तस्मन्तरे वत्ता नाम नाहोसि । सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समो-धानेसि । तदा कालकण्णी आनन्दो अहोसि, वाराणसीसेट्ठी पन अहमेवाति ।

कालकणिजातकं ।

१. स्या०—चिरसण्डितं । २. स्या०—सो पनेस द्वादसकेन पदवीतिहारमत्तेन होतीति ।

४. अथस्सद्वारजातकं

पञ्चपन्नवत्थु

आरोग्यमिच्छे परमं च लाभन्ति इदं सत्था जेतवने विरहन्तो एकं अथकुसलं कुलपुत्तं आरब्ध कथेसि ।

सावत्थियं हि एकस्स महाविभवस्स सेट्ठिनो पुत्तो जातिया सत्तवस्सो पञ्चावा अथकुसलो । सो एक-दिवसं पितरं उपसङ्कमित्र्वा “अथस्स द्वारपञ्चं” नाम पुच्छि । सो तं न जानाति । अथस्स एतदहोसि-अयं पञ्चो अतिसुखुमो । ठपेत्वा सब्बञ्जुबुद्धं अञ्जो उपरि भवग्गेन हेट्ठा च अबीचिना परिच्छिन्ने लोकसन्नि-वासे एतं पञ्चं कथेतुं समत्थो नाम नत्थीति । सो पुत्तं आदाय बहुं मालागन्धविलेपनं गाहापेत्वा जेतवनं गन्त्वा सत्थारं पूजेत्वा वन्दित्वा एकमन्तं निसिन्नो भगवन्तं एतदवोच [३१०]—अयं भन्ते ! दारको पञ्चावा, अथ-कुसलो मं “अथस्स द्वारपञ्चं” नाम पुच्छि । अहं तं पञ्चं अजानन्तो तुम्हाकं सन्तिकं आगतो, साधु मे भगवा तं पञ्चं कथेत्तु ।

सत्था—पुब्बेपाहं उपासक ! इमिना कुमारकेनेतं पञ्चं पुट्ठो । मया चस्स कथितो । तदा नं एस जानाति । इदानीं पन भवसङ्खेपगतत्ता न सल्लक्खेतीति क्त्वा तेन याचितो अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिमत्तो महाविभवो सेट्ठी अहोसि । अथस्स पुत्तो सत्त-वस्सिको जानिया पञ्चावा अथकुसलो सो एकदिवसं पितरं उपसङ्कमित्र्वा—तात ! अथस्स द्वारं नाम किन्ति ‘अथस्स द्वारपञ्चं’ पुच्छि ।

अथस्स पिता तं पञ्चं कथेन्तो इमं गाथमाहः—

आरोग्यमिच्छे परमं च लाभं
सीलं च बुद्धानुमतं सुतं च.
धम्मानुवत्ती च अलीनता च
अथस्स द्वारा पमुखा छलेतेति ।

तत्थ —आरोग्यमिच्छे परमं च लाभन्ति चकारो निपातमत्तं । तात ! पठममेव आरोग्यसङ्खातं परमं लाभं इच्छेय्याति इममत्थं दीपेन्तो एवमाह । तत्थ आरोग्यं नाम सरीरस्स चैव चित्तस्स च अरोगभावो अनातुरता । सरीरे हि रोगातुरे नेव अलद्धं भोगलाभं उप्पादेतुं सक्कोति न लद्धं परिभुञ्जितुं अनातुरे पन उभयम्पेतं सक्कोति । चित्ते च किलेसातुरे नेव अलद्धं भानादिलाभं उप्पादेतुं सक्कोति न लद्धं पुन समापत्ति-वसेन परिभुञ्जितुं, एतस्मिं रोगे सति अलद्धोपि लाभो न लब्धति, लद्धोपि निरत्थको होति, असति पनेतस्मिं अलद्धोपि लाभो लब्धति, लद्धोपि सात्थको होतीति आरोग्यं परमो लाभो नाम । तं सब्बपठमं इच्छितव्वं इद-मेकमत्थस्स द्वारन्ति अयमेत्थ अत्थो । सीलं चाति आचारसीलं । इमिना लोकचारित्तं दस्सेति । बुद्धा-नुमतन्ति गुणबुद्धानं पण्डितानं अनुमतं, इमिना ज्ञाणसम्पन्नानं गुरूनं ओवादं दस्सेति । सुतं चाति कारणनि-स्सितं सुतं । इमिना इमस्मिं लोके अत्थनिस्सितं बाहुसच्चं दस्सेति । धम्मानुवत्ती चाति तिविधस्स सुचरित-धम्मस्स अनुवत्तनं । इमिना दुच्चरितधम्मं वज्जेत्वा सुचरितधम्मानुवत्तनभावं दस्सेति । अलीनता चाति चित्तस्स अलीनता अनीचता । इमिना चित्तस्स असंकोचं पणीतभावं उत्तमभावं दस्सेति । अथस्स द्वारा पमुखा छलेतेति

अत्यो नाम वडिढ, तस्स वडिढसङ्खातस्स लोकियलोकुत्तरस्स अत्यस्स एते पमुखा उत्तमा छ द्वारा उपाया अधिगममुखानीति । [३११]

एवं बोधिसत्तो पुत्तस्स अत्यद्वारपञ्चं कथेसि । सो ततो पट्ठाय तेसु छसु धम्मेसु वत्ति । बोधिसत्तोपि दानादीनि पुञ्ञानि कत्वा यथाकम्मं गतो । सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा पुत्तोव पच्चुप्पन्नो पुत्तो, महासेट्ठी पन अहमेवाति ।

अत्यस्सद्वारजातकं ।

५. किम्पक्कजातकं

आयति दोसं नाञ्जायाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं उक्कण्ठितभिक्षुं आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

अञ्जतरो किर कुलपुत्तो बुद्धसासने उरं दत्वा पव्वजितो एकदिवसं सावत्थियं पिण्डाय चरन्तो एकं अलङ्कतइत्थि दिस्वा उक्कण्ठि । अथ नं आचरियुपज्जाया सत्थु सन्तिकं आनयिंसु ।

सत्था-सच्चं किर त्वं भिक्षु ! उक्कण्ठितोति पुच्छित्वा सच्चन्ति वुत्ते-पच्चकामगुणा नामेते भिक्षु ! परिभोगकाले रमणीया । सो पन तेसं परिभोगो निरयादिसु पटिसन्धिदायकत्ता किम्पक्कफलपरिभोगसदिसो होति । किम्पक्कफलं नाम वण्णगन्धरससम्पन्नं खादितं पन अन्तानि खण्डेत्वा जीवितक्खयं पापेति । पुब्बे बहुजना तस्स दोसं अदिस्वा वण्णगन्धरसेसु वज्झित्वा तं फलं परिभुञ्जित्वा जीवितक्खयं पापुणिसूति वत्वा तेहि याचितो अतीतं आहरि:-

अतीतवत्थु

अतीते बारारणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो सत्थवाहो हुत्वा पच्चहि सकटसतेहि पुव्वन्ता-परन्तं गच्छन्तो अटविमुखं पत्वा मनुस्से सन्निपातेत्वा-इमिस्सा अटविया विसरुक्खो नाम अत्थि । मा खो मं अनापुच्छा पुब्बे अखादितपुव्वानि फलाफलानि खादित्थाति ओवदि ।

मनुस्सा अटवि अतिक्कमित्वा अटविमुखे एकं किम्पक्करुक्खं फलभारनमितसाखं अद्दंसु । तस्स खन्धसाखापत्तफलानि सण्ठानवण्णरसगन्धेहि अम्बसदिसानेव । तेसु एकच्चे वण्णगन्धरसेसु वज्झित्वा अम्ब-फलसञ्जाय फलानि खादिसु । एकच्चे सत्थवाहं पुच्छित्वा खादिस्सामाति गहेत्वा अट्ठंसु ।

बोधिसत्तो तं ठानं पत्वा ते गहेत्वा ठिते फलानि छट्ठापेत्वा ये खादमाना अट्ठंसु ते वमनं कारेत्वा तेसं भेसज्जं अदासि । तेसु एकच्चे अरोगा जाता पठममेव खादित्वा ठिता पन जीवितक्खयं पत्ता । बोधिसत्तोपि इच्छितट्ठानं सोत्थिना गत्वा लाभं लभित्वा पुन सकट्टानमेव आगन्त्वा दानादीनि पुञ्जानि कत्वा यथाकम्मं गतो । सत्था तं वत्थुं कथेत्वा अभिसम्बुद्धो हुत्वा इमं गाथमाह:-

आयतिदोसं नाञ्जाय यो कामे पतिसेवति,

विपाकन्ते हनन्ति नं किम्पक्कमिव भक्खितन्ति ।

तत्थ-आयतिदोसं नाञ्जायाति अनागते दोसं नाञ्जाय अजानित्वाति अत्थो । यो कामे पतिसेवतीति यो वत्थुकामे च किलेसकामे च पतिसेवति । विपाकन्ते हनन्ति नन्ति ते कामा तं पुरिसं अत्तनो विपाकसङ्खाते अन्ते निरयादिसु उप्पन्नं नानप्पकारेन दुक्खेन संयोजयमाना हनन्ति । कथं ? किम्पक्कमिव भक्खितन्ति यथा परिभोगकाले वण्णगन्धरससम्पत्तिया मनापं किम्पक्कफलं अनागतं दोसं अदिस्वा भक्खितं अन्ते हन्ति जीवित-क्खयं पापेति एवं परिभोगकाले मनापापि कामा विपाककाले हनन्तीति ।

देसनं यथानुसन्धि पापेत्वा सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने उक्कण्ठितभिक्षु सोतापत्तिफलं पापुणि । सेसपरिसायपि केचि सोतापन्ना, केचि सकदागामिनो, केचि अनागामिनो केचि अरहन्तो अहेसुं । सत्थापि इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा परिसा बुद्धपरिसा अहोसि । सत्थवाहो पन अहमेवाति ।

किम्पक्कजातकं ।

६. सीलवीमंसनजातकं

सीलं किरैव कल्याणन्ति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं सीलवीमसकं ब्राह्मणं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

सो किर कोसलराजानं निस्साय जीवति । तिसररागतो अखण्डपञ्चसीलो, तिष्णं वेदानं पारगू । राजा अयं सीलवाति तस्स अतिरेकसम्मानं करोति ।

सो चिन्तेसि—अयं राजा मय्हं अञ्जो हि ब्राह्मणेहि अतिरेकसम्मानं करोति अतिविय मं गरुं कत्वा पस्सति, किन्नु खो एस मम जातिगोत्तकुलपदेमसिण्णमम्पत्तिं निस्साय इमं सम्मानं करोति, उदाहु सीलसम्पत्तिं, वीमंसिस्सामि तावाति ।

सो एकदिवसं राजुपट्टानं गत्वा घरं आगच्छन्तो एकस्स हेरञ्जिकस्स फलकतो अनापुच्छित्वा एकं कहापरणं गहेत्वा अगमासि । हेरञ्जिको ब्राह्मणो गरुभावेन किञ्चि अवत्वा निसीदि । पुनदिवसे द्वे कहापरणे गण्हि । हेरञ्जिको तथेव अधिवासेमि । तनियदिवसे कहापरणमुट्ठि अगगहेसि । अथ नं हेरञ्जिको अञ्ज ते ततियो दिवसो राजकुटुम्बं विलुम्पन्तस्माति राजकुटुम्बविलुम्पकचोरो मे गहितोति तिकखत्तुं विरवि । अथ नं मनुस्सा इतो चितो चागन्त्वा चिरन्दानि त्वं सीलवा विय विचरीति द्वे तयो पहारे दत्वा बन्धित्वा रञ्जो दस्सेसु ।

राजा विण्णटिमारी हुत्वा—कस्मा ब्राह्मण ! एवरूपं दुस्सीलकम्मं करोसीति ? वत्वा गच्छ तस्स राजाणं करोथाति आह ।

ब्राह्मणो—नाहं महाराज ! चोरोति आह ।

अथ कस्मा राजकुटुम्बिकस्स फलकतो [३१३] कहापरणे गण्हीति ?

एतं मया तयि मम अतिमम्मानं करोन्ते किन्नु खो राजा मम जातिआदीनि निस्साय अतिसम्मानं करोति, उदाहु सीलं निस्सायाति वीमंसनत्थायकतं, इदानीं पन मया एकसेन ज्ञातं यथा सीलमेव निस्साय तया मम सम्मानो कतो न जातियादीनि, तथाहि मे इदानीं राजाणं कारेसीति वत्वा स्वाहं इमिना कारणेन इमस्मिं लोके सीलमेव उत्तमं सीलं पमुखन्ति सन्निट्टानं गतो, इमस्स पनाहं सीलस्स अनुच्छविकं करोन्तो गेहे ठितो किलेसे परिभुञ्जन्तो न सक्खिस्सामि कातुं, अञ्जेव जेतवनं गत्वा सत्थु सन्तिके पव्वजिस्सामि पव्वज्जं मे देहि देवाति वत्वा राजानं अनुजानापेत्वा जेतवनाभिमुखो पायासि ।

अथ नं जातिमुहञ्जवन्धवा सन्निपतित्वा निवारेतुं असक्कोन्ता निवर्त्तिसु । सो सत्थु सन्तिकं गत्वा पव्वज्जं याचित्वा पव्वज्जं च उपसम्पदं च लभित्वा अविस्सट्ठकम्मट्टानो विपस्सनं वड्ढेत्वा अरहत्तं पत्वा सत्थारं उपसङ्कमित्वा भन्ते ! मय्हं पव्वज्जा मत्थकं पत्ताति अञ्जं व्याकासि । तस्स तं अञ्जव्याकरणं भिक्खु-सङ्घे पाकटं जातं । अथेकदिवसं धम्मसभायं सन्निपतिता भिक्खू—आवसो ! असुको नाम रञ्जो उपट्ठाकब्राह्मणो अत्तनो सीलं वीमंसित्वा राजानं आपुच्छित्वा पव्वजित्वा अरहत्ते पतिट्ठितोति तस्स गुणं कथ्यमाना निसीदिसु ।

सत्था आगन्त्वा—कायनुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निमिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते—न भिक्खवे ! इदानीं अयमेव ब्राह्मणो अत्तनो सीलं वीमंसित्वा पव्वजित्वा अत्तनो पतिट्ठं अकासि । पुब्बेपि पण्डिता अत्तनो सीलं वीमंसित्वा पव्वजित्वा अत्तनो पतिट्ठं करिस्सूति वत्वा तेहि याचितो अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते बारारणसिय ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो तस्स पुरोहितो अहोसि दानाधिमुत्तो सीलज्भासयो अखण्डपञ्चसीलो । राजा सेसब्राह्मणेहि अतिरेकं तस्स सम्मानं करोतीति, सर्व्वं पुरिमसदिसमेव ।

बोधिसत्ते पन बन्धित्वा रञ्जो सन्तिकं निव्यमाने अहिगुण्ठिका अन्तरवीथियं सप्पं कीलापेन्ता तं नङ्गुट्ठे गण्हन्ति, गीवाय गण्हन्ति, गले वेठेन्ति ।

बोधिसत्तो ते दिस्वा-मा ताता ! एतं सप्पं नङ्गुट्ठे गण्हथ, मा गीवाय, मा गले वेठेथ, अयं हि वो डसित्वा जीवितक्खयं पापेय्याति आह ।

अहिगुण्ठिका-अयं ब्राह्मण ! सप्पो सीलवा आचारसम्पन्नो तादिसो दुस्सीलो न होति । त्वं पन अत्तनो दुस्सीलताय अनाचारेण राज कुटुम्बविलुम्पकचोरोति बन्धित्वा नीयसीति आहंसु ।

सो चिन्तेसि-सप्पापि ताव अडंसन्ता अविहेठेन्ता सीलवन्तोति नामं लभन्ति । किमङ्ग पन मनुस्स-भूता ? सीलं येव इमस्मि लोके उत्तमं । नत्थि ततो उत्तरितरन्ति ।

अथ नं नेत्वा रञ्जो दस्सेसुं । [३१४]

राजा-किं इदं ताताति ? पुच्छि ।

राजकुटुम्बविलुम्पक चोरो देवाति ।

तेन हिस्स राजाणं करोथाति ।

ब्राह्मणो-नाहं महाराज ! चोरोति आह ।

अथ कस्मा कहापरणे अगहेसीति च वुत्तो पुरिमनयेनेव सव्वं आरोचेन्तो स्वाहं इमिना कारणेण इमस्मि लोके सीलमेव उत्तमं सीलं पामोक्खन्ति सन्निट्ठानं कतोति वत्वा तिट्ठतु ताव, इदं आसीविसोपि ताव अडंसन्तो अविहेठेन्तो सीलवाति वत्तव्वतं लभति । इमिनापि कारणेण सीलमेव उत्तमं, सीलं पवरन्ति सीलं वण्णेन्तो इमं गाथमाह:-

सीलं किरिव कल्याणं सीलं लोके अनुत्तरं

पस्स घोरविसो नागो सीलवाति न हञ्जातीति ।

तत्थ-सीलं किरिवाति कायवाचाचित्तेहि अवीतिवकमणसङ्खातं आचारसीलमेव । किराति अनु-स्सववसेन वदति । कस्याणन्ति सुन्दरतरं । अनुत्तरन्ति जेट्ठकं सव्वगुण्णदायकं । पस्साति अत्तना दिट्ठकारणं अभिमुखं करोन्तो कथेसि । सीलवाति न हञ्जातीति घोरविसोपि समानो अडसनअविहेठनमत्तकेन सीलवाति पसंसं लभति । न हञ्जाति न विहञ्जातीति इमिनापि कारणेण सीलमेव उत्तमन्ति ।

एवं बोधिसत्तो इमाय गाथाय रञ्जो धम्मं देसेत्वा कामे पहाय इसिपव्वज्जं पव्वजित्वा हिमवन्तं पवि-सित्वा पञ्च अभिञ्जा अट्ठ समापत्तियो निव्वत्तेत्वा ब्रह्मलोकपरायणो अहोसि । सत्था इमं धम्मदेसनं आह-रित्वा जातकं समोधानेसि । तदा राजा आनन्दो, राजपरिसा बुद्धपरिसा अहोसि, पुरोहितो पन अहमेवाति ।

सीलवीमंसनजातकं ।

७. मङ्गलजातकं

यस्स मङ्गला समूहताति इदं सत्था वेलुवने विहरन्तो एकं साटकलक्खणब्राह्मणं आरब्भ कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

राजगहवासिको किरिको ब्राह्मणो कोतूहलमङ्गलिको तीसु रतनेसु अप्पसन्नो मिच्छादिट्ठि अड्ढो महद्धनो महाभोगो । तस्स समुग्गे ठपितं साटकयुगं मूसिका खादिसु । अथस्स सीसं नहायित्वा साटके आहरथाति वुत्त-
काले मूसिकाय खादितभावं आरोचयिसु । सो चिन्तेसि—सचे इदं मूसिकदट्ठं साटकयुगं इमस्मिं गेहे भवि-
स्सति महाविनासो भविस्सति । इदं हि अवमङ्गलं, कालकण्णीसदिसं पुत्तधीतादीनम्मि दासकप्पमकरादीनं
वा न सक्का दातुं । यो हि इदं गण्हिस्सति सब्बस्स महाविनासो भविस्सति । आमकसुसाने तं छड्डापेस्सामि ।
न खो पन सक्का दासादीनं हत्थे दातुं । ते हि एत्थ लोभं उप्पादेत्वा इमं [३१५] गहेत्वा विनासं पापुण्येयुं ।
पुत्तस्स तं हत्थे दस्सामीति ।

सो पुत्तं पक्कोसापेत्वा तमत्थं आरोचेत्वा—त्वम्मि न तात ! हत्थेन अफुसित्वा दण्डकेन गहेत्वा आम-
कसुसाने छड्डेत्वा सीसं नहायित्वा एहीति पेसेसि ।

सत्थापि खो तं दिवसं पच्चूससमये वेनेय्यबन्धवे आलोकेन्तो इमेसं पितापुत्तानं सोतापत्तिफलस्स उप-
निस्सयं दिस्वा मिगवीथिं गहेत्वा मिगलुट्टको विय गन्त्वा आमकसुसानद्वारे निसीदि छब्बण्णबुद्धरस्मियो विस्स-
ज्जेन्तो । माणवो पितु वचनं सम्पटिच्छित्वा अगारसप्पं विय तं युगसाटकं यट्ठिकोटिया गहेत्वा आमकसुसानद्वारं
पापुणि । अथ नं सत्था—किं करोसि माणवाति आह । भो गोतम ! इदं साटकयुगं मूसिकाय दट्ठं, काल-
कण्णीसदिसं हलाहलविसूपमं । मम पिता अञ्जो एतं छड्डेन्तो लोभं उप्पादेत्वा गण्हेय्याति भयेन मं पहिणि ।
अहमेतं छड्डेत्वा सीसं नहायित्वा गमिस्सामीति आगतोमिह भो गोतमाति ।

तेन हि छड्डेहीति ।

माणवो छड्डेसि । सत्था अम्हाकन्दानि वट्ठतीति तस्स सम्मुखाव अवमङ्गलं भो गोतम ! एतं कालक-
कण्णीसदिसं मा गण्हि, मा गण्हीति तस्मिं वारयमाने येव गहेत्वा वेलुवनाभिमुखो पायासि । माणवो वेगेन गन्त्वा
पितु आरोचेसि—तात ! मया आमकसुसाने छड्डितं साटकयुगं समणो गोतमो अम्हाकं वट्ठतीति मया
वारियमानोपि गहेत्वा वेलुवनं गतोति ।

ब्राह्मणो चिन्तेसि—तं साटकयुगं अवमङ्गलं कालकण्णीसदिसं । तं वलज्जेन्तो समणोपि गोतमो
नस्सिस्सति, विहारोपि नस्सिस्सति । ततो अम्हाकं गरहा भविस्सति । समणस्स गोतमस्स अञ्जो बहू साटकं
दत्त्वा तं छड्डापेस्सामीति ।

सो बहू साटके गाहापेत्वा पुत्तेन सद्धि वेलुवनं गन्त्वा सत्थारं दिस्वा एकमन्तं ठितो एवमाह सच्चं किर
ते भो गोतम ! आमकसुसाने साटकयुगं गहितन्ति ?

सच्चं ब्राह्मणाति ।

भो गोतम ! तं साटक युगं अवमङ्गलं तुम्हे नं परिभुञ्जमाना नस्सिस्सथ, सकलविहारोपि नस्सिस्सति ।
सचे वो निवासनं वा पारुपनं वा नप्पहोति इमे साटके गहेत्वा तं छड्डापेथाति ।

अथ नं सत्था—मयं ब्राह्मण ! पव्वजिता नाम अम्हाकं आमकसुसाने अन्तरवीथियं संकारट्टाने नहा-
नतित्ये महामग्गेति एवरूपेसु ठानेसु छड्डिता वा पतिता वा पिलोतिका वट्ठति, त्वम्पन न इदानीव पुब्बेपि एवं
लद्धिको येवाति वत्वा तेन याचितो अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते मगधरट्ठे राजगहनगरे धम्मिको मगधराजा रज्जं कारेसि । तदा बौधिसत्तो एकस्मिं उदिच्च-
ब्राह्मणकुले निब्वत्तित्वा विञ्जुतं पत्तो इसिपव्वज्जं पव्वजित्वा अभिञ्जा च [३१६] समापत्तियो च निब्व-

त्तेत्वा हिमवन्ते वसमानो एकस्मिन् काले हिमवन्ततो निःस्रवमित्वा राजागहनगरे राजयुयानं पत्वा तत्थ वसित्वा दुतियदिवसे भिक्षाचारत्याय नगरं पाविसि । राजा तं दिस्वा पक्कोसापेत्वा पासादे निसीदापेत्वा भोजेत्वा उय्याने येव वसनत्याय पटिञ्चं गण्हि । बोधिसत्तो रञ्जो निवेसने भुञ्जित्वा उय्याने वसति ।

तस्मिन् काले राजागहनगरे दुस्सलक्खणाब्राह्मणो नाम अहोसि । तस्स समुग्गे ठपितं सटकयुगन्ति सञ्चं पुरिमसदिसमेव । माणवे पन सुसानं गच्छन्ते बोधिसत्तो पठमतं गन्त्वा सुसानद्वारे निसीदित्वा तेन छड्डितं साटकयुगं गहेत्वा उय्यानं अगमासि । माणवो गन्त्वा पितु आरोचेसि । पिता राजकुलूपको तापसो नस्सेय्याति बोधिसत्तस्स सन्तिकं गन्त्वा—तापस ! तया गहितसाटके छड्डेहि मा नस्सीति आह ।

तापसो—अम्हाकं सुसाने छड्डितपिलोतिका वट्टति न मयं कोतूहलमङ्गलिका कोतूहलमङ्गलं नामेतं न ब्रुद्धपच्चेकब्रुद्धबोधिसत्तेहि वणिगतं, तस्मा पण्डितेन कोतूहलमङ्गलिकेन न भवितव्वन्ति ब्राह्मणस्स धम्मं देसेसि ।

ब्राह्मणो धम्मं सुत्वा दिट्ठि भिन्दित्वा बोधिसत्तं सरणं गतो । बोधिसत्तोपि अपरिहीनज्झानो ब्रह्मलोकपरायणो अहोसि । सत्थापि इमं अतीनं आहृत्वा अभिमम्बुद्धो हत्वा ब्राह्मणस्स धम्मं देसेन्तो इमं गाथभाहः—

यस्स मङ्गला समूहता
उप्पाता सुपिना च लक्खणा च,
स सङ्गलदोस वीतिवत्तो
युगयोगाधिगतो न जातु मेतीति ।

तत्थ यस्समङ्गला समूहताति यस्म अरहतो खीणासवस्स दिट्ठमङ्गलं सुतमङ्गलं सुतमङ्गलन्ति एते मङ्गला समुच्छिन्ना । उप्पाता सुपिना च लक्खणा चाति एवरूपो चन्दगाहो भविस्सति, एवरूपो मुरियगाहो भविस्सति, एवरूपो नक्यत्तगाहो भविस्सति, एवरूपो उक्कापातो भविस्सति, एवरूपो दिसाडाहो भविस्सतीति इमे पञ्च महाउप्पाता नानपकारका सुपिना मुनक्खणं दुग्भगलक्खणं इत्थिलक्खणं पुरिसलक्खणं दासलक्खणं दासिलक्खणं असिलक्खणं उसभलक्खणं आवुधलक्खणं वत्थलक्खणन्ति एवमादिकानि लक्खणानि इमे च दिट्ठिट्ठाना यस्स समूहता न एतेहि उप्पातादीहि अत्तनो मङ्गलं वा अवमङ्गलं वा पच्चेति । स मङ्गलवोसवीतितीति सो खीणासवो सव्वमङ्गलदोसवीतिवत्तो अतिक्कन्तो पजहित्वा ठितो ।

युगयोगाधिगतो न जातुमेतीति कोधो च उपनाहो च मक्खो च पलासो चाति आदिना नयेन द्वे द्वे एकतो आगतकिलेसा युगा नाम । कामयोगो, [३१७] भवयोगो, दिट्ठियोगो, अविज्जायोगोति इमे संसारे योजनभावतो चत्तारो योगा नाम । ते युगा च योगा चाति युगयोगे अधिगतो अभिभवित्वा गतो वीतिवत्तो समतिक्कन्तो खीणागवो भिक्खु । न जातुमेतीति पुन पटिसन्धिवसेन एकसेनेव इमं लोकं न एति नागच्छतीति ।

एवं सत्था इमाय गाथाय ब्राह्मणस्स धम्मं देसेत्वा पुन सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने ब्राह्मणो सिद्धि पुत्तेन सोतापत्तिकले पतिट्ठहि । सत्था जातकं समोधानेसि । तदा एतेव पितापुत्ता अहेसुं । तापसो पन अहमेवाति ।

मङ्गलजातकं ।

८. सारम्भजातकं

कल्याणमेव मुञ्चेय्याति इदं सत्था सावत्थियं उपनिस्साय जेतवने विहरन्तो ओमसवादसिक्खापदं आरब्ध कथेसि ।

द्वेपि वत्थूनि हेट्ठा नन्दिविसालजातके वुत्तसदिसानेव । इमस्मिं पन जातके बोधिसत्तो गन्धाररट्ठे तक्कसिलायं अञ्जतरस्स ब्राह्मणस्स सारम्भो नाम बलिवद्दो अहोसि । सत्था इदं अतीतवत्थुं कथेत्वा अभिसम्बुद्धो हुत्वा इमं गाथमाहः—

कल्याणमेव मुञ्चेय नहि मुञ्चेय्य पापिकं,
मोक्खो कल्याणिया साधु मुत्वा तपति पापिकन्ति ।

तत्थ—कल्याणमेव मुञ्चेय्याति चतुदोसविनिम्मुत्तं कल्याणं सुन्दरं अनवज्जं वाचमेव मुञ्चेय्य, विस्स-ज्जेय्य, कथेय्य । नहि मुञ्चेय्य पापिकन्ति पापिकं लामिकं परेसं अप्पियं अमनापं न मुञ्चेय्य, न कथेय्य । मोक्खो कल्याणिया साधूति कल्याणवाचाय विस्सज्जनमेव इमस्मिं लोके साधु सुन्दरं भद्दकं । मुत्वा तपति पापिकन्ति पापिकं फरुसं वाचं मुञ्चित्वा विस्सज्जेत्वा कथेत्वा सो पुग्गलो तपति सोचति किलमतीति ।

एवं सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधनेसि । तदा ब्राह्मणो आनन्दो अहोसि, ब्राह्मणी उप्पलवण्णा, सारम्भो पन अहमेवाति ।

सारम्भजातकं ।

९. कुहकजातकं

वाचाव किर ते आसीति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं कुहकं आरब्ध कथेसि । कुहनवत्थुं उदा-
लजातके आबीभविस्सति ।

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते एकं गामकं उपनिस्साय एको कूटजटिलकुहकतापसो वसति ।
एको कुटुम्बिको तस्स अरञ्जो पण्णसालं कारेत्वा तत्थ नं वासेन्तो अत्तनो गेहे परीताहारेन पटिग्गति ।
सो तं कूटजटिलं सीलवा एसोति सद्दहत्वा चोरभयेन सुवण्णनिक्खसत्तं तस्स पण्णसालं नेत्वा भूमिगतं कत्वा
इदं ओलोकेय्यासि भन्तेति आह । अथ नं तापसो-पब्बजितानं नाम आवुसो ! एवरूपं कथेतुं न वट्ठति
अम्हाकं परसन्तके लोभो नाम नत्थीति आह ।

सो-साधु भन्तेति तस्स वचनं सद्दहत्वा पक्कामि । दुट्ठतापसो सक्का एत्तकेन जीवितुन्ति कतिपाहं
अतिक्कमित्वा तं सुवण्णं गहेत्वा अन्तरामगं एकस्मिं ठाने ठपेत्वा आगन्त्वा पण्णसालायमेव वसित्वा पुनदिवसे
तस्स गेहे भत्तकिच्चं कत्वा एवमाह-आवुसो ! मयं तुम्हे निस्साय चिरं वसिम्ह, अतिचिरं एकस्मिं ठाने
वसन्तानं मनुस्सेहि सद्धि संसग्गो होति । संसग्गो च नाम पब्बजितानं मलं । तस्मा गच्छामहन्ति वत्वा तेन
पुनप्पुनं याचियमानोपि निवत्तिंतुं न इच्छि ।

अथ नं सो-एवं सन्ते गच्छथ भन्तेति याव गामद्वारं अनुगन्त्वा निवत्ति ।

तापसो थोकं गन्त्वाव इमं कुटुम्बिकं मया वञ्चेतुं वट्ठतीति चिन्तेत्वा जटानं अन्तरे तिणं ठपेत्वा
पटिनिवत्ति ।

कुटुम्बिको-किं भन्ते ! निवत्तित्थाति पुच्छि ।

आवुसो ! तुम्हाकं गहेच्छदनतो मे जटासु एकं तिणं लग्गं, अदिन्नादानं च नाम पब्बजितानं न वट्ठति
तं आदाय आगतोम्हीति ।

कुटुम्बिको-छड्ढेत्वा गच्छथ भन्तेति वत्वा तिणसलाकम्पि नाम परसन्तकं न गण्हति, अहो कुक्कु-
च्चको मे अय्योति पसीदित्वा वन्दित्वा उय्योजेसि ।

तदा पन बोधिसत्तेन भण्डत्थाय पच्चन्तं गच्छन्तेन तस्मिं निवेसने निवासो गहितो होति । सो ताप-
सस्स वचनं सुत्वाव अद्धा इमिना दुट्ठतापसेन इमस्स किञ्चि हटं भविस्सतीति कुटुम्बिकं पुच्छि-अत्थि पन ते सम्म !
किञ्चि एतस्स तापसस्स सन्तिके निक्खत्तन्ति ?

अत्थि सम्म ! सुवण्णनिक्खसत्तन्ति ।

तेन हि गच्छ नं उपधारेहीति ।

सो पण्णसालं गन्त्वा तं अदिस्वा वेगेनागन्त्वा नत्थि सम्माति आह ।

न ते सुवण्णं अञ्जं न गहितं, तेनेव कूटतापसेन गहितं । एहि तं अनुबन्धित्वा गण्हामाति वेगेन गन्त्वा
कूटतापसं गण्हित्वा हत्थेहि च पादेहि च पोथेत्वा सुवण्णं आहरापेत्वा गण्हसुं । बोधिसत्तो सुवण्णं दिस्वा
निक्खसत्तं नाम हरमानो असज्जित्वा तिणमत्ते सत्तोसीति वत्वा तं गरहन्तो इमं गाथमाह:-

वाचाव किर ते आसि सण्हा सखिलभाणिनो,

तिणमत्ते असज्जित्थो नो च निक्खसत्तं हरन्ति ।

तत्थ-वाचाव किर ते आसि सण्हा सखिलभाणिनोति पब्बजितानं तिणमत्तम्पि अदिन्नं आदातुं न
वट्ठतीति एवं सखिलं मुदुवचनं वदन्तस्स वाचा एव किर ते सण्हा आसि । वचनमत्तमेव मट्ठं अहोसीति अत्थो।

तिणमत्ते असज्जित्थोति कूटजटिल ! एकस्सा तिणसलाकाय कुक्कुच्चं कुरुमानो त्वं सत्तो आसत्तो लग्गो अहोसि ।
नो च निक्खसतं हरन्ति इमं पन निक्खसतं हरन्तो असत्तो निल्लग्गोव जातोसीति ।

एवं बोधिसत्तो तं गरहित्वा मास्सु पुन कूटजटिल ! एवरूपमकासीति ओवादं दत्वा यथाकम्मं गतो ।
सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा—न भिक्खवे ! इदानेवेस भिक्खु कुहको पुब्बेपि कुहको येवाति वत्वा जातकं
समोधानेसि । तदा कूटतापसो कुहकभिक्खु अहोसि, पण्डितपुरिसो पन अहमेवाति ।

कुहकजातकं ।

१०. अकतञ्जुजातकं

यो पुम्बे कतकल्याणोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अनाथपिण्डकं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

तस्स किरको पच्चन्तवासिको सेट्ठी अदिट्ठसहायो अहोसि । सो एकदा पच्चन्ते उट्टानकभण्डस्स पञ्च सकटसतानि पूरेत्वा कम्मन्तिकमनुस्से आह—गच्छथ भो ! इमं भण्डं सावत्थि नेत्वा अम्हाकं सहायस्स अनाथपिण्डकमहासेठिस्स पच्चक्खेन विक्किणित्वा पटिभण्डं आहरथाति ।

ते साधूति तस्स वचनं सम्पटिच्छित्वा सावत्थि गत्वा महासेट्ठि दिस्वा पण्णाकारं दत्वा तं पर्वत्ति आरोचेसु । महासेट्ठि स्वागतं वोति तेसं आवासं च परिब्बयं च दापेत्वा सहायस्स सुखं पुच्छित्वा भण्डं विक्किणित्वा पटिभण्डं दापेसि । ते पच्चन्तं गत्वा तमत्थं अत्तनो सेट्ठिस्स आरोचेसु ।

अथापरभागे अनाथपिण्डकोपि तथेव पञ्च सकटसतानि तत्थ पेसेसि । मनुस्सा तत्थ गत्वा पण्णाकारं आदाय पच्चन्तवासिकसेट्ठि पस्सिसु । सो कुतो आगच्छथाति पुच्छित्वा सावत्थितो तुम्हाकं सहायस्स अनाथपिण्डकस्स सन्तिकति वुत्ते अनाथपिण्डकोति कस्सचि पुरिसस्स नामं भविस्सतीति परिहासं कत्वा पण्णाकारं गहेत्वा गच्छथ तुम्हेति उय्योजेसि । नेव निवासं न परिब्बयं दापेसि । ते सयमेव भण्डं विक्किणित्वा पटिभण्डं आदाय सावत्थि आगन्त्वा सेठिस्स तं पर्वत्ति आरोचेसु ।

अथ सो पच्चन्तवासी पुनपि एकवारं तथेव पञ्च सकटसतानि सावत्थि पेसेसि । मनुस्सा पण्णाकारं आदाय महासेट्ठि पस्सिसु । ते पन दिस्वा अनाथपिण्डकस्स गेहे मनुस्सा मयं [३२०] सामि ! एतेसं निवासञ्च भत्तञ्च परिब्बयञ्च जानिस्सामाति वत्वा तेसं सकटानि बहिनगरे तथारूपे ठाने मोचापेत्वा तुम्हे इधेव वसथ अम्हाकं वो घरे यागुभत्तञ्च परिब्बयो च भविस्सतीति गत्वा दासकम्मकरे सन्निपातेत्वा मज्झिमयामसमनन्तरे पञ्चेव सकटसतानि विलुम्पित्वा निवासनपारुपनानिपि तेसं अच्छिन्दित्वा गोणे पलापेत्वा सकटानि विचक्कानि कत्वा भूमियं ठपेत्वा चक्कानिपि गण्हित्वाव अगमसु । पच्चन्तवासिनो निवासनमत्तस्सापि सामिका अहुत्वा भीता वेगेन पलायित्वा पच्चन्तमेव गता । सेट्ठिस्स मनुस्सापि तं पर्वत्ति महासेट्ठिनो आरोचेसु ।

सो अत्थि दानि कथापाभतन्ति सत्थु सन्तिकं गत्वा आदितो पट्टाय सब्बं तं पर्वत्ति आरोचेसि । सत्था—न खो गहपति ! सो पच्चन्तवासी इदानेव एवंसीलो पुम्बेपि एवंसीलकोव अहोसीति वत्वा तेन याचितो अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो बाराणसियं महाविभवो सेट्ठी अहोसि । तस्सेको पच्चन्तवासिको सेट्ठी अदिट्ठसहायोति सब्बं अतीतवत्थुं पच्चुप्पन्नवत्थुसदिसमेव । बोधिसत्तो पन अत्तनो मनुस्सेहि अज्ज अम्हेहि इदं नामकतन्ति आरोचिते पठमं अत्तनो कतं उपकारं अजानन्ता पच्छापि एवरूपं लभन्ति येवाति वत्वा सम्पत्तपरिसाय धम्मं देसेन्तो इमं गाथमाहः—

यो पुम्बे कतकल्याणो कतत्थो नावबुज्झति,

पच्छा किञ्चे समुप्पन्ने कत्तारं नाधिगच्छतीति ।

तत्रायं पिण्डत्थो—स्वत्तियादिसु यो कोचि पुरिसो पुम्बे पठमतरं अज्जो न कतकल्याणो कतूपकारो कतत्थो मिप्फादिताकिञ्चो हुत्वा तं परेन अत्तनि कतं कल्याणं चेव अत्थञ्च न जानाति सो पच्छा अत्तनो किञ्चे समप्पछे तस्स किञ्चस्स कत्तारं नाधिगच्छति न लभतीति ।

एवं बोधिसत्तो इमाय गाथाय धम्मं देसेत्वा दानादीनि पुञ्जानि कत्वा यथाकम्मं गतो । सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा पच्चन्तवासी इदानपि पच्चन्तवासी येव बाराणसीसेट्ठी पन अहमेवाति ।

अकतञ्जु जातकं ।

अपायिम्हवग्गो नवमो । [३२१]

१०. लित्तवग्गवण्णना

१. लित्तजातकं

लित्तं परमेन तेजसाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अपच्चवेक्खितपरिभोगं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपञ्चवत्थु

तस्मिं किर काले भिक्खू चीवरादीनि लभित्वा येभ्युयेन अपच्चवेक्खित्वा परिभुञ्जन्ति । ते चत्तारो पच्चये अपच्चवेक्खित्वा परिभुञ्जमाना येभ्युयेन निरयतिरच्छानयोनितो न मुच्चन्ति ।

सत्था तं कारणं जत्वा भिक्खून् अनेकपरियायेन धम्मकथं कथेत्वा अपच्चवेक्खितपरिभोगे आदीनवं दस्सेत्वा—भिक्खवे ! भिक्खुना नाम चत्तारो पच्चये लभित्वा अपच्चवेक्खित्वा परिभुञ्जितुं न वट्टति । तस्मा इतो पट्ठाय पच्चवेक्खित्वा परिभुञ्जेय्याथाति । पच्चवेक्खणविधिं दस्सेन्तो “इध भिक्खवे ! भिक्खु पटिसङ्खायोनिसो चीवरं पटिसेवति सीतस्स पटिघातायाति” आदिना नयेन तन्ति ठपेत्वा—भिक्खवे ! चत्तारो पच्चये एवं पच्चवेक्खित्वा परिभुञ्जितुं वट्टति । अपच्चवेक्खितपरिभोगो नाम हलाहलविसपरिभोगसदिसो । पोराणका हि अपच्चवेक्खित्वा दोसं अजानित्वा विसं परिभुञ्जित्वा विपाकन्ते महादुक्खं अनुभविसूतिं वत्वा अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो अञ्जातरस्मिं महाभोगकुले निब्बत्तित्वा वयप्पत्तो अक्खधुत्तो अहोसि । अथापरो कूटक्खधुत्तो बोधिसत्तेन सद्धिं कीलन्तो अत्तनो जये वत्तमाने केलिमण्डलं न भिन्दति, पराजयकाले पन अक्खं मुखे पक्खिपित्वा अक्खो नट्ठोति केलिमण्डलं भिन्दित्वा पक्कमति । बोधिसत्तो तस्स कारणं जत्वा होतु जानिस्सामेत्थ पतिरूपन्ति अक्खे आदाय अत्तनो घरे हलाहलविसेन रञ्जेत्वा पुनप्पुन सुक्खापेत्वा ते आदाय तस्स सन्तिकं गन्त्वा एहि सम्म ! अक्खेहि कीलामाति आह । सो साधु सम्माति केलिमण्डलं सञ्जेत्वा तेन सद्धिं कीलन्तो अत्तनो पराजयकाले एकं अक्खं मुखे पक्खिपि । अथ नं बोधिसत्तो तथा करोन्तं दिस्वा गिलाहि ताव पच्छा इदं नामेतन्ति जानिस्ससीति चोदेतुं इमं गाथमाहः—

लित्तं परमेन तेजसा

गिलमक्खं पुरिसो न बुज्झति,

गिल रे ! गिल पापधुत्तक !

पच्छा ते कट्टकं भविस्सतीति ।

तत्थ—लित्तन्ति मक्खितं रञ्जितं । परमेन तेजसाति उत्तमतेजसा सम्पन्नेन हलाहलविसेन । गिलन्ति गिलन्तो । अक्खन्ति गुलकं । न बुज्झतीति अयं मे गिलतो इदं नाम करिस्सतीति न जानाति । गिल रेति गिलाहि अरे ! गिलाति पुनपि चोदेन्तो वदति । पच्छा ते कट्टकं भविस्सतीति इमस्मिं ते अक्खे गिलिते पच्छा एतं विसं तिखिणं भविस्सतीति अत्थो । [३२२]

सो बोधिसत्तस्स कथेन्तस्सेव विसवेगेन मुच्छितो अक्खीनि परिवत्तेत्वा खन्धं नामेत्वा पति । बोधिसत्तो इदानिस्स जीवितदानं दातुं वट्टतीति ओसधपरिभावितं वमनयोगं दत्वा वमेत्वा सप्पिफाणितमधुसक्करादयो तच्च खादापेत्वा अरोगं कत्वा पुन एवरूपं मा अकासीति ओवदित्वा दानादीनि पुञ्जानि कत्वा यथाकम्मं गतो ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा भिक्खवे ! अपच्चवेक्खितपरिभोगो नाम अपच्चवेक्खित्वा कतविसपरिभोगसदिसो होतीति वत्वा जातकं समोधानेसि । तदा पण्डितधुत्तो अहमेव अहोसि । कूटधुत्तो पनेत्थ न कथीयति । यथा चेत्थ एवं सब्बत्थ । यो पन इमस्मिं काले न पञ्जायति सो न कथिय्यतेवाति ।

लित्तजातकं ।

२. महासारजातकं

उक्कट्ठे सुरमिच्छन्तीति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो आयस्मन्तं आनन्दत्थेरं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

एकस्मिं हि समये कोसलरञ्जो इत्थियो चिन्तयिसु बुद्धुप्पादो नाम दुल्लभो तथा मनुस्सपटिलाभो परिपुण्णायतनता च, मयञ्च इमं दुल्लभं खणसमवायं लभित्वापि अत्तनो रुचिया विहारं गन्त्वा धम्मं वा सोतुं पूजं वा कातुं दानं वा दातुं न लभाभ । मञ्जूसाय पक्खित्ता विय वसाम । रञ्जो कथेत्वा अम्हाकं धम्मं देसेतुं अनुच्छविकं एकं भिक्खुं पक्कोसापेत्वा तस्स सन्तिके धम्मं सोस्साम । ततो यं सक्खिस्साम तं उग्गण्हिस्साम दानादीनि च पुञ्ञानि करिस्साम । एवं नो अयं खणपटिलाभो मफलो भविस्सतीति ।

ता सब्बापि राजानं उपसङ्कमत्वा अत्तना चिन्तितं कारणं कथयिसु । राजा साधूति सम्पटिच्छि । अथेकदिवसं राजा उय्यानकीलं कीलितुकामो उय्यानपालं पक्कोमापेत्वा उय्यानं सोधेहीति आह । उय्या-नपालो उय्यानं सोधेन्तो सत्थारं अञ्जतरस्मिं रुक्खमूले निसिन्नं दिस्वा रञ्जो सन्तिके गन्त्वा सुद्धं देव ! उय्यानं अपि चेत्थ अञ्जतरस्मिं रुक्खमूले भगवा निसिन्नोति आह । राजा—साधु सम्म ! सत्थु सन्तिके धम्ममपि सोस्सामाति अलङ्कतरयं अभिरुह्य उय्यानं गन्त्वा सत्थु सन्तिकं अगमासि ।

तस्मिञ्च समये छत्तपाणी नामेको अनागामी उपामको सत्थु सन्तिके धम्मं सुणमानो निसिन्नो होति । राजा नं दिस्वा आसङ्कमानो मुहुत्तं ठत्वा पुन सत्थायं पापको भवेय्य न सत्थु सन्तिके निसीदित्वा धम्मं सुणेय्य । अपापकेन इमिना भवितव्वन्ति चिन्तेत्वा सत्थारं उपमङ्कमत्वा दन्दित्वा एकमन्तं निसीदि । उपासको बुद्धगारवेन रञ्जो पच्चुट्ठानं वा वन्दनं वा नाकासि । तेनस्स राजा अनत्तमनो अहोसि । [३२३]

सत्था तस्स अनत्तमनभावं जत्वा उपासकस्स गुणं कथेसि—अयं महाराज ! उपासको बहुस्सुतो आगतागमो कामेसु वीतरागोति ।

राजा न इमिना ओरकेन भवितव्वं यस्स सत्था गुणं वण्णेतीति चिन्तेत्वा—उपासक ! वदेय्यासि येन ते अत्थोति आह ।

उपासको साधूति सम्पटिच्छि । राजा सत्थु सन्तिके धम्मं सुत्वा सत्थारं पदक्खिणं कत्वा पक्कामि । सो एकदिवसं उपरिपामादे महावानपानं विवरित्वा टितो तं उपासकं भुत्तपातरासं छत्तमादाय जेतवनं गच्छन्तं दिस्वा पक्कोसापेत्वा एवमाह—त्वं किर उपासक ! बहुस्सुनो अम्हाकं च इत्थियो धम्मं सोतुका-मा चेव उग्गहेतुकामा च । साधु वतस्स सचे तासं धम्मं वाचेय्यासीति ।

देव ! गिहीनं नाम राजन्तेपुरे धम्मं देसेतुं वा वाचेतुं वा नप्पतिरूपं, अय्यानमेव पतिरूपन्ति ।

राजा सच्चमेस वदतीति तं उय्योजेत्वा इत्थियो पक्कोसापेत्वा—भदे ! अहं तुम्हाकं धम्मदेसनत्थाय च धम्मवाचनत्थाय च सत्थु सन्तिकं गन्त्वा एकं भिक्खुं याचामि । असीतिया महासावकेसु कतरं याचामीति आह ।

ता सब्बापि मन्तेत्वा धम्मभण्डागारिकं आनन्दत्थेरमेव आरोचेसु ।

राजा सत्थु सन्तिकं गन्त्वा वन्दित्वा एकमन्तं निसिन्नो एवमाह—भन्ते ! अम्हाकं गेहे इत्थियो आनन्द-त्थेरस्स सन्तिके धम्मं सोतुञ्च उग्गण्हितुं च इच्छन्ति । साधु वतस्स मचे थेरो अम्हाकं गेहे धम्मं देसेय्य चेव वाचेय्य चाति ।

सत्था साधूति सम्पटिच्छित्वा थेरं आणापेसि । ततो पट्टाय रञ्जो इत्थियो थेरस्स सन्तिके धम्मं सुणन्ति चेव उग्गण्हन्ति च । अथेकदिवसं रञ्जो चूलामणि नट्ठो । राजा तस्स नट्टभावं सुत्वा अमच्चे

रणानि ओमुञ्चित्वा उत्तरासङ्गेषु पक्खपित्वा समुगपिट्ठेषु ठपेत्वा दासियो पटिच्छापेत्वा पोक्खरणि ओतरिंसु ।

अथेका उय्यानमक्कटी साखन्तरे निसिन्ना देवि पिलन्धनानि ओमुञ्चित्वा उत्तरासङ्गेषु पक्खपित्वा समुगपिट्ठेषु ठपयमानं दिस्वा तस्सा मुत्ताहारं पिलन्धनुकामा हुत्वा दासिया पमादं ओलोकयमाना निसीदि, दासीपि तं रक्खमाना तहं तहं ओलोकयमाना निसिन्ना येव पचलायितुमारभि । मक्कटी तस्सा पमादभावं ज्ञत्वा वातवेगेन ओतरित्वा महामुत्ताहारं गीवाय पटिमुञ्चित्वा वातवेगेन उप्पतित्वा साखन्तरे निसीदित्वा अञ्जासं मक्कटीनं दस्सनभयेन एक्खिं रुक्ख सुसिरट्ठाने ठपेत्वा उपसन्तुपसन्ता विय तं रक्खमाना निसीदि ।

सापि खो दासी पटिबुज्झित्वा मुत्ताहारं अपस्सन्ती कम्पमाना अञ्जं उपायं अदिस्वा पुरिसो देविया मुत्ताहारं गहेत्वा पलातोति महाविरवं विरवि । आरक्खमनुस्सा ततो ततो सन्निपतित्वा तस्सा वचनं सुत्वा रञ्जो आरोचयिंसु । राजा चोरं गण्हाति आह । पुरिसा उय्याना निक्खमित्वा चोरं गण्हाथ गण्हाति इतो चितो च ओलोकैन्ति ।

अथेको जानपदो बलिकारकपुरिसो तं सट्ठं सुत्वा कम्पमानो पलायि । तं दिस्वा राजपुरिसा अयं चोरो भविस्सतीति अनुवन्धित्वा तं गहेत्वा पोथेत्वा—अरे दुट्ठचोर ! एवं महासारं नाम पिलन्धनं अवहरिस्ससीति परिभासिंसु ।

सो चिन्तेसि सचाहं न गण्हामीति वक्खामि अञ्ज मे जीवितं नत्थि, पोथेन्तो येव मं मारेस्सन्ति । सम्पटिच्छामि नन्ति । सो—आम सामि ! गहितं मेति आह ।

अथ नं बन्धित्वा रञ्जो सन्तिकं नयिंसु । राजापि नं पुच्छि—गहितं ते महासारपिलन्धनन्ति ? आम देवाति ।

इदानीं तं कहन्ति ?

देव ! मया महासारं नाम मञ्चपीठम्पि न दिट्ठपुब्बं, सेट्ठी पन मं महासारपिलन्धनं गण्हापेसि । सोहं गहेत्वाव तस्स अदासि ! सो तं जानातीति ।

राजा सेट्ठि पक्कोसापेत्वा—गहितं ते इमस्स हत्थतो महासारपिलन्धनन्ति पुच्छि ।

आम देवाति ।

कहं तन्ति ?

पुरोहितस्स मे दिस्सन्ति ।

पुरोहितम्पि पक्कोसापेत्वा तथेव पुच्छि । सोपि सम्पटिच्छित्वा गन्धब्बस्स मे दिस्सन्ति आह ।

नम्पि पक्कोसापेत्वा—पुरोहितस्स ते हत्थतो महासारपिलन्धनं गहितन्ति पुच्छि ।

आम देवाति ।

कहं तन्ति ?

किलेसवसेन मे वण्णदासिया दिस्सन्ति ।

तम्पि पक्कोसापेत्वा पुच्छि । सा न गण्हामीति आह । ते तञ्च जने पुच्छन्तानञ्जो व सुरियो अत्थं गतो । [३२६]

राजा इदानीं विकालो जातो स्वे जानिस्सामाति ते पञ्चजने अमच्चानं दत्वा नगरं पाविमि । बोधिसत्तो चिन्तेसि—इदं पिलन्धनं अन्तोवलञ्जे नट्ठं अयं च गहपतिको बहिवलञ्जो, द्वारेपि बलवा रक्खो, तस्मा अन्तोवलञ्जनकानम्पि नं गहेत्वा पलायितुं न सक्का । एवं नेव बहिवलञ्जनकानं न अन्तो उय्याने वलञ्जनकानं गहणुपायो दिस्सति । इमिना दुग्गतमनुस्सेन सेट्ठिस्स मे छिन्नन्ति कथेन्तेन अत्तनो मोक्खत्थाय कथितं भविस्सति । सेट्ठिनापि पुरोहितस्स मे दिस्सन्ति कथेन्तेन एकतो हुत्वा नित्थरिस्सामीति चिन्तेत्वा कथितं भविस्सति । पुरोहितेनापि गन्धब्बस्स मे दिस्सन्ति कथेन्तेन बन्धनागारे गन्धब्बं निस्साय सुखेन वसिस्सामाति चिन्तेत्वा कथितं भविस्सति । गन्धब्बेनापि वण्णदासिया मे दिस्सन्ति कथेन्तेन अनुक्कण्ठिता वसिस्सामाति चिन्तेत्वा

कथितं भविस्सति । इमेहि पञ्चहिपि अचोरेहि भवितव्वं उय्याने मक्कटा व्हू पिलन्धनेन एकस्सा मक्कटिया हत्थे आरूल्हेन भवितव्वन्ति ।

सो राजानं उपसङ्कमित्वा—महाराज ! चोरे अम्हाकं निर्यादेथ मयं तं किच्चं सोधेस्सामाति—आह । राजा साधु पण्डित ! सोधेहीति तस्स निर्यादेसि । बोधिसत्तो अत्तनो दासपुरिसे पक्कोसित्वा ते पञ्च जने एकस्मिञ्चो व ठाने वसापेत्वा समन्ता आरक्खं कत्वा कण्णं दत्वा यं ते अञ्जामञ्जं कथेन्ति तं मय्हं आरो-
चेथाति—वत्वा पक्कामि । ते तथा अकंसु ।

ततो मनुस्सानं सन्निसिन्नवेलाय सेट्ठी तं गृहपतिकं आह—अरे दुट्ठगृहपतिक ! तया अहं मया वा त्वं कहं दिट्ठुव्वो ? कदा ते मय्हं पिलन्धनं दिन्नन्ति आह ।

सामि महासेट्ठि ! अहं महासारं नाम रक्खसारपादकं मञ्च पीठकम्पि न जानामि ! तं निस्साय पन मोक्खं लभिस्सामीति एवं अवचं । मा मे कुञ्च सामीति ।

पुरोहितोपि सेट्ठि आह—महासेट्ठि त्वं इमिना पिलन्धनं अत्तनो अदिन्नकमेव मय्हं कथं अदासीति ? मयम्पि द्वे इस्सरा अम्हाकं एकतो वृत्वा ठितकाले कम्मं विण्णं निष्पजिस्सतीति कथेसिन्ति ।

गन्धर्वोपि पुरोहितं आह—ब्राह्मण ! कदा तया मय्हं पिलन्धनं दिन्नन्ति ? अहं तं निस्साय वसनट्टाने सुखं वसिस्सामीति कथेसिन्ति ।

वण्णदासीपि गन्धर्वं आह—अरे दुट्ठगन्धर्व ! अहं कदा तव मन्निकं गतपुव्वा त्वं वा मम सन्निकं आगतपुव्वो, कदा ते मय्हं पिलन्धनं दिन्नन्ति ?

भगिनि ! किं कारणा कुञ्चसि ? अम्हेसु पञ्चमु एकतो वसन्तेसु घरावासो भविस्सति अनुक्कण्ठ-
माना सुखं वसिस्सामाति कथेसिन्ति । [३२७]

बोधिसत्तो पयोजितमनुस्मानं सन्निका तं कथं मत्वा तेसं तत्थतो अचोरभावं ज्ञत्वा मक्कटिया गहित-
पिलन्धनं उपायेनेव पातेस्सामीति भेण्डुमयानि^१ बहूनि पिलन्धनानि कारापेत्वा उय्याने मक्कटियो गाहापेत्वा हत्थपादगीवासु भेण्डुपिलन्धनानि पिलन्धापेत्वा विस्सजेसि इतरा मक्कटी पिलन्धनं रक्खमाना उय्यानेयेव निसीदि ।

बोधिसत्तो मनुस्से आणापेसि गच्छथ तुम्हे उय्याने सव्वमक्कटियो उपधारेथ यस्सा तं पिलन्धनं पस्सथ तं उत्तासेत्वा पिलन्धनं गण्हाति । तापि खो मक्कटियो पिलन्धनं नो लद्धन्ति तुट्ठपहट्ठा उय्याने विचरन्तियो तस्सा सन्निकं गत्वा पस्सथ अम्हाकं पिलन्धनन्ति आहंसु । सा मक्खं असहमाना किं इमिना भेण्डुपिलन्धनेनाति मुत्ताहारं पिलन्धित्वा निक्खमि ।

अथ नं ते पुरिसा दिस्वा पिलन्धनं छुड्डापेत्वा आहरित्वा बोधिसत्तस्स अदंसु । सो तं आदाय रञ्जो दस्सेत्वा—इदं ते देव ! पिलन्धनं, ते पञ्चपि अचोरा । इदं पन उय्याने मक्कटिया आभतन्ति आह ।

कथं पन ते पण्डित ! मक्कटिया हत्थं आरूल्हभावो जातो ? कथं ते गहितन्ति ?

सो सव्वं आचिक्खि । राजा तुट्ठमानसो सङ्गामसीसादिसु नाम सूरदयो इच्छितव्वा होन्तीति बोधि-
सत्तस्स थुतिं करोन्तो इमं गाथमाह :-

उक्कट्ठे सूरभिच्छन्ति मन्तीसु अकुतूहलं,

पियञ्च अन्नपाणम्हि अत्थे जाते च पण्डितन्ति ।

तत्थ—उक्कट्ठेति उपकट्ठे उभतो बूल्हे सङ्गामे सम्पहारे वत्तमानेति अत्थो । सूरभिच्छन्तीति असनियापि मत्थके पतमानाय अपलायिनं सूरं इच्छन्ति । तस्मिं खणे एवरूपो सङ्गामयोधो पत्थेतव्वो होति । मन्तीसु अकु-
तूहलन्ति कत्तव्वाकत्तव्वकिच्चं सम्मन्तनकाले उप्पन्ने मन्तीसु यो अकुतूहलो अविकिण्णवाचो मन्तं न भिन्दति तं इच्छन्ति तादिसो तेसु ठानेसु पत्थेतव्वो होति । पियञ्च अन्नपाणम्हीति मधुरे अन्नपाणे पच्चुपट्ठिते सहपरिभुञ्जन्त्याय पियगुगलं पत्थेन्ति तादिसो तस्मिं काले पत्थेतव्वो होति । अत्थे जाते च पण्डितन्ति

अत्थगम्भोरे किस्मिचिदेव कारण वा पञ्चै वा उप्पन्न पण्डितं विचक्खण इच्छन्ति, तथारूपो हि तस्मिं समये पत्थेतब्बो होतीति ।

एवं राजा बोधिसत्तं वण्णेत्वा थोमेत्वा घनवस्सं वस्सेन्तो महामेघो विय सत्तहि रतनेहि पूजेत्वा तस्सोवादे ठत्वा दानादीनि पुञ्ञानि कत्वा यथाकम्मं गतो । [३२८]

बोधिसत्तोपि यथाकम्मं गतो । सत्थापि इमं धम्मदेसनं आहरित्वा थेरस्स गुणं कथेत्वा जातकं समो-
धानेसि । तदा राजा आनन्दो अहोसि, पण्डितामच्चो पन अहमेवाति ।

महासारजातकं ।

३. विस्सासभोजनजातकं

न विस्ससे अविस्सत्थेति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो विस्सासभोजनं आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

तस्मिं किर समये येभुय्येन भिक्खू मातरा नो दिन्नं पितरा नो दिन्नं भातरा भगिनिया चुल्लभातरा चुल्लपितरा मातुलेन मातुलानिया दिन्नं, अम्हाकं गिहीकालेपि भिक्खुकालेपि एते दातुं युत्तरूपा वाति जातीहि दिन्ने चत्तारो पच्चये विस्सत्था हुत्वा अपच्चवेक्खित्वा परिभुञ्जन्ति ।

सत्था तं कारणं जत्वा भिक्खूनं मया धम्मदेसनं कातुं वट्ठतीति भिक्खू सन्निपातापेत्वा—भिक्खवे ! भिक्खु-ना नाम जातीहिपि अज्जातीहिपि दिन्नके चत्तारो पच्चये पच्चवेक्खित्वाव परिभोगो कातव्वो । अपच्चवेक्खित-परिभोगं कत्वा हि कालं कुरुमानो भिक्खुयक्खपेतअत्तभावतो न मुच्चति । अपच्चवेक्खितपरिभोगो नामेस विसपरिभोगसदिसो । विसं हि विस्सासिकेन दिन्नकम्पि अविस्सासिकेन दिन्नकम्पि मारेतियेव । पुब्बेपि विस्सा-सेन दिन्नविसं परिभुञ्जित्वा जीवितक्खयं पत्ताति वत्वा तेहि याचितो अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो महाविभवो सेट्ठी अहोसि । तस्सेको गोपालको किट्टसम्बाधसमये गावो गहेत्वा अरञ्जं पविसित्वा तत्थ गोपल्लिकं कत्वा रक्खन्तो वसति । सेट्ठिनो च कालेन कालं गोरसं आहरति । अथस्स गोपल्लिकाय अविदूरे सीहो निवासं गण्हि । गावीनं सीहसन्तासेन मिलातानं खीरं मन्दं अहोसि । अथ नं एकदिवसं सपिण आदाय आगतं सेट्ठी पुच्छि किन्नुखो सम्म गोपालक ! मन्दं सप्पीति ? सो तं कारणं आचिक्खि ।

अत्थि पन सम्म ! तस्स सीहस्स कत्थचि पटिवद्धोति ?

अत्थि सामि ! एकाय मिगमातुकाय सिद्धि संसग्गोति ।

सक्का पन तं गाहापेतुन्ति ?

सक्का सामीति ।

तेनहि नं गहेत्वा तस्सा नलाटतो पट्टाय सरीरे लोमानि विसेन पुनप्पुनं रजित्वा सुक्खापेत्वा द्वे तयो दिवसे अतिक्कामेत्वा तं मिगमातुकं विस्सज्जेहि । सो तस्सा सिनेहेन सरीरं लेहित्वा जीवितक्खयं पापुणस्सति । अथस्स चम्मनखदाठा चेव वसञ्च गहेत्वा आगच्छेय्यासीति हलाहलविसं दत्वा उय्योजेसि ।

सो गोपालको जालं खिपित्वा उपायेन तं मिगमातुकं गण्हित्वा तथा अकासि । सीहो [२२६] तं दिस्वाव बलवासिनेहेन तस्सा सरीरं लेहित्वा जीवितक्खयं पापुणि गोपालकोपि चम्मादीनि गहेत्वा बोधिसत्तस्स सन्तिकं अगमासि । बोधिसत्तो तं कारणं जत्वा परेसु सिनेहो नाम न कत्तव्वो । एवं बलसम्पन्नोपि सीहो मिगराजा किलेस-वसेन संसगं निस्साय मिगमातुकाय सरीरं लेहन्तो विसपरिभोगं कत्वा जीवितक्खयं पत्तोति वत्वा सम्पत्तपरिसाय धम्मं देसेन्तो इमं गाथमाहः—

न विस्ससे अविस्सत्थे विस्सत्थेपि न विस्ससे,

विस्सासा भयमन्वेति सीहं व मिगमातुकाति ।

तत्रायं सङ्खेपत्थो । यो पुब्बे सहायो अत्तनि अविस्सत्थो अहोसि तस्मिं अविस्सत्थे यो पुब्बेपि निम्भयो अत्तनि विस्सासिको येव तस्मिं विस्सत्थेपि न विस्ससे नेव विस्सासं करेय्य । किं कारणा विस्सासा भयमन्वेति यो हि मित्तेपि अमित्तेपि विस्सासो ततो भयमेव आगच्छति । कथं ? सीहं व मिगमातुका यथा मित्तसन्धववसेन कतविस्सासाय मिगमातुकाय सन्तिका सीहस्स भयं अन्वेतं उपगतं सम्पत्तन्ति अत्थो । यथा वा विस्सासवसेन सीहं मिगमातुका अन्वेतुकामा उपगताति अत्थो ।

एवं बोधिसत्तो सम्पत्तपरिसाय धम्मं देसेत्वा दानादीनि पुञ्जानि कत्वा यथाकम्मं गतो । सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा महासेट्ठी अहमेव अहोसिन्ति ।

विस्सासभाजनजातकं ।

४. लोमहंसजातकं

सो ततो सो सीतोति इदं सत्था वेसालि उपनिस्साय पाठिकारामे विहरन्तो सुनक्खत्तं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

एकस्मिं हि समये सुनक्खत्तो सत्थु उपट्ठाको हुत्वा पत्तचीवरमादाय विचरमानो कोरक्खत्तियस्स धम्मं रोचेन्तो दसवलस्स पत्तचीवरं निव्यादेत्वा कोरक्खत्तियं निस्साय वसित्वा तस्स कालकञ्जकअसुरयोनियं निब्बत्त-
काले गिही हत्वा नत्थि समणस्स गोतमस्स उत्तरिमनुस्सधम्मा अलमरियञ्जाणदस्सविसेसो तक्कपरियाहत्तं
समणो गोतमो धम्मं देसेति वीमंसानुचरितं सयंपटिभाणं यस्स च रव्वस्स अत्थाय धम्मो देसितो सो न निव्याति
तक्करस्स सम्मा दुक्खक्खयायाति वेसालियं तिण्णं पाकारानं अन्तरे विचरन्तो सत्थु अवण्णं भासति ।

अथायस्मा सारिपुत्तो पिण्डाय चरन्तो तस्सेवं अवण्णं भासन्तस्स सुत्वा पिण्डपातपटिक्कन्तो तमत्थं
भगवतो आरोचेसि ।

भगवा—कोधनो सारिपुत्त ! सुनक्खत्तो मोघपुरिसो [३३०] कोधवसेनेवमाह । कोधवसेनापि पन
सो न निव्याति तक्करस्स सम्मादुक्खक्खयायाति वदन्तो अजानित्वापि मय्हं अगुणमेव भासति, नखो पन सो
मोघपुरिसो मय्हं गुणं जानाति, मय्हं हि सारिपुत्त ! छ अभिञ्जा नाम अत्थि, अयम्पि मे उत्तरिमनुस्सधम्मोव
दसवलानि अत्थि चतुवेसारज्जञ्जाणं अत्थि, चतुर्योनिपरिच्छेदकञ्जाणं अत्थि, पञ्चगतिपरिच्छेदकञ्जाणं
अत्थि, अयम्पि मे उत्तरिमनुस्सधम्मोव एवं उत्तरिमनुस्सधम्मसमन्नागतं पन मं यो एवं वेदय्य नत्थि समणस्स
गोतमस्स उत्तरिमनुस्सधम्मोति सो तं वाचं अप्पहाय तं चित्तं अप्पहाय तं दिट्ठि अप्पटिनिस्सज्जित्वा यथाभतं
निक्खत्तो एवं निरयेति एवं अत्तनो विज्जमानउत्तरिमनुस्सधम्मस्स गुणं कथेत्वा सुनक्खत्तो विर सारिपुत्त !
कोरक्खत्तियस्स दुक्करकारिकाय मिच्छातपे पसन्तो । मिच्छातपे पसीदन्तेन पन मयि एव पसीदितुं वट्ठति ।
अहं हि इतो एकनवुतिकप्पमत्थके अत्थि नुखो एत्थ सारोति बाहिरकमिच्छातपं वीमंसन्तो चतुरङ्ग समन्नागतं
ब्रह्मचरियवासं वसिं, तपस्सी सुदं होमि परमतपस्सी लूखो सुदं होमि परमलूखो, जेगुच्छी सुदं होमि परमजेगुच्छी
पविचित्तो सुदं होमि परमपविचित्तोति वत्वा थेरेन याचितो अतीतं आहरि ।

अतीतवत्थु

अतीते एकनवुतिकप्पमत्थके बोधिसत्तो बाहिरकतपं वीमंसिस्सामीति आजीवकपण्डज्जं पण्डजित्वा
अचेलको अहोसि रजोजल्लिको । पविचित्तो अहोसि एकविहारी मनुस्से दिस्वा मिगो विय पलायि । महाविकट-
भोजनो अहोसि वच्छगोमयादीनि परिभुञ्जि । अप्पमाद विहारत्थाय अरञ्जे एकस्मिं भिसनके वनसण्डे
विहासि, तस्मिं विहरन्तो हिमपातसमये अन्तरट्टके रत्तिं वनसण्डा निक्खमित्वा अब्भोकासे विहरित्वा सुरिये
उगगतं वनसण्डं पविसति सो यथा रत्तिं अब्भोकासे हिमोदकेन तित्तो तथेव दिवा वनसण्डतो पग्घरन्तेहि
उदकबिन्दूहि तेमियति एवं अहोरतं सीतदुक्खं अनुभोति । गिम्हानं पन पच्छिमे मासे दिवा अब्भोकासे विहरित्वा
रत्तिं वनसण्डं पविसति, सो यथा दिवा अब्भोकासे आतपेन परिलाहप्पत्तो तथेव रत्तिं निवाते वनसण्डे परिलाहं
पापुणाति, सरीरा सेदधारा मुच्चन्ति । अथस्स पुब्बे अस्सुतपुब्बा अयं गाथा पटिभासिः—

सो ततो सो सीतो एको भिसनके वने ।

नगो न चगिमासीनो एसनापसुतो मुनीति ॥

तत्थ—सो ततोति सुरियसन्तापेन सुततो । सो सीतोति हिमोदकेन सुसीतो सुट्ठुतित्तो । एको भिसनके
वनेति यत्थ पविट्ठानं येभुय्येन लोमानि हंसन्ति तथारूपे भिसनके [३३१] वनसण्डे एको अदुतियोव अहोसिन्ति
दीपेति ।

नगो न चगिमासीनोति नगो च न च अगिमासीनो तथा सीतेन पीलियमांनोपि नेव निवासनपाप्मनं
वा आदियिं न अग्गि आगम्म निसीदिन्ति दीपेति । एसनापसतोति अब्रह्मचरियेपि तस्मिं ब्रह्मचरियसञ्जी हत्वा

ब्रह्मचरियमेवेतं एसना च गवेसना च उपायो ब्रह्मलोकस्सानि एवं तां ब्रह्मचरियेसनाय पमुतो अनुयुत्तो उस्सुक्कं आपन्नो अहोसिन्ति दस्सेति । मुनीति मुनि खो एस मोनत्थाय पटिपन्नोति एवं लोकेन सम्भावितो अहोसिन्ति दीपेति ।

एवं चतुरङ्गसमन्नागतं पन ब्रह्मचरियं चरित्वा बोधिसत्तो मरणकाले^१ उपट्ठितं निरयनिमित्तं दिस्वा इदं वत्तसमादानं । निरत्यक्कन्ति ज्ञात्वा तं खणञ्जो व तं लद्धिं भिन्दित्वा सम्मार्दिट्ठं गहेत्वा देवलोके निव्वत्ति । सत्था इमं धम्मदेमनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । अहं तेन समयेन सो आजीवको अहोसिन्ति ।

लोमहंसजातकं ।

५. महासुदस्सनजातकं

अनिच्चा वत-संखाराति इदं सत्था परिनिब्बाणमञ्चके निपन्नो आनन्दत्थेरस्स मा भन्ते ! भगवा इमस्मिं खुद्दनगरकेत्यादिवचनं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

तथागते जेतवने विहरन्ते सारिपुत्तत्थेरो कत्तिकपुण्णमायं नालकगामके जातोवरके परिनिब्बायि । महामोग्गल्लानो कत्तिकमासस्सेव कालपक्खे आमावसियं परिनिब्बायि । एवं परिनिब्बुते अगसावकयुगे अहम्पि कुसिनारायं परिनिब्बायिस्सामीति अनुपुब्बेन चारिकं चरमानो तत्थ गत्वा यमकसालानमन्तरे उत्तरसीसके मञ्चके अनुट्टानसेय्याय निपज्जि ।

अथ नं आयस्मा आनन्दत्थेरो—मा भन्ते ! भगवा इमस्मिं खुद्दनगरके विसमे उज्जङ्गलनगरके साखानगरके परिनिब्बायि । अञ्जोसं चम्पाराजगहादीनं महानगरानं अञ्जातरस्मिं भगवा परिनिब्बाय तूति याचि ।

सत्था—मा आनन्द ! इमं खुद्दनगरं उज्जङ्गलनगरकं साखानगरकन्ति वदेहि । अहं हि पुब्बे सुदस्सनचक्कवत्तिराजकाले इमस्मिं नगरे वसि तदा इदं द्वादसयोजनिकेन रतनपाकारेण परिकिखत्तं महानगरं अहोमीति वत्ता थेरेण याचितो अतीतं आहरन्तो महासुदस्सनसुत्तन्तं कथेसि ।

अतीतवत्थु

तदा पन महासुदस्सनं सुधम्मपासादा ओतरित्वा अविदूरे सत्तरतनमये तालवने पञ्चात्तस्मिं कप्पि-यमञ्चके दक्खिणेन पस्सेन अनुट्टानसेय्याय निपन्नं दिस्वा इमानि ते देव ! [३३२] चतुरासीतिनगरसहस्सानि कुसावतीराजधानिपमुग्वानि । एत्थ छन्दं करोहीति सुभदाय देविया वुत्ते महासुदस्सनो, मा देवि एवं अवच । अथ खो एत्थ छन्दं विनेहि मा अपेक्खं अकासीति एवं मं ओवदाति वत्ता किं कारणा देवाति पुच्छितो अज्जाहं कालकिरियं करिस्सामीति आह । अथ नं देवी रुदमाना अक्खीनि पुच्छित्वा किच्छेन कसिरेन तथा वत्ता रोदि परिदेवि । सेसापि चतुरासीतिगहस्सा इत्थियो रोदिमु परिदेविमु । अमच्चादिसुपि एकोपि अधि-वासेतु नासक्खि । सव्वेपि रोदिमु ।

बोधिसत्तो—अलं भणे ! मा सदमकत्थाति सव्वे निवारेत्वा देवि आमन्तेत्वा मा त्वं देवि ! रोदि मा परिदेवि । तिलमत्तोपि हि सङ्खारो निच्चो नाम नत्थि सव्वेपि अनिच्चा भेदनधम्मा एवाति वत्ता देवि ओवदन्तो इमं गायमाहः—

अनिच्चा वत सङ्खारा उप्पादवयधम्मिनो ।

उप्पज्जित्वा निरुज्झन्ति तेसं वूपसमो सुखोति ॥

तत्थ—अनिच्चा वत सङ्खाराति भदे ! सुभदादेवि ! यत्तंकेहि पच्चयेहि ममागत्वा कता खन्धाय-तनादयो सङ्खारा सव्वे ते अनिच्चा येव नाम । एतेमु हि रूपं अनिच्चं-पे-विज्जाणं अनिच्चं । चक्खूं अनिच्चं-पे-धम्मा अनिच्चा । यं किञ्चि सविज्जाणकअविज्जाणकरतनं सव्वं तं अनिच्चमेव । इति अनिच्चा वत सङ्खाराति गण्ह । कस्मा ? उप्पादवयधम्मिनोति सव्वेहेते उप्पादधम्मिनो चेव वयधम्मिनो च उप्पज्जन-भिज्जनसभावा येव । तस्मा अनिच्चाति वेदिनत्वा । यस्मा च अनिच्चा तस्मा उप्पज्जित्वा निरुज्झन्तीति उप्पज्जित्वा ठितं पत्वापि निरुज्झन्ति येव । सव्वेवहेते निव्वत्तमाना उप्पज्जन्ति नाम भिज्जमाना निरुज्झन्ति नाम ।

तेसं उप्पादे सति येव ठिति नाम होति, ठितिया सति येव भङ्गो नाम होति । न हि अनुप्पन्नस्स ठिति नापि ठितं अभेज्जनकं नाम अत्थि । इति सव्वेपि संखारा तीणि खणानि^१ पत्वा तत्थ तत्थेव निरुज्झन्ति । तस्मा

सब्बेपिमे अनिच्चा खणिका इत्तरा अद्भुवा पभङ्गुनो चलिता समीरिता अनद्धनिया पयाता तावकालिका निस्सारा तावकालिकट्ठेन मायामरीचिफेणसदिसा । तेसु भदे ! सुभद्दादेवि ! कस्मा सुखसञ्जं उप्पादेसि ? एवं पन गण्ह । तेसं वूपसमो सुखोति सब्बवट्टवूपसमनतो तेसं वूपसमो नाम निब्बाणं तदेवेकं एकन्ततो सुखं अञ्जं सुखं नाम नत्थीति ।

एवं महासुदस्सनो अमतमहानिब्बाणेन देसनाय कूटं गहेत्वा अवसेसस्सापि महाजनस्स दानं देथ, सीलं रक्खथ, उपोसथकम्मं करोथाति ओवादं दत्त्वा देवलोकपरायणो अहोसि । सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा सुभद्दादेवी राहुलमाता अहोसि, परिनायकरतनं राहुलो अहोसि, सेसपरिसा बुद्धपरिसा, महासुदस्सनो पन अहमेवाति ।

महासुदस्सनजातकं । [३३३]

६. तेलपत्तजातकं

समतिक्तिकं ग्रनवसेसकन्ति इदं सत्था सुम्भरट्ठे सेतकं नाम निगमं उपनिस्साय अञ्जातरस्मि वनसण्डे विहरन्तो जनपदकल्याणिसुत्तं आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

तत्रहि भगवा—सेय्यथापि भिक्खवे ! जनपदकल्याणी जनपदकल्याणीति खो भिक्खवे ! महाजनकायो सन्निपतेय्य । सा खो पनेसा जनपदकल्याणी परमपासाविनी नच्चे परमपासावनी गीते जनपदकल्याणी नच्चति गायेतीति खो भिक्खवे ! भीयो सोमत्ताय महाजनकायो सन्निपतेय्य । अथ पुरिसो आगच्छेय्य जीवितुकामो अमरितुकामो सुखकामो दुक्खपटिक्कलो । तमेनं एवं वदेय्युं अयं ते अम्भोपुरिस ! समतित्तियो तेलपत्तो 'अन्तरेन च महासमयं' अन्तरेन च जनपदकल्याणिया हारेतब्बो । पुरिसो च तं दुक्खित्तासिको पिट्ठितो पिट्ठितो अनुबन्धिस्सति यत्थेव नं थोकम्पि छड्डेस्ससि तत्थेव ते सिरं पातेस्सामीति । तं किम्मञ्जाय भिक्खवे ! अपि नु खो सो पुरिसो अमुं तेलपत्तं अमनसिकरित्वा बहिद्धा पमादं आहरेय्याति ?

नोहेतं भन्ते ।

उपमा खो म्यायं भिक्खवे ! कता अत्थस्स विञ्जपनाय । अयमेत्थ अत्थो—समतित्तियोतेल्पत्तोति खो भिक्खवे ! कायगतायेतं सत्तिया अधिवचनं । तस्मातिह भिक्खवे ! एवं सिक्खितब्बं कायगता नो सति भाविता भविस्सति सुसमारद्धानि एवं हि वो भिक्खवे ! सिक्खितब्ब'न्ति इमं जनपदकल्याणिसुत्तं सात्थं सव्यञ्जनं कथेसि ।

तत्रायं सङ्खेपत्थो । जनपदकल्याणीति जनपदमिह कल्याणि उत्तमा छसरीरदोसरहिता पञ्चकल्याणसमन्नागता । सा हि यस्मा नातिदीघा नातिरस्सा नातिकिसा नातिथूला नातिकाली नाच्चोदाता अतिक्कन्ता मानुसकं वण्णं अप्पत्ता दिब्बं वण्णं तस्मा छसरीरदोसरहिता । छविकल्याणं मंसकल्याणं नहारुकल्याणं अट्ठिकल्याणं वयोकल्याणन्ति इमेहि पन पञ्चहि कल्याणेहि समन्नागता पञ्चकल्याणसमन्नागता नाम । तस्सा हि आगन्तुकोभासकिच्चं नाम नत्थि अत्तनो सरीरोभासेनेव द्वादसहत्थे ठाने आलोकं करोति पियङ्गुसमा वा होति सुवण्णसमा वा । अयमस्सा छविकल्याणता । चत्तारो पनस्सा हत्थपादा मुखपरियोसानञ्च लाखा-रसपरिकम्मकता विय रत्तपवालरत्तकम्बलसदिसं होति । अयमस्सा मंसकल्याणता । वीसति नखपत्तानि मंसतो अमुत्तट्ठाने लाखारसपूरितानि विय मुत्तट्ठाने खीरधारसदिसानि । अयमस्सा नहारुकल्याणता । द्वत्तिस दन्ता सुफुस्सिता सुधोतवजिरपन्ति विय खायन्ति अयमस्सा अट्ठिकल्याणता । वीसं वस्ससत्तिकापि पन समाना सोलसवस्सुदेसिका विय होति निब्बलि [३३४] पलिता । अयमस्सा वयोकल्याणता ।

परमपासाविनीति एत्थ पन पसवनं पसवो पवत्तीति अत्थो । पसवोयेव पासावो । परमो पासावो परमपासावो, सो अस्सा अत्थीति परमपासाविनी । नच्चे च गीते च उत्तमपवत्ति सेट्टुकिरिया उत्तममेव नच्चं नच्चति गीतञ्च गायतीति वुत्तं होति । अथ पुरिसो आगच्छेय्याति न अत्तनो रुचिया आगच्छेय्य । अयं पनेत्थ अधिप्पायो । अथेवं महाजनमज्जे जनपदकल्याणिया नच्चमानाय साधुसाधूति साधुकारेसु च अङ्गुलिपोठनेसु चेलुक्खेपेसु च पवत्तमानेसु तं पवत्ति सुत्वा राजा बन्धनागारतो एकं पुरिसं पक्कोसापेत्वा निगतानि भिन्दित्वा समतित्तिकं सुपरिपुण्णं तेलपत्तं तस्स हत्थे दत्त्वा उभोहि हत्थेहि दत्त्वं गाहापेत्वा एकं असिहत्थं पुरिसं आणापेसि एतं गहेत्वा जनपदकल्याणिया समज्जट्ठानं गच्छ यत्थेव चेस पमादं आगम्म एकम्पि तेलबिन्दुं छट्ठेति तत्थेवस्स सीसं छिन्दाति । सो पुरिसो असि उक्खिपित्वा तं तज्जेन्तो तत्थ नेसि । सो मरणभयतज्जितो जीवितुकामताय पमादवसेन तं अमनसिकत्वा सकम्पि अक्खीनि उम्मिलेत्वा तं जनपदकल्याणि न ओलोकेसि । एवं भूतपुब्बमेवेतं वत्थु । सुत्ते पन परिकप्पवसेनेतं वुत्तन्ति वेदितब्बं ।

उपमा खो म्यायन्ति एत्थ पन तेलपत्तस्स ताव कायगतासतिया ओपम्मसंसन्दनं कतमेव । एत्थ पन राजा विय कम्मं दठब्बं, असि विय किलेसा, उक्खित्तासिकपुरिसो विय मारो, तेलपत्तहत्थपुरिसो विय कायगता-सतिभावको विपस्सकयोगावचरो । इति भगवा कामगतासति भावेनुकामेन भिक्खुना तेलपत्तहत्थेन तेन पुरिसेन विय सति अविस्सज्जेत्वा अप्पमत्तेन कायगतासति भावेतव्वाति इमं सुत्तं आहरित्वा दस्सेसि ।

भिक्खू इमं सुत्तं च अत्थं च सुत्वा एवमाहंसु—दुक्करं भन्ते ! तेन पुरिसेन कतं तथारूपिं जनपदकल्याणि अनोलोकेत्वा तेलपत्तं आदाय गच्छन्तेनाति ।

सत्था न भिक्खवे ! तेन दुक्करं कतं, सुकरमेवेतं । कस्मा ? उक्खित्तासिकेन पुरिसेन सन्तज्जेत्वा निव्यमानताय । यं पन पुत्रे पण्डिता अप्पमादेन सति अविस्सज्जेत्वा अभिसङ्खटं दिव्वरूपम्पि इन्द्रियानि भिन्दित्वा अनोलोकेत्वाव गन्त्वा रज्जं पापुणिसु एतं दुक्करन्ति वत्वा तेहि याचितो अतीतं आहरि :—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो तस्स रज्जो पुत्तसतस्स सब्बकनिट्ठो हुत्वा निव्वत्तित्वा अनुपुब्बेन विज्जुत्तं पापुणि । तदा च रज्जो गेहे पच्चेकबुद्धा भुज्जन्ति । बोधिसत्तो तेसं वेय्या-वच्चं करोति । सो एकदिवसं चिन्तेसि, मम बहू भातरो लच्छामि नुखो अहं इमस्मि नगरे कूलसन्तकं रज्ज उदाहु नोति । अथस्स एतदहोसि । पच्चेकबुद्धे पुच्छित्वा जानिस्सामीति । सो [३३५] दुतियदिवसे पच्चेक-बुद्धेसु आगतेसु धम्मकरकं आदाय पानीयं परिस्सावेत्वा पादे धोवित्वा तेलेन मक्खेत्वा तेसं अन्तरे खज्जकं खादित्वा निसिन्नकाले वन्दित्वा एकमन्तं निसिन्नो तमत्थं पुच्छि ।

अथ नं ते अवोचुं—कुमार ! न त्वं इमस्मि नगरे रज्जं लभिस्ससि इतो पन वीसंयोजनसतमत्थके गन्धाररट्ठे तक्कसिलानगरं नाम अत्थि तत्थ गन्तुं सक्कोन्तो इतो सत्तमे दिवसे रज्जं लच्छसि । अन्तरामगे पन महावत्तनि अटवियं परिपन्थो अत्थि, तं अटवि परिहरित्वा गच्छन्तस्स वीसतियोजनसतिको मग्गो होति, उज्जुं गच्छन्तस्स पञ्चासयोजनानि होन्ति सो हि अमनुस्सकन्तारो नाम तत्थ यक्खिणियो अन्तरामगे गामे च सालायो च मापेत्वा उपरि सुवण्णतारकविचित्तवितानं महारहं सेरयं पञ्चापेत्वा नानाविरागपट्टसाणियो परिक्खिपित्वा दिव्वालङ्कारेहि अत्तभावं मण्डेत्वा सालासु निसीदित्वा गच्छन्ते पुरिसे मधुराहि वाचाहि सङ्गण्हित्वा किलन्तरूपा विय पञ्चायथ इधागन्त्वा निसीदित्वा पानीयं पिवित्वा गच्छथाति पक्कोसित्वा आगतानं आसनानि दत्वा अत्तनो रूपलीलुहाविलासेहि पलोभेत्वा किन्नेसवसिके कत्वा अत्तना सद्धि अज्झाचारे कते तत्थेव ते लोहितेन पग्घरन्तेन खादित्वा जीवितक्खयं पापेन्ति । रूपगोचरसत्तं रूपेनेव गण्हन्ति, सद्गोचरं मधुरेन गीतवादितसद्देन गन्धगोचरं दिव्वगन्धेहि रसगोचरं तस्स दिव्वेन नानग्गरसभोजनेन फोटुव्वगोचरं तस्सं उभतो लोहितकूपधानेहि दिव्वसयनेहि गण्हन्ति । सचे इन्द्रियानि भिन्दित्वा ता अनोलोकेत्वा सति पच्चुपट्ट-पेत्वा गमिस्ससि सत्तमे दिवसे तत्थ रज्जं लभिस्ससीति ।

बोधिसत्तो—होतु भन्ते ! तुम्हाकं ओवादं गहेत्वा किं ता ओलोकेस्सामीति पच्चेकबुद्धेहि परित्तं कारा-पेत्वा परित्तवालिकञ्चेव परित्तउदकञ्च परित्तसुत्तञ्च आदाय पच्चेकबुद्धे च मातापितरो च वन्दित्वा निवेसनं गन्त्वा अत्तनो पुरिसे आह—अहं तक्कसिलायं रज्जं गहेतुं गच्छामि, तुम्हे इधेव तिट्ठथाति ।

अथ नं पञ्च जना आहंसु मयम्पि अनुगच्छामाति ।

न सक्का तुम्हेहि अनुगन्तुं अन्तरामगे किर यक्खिणियो रूपादिगोचरे मनुस्से एवञ्चेवञ्च रूपादीहि पलोभेत्वा गण्हन्ति, महापरिपन्थो अहं पन अत्तानं तक्केत्वा गच्छामीति ।

किम्पन ते देव ! मयं तुम्हेहि सद्धि गच्छन्ता अत्तनो पियानि रूपादीनि ओलोकेस्साम ? मयं हि तथेव गमिस्सामाति ।

बोधिसत्तो—तेनहि अप्पमत्ता होथाति ते पञ्च जने आदाय मग्गं पटिपज्जि । यक्खिणियो गामादीनि मापेत्वा निसीदिसु । तेसु रूपगोचरो पुरिसो ता यक्खिणियो ओलोकेत्वा रूपारम्मणे पटिबद्धो थोकं ओहीयि ।

बोधिसत्तो—किं भो ! थोकं ओहीयसीति आह ।

देव ! पादा मे रुजन्ति थोकं सालायं निसीदित्वा आगच्छामीति ।

अम्भो ! [३३६] एता यक्खिणियो मा खो पत्थेसीति ।

यं होति तं होतु न सक्कोमि देवाति ।

तेनहि पञ्चायिस्ससीति इतरे चत्तारो आदाय अगमासि ।

सोपि रूपगोचरको तासं सन्तिकं अगमासि, ता अत्तना सद्धि अज्झाचारे कते तं तत्थेव जीवितक्खयं पापेत्वा पुरतो गन्त्वा अज्झं सालं मापेत्वा नानातुरियानि गहेत्वा गायमाना निसीदिसु । तत्थ सद्गोचरको ओहीयि । तम्पि खादित्वा पुरतो गन्त्वा नानप्पकारे गन्धकरण्डे पूरेत्वा आपणं पसारेत्वा निसीदिसु । तत्थ गन्धगोचरको ओहीयि । तम्पि खादित्वा पुरतो गन्त्वा नानग्गरसानं दिब्बभोजनानं भाजनानि पूरेत्वा ओदनि-कापणं पसारेत्वा निसीदिसु । तत्थ रसगोचरको ओहीयि । तम्पि खादित्वा पुरतो गन्त्वा दिब्बसयनानि पञ्चापेत्वा निसीदिसु । तत्थ फोट्टब्बगोचरको ओहीयि । तम्पि खादिसु । बोधिसत्तो एककोव अहोसि । अथेका यक्खिणि अतिखरमन्तो वतायं अहं तं खादित्वाव निवत्तिस्सामीति बोधिसत्तस्स पच्छतो पच्छतो अग-मासि । अटवियं परभागे वनकम्मिकादयो यक्खिणि दिस्वा—अयं ते पुरतो गच्छन्तो पुरिसो किं होतीति पुच्छिसु ।

कोमारसामिको मे अय्याति ।

अम्भो ! अयं एवं सुकुमारा पुप्फदामसदिसा सुवण्णवण्णा कुमारिका अत्तनो कुलं छड्ढेत्वा भवन्तं तक्केत्वा निक्खन्ता, कस्मा एतं किलभेत्वा आदाय न गच्छसीति ?

नेसा अय्या ! मय्हं पजापती, यक्खिणी एसा । एताय मे पञ्चमनुस्सा खादितानि ।

अय्या ! पुरिसा नाम कुद्धकाले अत्तनो पजापतियो यक्खिणियोपि करोन्ति पेतिनियोपीति । सा गच्छमाना गम्भीणीवण्णं दस्सेत्वा पुन सकिं विजातवण्णं कत्वा पुत्तं अङ्केनादाय बोधिसत्तं अनुबन्धि । दिट्ठदिट्ठा पुरिमनयेनेव पुच्छन्ति । बोधिमन्तोपि तथेव वत्वा गच्छन्तो तक्कसिलं पापुणि । सा पुत्तं अन्तरधापेत्वा एकिक-काव अनुबन्धि । बोधिसत्तो नगरद्वारं गन्त्वा एकस्सा सालाय निसीदि । सा बोधिसत्तरस्स तेजेन पविसित्तुं असक्कोन्ती दिव्वरूपं मापेत्वा सालाद्वारे अट्ठासि । तस्मिं समये तक्कसिलातो राजा उय्यानं गच्छन्तो तं दिस्वा पटिबद्धचित्तो हुत्वा गच्छिमिस्सा सस्सामिकअस्सामिकभावं जानाहीति मनुस्मं पेसेसि ।

सो तं उपसङ्कमित्वा—सस्सामिकासीति पुच्छि ।

आम अय्य ! अयं मे सालायं निसिन्नो सामिकोति ।

बोधिसत्तो—नेसा मय्हं पजापती, यक्खिणी एसा । एताय मे पञ्च मनुस्सा खादितानि आह ।

सा—पुरिसा नाम अय्या ! कुद्धकाले यं इच्छन्ति तं वदन्तीति आह ।

सो उभिन्नम्पि वचनं रज्जो आरोचेसि । राजा अस्सामिकभण्डं नाम राजसन्तकं होतीति यक्खिणि पक्कोसापेत्वा एकहत्थिपिट्ठे निसीदापेत्वा नगरं पदक्खिणं कत्वा पासादं आरुह्य तं अगमहेसिट्ठाने ठपेसि । सो नहातानुलितो सायमासं भुज्जित्वा [३३७] सिरिसयनं अभिरुहि । सापि यक्खिणी अत्तनो उपकप्पनकं आहारं आहरित्वा अलङ्कतपटियत्ता सिरिमयने रज्ज्वा सद्धि निपज्जित्वा रज्ज्वा रतिवगेन मुखसमणितस्स निपन्नकाले एकेन पस्सेन परिवत्तित्वा परोदि । अथ नं राजा—किं भदे ! रोदमीति पुच्छि ।

देव ! अहं तुम्हेहि मग्गे दिस्वा आनीता । तुम्हाकञ्च गेहे बहू इत्थियो साहं सपत्नीनं अन्तरे वस-माना कथाय उप्पन्नाय को तुय्हं मातरं वा पितरं वा गोत्तं वा जातिं वा जानाति ? त्वं अन्तरामग्गे दिस्वा आनीता नामाति सीसे गहेत्वा निष्पीलियमाना विय मङ्कु भविस्सामि । सचे तुम्हे सकलरज्जे इस्सरियञ्च आणञ्च मय्हं ददेय्याथ कोचि मय्हं चित्तं कोपेत्वा कथेत्तुं न सक्खिस्सतीति ।

भदे ! मय्हं सकलरट्ठवासिनो न किञ्चि होन्ति । नाहं एतेसं सामिको ये पन राजाणं कोपेत्वा अक-त्तब्बं करोन्ति नेसरज्जो वाहं सामिको इमिना कारणेन न सक्का तुय्हं सकलरट्ठे इस्सरियञ्च आणञ्च दातुन्ति ।

तेनहि देव ! सचे रट्ठे वा नगरे वा आणं दातुं न सक्कोथ अन्तोनिवेसने अन्तोवलञ्जनकानं उपरि मम वसे वत्तन्त्थाय आणं देय देवाति ।

राजा दिब्बफोट्टब्बेन बद्धो तस्सा वचनं अतिक्कमित्तुं असक्कोन्तो साधु भदे ! अन्तोवलञ्जनकेसु तुय्हं आणं दम्मि, त्वं एते अत्तनो वसे वत्तापेहीति आह । सा साधूति सम्पटिच्छित्वा रज्ज्वा निदं ओक्कन्तकाले

यक्खनगरं गन्त्वा यक्खे पक्कोसित्वा अत्तनो राजानं जीवितक्खयं पापेत्वा अट्टिमत्तं सेसेत्वा सब्बं नहारुक्खम्ममंस-
जोहितं खादि । अवसेसयक्खा महाद्वारतो पट्ठाय अन्तोनिवेसने कुक्कुरकुक्कुरे आदि कत्वा सब्बे खादित्वा
अट्टिसेसे अकंसु । पुनरिद्वसे द्वारं यथापिहितमेव दिस्वा मनुस्सा फरसूहि कवाटानि कोट्टेत्वा अन्तो पविसित्वा
सब्बं निवेसनं अट्टिकपरिपुण्णं दिस्वा सच्चं वत सो पुरिसो आह नायं मय्हं पजापती यक्खिणी एसाति । राजा
न किञ्चि अजानित्वाव तं गेहे अत्तनो भरियं अकासि । सा यक्खे पक्कोसित्वा सब्बं जनं खादित्वा गता भवि-
स्सतीति आहंसु ।

बोधिसत्तोपि तं दिवसं तस्सा येव सालायं परित्तवालिकं सीसे पक्खिपित्वा परित्तसुत्तं परिक्खिपित्वा
खगं गहेत्वा ठितकोव अरुणं उट्ठापेसि । मनुस्सा सकलराजनिवेसनं सोधेत्वा हरितुपलितं कत्वा उपरि गन्धेहि
विलिम्पित्वा पुष्पानि विकिरित्वा पुष्पदामानि ओसारत्वा धूपं दत्वा नवमाला बन्धित्वा सम्मन्तयिसु—भो !
हिय्यो सो पुरिसो दिब्बरूपं मापेत्वा पच्छतो आगच्छन्ति यक्खिणि इन्द्रियाणि भिन्दित्वा ओलोकनमत्तम्पि न
अकासि, सो अतिविय उलारसत्तो धितिमा ज्ञाणसम्पन्नो तादिसे पुरिसे रज्जं अनुसासन्ते सब्बं रट्ठं सुखितं भवि-
स्सति तं राजानं करोमाति । अथ सब्बे अमच्चा च नागरा च एकच्छन्दा हत्वा बोधिसत्तं उपसङ्कमत्वा देव !
मुम्हे इमं रज्जं कारेथाति वत्ता नगरं पवेसेत्वा रतनरासिम्हं ठपेत्वा अभिसिञ्चित्वा तक्कसिलाराजानं अकंसु ।

सो चत्तारि अगतिगमनानि वज्जेत्वा दस राजधम्मे अकोपेत्वा धम्मेन रज्जं कारेन्तो दानादीनि पुञ्ञानि
कत्वा यथाकम्मं गतो । सत्था इमं अतीतं आहरित्वा अभिसम्बुद्धो हत्वा इमं गाथमाह :—

समतित्तिकं अनवसेसकं तेलपत्तं यथा परिहरेय्य ।

एवं सचित्तमनुरक्खे सति या पत्थयानो दिसं अगतपुब्बन्ति ॥

तत्थ—समतित्तिकन्ति अन्तो मुखवट्टिलेखं पापेत्वा सम्भरितं । अनवसेसकरित् अनवसिञ्चनकं
अपरिस्सावनकं कत्वा । तेलपत्तन्ति पक्खित्तिलतेलपत्तं । परिहरेय्याति हरेय्य आदाय गच्छेय्य । एवं
सचित्तमनुरक्खेति तं तेलभरितं पत्तं विप्र अत्तनो चित्तं कायगतासतिया गोचरे चेव सम्पयुत्तसतिया चाति उभिन्न-
मन्तरे पक्खिपित्वा यथा मुहुत्तम्पि बहिद्धा गोचरे न विकिपति तथा पण्डितो योगावचरो रक्खेय्य गोपेय्य ।
किं कारणा ? एतस्स हिः—

दुन्निगहस्स लहुनो यत्थ कामनिपातिनो ।

चित्तस्स दमथो साधु चित्तं दन्तं सुखावहं ॥

तस्माः— सुदुद्दसं सुनिपुणं यत्थ कामनिपातिनं ।

चित्तं रक्खेथ मेधावी चित्तं गुत्तं सुखावहं ॥

इदं हिः— दूरङ्गमं एकचरं असरीरं गुहासयं ।

ये चित्तं सञ्जामेस्सन्ति मोक्खन्ति मारबन्धना ॥

इतरस्स पनः— अनवट्ठित्तित्तस्स सद्धम्मं अविजानतो ।

परिप्लवप्पसादस्स पञ्ञा न परिपूरति ॥

थिरकम्मट्टानसहायस्स पनः—

अनवस्सुतचित्तस्स अनन्वाहतचेतसो ।

पुञ्ञापपापहीनस्स नत्थि जागरतो भयं ॥

तस्मा एतं— फन्दनं चपलं चित्तं दूरक्खं दुन्निवारयं ।

उजुं करोति मेधावी उसुकारोव तेजजं ॥

एवं उजुं करोन्तो सचित्तमनुरक्खे । पत्थयानो दिसं अगतपुब्बन्ति इमस्मिं कायगतासतिकम्मट्टाने कम्मं
आरभित्वा अनमतगगे संसारे अगतपुब्बं दिसं पत्थेन्तो पिहेन्तो वृत्तनयेनेव सकं चित्तं रक्खेय्याति अत्थो । का
पनेसा विसा नाम ?—[३३६]

मातापिता दिसा पुब्बा आचरिया दक्खिणा दिसा ।

एतस्मा निया एत्थं मिज्जायत्ता च एतस्मा ।

दासकम्मकरा हेट्ठा उद्धं समणब्राह्मणा,
एता दिसा नमस्सेय्य अप्पमत्तो^१ कुले गिहीति^२ ।

एत्थ ताव पुत्तदारादयो दिसाति वुत्ता—

दिसा चतस्सो विदिसा चतस्सो
उद्धं अधो दसदिसा इमायो,
कतमं दिसं तिट्ठति नागराजा
यमद्दसा सुपिने छब्बिसाणन्ति ।^३

एत्थ पुरत्थिमादिभेदा दिसाव दिसाति वुत्ता ।

आगारिनो अन्नदपानवत्थदा
अव्हायिकानम्पि दिसं वदन्ति,
एसा दिसा परमा सेतकेतु !
यं पत्वा दुक्खी सुखिनो भवन्तीति ।^४

एत्थ पन निब्बाणं दिसाति वुत्तं । इधापि तदेव अधिप्पेतं । तं हि खयं विरागन्ति आंदीहि दिस्सति,
तस्मा दिसाति वुच्चति । अनमतग्गे पन संसारे केनचि बालपुथुज्जनेन सुपिनेनपि अगतपुब्बताय अगतपुब्बा
दिसा नामाति वुत्तं । तं पत्थयन्तेन कायगतासतिया योगो करणीयोति । एवं सत्था निब्बाणेन देसनाकूटं
गहेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा राजपरिसा बुद्धपरिसा अहोसि, रज्जप्पत्तकुमारो पन अहमेवाति ।

तेलपत्तजातकं ।

७. नामसिद्धिजातकं

जीवकञ्च मतं विस्मयति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो एकं नामसिद्धिकं भिक्षुं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्यु

एको किर कुलपुत्तो नामेन पापको नाम । सो सासने उरं दत्वा पञ्चजितो भिक्षूहि एहावुसो पापक ! तिट्ठावुसो पापकाति बुच्चमानो चिन्तेसि लोके पापकं नाम लामकं कालकण्ठिमूतन्ति बुच्चति, अञ्जं मङ्गल-पटिसंयुत्तं नामं आहरापेस्सामीति । सो आचरियुपज्झाये उपसङ्कमत्वा—भन्ते ! मय्हं नामं अवमङ्गलं अञ्जाम्मे नामं करोथाति आह ।

अथ नं ते एवमाहंमु—आवुसो ! नामं नाम पण्णत्तिमत्तं । नामेन काचि अत्थसिद्धि नाम नत्थि । अत्तनो नामेनेव [३४०] सन्तुट्ठो होहीति ।

सो पुनप्पुनं याचियेव । तस्सायं नामसिद्धिकभावो भिक्षुसङ्घे पाकटो जानो । अथेकदिवसं धम्म-सभायं सन्निसिन्ना भिक्षू कथं समुट्ठापेमु—आवुसो ! अमुको किर भिक्षु नामसिद्धिको मङ्गलं नामं आहरा-पेतीति । अथ सत्या धम्मसभं आगन्त्वा काय नुत्थ भिक्षवे ! एतग्गि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति बुत्ते न भिक्खवे ! सो इदानीव नामसिद्धिको पुञ्चेपि सो नामसिद्धिको येवानि वत्ता अतीतं आहरिः—

अतीतवत्यु

अतीते तक्कमिलायं बोधिसत्तो दिसापामोक्खो आचरियो हुत्वा पञ्चमाणवकसतानि मन्ने वाचेसि । तस्सेको माणवो पापको नाम नामेन । सो एहि पापक ! याहि पापकाति बुच्चमानो चिन्तेसि-मय्हं नामं अव-मङ्गलं अञ्जं नामं मे आहरापेस्सामीति । सो आचरियं उपसङ्कमत्वा—आचरिय ! मय्हं नामं अव-मङ्गलं अञ्जाम्मे नामं करोथाति आह ।

अथ नं आचरियो अवोच—गच्छ तात ! जनपदचारिकं चरित्वा अत्तनो अभिरुचितं एकं मङ्गलं नामं गहेत्वा एहि, आगतस्स ते नामं परिवत्तेत्वा अञ्जं नामं करिस्सामीति ।

सो साधूति पाथेय्यं गहेत्वा निक्खन्तो गामेन गामं चरन्तो एकं नगरं पापुणि । तत्थ चेको पुरिसो कालकतो जीवको नाम नामेन । सो तं ज्ञातिजनेन आलाहनं नीयमानं दिस्वा—किनामको नामेस पुरिसोति पुच्छि ।

जीवको नामेसोति ।

जीवकोपि मरतीति ?

जीवकोपि मरति अजीवकोपि मरति । नामं नाम पण्णत्तिमत्तं । त्वं बालो मञ्जेति ।

सो तं कथं गुत्वा नामे मज्झतो हुत्वा अन्तो नगरं पाविसि । अथेकं दामि भति अददमानं सामिका द्वारे निसीदापेत्वा रज्जुया पहरन्ति । तस्सा च धनपालीति नामं होति । सो अन्तरवीथिया गच्छन्तो तं पोथियमानं दिस्वा—कस्मा इमं पोथेयाति पुच्छि ।

भति दातु न सक्कोतीति ।

किम्पनस्सा नामन्ति ?

धनपाली नामाति ।

नामेन धनपाली समानापि भतिमत्तं दातुं न सक्कोतीति ?

धनपालियोपि अधनपालियोपि दुग्गता होन्ति । नामं नाम पण्णत्तिमत्तं । त्वं पन बालो मञ्जेति ।

सो नामे मज्झततरो हुत्वा नगरा निक्खम्ममगं पटिपन्नो अन्तरामगगे मगमूलहं पुरिसं दिस्वा—

अम्भो ! किं करोन्तो विचरसीति पुच्छि ।

मगमूलहोम्हि सामीति ।

किम्पन ते नामन्ति ?

पन्थको नामाति ।

पन्थकापि मग्गमूलहा होन्तीति ?

पन्थकोपि अपन्थकोपि मग्गमूलहो होति । नामं नाम पण्णत्तिमत्तं । त्वं बालो मञ्जोति ।

सो नामे अतिमञ्जुतो हुत्वा बोधिसत्तस्स सन्तिकं गत्वा किं तात ! नामं रोचेत्वा आगतोसीति च वुत्ते—आचरिय ! जीवकापि नाम मरन्ति अजीवकापि, धनपालियोपि दुग्गता होन्ति अधनपालियोपि, पन्थकापि [३४१] मग्गमूलहा होन्ति अपन्थकापि । नामं नाम पण्णत्तिमत्तं । नामेन सिद्धिं नत्थि । कम्मेनेव सिद्धि । अलं मय्हं अञ्जो न नामेन । तदेव मे नामं होतूति आह ।

बोधिसत्तो तेन दिट्ठञ्च कतञ्च संसन्देत्वा इमं गाथमाहः—

जीवकञ्च मतं दिस्वा धनपालिञ्च दुग्गतं,

पन्थकञ्च वने मूलहं पापको पुनरागतोति ।

तत्थ पुनरागतोति इमानि तीणि कारणानि दिस्वा पुन आगतो । रकारो सन्धिवसेन वुत्तो ।

सत्था इमं अतीतं आहरित्वा न भिक्खवे ! इदानेवेम नामसिद्धिको पुद्बेगेम नामसिद्धिको येवाति वत्वा जातकं समोधानेसि । तदा नामसिद्धिको इदानिपि नामसिद्धिको येव आचरियपरिसा बुद्धपरिसा । आचरियो पन अहमेवाति ।

नामसिद्धिजातकं ।

८. कूटवाणिजजातकं

साधु खो पण्डितो नामाति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो एकं कूटवाणिजं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्यु

सावत्थियं हि द्वे जना एकतोव वणिज्जं करोन्ता भण्डं सकटेनादाय जनपदं गत्वा लद्धलाभा पच्चागमिषु । तेसु कूटवाणिजो चिन्तेसि—अयं बहू दिवसे दुग्भोजनेन चैव दुःखसेय्याय च किलन्तो इदानी अत्तनो घरे नानगरेसेहि यावदत्थं सुभोजनं भुञ्जित्वा अजीरकेन मरिस्सति अथाहं इमं सब्बं भण्डं तयो कोट्टासे कत्वा एकं तस्स दारकानं दस्सामि द्वे कोट्टासे अत्तनो गहेस्सामीति । सो अज्ज भाजेस्साम स्वे भाजेस्सामाति भण्डं भाजेतुं न इच्छि । अथ नं पण्डितवाणिजो अकामकं निष्पीलेत्वा भाजापेत्वा विहारं गत्वा सत्थारं वन्दित्वा कतपटिसन्थारो अतिपपञ्चो ते कतो इधागन्त्वापि चिरेन वृद्धपट्टानं आगतोसीति वुत्ते तं पवर्त्ति भगवतो आरोचेसि ।

सत्या—न खो सो उपासक ! इदानीव कूटवाणिजो पुब्बेपि कूटवाणिजो येव इदानी पन तं वञ्चेतु कामो जातो पुब्बे पण्डितेपि वञ्चेतुं उम्सहीति वत्वा तेन याचितो अतीतं आहरि—

अतीतवत्यु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो वाराणसियं वाणिजकुले निव्वति । नामगहणदिवसे चस्स पण्डितोति नाममकंमु । सो वयणत्तो अज्जो न वाणिजेन सद्धि एकतो हुत्वा वणिज्जं करोति । तस्स अतिपण्डितोति नामं अहोसी । ते वाराणसितो पञ्चहि मकट [३४२] मनेहि भण्डं आदाय जनपदं गत्वा वणिज्जं कत्वा लद्धलाभा पुन वाराणसि आगमिषु । अथ नेसं भण्डभाजनकाले अतिपण्डितो आह—मया द्वे कोट्टासा लद्धव्वाति ।

किं कारणा ?

त्वं पण्डितो, अहं अतिपण्डितो । पण्डितो एकं लद्ध अरहति । अति पण्डितो द्वेति ।

ननु अम्हाकं द्विन्नमि भण्डमूलमि गोणादयोपि समसमायेव । कस्मा त्वं द्वे कोट्टासे लद्धं अरहसीति ? अतिपण्डितभावेनाति ।

एवं ते कथं वद्धेत्वा कलहं अकंमु । ततो अतिपण्डितो अत्येको उपायोति चिन्तेत्वा अत्तनो पितरं एकस्मि सुसिररुक्खे पवेसेत्वा त्वं अम्हेसु आगतेसु अतिपण्डितो द्वे कोट्टासे लद्धं अरहतीति वेदय्यासीति वत्वा बोधिसत्तं उपसङ्कमिक्त्वा सम्म ! मय्हं द्विन्नं कोट्टासानं युत्तभावं वा अयत्तभावं वा एमा रुक्खदेवता जानाति । एहि नं पुच्छिस्सामाति तं तत्थ नेत्वा—अय्ये ! रुक्खदेवते ! अम्हाकं अट्ठं पच्छिन्दति आह ।

अयस्स पिता सरं परिवत्तेत्वा तेनहि कथेथाति आह ।

अय्ये ! अयं पण्डितो अहं अतिपण्डितो, अम्हेहि एकतो वोहारो कतो, तत्थ केन किं लद्धव्वन्ति ? पण्डितेन एको कोट्टासो, अतिपण्डितेन द्वे कोट्टासा लद्धव्वाति ।

बोधिसत्तो एवं विनिच्छित्तं अट्ठं सुत्वा इदानी देवताभावं वा अदेवताभावं वा जानिस्सामीति पलालं आहरित्वा सुसिरं पूरेत्वा अग्निं अदासि । अतिपण्डितस्स पिता जालाय फुट्टुकाले अद्वज्जभायेन सरीरेन उपरि आरुह्वा साखं गहेत्वा ओलम्बन्तो भूमियं पतित्वा इमं गाथमाह—

साधु खो पण्डितो नाम नत्वेव अतिपण्डितो,

अतिपण्डितेन पुत्तेन पनम्हि उपकूलितोति^१ ।

तत्थ—साधु खो पण्डितो नामाति इमस्मि लोके पण्डितेन समन्नागतो कारणाकारणञ्चु पुगलो साधु सोभनो । अतिपण्डितोति नाममत्तेन अतिपण्डितो कूटपुरिसो नत्वेव वरं । पनम्हि उपकूलितोति थोकेनम्हि भामो अद्वज्जभाकोव मुत्तोति अत्थो ।

ते उभोपि मज्जे भिन्दित्वा समञ्जोवकोट्टासं गण्हित्वा यथाकम्मं गता । सत्था पुब्बेपेस
कूटवाणिजो येवाति वत्वा इमं अतीतं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा कूटवाणिजो पच्चुप्पन्नो कूट-
वाणिजोव, पण्डितवाणिजो पन अहमेवाति ।

कूटवाणिजजातकं ।

६. परोसहस्रजातकं

परोसहस्रसम्पि समागतानन्ति इदं सत्त्वा जेतवने विहरन्तो पुथुज्जनपुच्छकं पञ्चं आरब्ध कथेसि ।
वत्थुं सरभङ्गजातके आवीभविस्मति । [३४३]

पञ्चपन्नवत्थु

एकस्मिं पन समये भिक्खू धम्मगभायं सन्निपतिता आवुसो ! दमवलेन सङ्घितेन कथितं धम्मसेना-
पतिमारिपुत्तो वित्थारेन व्याकरोति थेरस्म गुणकथाय निमीदिमु । सत्त्वा आगत्वा काय नुत्थ भिक्खवे !
एतरहि कथाय सन्निमिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामानि वुत्ते न भिक्खवे ! सारिपुत्तो इदमेव मया सङ्घितेन
मासितं वित्थारेन व्याकरोति, पुब्बेपि व्याकासि येवानि वत्त्वा अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेत्ते बोधिसत्तो उदिच्चन्नाह्मणकुले निव्वत्तित्वा तक्कमिलायं
सव्वसिप्पानि उग्गणिहत्वा कामे पढाय इमिपव्वज्जं पव्वजित्वा पञ्चाभिञ्जा अट्टममापत्तियो निव्वत्तेत्वा
हिमवन्ते विहासि । परिवारोपरिस्स पञ्चतापससतानि अहेसुं । अथस्स जेट्टन्तेवासो वस्सारत्तसमये उपडढं
इसिगणं आदाय लोणम्मिल्लमेवनत्थाय मनुस्सपथं अगमासि । तदा बोधिसत्तस्स कालकिरियसमयो जातो ।
अथ तं अन्तेवासिका आचरिय, कतरो वो गुणो लद्धोति अधिगमं पुच्छिमु । सो नत्थि किञ्चीति वत्त्वा
आभस्सरब्रह्मलोके निव्वत्ति । बोधिसत्ता हि अरूपसमापत्तित्वाभिन्नो हत्वापि अभव्वट्ठानत्ता आरूपे न
निव्वत्तन्ति । अन्तेवासिका आचरियस्स अधिगमो नत्थीति आत्ताहने सक्कारं न करिमु ।

जेट्टन्ते वागिको आगत्वा कहं आचरियोति पुच्छित्वा कालकतोति सुत्वा—अपि आचरियं अधिगमं
पुच्छित्थाति आह ।

आम पुच्छिम्हाति ।

किं कथेसीति ?

नत्थि किञ्चीति तेन वुत्तं अथस्स अम्हेहि सक्कारो न कतोति आहंसु ।

जेट्टन्तेवासिको—तुम्हे आचरियस्स वचनत्थं न जानित्थ, आकिञ्चञ्जायतनसमापत्तिलाभी आचरि-
योति आह ।

ते तस्मिं पुण्णुनं कथेन्तेपि न सद्दिहमु । बोधिसत्तो तं कारणं जत्त्वा अन्धवाला मम जेट्टन्तेवासिकस्स
न सद्दिहन्ति इमं तेसं कारणं पाकटं करिस्सामीति ब्रह्मलोका आगत्वा अस्समपदमत्थके महत्तेनानुभावेन आकासे
ठत्वा जेट्टन्तेवासिकस्स पञ्जानुभावं वण्णेन्तो इमं गाथमाहः—

परोसहस्रसम्पि समागतानं कन्देय्युं ते वस्ससत्तं अपञ्जा,

एकोव सेय्यो पुरिसो सपञ्जाो यो भासितस्स विजानाति अत्थन्ति ।

तत्थ—परोसहस्रसम्पोति अतिरेकसहस्रसम्पि । समागतानन्ति सन्निपतितानं भासितस्स अत्थं जानितुं
असक्कोन्तानं बालानं । कन्देय्युं ते वस्ससत्तं अपञ्जाति ते एवं समागता अपञ्जा इमे बाला तापसा विय
वस्ससत्तम्पि वस्ससहस्रसम्पि रोदेय्युं परिदेवेय्युं रोदमानापि पन अत्थं वा कारणं वा नेव जानेय्युन्ति दीपेति ।
एकोव सेय्यो पुरिसो सपञ्जाोति एवरूपानं [३४४] बालानं परोसहस्रसतोपि एको पण्डितपुरिसोव सेय्यो
वरतरति अत्थो । कीदिसो सपञ्जाोति ? यो भासितस्स विजानाति अत्थन्ति स्वायं जेट्टन्तेवासिको वियाति ।

एवं महासत्तो आकासे ठितोव धम्मं देसेत्वा तापसगणं बुज्झापेत्वा ब्रह्मलोकमेव गतो । तेपि तापसा
जीवितपरियोसाने ब्रह्मलोकपरायणा अहेसुं । सत्त्वा इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा
जेट्टन्तेवासिको सारिपुत्तो अहोसि । महाब्रह्मा पन अहमेवाति ।

१०. असातरूपजातकं

असातं सातरूपेणाति इदं सत्त्वा कुण्डियनगरं उपनिस्साय कुण्डधानवने विहरन्तो कोलियराजधीतरं सुप्पवासं उपासिकं आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

सा हि तस्मिं समये सत्तवस्सानि कुच्छिन्ना गम्भं परिहरित्वा सत्ताहं मूलहगम्भा अहोसि । अधिमत्ता वेदना वर्तिसु । सा एवं अधिमत्तवेदनाभितुन्नापि सम्मासम्बुद्धो वत सो भगवा यो एवरूपस्स दुक्खस्स पहाणाय धम्मं देमेति । सुपटिप्पसो वतस्स भगवतो सावकमङ्घो यो एवरूपस्स दुक्खस्स पहाणाय पटिप्पसो । सुसुखं वत निव्व्राणं यत्थेव रूपं दुक्खं नत्थीति इमेहि तीहि वितक्केहि दुक्खं अधिवासेमि । मा सामिकं पक्कोसापेत्वा तं च अत्तनो पव्वति वन्दनसामनं च आगेचेत्तं मत्थु मत्तिकं पेमेमि ।

मत्था वन्दनसामनं सुत्वाव सुखिनी होतु सुप्पवामा कोलियधीता सुखिनी अरोगा अरोगं पुत्तं विजाय-
तूति आह । सहवचनेनेव पन भगवतो सुप्पवासा कोलियधीता सुखिनी अरोगा अरोगं पुत्तं विजायि । अथस्सा सामिको गेहं गन्त्वा तं विजातं दिस्वा अच्छरियं वत भोति अतिविय तथागतस्मानुभावोति अच्छरियम्भुतचित्त-
जातो अहोमि । सुप्पवासापि पुत्तं विजायित्वा सत्ताहं बुद्धपम्वस्स सङ्खस्स महादानं दानुकामा पुन निमन्त-
णत्थाय तं पेमेति ।

तेन खो पन ममयेन महामोग्गल्लानम्म उपट्ठाकेन बुद्धपमुखो मङ्घो निमन्तिनो होति । मत्था सुप्प-
वासाय दानस्स ओकामदानत्थाय थेरं तस्स मत्तिकं पेमेत्वा तं सञ्जापापेत्वा सत्ताहं तस्मा दानं पटिग्गहेमि
सद्धिं भिक्खुमङ्घेन । मत्तमे पन दिवसे सुप्पवामा पुत्तं मीवलीकुमारं मण्डेत्वा मत्थारञ्चेव भिक्खुमङ्घञ्च
वन्दापेमि । तस्मि पटिपाटिया मारिपुत्तत्थेरस्स मत्तिकं नीते थेरो तेन सद्धि—कच्चि ते मीवलि ! खमनी-
यन्ति पटिमत्थारं अकामि ।

सो—कुतो मे भन्ते ! [३४५] सुखं स्वाहं सत्तवस्सानि लोहकुम्भियं वसिन्ति थेरेन सद्धि एवरूपं
कथं कथेसि ।

सुप्पवासा तस्स वचनं सुत्वा सत्ताहजातो मे पुत्तो अनुबुद्धेन धम्मसेनापतिना सद्धि मन्तेतीति सोमनस्स-
प्पत्ता अहोसि ।

सत्था—अपिनु सुप्पवासे ! अञ्जोपि एवरूपे पुत्ते इच्छसीति आह ।

सत्ते भन्ते ! एवरूपे अञ्जो सत्त पुत्ते लभेय्यं इच्छेय्यामेवाहन्ति ।

सत्था उदानं उदानेत्वा अनुमोदनं कत्वा पक्कामि । मीवलीकुमारोपि खो सत्तवस्समककाले येव मामने
उरं दत्वा पव्वजित्वा परिपुण्णवस्सो उपसम्पदं लभित्वा पुञ्जावा लाभगयसग्गण्यन्तो हत्वा पठाव उन्नादेत्वा
अरहन् पत्वा पुञ्जावल्लानं अन्तरे एतदग्गट्टानं पापुणि । अथेक दिवसं भिक्खू धम्ममभायं मन्निपत्तिन्वा—
आवुमो ! मीवलिन्तेरो नाम एवरूपो महापुञ्जो पत्थितपत्थनो पच्छिमभविक्कमतो सत्तवस्सानि लोह-
कुम्भियं वमि सत्ताहं मूलहगम्भभावं आपज्जि अहो ! माता महन्तं दुक्खं अनुभावि, किन्नुयो कम्मं अकम्मति
कथं समुत्तापेमं ।

मत्था तत्थगन्त्वा कायतुत्थ भिक्खवे ! एतर्हि कथाय मन्निमिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते
भिक्खवे ! मीवलिन्तो महापुञ्जावतो च सत्तवस्सानि लोहकुम्भियं निवामो च सत्ताहं मूलहगम्भभावपत्ति
च अत्तना कत्तकम्ममूलकाव, तस्मा सुप्पवामायपि सत्त वस्सानि कुच्छिन्ना गम्भपरिहरणं दुक्खञ्च सत्ताहं
मूलहगम्भदुक्खञ्च अत्तना कत्तकम्ममूलकमेवानि वत्ता तेहि याचिनो अनीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीने बागणसियं ब्रह्मदने रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो तस्म अगमहेसिया कुच्छिस्मि पटिसन्धि गण्हित्वा वयप्पत्तो तवकमिलायं मव्वसिप्पानि उग्गण्हित्वा पितु अचचयेन रज्जं पत्वा धम्मेन रज्जं कारेसि । तस्मि समये कोसलमहागजा महन्नेन वलेन आगन्त्वा बाराणसि गहेत्वा तं राजानं मारेत्वा तस्मेव अगमहेसि अत्तनो अगमहेसि अकासि । बागणसिरज्जो पन पुत्तो पितु मरणकाले निद्धमनद्वारेन पनायित्वा बलं संहरित्वा बाराणसि आगन्त्वा अविदूरे निसीदित्वा तस्म रज्जो पण्णं पेसेसि—रज्जं वा देतु युद्धं वाति ।

सो युद्धं देसीति पटिपण्णं पेसेसि ।

राजकुमारस्म पन माना तं सासनं सुत्वा युद्धेन कम्मं नत्थि^१ सव्वदिसासु सञ्चारं पच्छिन्दित्वा बाराणसी-नगरं परिचारेनु, ततो दारुदकभत्तपरिक्खयेन किलन्तमनुस्सं नगरं विनाव युद्धेन गण्हिस्समीति पण्णं पेसेसि ।

सो मानु सामनं सुत्वा सत्तदिवसानि सञ्चारं पच्छिन्दित्वा नगरं रुन्धि । नागरा सञ्चारं अलभमाना सत्तमे दिवसे तस्म रज्जो सीमं गहेत्वा [३४६] कुमारस्म अदंसु । कुमारो नगरं पविमित्वा रज्जं गहेत्वा आयुपरियोमाने यथाकम्मं गतो, सो एतरहि सत्त दिवसानि सञ्चारं पच्छिन्दित्वा नगरं रुन्धित्वा गहितकम्म-निस्सन्देन सत्तवम्मानि लोहकुम्भियं वसित्वा सत्ताहं मूलहगवभावं आपज्जि । यं पन सो पदुमुत्तरपादमूले लाभीनं अगो भवेय्यन्ति महादानं दत्वा पत्थनं अकासि यच्च विपम्मीवुद्धकाले नागरेहि सिद्धिं सहस्सगघनकं गुलदाधि दत्वा पत्थनं अकासि तस्मानुभावेन लाभीनं अगो जातो मुप्पवासापि नगरं रुन्धित्वा गण्ह तातानि पेसित-भावेन सत्त वस्सानि कुच्छिता गवभं परिहरित्वा सत्ताहं मूलहगवभा जातानि । सत्था इमं अतीतं आहरित्वा अभिमम्बुद्धो हुत्वा इमं गाथमाहः—

असातं सातरूपेन पियरूपेन अण्णियं,

दुक्खं मुखस्स रूपेन पमत्तमतिवत्ततीति ।

तत्थ असातं सातरूपेनाति अमधुरमेव मधुरपतिरूपकेन । पमत्तमतिवत्ततीति असातं अण्णियं दुक्खन्ति एतं तिविधम्पि एतेन सातरूपादिना आकारेन मतिविप्पवासवमेन पमत्तं पुग्गलं अतिवत्तति अभिभवति अज्झो-त्थरतीति अत्थो ।

इदं भगवता यच्च ते मातापुत्ता इमिना गवभपरिहरणं गवभवाससङ्घातेन असातादिना पुव्वे नगरं रुन्धनसातादिपतिरूपकेन अज्झोत्थटा यच्च इदानि सा उपासिका पुनपि सत्तक्खत्तुं एवरूपं असातं अण्णियं दुक्खं पेमवत्थुभूतेन पुत्तसङ्घातेन सातादिपतिरूपकेन अज्झोत्थटा हुत्वा तथा अवच, तं सव्वम्पि सन्धाय वुत्तन्ति वेदितव्वं । सत्था पन इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा नगरं रुन्धित्वा रज्जप्पत्तकुमारो सीवली अहोसि, माता सुप्पवासा, पिता पन बाराणसिराजा अहमेवाति ।

असातरूपजातकं ।

११. परोसतवग्गवण्णना

१. परोसतजातकं

परोसतञ्चेपि समागतानं
भायेय्यं ते वस्ससतं अपञ्जा ।
एकोव सेय्यो पुरिसो सपञ्जो
यो भासितस्स विजानाति अत्थनि । [३४८]

इदं जातकं वत्थुतो च वेय्याकरणतो च समोधानतो च परोमहम्मजातकमदिममेव । केवलं हेत्थ
भायेय्यदुन्ति पदमत्तमेव विसेसो । तस्मत्थो वस्समतस्मि अपञ्जा भायेय्य, ओलोकेय्यं उपधारय्यं एवं ओलो-
केन्तापि पन अत्थं वा कारणं वा न पस्सन्ति, तस्मा यो भासितस्स अत्थं जानाति सो एकोव सपञ्जो मेय्योति ।

परोसतजातकं ।

२. पणिकजातकं

यो दुःखकुट्टाय भवेय्य ताणन्ति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं पणिकं उपासकं आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

सो किर सावत्थिवामी उपासको नानप्यकारकानि मूलपण्णादीनि चैव लावुकुम्भण्डादीनि च विक्किणित्वा जीविकं कप्पेति । तस्सेका धीता अभिरूपा पासादिका आचारसीलमम्पन्ना हिरोत्तप्पममन्नागता केवलं निच्चप्पहसितमुखा । तस्मा समानकुलेसु वारेय्यत्थाय आगतेसु सो चिन्नेसि—इमिम्मा वारेय्यं वत्तति अयञ्च निच्चप्पहसितमत्था कुमारिकाधम्मो पन असति कुमारिकाय परकुलं गताय मातापितुञ्चं गरहा होति । अत्थि नुखो इमिस्सा कुमारिकाधम्मो नत्थीति वीमंसिस्सामि नन्ति ।

सो एकदिवसं धीतरं पच्छि गाहापेत्वा पण्णत्थाय अरञ्जं गत्वा वीमंसनवमेन किलेस निस्सितो विय हुत्वा रहस्सकथं कथेत्वा तं हत्थे गण्हि । सा गहितमत्ताव रोदन्ती कन्दन्ती—अयुत्तमेतं तात ! उदकतो अग्गिपातुभावसदिसं, मा एवरूपं करोथाति आह ।

अम्म ! मया वीमंसनत्थाय त्वं हत्थे गहिता, वदेहि अत्थिदानि ते कुमारिकाधम्मोति ?

आम तात ! अत्थि मया हि लोभवमेन न कोचि पुरिसो ओलोकिनपुव्वोति ।

सो धीतरं अस्मामेत्वा घरं नेत्वा मङ्गलं कत्वा परकुलं पेमेत्वा सत्थारं वन्दिस्सामीदि गन्धमालादिहत्थो जेतवनं गत्वा सत्थारं वन्दिन्वा पूजेत्वा एकमन्नं निमीदि । चिरम्मागतोसीति च वुने तमत्थं भगवतो आरोचेमि ।

सत्था—उपासक ! कुमारिका चिरं पट्टाय आचारसीलमम्पन्नाव, त्वं पन न इमं इदानेव एवं वीमंससि पुब्बेपि वीमंसि येवानि वत्वा तेन याचितो अतीतं आहरिः—

अतीतसत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ने बोधिमत्तो अरञ्जो रुक्खदेवता हुत्वा निव्वत्ति । अथेको बाराणसियं पणिकउपासकोति वत्थुं पच्चुपन्नसदिसमेव । तेन पन सा वीमंसनत्थाय हत्थे गहितमत्ता धीता परिदेवमाना इमं गायमाहः—

यो दुःखकुट्टाय भवेय्य ताणं

सो मे पिता बुद्धिं वने करोति,

सा कस्स कन्दामि वनस्स मउम्भे

यो तायिता सो सहसा करोतीति ।

तत्थ—यो दुःखकुट्टाय भवेय्य ताणन्ति कायिकचेतसिकेहि दुःखेहि कुट्टाय तायिता परित्तायिता पतिट्ठा भवेय्य सो मे पिता बुद्धिं वने करोतीति सो मय्हं दुःखपरित्तायको पिताव इमस्मिं ठाने एवरूपं मित्तदुब्भिकम्मं करोति, अत्तनो जाताय धीतरि धीतिकम्मं कातु मञ्जानीति अत्थो सा कस्स कन्दामोति कस्स रोदामि, को मे पतिट्ठाभविस्सतीति दीपेति । यो तायिता सो सहसा करोतीति यो मय्हं तायिता रक्खिता अवस्सयो भवितुं अरहति सो पिता येव साहमिकम्मं करोतीति अत्थो ।

अथ नं पिता अस्सासेत्वा अम्म ! रक्खितत्तासीति पुच्छि । आम तात ! रक्खितो मे अत्ताति । सो तं घरं नेत्वा मण्डेत्वा मङ्गलं कत्वा परकुलं पेसेसि । सत्था इमं धम्मदेसनं आहारित्वा सत्त्वानि पकसेत्वा जातकं समोधानेसि । सच्चपरियोसाने उपासको सोतापत्तिफले पतिट्ठहि । तदा पिताव एतरहि पिता, धीताव धीता, तं कारणं पच्चक्खतो दिट्ठरुक्खदेवता पन अहमेवाति ।

पणिकजातकं ।

३. बेरिजातकं

यत्थ बेरी निवसतीति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो अनाथपिण्डकं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

अनाथपिण्डको किर भोगगामं गत्वा आगच्छन्तो अन्तरामग्गे चोरे दिस्वा अन्तरामग्गे वसितुं न युत्तं सावत्थिमेव गमिस्सामीति वेगेन गोणे पाजेत्वा सावत्थिमेव आगत्वा पुन दिवसे विहारं गतो सत्थु एतमत्थं आरोचेसि । सत्या पुब्बेपि गहपति ! पण्डिता अन्तरामग्गे चोरे दिस्वा अन्तरा अविलम्बमाना अत्तनो वसनट्टानमेव गमिस्सूति वत्वा तेन याचितो अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो महाविभवो सेट्ठी हुत्वा एकं गामकं निमन्तणं भुञ्जनत्थाय गत्वा पच्चागच्छन्तो अन्तरामग्गे चोरे दिस्वा अन्तरामग्गे अवसित्वाव वेगेन गोणे पाजेन्तो अत्तनो गेहमेव आगत्वा नानगरसेहि भुञ्जित्वा महासघने निग्नो चोरानं हत्थनो मुञ्चित्वा निम्भयट्टानं अत्तनो गेहं आगतोम्हीति उदानवसेन इमं गाथमाहः—

यत्थ बेरी निवसति न वसे तत्थ पण्डितो,

एकरत्तं द्विरत्तं वा दुक्खं वसति बेरिस्सूति ।

तत्थ—बेरीति बेरचेतनासमङ्गो पुग्गलो । निवसतीति पतिट्ठाति न वसे तत्थ पण्डितोति सो बेरी पुग्गलो यस्मिं ठाने पतिट्ठितो हुत्वा वमनि तत्थ पण्डितो पण्डिच्चेन समन्नागतो न वसेय्य । किं कारणाति ? एक रत्तं द्विरत्तं वा दुक्खं वसति बेरिस्सूति बेरीनं हि अन्तरे वमन्तो एकाहम्पि द्वीहम्पि दुक्खमेव वसतीति अत्थो ।

एवं बोधिसत्तो उदानं उदानेत्वा दानादीनि पुञ्ज्यानि कत्वा यथाकम्मं गतो । सत्या इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेमि । तदा अहमेव बाराणसीमेट्ठि अहोमिन्नि ।

बेरिजातकं ।

४. मित्तविन्दजातकं

चतुर्भिः श्रद्धांशमाति इदं सत्या जेनवने विद्वन्तो एकं दुर्वचभिक्खुं आरब्ध कयेसि ।

वत्थुं हेट्ठा मित्तविन्दजातके वुत्तयेनेव वित्त्यारेनव्वं । इदं पन जातकं कस्सयवुद्धकालिकं । तस्मिं हि काले उरच्चक्कं उक्खिपित्वा निरये पच्चमानो एको नेरयिको सत्तो भन्ते ! किन्नुखो पापं अकासिन्ति बोधि-सत्तं पुच्छि । बोधिसत्तो तथा इदञ्चिदञ्च पापकम्मं कत्तन्नि वत्वा इमं गाथमाहः—

चतुर्भिः श्रद्धांशगमा श्रद्धाहिपि च सोलस,

सोलसाहि च बत्तिस अत्रिच्छं चक्कमासदो;

इच्छाहतस्स पोसस्स चक्क भमति मत्थकेति ।

तस्य—चतुर्भिः श्रद्धांशगमाति समुद्गरे चतस्सो विमानपेतियो लभित्वा ताहि असन्तुट्ठो अतिच्छताय परतो गत्वा अपरा अट्ठाधिगतोसीति अत्थो । सेमवदद्वयेपि एमेव नयो । अत्रिच्छं चक्कमासदोति एवं सकलाभेन असन्तुट्ठो अत्रिच्छं अत्र अत्र इच्छन्तो पुरतो लाभं पत्थन्तो । इदानीं चक्कमासदोति इदं उरच्चक्कं पत्तोसि । तस्म ते एवं इच्छाहतस्स पोसस्साति तण्हाय हत्तस्स उपहतस्स तव । चक्कं भमति मत्थकेति पासाणचक्कं अयच्चक्कन्नि इमेसु द्वीम् खुरधारं अयच्चक्कं तस्स मत्थके पुनपुनं पवत्तनवसेन भमन्तं दिस्वा एवमाह ।

वत्वा च पन अततो देवलोकमेव गतो । सोपि नेरयिकमत्तो अत्ततो पापे खीणे यथाकम्मं गतो । सत्था इमं धम्मदेसनं आर्हाग्त्वा जातकं समोधातेगि । तदा मित्तविन्दको दुर्वचभिक्खु, देवपुत्तो पन अहमेवाति ।

मित्तविन्दजातकं [३५०] ।

५. दुष्कलकट्टजातकं

बहुम्पेतं वने कट्टन्ति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो एकं उत्तसितभिक्षुं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

सो किर सावत्थिवासी एको कुलपुत्तो सत्थु धम्मदेसनं सुत्वा पब्बजित्वा मरणभीरुको अहोसि । रत्ति-
ट्टानदिवाट्टानेसु वातस्स वा बीजन्तस्स सुक्खदण्डकस्स वा पपत्तन्तस्स पक्खिचतुप्पदानं वा सद्दं सुत्वा मरणभय-
तज्जितो महारवं रवन्तो पलायति । तस्स हि मरितब्बं मयाति सतिमत्तम्पि नत्थि । सचे हि सो अहं मरिस्सा-
मीति जानेय्य न मरणतो भायेय्य, मरणसतिकम्पट्टानस्स पनस्स अभावितत्ताव भायति । तस्स सो मरणभीरु-
भावो भिक्षुसङ्घे पाकटो जातो ।

अयेकदिवसं धम्मसभायं भिक्षू कयं समुट्ठापेसुं आवुसो ! अमुको नाम भिक्षु मरणभीरुको मरणं
भायति, भिक्षुना नाम अवस्सं मया मरितब्बन्ति मरणसतिकम्पट्टानं भावेतुं वट्ठतीति । सत्या आगत्वा काय
नुय्य भिक्षवे ! एतद्दि कयाय सन्निसिन्नाति पुच्छिन्ना इमाय नामानि वुत्ते तं भिक्षु पक्कोवापेत्वा सच्चं
किर त्वं मरणभीरुकोति पुच्छित्वा सच्चं भन्नेति वुत्ते भिक्षवे ! मा एतस्म भिक्षुतो अनत्तमना होथ, नायं
इदानीव मरणभीरुको पुञ्चेयि मरणभीरुको येवाति वत्वा अतोतं आहरिः--

अतीतवत्थु

अतीने वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिमत्तो हिमवन्ते रुक्खदेवता हुत्वा निव्वन्ति । तस्मि
काले वाराणसीराजा अत्तनोमङ्गलहत्थि आनञ्जकारणं सिक्खापेतुं हत्थाचरियानं अदासि । तं आलाने
निचचलं वन्धित्वा तोमरहत्था मनुस्सा परिवारेत्वा आनञ्जकारणं कारेन्ति । सो तं कारणं कारियमानो वेदना
अधिवासेतुं अमक्कोन्तो आलानं भिन्दित्वा मनुस्से पलापेत्वा हिमवन्तं पाविसि । मनुस्सा नं गहेतुं असक्कोन्ता
निव्वन्ति । सो तत्थ मरणभीरुको अहोमि । वानमट्टानि सुत्वा कम्ममानो मरणभयतज्जितो सोण्डं विधू-
तित्वा वेगेन पलायति । आलाने वन्धित्वा आनञ्जकारणं करणकालो वियस्व होति । कायस्मादं वा चित्तस्मादं
वा अलभन्तो कम्ममानो विचरति । रुक्खदेवता तं दिस्वा खन्धविट्ठे ठत्वा इमं गायमाहः--

बहुम्पेतं वने कट्टं वातो भञ्जति दुष्कलं,

तस्स चे भायसि नाग ! किं नून भविस्सतीति ।

तत्थायं पिण्डत्थो--यं एतं दुष्कलं कट्टं पुरत्थिमादिभेदो वातो भञ्जति तं इमस्मि वने बहुं सुलभं
तत्थ तत्थ संविज्जति सचे त्वं तस्स भायसि एवं सन्ते निचचं भीतो मंसलान्हितक्खयं पत्वा किं नून भविस्ससि
इमस्मि पन वने तव भयं नाम नत्थि तस्मा इतो पट्ठाय मा भायीति । [३५१]

एवं देवता तस्स ओवादं अदासि । सोपि ततो पट्ठाय निव्वभयो अहोमि । सत्या इमं धम्मदेसनं आह-
रित्वा सच्चानि पकासेत्वा जातकं समोधानेसि । सच्चपरियोगाने सो भिक्षु सोतापत्तिफले पतिट्ठहि । तदा
नागो अयं भिक्षु अहोमि, रुक्खदेवता पन अहमेवानि ।

दुष्कलकट्टजातकं ।

६. उदञ्चनिजातकं

सुखं वत मं जीवन्तन्ति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो थुल्लकुमारिकपलोभनं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपुपुष्वत्थु

वत्थु तेरमकनिपाने चुल्लनारदकस्सपजानके आवीभविस्समि । तं पन भिक्खुं सत्था सच्चं किर त्वं भिक्खु ! उक्कण्ठितोनि पुच्छित्वा सच्चं भगवाति वुत्ते—कत्थ ने चित्तं पटिवद्धन्ति पुच्छि ।

सो एकस्मा थुल्लकुमारिकायाति आह ।

अथ नं सत्था—अयं ने भिक्खु ! अनत्थकारिका पुव्वेपि त्वं एतं निम्माय मीलव्यसनं पत्वा पज्झायन्तो विचरमानो पण्डिते निस्साय मुखं लभीति वत्था अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्तेति अतीतवत्थुम्पि चुल्लनारदकस्सपजानके येव आवीभविस्समि । तदा पन बोधिसत्तो मायं फलाफले आदाय आगत्वा पण्णसालं पविसित्वा विचरित्वा पुनं चुल्लनापसं एत-दवोच—तान ! त्वं अज्जो मु दिवमेगु दारुणि आहरमि पानीयं परिभोजनीयं आहरमि आगिं करोमि अज्ज पन एकम्पि अक्त्वा कस्मा दुम्मुखो पज्झायन्तो निपन्नोमीति ?

तान ! तुम्हेमु फलाफलत्थाय गतेमु एका इत्थी आगत्वा मं पलोभेत्वा आदाय गन्तु आगद्धा, अहं पन तुम्हेहि विस्सज्जितो गमिस्सामीति न गच्छि । अमुकट्टाने पन तं निमीदापेत्वा आगतोमिहि, इदानीं गच्छा-महं ताताति ।

बोधिसत्तो न सक्का एवं निधत्तेनुन्ति ज्ञत्वा तेनहि तान ! गच्छ एसा पन तं नेत्वा यदा मच्छमंसा-दीनि वा खादितुकामा भविस्समि सण्णलोणतण्डुलादीहि वा पनस्मा अत्थो भविस्समि तदा इदञ्चिदञ्चाहरानि तं किलमेस्समि तदा मय्हं गुणं मरित्वा पलायित्वा इधेवागच्छेय्यामीति विम्मज्जेसि ।

सो ताय सद्धिं मनस्सपथं अगमामि । अथ नं मा अत्तनो वसं गमेत्वा मम आहर मच्छं आहराति येन येन अत्थिका होति तं तं आहरापेति । तदा सो अयं मं अत्तनो दामं विय कम्मकरं विय च कत्वा पीनेतीति पला-यित्वा पितु सन्निकं आगत्वा पितरं वन्दित्वा ठितकोव इमं गाथमाहः—

सुखं वत वत मं जीवन्तं पचमाना उदञ्चनी ।

चोरो जायप्पवादेन तेलं लोणञ्च याचतीति ॥

तत्थ—सुखं वत मं जीवन्तन्ति तान ! तुम्हाकं सन्निके मं मुखं जीवन्तं । पचमानाति तापयमाना पीलयमाना यं यं खादितुकामा होति तं तं पचमाना । उदकं अञ्चन्ति एतायाति उदञ्चनि । चाटितो वा कूपतो वा उदकं उरिस्सञ्चनघटिकायेतं नाम । सा पन उदञ्चनी उदकं विय घटिकाय येन येनत्थिका होति तं तं आकड्ढति येवानि अत्थो । चोरो जायप्पवादेनाति भगियाति नामेन एकाचोरी मं मधुरवचनेन उपला-पेत्वा तत्थ नेत्वा तेलं लोणञ्च यञ्च अञ्जाम्पि इच्छति तं सव्वं याचति दामं विय कम्मकरं विय च कत्वा आह-रापेतीति तस्सा अगुणं कथेमि ।

अथ नं बोधिसत्तो अस्सामेत्वा होतु तान ! एहि त्वं मेत्तं भावेहि करुणं भावेहीति चत्तारो ब्रह्मविहारे आचिक्खि, कसिणपरिकम्मं आचिक्खि । सो न चिरस्सेव अभिञ्जा च समापत्तियो च निव्वत्तेत्वा ब्रह्मविहारे भावेत्वा सद्धिं पितरा ब्रह्मलोके निव्वरति ।

सत्था इमं धम्मदेगनं आहरित्वा सच्चानि पकासेत्वा जातकं समोधानेमि । सच्चपरियोसाने सो भिक्खु सोतापत्तिफले पतिट्ठहि । तदा थुल्लकुमारिकाव एतर्गहि थुल्लकुमारिका चुल्लतापमो उक्कण्ठितभिक्खु अहोसि पिता पन अहमेवाति ।

उदञ्चनिजातकं ।

७. सालित्तजातकं

साधु खो सिप्पकं नामाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो । एकं हंसपहरणकं भिक्खुं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपञ्चवत्थु

सो किरको सावत्थिवासी कुलपुत्तो सालित्तकसिप्पे निप्फत्ति पत्तो । सालित्तकसिप्पन्ति सक्खराखि-
पनसिप्पं वुच्चति । सो एकदिवसं धम्मं सुत्वा सासने उरं दत्वा पब्बजित्वा उपसम्पदं लभि । न पन सिक्खाकामो
न पटिपत्तिसारको अहोमि । सो एकदिवसं एकं दहरभिक्खुं आदाय अचिरं वत्ति गन्त्वा नहायित्वा नदीतीरे
अट्ठासि । तस्मिं समये द्वे सेनहंसा आकासेन गच्छन्ति ।

सो तं दहरमाह—इमं पच्छिमहंसं सक्खराय अक्खिम्मिहं पहरित्वा पादमूले ते पानेमीति ।

इतरो—कथं पातेस्मसि । न सक्खिस्समि पहरितुन्ति आह ।

इतरो—तिट्ठतु तावस्स ओरतो अक्ख परतो अक्खिम्मिहं नं पहरामीति । इदानीं पन तं असन्तं कथेसीति ।
तेनहि उपधारेहीनि एकं नियमं सक्खरं गहेत्वा अङ्गुलिंया परिवत्तेत्वा तस्स हंसस्स पच्छतो खिपि । सा
रुन्ति सद्दं अकामि । हंसो परिस्मयेन भवितव्यन्ति निवत्तित्वा सद्दं सोतु आरभि । इतरो तस्मिं खणे एकं
वट्टमक्खरं गहेत्वा तस्स निवत्तित्वा ओलोकेन्तस्स अपरभागे अक्ख पहरि । सक्खरा इतरग्गं अक्ख विनि-
विज्झित्वा गता । हंसो महारवं रवन्तो पादमूलेयैव पति । [३५३]

ततो ततो भिक्खू आगन्त्वा गरहित्वा अननुच्छादिकं ते कतन्ति मत्थु गन्तिकं नेत्वा भग्ते ! इमिना
इदं कतन्ति तमत्थं आरोविमु । सत्था तं भिक्खुं गरहित्वा न भिक्खवे ! इदानीं पन एतस्मिं सिप्पे कुमलो
पुब्बेपि कुमलोव अहोमीति वत्त्वा अतीतं आहरि—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिमत्तो तस्स अमच्चो अहोमि, तस्मिं काले रज्जो पुरो-
हितो अतिमुखरो होति वट्टभाणी । तस्मिं कथेतुमाग्गे अज्जो ओकासमेव न लभन्ति । राजा चिन्तेमि कदा
नुखो एतस्स वचनूपच्छेदकं कच्चि लभिस्सामीति । सो ततो पट्ठायां तथारूपं एकं उपधारेन्तो विचरति । तस्मिं
काले बाराणसियं एको पीठमण्णी सक्खराखिपनसिप्पे निप्फत्ति पत्तो होति । गामदारका तं रथकं आगेपेत्वा
आकड्ढमाना बाराणसीनगरागमूले एको विटपमम्पन्नो महानिग्रोधो अत्थि तत्थानेत्वा सम्पग्गिवाग्गेत्वा काकणि-
कादीनि दत्वा हत्थिरूपकं करं, अस्सरूपकं कराति वदन्ति । सो सक्खरा खिपित्वा निग्रोधपण्णेमु नानारूपानि
दस्सेति । सब्बानि पण्णानि छिद्दावच्छिद्दानेव अहेमुं ।

अथ बाराणसीराजा उय्यानं गच्छन्तो तं ठानं पापुणि । उस्मार्गणभयेन सव्वे दारका पत्तायिमु ।
पीठमण्णी तत्थेव निपज्जि । राजा निग्रोधमूलं पत्ता रथे निमिग्गो पत्तानं छिद्दताय छायां कवग्गवरं दिस्वा उल्लो-
केन्तो सव्वेसं पत्तानं छिद्दभावं दिस्वा—केनेतानि एवं कतानीति पुच्छि ।

पीठमण्णिना देवाति ।

राजा इमं निस्साय ब्राह्मणस्स वचनूपच्छेदं कान्तुं सक्का भविस्समीति चिन्तेत्वा कहं भणे ! पीठमण्णीति
पुच्छि । विचिनन्ता मूलन्तरे निपन्नं दिस्वा अयं देवाति आहंमु । राजा नं पक्कोमापेत्वा परिमं उस्मार्गेत्वा
पुच्छि—अम्हाकं सन्तिके एको मुखरब्राह्मणो अत्थि सक्खिस्समि नं निस्सद्दं कानुन्ति ?

नालिमत्ता अजलण्डिका लभन्तो सक्खिस्समि देवाति ।

राजा पीठमण्णिं घरं नेत्वा अन्तोसाणियं निमीदापेत्वा माणियं छिद्दं कारेत्वा ब्राह्मणस्स छिद्दाभिमुखं
आसनं पञ्जापेत्वा नालिमत्ता मुख्वा अजलण्डिका पीठमण्णिस्स सन्तिके ठपापेत्वा ब्राह्मणं उपट्ठानकाले आगतं
तस्मिं आसने निसीदापेत्वा कयं समुट्ठापेसि । ब्राह्मणो अज्जो मं ओकामं अदत्त्वा रज्ज्वा सद्दि कथेतं आरभि ।

१. स्या० —तिक्खिणसक्खरं ।

अथस्स सो पीठसप्पी साणिच्छिद्देन एकेकं अजलण्डिकं मक्खिकं पवेसेन्तो विय तालुतलम्हियेव पातेति । ब्राह्मणो आगतागतं नालियं तेलं पवेसेन्तो विय गिलति । सत्त्वा परिकखयं गमिसु । तस्म ना नालिमत्ता अजलण्डिका कुच्छियं पविट्ठा अड्ढाल्हकमत्ता अहेसु । राजा तासं परिकखीणभावं ज्ञात्वा आह—आचरिय ! तुम्हे अतिमुखरताय नालिमत्ता अजलण्डिका गिलन्ता किञ्चि न (३५४) जानित्थ इतोदानि उत्तरि जीरापेतुं न सक्खिस्सथ गच्छ पियङ्गुदकं पिवित्वा छट्ठेत्वा अत्तानं अरोगं करोथाति ।

ब्राह्मणो ततो पट्ठाय पिहितमुखो विय हुत्वा कथेन्तेनापि मद्धि अकथनमीलो अहोसि । राजा इमिना मे कण्णसुखं कतन्ति पीठसप्पिस्स सतमहस्सुट्ठानके चतुसु दिसासु चत्तारो गामे अदासि । बोधिसत्तो राजानं उपसङ्कमित्वा—देव ! सिप्पं नाम लोके पण्डितेहि उग्गण्हितब्बं, पीठसप्पिना सालित्तकमत्तेनापि अयं सम्पत्ति लद्धाति वत्ता इमं गाथमाहः—

साधु खो सिप्पकं नाम अपि यादिसकोदिसं
पस्स खञ्जप्पहारेन लद्धा गामा चतुद्दिसाति ।

तत्थ—पस्स खञ्जप्पहारेनाति पस्स महाराज ! इमिना नाम खञ्जस्स पीठसप्पिनो अजलण्डिका-पहारेन वतुद्दिमा चत्तारो गामा लद्धा अञ्जोमं सिप्पानं को आनिमंमपग्गच्छेदोति सिप्पगुणं कथेसि ।

सत्था इमं धम्मदेमनं आहरित्वा जातकं समोधानेमि । तदा पीठसप्पी अयं भिक्खु अहोसि । राजा आनन्दो पण्डितामच्चो पन अहमेवाति ।

सालित्तजातकं । (३५५)

८. बाहियजातकं

सिक्खेय्य सिक्खितब्बानीति इदं सत्था वेसालि उपनिस्साय महावने कूटागारसालायं विहरन्तो एकं लिच्छविं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपञ्चवत्थु

सो किर लिच्छवी राजा सद्धो पसन्नो बुद्धपमुखं भिक्खुसङ्घं निमन्तेत्वा अत्तनो निवेसने महादानं पवत्तेसि । भरिया पनस्स थूलङ्गपच्चङ्गा उद्धमातकनिमित्तसदिसा अनाकप्पसम्पन्ना अहोसि । सत्था भत्त-किञ्चावसाने अनुमोदनं कत्वा विहारं गत्वा भिक्खूनं ओवादं दत्वा गन्धकुटिं पाविसि । भिक्खू धम्मसभायं कथं समुट्ठासेसु—आवुसो ! तस्स नाम लिच्छविरञ्जो ताव अभिरूपस्स तादिसा भरिया थूलङ्गपच्चङ्गा अनाकप्पसम्पन्ना कथं सो ताय सद्धिं अभिरमतीति ?

सत्था आगत्वा कोयनुत्थ भिक्खवे ! एतर्हि कथाय सन्निभिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते न भिक्खवे ! एस इदानेव पुञ्चेपि थूलसरीराय एव इत्थिया सद्धिं अभिरमीति वत्वा तेहि याचितो अतीत आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिमत्तो तस्स अमच्चो अहोसि । अथेका जानपदिथी थूलसरीरा अनाकप्पसम्पन्ना भतिकुरुमाना राजङ्गगम्स अविदूरेन गच्छमाना सरीरवलञ्जणीलिता हुत्वा निराश्रयाकेन सरीरं पटिच्छासेत्वा [३५५] निमीदित्वा सरीरवलञ्जं मुञ्चित्वा खिप्पमेव उट्ठासि ।

तस्मिं खण्णे वाराणसोराजा वातपानेन राजङ्गगणं ओलोकेन्तो तं दिस्वा चिन्तेसि अयं एवरूपे अङ्ग-गुट्टाने सरीरवलञ्जं मुञ्चमाना हिरोत्तपं अप्पहाय निवासनेनेव पटिच्छन्ना हुत्वा सरीरवलञ्जं मोचेत्वा विषं उट्ठिता इमाय निरोगाय भवितव्वं । एनिस्सा वत्थु विसदं भविस्सति । विसदे पन वत्थुस्मि एको पुत्तो लभमानो विसदो पुञ्जावा भविस्सति । इमं मया अगमहेसि कातु वट्ठीतीति । सो तस्सा अपरिग-हितभाव ज्ञत्वा आणपेत्वा अगमहेसिगुट्टानं अदासि । सा तस्स पिया अहोसि मनापा, न चिरस्सेव एकं पुत्तं विजायि । सो पनस्सा पुत्तो चक्रवत्तो राजा अहोसि । बोधिसत्तो तस्सा सम्पन्ति दिस्वा तथारूपं वचनोकासं लभित्वा देव ! सिक्खितव्वयुत्तकं नाम सिप्पकं कस्मा न सिक्खितव्व ? यत्र हि नामायं महापुञ्जा हिरोत्तपं अप्पहाय पटिच्छन्नेनाकारेण सरीरवलञ्जं कुरुमाना तुम्हे आगधेत्वा एवरूपं सम्पन्ति पत्ताति वत्वा सिक्खितव्वयुत्तकानं वण्णं कथेन्तो इमं गाथमाहः—

सिक्खेय्य सिक्खितब्बानि सन्ति सच्छन्दिनो जना,
बाहियापि सुहन्नेन राजानमभिराधयोति ।

तत्थ—सन्ति सच्छन्दिनोति तेसु तेसु सिप्पेसु सच्छन्दा जना अत्थियेव । बाहियाति बाहियजनपदे जाता संबद्धा इत्थी । सुहन्नेनाति हिरोत्तपं अप्पहाय पटिच्छन्नेनाकारेण हस्सं सुहृन्नन्नाम । तेन सुहन्नेन । राजानमभिराधयोति देवं अभिराधेत्वा इमं सम्पन्ति पत्ताति ।

एवं महासत्तो सिक्खितव्वयुत्तकानं सिप्पानं गुणं कथेसि ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेयि । नदा जयम्पनिका^१ एतर्हि जयम्पनिकाव पण्डितामच्चो पन अहमेवाति ।

बाहियजातकं ।

६. कुण्डकपूर्वजातकं

यथन्नो पुरिसो होतोति इदं सत्था सावत्थियं विहरन्तो महादुग्गतं आग्ग्भ कयेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

सावत्थियं हि कदाचि एकमेव कुलं बुद्धपमुखस्स भिक्खुसङ्घस्स दानं देति । कदाचि तीणि चत्तारि एको हुत्ता, कदाचि गणवन्धनेन, कदाचि वीथिसभागेन, कदाचि सकलनगरं छन्दकं संहरित्वा । तदा पन वीथिमत्तं नाम अहोमि । अयं मनुस्सा बुद्धपमुखस्स मङ्गलस्स यागं दत्त्वा खज्जकं आहरथाति आहंसु । तदा (३५६) पनेको परेसं भनिकारको दुग्गतमनुस्सो तस्सा वीथियं वसमानो चिन्तेसि अहं यागं दातुं न सक्खिस्सामि खज्जकं पन दम्पामीनि मण्हमण्हं कुण्डकं वट्टयेत्त्वा उदकेन तेमेत्वा अक्कपण्णो वेट्ठेत्वा^१ कुक्कुले पवित्त्वा इदं बुद्धप्प दप्पामीनि नं आदाय गन्त्वा मत्थ पुरतो ठिनो खज्जकं आहरथाति एकस्मि वचने वृत्तमत्ते सम्बपठमं गन्त्वा नं त्वं मत्थ पत्ते पतिट्ठामेसि । मत्था अज्जो हि दीयमानं खज्जकं अगहेत्त्वा तमेव पूयखज्जकं परिभुञ्जि । तस्मिज्जोव पन खगे मम्मसम्पद्धेन किं महादुग्गतस्स कुण्डकखज्जकं अजिगुच्छित्त्वा अमत्तं विय परिभुत्तन्ति सकलनगरं एककोलाहलमहोमि । राजाराजमहामत्तादयो अन्तमसो दोवारिके उपादाय सन्धेव सन्नानित्त्वा सत्थारं वन्दित्वा महादुग्गतं उपसङ्कमित्त्वा—हन्द भो ! सत्तं गहेत्त्वा द्वे मतानि गहेत्त्वा पच्च सत्तानि गहेत्त्वा अम्हाकं पत्ति देहीति वदिमु ।

सो सत्थारं पटिपुच्छित्त्वा जानिम्मामीति मत्थु मत्तिकं गन्त्वा तमत्थं अरोचेसि ।

सत्था धनं गहेत्त्वा वा अगहेत्त्वा वा सच्चमत्तानं पत्ति देहीति आह ।

सो धनं गहेत् आरभि । मनुस्सा दिग्गुणवन्नुग्गुणअद्गुग्गुण दिक्खेन ददन्ता नव हिरज्जकोटियो अदंसु । सत्था अनुमोदनं कत्वा विहारं गन्त्वा भिक्खूहि वत्ते दस्सिते सुगतोवाद्दं दत्त्वा गन्धकुटिं पाविसि ।

राजा सायण्हममये महादुग्गतं पक्कोमायेत्त्वा सेट्ठिट्ठानेन पूजेमि । भिक्खू धम्मसभायं कथं समुदापेसुं आवुसो ! सत्था महादुग्गतेन दिन्नं कुण्डकत्वं अजिगुच्छन्तो अमत्तं विय परिभुञ्जि महादुग्गतोपि बहुं धनुं च सेट्ठिट्ठानं च लभित्वा महासम्पत्तिं पत्तोति । मत्था आगन्त्वा कायनन्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्नि-
सिप्पति प्पुच्छित्त्वा इमाय नामानि वुत्ते न भिक्खवे ! इदानेव मया अजिगुच्छन्नेन तस्स कुण्डकपूर्वो परिभुत्तो पुब्बे हक्खदेवता हुत्त्वा परिभुत्तोयेव तदापि चेम मं निस्साय सेट्ठिट्ठानं अलत्थेवाति वत्ता अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीने वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारन्ते बोधिसत्तो एकस्मि एरण्डरुक्खे रुक्खदेवता हुत्वा निब्बत्ति । तदा तस्मि गामके मनुस्सा देवतामङ्गलिका होन्ति । अथेकस्मि छण्णे सम्पत्ते मनुस्सा अत्तनो अत्तनो रुक्ख-
देवतानं बलिकम्मं अकंसु । अथेको दुग्गतमनुस्सो ते मनुस्से रुक्खदेवता पटिजगन्ते दिस्वा एकं एरण्डरुक्खं पटिजग्गि । ते मनुस्सा अत्तनो अत्तनो देवतानं नासण्णकागानि मालागन्धविलेपनादीनि चेव खज्जभोज्जकानि च आदाय गच्छिप्पु । सो पन कुण्डकत्वं जेव उलुङ्केन च उदकं आदाय गन्त्वा एरण्डरुक्खस्स अविदूरे ठत्त्वा चिन्तेसि, देवता नाम दिव्वखज्जकानि खादन्ति । [३५७] मय्हं देवता इमं कुण्डकपूर्वं न खादिस्सति । किं इमिना कारणेन नासेमि अहमेव नं खादिस्सामीति ततोव निवत्ति ।

बोधिसत्तो खन्धवट्ठे ठत्वा भो पुरिस ! सचे त्वं इस्सरो भवेय्यासि मय्हं मधुरखज्जकं ददेय्यासि त्वं पन दुग्गतो अहं तव पूर्वं न खादित्वा अज्जं किं खादिस्सामि ? मा मे कोट्ठासं नासेहीति वत्ता इमं गायमाह :—

ययन्नो पुरिसो होति तयन्ना तस्स देवता,
आहरेतं कणं पूवं मा मे भागं विनासयाति ।

तत्थ—ययन्नोति यथारूपभोजनो । तयन्नाति तस्स पुरिसस्स देवतापि तथारूपभोजनाव होति ।
आहरेतं कणं पूवं एतं कुण्डकेन पक्कपूवं आनेहि गय्हं भागं मा विनामेहीति ।

सो निवत्तित्वा बोधिसत्तं ओलोकेत्वा बलिकम्ममकासि । बोधिसत्तो ततो ओजं परिभुञ्जित्वा—
पुरिस ! त्वं किमत्थं मं पटिजग्गसीति आह ।

दुग्गनोम्हि सामि ! तं निस्माय दुग्गतभावतो मुञ्चिवतुकामताय पटिजग्गामीति ।

भो पुरिस ! मा चिन्तयि तथा कनञ्जुस्स कनवेदिनो पूजा कता इमं एरण्डं परिविखपित्वा निधि-
कुम्भयो गोवाय गोवं आहञ्च ठिना, त्वं रञ्जो आचिन्मिक्त्वा सकटेहि धनं आह्रित्वा राजजग्गे रासि कारेहि,
राजा ते तुम्मित्वा सेट्ठिट्ठानं दस्सतीति वत्ता बोधिसत्तो अन्तरधायि, सो तथा अकासि । राजा तस्स सेट्ठिट्ठानं
अदासि । इति सो बोधिसत्त निस्माय महासम्पत्तिं पत्वा यथाकम्म गतो ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आह्रित्वा जानकं समोधानेमि । तदा दुग्गतोव एतरहि दुग्गतो, एरण्डरुक्ख-
देवता पन अहमेवाति ।

कुण्डकपूवजातकं ।

१०. सव्वसंहारकपञ्हो

सव्वसंहारको नत्थीति अयं सव्वसंहारकपञ्हो सव्वाकारेण उम्मग्गजातके आवीभविस्सतीति ।

सव्वसंहारकपञ्हो निट्ठतो ।

परोसतवग्गो एकादसमो ।

१२. हंसीवग्गवण्णना

१. गद्रभपञ्हो

हंसी त्वं मञ्जासीति अयम्पि गद्रभपञ्हो उम्मग्गजातके येव आवीभविस्सति ।

गद्रभपञ्हो निट्ठतो ।

२. अमरादेवीपञ्हो

येन सत्तुबिलङ्गा जाति अयम्पि अमरादेविपञ्हो नाम तत्थेव आवीभविस्सति ।

अमरादेवीपञ्हो निट्ठतो ।

३. सिगालजातकं

सद्दहासि सिगालस्साति इदं सत्था वेलुवने विहरन्तो देवदत्तं आरब्ध कथेसि ।

पक्खपन्नवत्थु

तस्मिं हि समये भिक्खू धम्मसभायं सन्निपतित्वा आवुसो ! देवदत्तेन पञ्चभिक्षुस्तानि आदाय गयासीसं गत्वा यं समगो गोतमो करोति न सो धम्मो, यमहं करोमि अयमेव धम्मोति ते भिक्खू अत्तनो लद्धि गाहायेत्वा ठानप्पत्तं म्नावादं कत्वा सङ्घं भिन्दित्वा एकसीमायं द्वे उपोमथा कनानि देवदत्तस्स अगुणकथं कथेन्ता निवीदिमु । सत्था आगत्वा कायनुत्थ भिक्खवे ! एतर्हि कथाय सन्निमित्तानि पृच्छित्वा इमाय नामाति वृत्ते न भिक्खवे ! देवदत्तो इदमेव मुगावादी पुञ्चेपि मुगावादीयेयाति वत्वा अतीतं आहरि :—

अतीतवत्थु

अतीने वारांगमियं ब्राह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिमत्तो सुमानवने^१ रुक्खदेवतां हत्वा निञ्चत्ति । तदा वारांगमियं नक्खत्तं घृट्ठं, मनुस्सा यक्खवलिकम्मं करोमानि तेसु तेसु पञ्चगच्छादिम् ठानेस्स मच्छमसादीनि विष्किरित्वा कपालकेम् बहुं सुरं ठपयिमु । अथेको सिगालो अङ्गुत्तसमये निद्धमने^२ नगरं पविमित्वा मच्छमसं खादित्वा सुरं पवित्वा पुन्नागगच्छन्तरं पविसित्वा याव अरुणुग्गमना निदं ओक्कमि । सो पवृज्झित्वा आलोकं दिस्वा इदानीं निक्खपितुं न सक्काति मगममीपं गत्वा अदिस्समानो निपज्जित्वा अञ्ज्जे मनुस्से दिस्वापि किञ्चि अवत्वा एकं ब्राह्मणं मुखधोवनत्थाय गच्छन्तं दिस्वा चित्तेमि ब्राह्मणा नाम धनलोभा होन्ति, इमं धनेन पलोभेत्वा यथा मं उक्कच्छन्तरे कत्वा उत्तरामङ्गणेन पटिच्छादेत्वा नगरा नीहरति तथा करिस्सामीति । सो मनुस्सभामाय—ब्राह्मणाति आह ।

सो निवत्तित्वा को मं पक्कोसतीति आह ।

अहं ब्राह्मणाति ।

किं कारणाति ?

ब्राह्मण ! मय्हं द्वे कथापणुमतानि अत्थि सचे मं उपकच्छन्तरे कत्वा उत्तरासङ्गणेन पटिच्छादेत्वा यथा न कोचि पम्मति तथा नगरा निक्खामेत्तु मक्कोमि नुय्हं ते कथापणे दस्सामीति ।

ब्राह्मणो धनलोभेन साधूनि सम्पटिच्छित्वा तं तथा कत्वा आदाय नगरा निक्खमित्वा थोकं अगमासि ।

अथ नं सिगालो पुच्छि कतरं ठानं ब्राह्मणाति ।

असुकं नामाति ।

अञ्ज्जे थोकं ठानं गच्छाति ।

एवं पुनप्पुनं वदन्तो महासुमानं पत्वा इध मं ओतारेहीति आह । तत्थ नं ओतारेसि । सिगालो—तेनहि ब्राह्मण ! उत्तरसाटकं [३५६] पत्थगाति आह ।

सो धनलोभेन साधूनि पत्थगि ।

अथ नं इमं रुक्खम् नं जगाहीति पठविक्खणने योजेत्वा ब्राह्मणस्स उत्तरसाटकं अभिहरह चतुसु कण्ठेसु मज्जे चाति पञ्चम् ठानेसु सरीरनिस्सन्दं पानेत्वा मक्खेत्वा चेव नेमेत्वा च सुमानवने पाविसि । बोधिमत्तो रुक्खविटपे ठत्वा इमं गाथमाह :—

सद्दहासि सिगालस्स सुरापीतस्स ब्राह्मण !

सिप्पिकानं सतं नत्थि कुतो कंससता दुबेति ।

तत्थ--सद्दहासीति सद्दहेसि । अयमेव वा पाठो । पत्तियायसीति अत्थो । सिप्पिकानं सतं नत्थीति एतस्स हि सिप्पिकानं सतम्पि नत्थि । कुतो कंससत्ता दुवेति द्वे कहापणसतानि पनस्स कृतोयेवाति ।

बोधिमत्तो इमं गायं वत्वा गच्छ ब्राह्मण ! तव साटकं धोवित्वा नहायित्वा अत्तनो कम्मं करोहीति वत्वा अन्तरधायि । ब्राह्मणो तथा कत्वा वञ्चितो वतम्हीति दोमनस्सप्पत्तो पक्कामि । सत्था इमं धम्म-
देसनं आहरित्वा जातक समोधानेसि ।

तदा सिगालो देवदत्तो अहांसि । रुक्खदेवता पन अहमेवाति ।

सिगालजातकं ।

४. मितचिन्तीजातकं

बहुचिन्तो अप्पचिन्तो चाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो द्वे महल्लकत्थेरे आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

ने किर जनपदे एकस्मि अरञ्जावासे वस्सं वसित्वा सत्थु दस्सनत्थाय गच्छिस्सामाति पाशेरयं सज्जेत्वा अज्ज गच्छाम स्वे गच्छामाति मासं अतिक्कामेत्वा पुन पाशेरयं सज्जेत्वा तथेव मासं पुन मासगति एवं अत्तनो कुसीतभावेन चेव निवामट्टाने च अरेक्खाय तयो मामे अतिक्कामेत्वा ततो निक्खम्म जेतवनं गत्वा सभागट्टाने पनचीवरं पट्टिमामेत्वा सत्थार पम्मिस्सु । अथ ते भिक्खु पुच्छिम्ह तिरं वो आवमो ! इदं पट्टानं अकरोस्तां कस्मा एवं चिरायित्थानि ? ते तमत्थं आरोचेम । अथ तेमं मां आलमियकुसीतभावो भिक्खुमङ्गघे पाकटो जातो, धम्ममभायम्पि तेम भिक्खूनमेव आलमियभाव निस्साय कथं समट्टापेभ ।

सत्था आगन्त्वा कायनुत्थ भिक्खवे ! एतग्धि कथाय सन्निमिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वृत्ते ते पक्कोमापेत्वा मच्च किर तुम्हे भिक्खवे ! अलमा कुसीताति पुच्छित्वा मच्च भन्तेति वृत्ते न भिक्खवे ! इदानेवेने अलमा, पुञ्चेपि अलमा चेव निवामट्टाने च सालया मापेक्खाति वत्वा अर्तातं आहरिः—[२६०]

अतीतवत्थु

अतीने वागीगमियं ब्रह्मदत्तं रज्जं कारेत्ते वागागमीनदियं तयो मच्छा अहेस्सु । बहुचिन्ती अप्पचिन्ती मितचिन्तीति तेम नामाति, ते अरञ्जानो मनम्मपथं आगमिग । तत्थ मितचिन्ती इतरे द्वे एवमाह अयं मनुस्सपथो नम गाम्मको मप्पट्टिभयो, केवट्टा नानपकाराति जालकुमिगादीनि खिपित्वा मच्छे गणहति मयं अरञ्जमेव गच्छामाति । इतरे द्वे जना अलमनाय चेव आमिसगिद्धताय च अज्ज गच्छाम स्वे गच्छामाति तयो मामे अतिक्कामेग । अथ केवट्टा नदिय जालं खिपिग । बहुचिन्ती च अप्पचिन्ती च गोचरं गणहन्ता पुरतो गच्छन्ति । ते अत्तनो अन्धवालताय जालगन्थं असल्लक्खेत्वा जालकुच्छिमेष पविमिस्सु । मितचिन्ती पच्छतो आगच्छन्तो जालगन्थं सल्लक्खेत्वा तेमच्च जालकुच्छि पविट्टभावं ज्ञत्वा इमेमं कुमीतानं अन्धवालानं जीवितादानं दस्सामीति चिन्तेत्वा वहिपस्सेन जालकुच्छिट्टानं गन्त्वा जालकुच्छि फालेत्वा निवस्वन्तमदिसो हत्वा उदकं आलोलेन्तो जालम्म पुरतो पतित्वा पतित्वा पुन जालकुच्छि पविमिस्सु पच्छिमभागेन फालेत्वा निवस्वन्तमदिसो उदकं आलोलेन्तो पच्छिमभागेन पति । केवट्टा मच्छा जालं फालेत्वा गताति मच्छामाना जालकोटियं गहेत्वा उक्खिप्पिस्सु । ते द्वेपि मच्छा जालतो मुञ्चित्वा उदके पतिस्सु । इति तेहि मितचिन्ति निस्साय जीवितां लद्धं । सत्था इमं अतीत आहरित्वा अभिमम्बुद्धो हत्वा इमं गाथमाहः—

बहुचिन्ती अप्पचिन्ती च उभो जाले अब्भरे,
मितचिन्ती अप्पचेसि उभो तत्थ समागताति ।

तत्थ—बहुचिन्तीति बहुचिन्तनताय वितक्कबहुलताय एवं लद्धनामो । इतरेमुपि द्वीम् अयमेव नयो । उभो तत्थ समागतानि मितचिन्ति निस्साय लद्धजीविता तत्थ उदके पुन उभोपि जना मितचिन्तिना मद्धि समागताति अत्थो ।

एवं सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सत्त्वानि पकासेत्वा जातकं समोधानेसि । सत्त्वपण्यिःसाने महल्लका भिक्खु सोनापत्तिफले पतिट्ठहिस्सु । तदा बहुचिन्ती च अप्पचिन्ती च इमे द्वे अहेस्सु । मितचिन्ती पन अहेमेवाति ।

मितचिन्तीजातकं ।

५. अनुसासिकजातकं

यायञ्जामनुसासतीति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो एकं अनुसासिकं भिक्षुनि आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्यु

सा किर सावत्थिवासिनी एका कुलधीता । पव्वजित्वा उपसम्पन्नकालतो पट्टाय सस्सणधामे उन्न-
युत्ता आमिमगिद्धा हुत्वा यत्थ अञ्जा भिक्षुनियो [३६१] न गच्छन्ति तादिमे नगरस्स एकदेसे पिण्डाय चरति ।
अथस्सा मनुस्सा पणीतं पिण्डपातं देन्ति । मा रमतण्हाय वन्धिवा मचे इमस्मि पदेसं अञ्जापि भिक्खुनियो
पिण्डाय चरिस्सन्ति मय्हं लाभो परिहायिस्सन्ति, यथा एतं पदेसं अञ्जा नागच्छन्ति एवं मया कातु वट्ठतीति
चिन्तेत्वा भिक्षुनी उपसमयं गत्वा—अय्ये ! असुकट्ठाने चण्डो हत्थी, चण्डो अस्सो, चण्डो कुक्कुरो चरति ।
सपरिस्सयट्ठानं । मा तत्थ पिण्डाय चरित्थाति, भिक्षुनियो अनुमासन्ति ।

तस्मा सुत्वा एका भिक्षुनीपि तं पदेसं गीवं पण्वन्तेत्वा न ओलोकेसि । तस्सा एकस्मि दिवसे तस्मि
पदेसे पिण्डाय चरन्ति या वेनेनं गेहं पण्वन्ति या चण्डो मेण्डको पंहरित्वा ऊरुट्ठिकं भिन्दि । मनुस्सा वेगेन
उा गन्ति वा देवा भिन्नं ऊरुट्ठिकं एकतो वन्धिवा तं भिक्षुनि मञ्जेनादाय भिक्षुनि उपसमयं नयिस्सु । भिक्खु
नियो अयं अञ्जा भिक्षुनियो अनुमामित्वा मयं तस्मि पदेसे चरन्ती ऊरुट्ठि भिन्दापेत्वा आगताति परिहास
अकंसु । तस्मि तां कनकारणं न चिरस्सेव भिक्खुमङ्घे पाकटं अहोसि ।

अयेकदिवसं धम्ममभायं भिक्खू आवुसो ! अनुसामिकभिक्षुनी अञ्जा अनुमासित्वा सयं तस्मि
पदेसे चरमाना चण्डेन मेण्डकेन ऊरुं भिन्दापेसीति तस्सा अण्णकथं कथेस्सु । सत्या आगन्त्वा तां नत्थ भिक्खवे !
परहिं करारं मन्निमिन्नाति पुच्छित्वा इमां नामानि वुत्ते न भिक्खवे ! इदानीं पुद्घेपेसा अञ्जो अनुसा-
सतिथेव, सयं पन न वत्तति निच्चकाले दुक्खमेव अनुभवतीति वत्वा अतीतं आहरि :-

अतीतवत्यु

अतीते वाराणमियं श्रद्धदत्ते रज्जं कारेत्ते बोधिसत्तो अञ्जो सकुणयोनियं निव्वत्तित्वा वयप्पत्तो
सकुणजेट्ठको हुत्वा अनेकसकुणमतपरिवारो हिमवन्तं पाविसि । तस्स तत्थ वसनकाले एका चण्डा सकुणिका
महावत्ति मग्गं गत्वा गोचरं गण्हाति । सा तत्थ सकटेहि पतितानि वीहिमुग्गबीजादीनि लभित्वा दयादानि
इमं पदेसं अञ्जो सकुणा नागच्छन्ति तथा करिस्साभीति चिन्तेत्वा सकुणसङ्घस्स ओवादं देति । महावत्त-
निमहामग्गो नाम सण्णभयो, हत्थिअस्सादयो चैव चण्डगोणयुत्तयानादीनि च सञ्चरन्ति, सहसा उपपत्तिं पि
न सक्का होति, न तत्थ गन्तव्वन्ति । सकुणसङ्घो तस्सा अनुसासिकात्वेव नाम अकामि ।

सा एकदिवसं वत्तनिमहामग्गे चरन्ती महामग्गे वेगेनागच्छन्तस्स यानरस सद्दं सुत्वा निर्वात्तत्वा अंलो-
केत्वा दूरे तावति चरतिथेव । अथ नं यानं वातवेगेन मीघमेव सम्पापुणि । सा उट्ठात्ता नासविस्स । चक्केन
द्विधा छिन्दित्वा गता । सकुणजेट्ठको सकुणे समानेन्तो तं अदिस्वा अनुसासिका न दिस्सति उपधारेथ नगति
[३६२] आह । सकुणा उपधारेत्ता तं महामग्गे द्वेधा छिन्नं दिस्वा सकुणजेट्ठकस्स आरोचेस्सु । सकुणजेट्ठको
सा अञ्जा सकुणिका वारेत्वा सयं तत्थ चरमाना द्वेधा छिन्ना किराति वत्वा इमं गायमाह :-

यायञ्जामनुसासति सयं लोनुप्पचारिणी,

सायं विपक्खिका सेति हता चक्केन सालिकाति ।

तत्थ—यायञ्जामनुसासतीति यकारो पदसन्धिकरो । या अञ्जो अनुसासतीति अत्थो । सयं
सपति । हता चक्केन सालिकाति यानचक्केन हता सालिका सकुणिकाति ।

सत्या इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा अनुसासिका सकुणिका अयं अनुसासिका
भिक्खुनी अहोसि, सकुणजेट्ठको पन अहमेवाति ।

अनुसासिकजातकं ।

६. दुग्धचजातकं

अतिकरमकराचरियाति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो एकं दुग्धचभिक्खुं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

तस्स बत्थुं नवकनिशाने गिञ्जुजानके आवीभविस्समि । सत्या पन तं भिक्खुं आमन्तेत्वा भिक्खु ! न त्वं इदमेव दुग्धचो पुञ्चेपि दुग्धचो । दुग्धचभावेनेव पण्डितानं ओवादं अकरोन्तो सत्तिप्पहारेन जीवितक्खयं पत्तोसीति वत्वा अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीने वाराणसियं ब्रह्मवन्ते रज्जं कारेन्ते बोधिमत्तो लङ्घननटकयोनिं पटिसिन्धि गहेत्वा वयप्पत्तो पञ्चावा उणायकूमलो अहोमि । सो एकस्मि नटकस्म मन्तिके सत्तिलङ्घनसिप्पं सिविखत्वा आचरियेन सद्धि सिप्पं दस्सेन्तो विवग्गति । आचरियो पनस्म चतुप्पञ्जोव सत्तीनं लङ्घनमिप्पं जानाति न पञ्चन्नं । सो एक-दिवसं एकस्मि गामके सिप्पं दस्सेन्तो सुरामदमत्तो पञ्च सत्तियो लङ्घिस्सामीति पटिपाटिया ठपेसि ।

अथ नं बोधिमत्तो आह—आचरिय ! त्वं पञ्चमत्तिलङ्घनमिप्पं न जानासि, एकं सत्ति हर । सचे लङ्घिस्ससि पञ्चमाय सत्तिया विद्धो मग्गिस्ससीति ।

सो सुरामत्तनाय त्वं हि मय्हं पमाणं न जानासीति तस्स वचनं अनादियित्वा चतरसो लङ्घेत्वा पञ्चमाय सत्तिया दण्डके मशुकुण्फ विथ आवुत्तो पग्गिदेवमानो निपज्जि । अथ नं बोधिमत्तो पण्डितानं वचनं अकत्वा इमं व्यसन पत्तोसीति इमं गाथमाहः—

अतिकरमकराचरिय ! मय्हम्पेतं न रुच्चति,

चतुत्थे लङ्घयित्वान पञ्चमायसि आबुतोति ।

तस्य—अतिकरमकराचरियाति आचरिय ! अज्ज त्वं अतिकरं अकरि अत्तनो करणतो अतिरेककरणं अकरीति अत्थो । मय्हम्पेतं न रुच्चतीति मय्हं अन्नेवासिकस्मपि समानस्स एतं तव करणं न रुच्चति, तेन ते अहं पठपमेव कथेसिन्ति दीरेति । अतुत्थे लङ्घयित्वानाति चतुत्थे सत्तिफले अपत्तित्वा अत्तानं लङ्घयित्वा पञ्चमायसि आबुतोति पण्डितानं वचनं अगण्हन्तो इदानीं पञ्चमाय सत्तिया आवुतोसीति ।

इदं वत्वा आचरियं सत्तितो अपनेत्वा कत्तव्वयुत्तकं अकासि । सत्या इमं अतीतं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा आचरियो अयं दुग्धचो अहोमि । अन्नेवामिको पन अहमेवाति ।

दुग्धचजातकं ।

द. वटुकजातकं

नाचिन्तयन्तो पुरिसोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो उत्तरसेट्ठिपुत्तं आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

सावत्थियं किर उत्तरमेट्ठी नाम अहोमि महाविभवो । तस्स भग्न्याय क्खिञ्चयं एको पुञ्जावा सत्तो ब्रह्मलोका चवित्वा पटिसन्धि गहेत्वा वयपत्तो अभिक्खो अहोसि ब्रह्मवण्णी । अथेकदिवसं सावत्थियं कत्ति-
कच्छणे नक्खत्ते वुट्ठो सञ्चो लोको नक्खत्तनिम्मितो अहोमि । तस्स सहायका अञ्जो सेट्ठिपुत्ता सपजापत्तिका अहेम् । उत्तरसेट्ठिपुत्तस्म पन दीवरत्तं ब्रह्मलोके वसितत्ता किलेमेस्सु चित्तं न अल्लीयति । अथस्स सहायका उत्तरसेट्ठिपुत्तस्सापि एकं इत्थि आनेत्वा नक्खत्तं कीलस्सामाति सम्मन्तयित्वा तं उपसङ्गकमित्वा—सम्म ! इमस्मि नगरे कत्तिकरत्तिवारच्छणां वुट्ठो तुट्ठोस्मि एकं इत्थि आनेत्वा नक्खत्तं कीलरसामाति आहस्सु ।

अतीतवत्थु

न ममन्थो इत्थियाति च वत्तेपि न पुत्तपुत्तं निवन्धित्वा सम्पटिच्छापेत्वा एकं वण्णदासिं सद्बालङ्कार-
पत्तिमण्डितं कत्वा तस्म घरं नेत्वा त्वं सेट्ठिपुत्तस्म सन्तिकं गच्छाति सयनघरं पेमेत्वा निवन्धिमिस्सु । तं सय-
नघरं पविट्ठमि सेट्ठिपुत्तो नेव ओलोकेति नावयति । मा चिन्तेमि अयं एव रूपगणपत्तं उत्तमविलाससम्पन्नं
मं नेव ओलोकेति नालाति डशानि न अत्तना इत्थि कत्तलीलाय ओलोकापेस्सामीति इत्थिलीलहे दस्सेन्ती पहट्ठा-
कारेन अगदन्ते विवग्गित्वा सित अकामि । सेट्ठिपुत्तो ओलोकेत्वा दन्तट्टिके निमित्तं गण्हि । अथस्स अट्टिक-
मञ्जा उपपज्जि । सकवमि न सरीरं अट्टिकमञ्जवत्तिका विय पञ्जायि । सो तस्मा परिब्रव्यं दत्त्वा गच्छाति
उत्थोजेसि । [३६५]

नं तस्म घरा ओतिण्ण एको इस्सरो अन्तरवीथिय दिस्वा परिब्रव्यं दत्त्वा अत्तनो घरं नेमि । सत्ताहे
वीतिवत्ते नक्खत्तं ओमि नं वण्णदासिया माता धीनु आगभन अदिग्वा सेट्ठिपुत्तान सन्तिकं गत्त्वा कहं माति पुच्छि ।
ने उत्तरमेट्ठिपुत्तस्म घरं गत्त्वा कहं माति पुच्छिम् ।

तद्धवगण्येव तस्मा परिब्रव्यं दत्त्वा उत्थोजेमिन्ति ।

अथस्मा माता रोदन्ती धीतरं मे न पस्सामि धीतरं मे समानेत्थानि उत्तरमेट्ठिपुत्तं आदाय गच्छां सन्तिकं
अगमामि । राजा च अट्ठं विनिच्छिन्नन्तो—डमे ने सेट्ठिपुत्ता वण्णदासिं आनेत्वा अदंस्ति पुच्छि ।

आम देवाति ।

इदानीं सा कहन्ति ?

न जानामि, तं वण्णञ्जेव नं उत्थोजेमिन्ति ।

इदानीं तं समानेत्तं सक्कोसीति ?

न सक्कोमि देवाति ।

राजा—सचे समानेत्तं न सक्कोति राजागमस्म करोत्थाति आह ।

अथ नं पच्छावाहं वन्धित्वा राजागं कस्सिमाति गहेत्वा पक्कमिस्सु । सेट्ठिपुत्तं किर वण्णदासिं समा-
नेत्तु अक्कोत्तं राजा राजागं कारेतीति सक्कलनगरं एककोलाहलमहोसि । महाजनो उरे हत्थे ठपेत्वा किं
नामेत्तं माति ! अत्तनो वो अननुच्छाविकं लद्धन्ति परिदेवति । सेट्ठीपि पुत्तस्स पच्छतो पच्छतो परिदेवन्तो
गच्छति । सेट्ठिपुत्तो चिन्तेमि इदं मय्हं एवरूपं दुक्ख अगारे वसनभावेन उपपन्नं, सचे इतो मुच्चिस्सामि महा-
गोतमस्साम्भुद्धस्स सन्तिके पव्वजिस्सामाति ।

मापि खो वण्णदासी तं कोलाहलमहं सुत्वा किं सहो नामेसोति पुच्छित्वा तं पुत्तिं सुत्वा वेगेन ओत-
रित्वा—उम्सरथ उम्सरथ माति ! मं राजपुग्गिमानं दट्ठं देयाति अत्तानं दस्सेमि ।

राजपुरिसा तं दिस्वा मानरं पटिच्छापेत्वा सेट्टिपुत्तं मुच्चित्वा पक्कमिस्सु । सो सहायपरिवृतोव नदिं गन्त्वा ससीसं नहायित्वा गेहं गन्त्वा भुत्तपातरासो मातातिपरो पव्वज्जं अनुजानापेत्वा चीवरसाटके आदाय महन्तेन परिवारेन सत्थं सन्तिकं गन्त्वा वन्दित्वा पव्वज्जं याचित्वा पव्वज्जञ्च उपसम्पदञ्च लभित्वा अविस्सट्टकम्मट्ठानो विपस्सनं वड्ढेत्वा न चिरस्सेव अरहत्ते पतिट्ठासि ।

अयेकदिवसं धम्मसभायं सन्निपतिता भिक्खू—आवुसो ! उत्तरसेट्टिपुत्तो अत्तनो भये उपपन्ने सासनस्स गुणं जानित्वा इमम्हा दुक्खा मुच्चिमानो पव्वजिस्सामीति चिन्तेत्वा सुचिन्तितेन मरणमुत्तो चेव पव्वजितो च अण्णफले पतिट्ठितोति तस्स गुणकथं कथेसु । सत्था आगन्त्वा कायं नुत्थं भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्नि-
सिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते न भिक्खवे ! उत्तरसेट्टिपुत्तोव अत्तनो भये उपपन्ने इमिना उपायेन इमम्हा दुक्खा मुच्चिस्सामीति चिन्तेत्तो मरणभया मुत्तो अतीते पण्डितापि अत्तनो भये उपपन्ने इमिना उपायेन इमम्हा दुक्खा मुच्चिस्सामीति चिन्तेत्वा मरणभयदुक्खतो मुच्चिमुयेवाति वत्ता अतीतं आहरिः—(३६६)

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो च्छतिपटिसन्धिवसेन परिवत्तन्तो वट्टकयोनियं निव्वन्ति । तदा एको वट्टकनुट्ठको अरञ्जो बहू वट्टके आहरित्वा गेहे ठपेत्वा गोचरं दत्वा मूले गहेत्वा आगतानं हत्थेवट्टके विक्किण्णनो जीविकं कथेति । सो एकदिवसं बहूहि वट्टकेहिं सद्धिं बोधिसत्तम्पि गहेत्वा अनेसि ।

बोधिसत्तो चिन्तेसि—सच्चाहं इमिना दिन्नगोचरं पानीयञ्च परिभुञ्जिस्सामि अयं मं गहेत्वा आगतानं मनुस्सानं दस्सति । सचे पन न परिभुञ्जिस्सामि अहं मिलायिस्सामि । अथ मं मिलातं दिस्वा मनुस्सा न गण्हिस्सन्ति, एवं मे सोत्थि भविस्सति । इमं उपायं करिस्सामीति । सो तथा करोन्तो मिलायित्वा अट्ठिचम्म-
मत्तो अहोसि । मनुस्सा तं दिस्वा न गण्हसु । नुट्ठको बोधिसत्तं ठपेत्वा सेसेसु वट्टकेसु परिवखीरोसु पच्छि नीह-
रित्वा द्वारे ठपेत्वा बोधिसत्तं हत्थतले कत्वा किं नुखो अयं वट्टकाति नं ओलोकेत् आरद्धो । अथस्स पमत्तभावं ज्ञात्वा बोधिसत्तो पक्खे पसारित्वा उपपत्तिं अरञ्जमेव गतो । अञ्जो वट्टका तं दिस्वा किन्नुखो न पञ्जा-
यसि कहं गतोसीति पुच्छित्वा नुट्ठकेन गहितोम्हीति वुत्ते किं कत्वा मुत्तोसीति पुच्छिस्सु । बोधिसत्तो अहं तेन दिन्नगोचरं अगहेत्वा पानीयं अपिवित्वा उपायचिन्ताय मुत्तोति वत्ता इमं गाथमाहः—

नाचिन्तयन्तो पुरिसो विसेसमधिगच्छति,
चिन्तितस्स फलं पस्स मुत्तोस्मि वधबन्धनाति ।

तत्थायं पिण्डत्थो । पुरिसो दुक्खं पत्वा इमिना नाम उपायेन इमम्हा दुक्खा मुच्चिस्सामीति अचिन्त-
यन्तो अत्तनो दुक्खा मोक्खसंखातं विसेसं नाधिगच्छति । इदानीं पन मया चिन्तितकम्मस्स फलं पस्स । तेनेव उपायेन मुत्तोस्मि वधबन्धना मरणतो च बन्धनतो च मुत्तो अहन्ति ।

एवं बोधिसत्तो अत्तना कतकारणं आचिक्खि ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा मरणमुत्तो वट्टको पन अहमेवाति ।

वट्टकजातकं ।

९. अकालराविजातकं

अमातापितरि संबद्धोति' इदं सत्या जेतवने विहरन्तो एकं अकालरावि भिक्खुं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपञ्चवत्थु

सो किर सावत्थिवासी कुलपुत्तो सासनं पब्बजित्वा वत्तं वा सिक्खं वा न उग्गण्हि । सो इमस्मिं काले मया वत्तं कातब्बं, इमस्मिं काले उपट्ठातब्बं, इमस्मिं काले सज्जायितव्वन्ति न जानाति । पठमयामेपि [३६७] मज्झिमयामेपि पच्चिमयामेपि पबुद्धाबुद्धक्खण्येव महासद्दं करोति । भिक्खू निदं न लभन्ति । धम्मसभायं भिक्खू—आवुसो ! असुकभिक्खु एवरूपे रतनसासने पब्बजित्वा वत्तं वा सिक्खं वा कालं वा अकालं वा न जानातीति तस्म अगुणकथं कथेसुं । सत्या आगन्त्वा कायनुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नाभाति वुत्ते न भिक्खवे ! इदनेवेस अकालरावी पुब्बेपि अकालरावीयेव । कालाकालं अजाननभावेन गोवाय वलिनाय जीवितक्खयं पत्तोति वत्ता अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीने वाराणमियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो उदिच्चब्राह्मणकुले निव्वत्तित्वा वयप्पत्तो सब्ब-मिन्हेमु पारं गत्वा वाराणसियं दिसापामोक्खो आचरियो हुत्वा पञ्चसते माणवे सिपं वाचेसि । तेसं माण-वानां एको कालरावी कुक्कुटो अत्थि । ते तस्म वस्सितसद्देन उट्ठाय सिपं सिक्खन्ति । सो कालमकासि । ते अञ्ज कुक्कुटं परिपेम्मा चरन्ति । अथेको माणवको सुसानवने दारुणि उद्धरन्तो एकं कुक्कुटं दिस्वा आनेत्वा पञ्जरे ठपेत्वा पटिजगति । सो सुसाने वड्ढितत्ता असुकवेलाय नाम वस्सितव्वन्ति अजानन्तो कदाचि अति-रन्ति वस्मन्ति, कदाचि अरुणग्गमने । माणवा तस्स अतिरन्ति वस्सितकाले सिपं सिक्खन्ता याव अरुणग्गमना सिक्खितु न सक्कोन्ति निद्रायमाना गह्ठितट्ठानम्पि नप ससन्ति, अतिपभाते वस्सितकाले सज्जायस्स ओकासमेव न लभन्ति । माणवा अयं अतिरन्ति वा वस्सति अतिपभाते वा इमं निस्साय अग्गाकं सिपं न निद्रायिरसतीति तं गहेत्वा गीवं वट्टेत्वा जीवितक्खयं पापेत्वा अकालरावी कुक्कुटो अग्गेहि घातितोति आचरियस्स कथेसु । आचरियो ओवादं अगहेत्वा मंवड्ढितभावेन मरणप्पत्तोति वत्ता इमं गाथमाहः—

अमातापितरिसंबद्धो अनाचरियकुले वसं,
नायं कालं अकालं वा अभिजानाति कुक्कुटोति ।

तत्थ—अमातापितरिसंबद्धोति मातापितरो निस्साय तेसं ओवादं अगहेत्वा संबद्धो । अनाचरियकुले वसन्ति आचरियकुलेपि अवसमानो आचरिसिक्खापकं कञ्चिनिस्साय अवसितत्ताति अत्थो । कालं अकालं वाति इमस्मिं काले वस्सितव्वं, इमस्मिं काले न वस्सितव्वन्ति एवं वस्सितव्वयुनकालं वा अकालं वा एस कुक्कुटो न जानाति । अजाननभावेनेव जीवितक्खयं पत्तोति ।

इदं कारणं दस्सेत्वा बोधिसत्तो यावतायुक्कं ठत्वा यथाकम्मं गतो । सत्या इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा अकालरावी कुक्कुटो अयं भिक्खु अहोसि । अन्तेवासिका बुद्धपरिसा । आचरियो पन अहमेवाति ।

अकालरावीजातकं । [३६८]

१०. बन्धनमोक्षजातकं

अबद्धा तस्य बज्रभक्तोति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो चिञ्चमाणविकं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

तस्मा वत्थुं द्वादसकनिपाने महापदुमजातके आवीभविस्मति । तदा पन सत्या न भिवखवे ! चिञ्च-
माणविका इदानेव मं अभूतेन अब्भाचिक्खति पुब्बेपि अब्भाचिविखयेवाति वत्वा अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीने वारागमियं ब्रह्मदानं रज्जं कारेन्ने बोधिसत्तो पुरोहितस्म गेहे निव्वत्तिवा वयप्पत्तो पितु अच्च-
येन तस्सेव पुरोहितो अहोमि । तेन अगमहेमिया वरो दिस्सो होति—भट्टे ! यं इच्छसि तं वदेय्यासीति ।
सा एवमाह—मय्हं अञ्जो वरो नाम न दुल्लभो इतो पन ते पट्ठाय अञ्जो इत्थी किलेसवसेन न
ओलोकेतव्वानि ।

सो पट्टिक्खित्वा पुनप्पुनं निप्पीलियमानो तस्मा वचनं अनिवकमित्तं असवकांतां सम्पटिच्छित्वा
ततो पट्ठाय मोलसम्पु नाटकित्थिसहस्सेम्पु किलेसवसेन एक्कित्थिम्पि न ओलोकेमि । अथस्म पच्चन्तो कुप्पि ।
पच्चन्ते ठितयोधा चारेहि सद्धिं द्वे तयो सङ्गामे कत्वा इतो उत्तरि मय न सक्कोमाति रञ्जो पण्ण पेसेसु ।
राजा तस्य गन्तुकामो वलकायं संहारित्वा तं पक्कोमापेत्वा—भट्टे ! अहं पच्चन्तं गच्छामि तस्य नानप्पराणि
यद्धानि होन्ति जयपराजयोपि अनिवद्धो तादिसेम्पु ठानेसु मातुगामो दुप्परिहारो, त्वं इथेव निवत्ताहीति आह ।

सा न सक्का देव ! मया निवत्तिनुन्ति पुनप्पुन रञ्जो पट्टिक्खन्ता आह—नेनहि एकेक योजनं गन्त्वा
मय्हं सखदुक्खं जाननत्थ एकेकं मनुस्सं पेसेय्याथानि ।

राजा मावूति सम्पटिच्छित्वा बोधिसत्तं नगरं ठरेत्वा महत्तेन वलकायेन निवर्त्तित्वा गच्छन्तो योजने
योजने एकेकं पुरिसं अम्हाकं आरोग्यं आरोचेत्वा देविया मुखदुक्खं जानित्वा आगच्छानि पेमेसि । सा आगता-
गतं पुरिसं राजा तं किमन्थं पेमेमाति पुरिच्छन्त्वा तुम्हाकं मुखदुक्खं जाननत्थयानि वुत्ते तेनहि एहीति तेन सद्धिं
असद्धम्मं पट्टिमेवति ।

राजा द्वान्तिसयोजनमगं गच्छन्तो द्वान्तिसजने पेमेसि । सा सत्थेहिपि तेहि सद्धिं तथेव अकासि । राजा
पच्चन्तं वूपसमेत्वा जनपदं समस्सामेत्वा पुन आगच्छन्तोपि तथेव द्वान्तिस जने पेमेसि । सा तेहिपि सद्धिं तथेव
विप्पटिपज्जियेव ।

राजा आगन्त्वा जयक्खन्धावारट्ठाने ठत्वा नगरं पट्टिजग्गापेत्तुति बोधिसत्तस्म पण्ण पेसेसि । बोधि-
सत्तो सकलनगरं पट्टिजग्गापेत्वा राजनिवेशनं पट्टिजग्गापेन्तो देविया वसनट्ठानं अगमासि । सा बोधिसत्तस्स
रूपगणपत्तं कायं दिस्वा सङ्गानुमसक्कोत्ती—एहि ब्राह्मण ! सयनं अभिरुहाति आह ।

बोधिसत्तो—मा एव अवच, राजापि मे गरु अकुसलापि भायामि, न सक्का मया एवं कातुन्ति [३६६]
आह ।

चतुमट्ठिया पादमूलिकानं नेव राजा गरु, न अकुसला भायन्ति, तवेव राजा गरु त्वं येव च अकुसला भाय-
सीति ?

आम सचे तेसम्पि एवम्भवेय्य न एवरूपं करेय्यु, अहम्पन जानमानो एवरूपं साहसिककम्मं न करि-
स्सामीति ।

किं बहु विप्पलपसि सचे मे वचनं न करोसि सीसं ते छिन्दापेस्सामीति ।

तिट्ठतु ताव एकस्मि अत्तभावे सीसं अत्तभावसहस्सेपि सीसे छिज्जन्ते न सक्का मया एवरूपं कातुन्ति ।

सा होतु जानिस्सामीति बोधिसत्तं तज्जेत्वा अत्तनो गम्भं पविसित्वा सरीरे नखवलज्जं दस्सेत्वा तेलेन
गत्तानि अब्धञ्जेत्वा किलिष्टधानुकं वत्थं निवासेत्वा गिलानालयं कत्वा दासिया आणापेसि रञ्जो क्हं देवीति

वृत्ते गिलानाति कथेय्याथाति बोधिसत्तोपि रञ्जो पटिपथं अगमासि । राजा नगरं पदक्खिणं कत्वा पासादं अभिरुह्य देवं अपस्सन्तो कहं देवीति पुच्छि । गिलाना देवाति । सोपि सिरिगम्भं पविसित्वा तस्सा पिट्ठि परिमज्जन्तो—किं ते भद्दे ! अफासुकन्ति पुच्छि ।

सा तुण्ही अहोसि । ततियवारे राजानं ओलोकेत्वा—त्वम्पि महाराज ! जीवसि नाम ! मादिसापि इत्थियो सस्सामिका येव नामाति !

किं एतं भदेति ?

तुम्हेहि नगरं रक्खणत्थाय ठपितो पुरोहितो निवेसनं पटिजग्गामीति इधागन्त्वा अत्तनो वचनं अकरोन्ती मं पहरित्वा अत्तनो मनं पूरेत्वा गतोति ।

राजा अग्गिम्हि पम्बित्तं गोग्गसक्खरा विद्य कोथेन तटतटायन्तो सिरिगम्भा निक्खमित्वा दोवारिक-पादमूलिकादयो पक्कोमित्वा—गच्छथ भग्गे ! पुरोहितं पच्छावाहं बन्धित्वा वज्झभावप्पतं कत्वा नगरा नीहरित्वा आघातनं तत्वा सीसमस्स छिन्दथाति ।

ते वगेन गन्त्वा तं पच्छावाहं बन्धित्वा वज्झमेरिं वादारेस्सु । बोधिसत्तो चिन्तेसि अद्धा ताय दुट्ठदेविया राजा पुरेतरं परिभञ्जो अज्जदानाह अत्तनो बलेनेव अत्तानं मोक्षेस्सामीति । सो ते पुग्गिस्से—आह भो ! तुम्हे मं मारेन्तो रञ्जो दस्सेत्वाव मारेथाति ।

किं कारणाति ?

अहं राजकम्मिको बहुस्से कम्म कतं बहूनि महानिधानानि जानामि राजकुटुम्बं मया विचारितं सचे मं रञ्जो न दस्सेमथ बहुं धनं नम्मिस्समि मया रञ्जो मापनेय्ये आचिविग्वेन पच्छा कातव्वं करोथाति ।

ते न रञ्जो दस्सेयिम् । राजा तं दिग्वाव—कम्मा भो ब्राह्मण ! मयि लज्जं न अकामि ? कस्मा ते एवरूपं पापकम्मं कर्त्ताति आह ।

महाराज ! अहं सांत्थियकुले जातो मया कुत्थाकिपिलकमन्तापि पागातिपातो न कतपुट्ठो, तिगसलाक-मत्तम्पि अदिन्नं नादिन्नपुट्ठं, लोभवसेन परेस्स इत्थी अस्सोर्वाणि उम्मीनेत्वापि न ओलोकिनपुट्ठा, हासवसेनापि मुसान् भासितपुट्ठा, कुसग्गेनापि मज्जनं पीतपुट्ठं । अहं तुम्हेम् [३७०] निग्गपग्गो । सा पन बाला लोभवसेन मं हत्थे गहेत्वा मया पटिक्खित्ता मत्तज्जेत्वा अत्तना कतपाप उत्तानं कत्वा मम आचिविखत्वा अन्तो गम्भं पट्टिटा । अहं निग्गपग्गो । पण्ण गहेत्वा पन आगता चतुमट्ठिज्जा मापग्गो ते पक्कोमित्वा तस्सा वो वचनं कतं न कर्त्तन्ति पुच्छि देवाति ।

राजा ते चतुमट्ठिज्जे वन्धापेत्वा देवं पक्कोमारेत्वा तया एतेहि मट्ठि पापं कतं न कन्ति पुच्छि । कन देवाति वृत्ते तं पच्छावाहं वन्धापेत्वा चतुमट्ठिजनानं सोमानी छिन्दथाति आगापेमि ।

अथ नं बोधिमनो आह नत्थि महाराज ! एतेमं दोमो । देवी अत्तनो क्वचिं कारापेमि । निग्गपग्गो एते । तस्मा नेस्सं खमथ । तस्मापि दोमो नत्थि । इत्थियो नाम मेयनथम्भेन अत्तिता, जातिमभावो हि एस्स एनास्सं भविनव्वयुत्तकमेव होति । तस्मा एत्तिस्मापि खमथाति नानत्पकारेन राजानं सञ्जापेत्वा ते चतुमट्ठिपि जने तच्च बालं मोक्षापेत्वा मग्गेस्सं यथामकानि ठानानि दापेमि । एवं ते मग्गे मोक्षेत्वा ! मकट्टाने पट्टिटा-पेत्वा बोधिसत्तो राजानं उपमज्झकमित्वा—महाराज ! अन्धबालानं नाम अवत्थुकेन वचनेन अवन्धितव्व-युत्तका पण्डिता पच्छा वाहं वद्धा, पण्डिता कारणयुत्तेन वचनेन पच्छावाहं वद्धापि मत्ता, एव बाला नाम अव-न्धितव्वयुत्तकेपि वन्धापेन्ति, पण्डिता वद्धेपि मोक्षेन्तीति क्त्वा इमं गाथमाह :—

अबद्धा तत्थ बज्जन्ति यत्थ बाला पभासरे,

बद्धापि तत्थ मुञ्चन्ति यत्थ धोरा पभासरेति ।

तत्थ—अबद्धाति अवन्धितव्वयुत्ता । पभासरेति पभासन्ति वदन्ति कथेन्ति ।

एवं महासत्तो इमाय गाथाय रञ्जो धम्मं देसेत्वा मया इमं दुक्खं अगारे वसनभावनं लद्धं इदानि मे अगारेन किञ्च नत्थि पव्वज्जं मे अनुजान देवानि पव्वज्जं अनुजानापेत्वा अस्सूमूखं चान्तिजनं महन्तच्च विभवं

पहाय इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा हिमवन्ते वसन्तो अभिञ्जा च समापत्तियो न निब्बत्तेत्वा ब्रह्मलोकपरायणो
अहोसि । सत्या इमं धम्मदेसनं आहृत्वा जातकंसमोधानेसि । तदा दुट्ठदेवी चिञ्चमाणविका अहोसि । राजा
आनन्दो अहोसि । पुरोहितो पन अहमेवाति ।

बन्धनमोक्खजातकं ।

हंसीवग्गो द्वादसमो ।

१३. कुसनालिवग्गवणणा

१. कुसनालिजातकं

करे सरिक्खोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अनाथपिण्डकस्स निच्छयमित्तं आरब्ध कथसि ।

पच्चपन्नवत्थु

अनाथपिण्डकस्स हि मित्तसुहज्जजातिबन्धवा एकतो हुत्वा—महासेट्ठि ! अयं तथा जातिगोत्तघन-
घञ्जादीहि नेव सदिसो न उत्तरितरो कस्मा एतेन सिद्धिं सन्धवं करोसि ? मा करोहीति पुनपुनं निवारेसु ।

अनाथपिण्डको पन—मित्तसन्धवो नाम हीनेहिपि समेहिपि अतिरेकेहिपि कत्तव्वोयेवाति—तेसं वचनं
अगहेत्वा भोगगामं गच्छन्तो तं कुटुम्बरक्खकं कत्वा अगमासीति सध्वं कालकण्णिणवत्थुस्मिं वृत्तनयेनेव वेदितव्वं ।

इथ पन अनाथपिण्डकेन अत्तनो घरपवत्तिथा आरोचिताय सत्था—गहपति ! मित्तो नाम खुदको
नत्थि, मित्तवम्मं रक्खित्त्वं समन्धभावो चेत्थ पमाणं मित्तो नाम अत्तना समोपि हीनोपि विसिट्ठोपि गहेत्तव्वो,
सञ्चेपि हि ते अत्तनो पत्तं भारं नित्थरन्ति रेव, इदानीं तावत्त्वं अत्तनो निच्छयमित्तं निस्साय कुटुम्बरस सागिको
जातो, पोराणा पन निच्छयमित्तं निस्साय विमानसामिका जाताति वत्था तेन याचितो अतीतं आहरि :—

अतीतवत्थु

अतीने वाराणमियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो रज्जो उय्याने कुसनालिगच्छे देवता हुत्वा
निव्वत्ति । तस्मिञ्जोव पन उय्याने मङ्गलसिलं निस्साय उज्जगतक्खन्धो परिमण्डलसाखाविटपमम्पन्नो रज्जो
सन्तिका लद्धमम्मनो रुचमङ्गलरूक्खो अत्थि । मुखकोतिपि^१ वुच्चति । तस्मि एको महेसवखो देवराजा
निव्वत्ति । बोधिसत्तस्स तेन सिद्धिं मित्तसन्धवो अहोसि । तदा राजा एकस्मि एकत्थम्भके पासादे वसति
तस्स सो थम्भो चलि । अथस्स चलितभावं रज्जो आरोचेसु ।

राजा वड्ढकी पक्कोसापेत्वा ताता ! मम एकत्थम्भकस्स मङ्गलपासादस्स थम्भो चलितो, एकं
सारत्थम्भं आहरित्वा तं निचवलं करोथाति आह । ते साधू देवाति रज्जो वचनं सम्पटिच्छित्वा तदनुच्छविकं
रूक्खं परियेसमाना अञ्जत्थ अदिस्वा उय्यानं पविसित्वा तं मुखकरूक्खं दिस्वा रज्जो सन्तिकं आगन्त्वा
किं ताता ! दिट्ठो वो तदनुच्छविको रूक्खोति वुत्ते दिट्ठो देव ! अपि च खो तं छिन्दितुं न विसहामाति
आहंसु ।

किं कारणाति ?

मयं हि अञ्जत्थ रूक्खं अपस्सन्ता उय्यानं पविसिम्हा तत्रापि ठपेत्वा मङ्गलरूक्खं अञ्जं न पस्साम
इति नं मङ्गलरूक्खताय छिन्दितुं न विसहामाति ।

गच्छथ छिन्दित्वा पासादं थिरं करोथ मयं अञ्जं मङ्गलरूक्खं करिस्सामाति ।

ते साधूति बलिकम्मं गहेत्वा उय्यानं गन्त्वा स्वे छिन्दिस्सामाति रूक्खस्स बलिकम्मं कत्वा निवखमिस्सु ।
रूक्खदेवता तं कारणं जत्वा स्वे मय्दं विमानं नासेस्सन्ति दाग्गे गहेत्वा कृहिं गमिस्सामीति गन्तव्वट्टानं अपस्सन्ती
पुत्तके गीवायं अहेत्वा परोदि । तस्मा मन्दिट्ठा सम्भत्ता रूक्खदेवता वनदेवता आगन्त्वा किं एतन्ति पुच्छित्वा
तं कारणं मुत्वा मयमि वड्ढकीनं पटिक्खिपनुपायं अपस्सन्तियो तं परिस्सजित्वा रोदितुं आरभिस्सु ।

तस्मिं समये बोधिसत्तो रूक्खदेवतं पस्सिस्सामीति तत्थ गन्त्वा तं कारणं सुत्वा होतुं मा चिन्तयित्थ
अहं तं रूक्खं छिन्दितुं न दस्सामि स्वे वड्ढकीनं आगतकाले मम कारणं पस्सयाति ता देवता समस्सासेत्वा पुन-

दिवसे वड्डकीनं आगतवेलाय ककण्टकवेसं गहेत्वा वड्डकीनं पुरतो गन्त्वा मङ्गलरुक्खस्स मूलन्तरं पविसित्वा तं रुक्खं सुमिरं विय कत्वा रुक्खमज्जेत अभिरुद्धित्वा खन्धमत्थकेन निक्खमित्वा सीसं कम्पयमानो निपज्जि । महावड्डकी ककण्टक दिग्वा रुक्खं हत्थेन पहरित्वा सुसिररुक्खो एसो निस्सारो हिय्यो अनुपधारेत्वाव वलिकम्म करिम्हाति एकघनं महारुक्खं गरुहित्वा पक्कामि । रुक्खदेवता बोधिसत्तं निस्साय विमानस्स सामिनी जाता । तस्मा पटिमत्थारत्थाय सन्दिट्ठा सम्भत्ता बहू देवता सन्नपत्तिस्सु । रुक्खदेवता विमानम्मे लद्धन्ति तुट्ठिन्ति तास देवतानां मज्जे बोधिसत्तस्स गुणं कथयमानो भो देवता ! मयं महेसवखा देवता हुत्वापि दन्धपञ्जाताय इमं उपाय न जानिम्हा कुसनालिदेवता पन अत्तनो जागसम्पत्तिया अम्हे विमानसामिके अकामि । मित्तो नाम सदिसोपि अधिकोपि हीनोपि कन्तव्वाव मध्वेपिट्ठि अत्तनो थामेन महायान उप्पन्नं दुक्खं नित्यरित्वा मुत्ते पत्तिट्ठारेन्नियेव्वानि मित्तधम्म वण्णयित्वा इम गाथभाहः—

करे सरिक्खो अथवापि सेट्ठो
निहीनको चापि करेय्य एको,
करेय्युं ते व्यसने उत्तमत्थं
यथा अहं कुसनाली रुचायन्ति ।

तत्थ—करे सरिक्खोति जातिआदीहि सदिसोपि मित्तधम्म करेय्य । अथवापि सेट्ठोति जातिआदीहि सेट्ठो अधिकोपि करेय्य । निहीनको चापि करेय्य एकोति एको जातिआदीहि हीनोपि मित्तधम्मं करेय्येव । तस्मा सव्वेपि एते मित्तो कातव्वायेवानि दीनेति । कि कारणा ? करेय्युं ते व्यसने उत्तमत्थन्ति सव्वेपेते महायकस्स व्यसने उप्पन्ने अत्तनो पत्तभारं वहमाना उत्तमत्थं करेय्य कार्याकच्चेन्नमिकदुक्खतो तं सहायकं मोच्चेय्युमेवाति अत्थो । तस्मा हीनोपि मित्तो कातव्वोयेव पगेव इतरे । तत्रिदं ओपम्मं । यथा अहं कुसनाली रुचायन्ति यथा अहं रुचायं निव्वत्तदेवता अयच्चकुसनालिदेवता अप्पेसक्खा मित्तमत्थवं करिम्हा तत्रापाहं महेसक्खापि समाना अत्तनो उप्पन्न दुक्खं वालताय अनुपायकुसलताय हरित्तामकिव इमं पन अप्पसक्खम्पि समानं पण्डितं देवतं निस्साय दुक्खतो मुत्तोम्हीति । तस्मा अञ्जोहिपि दुक्खा मच्चिनुकामेहि समविसिट्ठभावं अनोलोकेत्वा हीनोपि पण्डितो मित्तो कातव्वोति । रुचादेवता इमाय गाथाय देवमञ्जवग्गं धम्मं देसेत्वा यावतायुक्कं ठत्वा सद्धि कुसनालिदेवताय यथाकम्मं गतानि ।

मत्था इमं धम्मइमेनं आहरित्वा जानकं समोधानेसि । तदा रुचा देवता आनन्दो अहोमि । कुसनालिदेवता पन अहमेवाति ।

कुसनालिजातकं ।

२. दुग्धमेधजातकं

यसं लब्धान दुग्धमेधोति इदं सत्या वेलुवने विहरन्तो देवदत्तं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपद्मवत्थु

धम्मसभायं हि भिक्खू—आवुसो ! देवदत्तो तथागतस्स पुण्णचन्दसस्सिग्गिं मुखं असीतिअनु-
व्यञ्जनद्वतिसमहापुरिसलक्खणपत्तिमण्डितं व्यामप्पभापरिक्खित्तं आवेलावेला यमकयमकभूता घनबुद्धरस्मियो
विस्सज्जेन्तं परमसोभगपत्तं अत्तभावञ्च ओलोकेत्वा चित्तं पसादेतु न सक्कोति उमूयमेव करोति बुद्धा नाम
एवरूपेन सीलेन समाधिना पञ्जाय विमुत्तिया विमुत्तिजागदस्सनेन समन्नागतानि वुच्चमाने वण्णं सहितु
न सक्कोति उमूयमेव करोतीति—देवदत्तस्स अगुगकथं कथेम् ।

सत्या आगन्त्वा काय नुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निमित्तानि पुच्छित्वा इयाय नागाति वुत्ते
न भिक्खवे ! इदनेव देवदत्तो मम वण्णे भञ्जमानं उमूयं करोति पुत्रेपि अकासियेवाति क्त्वा अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीने मगधगट्ठे राजगहनगरे एकस्मि मगधराजे रज्जं कारेन्ते बोधिगतो हत्थियोनियं निव्वन्त्तिवा सव्व-
सेतो अहोमि हेट्ठा वण्णिगतमदिमाय रूपसम्पत्तिया समन्नागतो । अयं नं लक्खगमपप्पन्नो अयन्ति सो राजा मङ्गल-
हत्थिअकामि । अथेकास्मि लङ्गदिवमे सकलनगरं देवनगरं विय अलङ्कारापेत्वा सव्वालङ्कारपत्तिमण्डितं
मङ्गलहत्थि अभिरुत्तिवा महत्तेन राजानुभावेन नगरं पदक्खिगं अकामि । महाजनो नत्थ नत्थ ठवा मङ्गल-
हत्थिनो रूपगपत्तं मरीरं दिम्वा—अहो ! रूपं, अहो ! गति, अहो ! लीला, अहो ! लक्खगगम्पनि, एव-
रूपो नाम सव्वसेतवरयागो चक्कवत्तिरज्जो अनुच्छविकोति मङ्गलहत्थिमेव वण्णोति । [३७४]

राजा मङ्गलहत्थिस्म वण्णं सुत्वा सहितु असक्कोत्तो उमूयं उपादेत्वा अज्जेव नं पव्वतपपाता पातेत्वा
जीवितक्खयं पापेस्सामीति हत्थाचरियं पक्कोमापेत्वा—किन्ति क्त्वा नया अयं नागा मिवस्वापितोति आह ।

सुमिक्खापितो देवानि ।

न सुमिक्खितो दुस्सिक्खितोति ।

सुसिक्खितो देवानि ।

यदि सुमिक्खितो, सक्खिस्समि नं वेपुल्लपव्वतमत्थकं आरोपेनुत्ति ?

आम देवानि ।

नेनहि एहीति मयं ओनरित्वा हत्थाचरियं आरोपेत्वा पव्वतपादं गत्वा हत्थाचरियेन हत्थिपिट्ठे निसी-
दित्वा हत्थिम्हि वेपुल्लपव्वतमत्थकं आरोपिते मयम्पि अमच्चगगपरिदुत्तो पव्वतमत्थकं अभिरुत्तिवा हत्थि
पपाताभिमुखं कारेत्वा—त्वं मया एम सुमिक्खापितोति वदेमि नीहिजेव नाव नं पादेहि ठपेहीति आह ।

हत्थाचरियो पिट्ठियं निसीदित्वाव भो नीहि पादेहि तिट्ठाति हत्थिस्स पाण्डकाय सज्जं अदामि । सो
नीहि पादेहि अट्टामि । पुन राजा द्वीहि पुग्गिमादेहि येव ठपेहीति आह । महाजनो द्वे पच्छिमपादे उक्खिपित्वा
पुग्गिमादेहि अट्टामि । पच्छिमपादेहि येवानि वुत्तेपि द्वे पुग्गिमादे उक्खिपित्वा पच्छिमपादेहि अट्टामि एकेनानि
वुत्तेपि तयो पादे उक्खिपित्वा एकेनेव अट्टामि । अथस्म अपतनभावं जत्वा —मचे पट्ठोमि आकासे नंठ पेहीति
आह ।

हत्थाचरियो चिन्तेसि सकलजम्बुदीपे इमिना मदिमो सुमिक्खितो हत्थी नाम नत्थि, निस्संमयं पनेतं
एम पपाते पातेत्वा मारेनुकामो भविस्सतीति । सो नस्स कण्णमूले मन्तेमि,—नात ! अयं राजा तं पपाते पातेत्वा
मारेनुकामो, न त्वं एतस्म अनुच्छविको । सचे ते आकामेन गन्तुं वलं अत्थि यथानिमिगमेव मं आदाय वेहासं
अब्भुगन्त्वा वाराणसि गच्छानि ।

पुञ्जिद्धिया समन्नागतो महामन्नो तं खगज्जेव आकासे अट्टामि ।

हृत्सचरियो—महाराज ! अयं हृत्थी पुञ्जिद्विया समन्नागतो न तादिसस्समन्दपुञ्जस्स दुब्बुद्धिनो अनुच्छविको पण्डितस्स पुञ्जसम्पन्नस्स रज्जो अनुच्छविको तादिसा नाम मन्दपुञ्जा एवरूपे वाहनं लभित्वा तस्स गुणं अजानन्ता तञ्चेव वाहनं अवसेसं च यसस्सम्पत्तिं नासेन्तियेवाति वत्वा हृत्थिक्खन्धे निसिम्भोव इमं गाथ-
माह :—

यसं लद्धान दुम्भेधो अनत्थं चरन्ति अतनो,
अतनो च परेसं च हिंसाय पटिपज्जतीति ।

तत्रायं सङ्खपेत्यो—महाराज ! तादिमो दुम्भेधो निष्पज्जो पुग्गलो परिवारसम्पत्तिं लभित्वा अतनो अनत्थं चरति । किं कारणा ? सो हि यममदमत्तो कत्तव्वं अजानन्तो अतनो च परेसं च हिंसाय पटिपज्जति । हिंसा वुच्चति किलमनं दुक्खुप्पादनं तदत्थाय एव पटिपज्जतीति । [३७५]

एवं इमं गाथाय रज्जो धम्मं देसेत्वा तिट्ठ दानि त्वन्ति आकासे उप्पत्तित्वा वागगमिं गत्वा राजङ्गणे आकासे अट्ठासि । सकलनगरं सङ्खुमित्वा अम्हाकं रज्जो आकासेन सेतवरवागगो आगन्त्वा राजङ्गणे ठित्तेति एककोलाहलं अहोमि । वेगेन रज्जोपि आरोचेस्सं । राजानिक्खमित्वा सचे मय्हं उपभोगत्थाय आगतोसि भूमियं पतिट्ठाहीति आह । बोधिमत्तो भूमियं पतिट्ठासि । आचरियो ओलरित्वा राजानं वन्दित्वा कुतो आग-
तोसि ताताति वुत्ते राजगहतीति वत्वा सव्व पवन्ति आरोचेमि । राजा मनापन्ते तात् ! कतं इध्वागच्छन्ते-
नाति हट्ठनुट्ठो नगरं सज्जापेत्वा वागगं मङ्गलहृत्थिट्ठाने ठपेत्वा सकलग्ज्जं तयो कोट्टासे कत्वा एकं बोधि-
सत्तस्स अदासि एकं आचरियस्सम् । एकं अत्तना अगहेमि । बोधिसत्तस्स आगतकालतो पट्ठायेव पन रज्जो
सकलजम्बुदीपे रज्ज हत्थगतमेव जातं सो जम्बुदीपे अग्गराजा हुत्वा दानादीनि पुञ्जानि कत्वा यथाकम्मं अग-
मामि । मत्था इमं धम्मदेसन आहरित्वा जातकं समोधानेमि ।

तदा मगधराजा देवदत्तो अहोमि । वागगामीराजा माग्गिपुत्तो । हृत्थाचरियो आनन्दो । हृत्थी
पन अहमेवाति ।

दुम्भेधजातकं ।

३. नङ्गलीसजातकं

असम्बन्धगामिं वाचन्ति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो लालुदायित्येरं^१ आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपक्षवत्थ

सो किर धम्मं कथेन्तो इमस्मिं ठाने इदं कथेतब्बं इमस्मिं ठाने इदं न कथेतब्बन्ति युत्तायुत्तं न जानाति । मङ्गले अवमङ्गलं वदन्तो निरोकुड्डेम् तिष्ठन्ति सन्धिसिद्धघाटकेसु चाति इमं अवमङ्गलं अनुमोदनं कथेति । अवमङ्गलेसु अनुमोदनं करोन्तो बहू देवा मनुस्सा च मङ्गलानि अचिन्तयन्ति वत्वा एवरूपानं मङ्गलानं सतम्पि सहस्सम्पि कान् समत्था होथाति वदति ।

अथेकदिवसं धम्ममभायं भिक्खू—आवुसो ! लालुदायी युत्तायुत्तं न जानाति सम्बत्थ अभासितब्बं वाचं सम्बत्थ भासतीति कथं समुदापेसु । सत्था आगन्त्वा कायनुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्धिसिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वृत्ते न भिक्खवे ! लालुदायी इदमेव दग्धपरिसक्कनो कथेन्तो युत्तायुत्तं न जानाति पुत्रेपि एवरूपो अहोसि निच्चलालकोयेवं एमोति वत्वा—[३७६] अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थ

अतीने वाराणमियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिमत्तो ब्राह्मणमहामालकुले निव्वन्तित्वा वयपत्तो तक्कमिलायं मञ्चमिपानि उगण्हित्वा वाराणमियं दिसापामोक्खो आचरियो हुत्वा पञ्चमाणवकमतानि मिपणं वाचेति । तदा तेसु माणवेषु एको दन्धपरिसक्कनो लालमाणवो धम्मन्तेवामिको हुत्वा मिपणं उगण्हाति । दन्धभावेन पन उगण्हितुं न सक्कोति । बोधिमत्तस्म पन उपकारो होति । दासो विय सव्वकिच्चानि करोति । अथेकदिवसं बोधिसत्तो सायमासं भुञ्जित्वा मयने निपन्नो तं माणवं हत्थपादपिट्ठपरिकम्मामि कत्वा गच्छन्तं आह—तात ! मञ्चपादे उपत्थम्भेत्वा याहीति ।

माणवो एकं पादं उपत्थम्भेत्वा एकस्स उपत्थम्भनं अलभन्तो अत्तनो ऊरुम्हि ठपेत्वा रन्ति खेपेसि । बोधिसत्तो पञ्चूससमये उट्ठाय तं दिस्वा—किं तात ! निसिन्नोसीति पुच्छि ।

आचरिय ! मञ्चपादस्स उपत्थम्भनं अलभित्वा ऊरुम्हि ठपेत्वा निसिन्नोम्हीति ।

बोधिसत्तो संविगमानसो हुत्वा अयं अति विय मय्हं उपकारो एत्तकानं पन माणवकानं अन्तरे अयमेव दन्धो सिपणं सिक्खितुं न सक्कोति कथन्नुखो अहं इमं पण्डितं करेय्यन्ति चिन्तेमि । अथस्म एतदहोसि—अथेको उपायो अहं इमं माणवं दारुअत्थाय पण्णत्थाय गन्त्वा आगतं अज्ज ने किं दिट्ठं किं कतन्ति पुच्छिस्सामि । अथ मे इमं नाम अज्ज मया दिट्ठं इदं कतन्ति आचिक्खिस्सन्ति अथ नं तथा दिट्ठञ्च कतञ्च कीदिसन्ति पुच्छिस्सामि सो एवरूपं नामाति उपमाय च कारणेन च कथेस्समि । इति नं नवं उपमं च कारणञ्च कथपेत्वा इमिना उपायेन पण्डितं करिस्सामीति । सो तं पक्कोमिन्त्वा—तात माणव ! इतोपट्ठाय दारुअत्थाय वा पण्णत्थाय वा गन्ताने यं ते तत्थ दिट्ठं वा सुत्तं वा भुत्तं वा पीत्तं वा खादिनं वा होति नं आगन्त्वा मय्हं आरोचिय्यामीति आह ।

सो माधूति पटिस्सुगित्वा एकदिवसं माणवेहिं मद्धि दारुअत्थाय अरञ्जं गतो तत्थ सण्णं दिस्वा आगन्त्वा आचरियं—सण्णो मे दिट्ठोति आरोचेमि ।

सण्णो नाम तात ! कीदिसो होतीति ?

सेय्यथापि नङ्गलीसाति ।

साधु तात ! मनापा ते उपमा आहटा सण्णो नाम नङ्गलीसमदिसाव होन्तीति । अथ बोधिसत्तो माणवकेन मनापा उपमा आहटा सक्खिस्सामि नं पण्डितं कानुन्ति चिन्तेमि । माणवो पुन एकदिवसं अरञ्जं हत्थि दिस्वा—हत्थी मे आचरिय ! दिट्ठोति आह ।

हृथी नाम तात ! कीदिसो होतीति ?

सेय्यथापि नङ्गलीसाति ।

बोधिसत्तो हृथिस्स मोण्डा नङ्गलीससदिसा होति दन्तादयो एवरूपा च एवरूपा च । अयं पन बाल-
ताय विभजित्वा कथेत्तुं अमक्कोन्तो मोण्डं सन्धाय कथेमि मञ्ज्जोति तुण्ही अहोसि ।

अथेकदिवसं निमन्तने [३७७] उच्छं लभित्वा—आचरिय ! अज्ज मयं उच्छं खादिम्हाति । उच्छं
नाम कीदिमोति वृत्ते सेय्यथापि नङ्गलीमाति आह । आचरियो थोकं पतिरूपकारणं कथेसीति तुण्हीजातो ।
पुनेकदिवसं निमन्तने एकच्चे माणावा गुलं दधिना भुञ्जिस्सु एकच्चे खीरेन । सो आगन्त्वा—आचरिय !
अज्ज ! मयं दधिना खीरेन च भुञ्जिम्हाति वत्वा दधिखीरं नाम कीदिसं होतीति वुत्ते सेय्यथापि नङ्गली-
माति आह ।

आचरियो—अयं माणावो मग्गो नङ्गलीसमदिमोति कथेन्तो ताव मुकथितं कथेमि । हृथी नङ्ग-
लीसमदिमोति कथेन्तेतापि मोण्डं सन्धाय लेमेन कथितं, उच्छं नङ्गलीसमदिमन्ति कथनेपि लेमो अत्थि, दधि-
खीरानि पन निच्चं पण्डगानि पक्खित्तभाजनमण्डानानीति इध मव्वेन मव्वं उपमं न कथेमि, न सवका इमं
लालकं^१ मिस्सवापेत्तुन्ति वत्वा इमं गाथमाहः—

असब्बत्थ गामि वाचं
बालो सब्बत्थ भासति,
नायं दधि वेदि न नङ्गलीसं
दधिम्पयं मञ्ज्जति नङ्गलीसन्ति ।

नयायं मङ्गखेपत्थो । मा वाचा ओपम्मवमेन सव्वत्थ न गच्छति तं असब्बत्थगामि वाचं बालो दन्ध-
पुगलो सब्बत्थ भासति । दधि नाम कीदिमन्ति पुट्ठो सेय्यथापि नङ्गलीमाति वदन्तेव वदन्तो नायं दधि वेदि
न नङ्गलीसं । किं कारणा ? यस्मा दधिम्पयं मञ्ज्जति नङ्गलीसं यस्मा अयं दधिम्पि नङ्गलीसमेव मञ्ज्जति ।
अथवा दधीति दधिमेव । पयन्ति खीरं । दधि च पयञ्च दधिम्पयं । यस्मा दधिखीरानिपि अयं नङ्गलीसमेव
मञ्ज्जति तादिमो चायं बालो किं इमिनाति अन्नेवामीनं गाथं कथेत्वा परिव्वयं दत्वा तं उय्योजेमि ।

सत्या इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जानकं समोधानेमि । नदा लालमाणावो लालुदायी अहोसि । दिसा-
पामोक्खान्तरियो पन अहमेवाति ।

नङ्गलीसजातकं ।

४. अम्बजातकं

वायमेथेव पुरिसोति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो एकं वत्तमम्पन्नं ब्राह्मणं आरब्ध कथेति ।

पच्चुपन्नवत्थु

सो किर मावत्थिवासी कुलपुत्तो रासने उरं दत्त्वा पच्चजितो वत्तमम्पन्नो अहोसि । आचरियूपज्झाय-
वत्तानि पानीयपरिभोजनीयउपोसथागरजन्ताघरादिवत्तानि च साधुकं करोति । चुद्दसु महावत्तेसु
अमीतिखन्धकवत्तेसु च परिभूरिकारीमेव अहोमि । विहारं सम्मज्जति परिवेग वितक्कमालकं विहारमगं
सम्मज्जति । मनुस्मानं पानीयं देति । मनुस्सा तस्स वत्तमम्पत्तियं पसीदित्वा पच्चसतमत्तानि धुवभत्तानि
अदंम् । महालाभमक्कारो उप्पज्जि । त [३७८] निम्माय बहुन्नं फामुविहारो जानो । अथेकदिवसं धम्म-
सभायं भिक्खू कथं समुद्गाथेसु आवुसो ! अमुको नाम भिक्खु अत्तनो वत्तमम्पत्तिया महन्तं लाभमक्कारं निव्व-
नेमि, एतं एककं निम्माय बहुन्नं फामुविहारो जानोति ।

सत्या आगन्त्वा कायनुत्थ भिक्खवे ! एतर्हि कथाय मन्निमिन्नानि पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते
न भिक्खवे ! इदानीं पुद्देपायं भिक्खु वत्तमम्पन्नो पुद्देपेनं एककं निम्माय पच्च इसिमत्तानि फलाफलत्थाय
अरज्जं अगन्त्वा एतेनेव आनीतफलाफलेहि यापेपुत्ति वत्त्वा अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते वाक्खणमिय ब्रह्मदत्ते रज्ज कारेन्ते बोधिमत्तो उदिच्चब्राह्मणकुले निव्वत्तिवत्ता वयप्पत्तो इमि-
पच्चज्जं पच्चजित्वा पच्चवगनइमिपरिवारो पच्चनपादे विहामि । तदा हिमवन्ते चण्डो निदाघो अहोसि । तत्थ
तत्थ पानीयानि छिज्जिम् । निरच्छान्ता पानीयमलभमाना किलमन्ति । अथ तेसु तापसेसु एको तापसो तेसं
पिपासादुक्ख दिग्वा एकं रुक्खं छिन्दिन्त्वा दोग्ग कत्त्वा पानीय उग्गिञ्चिन्त्वा दोग्ग ग्रेन्त्वा तेम पानीयं अदासि ।

बहुसु मन्निपत्तिया पानीय पिबन्तेसु तापसम्म फलाफलत्थाय गमनोकामो नाहोमि । सो निराहारोपि
पानीयं देतियेव । मियगगा चित्तेसु अय अम्हाक पानीय देन्तो फलाफलत्थाय गल् ओकामं न लभति । निरा-
हारताय अतिविय किलमन्ति ह्द मयं कर्त्तिकं करोमाति । ते कर्त्तिकं अरुम्, इतो पट्टाय पानीय पिबन्त्थाय आगच्छ-
नेन अत्तनो वत्तानुत्तो न फलाफल गहेन्त्वा आगन्तव्वन्ति । ततो पट्टाय एकेको निरच्छान्तो अत्तनो अत्तनो बला-
पुत्तेन मधुग्मधुगुनि अम्बजम्पुपनमादीनि गहेन्त्वाव आगच्छन्ति । एकस्म अत्थाय आभत फलाफलं अइहेनेय-
सकटभारणमाग अहोमि । पच्चमता तापसा तदेव परिभुज्जन्ति अतिरेकं छुड्डीयन्ति ।

बोधिमत्तो तं दिग्वा एक नाम वत्तमम्पन्नं निम्माय एत्तकानं तापमान फलाफलत्थाय अगन्त्वा यापनं
उप्पन्नं विरियं नाम कातव्वमेवाति वत्त्वा इमं गाथमाहः—

वायमेथेव पुरिसो न निव्विन्देय्य पण्डितो ,

वायामस्स फलं पस्स भुत्ता अम्भा अनीतिहूति ।

तत्राय गइवेपत्थो । पण्डितो अत्तनो वत्तगुणादिके कम्ममिह वायमेथेव न उक्कण्ठेय्य, किं कारणं ?
वायामस्म निष्फलताय अभावतो । इति महामत्तो वायामो नाम मफलोव होतीति इमियग आनपत्तो वाया-
मस्स फलं पस्साति आह । कीदमि ? भुत्ता अम्भा अनीतिहूति । नत्थ अम्बानि देसनामत्तं तेहि पन नानप-
हारानि फलाफलानि आभतानि तेसु सम्पन्नतगनं [३७९] उग्गन्नतगनं वा वमेन अम्हाति वुत्तं । ये इमेहि
इच्चहि इसिमनेहि मयं अरज्जं अगन्त्वा एकस्म अत्थाय आनीता अम्भा भुत्ता इदं वायामस्म फलं । तच्च
वो पन अनीतिहूति इतिह आस इतिह आमाति एवं इतिहीतिहूत गहेत्तव्वं न होति पच्चक्खमेव तं फलं पस्माति ।
एवं महामत्तो इमियगस्म ओवादं अदासि ।

सत्या इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेमि । तदा वत्तमम्पन्नो तापसो अयं भिक्खु अहोमि ।
एगुमत्था पन अहमेवाति ।

अम्बजातकं ।

५. कटाहकजातकं

बहुम्पि सो विकत्येय्याति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं विकत्यिकं भिक्खुं आरब्ध कथेसि । तस्स वत्थु हेट्ठा कथितसदिसमेव ।

अतीतवत्थु

अतीते पन वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो महाविभवो सेट्ठी अहोसि । तस्स भरिया पुत्तं विजायि । दासीपिस्स तं दिवसं येव पुत्तं विजायि । ते एकतोव वाङ्मसु । सेट्ठिपुत्ते लेखं सिक्खन्ते एव दासोपिस्स फलकं वहमानो गन्त्वा तेनेव सद्धि लेखं भिक्खि गगनं सिक्खि । द्वे तयो वोहारे अकासि । सो अनुक्कमेन वचनकुसलो वोहारकुसलो युवा अभिरूपो अहोसि नामेन कटाहको नाम ।

सो सेट्ठिघरं भण्डागारिककम्मं करोन्तो चिन्तेसि—न मं इमे सव्वकालं भण्डागारिककम्मं कारेस्सन्ति किञ्चिदेव दोसं दिस्वा तालेत्वा बन्धित्वा लक्खणेन अड्केत्वा दासपरिभोगेनपि परिभुञ्जिस्सन्ति पच्चन्ते खो पन सेट्ठिस्स सहायको सेट्ठी अत्थि यन्नूनाहं सेट्ठिस्स वचनेन लेखं आदाय तत्थ गन्त्वा अहं सेट्ठिपुत्तोति वत्था तं सेट्ठि वञ्चेत्वा तस्स धीतरं गहेत्वा सुखं वसेय्यन्ति ।

सो मयमेव पण्णं गहेत्वा अहं असुकं नाम मम पुत्तं तव सन्तिकं पहिंणिं आवाहविवाहसम्बन्धो नाम मय्हं च तथा तुय्हं च मया सद्धि पतिरूपो, तस्मा तुवं इमस्स दासकस्स अत्तनो धीतरं दत्वा एत्तं तत्थेव वसापेहि अहम्पि ओकासं लभित्वा आगमिस्सामीति निव्वित्वा सेट्ठिस्सेव मुद्दिक्काय लञ्छेत्वा यथार्सच्चिं परिव्वयञ्चेव गन्धवत्थादीनि च गहेत्वा पच्चन्तं गन्त्वा सेट्ठि दिस्वा वन्दित्वा अट्ठासि ।

अथ नं सेट्ठी—कुतो आगतोमि ताताति पुच्छि ।

वाराणसितोति ।

कस्स पुत्तोमीति ?

वाराणसीसेट्ठिस्साति ।

केनत्थेनागतोमीति ?

तरिंम खगे कटाहको इदं दिस्वा जानिस्सथाति पण्णं अदासि । सेट्ठी पण्णं वाचेत्वा इदानाहं जीवामि नामाति तुट्ठचित्तो धीतरं दत्वा पतिट्ठापेसि ।

तस्म परिवारो महत्तो [३८०] अहोमि । सो यागुय्वज्जकादिमु वा वत्थगन्धादिमु वा उपनीतेसु एवम्पि नाम यागुं पचन्ति ? एवं खज्जकं ? एवं भत्तं ? अहो ! पच्चन्तवासिका नामाति यागुआदीनि गरहति । इमे पच्चन्तवासिभावेनेव साट्ठके वलेत्तुं न जानन्ति, गन्धे पिशितुं, पुष्पानि गन्धितुं न जानन्तीति वत्था वत्थ-कम्मन्तिकादयो गरहति ।

बोधिमत्तोपि दासं अपस्सन्तो—कटाहको न दिस्सति, कहां गतो, परियेय्य नन्ति—समन्ता मनुस्से पयो-जेमि । तेसु एको तत्थ गन्त्वा दिस्वा मञ्जानित्वा अतानं अजानापेत्वा गत्वा बोधिसत्तस्स आरोचेसि । बोधिसत्तो तं पवन्ति सुत्वा अयुत्तं तेन वत्तं गन्त्वा तं गहेत्वा आगच्छिस्सामीति राजानं आपुच्छित्वा महन्तेन परिवारेन निकलमि । सेट्ठी किर पच्चन्तं गच्छतीति सव्वत्थ पाकटो जातो । कटाहको सेट्ठी किर आगच्छ-तीति सुत्वा चिन्तेमि—न सो अञ्जो न कारणेन आगच्छति, मं निस्सायेवस्स आगमनेन भवितव्वं सचे पनाहं पलायिस्सामि पुनागन्तुं न गक्का भविस्सति, अत्थि पनेम उपायो मम सामिकस्स पटिपत्थं गन्त्वा दासकम्मं कत्वा तमेव आराधेस्सामीति ।

सो ततो पट्ठाय परिममञ्जे एवं भासति—अञ्जो बालमनुस्सा अत्तनो बालभावेन मातापितुन्नं अजानन्ता तेसं भोजनवेलाय अपचित्तिकम्मं अकत्वा तेहि सद्धियेव भुञ्जन्ति, मयं पन मातापितुन्नं भोजनकाले पटिगहं

उपनेम, खेलसरकं उपनेम, भोजनानि उपनेम, पानीयम्पि बीजनिम्पि गहेत्वा उपतिट्टामाति याव सरीरवलञ्जन-
काले उदककलसं आदाय पटिच्छन्नद्वानगमना सत्त्वं दासेहि सामिकानं कतव्यकिच्चं पकासेसि ।

सो एवं परिसं उग्गण्हापेत्वा बोधिसत्तस्स पच्चन्त समीपं आगतकाले ससुरं अवोच—तात ! मम
किर पिता तुम्हाकं दस्सनत्थाय आगच्छति, तुम्हे खादनीयभोजनीयं पटियादापेथ, अहं पण्णाकारं गहेत्वा पटि-
पथं गच्छामीति ।

सो साधु ताताति सम्पटिच्छि । कटाहको बहुं पण्णाकारमादाय महन्तेन परिवारेन गत्वा बोधिसत्तं
वन्दित्वा पण्णाकारमदासि । बोधिसत्तोपि पण्णाकारं गहेत्वा तेन सद्धिं पटिसन्थारं कत्वा पातरासकाले खन्धा-
वारं निवासेत्वा सरीरवलञ्जनत्थाय पटिच्छन्नद्वानं पाविसि । कटाहको अत्तनो परिवारं निवत्तेत्वा कलसं आदाय
बोधिसत्तस्स सन्निकं गत्वा उदककिच्चपरियोसाने पादेसु पतित्वा—सामि ! अहं तुम्हाकं यत्तकं इच्छथ
तत्तकं धनं दस्सामि, मा मे यमं अन्तरधायित्थानि आह । बोधिसत्तो तस्म वत्तसम्पदाय पसीदित्वा मा भायि
नत्थि [३८१] ते मम सन्निका अन्तरायोति समस्सासेत्वा पच्चन्तनगरं पाविसि । महन्तो सक्कारो अहोसि ।
कटाहकोपिस्स निरन्तरं दासेन कतव्यकिच्चं करोति ।

अथ नं एकाय वेलाय मुखनिसिन्नं पच्चन्तसेट्ठी आह—महासेट्ठि ! मया तुम्हाकं पण्णं दिस्वाव तुम्हाकं
पुत्तस्म दारिका दिन्नाति । बोधिसत्तो कटाहकं पुत्तमेव कत्वा तदनुच्छविकं पियवचनं वत्वा सेट्ठि तोसेसि ।
ततो पट्टाय कटाहकस्स मुखं उल्लोकेतुं समत्थो नाम नाहोसि । अथेकदिवसं महासत्तो सेट्ठिधीतरं पक्कोसित्वा
एहि अम्म ! सीमे मे ऊका विचिनाहीति वत्वा तं आगत्वा ऊका गहेत्वा ठितं पियवचनं वत्वा—कथेहि अम्म !
कच्चि ते मम पुत्तो मुखदुक्खेसु अप्पमत्तो उभो जना सम्मोदमाना समग्गवासं वसथाति पुच्छि ।

तात ! सेट्ठिपुत्तस्स अञ्जो दोसो नाम नत्थि केवल आहारं गरहतीति ।

अम्म ! निच्चकालमेस दुक्खमीलोव, अपि च ते अहं तस्स मुखवन्धनमन्नं दस्सामि । तं त्वं साधुकं
उग्गण्हेत्वा मम पुत्तस्स भोजनकाले गरहन्तस्स उग्गहितनियामेनेव पुरतो ठत्वा वेदय्यामीति गाथं उग्गण्हा-
पेत्वा कतिपाहं वसित्वा वाराणसिमेव अगमासि ।

कटाहकोपि बहुं खादनीयभोजनीयं आदाय अनुसगं गत्वा बहुं धनं दत्वा वन्दित्वा निवत्ति । सो
बोधिसत्तस्स गतकालतो पट्टाय अनिरेकमानी अहोसि । सो एकदिवसं सेट्ठिधीताय नानगरमभोजनं उपनेत्वा
कटच्छमादाय परिवसन्नित्था भनं गरहित् आरभि । सेट्ठिधीता बोधिसत्तस्स सन्निके उग्गहितनियामेन इमं
गाथमाहः—

बहुम्पि सो विकल्थेय्य अञ्जं जनपदं गतो,
अन्वागन्त्वान दूसेय्य भुञ्ज भोगे कटाहकाति ।

तत्थ—बहुम्पि सो विकल्थेय्य अञ्जं जनपदं गतोति यो अत्तनो जातिभूमितो अञ्जं जनपदं गतो
होति यत्थस्स जातिं न जानन्ति सो बहुम्पि विकल्थेय्य वम्भनवचनं वञ्चनवचनं वदेय्य अन्वागन्त्वान दूसेय्याति
इमं ताव वारं सामिकस्स पटिपथं गत्वा दामकिच्चस्स कत्ता कमाहि पहरित्वा पिट्टिचम्मुप्पाटनतो च लक्खण-
हनन्तो च मुत्तोमि सचे अनावारं करोमि पुन अञ्जग्गिम् आगमनवारे तव मामिको अन्वागन्त्वान दूसेय्य
इमं गेहं अनुआगत्वा कमाभिधानेहि चेव लक्खणाहननेन च जातिप्पकामनेन च तं दूसेय्य, उपहनेय्य तस्मा इमं
अनावारं पहाय भुञ्ज भोगे कटाहक ! मा पच्छा अत्तनो दामभावं पाकटं कारेत्वा विण्णटिसारी अहोसीति
अयमेत्थ सेट्ठिनो अधिप्पायो । [३८२]

सेट्ठिधीता पन एतमत्थं अजानन्ती उग्गहितनियामेन व्यञ्जनमेव पयिग्गदाहासि । कटाहको अद्धा
सेट्ठिना मम नामं^१ आचिक्खित्वा एतस्मा सत्त्वं कथिनं भविस्सतीति ततो पट्टाय पुन भत्तं गरहितुं विमहि
निहीनमानो यथालद्धं भुञ्जित्वा यथाकम्मं गतो ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहत्त्वा जातकं समोधानेमि । तदा कटाहको विकल्थिकभिक्षु अहोसि ।
वाराणसीसेट्ठि पन अहमेवाति ।

कटाहकजातकं ।

६. असिलकखणजातकं

तथेवेकस्स कइदाणन्ति इदं सत्था जेनवने विहरन्तो कोसलरज्जो असिलकखणपाठकं ब्राह्मणं आरब्धं कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

सो किर कम्मारेहि रज्जो असीनं आहटकाले असि उपसिद्धित्वा असिलकखणं उदाहरति । सो येसं हत्थतो लाभं लभति तेसं असि लकखणसम्पन्नो मङ्गलसंयुत्तोति वदति । येसं हत्थतो न लभति तेसं असि अवलकखणोति गरहति । अथेको कम्मरो असि कत्वा कोमियं सुमुगं मरिचचुण्णं पक्खिपित्वा रज्जो असि आहरि । राजा ब्राह्मणं पक्कोमापेत्वा असि वीमंसाति आह । ब्राह्मणस्स असि आकट्ठित्वा उपसिद्धन्तस्स मरिचचुण्णानि नासं पविसित्वा खिपितुकामतं उप्पादेसुं । तस्म खिपन्तस्स नासिका असिधाराय पटिहता द्विधा छिज्जि । तस्सेवं नासिकाय छिन्नभावो भिक्खुसङ्घे पाकटो जातो ।

अथेकदिवसं धम्मसभायं भिक्खू कथं समुट्ठापेसुं आवुपो ! रज्जो किर असिलकखणपाठको ब्राह्मणो असिलकखणं उपसिद्धन्तो नासिकं छिन्दापेमीति । सत्था आगन्त्वा कायनुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निस्सिताति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते न भिक्खवे ! इदानेवेसो ब्राह्मणो असि उपसिद्धन्तो नासिकाच्छेदं पत्तो पुब्बेपि पत्तोयेवाति वत्वा अतीनं आहरि :—

अतीतवत्थु

अतीने वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते तस्म असिलकखणपाठको ब्राह्मणो अहोमीति, सव्वं पञ्चु-पन्नवत्थु सदिसमेव । राजा पन तस्स वेज्जे दत्त्वा नासिकाकोटिं फासुकं कारापेत्वा लाग्वाय पटिनासिकं कारेत्वा पुन तं उपट्ठाकमेव अकामि । वाराणसिरज्जो पन पुत्तो नत्थि, एका धीता चेव भागिनेय्यो च अहेसु । सोपि उभोपि ते अत्तनो सन्तिके थं वड्ढापेसि । ते एकनो वड्ढन्ता अज्जमज्जं पटिवद्धचित्ता अहेसु । राजापि अमच्चे पक्कोसित्वा मय्हं भागिनेय्यो इमस्स रज्जस्स सामिकोव धीतरं एतस्सेव दत्त्वा अभिसेकमस्स [३८३] करोमीति वत्वा पुन चिन्तेसि मय्हं भागिनेय्यो सव्वथापि मे ज्ञातको येव एतस्स अज्जं राजधीतरं आनेत्वा अभिसेकं कत्वा धीतरं अज्जस्स रज्जो दस्सामि । एवं नो ज्ञातका बहू भविस्सन्ति द्विजम्पि रज्जानं मयमेव सामिका भविस्सामाति । सो अमच्चेहि सद्धिं सम्मन्तेत्वा उभोपेने विंसुं कानु वट्टतीति भागिनेय्यं अज्ज-स्मि निवेसने धीतरं अज्जस्मि वासेसि । ते सोलसवस्सुद्देमिकभावं पत्वा अतिविय पटिवद्धचित्ता अहेसु ।

राजकुमारो केन नुखो उपायेन मातुलधीतरं राजगेहा नीहरापेणु सक्का भवेय्याति चिन्तेन्तो अत्थेसो उपायोति महाइक्खणिक्कं पक्कोसापेत्वा तस्सा सहस्मभण्डिकं दत्त्वा किं मया कत्तव्वन्ति वुत्ते अम्म ! अज्ज तथा करोन्तिया अनिष्फत्ति नाम नत्थि किञ्चिदेव कारणं वत्वा यथा मम मातुलो राजधीतरं अन्तोगेहा नीहरापेति तथा करोहीति आह ।

साधु सामि ! अहं राजानं उपमङ्गकमित्वा एवं वक्खामि—देव ! राजधीताय उपरि कालकर्णिग अत्थि, एत्तकं कालं निवतित्वा ओलोकेत्तोपि नत्थि, अहं राजधीतरं असुकदिवसे नाम रथं आरोपेत्वा बहू आवुधहत्थे पुरिसे आदाय महन्तेन परिवारेन सुमानं गन्त्वा मण्डलपीठिकाय हेट्ठा सुसानमज्जे मतमनुस्सं निपज्जापेत्वा उपरिमज्जे राजधीतरं ठेत्वा गन्धोदकघटानं अट्ठुत्तरमतेन नहापेत्वा कालकर्णिग पवाहेस्सामीति एवं वत्वा राजधीतरं सुमानं नेस्सामि । त्वं अम्हाकं तत्थ गमनदिवसे अम्हेहि पुरेतरमेव थोकं मरिचचुण्णमादाय आवुधहत्थेहि अत्तनो मनुस्सेहि परिवुत्तो रथं आरुह्य सुसानं गन्त्वा रथं सुसानद्वारे एकदेसे ठेपेत्वा आवुधहत्थे मनुस्से सुसानवनं पेसेत्वा सयं सुसाने मण्डलपीठिकं गन्त्वा मतको विय पटिकुज्जो हुत्वा निपज्ज । अहं तत्थ आगन्त्वा तव उपरिमज्जकं अत्थरित्वा राजधीतरं उक्खित्वा मज्जे सयापेस्सामि । त्वं तस्मिं खणे मरि-

चवुण्णं नासिकाय पक्खिपित्वा द्वे तथो वारे खियेय्यासि । तथा सिपितकाले मयं राजधीतरं पहाय पलायिस्साम् ।
अथागन्त्वा राजधीतरं सीमं नहपेत्वा सयम्पि सीमं नहायित्वा तं आदाय अत्तनो निवेसनं गच्छेय्यासीति ।

सो साधु सुन्दरो उपायोति सम्पटिच्छि ।

सा गन्त्वा रज्ज्जो तमत्थं आरोचेसि । राजा सम्पटिच्छि । राजधीतायपि तं अन्तरं आचिक्खि, सापि सम्पटिच्छि । सा निक्खमनदिवसे कुमारस्स सज्जं दत्वा महन्तेन परिवारेन मुसानं गच्छन्ती आरक्खमनुस्सानं भयजननत्थं आह—मया राजधीताय मज्जे ठपितकाले हेट्टामज्जे मतपुग्गिस्सो खिपिस्सति खिपित्वा च हेट्टा [३८४] मज्जा निक्खमित्वा यं पठमं पस्सिस्सति तमेव गहेस्सति अप्पमत्ता भवेय्याथाति ।

राजकुमारो पुरेतरं गन्त्वा वृत्तनयेनेव तत्थ निगज्जि । महाइक्खगिक्का राजधीतरं उक्खिपित्वा मण्डलपीठिकट्टानं गच्छन्ती मा भायीति सज्जापेत्वा मज्जे ठपेसि । तस्मिं खण्णे कुमारो मरिचवुण्णं नासाय पक्खिपित्वा खिपि । तेन खिपितमतेपेव महाइक्खगिक्का राजधीतरं पहाय महारवं रवमाना सब्बपठमं पलायि । तस्सा पलातकालतो पट्टाय एकोपि ठातुं समत्थो नाम नाहोमि । गहितगहितानि आवुधानि छड्डेत्वा मज्जे पलायिमु ।

कुमारो यथामम्मन्तिनं सज्जं कत्वा राजधीतरं आदाय अत्तनो निवेसनं अगमासि । इक्खगिक्का गन्त्वा तं कारणं रज्ज्जो आरोचेसि । राजा पकितियापि सा मया तस्सेवत्थाय पोसिता पायासे छड्डितसपि विय जातन्ति सम्पटिच्छित्वा अपरमाणे भागिनेय्यस्स रज्जं दत्वा धीतरं महादेवि कारेसि । सो ताय सद्धिं समग्गवासं वममानो धम्मेन रज्जं कारेमि ।

सोपि असिलक्खणपाठको तस्सेव उपट्ठाको अहोमि । तस्सेकदिवसं राजुपट्टानं आगन्त्वा पटिरुरियं ठत्वा उपट्टहन्तस्स लाखा विलीयि पटिनामिका भूमियं पति । सो लज्जाय अधोमुखो अट्टासि । अथ नं राजा परिहमन्तो—आचरिय ! मा चिन्तयित्थ खिपिनं नाम एकस्स कल्याणं होति एकस्स पापकं । तुम्हेहि खिपितेन नामा छिज्जियित्थ, मयं पन मातुलधीतरं लभित्वा रज्जं पापुग्गिम्हाति वत्वा इमं गाथमाह :—

तथेवेकस्स कल्याणं तथेवेकस्स पापकं,

तस्मा सज्जं न कल्याणं सज्जं वापि न पापकन्ति ।

तत्थ—तथेवेकस्साति तदेवेकस्स । अयमेव वा पाठो । दुतियपदेपि एमेव नयो ।

इति सो इमाय गाथाय तं कारणं आहरित्वा दानादीनि पुज्जानि कत्वा यथाकम्मं गतो । सत्था इमाय देसनाय लोकसम्मत्तानं कल्याणपापकानं अनेकंसिकभावं पकामेत्वा जातकं समोधानेमि । तदा असिलक्खण-पाठको एतरहि असिलक्खणपाठकोव भागिनेय्यराजा पन अहमेवानि ।

असिलक्खणजातकं ।

७. कलण्डुकजातकं

ते देसः तानि वत्थूनीति इदं मत्था जेतवने विहरन्तो एकं विकल्पिकं भिक्षुं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

तत्थ द्वेपि वत्थू कटाहकजातकमदिसानेव । इध पनेस बाराणसीसेट्ठिनो दासो कलण्डुको [३८५] नाम अहोसि । तस्स पलायित्वा पच्चन्तसेट्ठिनो धीतरं गहेत्वा महन्तेन परिवारेन वसनकाले बाराणसीसेट्ठी परियेसापेत्वापि तस्स गतद्वान अजानन्तो गच्छ कलण्डुकं परियेसाति अत्तना पृट्ठ^१ सुकपोतकं पेसेसि । सुकपोतको इतोचित्तो च चरन्तो तं नगरं सम्पापुणि ।

तस्मिञ्च काले कलण्डुको नदीकीलं कीलितुकामो बहुं मालागन्धविलेपनञ्चेव खादनीयभोजनीयानि च गाहापेत्वा नदिं गन्त्वा सेट्ठिधीताय सद्धि नावं आरुह्य, उदके कीलति । तस्मिञ्च देसे नदीकीलं कीलन्ता इस्सरजातिका तिग्गिण्णसेज्जपरिवारितं खीरं पिबन्ति, तेन तेसं दिवसभागमपि उदके कीलन्तानं सीतं न वाधति । अयं पन कलण्डुको खीरगण्डूमं गहेत्वा मुखं विक्खालेत्वा तं खीरं नुट्ठुभति, नुट्ठुभन्तोपि उदके अनुट्ठुभित्वा सेट्ठिधीताय सीसे नुट्ठुभति ।

मुकपोतकोपि नदीतीरं गन्त्वा एकस्सा उदुम्बरसाखाय निमीदित्वा ओलोकेन्तो कलण्डुकं सञ्जानित्वा सेट्ठिधीताय सीसे नुट्ठुभन्तं दिस्वा—अरे, कलण्डुक ! दास ! अत्तनो जाति च वसनद्वानं च अनुस्सर, खीर-गण्डूमं गहेत्वा मुखं विक्खालेत्वा जानिमप्पन्नाय मुखसंवद्धाय सेट्ठिधीताय सीसे मा नुट्ठुभ, अत्तनो पमागं न जानासीति वत्वा इमं गाथमाहः—

ते देसा तानि वत्थूनि अहञ्च वनगोचरो,
अनुविच्च खो तं गहेट्ठुं पिव खीरं कलण्डुकाति ।

तत्थ—ते देसा तानि वत्थूनीति मातुकुच्छि सन्धाय वदति । अयमेत्थ अधिप्पायो । यत्थ ते वसितं न ते खत्तियधीतादीनं कुच्छिदेसा । यत्थ वासि पतिट्ठितो तानि न खत्तियधीतादीनं कुच्छिवत्थूनि अथखो दासि-कुच्छियं त्वं वसि चेव पतिट्ठितो चाति । अहञ्चवनगोचरो तिरच्छानगतोपि एतमत्थं जानामीति दीपेति । अनुविच्च खो तं गहेट्ठुन्ति एवं अनाचारं चरमानं मया गन्त्वा आरोचिते अनुविच्च जानित्वा तव सामिका तालेत्वा चेव लक्खणाहतञ्च कत्वा तं गण्ठेय्युं गहेत्वा गमिस्सन्ति, तस्मा अत्तनो पमागं ज्ञात्वा सेट्ठिधीताय सीसे अट्ठुभित्वा पिव खीरं । कलण्डुकाति तं नामेनालपति ।

कलण्डुकोपि मुकपोतकं सञ्जानित्वा मं पाकटं करेय्याति भयेन—एहि सामि ! कदा आगतोसीति आह ।

मुको न एस मं हिनकामनाय पक्कोसति गीवं पन मे वलेत्वा मारेतुकामोति ज्ञात्वाव न मे तथा अत्थोति ततो उप्पनित्वा बाराणसियं गन्त्वा यथादिट्ठं सेट्ठिनो वित्तारेन कथेसि । सेट्ठी अयुभं तेन कनन्ति वत्वा तस्स आगं कारेत्वा बाराणसिमेव तं [३८६] आनेत्वा दामपरिभोगेन परिभुज्जि ।

सत्या इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा कलण्डुको अयं भिक्षु अहोसि । बारा-णसिसेट्ठी पन अहमेवाति ।

कलण्डुकजातकं ।

८. बिलारवतजातकं

यो वे धम्मं धजं कत्वाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं कुहकभिक्षुं आरब्ध कथेसि । तदा हि सत्था तस्म कहकभावे आरोचिने न भिक्खवे ! इदानीं पुब्बेपेस कुहको येवाति वत्ता अतीतं आहरि :—

अतीतवत्थु

अतीने बाराणसियं ब्रह्मदत्तं रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो मूसिकयोनियं पटिसन्धि गहेत्वा बुद्धिमन्वाय महासरीरो पूरच्छापकसीदसो हुत्वा अनेकसतमूसिकपरिवारो^१ अरञ्जे विहरति^२ । अथेको सिगालो इतो-चित्तो च विचरन्तो तं मूसिकयूथं दिस्वा इमा मूसिका वञ्चेत्वा खादिस्सामीति चिन्तेत्वा मूसिकानं आसयस्सा-विदूरे सुरियाभिमुखो वातं पिबन्तो एकेन पादेन अट्टासि । बोधिसत्तो गोचरं चरमानो तं दिस्वा सीलवा एको भविस्सतीति तस्स सन्तिकं गन्त्वा—भन्ते ! त्वं को नामीति पुच्छि ।

धम्मिको नामाति ।

चत्तारो पादे भूमियं अट्टपेत्वा कस्मा एकेनेव ठितोसीति ?

मयि चत्तारो पादे पठवियं ठेपेन्ते पठवी वहितुं न सक्कोति तस्मा एकेनेव तिट्ठामीति ।

मुखं विवरित्वा कस्मा ठितोसीति ?

मयं अञ्जं न भवखयाम, वातमेव भवखयामाति ।

अथ कस्मै सुरियाभिमुखो तिट्ठसीति ।

सुरियं नमस्सामीति ।

बोधिसत्तो तस्स वचनं सुत्वा सीलवा एको भविस्सतीति ततो पट्टाय मूसिकगणेन सद्धि सायं पानं तस्स उपट्टानं गच्छति । अथस्स उपट्टानं कत्वा गमनकाले सिगालो सब्वपच्छिमं मूसिकं गहेत्वा मंसं खादित्वा अज्झो-हरित्वा मुखं पुञ्छित्वा तिट्ठति । अनुपुब्बेन मूसिकगणो तनुको जातो । मूसिका पुब्बे अम्हाकं अयं आसयो नण्होति निरन्तरा तिट्ठाम इदानीं सिथिलो, एवमि आसयो न पूरेवेव किंखो एतन्ति बोधिसत्तस्स तं पवन्ति आरोचयिमु । बोधिसत्तो केन नुखो कारणेन मूसिका तनुत्तं गताति चिन्तेन्तो सिगाले आसङ्कं ठपेत्वा वीम-मिस्सामि नन्ति उपट्टानकाले सेममूसिके पुरतो कत्वा सयं पच्छतो अट्ठोसि । सिगालो तस्म उपरि पक्खन्दि । बोधिसत्तो अत्तनो गणहणत्थाय पक्खन्दन्तं दिस्वा निवत्तित्वा—भो सिगाल ! इदं ते वतसमादानं न धम्म-मधम्मनाय, परेमं पन विहिमत्थाय धम्मं धजं कत्वाव चरसीति वत्ता इमं गाथमाहः—[३८७]

यो वे धम्मं धजं कत्वा निगूल्हो पापमाचरे,

विस्सासयित्वा भूतानि बिलारं नाम तं वतन्ति ।

तत्थ—यो वेति खत्तियादिसु यो कोचिदेव । धम्मं धजं कत्वाति दसकुमलकम्मपधम्मं धजं करित्वा तं करोन्तो उस्सापेत्वा दस्सेन्तोति अत्थो । विस्सासयित्वाति सीलवा अयन्ति सञ्जाय सञ्जातविस्सासानि कत्वा । बिलारं नाम तं वतन्ति तं एवं धम्मं धजं कत्वा रट्ठो पापानि करोन्नस्मेव वनं केगाटिकवतं नाम होतीति अत्थो ।

मूसिकराजा कथेन्तो कथेन्तोयेव उपपत्तित्वा तस्स गीवायं पत्तिवत्ता हनुकस्स हेट्ठा अन्तोगलनालियं डगित्वा गलनालिं फालेत्वा जीवितक्खयं पापेमि । मूसिकगणो निवत्तित्वा सिगालं मुहुभुञ्जति खादित्वा अगमासि । पठमागनाव किरस्स मंसं लभिसु, पच्छा आगता न लभिसु । ततो पट्टाय मूसिकगणो निवभयो जातो । सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेमि । तदा सिगालो कुहकभिक्षु अट्ठोसि । मूसिकराजा पन अह-मेवाति ।

बिलारवतजातकं ।

१. स्या०—अनेक सनमूसिकाहि परिवृतो । २. स्या०—विचरति ।

६, अग्गिकजातकं

नायं सिखा पुञ्ञहेतूति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो कुहकञ्जेव भिक्खुं आरब्ध कथेसि ।
पच्चुप्पन्नवत्थु हेट्ठावुत्तमदिसं ।

अतीतवत्थु

अतीतस्मिं हि वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो मूसिकराजा हुत्वा अरञ्जे वसति ।
अथेको सिगालो दवडाहे उट्ठित्ते पलायितुमसक्कोन्तो एकस्मिं रुक्खे सीसं आहच्च अट्ठासि । तस्स सकलसरीरे
लोमानि भायिसु । रुक्खे आहच्च ठितट्ठानं पन मत्थके चूना विय थोकानि लोमानि अट्ठं गु; सो एकदिवसं सोण्डियं
पानीयं पिवन्तो छायां ओलोकेन्तो चूलं दिस्वा उप्पन्न दानि मे भण्डमूलन्ति अरञ्जे विचरन्तो तं मूसिकादरिं
दिस्वा इमा मूसिका वञ्चेत्वा खादिस्सामीति हेट्ठा वुत्तनयेनेव अविदूरे अट्ठासि । अथ नं बोधिसत्तो गोचराय
चरन्तो दिस्वा मीलवाति मञ्जाय उपसङ्गमित्वा त्वं को नामोमीति पुच्छि ।

अहं अग्गिकभागद्वाजो नामाति ।

अथ कस्मा आगतोसीति ?

तुम्हाकं रक्खणत्थायाति ।

किन्ति कत्वा अम्हे रक्खिस्समीति ?

अहं अङ्गुट्ठगगनं नाम जानामि, तुम्हाकं पातोव निवखमित्वा गोचराय गमनकाले एत्तकाति गणेत्वा
पच्चागमनकालेपि गणेस्सामि । एव मायं पातं गणेन्तो रक्खिस्सामीति ।

तेनहि रक्ख मातुलाति ।

सो साधूति सम्पटिच्छित्ता निवखमनकाले एको द्वे तयोनि गणेत्वा पच्चागमनकालेपि तथेव गणेत्वा
सब्बपच्छिमं गहेत्वा खादति । सेसं [३८८] पुग्गिमदिसमेव । इध पन मूसिकराजा निवत्तित्वा ठितो—भो
अग्गिकभागद्वाज ! नायं तव धम्मनुधम्मताय मत्थके चूना ठपिता कुच्छिकारणा पन ठपिताति वत्वा इमं
गाथमाह :—

नायं सिखा पुञ्ञहेतु धासहेतु अयं सिखा,

नंउट्ठगणनं याति अलं ते हेतु अग्गिकाति ।

तत्थ—नङ्गुट्ठगणनं मातीति अङ्गुट्ठगगना वुच्चति । अयं मूसिकगणो अङ्गुट्ठगगनं न गच्छति न
उपेति नूरेति पग्गिक्खयं गच्छतीति अत्थो । अलं ते हेतु अग्गिकाति सिगालं नामेनालपन्तो आह । एत्तावता
ते अलं हेतु न इतो परं मूगिके खादिस्सामि अम्हेहि वा तथा वा सदि संवामो अलं हेतु न मयं इदानि तथा सदि
वसिस्सामाति अत्थो । सेसं पुग्गिमदिसमेव । सत्था इमं धम्मदेगन आहृत्वा जातकं समोधानेमि । तदापि
सिगालो अयं भिक्खु अहोसि । मूसिकराजा पन अहमेवाति ।

अग्गिकजातकं ।

१०. कोसियजातकं

यथा वाचा च भुञ्जस्तूति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं सावत्थियं मातुगामं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

सा किरिक्कस्स सद्धस्स पसन्नस्स उयामकब्राह्मणस्स ब्राह्मणी दुस्सीला पापधम्मा रत्ति अतिचरित्वा दिवा किञ्चि कम्मं अकत्वा गित्तानालयं दस्सेत्वा निव्यथमाना' निपज्जति । अथ नं ब्राह्मणो—किन्ने भद्दे ! अफामुकन्ति पुच्छि ।

वाता मे विज्झन्तीति ।

अथ किं लद्धं वट्टतीति ?

सिनिद्धमयुरानि पणीतपणीतानि यागुभत्तत्तेलादीनीति ।

ब्राह्मणो यं यं सा इच्छति तं तं आहरित्वा देति । दासो विय सब्बकिञ्चानि करोति । सा पन ब्राह्मणस्स गेहं पविट्ठकाले निपज्जति बहिनिकखन्तकाले जारेहि सद्धिं वीतिनामेति । अथ ब्राह्मणो इमिस्सा सरीरे विज्झन्तवातानं परियन्तो न पञ्जायतीति एकादिवसं गन्धमालादीनि आदाय जेतवनं गत्वा सत्थारं पूजेत्वा च बन्दिता च एकमन्तं निसीदित्वा किं ब्राह्मण ! न पञ्जायसीति वुत्ते—ब्राह्मणिया किर मे भन्ते ! सरीरे वाता विज्झन्ति स्वाहं तस्सा सण्णित्तेलादीनि चेव पणीतपणीतभोजनानि च परियेसामि सरीरमस्सा घनं विप्प-सन्नञ्चिविवण्णं जानं वातरोगस्स पन परियन्तो न पञ्जायति अहं तं पटिजगन्तोव इधायमनस्स ओकासं न लभामीति ।

सत्था ब्राह्मणिया पापभावं जत्वा ब्राह्मण ! एवं निपन्नस्स मातुगामस्स रोगे अवूपसन्ते इदञ्चिदञ्च भेसज्जं कातुं वट्टतीति पुब्बेपि ते पण्डितेहि कथितं भवमङ्गवेपगत्ता पन न मल्लक्खेसीति वत्वा तेन याचितो अनीतं आहरि :-[३८६]

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो ब्राह्मणमहासालकुले निव्वन्तिता वयप्पत्तो तक्क-मिनायं सञ्चमिपानि उगण्हित्वा वाराणसियं दिमापामोक्खो आचरियो अहोमि । एकसतराजधानीसु^१ खत्तिय-कुमारा च ब्राह्मणकुमारा च येभुय्येन तस्सेव सन्निके मिप्पं उगण्हन्ति । अथेको जनपदवासी ब्राह्मणो बोधि-सत्तस्स सन्निके तयो वेदे अट्टारम च विज्जाट्टानानि उगण्हित्वा वाराणसियञ्जोव कुटुम्बं सण्ठपेत्वा दिवसे दिवसे द्दित्तवत्तुं बोधिमत्तम्म सन्निकं आगच्छति । तम्म ब्राह्मणी दुस्सीला अहोमि पापधम्माति मय्यं पच्च-पन्नवत्थुमदिसमेव ।

बोधिमत्तो पन नं इमिना कारणेन ओवादगहणाय ओकासं न लभामीति वुत्ते गा मागविका इमं वञ्चेत्वा निपज्जतीति जत्वा तस्मा रोगानुच्छविकं भेसज्जं आचिक्खिस्सामीति चिन्नेत्वा आह—नात ! त्वं इतो पट्टाय तस्मा सण्णिवीररसादीनि मा अदासि । गोमुत्ते पन पञ्चपण्णानि^२ तिफलादीनि च पक्खिपित्वा कुथेत्वा^३ नवतम्बलोहभाजने पक्खिपित्वा लोहगन्धं गाहापेत्वा रज्जु वा योत्तं वा रुक्खलत्तं वा गहेत्वा इदं ते रोगस्स अनु-च्छविकं भेसज्जं इदं वा पिव उट्टाय वा तया भुत्तभन्तस्स अनुच्छविकं कम्मं करोहीति वत्वा इमं गार्थं वदेय्यामि । सचे भेसज्जं न पिवति अथ नं रज्जुया वा योत्तेन वा लताय वा कतिचि पट्टारे पट्टित्वा केमेव गहेत्वा आकड्ढित्वा कप्परेन पोथेय्यामि । तं खण्णञ्जोव उट्टाय कम्मं करिस्मतीति ।

१. स्या०—निट्ठभमाना ।

२. रो०—राजधानीसु ।

३. स्या०—पञ्चपण्णं ।

४. स्या०—कोट्टेत्वा ।

सो साधूति सम्पटिच्छित्वा वृत्तनियामेनेव भेसज्जं कत्वा—भद्दे ! इमं भेसज्जं पिवाति आह ।
केन ते इदं आचिक्खितन्ति ?

आचरियेन भदेति ।

अपनेहि तं न पिक्खिस्सामीति ।

माणवो—न त्वं अत्तनो रुचिया पिक्खिस्सामीति—रज्जुं गहेत्वा अत्तनो रोगस्स अनुच्छविकं भेसज्जं वा
पिव यागुभत्तानुच्छविकं कम्मं वा करोहीति वत्वा इमं गाथमाह :—

यथा वाचा च भुञ्जस्सु यथा भुत्तञ्च व्याहर,
उभयं ते न समेति वाचा भुत्तञ्च कोसियेति ।

तत्थ—यथा वाचा च भुञ्जस्सूति यथा ते वाचा तथा च भुञ्जस्सु वाता मे विज्झन्तीति वाचाय अनु-
च्छविकमेव कत्वा भुञ्जस्सूति अत्थो । यथा वाचं वातिपि पाठो युज्जति । यथा वाचायातिपि पठन्ति ।
मन्वत्थ अयमेवत्थो । यथाभुत्तञ्च व्याहराति यं ते भुत्तं तस्स अनुच्छविकमेव व्याहर अरोगम्हीति वत्वा गेहे
कतञ्चकम्मं करोहीति अत्थो । यथाभूतञ्चातिपि पाठो । अथवा अरोगम्हीति यथाभूतमेव वत्वा कम्मं करो-
हीति अत्थो । उभयन्ते [३६०] न समेति वाचा भुत्तञ्च कोसियेति या च ते अयं वाचा वाता मं विज्झन्तीति
यञ्च ते इदं पणीतं भोजनं भुत्तं इदं उभयम्पि तुद्दं न समेति तस्मा उट्ठाय कम्मं करोहि । कोसियेति तं गोनेन
आलपति ।

एवं वुत्ते कोमियन्नाद्वाणी^१ भीता आचरियेन उस्सुत्तं आपन्नकालतो पट्ठाय न सक्का मया एस वञ्चेतुं
उट्ठाय कम्मं करिस्सामीति उट्ठाय कम्मं अकामि । आचरियेन मे दुस्सीलभावो ज्ञानो न दानि सक्का इतो
पट्ठाय पुन एवरूपं कातुन्ति आचरिये गारवेन पापकम्मनोपि विरमित्वा सीलवती अहोसि ।

सापि ब्राह्मणी सम्मासम्बुद्धेन किग्ग्हि ज्ञाताति सत्थरि गारवेन न पुन अनाचारं अकामि ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहृत्वा जातकं समोश्चानेमि । तदा जयम्पतिका^२ पन इदानीं जयम्पतिकाव ।
आचरियो पन अहमेवाति ।

कोसियजातकं ।

कुसनालिबग्गो तेरसमो ।

१४. असम्पदानवगवर्णना

१. असम्पदानजातकं

असम्पदानेनितरीतरसाति इदं सत्था वेलुवने विहरन्तो देवदत्तं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

तस्मिं हि काले भिक्खू धम्मसभायं कथं समुट्ठापेसु आवुसो ! देवदत्तो अकतञ्जू तथागतस्स गुणं न जानातीति । सत्था आगन्त्वा कायनुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्तं न भिक्खवे ! इदानेव देवदत्तो अकतञ्जू पुव्वेपि अकतञ्जूयेवानि वत्वा अतीतं आहरि :—

अतीतवत्थु

अतीने मगधरट्ठे राजगहे एकस्मिं मगधरञ्जे रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो तस्सेव सेट्ठी अहोसि असीति-कोटिविभवो सङ्खसेट्ठीति नामेन । वाराणसियम्पि पिलियसेट्ठी नाम असीतिकोटिविभवोव अहोसि । ते अञ्जमञ्जं सहाया अहेसुं । तेसु वाराणसियं पिलियसेट्ठिस्स केनचिदेव करणीयेन महत्तं भयं उप्पज्जि । सव्वं सापतेय्यं परिहायि । सो दलिहो अप्पटिसरणो हुत्वा भरियं आदाय सङ्खसेट्ठि पच्चयं कत्वा वाराणसितो निक्खमित्वा पदसाव राजगहं पत्वा सङ्खसेट्ठिस्स निवेसनं अगमासि । सो तं दिस्वाव सहायो मे आगतोति परिस्सजित्वा सक्कारसम्मानं कारेत्वा कतिपाहं वीतिनामेत्वा एकदिवसं—किं सम्म ! केनत्थेन आगतोसीति पुच्छि ।

भयम्मे सम्म ! उप्पन्नं [३९१] सव्वं धनं परिकखीणं, उपत्थम्भो मे होहीति ।

साधु सम्म ! मा भायीति भण्डागारं विवरापेत्वा चत्तालीम हिरञ्जकोटियो दापेत्वा सेसम्पि परि-च्छेदपरिवारं सव्वं अत्तनो सन्तकं सविञ्ज्जाणकमविञ्ज्जाणकं मज्जे भिन्दित्वा उपड्डमेव अदासि । सो तं विभवं आदाय पुन वाराणसि गत्वा निवासं कप्पेसि ।

अपरभागे सङ्खसेट्ठिस्सपि तादिसमेव भयं उप्पज्जि । सो अत्तनो पटिसरणं उपधारेन्तो सहायस्स मे महा उपकारो कतो उपड्डविभवो दिन्नो । न सो मं दिस्वा परिच्चजिस्सति तस्स सन्तिकं गमिस्सामीति चिन्तेत्वा भरियं आदाय पदसाव वाराणसि गत्वा भरियं आह—भहे ! तव मया साद्धि अन्तरवीथिया गमनं नाम न वुत्तं मया पेसितयानं आरुह्य महन्नेन परिवारेन पच्छा आगमिस्ससि । याव यानं पेसेमि ताव एत्थेव होहीति वत्वा तं सालायं ठपेत्वा मयं नगरं पविमित्वा सेट्ठिस्स घरं गत्वा राजगहनगरतो तुम्हाकं सहायो सङ्ख-सेट्ठी नाम आगतोति आरोचापेसि । सो आगच्छतूति पक्कोसापेत्वा तं दिस्वा नेव आसना वुट्ठामि न पटिसन्धारं अकासि केवलं—किमत्थं आगतोसीति पुच्छि ।

तुम्हाकं दम्मनत्थं आगतोम्हीति ।

निवामो पन ते कहं गहितीति ?

न ताव निवामट्ठानं अत्थि, सेट्ठिघरणिम्पि सालायं ठपेत्वा आगतोम्हीति ।

तुम्हाकं इध निवामट्ठानं नत्थि, निवामं गहेत्वा एकस्मिं ठाने पचापेत्वा भुञ्जित्वा गच्छथ । पुन अम्हे मा पस्मित्थाति वत्वा मय्हं सहायस्स दमन्ने^१ वन्थित्वा एकं वहलपलापतुम्भं देहीति दामं आगापेसि ।

तं दिवमं किर सो रत्तगालीनं सकटसहम्ममत्तं ओपुनापेत्वा कोट्टागारं पूगपेसि । चत्तालीसकोटिधनं गहेत्वा आगतो अकतञ्जू महाचोरो सहायरम तुम्भमत्ते पलापे दापेसि । दामो पच्छियं एकं पलापतुम्भं पक्खि-पापेत्वा बोधिसत्तस्स सन्तिकं अगमासि ।

बोधिसत्तो चिन्तेमि अयं अमप्पुग्गिो मम सन्निका चत्तालीसकोटिधनविभवं लभित्वा इदानि पला-पतुम्भं दापेमि, गण्हामि नुवो मा गण्हामीति । अथस्म एतदहोमि, अयं नाव अकतञ्जू मित्तदुभी कतविनासक-

भावेन मया सद्धिं मित्तभावं भिन्दि सचाहं ऐतेन दिन्नं पलापतुम्बं लामकत्ता न गण्हिस्सामि अहम्पि मित्तभावं भिन्दिस्सामि । अन्धवाला परित्तकं लद्धं अगण्हन्ता मित्तभावं विनासेन्ति । अहं पन एतेन दिन्नं पलापतुम्बं गहेत्वा मम वसेन मित्तभावं पतिट्ठापेस्सामीति । सो पलापतुम्बं दमन्ते बन्धित्वा पासादा ओरुह् सालं अगमासि ।

अथ नं भरिया—किं ते अय्य ! लद्धन्ति पुच्छि ।

भद्दे ! अम्हाकं महायो पिलियमेट्ठी पलापतुम्बं दत्त्वा अम्हे अज्जेव विस्सज्जेमीति । [२६२]

मा—अय्य ! किमत्थं अग्गहेमि ? किं एतं चत्तालीसकोटिधनस्स अनुच्छविकन्ति रोदितुं आग्भि ।

बोधिसत्तो—भद्दे ! मा रोदि अहं तेन सद्धिं मित्तभाव-भेदभयेन मम वमेन मित्तभावं ठपेतुं गण्हि ।

त्वं किंकारणा सोचसीति वत्त्वा इमं गाथमाह—

असम्पदानेनितरोतरस्स बालस्स मित्तानि कली भवन्ति,

तस्मा हरामि भुसं अड्डमानं मा मे भित्ति भिज्जित्थं सस्सतायन्ति ।

तत्थ—असम्पदानेनाति अमम्पादानेन^१ सरलोपेन मन्धि । अगहणेनाति अत्थो । इतरोतरस्साति यस्स कस्मचि लामकाजामकस्सापि । बालस्स मित्तानि कली भवन्तीति दन्धस्म अपञ्चास्स मित्तानिखलितानि^२ कानकणिगसदिमानि होन्ति, भिज्जन्तीति अत्थो । तस्मा हरामि भुसं अड्डमानन्ति तेन काग्गोनाहं सहायेन दिन्नं एकं पलापतुम्बं हरामि गण्हामीति दस्सेति । मानन्तिहि अट्ठन्नं नालीनं नाम । चतुन्नं अड्डमानानं चतस्मो च नालियो तुम्बो नाम, तेन वुत्तं पलापतुम्बन्ति । मा मे भित्ति भिज्जित्थं सस्सतायन्ति मम सहायेन सद्धिं मेत्ति मा भिज्जित्थं सस्सता व अयं होतूति अत्थो ।

एवं वुत्तेपि सेट्ठिभरिया रोदनेव । तस्मिं खगे सङ्खसेट्ठिना पिलियसेट्ठिस्स दिन्नो कम्मन्तदासो साला-द्वारेन आगच्छन्तो सेट्ठिभरियाय रोदनं मुत्त्वा सालं पक्खित्वा अत्तनो सामिके दिस्वा पादेशु पतित्वा रोदित्वा कन्दित्वा किमत्थं इधागतत्थं मामीति पुच्छि । सेट्ठी सव्वं आरोचेमि । कम्मन्तदासो होतु सामि ! मा चिन्ते-थाति उभोपि अस्सासेत्त्वा अत्तनो गेहं नेत्वा गन्धोदकेन नहपेत्वा भोजेत्वा सामिका वो आगताति सेमदामे सन्निपातेत्वा दस्सेत्वा कनिमाहं वीतिनामेत्वा सव्वे दामे गहेत्वा राजङ्गणं गत्त्वा उपरवं अवासि । राजा पक्को-सापेत्वा किमेतन्ति पुच्छि । ते सव्वं तं पवन्ति रज्जो आरोचेमि ।

राजा तेमं वचनं सुत्वा उभोपि सेट्ठी पक्कोसापेत्वा सङ्खगेट्ठि पुच्छि—सच्चं किर तथा महामेट्ठि ! पिलियसेट्ठिस्स चत्तालीसकोटिधनं दिन्नन्ति ।

महाराज ! मम सहायस्स मं तक्केत्वा राजगहं आगतस्स न केवलं धनं मव्वं विभवजातं सविज्जाण-काविज्जाणकं द्वे कोट्टासे कत्वा समभागे अदासिन्ति ।

राजा सच्चमेतन्ति पिलियसेट्ठि पुच्छि ।

आम देवाति ।

तथा पनस्स तज्जेव तक्केत्वा आगतस्म अत्थि कोचि सक्कारो वा सम्मानो वा कतोति ?

सो तुण्ही अहोसि ।

अपि च पन ते एतस्स पलापतुम्बमनं दगन्ने पक्खिगापेत्वा [३६३] दापितं अत्थीति ?

तम्पि सुत्वा तुण्ही येव अहोसि ।

राजा किं कातव्वन्ति अमच्चेहि सद्धिं मन्नेत्वा तं परिभासित्वा—गच्छथ पिलियसेट्ठिस्स घरे सव्वं विभवं सङ्खसेट्ठिस्स देथाति आह ।

बोधिसत्तो—महाराज ! मद्धं परमन्तकेन अत्थो नत्थि मया दिन्नमत्तमेव पन दापेथाति ।

राजा बोधिसत्तस्स मन्तकं दापेसि । बोधिसत्तो मव्वं अत्तना दिन्नविभवं पटिलभित्वा दासपरिसपरि-वुत्तो राजगहमेव गन्त्वा कुटुम्बं सण्ठपेत्वा दानादीनि पुञ्जानि कत्वा यथाकम्सं गतो ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा पिलियसेट्ठी देवदत्तो अहोसि । सङ्ख-सेट्ठी पन अहमेवाति ।

असम्पदानजातकं ।

१. सी०—जीवित्थ । २. स्या०—असम्पदानेन । ३. स्या०—कलीनाम ।

२. पञ्चभीरुकजातकं

कुसलूपदेसे धितिया दल्हाय चाति इदं मत्था जेतवने विहरन्तो अजपालनिग्रोधे मारधीतानं पलोभन-
सुत्तन्तं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

भगवता हि आदितो पट्टायः—

दह्ल्लमाना आगच्छं तण्हा च श्ररती रगा,
ता तत्थ पनुदी सत्था तूलं भट्ठं व मालुतोति

एवं याव परियोसाना तस्स सुत्तन्तस्स कथितकाले धम्मसभायं सन्निपतिता भिक्खू कथं समुदापेसुं—
आवुसो ! सम्मासम्बुद्धो मारधीतरो अनेकसतानि दिव्वरूपानि मापेत्वा पलोभनत्थाय उपसङ्कमन्तिथो
अक्खीनिपि उम्मीलेत्वा न ओलोकेसि । अहो ! बुद्धबलं नाम अच्छरियन्ति !

सत्था आगन्त्वा कायनुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते
न भिक्खवे ! इदानीं मय्हं सव्वासवे खेपेत्वा सव्वञ्जुतं पत्तस्स मारधीतानं अनोलोकनं नाम अच्छरियं अहं
हि पुव्वे बोधि परियेसमानो सक्किनेसकालेपि अभिसङ्खतं दिव्वरूपम्पि इन्द्रियाणि भिन्दित्वा किलेसवसेन
अनोलोकेत्वाव गत्त्वा महारज्जं पापुणिन्ति वत्ता अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीने बाह्मणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो भातिकमतस्स कनिट्ठो अहोमीति । सव्वं हेट्ठा
तक्कसिलाजातके वृत्तयेनेव वित्थारेतव्वं । तदा पन तक्कसिलानगरवासीहि बहिनगरे सालाय बोधिसत्तं
उपसङ्कमित्वा याचित्वा रज्जं पटिच्छापेत्वा अभिसेके कने तक्कसिलानगरवासिनो नगरं देवनगरं विय च
राजभवनं इन्दभवनं विय च अलङ्कग्गिमु । तदा पन बोधिसत्तो नगरं पविसित्वा राजभवने पासादे महातले
समुत्सापितसेतच्छतं रतनवरपल्लङ्कं [३९४] आरुह्य देवराजलील्लहाय निमीदि । अमच्चा च बाह्मणगह-
पतिकादयो च खत्तिक्कुमागा च सव्वावङ्कारपतिमण्डिता परिवारेत्वा अट्ठंसु । देवच्छग्गपटिभागा सोलस-
सहस्सा नाटकित्थियो नच्चगीतवादितकुसला उत्तमविनायकमम्पन्ना नच्चगीतवादितानि पयोजेसु । गीतवा-
दितसद्देन राजभवनं मेघत्थनितपूरितो महासमुद्दकुच्छि विय एकत्तिन्नादं अहोमि । बोधिसत्तो तं अत्तनो सिग्गि-
सोभग्गं ओलोकयमानो चिन्नेसि, सचाहं तामं यक्खिणीनं अभिसङ्खतं दिव्वरूपं ओलोकिस्सं जीवितक्खयं पत्तो
अभविस्सं इमं सिग्गिसोभग्गं न ओलोकिस्सं पच्चेकवुद्धानं पन ओवादे ठितभावेन इदं मया पत्तन्ति एवञ्च पन
चिन्नेत्वा उदानं उदानेन्तो इमं गाथमाहः—

कुसलूपदेसे धितिया दल्हाय च
अवत्थितत्ता भयभीरुताय च,
न रक्खसीनं वसमागमिम्हा
स सोत्थिभावो मह्ता भयेन मेति ।

तत्थ—कुसलूपदेसेति कुमलानं उपदेसं पच्चेकवुद्धानं ओवादेति अत्थो । धितिया दल्हाय चाति
दल्हाय धितिया च थिरेन अव्वोच्छिन्ननिर्न्तरविरियेन चाति अत्थो । अवत्थितत्ता भयभीरुताय चाति अभय-
भीरुताय अवत्थितत्ता च । तत्थ भयन्ति चित्तुवासमत्तं परित्तभयं । भीरुताति सरीरकम्पनप्पत्तं महाभयं ।
इदं उभयस्मि महासतस्स यक्खिणीयो नामेता मनुस्सखादिकानि भेरवारम्मणं दिस्वापि नाहोमि । तेनाह
अवत्थितत्ता भयभीरुताय चाति । भयभीरुताय अभावेनेव भेरवारम्मणं दिस्वापि अनिवत्तनभावेनाति अत्थो ।
न रक्खसीनं वसमागमिम्हाति यक्खकन्तारे तामं रक्खमीनं वमं न आगमिम्हा, यस्मा अम्हाकं कुसलूपदेसे धिति
च दल्हा अहोसि । भयभीरुताभावेन च अनिवत्तनमभावा अहुम्हा, तस्मा रक्खमीनं वमं न आगमिम्हाति

वुत्तं होति । स सोत्थिभावो महता भयेन मेति सो मे अयं अज्ज महता भयेन रक्खसीनं सन्तिका पत्तब्बेन दुक्खदोमनस्सेन सोत्थिभावो खेमभावो पीतिसोमनस्सभावो येव जातोति ।

एवं महासत्तो इमाय गाथाय धम्मं देसेत्वा धम्मेन रज्जं कारेत्वा दानादीनि पुञ्ञानि कत्वा यथाकम्मं गतो । सत्था इमं धम्मदेमनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । अहं तेन समयेन तक्कसिलं गत्वा रज्जप्पत्त-कुमारो अहोसिन्ति ।

पञ्चभीरुकजातकं ।

३. घतासनजातकं

खेमं यहिन्ति इदं सत्था--जेतवने विहरन्तो अञ्जातरं भिक्खुं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपसवत्थु

सो हि भिक्खु सत्थु सन्तिके कम्मट्ठानं गृहेत्वा पच्चन्तं गत्वा एकं गामकं उपनिस्साय आरब्धं सेनासने व्रसं उपगच्छि । तस्स पठममासेयेव पिण्डाय पविट्ठस्स पण्णसाला भायित्थ । सो वसनट्ठानाभावेन किलमन्तो उपट्ठाकानं आचिक्खि । ते होनु भन्ने ! पण्णसालं करिस्साम, कसाम ताव, वपाम तावाति आदीनि वदन्ता तेमासं वीतिनामेसुं । सो सेनासनसप्पायाभावेन कम्मट्ठानं मत्थकं पापेतुं नासक्खि । सो निमित्तमत्तम्पि अनुत्पादेत्वा वृत्थवस्सो जेतवनं गत्वा सत्थारं वन्दित्वा एकमन्तं निसीदि । सत्था तेन सद्धि पटिसन्थारं कत्वा किन्नुखो ते भिक्खु ! कम्मट्ठानं सप्पायं जातन्ति पुच्छि । सो आदितो पट्टाय असप्पायभावं कथेसि ।

सत्था--पुत्रे खो भिक्खु ! तिरच्छानापि अत्तनो सप्पायासप्पायं जत्वा सप्पायकाले वमित्वा असप्पायकाले वसनट्ठानं पहाय अञ्जात्थ अगमंमु, त्वं कस्मा अत्तनो सप्पायामप्पायं न अञ्जासीति वत्वा तेन याचितो अतीतं आहरि :-

अतीतवत्थु

अतीने वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ने बोधिसत्तो सकुणयोनिं निव्वत्तित्वा विञ्जुतं पत्वा सोभ-
गप्यन्तो सकुणराजा हुत्वा एकस्मि अरञ्जायतने जातम्मरतीरे साखाविटपसम्पन्नं बहलपत्तपलासं महारुक्खं
उपनिस्साय सयरिवारो वासं कप्पेसि । बहू सकुणा तस्म रुक्खस्म उदकमत्थके पत्थटमाखासु वसन्ता सरीरव-
लज्जं उदके पावेन्ति । तस्मिञ्च जातस्सरे चण्डो नागराजा वसति । तस्म एतद्दहोमि इमे सकुणा मय्हं निवासे
जातस्सरे सरीरवलज्जं पावेन्ति । यन्ननाहं उदकतो अग्निं उट्ठापेत्वा रुक्खं भापेत्वा एते पलापेय्यन्ति । सो बुद्ध-
मानसो रत्तिभागे सञ्चेसं सकुणानं सन्नपितित्वा रुक्खसाखासु निपन्नकाले पठमं ताव उद्धनारोपितं विय उदकं
पक्कुट्ठापेत्वा दुत्तिप्रवारे धूमं उट्ठापेत्वा तत्तिप्रवारे तालकवन्धपमागं जालं उट्ठापेसि । बोधिसत्तो उदकतो
जातं उद्धमानं दिस्वा--भो सकुणा ! अग्निता आदिनं नाम उदकेन निव्वापेन्ति इदानीं पन उदकमेव आदितं
न सकका अम्हेहि इथ वमितुं, अञ्जात्थ गमिस्सामाति वत्वा इमं गाथमाह :-

खेमं यहिं तत्थ अरी उदीरितो

उदकस्स मज्झे जलते घतासनो

न अज्ज वासो महिया महीरुहे

दिसा भजह्वो सरणज्ज नो भयन्ति । [३६६]

तत्थ--खेमं यहिं तत्थ अरी उदीरितोति यस्मि उदकपिट्ठे खेमभावो निव्वभयभावो तस्मि सत्तु पच्चत्थीको
सत्तो' उट्ठितो । उदकस्साति जलस्स । घतासनोति अग्नि । सो हि घनं अमनानि तस्मा घतामनोति वुच्चति ।
न अज्ज वासोति अज्ज नो वासो नत्थि । महिया महीरुहेति महीरुहो वुच्चति रुक्खो । तस्मि इमिस्मा
महिया जाने रुक्खेति अत्थो । दिसाभजह्वोति दिसा भजय गच्छय । सरणज्ज नो भयन्ति अज्जम्हाकं मग्ग-
तोव भयं जातं । पटिमरणट्ठानतो भयं उण्णन्ति अत्थो ।

एवं वत्वा बोधिसत्तो अत्तनो वचनकरे सकुणे आदाय उण्णित्वा अञ्जात्थ गतो । बोधिसत्तस्स पन
वचनं आहत्वा ठितसकुणा जीवितकख्यं पत्ता । सत्था इमं धम्मदेमनं आहरित्वा सच्चानि पकासेत्वा
जातकं समोशनेमि । सच्चारियोमाने सो भिक्खु अरहन्ते पत्तिट्ठामि । तदा बोधिसत्तस्स वचनकरा सकुणा
बुद्धपरिसा । सकुणराज पन अहमेवाति ।

घतासनजातकं ।

४. भानसोधनजातकं

ये सञ्जिज्ञानोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो सङ्कस्स नगरद्वारे अत्तना सङ्खित्तेन पुच्छितपञ्हस्स धम्म-
सेनापतिनो वित्थारव्याकरणं आरब्ध कथेसि । तत्रिदं अतीतवत्थुः—

अतीतवत्थु

अतीते किर वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो अरञ्जायतने कालं करोन्तो अन्तेवासिकेहि
पुच्छितो नेवसञ्जिनासञ्जीति आह—ये—तापसा जेट्ठन्तेवासिकस्स कथं न गण्हिमु । बोधिसत्तो आभस्सरतो
आगन्त्वा आकासे ठत्वा इमं गाथमाहः—

ये सञ्जिज्ञानो तेपि दुग्गता
येपि असञ्जिज्ञानो तेपि दुग्गता,
एतं उभयं विवज्जय
तं समापत्तिसुखं अनङ्गणन्ति ।

तत्थ—ये सञ्जिज्ञानोति ठपेत्वा नेवसञ्जानासञ्जायतनलाभिनो अवसेसे सचित्तकसत्ते दस्सेति ।
तेपि दुग्गताति तस्सा समापत्तिया अलाभतो तेपि दुग्गता नाम । येपि असञ्जिज्ञानोति असञ्जिभवे निव्वत्ते
अचित्तकसत्ते दस्सेति । तेपि दुग्गताति तेपि इमिस्सायेव समापत्तिया अलाभतो दुग्गता येव नाम । एतं उभयं
विवज्जयाति एतं उभयम्पि सञ्जीभावञ्च असञ्जीभावञ्च विवज्जय पजहाति अन्तेवासिकं ओवदि ।
तं समापत्तिसुखं अनङ्गणन्ति तं नेवसञ्जानासञ्जायतन [३६७] समापत्तिलाभिनो सन्तट्ठेन सुखन्ति
सङ्खं गतं भानमुखं अनङ्गाणं निदोसं बलवचित्तेकगतासभावेनापि तं अनङ्गाणं नाम जातं ।

एवं बोधिसत्तो धम्मं देसेत्वा अन्तेवासिकस्स गुणं कथेत्वा ब्रह्मलोकमेव अगमासि । तदा सेसनापसा
जेट्ठन्तेवासिकस्स सद्दिहसु । सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा जेट्ठन्तेवासिको सारि-
पुत्तो अहोसि, महाब्रह्मा पन अहमेवाति ।

भानसोधनजातकं ।

५. चन्दाभजातकं

चन्दाभन्ति इदम्पि सत्था जेतवने विहरन्तो सङ्कस्सनगरद्वारे थेरस्सेव पञ्चव्याकरणं आरब्ध कथेसिः—

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्तं रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो अरञ्जायतने कालं करोन्तो अन्तेवासिकेहि पुच्छितो चन्दाभं सुरियाभन्ति वत्वा आभस्सरेस्सु निव्वत्तो । तापसा जेट्टन्तेवासिकस्स न सद्दिंसु । बोधिसत्तो आगन्त्वा आकासे ठितो इमं गाथमाह :—

चन्दाभं सुरियाभञ्च योध पञ्जाय गाधति,
अवितक्केन भानेन होति आभस्सरूपगोति ।

तत्थ—चन्दाभन्ति ओदातकसिणं दस्सेति । सुरियाभन्ति पीतकसिणं । योध पञ्जाय गाधतीति यो पुगलो इध सत्तलोके इदं कसिणद्वयं पञ्जाय भावेति, आरम्भणं कत्वा अनुपविसति तत्थ च पतिट्ठति । अथवा चन्दाभं सुरियाभञ्च योध पञ्जाय गाधतीति यत्तकं ठानं चन्दाभञ्च सुरियाभञ्च पत्थटं, तत्तके ठाने पटिभागं कसिणं वड्ढेत्वा तं आरम्भणं कत्वा भानं निव्वत्तेन्तो उभयम्पेतं आभं पञ्जाय भावेति नाम । तस्मा अयम्पेत्य अत्थोयेव । अवितक्केन भानेन होति आभस्सरूपगोति सो पुगलो तथाकत्वा पटिलद्धेन दुतियेन भानेन आभस्सरब्रह्मलोकूपगोव होतीति ।

एवं बोधिसत्तो तापसे बोधेत्वा जेट्टन्तेवासिकस्स गुणं कथेत्वा ब्रह्मलोकमेव गतो ।

सत्था इमं धम्म-देमनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा जेट्टन्तेवासिको सारिपुत्तो । महाब्रह्मा पन अहमेवाति ।

चन्दाभजातकं । [३६८]

६. सुवर्णहंसजातकं

यं लब्धं तेन तुष्टुवन्ति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो थुल्लनन्दं भिक्खुनि आरब्ध कथेति ।

पञ्चपन्नवत्थु

सावत्थियं हि अञ्जितरो उपासको भिक्खुनीमङ्गलं लसुणेन पवारेत्वा खेतपालं आणापेसि, सचे भिक्खु-
नियो आगच्छन्ति एकेकाय भिक्खुनिया द्वे तयो भण्डिका देहीति । ततो पट्टाय भिक्खुनियो तस्स गेहम्पि खेतम्पि
लसुणत्थाय गच्छन्ति । अथेकस्मि उस्सवदिवसे तस्स गेहे लसुणं परिकव्वयं अगमासि । थुल्लनन्दा भिक्खुनी
सपरिवारा गेहं गत्वा लसुणेनावुसो ! अत्थोति वत्वा नत्थय्ये ! यथाभूतं लसुणं परिवव्वीणं । खेतं गच्छ-
थाति वृत्ता खेतं गत्वा न मत्तं जानित्वा लसुणं आहरापेसि । खेतपालो उज्झायि—कथं हि नाम भिक्खुनियो
न मत्तं जानित्वा लसुणं हरापेस्सन्तीति ।

तस्स कथं सुत्वा या ता भिक्खुनियो अप्पिच्छा तापि, तासं गुत्वा भिक्खूपि उज्झायिमु । उज्झायित्वा
च पन भगवतो एनमत्थं आरोचेसु । भगवा थुल्लनन्दं भिक्खुनि गरहित्वा—भिक्खवे ! महिच्छो पुगलो
नाम विजातमातुयापि अप्पियो होति अमनापो अप्पसन्ने पसादेतु पसन्नानं वा भीयोसोमत्ताय पसादं जनेतु अनु-
पन्नं लाभं उप्पादेतु उप्पन्नं वा पन थिरं कातु न सक्कोति । अप्पिच्छो पन पुगलो अप्पसन्ने पसादेतु पसन्नानं
भीयोसोमत्ताय पसादं जनेतु अनुपन्नं लाभं उप्पादेतु उप्पन्नं वा पन थिरं कातु सक्कोतीति आदिना नयेन भिक्खूनां
तदनुच्छविकं धम्मं कथेत्वा न भिक्खवे ! थुल्लनन्दा इदानीं महिच्छा, पुव्वेपि महिच्छायेयाति वत्वा अतीनं
आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीने बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो अञ्जितरम्मि ब्राह्मणवुले निव्वत्ति । तस्स
वयप्पत्तस्स समजातिककुला पजापति आहरिंसु । तस्सा नन्दा नन्दवती सुनन्दाति तस्सो धीतरो अहेसु ।
तासु परकुलं अगतासुयेव बोधिसत्तो कालं कत्वा सुवर्णहंसयोनियं निव्वत्ति । जातिस्सरञ्जाराणञ्चस्स उप्पज्जि
सो वयप्पत्तो हुत्वा सुवर्णपत्तसञ्जञ्जं सोभगपत्तं महन्नं अत्तभावं दिस्वा कुतो नुखो चवित्वा
अहं इत्थूपपन्नोति आवज्जेन्तो मनुस्सलोकनोति ज्ञत्वा पुन कथं नुखो मे ब्राह्मणी च धीतरो च जीवन्तीति उप-
धारेन्तो परेसं भति कत्वा किञ्चेन जीवन्तीति ज्ञत्वा चिन्नेमि—मय्हं मरीरे सोवर्णमयानि पत्तानि कोट्टनघट्ट-
नक्खमानि^१ इतो तासं एकेकं पत्तं दस्सामि, तेन मे पजापती च धीतरो च मुखं जीवस्सन्तीति ।

सो तत्थ गत्वा पिट्ठिवंसकोटियं निवीयि । ब्राह्मणी च धीतरो च बोधिमत्तं दिस्वा—कुतो आग-
तोसि [३६६] सामीति पुच्छिमु ।

अहं तुम्हाकं पिता, कालं कत्वा सुवर्णहंसयोनियं निव्वत्ति तुम्हे दट्ठु आगतो । इतो पट्टाय तुम्हाकं
परेसं भति कत्वा दुक्खजीविकाय जीवनकिच्चं नत्थि । अहं वो एकेकं पत्तं दस्सामि, तं त्रिक्रिणित्वा सुखेन
जीवथाति एकं पत्तं दत्वा अगमासि ।

सो एतेनेव नियमेन अन्तरन्तरा आगत्वा एकेकं पत्तं देति । ब्राह्मणी च धीतरो च अड्ढा मुखिता
अहेसु । अथेकदिवसं सा ब्राह्मणी धीतरो आमन्नेसि—अम्मा ! निरच्छानानं नाम चित्तं दुज्जानं, कदाचि
वो पिता इध नागच्छेय्य, इदानीस्स आगतकाले सव्वानि पत्तानि लुञ्चित्वा गण्हामाति । ता एवं नो पिता
किलमिस्सतीति न सम्पटिच्छिंषु । ब्राह्मणी पन महिच्छताय पुनेकदिवसं सुवर्णगजहंसस्स आगतकाले एहि
ताव सामीति वत्वा तं अत्तनो सन्तिकं उपगतं उभोहि हत्थेहि गहेत्वा सव्वपत्तानि लुञ्चि । तानि पन बोधि-
सत्तस्स र्वचि विना बलक्कारेन गहितत्ता सव्वानि वक्कपत्तमदिसानि अहेसु । बोधिसत्तो पक्खे पसारेत्वा गन्तुं

नामकिं । अथ नं सा महाचाटियं पक्खित्वा पोसेसि । तस्मै पुन उट्टहन्तानि पत्तानि सेतानि सम्पज्जिसु । सो सञ्जातपक्खो उप्पत्तिवा अत्तनो वसनट्टानमेव गत्वा न पुन अगमासीति ।

सत्या इमं अतीतं आहरित्वा न भिक्खवे ! थुल्लनन्दा इदानीं महिच्छा, पुब्बेपि महिच्छायेव, महिच्छनाय च पन सुवर्णम्हा परिहीना, इदानीं पन अत्तनो महिच्छताय एव लसुणम्हापि परिहायिस्सति । तस्मा इतो पट्ठाय लसुणं खादितुं न लभिस्सति, यथा च थुल्लनन्दा एवं तं निस्साय सेसं भिक्खूनिथोपि । तस्मा बहुं लभित्वापि पमाणमेव जानितव्वं, अप्पं लभित्वा पन यथा लद्धेनेव सन्तोसो कातव्वो उत्तरिं न पत्थेतव्वन्ति वत्वा इमं गाथमाहः—

यं लद्धं तेन तुट्ठञ्चं अतिलोभो हि पापको,
हंतराजं गहेत्वा न सुवर्णा परिहायथाति ।

तत्थ—तुट्ठञ्चन्ति तुस्सितव्वं । इदम्पन वत्वा सत्या अनेकपरियायेन गरहित्वा या पन भिक्खुनी लसुणं खादेष्य पाचित्तियन्ति^१ सिक्खापदं पञ्चापेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा ब्राह्मणी अयं थुल्लनन्दा अहोसि । तिस्सो धोतरो इदानीं तिस्सो प्रेव भगिनियो । सुवर्णाराजहंसो पन अहमेवाति ।

सुवर्णहंसजातकं । [४००]

७. बन्धुजातकं

यत्येको लभते बन्धूति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो काणामातु सिक्खापदं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थ

सावत्थियं हि काणमाता नाम धीतुवसेन पाकटनामा उपासिका अहोसि सोतापन्ना अरियसाविका । सा धीतरं कारणं अञ्जतरस्मिं गामके सामानजातियस्स पुरिस्स अदासि । काणा केनचिदेव करणीयेन मातु घरं अगमासि ।

अथस्सा सामिको कतिपाहच्चयेन दूतं पाहेसि आगच्छनु काणा इच्छामि काणाय आगतन्ति । काणा दूतस्स वचनं सुत्वा अम्म ! गमिस्सामीति मातरं आपुच्छि । काणमाता एतकं कालं वसित्वा कथं तुच्छहत्थाव गमिस्ससीति पूर्वं पचि । तस्मिं खणे एको पिण्डचारिको भिक्खु तस्सा निवेसनं अगमासि । उपासिका तं निसीदापेत्वा पत्तपूर्वं दापेसि । सो निक्खमित्वा अञ्जास्स आचिक्खि । तस्सपि तथेव दापेसि । सोपि निक्खमित्वा अञ्जास्स आचिक्खि, तस्सपि तथेवाति एवं चतुन्नं जनानं दापेसि । यथापटियत्तं पूर्वं परिक्खयं अगमासि । काणाय गमनं न सम्पज्जि ।

अथस्सा सामिको दुतियम्पि दूतं पाहेसि । तनियम्पाहेन्तो च सचे काणा नागच्छिस्सति अहं अञ्जं पजापति आनेस्सामीति पाहेसि । तयोपि वारे तेनेव उपायेन गमनं न सम्पज्जि । काणाय सामिको अञ्जं पजापति आनेसि । काणा तं पवति सुत्वा रोदमाना अट्टामि ।

सत्था तं कारणं ज्ञत्वा पुब्बण्हमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय काणामातुया निवेसनं गत्वा पञ्चात्तामने निमीदित्वा काणमातरं पुच्छि किस्सायं काणा रोदतीति । इमिना नाम कारणेनानि च सुत्वा काणमातरो समस्मासेत्वा धम्मकथं कथेत्वा उट्टयासना विहारं अगमासि ।

अथ तेसं चतुन्नं भिक्खूनं तयो वारे यथापटियत्तं पूर्वं गहेत्वा काणाय गमनस्स उपच्छिन्नभावो भिक्खु-सङ्घे पाकटो जातो । अथेकदिवसं भिक्खू धम्मसभायं कथं समुट्टापेमु—आवुसो ! चतुहि नाम भिक्खूहि तयो वारे काणामातुया पक्कपूर्वं खादित्वा काणाय गमनन्तरायं कत्वा सामिकेन परिच्चत्तं धीतरं निस्साय महाउपासिकाय दोमनस्सं उप्पादितन्ति । सत्था आगत्वा कायनुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्नि-सिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते न भिक्खवे ! इदानीव ते चत्तारो भिक्खू काणामातुया सत्तकं खादित्वा तस्सा दोमनस्सं उप्पादेमु पुब्बेपि उप्पादेसु येवाति वत्वा अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थ

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो पासाणकोट्टककुले निव्वत्तित्वा वयप्पत्तो परियो-दातसिप्पो अहोसि । कासिरट्ठे एकस्मिं निगमे एको महाविभवो [४०१] सेट्ठी अहोसि । तस्स निधानगता-येव चत्तालीसहिरञ्जाकोटियो अहेसुं । अथस्स भरिया कालं कत्वा धनसिनेहेन गत्वा धनपिट्ठियं मूसिका हुत्वा निब्वत्ति । एवं अनुक्कमेन सब्बम्पि तं कुलं अवभत्थं अगमासि । वंसो उपच्छिज्जि । सो गामोपि छड्डितो अण्णत्तिकभावं अगमासि । तदा बोधिसत्तो तस्मिं पुराणगामट्टाने पासाणे उप्पाटेत्वा कोट्टेति । अथ सा मूसिका गोचराय चरमाना बोधिसत्तं पुनप्पुनं पस्सन्ती उप्पन्नसिनेहा हुत्वा चित्तेसि मय्हं धनं बहुं निक्कारणेन नस्सति, इमिना सद्धिं एकतो हुत्वा इमं धनं खादिस्सामीति एकदिवसं एकं कहापरणं मुखेन डसित्वा बोधिसत्तस्स सन्तिकं अगमासि । सो तं दिस्वा पियवाचाय समालपन्तो—किन्नुखो अम्म ! कहापरणं गहेत्वा आगतासीति आह ।

तात ! इमं गहेत्वा अत्तनापि परिभुञ्ज मय्हम्पि मंसं आहारानि ।

सो सावूति सम्पटिच्छित्वा कहापगं आदाय नगरं गन्त्वा एकेन मासकेन मंसं किरित्वा आहरित्वा तस्मा अदासि । सा तं गहेत्वा अत्तनो निवासट्टानं गन्त्वा यथारुचिया खादि । ततो पट्टाय इमिनाव नियामेन दिवसे दिवसे बोधिसत्तस्स कहापगं देति । सोपिस्सा मंसं आहरति । अथेकदिवसं तं मूसिकं विलारो अगगहेसि । अथ नं सा एवमाह—पामि ! मा मं मारेहीति ।

किंकारणा ?

अहं हि द्यातो मंसं खादितुकामो न सक्का मया न मारेतुन्ति ।

किम्पन एकदिवसं एकमेव मंसं खादितुकामोसि, उदाहु निच्चकालन्ति ?

लभमानो निच्चम्पि खादितुकामोम्हीति ।

यदि एवं अहं ते निच्चकालं मंसं दस्सामि विस्सज्जेहि मन्ति ।

अथ नं विलारो तेन हि अप्पमत्ता होहीति विस्सज्जेसि । ततो पट्टाय सा अत्तनो आभतमंसं द्वे कोट्टासे कत्वा एकं विलारस्स देति, एकं सयं खादति । अथ नं एकदिवसं अज्जापि विलारो अगगहेसि । तम्पि तथेव सज्जापेत्वा अत्तानं विस्सज्जापेसि । ततो पट्टाय तयो कोट्टासे कत्वा खादन्ति । पुन अज्जा अगगहेसि । तम्पि तथेव सज्जापेत्वा अत्तानं मोचापेसि । ततो पट्टाय चत्तारो कोट्टासे कत्वा खादन्ति । पुन अज्जा अगगहेसि । तम्पि तथेव सज्जापेत्वा अत्तानं मोचापेसि । ततो पट्टाय पञ्च कोट्टासे कत्वा खादन्ति । सा पञ्चमं कोट्टासं खादमाना अप्पाहारताय किलन्ता किंसा अहोसि अप्पमंसलोहिता ।

बोधिसत्तो तं दिस्वा अम्म ! कस्मा मिलातासीति वत्वा इमिना नाम कारणेनाति वृत्ते त्वं एतकं कालं कस्मा मय्हं नाचिक्खि ? अहमेत्थ कत्तव्वं जानिस्सामीति तं समस्सासेत्वा सुद्धफलकपासाणेन ग्हं कत्वा आहरित्वा—अम्म ! त्वं इमं गुहं पविसित्वा निपज्जित्वा आगतागतानं फरुसाहि वाचाहि सन्तज्जेय्यासीति आह ।

सा गुहं पविसित्वा निपज्जि । अथेको विलारो आगन्त्वा देहि मे मंसन्ति आह । अथ नं मूसिका अरे दुदुबिलार ! किं ते अहं मंसहारिका ? अत्तनो पुत्तानं मंसं [४०२] खादाति तज्जेसि । विलारो फलिक-गुहाय निपन्नभावं अजानन्तो कोधवसेन मूसिकं गण्हिस्सामीति सहसा पक्खन्दित्वा हृदयेन फलिकगुहायं पहरि । तावदेवस्स हृदयं भिज्जि । अक्खीनि निक्खमनाकारप्पत्तानि जातानि । सो तथेव जीवितक्खयं पत्वा एकमन्तं पटिच्छन्नट्टाने पति । एतेनुपायेन अपरोपीति चत्तारोपि जना जीवितक्खयं पापुणिसु । ततो पट्टाय मूसिका निब्भया हुत्वा बोधिसत्तस्स देवसिकं द्वे तयो कहापगो देति । एवं अनुक्कमेन सब्बम्पि धनं बोधिसत्तस्सेव अदासि । ते उभोपि यावजीवं मेत्ति अभिन्दित्वा यथाकम्मं गता ।

मत्था इमं अनीतं आहरित्वा अभिसम्बुद्धो हुत्वा इमं गाथमाहः—

यत्थेको लभते बब्बु दुतियो तत्थ जायति ,

ततियो च चतुत्थो च इदन्ते बब्बुका बिलन्ति ।

तत्थ—प्रत्याति यस्मिं ठाने । बब्बूति विलारो । दुतियो तत्थ जायतीति यत्थ एको मूसिकं वा मंसं वा लभति दुतियोपि तत्थ विलारो जायति उप्पज्जति । तथा ततियो चतुत्थो च एवं ते तदा चत्तारो विलारा अहेसुं । हुत्वा च पन दिवसे दिवसे मंसं खादन्ता ते बब्बुका इवं फलिकमयं बिलं उरेन पहरित्वा सब्बेपि जीवितक्खयं पत्ताति ।

एवं मत्था धम्मं देसेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा चत्तारो विलाग ते चत्तारो भिक्खू अहेसुं । मूसिका काणमाना, पामाणकोट्टकमणिकारो पन अहमेवाति ।

८. गोधजातकं

किं ते जटाहि दुम्मेधाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं कुहकं आरब्ध कथेसि । पच्चुप्पन्नवत्थु हेट्ठा कथितसदिसमेव ।

अतीतवत्थु

अतीने पन वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो गोधयोनियं पटिसन्धि गण्हि । तदा एको पञ्चाभिञ्जो उग्गतपो तापसो एकं पच्चन्तगामं निस्साय अरञ्जायतने पण्णसालाय वसति । गामवासिनो तापसं मक्कच्चं उपट्ठहन्ति । बोधिसत्तो तस्स चङ्कमणकोटियं एकस्मि वम्मिके वसति । वसन्तो च पन दिवसे दिवसे द्वे तयो वारे तापसं उपसङ्कमित्वा धम्मूपसंहितं अत्यूपसंहितञ्च वचनं सुत्वा तापसं वन्दित्वा वसनट्टानमेव गच्छति । अपरभागे तापसो गामवासिनो आपुच्छित्वा पक्कामि । पक्कन्ते च पन तस्मिं सीलवत्सम्पन्ने तापसे अञ्जो कूटतापसो आगत्वा तस्मिं अस्समपदे वासं कप्पेसि । बोधिसत्तो अयम्पि सीलवाति सल्लक्खत्वा पुरिमनयेनेव तस्स सन्तिकं अगमासि ।

अथेकदिवसं निदावसमये अकालमेधे वट्ठे वम्मिकहि मक्खिक्खा निक्खमिसु । तासं खादनत्थं गोधा आहिण्डमु । गामवासिनो निक्खमित्वा बहू गोधा गहेत्वा सिनिद्धं मम्भारयुत्तं अम्बिलानम्बिलं गोधमंसं सम्पादेत्वा तापसस्स अदंसु । तापसो गोधमंसं खादित्वा रमतण्हाय बट्ठो इदं मंसं अतिमधुरं किस्स मंसं नामेतन्ति पुच्छित्वा गोधमंसन्ति सुत्वा मम सन्तिकं महागोधो आगच्छति त मारेत्वा मंसं खादिस्सामीति चिन्तेत्वा पचनभाजनञ्च मणिलोणादीनि च आहरापेत्वा एकमन्ते ठपेत्वा मुग्गरं आदाय कासावेन पटिच्छादेत्वा पण्णसालाद्वारे बोधिसत्तस्स आगमनं ओलोकयमानो उपसन्तुपसन्तो विय हत्वा निमीदि ।

बोधिसत्तो सायणहमये तापसस्स सन्तिकं गच्छिस्सामीति निक्खमित्वा उपसंकमन्तोव तस्स इन्द्रियविकारं दिस्वा चिन्तेमि—नायं तापसो अञ्जो मु दिवसे मु निमीदनाकारेन निमिच्चो, अज्जेस मं ओलोकेन्तोपि दुट्ठिन्द्रियो हत्वा ओलोकेति, परिगण्हस्सामि नन्ति । सो तापगस्स हेट्ठावाते ठत्वा गोधमंसगन्धं घायित्वा—इमिना कूटतापमेन अज्ज गोधमंसं खादितं भविस्सति तेनेस रमतण्हाय बट्ठो अज्ज मं अत्तनो सन्तिकं उपसङ्कमन्तं मुग्गरेन पहरित्वा मंसं पचित्वा खादितुकामो भविस्सतीति—तस्स सन्तिकं अनुपगन्त्वाव पटिक्कमित्वा विचरति । तापसो बोधिसत्तस्स अनागमनभावं ज्ञत्वा इमिना अयं मं मारेतुकामोति ज्ञातं भविस्सति तेन कारणेन नागच्छति अनागच्छन्तस्सापिस्स कुनो मुत्तीति मुग्गरं नोहरित्वा खिपि । सो तस्स अग्ननङ्गुट्टमेव आसादेसि । बोधिसत्तो वेगेन वेगेन वम्मिकं पविमित्वा अञ्जेन छिद्देन सीसं उक्खिपित्वा—अम्भो ! कूटजटिल ! अहं तव सन्तिकं उपसङ्कमन्तो सीलवाति सञ्जाय उपसङ्कमि इदानीं पन ते मया कूटभावो ज्ञातो । तादिसस्स मडाचोरस्स किं इमिना पव्वज्जालिङ्गेनाति वत्वा तं गरहन्तो इमं गाथमाहुः—

किन्ते जटाहि दुम्मेध ! किन्ते अजिनसाटिया ,

अव्वभन्तरन्ते गहणं बाहिरं परिमज्जसीति ।

तत्थ—किन्ते जटाहि दुम्मेधाति अम्भो ! दुम्मेध ! निप्पञ्जा ! एता पव्वजितेन धारेतव्वा जटा, पव्वज्जागुगरहितस्स किन्ते ताहि जटाहीति अत्थो । किन्ते अजिनसाटियाति अजिनसाटिया अनुच्छविक्कस्स संवरस्स अभावकालतो पट्ठाय किन्ते अजिनसाटिया ? अव्वभन्तरन्ते गहणन्ति तव अव्वभन्तरं हृदयं रागदोममोहगहणेन गहणं पटिच्छन्नं । बाहिरं परिमज्जसीति सो त्वं अव्वभन्तरे गहणे नहानादीहि चेव लिङ्गगहणेन च बाहिरं परिमज्जसि । तं परिमज्जन्तो कज्जिपूरितत्वाव विप्र विमपूरितचाटि विय आसिविमपूरितवम्मिको विय पुरपूरितचित्तघटो विय च [४०४] वहिमट्ठोव होमि । किं तथा चोरेन इध वसन्तेन ? सीधं इतो पलायमि, नोचे पलायमि गामवासीनं ते आचिक्खित्वा निग्गहं कागपेस्सामीति ।

एवं बोधिसत्तो कूटतापसं तज्जेत्वा वम्मिकमेव पावमि । कूटतापसोपि ततो पक्कामि ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेमि । तदा कूटतापसो अयं कुहको अहोमि । पुरिमो सीलवन्ततापसो साणिपुत्तो । गोधपण्डितो पन अहमेवाति ।

गोधजातकं ।

९. उभतोभट्टजातकं

अश्वखी भिन्ना पटो नट्टोति इदं सत्या वेलुवने विहरन्तो देवदत्तं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपञ्चवःथ

तदा किर धम्मसभायं भिक्खू कथं समुट्ठापेसुं—आवुसो ! सेय्यथापि नाम छ्वालातं उभतो पदितं मज्जे गूथगनं नेवारञ्जो कट्ठत्थं फरति न गामे कट्ठत्थं फरति, एवमेवं देवदत्तो एवरूपे नित्याणिकसासने पब्ब-
जित्वा उभतो भट्टो उभतो परिवाहिरो जातो गिहीपरिभोगा च परिहीनो सामञ्जात्थञ्च न परिपूरेतीति ।
मत्था आगन्त्वा कायनुत्थ भिक्खवे ! एतद्वि कथाय सन्निमिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते न भिक्खवे !
देवदत्तो इदानीं उभतो परिभट्टो होति अतीनेपि परिभट्टो अहोमियेवाति वत्वा अतीतं आहरिः—

अतीतवरथ

अतीने वागगमियं ब्रह्मदत्तो रज्ज कारेन्ते बोधिमत्तो रुक्खदेवता हुत्वा निव्वन्ति । तदा एकस्मिं
गामके बालिसिका वसन्ति । अथेको बालिसिको बलिसं आदाय दहरेन पुत्तेन सद्धिं यस्मिं सोढमे पकितियापि
बालिसिका मच्छे गण्हन्ति तत्थ गन्त्वा बलिसं खिपि । बलिमो उदकपटिच्छन्ने एकस्मिं खागुके लग्गि । बालि-
सिको तं आकट्ठिन् अमक्कोन्तो चिन्तेसि—अयं वनिसो महामच्छे लग्गो भविस्सति पुत्तकं मातुसन्तिकं
पेसेत्वा पटिविस्सकेहि सद्धिं कलहं कारापेमि, एवं इतो न कोचि कोट्टामं पच्चासि सतीति । सो पुत्तं आह—
गच्छ तात ! महामच्छ नो लद्धभावं मातु आचिक्खाहि पटिविस्सकेहि किं सद्धिं कलहं करोहीति वदेहीति ।

सो पुत्तं पेसेत्वा बलिसं आकट्ठिन् अमक्कोन्तो रज्जुच्छेदनभयेन उत्तरिस्ताटकं थले ठपेत्वा उदकं ओत-
रित्वा मच्छलोभेन मच्छं उपधारेन्तो खागुकेहि पहरित्वा द्वेपि अक्खीनि भिन्दि । थले ठपितं साटकम्पिस्स
चोरो हरि । सो वेदनामत्तो हुत्वा हत्थेन अक्खीनि उप्पीलयमानो गहेत्वा उदका उत्तरित्वा कम्पमानो साटकं
परियेमति ।

सापिस्स भरिया कलहं कत्वा कस्सचि अपच्चसिंसनभावं करिस्सामीति एकस्मियेव कण्णे तालपण्णं
[८०५] पिलन्धित्वा एकं अक्खि उक्खलिममिया अञ्जेत्वा कुक्कुरं अङ्केनादाय पटिविस्सकधरं अगमासि ।
अथ तं एका सहायिका एवसाह-एकस्मियेवं ते कण्णे तालपण्णं पिलन्धितं एकं अक्खि अञ्जितं पियपुत्तं विय
कुक्कुरं अङ्केनादाय घरतो घरं गच्छति कि उम्मत्तिकामि जानाति ? नाहं उम्मत्तिका त्वम्पन मं अकारणेन
अक्कोममि परिभागमि इदानीं तं गायभोजकम्म सन्तिकं गन्त्वा अट्टकहापणे दण्डापेस्सामीति एवं कलहं कत्वा
उभोपि गायभोजकम्म सन्तिकं अगमिम् । कलहे विमोक्षियमाने तम्मायेव मत्थके दण्डो पति । अथ तं बन्धित्वा
दण्डं देहीति पोथेत् आरभिम् ।

रुक्खदेवता गामे तस्मा इमं पवन्ति अरञ्जो चम्सा पतिनो तं व्यसनं दिस्वा खन्धन्तरे टिता—भो !
पुरिम ! तुद्धं उरुकेपि कम्मन्तो पटुट्टो घरेपि उभतो भट्टोसि जातोति वत्वा इमं गाथमाहः—

अश्वखी भिन्ना पटो नट्टो सखीगेहे च भण्डनं ,

उभतो पटुट्टकम्मन्तो उदकम्हि थलम्हि चाति ।

तत्थ—सखीगेहे च भण्डनन्ति सखी नाम सहायिका तस्मा गेहे तव भरियाय भण्डनं कतं, भण्डनं कत्वा
बन्धित्वा पोथेत्वा दण्डं दापित्थाति उभतो पटुट्टकम्मन्तोति एवं तव द्वीमुपि ठानेभु कम्मन्ता पटुट्टा भिन्ना येव ।
कनरेमु द्वीमु ? उदकम्हि थलम्हि चाति अक्खिभेदेन पट्टनामेन च उदके कम्मन्ता पटुट्टा, सखीगेहे भण्डनेन
थले कम्मन्ता पटुट्टाति ।

सत्या इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा बालिमिको देवदत्तो अहोमि । रुक्खदेवता
पन अहमेवाति ।

उभतोभट्टजातकं ।

१० काकजातकं

निचच्च उड्डिगहृदयाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो ज्ञातत्थचरियं आरब्भ कथेसि । पच्चुप्पन्न-
वत्थु द्वादसनिपाते भद्दसालजातके आबीभविस्सति ।

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो काकयोनियं निव्वत्ति । अथेकदिवसं रज्जो
पुरोहितो बहिनगरे नदियं नहायित्वा गन्धे विलिम्पित्वा मालं पिलन्धित्वा वरवत्थनिवत्थो नगरं पाविसि ।
नगरद्वारतोरणं द्वे काका निसिन्ना होन्ति । तेसु एको एकं आह—सम्म ! अहं इमस्स ब्राह्मणस्स मत्थके
सरीरवलज्जं पातेस्सामीति ।

इतरो—मा ते एतं रुच्चि अयं ब्राह्मणो इस्मरो इस्मरजनेन च सद्धि वेरं नाम पापकं अयं हि कुद्धो सब्बेपि
काके विना-[४०६] सेय्याति ।

न सक्का मया न कातुन्ति ।

तेनहि पञ्चायिस्ससीति वत्वा इतरो काको पलायि । सो तोरणस्स हेट्ठाभागं सम्पत्ते ब्राह्मणो ओलम्बकं
चारेन्तो विय तस्स मत्थके वच्चं पातेसि । ब्राह्मणो कुञ्चित्वा काकेसु वेरं वन्धि ।

तस्मि काले एका भनिया वीहिकोट्टिका दासी वीहिं गेहद्वारे आतपे पत्थरित्वा रक्खन्ती निसिन्नाव
निदं ओक्कमि । तस्सा पमादं ज्ञत्वा एको दीघलोमको एलको आगन्त्वा वीहिं खादि । सा फ्फुज्जित्वा तं दिस्वा
पलापेसि । एलको दुतियम्पि ततियम्पि तस्सा तथेव निहायनकाले आगन्त्वा वीहिं खादि । सापि तं तिक्खत्तुं
पलापेत्वा चिन्तेसि—अयं पुनप्पुन खादन्तो उपड्डुवीहिं खादिस्सति, बहु मे छेदो भविस्सति, इदानिस्स पुन
अनागमनकारणं करिस्सामीति । सा अलातं गहेत्वा निहायमाना विय निसीदित्वा वीहिं खादनत्थाय एलके
सम्पत्ते उट्ठाय अलातेन एलकं पहरि । लोमानि अग्गिं गण्हिस्सु । सो सरीरे भायन्ते अग्गिं निव्वापेस्सामीति
वेगेन गन्त्वा हत्थिसालाय समीपे एकस्सा तिरणकुटिया सरीरं धंसि । सा पज्जलि । ततो उट्ठितजाला हत्थि-
सालं गण्हि । हत्थिसालासु भायन्तीसु हत्थिपिट्टानि भायिस्सु । बहू हत्थी वणिगतसरीरा अहेसु । वेज्जा
अरोगे कातुं असक्कोन्ता रज्जो आरोचेसु । राजा पुरोहितं आह—आचरिय ! हत्थिवेज्जा हत्थीतिकिञ्चित्तुं
सक्कोन्ति अपि किञ्चिभेसज्जं जानासीति ।

जानामि महाराजाति ।

किं लद्धं वट्ठतीति ?

काकवसा महाराजाति

राजा—तेनहि काके मारेत्वा वसं आहरथाति आह ।

ततोपट्ठाय काके मारेत्वा वसं अलभित्वा तत्थ तत्थेव रासि करोन्ति । काकानं महाभयं उप्पज्जि ।
तदा बोधिसत्तो असीतिसहस्सकाकपरिवारो महासुसानवने वसति । अथेको काको गन्त्वा काकानं उप्पन्नं भयं
बोधिसत्तस्स आरोचेसि । सो चिन्तेसि ठपेत्वा मं अज्जो मय्हं ज्ञातकानं उप्पन्नं भयं हरितुं समत्थो नाम
नत्थि, हरिस्सामि नन्ति दसपारमियो आवज्जेत्वा भेत्तापारमि पुरेचारिकं कत्वा एकवेगेनेव पक्खन्दित्वा विवट्ट-
महावातपानेन पविसित्वा रज्जो आसनस्स हेट्ठा पाविसि । अथ नं एको मनुस्सो गहेतुकामो अहोसि । राजा
सरणं पविट्ठो मा गण्हीति वारेसि ।

महासत्तो थोकं विस्समित्वा भेत्तापारमि आवज्जित्वा हेट्ठासना निक्खमित्वा राजानं आह—महाराज !
रज्जो नाम छन्दादि वसेन अगन्त्वा रज्जं कारेतुं वट्ठति । यं यं कम्मं कत्तव्वं होति सब्बं निसम्म उपघारेत्वा
कातुं वट्ठति, यच्च कयिरमानं निप्फज्जति तदेव कातुं वट्ठति न इतरं । सचे हि राजानो यं कयिरमानं न निप्फ-
ज्जति तं करोन्ति महाजनस्स मरणभयपरियोसानं महाभयं उप्पज्जति, पुरोहितो वेरवसिको हुत्वा मुसावादं
अकासि काकानं वसा नाम नत्थीति ।

तं सुत्वा राजा पसन्नचित्तो बोधिसत्तस्स कञ्चनभट्ठीणं दापेत्वा तत्थ निसिन्नस्स पक्खन्तरानि सत्त-
पाकसहस्सपाकतेलेहि मक्खापेत्वा कञ्चनतटके राजारहं सुभोजनं दापेत्वा पानीयं पायेत्वा सुहितं विगतदरथं
महामत्तं एतदवोच—पण्डित ! त्वं काकानं वसा नाम नत्थीति वदसि केन कारणेन तेसं वसा न होतीति ?

बोधिसत्तो—इमिना च इमिना च कारणेनाति सकलनिवेसनं एकरवं कत्वा धम्मं देसेन्तो इमं गाथमाहः—

निच्चं उब्बिग्गहदया सब्बलोकविहेसका,

तस्मा तेसं वसा नत्थि काकानस्माकजातिनन्ति ।

तत्रायं सङ्खेपत्थो । महाराज ! काका नाम निच्चं उब्बिग्गमानसा भयप्पत्ताव विचरन्ति । सब्ब-
लोकस्स च विहेसका खत्तियादयो मनुस्सेपि इत्थिपुरिसेपि कुमारकुमारिकादयोपि विहेठेन्ता किलमेन्ताव विच-
रन्ति । तस्मा इमेहि द्वीहि कारणेहि तेसं अम्हाकं जातीनं काकानं वसा नाम नत्थि । अतीतेपि अशूत-
पुब्बा अनागतेपि न भविस्सतीति ।

एवं महासत्तो इमं कारणं उत्तानं कत्वा महाराज ! रञ्जो नाम अनिसम्मअनुपधारेत्वा कम्मं न
कानव्वन्ति राजानं बोधेसि ।

राजा तुस्सित्वा बोधिसत्तं रज्जेन पूजेसि । बोधिसत्तो रज्जं रञ्जोयेव पटिट्ठत्वा राजानं पञ्चसु
सीलेसु पटिट्ठापेत्वा सब्बसत्तानं अभयं याचि । राजा धम्मदेसनं सुत्वा सब्बसत्तानं अभयं दत्वा काकानं निबद्ध-
दानं पट्टपेसि । दिवसे दिवसे तण्डुलम्मणस्स भन्नं पचित्वा नानगरसेहि ओमदित्वा काकानं दानं दीयति । महा-
सत्तस्स पन राजभोजनमेव दीयित्थ ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा वाराणसीराजा आनन्दो अहोसि । काक-
राजा पन अहेमेवाति ।

काकजातकं ।

असम्पदानवग्गो चुट्समो ।

२. सिगालजातकं

एतं हि ते दुराजानन्ति इदं सत्था बेलुवने विहरन्तो देवदत्तस्स वधाय परिसक्कनं आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

धम्मसभायं हि भिक्खून् कथं सुत्वा सत्था न भिक्खवे ! देवदत्तो इदानीं मय्हं वधाय परिसक्कति पुत्रेपि पग्गिक्कियेव, न च मं मारेत् असक्खि, सयमेव पन किलन्तोति वत्वा अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो सिगालयोनियं निव्वत्तित्वा सिगालराजा हुत्वा सिगालगणपरिवुतो मुसानवने विहामि । तेन समयेन राजगहे उस्सवो अहोसि । येभुय्येन मनुस्सा सुरं पिवन्ति, मुराद्धणो येव किर सो अथेत्थ सम्बहुला धुत्ता बहुं सुरञ्च मंसञ्च आहगपेत्वा मण्डितपसाधिता गायित्वा सुरं पिवन्ति मंसं च खादन्ति । तेसं पठमयामावसाने मंसं खीयि, सुरा पन बहुकाव । अथेको मंसखण्डं देहीति आह । मंसं खीणन्ति च वुत्ते मयि ठिते मंसक्खयो नाम अत्थीति वत्वा आमकमुसाने मतमनुस्समंसम्बादनत्थाय आगत-सिगाले मारेत्वा मंसं आहरिस्सामीति मुग्गरं गहेत्वा निद्धमनमग्गेन नगरा निक्खमित्वा मुसानं गन्त्वा मुग्गरं गहेत्वा मतको विय उत्तानोव निपज्जि । तस्मिं खणे बोधिसत्तो सिगालगणपरिवुतो तत्थ गतो तं दिस्वा नायं मतकोति जत्वाणि सुट्ठतरं उपपरिक्खिस्सामीति तस्स अधोवातेन गन्त्वा [४११] सरीरगन्धं घायित्वा तत्ततो चस्स अमतकभावं जत्वा लज्जापेत्वा तं उय्योजेस्सामीति गन्त्वा मुग्गरकोटियं डसित्वा आकड्ढि । धुत्तो मुग्गरं न विजहि । उपसंकमन्तमि न ओलोकेन्तो पुन गाल्हतरं अगहेसि । बोधिसत्तो पटिक्कमित्वा भो ! पुरिस ! सचे त्वं मतको भवेय्यासि न मयि मुग्गरं आकड्ढन्ते गाल्हतरं गण्हेय्यासि इमिना कारणेन तव मतक-भावो वा अमतकभावो वा दुज्जानोति वत्वा इमं गाथमाहः—

एतं हि ते दुराजानं यं सेसि मतसायिकं,

यस्स ते कड्ढमानस्स हत्था दण्डो न मुच्चतीति ।

तत्थ—एतं हि ते दुराजानन्ति एतं कारणं तव दुविज्जेय्यं । यं सेसि मतसायिकन्ति येन कारणेन त्वं मतसायिकं सेसि मतको विय हुत्वा सयसि । यस्स ते कड्ढमानस्साति यस्म तव दण्डकोटियं गहेत्वा कड्ढय-मानस्स हत्थतो दण्डो न मुच्चति सो पन त्वं तत्ततो मतको नाम न होसीति ।

एवं वुत्ते सो धुत्तो अयं मम अमतकभावं जानानीति उट्ठाय दण्डं खिपि । दण्डो विरज्झि । धुत्तो गच्छ विरद्धो दानिसि मयाति आह । बोधिसत्तो निवत्तित्वा भो ! पुरिस ! मं विरज्झन्तोपि त्वं अट्ठ महानिरये सोलस उस्सदनिरये अविरद्धोयेवामीति वत्वा पक्कामि । धुत्तो किञ्चि अलभित्वा मुसाना निक्खमित्वा परि-खायं नहायित्वा आगतमग्गेनेव नगरं पाविसि ।

सत्था इमं धम्मदेगनं आहरित्वा जातकं ममोधानेसि । तदा धुत्तो देवदत्तो अहोसि, सिगालराजा पन अहमेवाति ।

सिगालजातकं ।

३. विरोचनजातकं

लसी च ते निष्कलिताति इदं सत्था वेलुवने विहरन्तो देवदत्तस्स गयासीसे सुगतालयस्स दस्सितभावं आरब्ध कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थु

देवदत्तो हि अन्तरहितज्झानो लाभसक्कारपरिहीनो अत्थेस उपायोति चिन्तेत्वा सत्थारं पञ्चवत्थूनि याचित्वा अलभमानो द्विन्नं अगगसावकानं सद्धिविहारिके अधुनापण्वजिते धम्मविनयम्हि अकोविदे भिक्खू गहेत्वा गयासीसं गन्त्वा सङ्घं भिन्दित्वा एकसीमाय आवेणिसङ्घकम्मानि अकासि ।

सत्था तेसं भिक्खूनां ज्ञाणपरिपाककालं ज्ञत्वा द्वे अगगसावके पेसेसि । ते दिस्वा देवदत्तो तुट्टमानसो रत्तिं धम्मं देसयमानो बुद्धलीलुहं करिस्सामीति सुगतालयं दस्सेन्तो विगतथीनमिद्धो खो आवुसो सारिपुत्त ! भिक्खुसङ्घो पटिभातु तं भिक्खूनां धम्मीकथा पिट्ठि मे आगिलायति, तमहं आयमिस्सामीति वत्वा निहं उपगतो । द्वे अगगसावका तेसं भिक्खूनां धम्मं देसेत्वा मग्गफलेहि पवोधेत्वा सव्वे आदाय वेलुवनमेव पञ्चागमिसु । [४१२]

कोकालिको विहारं तुच्छं दिस्वा देवदत्तस्स सन्तिकं गन्त्वा आवुसो देवदत्त ! परिसं ते भिन्दित्वा द्वे अगगसावका विहारं तुच्छं कत्वा गता, त्वं न निद्दायसियेवाति वत्वा उत्तरासङ्गमस्स अपनेत्वा भित्तिं पिट्ठिकण्ठं फस्सन्तो विय पण्हिया न हृदये पहरि । तावदेवस्स मुखतो लोहितं उग्गञ्छि । सो ततोपट्टाय गिलानो अहोसि ।

सत्था थेरं पुच्छि—सारिपुत्त ! तुम्हाकं गतकाले देवदत्तो किं अकासीति ।

भन्ते ! देवदत्तो अम्हे दिस्वा बुद्धलीलुहं करिस्सामीति सुगतालयं दस्सेत्वा महाविनासं पत्तोति ।

सत्था न खो सारिपुत्त ! देवदत्तो इदानेव मम अनुकरोन्तो विनासं पत्तो पुव्वेपि पत्तोयेवाति वत्वा थेरेन याचितो अतीतं आहरिः—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो केसरसीहो हुत्वा हिमवन्तप्पदेसे कञ्चनगुहायं वासं कपेसि । सो एकदिवसं कञ्चनगुहाय निक्खमित्वा विजम्भित्वा चतुद्दिसं ओलोकेत्वा सीहनादं नदित्वा गोचराय पक्कन्तो महामहिसं वधित्वा वरमंसं खादित्वा एकं सरं ओतरित्वा मरिक्खणस्स उदकस्स कुच्छि पूरेत्वा गुहं सन्धाय पायामि । अथेको सिगालो गोचरपसुतो सहसाव सीहं दिस्वा पलायितुं असक्कोन्तो सीहस्स पुरतो पादेसु पतित्वा निपज्जि । किं जम्बुकाति वुत्तं अहं ते सामि ! पादे उपट्टातुकामोति आह । सीहो साधु एहि मं उपट्टह वरमंसानि तं खादापेस्सामीति वत्वा सिगालं आदाय कञ्चनगुहं अगमासि । सिगालो ततोपट्टाय सीहविघासं मंसं खादति । सो कतिपाहस्सेव थुल्लसरीरो अहोसि । अथ नं एकदिवसं गुहायं निपन्नकोव सीहो आह—गच्छ जम्बुक ! पव्वतसिखरे टत्वा पव्वतपादे सञ्चरन्तेसु हत्थिअस्समहिंसादीसु यस्स मंसं खादितुकामोसि तं ओलोकेत्वा आगन्त्वा असुकमंसं खादितुकामोम्हीति वत्वा मं वन्दित्वा विरोच सामीति वद, अहं तं वधित्वा मंसं खादित्वा तुय्हम्पि दस्सामीति ।

सिगालो पव्वतसिखरं अभिरुहित्वा नानप्पकारे मिगे ओलोकेत्वा यस्सेव मंसं खादितुकामो होति कञ्चनगुहं पविसित्वा तमेव सीहस्स आरोचेत्वा पादेसु पतित्वा विरोच सामीति वदति । सीहोवेगेन पक्खन्दित्वा सन्नेपि मत्तवरवारणो होति । तत्थेव नं जीवितक्खयं पापेत्वा सयम्पि वरमंसं खादति । सिगालस्सापि देति सिगालो कुच्छिपूरं मंसं खादित्वा गुहं पविसित्वा निद्दायति । सो गच्छन्ते गच्छन्ते काले मानं वड्ढेसि—अहम्पि चतुप्पदोव किं कारणा दिवसे दिवसे परेहि पोसियमानो विहरामि इतो पट्टाय अहम्पि हत्थिआदयो पहरित्वा मंसं खादिस्सामीति । सीहोपि मिगराजा विरोचसामीति वृत्तमेव पदं निस्साय वारणे वधेति, अहम्पि सीहेन विरोच जम्बुकाति मं वदापेत्वा एकं वरवारणं वधित्वा मंसं खादिस्सामीति ।

सो सीहं [४१३] उपसंकमित्वा एतदवोच—सामि ! मया दीधरत्तं तुम्हेहि वधितानं वरवारणानं मंसं खादितं, अहमिपि एकं वारणं पहरित्वा मंसं खादितुकामो, तुम्हेहि निपन्नद्वाने कञ्चनगुहायं निपज्जिस्सामि, तुम्हे पव्वतपादे विचरन्तं वरवारणं ओलोकेत्वा मम सन्तिकं आगत्वा विरोच जम्बुकाति वदेथ, एतकमत्तमिपि मच्छेरं मा करित्थाति ।

अथ नं सीहो आह—न त्वं जम्बुक ! वारणे वधितुं समत्थो । सिगालकुले उप्पन्नो वारणं पहरित्वा मंसं खादनसमत्थो सिगालो नाम लोके नत्थि मा ते एतं रुच्चि । मया वधितवरवारणानञ्जोव मंसं खादित्वा वसस्सूति ।

सो एवं वृत्तेपि ओरमितुं न इच्छि । पुनप्पुन याचियेव । सीहो तं निवारेतुं असक्कोन्तो सम्पटिच्छित्वा तेनहि मम वसनद्वानं पविसित्वा निपज्जाति जम्बुकं कञ्चनगुहाय निपज्जापेत्वा पव्वतपादे मत्तवरवारणं ओलोकेत्वा गुहाद्वारं गत्वा विरोच जम्बुकाति आह । सिगालो कञ्चनगुहाय निक्खमित्वा विजम्भित्वा चतुद्दिसं ओलोकेत्वा तिक्खत्तुं वस्सित्वा मत्तवरवारणस्स कुम्भे पतिस्सामीति विरज्झित्वा पादमूले पति । वारणो दक्खिणपादं उक्खिपित्वा तस्स सीसं अक्कमि । सीसट्ठीनि चुण्णविचुण्णानि अहेसुं । अथस्स सरीरं वारणो पादेन सङ्घरित्वा रासिं कत्वा उपरि लण्डं पातेत्वा कुञ्चनादं नदन्तो अरञ्जं पाविसि । बोधिसत्तो इमं पवत्तिं दिस्वा इदानि विरोच जम्बुकाति वत्वा इमं गाथमाहः—

लसी च ते निष्फलिता मत्थको च विदालितो,
सब्बा ते फासुका भग्गा अज्ज खो त्वं विरोचसीति ।

तत्थ—लसीति मत्थलुङ्गा । निष्फलिताति निक्खन्ता ।

बोधिसत्तो इमं गाथं वत्वा यावतायुकं ठत्वा यथाकम्मं गतो । सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि ।

तदा सिगालो देवदत्तो अहोसि । सीहो पन अहमेवाति ।

विरोचनजातकं ।

४. नङ्गुट्टजातकं

बहुम्पेतं असिभिजातवेदाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो आजीवकानं मिच्छातपं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

तदा किर आजीवका जेतवनपिट्ठियं नानप्पकारं मिच्छातपं चरन्ति । सम्बहुला भिक्खू तेसं उक्कुटिकप्प-
धानवग्गुलिवत्तकण्टकापस्सयपच्चतापत्तपनादिभेदं मिच्छातपं दिस्वा भगवन्तं पुच्छिमु—अत्थि नुखो भन्ते !
इयं मिच्छातपं निस्साय काचि वड्डीति ।

सत्था न भिक्खवे ! एवरूपं मिच्छातपं निस्साय कुभलं वा वड्डी वा अत्थि । पुव्वे पण्डिता एवरूपं
तपं निस्साय कुभलं वा वड्डी वा भविस्सतीति [४१३] सञ्जाय जातग्गि गहेत्वा अरञ्जं पविसित्वा अग्गि-
गुह्नादिवसेन किञ्चि वड्ढि अपस्सन्ता अग्गि उदकेन निव्वापेत्वा कसिणपरिक्कम्मं कत्वा अभिञ्जा च समा-
पत्तियो च निव्वत्तेत्वा ब्रह्मलोकपरायणा अहेसुन्ति वत्वा अतीतं आहरि :—

अतीतवत्थु

अतीने वाराणमियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो उदिच्चव्राह्मणकुले निव्वति । तस्स जानदिवसे
मातापितरो जातग्गि गहेत्वा ठपेसुं । अथ तं मोलसवस्मकाले एतदवोचुं—भयं ते पुत्त ! जातदिवसे अग्गि
गण्हम्ह सचेसि अगारं अज्झावमित्तुकामो तथो वेदे उग्गण्ह, अथ ब्रह्मलोकं गन्तुकामो अग्गि गहेत्वा अरञ्जं
पविसित्वा अग्गि परिचरन्तो महाब्रह्मानं आराधेत्वा ब्रह्मलोकपरायणो होहीति ।

सो न मय्हं अगारेनत्थोति अग्गि गहेत्वा अरञ्जं पविमित्वा अस्समपदं मापेत्वा अग्गि परिचरन्तो
अरञ्जो विहासि । सो एकदिवसं पच्चन्तगामके गोदक्खिणं लभित्वा तं गोणं अस्समपदं नेत्वा चिन्तेसि अग्गि-
भगवन्तं गोमसं खादापेस्सामीति । अथस्स एतदहोसि—इध लोणं नत्थि, अग्गिभगवा अलोणं खादितुं न सक्खि-
स्मति, गामतो लोणं आहरित्वा अग्गिभगवन्तं सलोणकं खादापेस्सामीति । सो तं तत्थेव बन्धित्वा लोणत्थाय
गामं अगमासि ।

तस्मि गते सम्बहुला लुट्का तं ठानं आगता गोणं दिस्वा वधित्वा मसं पचित्वा खादित्वा नङ्गुट्टञ्च
जड्घञ्च चम्मञ्च तत्थेव छड्ढेत्वा अवसेममसं आदाय अगमसु ।

ब्राह्मणो आगन्त्वा नङ्गुट्टादिमत्तमेव दिस्वा चिन्तेसि—अयं अग्गिभगवा अत्तनो सन्तकम्पि रक्खितुं
न सक्कोति, मं पन कदा रक्खिस्ससि ? इमिना अग्गिपरिहरणेन निरत्थकेन भवित्थं नत्थि इतोनिदाना कुसलं
वा वड्डी वाति । सो अग्गिपरिचरिण्याय विगतच्छन्दो हम्भो ! अग्गिभगवा ! त्वं अत्तनोपि सन्तकं रक्खितुं
असक्कोन्तो मं कदा रक्खिस्ससि ? मंसं नत्थि एत्तकेनपि तुस्साहीति नङ्गुट्टादीनि अग्गिम्ह पक्खिपन्तो इमं
गाथमाह :—

बहुम्पेतं असिभि ! जातवेद ! यं तं बालधिनाभिपूजयाम,
मंसारहस्स नत्थज्ज मंसं नङ्गुट्टम्पि भवं पटिगहातूति ।

तत्थ—बहुम्पेतन्ति एत्तकम्पि बहुं । असिभि इति असप्पुरिस ! असाधुजातिक ! जातवेदाति
अग्गि आलपति । अग्गि हि जातमत्तोव वेदियति जाययति पाकटो होति तस्मा जातवेदोति वुच्चति । यं तं
बालधिनाभिपूजयामाति यं अज्ज मयं अत्तनोपि सन्तकं रक्खितुं असमत्थं भवन्तं बालधिना अभिपूजयाम
एतम्पि ते बहुमेवाति दस्सेति । मंसारहस्साति मंसारहस्स तुय्हं नत्थि अज्जमंसं । नङ्गुट्टम्पि भवं पटि-
गहातूति अत्तनो सन्तकं रक्खितुं असक्कोन्तो भवं इमं सखुरजड्घचम्मं नङ्गुट्टम्पि चे पतिगण्हातूति [४१४]

एवं वत्वा महासत्तो अग्गि उदकेन निव्वापेत्वा इसिपव्वज्जं पव्वजित्वा अभिञ्जा च समापत्तियो
च निव्वत्तेत्वा ब्रह्मलोकपरायणो अहोसि । सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । निव्वुत्तगिता-
पसो अहमेव तेन समयेनाति ।

नङ्गुट्टजातकं ।

५. राधजातकं

न त्वं राध ! विजानासीति इदं सत्था—जेतवने विहरन्तो पुराणदुतियिकापलोभनं आरब्ध कथेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

पच्चुपन्नवत्थुं इन्द्रियजातके आवीभविस्मति । मत्था पन तं भिक्खू आमन्तेत्वा—भिक्खू ! मातु-
गामा नाम अरक्खिया आरक्खं ठपेत्वा रक्खन्तापि ता रक्खित् न सक्कोन्ति त्वम्पि पुब्बे एतं आरक्खं ठपेत्वा
रक्खन्तोपि रक्खितुं नासक्खि इदानीं कथं रक्खिस्ससीति वत्वा अतीतं आहरि :—

अतीतवत्थु

अतीने वाराणमियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो सुकयोनियं निव्वसति । कासिगट्ठे एको ब्राह्मणो
बोधिसत्तञ्च कणिट्ठभातरञ्चस्म पुत्तद्वाने ठपेत्वा पोसेसि । तेमु बोधिसत्तस्म पोट्टपादोति नामं अहोसि । इत-
रस्म राधोति । तस्स पन ब्राह्मणस्स भग्न्या अनावारा होति दुस्समीला । सो बोहारात्थाय गच्छन्तो उभोपि
भानरो आह—ताता ! सचे वो माता ब्राह्मणी आनाचारं आचरति वारेय्याथ नन्ति ।

बोधिसत्तो आह—माधु तात ! वारेतु सक्कोन्ता वारेय्याम, अमक्कोन्ता तुण्ही भविस्सामाति ।

एवं ब्राह्मणो ब्राह्मणिं सुकानं नीयादेत्वा बोहारात्थाय गतो । तस्म पन गतदिवसतो पट्टाय ब्राह्मणी
अन्तिचरित्तु आरब्धा । पविमन्तानञ्च निक्खमन्तानञ्च अन्तो नत्थि । तस्म किण्णं दिस्वा राधो बोधिसत्तं
आह—भानिक ! अम्हाकं पिता मचे वो माता अनाचारं आचरति वारेय्याथानि वत्वा गतो, इदानीचेसा
अनाचारं आचरति वारेम नन्ति ।

बोधिसत्तो—तात ! त्वं अत्तनो अव्यत्तताय वालभावेन एवं वदेसि, मातुगामं नाम उक्खिपित्वा
चरन्तापि रक्खित् न सक्कोन्ति । यं कम्मं कात् न सक्का न तं कात् वट्ठतीति इमं गाथमाह :—

न त्वं राध ! विजानासि अड्ढरत्ते अनागते,
अव्यायतं पिलपसि विरत्ता कोसियायनेति ।

नत्थ—न त्वं राध ! विजानासि अड्ढरत्ते अनागतेति तात ! राध ! त्वं न जानामि अड्ढरत्ते
अनागते पठमयामयेव एत्तका जना आगता इदानीं को जानाति कित्तापि आगमिस्सन्ति ? अव्यायतं विल-
पसोति त्वं अव्यत्तविलापं विलपसि । विरत्ता कोसि [४१५] यायनेति माता नो कोमियायनी ब्राह्मणी विरत्ता
अम्हाकं पितरि निप्पेमा जाता मच्चस्मा तस्मिं मिनेहो वा पेमं वा भवेय्य न एवरूपं अनाचारं करेय्याति इममत्थं
एतेहि व्यञ्जनेहि पकासेसि ।

एवं पकामेत्वा च पन ब्राह्मणिया मद्धि राधस्म वत्तु नादामि । मापि याव ब्राह्मणस्म अनागमना
यथारुचिया विचरि ब्राह्मणो आगत्वा पोट्टपादं पुच्छि—तात ! कीदमी ते माताति । बोधिसत्तो ब्राह्म-
णस्म सव्वं यथाभूतं कथेत्वा किं ते तात ! एवरूपाय दुस्मीलायाति च क्वा तात ! अम्हेहि मातुया दोसस्स
कथिनकालतो पट्टाय न सक्का इथ वमिनुन्ति ब्राह्मणस्म पादे वन्दिन्वा मद्धि राधेण उप्पतित्वा अरञ्जं
अगमासि ।

मत्था इमं धम्मदेमनं आहरित्वा चत्तारि मच्चानि पकामेमि । मच्चपरिगोमाने उक्कण्ठितभिक्खु
सोत्तापत्तिकने पतिट्ठहि । तदा पन ब्राह्मणो च ब्राह्मणी च एनेयेव द्वे जना अहेसुं । राधो आनन्दो । पोट्ट-
पादो पन अहमेवाति ।

राधजातकं ।

६. काकजातकं

अपि न हनुका सन्ताति इदं सत्था—जेतवने विहरन्तो सम्बहुले महल्लके भिक्खू आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

ते किर गिहीकाले सावत्थियं कुटुम्बिका अड्ढा महद्धना अञ्जामञ्जं सहायका एकतो हुत्वा पुञ्ञानि करोन्ता सत्थु धम्मदेसनं सुत्वा मयं महल्लका किं नो घरावासेन सत्थु सन्तिके रमणीये वुद्धसासने पव्वजित्वा दुक्खस्सन्तं करिस्सामाति सब्बं सापनेय्यं पुत्तधीतादीनं दत्त्वा अस्समुखं जातिसङ्घं पहाय सत्थारं पव्वज्जं याचित्वा पव्वजिस्सु । पव्वजित्वा च पन पव्वज्जानुरूपं समणधम्मं न करिस्सु, महल्लकभावेन धम्मम्पि न परिआपुरिस्सु गिहीकाले विय पव्वजितकालेपि विहारपरियन्ते पण्णसालं कारेत्वा एकतोव वसिस्सु । पिण्डाय चरन्तापि अञ्जत्थ अगन्त्वा भेभुय्येन अत्तनो पुत्तदारस्सेव गेहं गन्त्वा भुञ्जिस्सु । तेसु एकस्स पुराणदुतियिका सब्बे-सम्पि महल्लकत्थेरानं उपकारा अहोसि । तस्मा सेसापि अत्तना लद्धं आहारं गहेत्वा तस्सा येव गेहे निसीदित्वा भुञ्जन्ति । सापि तेसं यथासन्निहितं सूपव्यञ्जनं देति । सा अञ्जतरेन आवाधेन फुट्टा कालमकासि । अथ ते महल्लकत्थेरा विहारं गन्त्वा अञ्जामञ्जं गीवास्सु गहेत्वा मधुरहत्थरसा उपासिका कालकताति विहारपच्चन्ते रोदन्ता विचरिस्सु । तेसं सद्दं सुत्वा इतोचितो च भिक्खू सन्निपतित्वा—आवुसो ! कस्मा रोदथाति पुच्छिस्सु ।

ते—अम्हाकं सहायस्स पुराणदुतियिका मधुरहत्थरसा कालकता [४१६], अम्हाकं अतिविय उप-कारा इदानि कृतो तथारूपि लभिस्साम, इमिना कारणेन रोदिम्हाति आहंस्सु ।

तेसं तं विप्पकारं दिस्वा भिक्खू धम्मसभायं कथं समुद्वापेसुं—आवुसो ! इमिना नाम कारणेन महल्ल-कत्थेरा अञ्जामञ्जं गीवाय गहेत्वा विहारपच्चन्ते रोदन्ता विचरन्तीति सत्था आगन्त्वा कायनुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निपन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते न भिक्खवे ! इदानेवेते तस्सा कालकिरियाय रोदन्ता विचरन्ति, पुव्वेपेते इमं काकयोनियं निव्वत्तित्वा समुद्दे मतं निस्साय समुद्दा उदकं उस्सिञ्चित्वा एतं नीहरिस्सामाति वायमन्ता पण्डिते निस्साय जीवितं लभिसूति वत्वा अतीतं आहरि :—

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो समुद्देवता हुत्वा निव्वन्ति । अथेको काको अत्तनो भरियं काकि आदाय गोचरं परियेसमानो समुद्दीरं अगमासि । तस्मिं काले मनुस्सा समुद्दीरे खीरपायासमच्छ-मंससुरादीहि नागबलिकम्मं कत्वा पक्कमिस्सु । काको बलिकम्मट्ठानं गन्त्वा खीरादीनि दिस्वा सद्धि काकिया खीरपायासमच्छमंसादीनि परिभुञ्जित्वा बहुं सुरं पिबि । ते उभोपि सुरामदमत्ता समुद्दीलं कीलि-स्सामाति बेलन्ते निसीदित्वा नहायितुं आरंभिस्सु । अथेका ऊमि आगन्त्वा काकिं गहेत्वा समुद्दं पवेसेसि । तमेको मच्छो मंसं खादित्वा अज्झोहरि । काको भरिया मे मताति रोदि परिदेवि ।

अथस्स परिदेवनसद्दं सुत्वा बहु काका सन्निपतित्वा—किं कारणा रोदसीति पुच्छिस्सु । सहायिका वो बेलन्ते नहायमाना ऊमिया हटाति ।

ते सब्बेपि एकरवं रवन्ता रोदिस्सु । अथ नेसं एतदहोसि इमं समुद्देदकं नाम अम्हाकं किं पहेति ? उदकं उस्सिञ्चित्वा समुद्दं तुच्छं कत्वा सहायिकं नीहरिस्सामाति । ते मुखं पूरेत्वा उदकं बहि छड्डेन्ति । लोणूदकेन च गले सुस्समाने उट्टायुट्टाय थलं गन्त्वा विस्समन्ति । ते हनुस्सु किलन्तेसु मुखेसु सुखन्तेसु अक्खिस्सु रत्तेसु दीना किलन्ता हुत्वा अञ्जामञ्जं आमन्तेत्वा—अम्भो ! मयं समुद्दा उदकं गहेत्वा बहि पातेम गहितगहितट्ठानं पुन उदकेन पूरेति समुद्दं तुच्छं कातुं न सक्खिस्सामाति वत्वा इमं गाथमाहंस्सु :—

अपिनु हनुका सन्ता मुखञ्च परिसुस्सति,
ओरमाम न पारेम पूरतेव महोदधीति ।

तत्थ—अपिनु हनुका सन्ताति अपि नो हनुका सन्ता अपि अम्हाकं हनुका किलन्ता । ओर-
माम न पारेमाति मयं अत्तनो बलेन महासमुदा उदकं आकड्ढेम ओसारेम तुच्छं पन नं कातुं न सक्कोम अयं
हि पूरतेव महोदधीति । [४१७]

एवं च पन वत्वा सब्बेपि ते काका तस्सा काकिया एवरूपं नाम तुण्डं अहोसि, एवरूपानि वट्टक्खीनि
एवरूपं छविसण्ठानं, एवरूपो मधुरसद्दो, सा नो इमं चोरसमुद्दं निस्साय नट्ठाति बहुं विप्पलपिसु । ते एवं विप्पल-
पमाने समुद्देवता भेरवरूपं दस्सेत्वा पलापेसि । एवं तेसं सोत्थि अहोसि ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा काकी अयं पुराणदुत्तियिका अहोसि
काको महल्लकत्थेरो । सेसकाका महल्लकत्थेरा । समुद्देवता पन अहमेवाति ।

काकजातकं ।

७. पुष्परत्तजातकं

नयिवं दुःखं अदुं दुःखन्ति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं उक्कण्ठितभिक्षुं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

सो हि भगवता सच्चं किर त्वं भिक्षु ! उक्कण्ठितोति वुत्ते सच्चन्ति वत्वा केन उक्कण्ठापितोसीति च पुट्ठो पुराणदुतियिकायाति वत्वा मधुरहत्थरसिका भन्ते ! सा इत्थी न सक्कोमि नं विना वसितुन्ति आह । अथ नं सत्था एसा ते भिक्षु ! अनत्थकारिका पुब्बेपि त्वं एतं निस्साय सूले उत्तामितो एतञ्चोव परिदेवमानो कालं कत्वा निरये निव्वत्तो, इदानि तं कस्मा पुन पत्थेसीति वत्वा अतीतं आहरि :—

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो आकासद्वेवता अहोसि । अथ वाराणसियं कत्तिक-रत्तिवारछणो सम्पत्तो होति । नगरं देवनगरं विय अलङ्कस्सि । सब्बो जनो छण्णीकालानिस्सितो अहोसि । एकस्स पन दुग्गतमनुस्सस्स एकमेव घनसाटकयुगं अहोमि । सो तं मुधोतं धोवापेत्वा ओभञ्जापेत्वा सतवलिकं सहस्सवलिकं कारेत्वा ठपेसि ।

अथ नं भरिया एवमाह—इच्छामहं सामि ! कुसुम्भरत्तं निवासेत्वा एकं पारुपित्वा तव कण्ठे लग्गा कत्तिकरत्तिवारं चरितुन्ति ।

भद्दे ! कुतो अम्हाकं दलिद्धानं कुसुम्भं ? सुद्धवत्थं निवासेत्वा कीलाहीति ।

कुसुम्भरत्तं अलभमाना छण्णीकालं न कीलिस्सामि, त्वं अञ्चं इत्थि गहेत्वा कीलस्सूति ।

भद्दे ! किं मं पीलेसि ? कुतो अम्हाकं कुसुम्भन्ति ?

सामि ! पुरिस्सस्स इच्छाय सति किं नाम नत्थि । ननु रञ्जो कुसुम्भवत्थुस्मि बहुं कुसुम्भन्ति ?

भद्दे ! तं ठानं रक्खसपरिग्गहीतपोक्खरणीसदिसं बलवा रक्खा, न सक्का उपसङ्कमितुं, मा ते एतं रुच्चि यथालब्धेनेव तुस्सस्सूति ।

सामि ! रत्तिभागे अन्धकारे सति पुरिस्सस्स अगमनीयद्धानं नाम अत्थीति^१ ?

इति सो ताय पुनप्पुन कथेन्तिया किलेसवसेन वचनं गहेत्वा होतु भद्दे ! मा चिन्त [४१८] यित्थाति तं समस्सासेत्वा रत्तिभागे जीवितं परिच्रजित्वा नगरा निक्खमित्वा रञ्जो कुसुम्भवत्थुं गन्वा वति मद्दित्वा अन्तोवत्थुं पाविसि । आरक्खमनुस्सा वतिसहं सुत्वा चोरो चोरोति परिवारेत्वा गहेत्वा परिभासित्वा कोट्टेत्वा बन्धित्वा पभाताय रत्तिया रञ्जो दस्सेसु । राजा गच्छथ नं सूले उत्तासेथाति आह । अथ नं पच्छावाहं बन्धित्वा वज्जभेरिया वज्जमानाय नगरा निक्खमापेत्वा सूले उत्तासेसु । बलववेदना वत्तन्ति काका सीसे निलीयित्वा कगयगसदिसेहि तुण्डेहि अक्खीनि विज्जन्ति । सो तथारूपमपि दुक्खं अमनसि करित्वा तमेव इत्थि अनुस्मरित्वा ताय नामभिद् घनपुष्परत्तनिवत्थाय कण्ठे आसत्त बाहुयुगलाय सद्धि कत्तिकरत्तिवारतो परिहीनोति चिन्तेत्वा इमं गाथमाहः—

नयिवं दुःखं अदुं दुःखं यं मं तुदति वायसो,

यं सामा पुष्परत्तेन कत्तिकं नानुभोस्सतीति ।

तत्थ—नयिवं दुःखं अदुं दुःखं यं मं तुदति वायसोति यञ्च इदं सूले लग्नपच्चयं कायिकचेतसिकदुक्खं यञ्च लोहमयेहि विय तुण्डेहि वायसो तुदति इदं सब्बमपि मय्हं न दुक्खं अदुं दुक्खं एतयेव पन मे दुक्खन्ति अत्थो । कतरं ? यं सामा पुष्परत्तेन कत्तिकं नानुभोस्सतीति यं सा पियङ्गुसामा मम भरिया एकं कुसुम्भरत्तं

निवासेत्वा एकं पारुषित्वा एवं घनपुष्परत्नेन वत्थयुगेन आच्छन्ना मं कण्ठे गृहेत्वा कत्तिकरत्तिवारं नानुभवि-
स्मति इमं मय्हं दुक्खं, एतदेव हि मं बाधतीति ।

सो एवं मातुगामं आरब्ध विप्लवपन्तोयेव कालं कत्वा निरये निव्वत्ति ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा जयम्पतिका इदानीं जयम्पतिका ।
तं कारणं पच्चक्खं कत्वा ठिता आकासद्वेवता पन अहमेवाति ।

पुष्परत्नजातकं ।

८. सिगालजातकं

नाहं पुनं न च पुनन्ति इदं सत्था जेतवनें विहरन्तो किलेसनिग्गहं आरब्ध कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थु

सावत्थियं किर पच्चसतमत्ता सहायका महाविभवा सेट्ठिपुत्ता सत्थु धम्मदेसनं मुत्वा सासने उरं दत्वा पब्बजित्वा जेतवने अन्तोकोटिसत्थारे विहरिंसु । अथेकदिवसं तेसं अड्ढरत्तसमये किलेसनिस्सितो संकप्पो उपपज्जि । ते उक्कण्ठित्वा अत्तना जहित्तकिलेसे पुन गण्हितुं चित्तं उप्पादयिंसु । अथ सत्था अड्ढरत्तसमनन्तरे सब्बञ्जुत्तञ्जाणदण्डदीपिकं उक्खिपित्वा कतराय नुवो रत्तिया जेतवने भिक्खू विहरन्तीति अज्झासयं ओलोकेन्तो तेसं भिक्खून् अब्भन्तरे कामरागसंकप्पस्स उपपन्नभावं अञ्जासि । सत्था च नाम एकपुत्तिका इत्थी अत्तनो पुत्तं विय एकचक्खुको [४१६] पुरिमो चक्खु विय अत्तनो सावके रक्खति । पुव्वण्हादिसु यस्मिं यस्मिं समये तेसं किलेसा उपपज्जन्ति ते तेसं किलेसे ततो परं वड्ढितुं अदत्त्वा तस्मिं तस्मियेव समये निग्गण्हाति । तेनस्स एतदहोसि, अयं च चक्कवत्तिरञ्जो अन्तोनगरेयेव चोगनं उपपन्नकालो विय वत्ति इदनेव तेसं धम्मदेसनं कत्वा ते किलेसे निग्गण्हित्वा अरहणं दस्सामीति । सो मुग्गिगन्धकुटितो निक्खमित्वा मधुग्गस्सरेन आनन्दाति आयस्मन्तं धम्मभण्डागारिकं आनन्दत्थेरं आमन्तेसि । थेरो किं भन्तेति आगन्त्वा वण्ढित्वा अट्ठासि । आनन्द ! यत्तका भिक्खू अन्तोकोटिसत्थारे विहरन्ति सब्बेव गन्धकुटिपरिवेगे सन्निपातेहीति । एवं किरस्स अहोसि सचाहं तेयेव पच्चसने भिक्खू पक्कोसापेस्सामि सत्थागो नो अब्भन्तरे किलेसानं उपपन्नभावो जातोति संविग्गमानसा धम्मदेसनं पटिच्छित्तुं न सक्खिस्सतीति । तस्मा सब्बे सन्निपातेहीति आह । थेरो माधु भन्तेति अवापुरणं आदाय परिवेगेन परिवेणं आहिण्डित्वा सब्बे भिक्खू गन्धकुटिपरिवेगे सन्निपातेत्वा वुद्धासनं पञ्जापेसि । सत्था पल्लं झकं आभुजित्वा उज्जु कायं पणिधाय सिलापठवियं पतिट्ठमानो सिनेहविय पञ्जात्तवुद्धासने निसीदि । आवेलावेला यमकयमका छब्बण्णघनवुद्धरस्मियो विस्सज्जेन्तो । तापि रस्मियो पाणिमत्ता छत्तमत्ता कूटागारकुच्छिमत्ता छिज्जित्वा छिज्जित्वा गगनतले विज्जुल्लता विय सञ्चारिमु । अण्णवकुच्छि खोभेत्वा बालसुरियुग्गमनकालो विय अहोसि । भिक्खुसङ्घोपि सत्थारं वण्ढित्वा गरुत्तितं पच्चुपट्ठेत्वा रत्तकम्बलसाणि परिकल्पन्तो विय परिवारेत्वा निसीदि ।

सत्था ब्रह्मस्सरं निच्छारेन्तो भिक्खू आमन्तेत्वा—न भिक्खवे ! भिक्खुना नाम कामवितक्कं व्यापादवितक्कं विहिमावितक्कन्ति इमे तयो अकुसलवितक्के वितक्केतुं वट्ठति अन्तो उपपन्नकिलेसो हि परित्तकोति जातु न वट्ठति, किलेसो नाम पच्चामित्तमदिमो पच्चामित्तो च खुद्दको नाम नत्थि ओक्कासं लभित्वा विनासमेव पापेति, एवमेवं अप्पमत्तकोपि किलेसो उपपज्जित्वा वड्ढितुं लभन्तो महाविनासं पापेति किलेसो नामेस हलाहलविसूप्पो उप्पाटितच्छविलोमगण्डनिभो^१ आमीविमपट्ठिभागो असनिअग्गिसदिसो अल्लीयित्तुं न युत्तो आसंकिन्वो उपपन्नपन्नक्खगेयेव पटिसङ्खानवलेन भावनावलेन यथा महत्तप्पि हृदये अट्ठत्वा पदुमिनिपत्ता उदविन्दुविय विवट्ठति एवं पजहित्तव्यो पोरारणकपण्डितापि अप्पमत्तकम्पि किलेसं गरहित्वा यथा पुन अब्भन्तरे नूप्पज्जति एवं निग्गण्हिस्सूति वत्वा अतीनं आहरि :—[४२०]

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो सिगालयोनियं पटिसन्धि गहेत्वा अरञ्जो नदीतीरे निवासं कण्हेसि । अथेको जग्गत्थो गङ्गातीरे कालमकासि । सिगालो गोचरपसूतो तं हत्थिसरीरं दिस्वा महा मे गोचरो उपपन्नोति गन्त्वा सोण्डे डसि । नङ्गलीसाय दट्टकालो विय अहोसि । सो नत्थेत्थ खादितव्वयुत्तकन्ति दन्ते डसि । थम्भे दट्टकालो विय अहोसि । कण्णे डसि । सप्पकोटियं दट्टकालो विय

अहोसि । उदरे डसि । कुमले दट्टकालो विय अहोसि । पादे डसि । उदुक्खले दट्टकालो विय अहोसि । नङ्गुट्ठे डसि । मूलले दट्टकालो विय अहोसि । एत्थाणि नत्थि खादितव्वयुत्तकन्ति सव्वत्थ अस्सादं अल-
भन्तो वच्चमग्गे डमि । मुदुपूवे दट्टकालो विय अहोसि । सो लद्धंदानि मे इमस्मिं सरीरे मुदुं खादितव्वयुत्त-
ट्टानन्ति । ततो पट्टाय खादन्तो अन्तोकुच्छि पविसित्वा वक्कहदयादीनि खादित्वा पिपासितकाले लोहितं
पिवित्वा निपज्जितुकामकाले उदरं पथरित्वा निपज्जति । अथस्स एतदहोसि इदं हत्थिसरीरं मय्हं निवा-
समुखताय गेहसदिसं खादितुकामताय सति पट्टतमंमं किदानि मे अज्जात्थ कम्मन्ति सो अज्जात्थ अगन्त्वा
हत्थिकुच्छियंयेव मंमं खादित्वा वसति । गच्छन्ते गच्छन्ते काले निदाघवातसम्पस्सेन चैव सुरियरस्मिसन्तापेन
च तं कुण्णं सुस्सित्वा वलियो गण्हि । सिगालस्स पविट्टद्वारं पिहितं, अन्तोकुच्छियं अन्धकारो अहोसि । सिगा-
लस्स लोकन्तर्गिकनिवामो विय जानो कुण्णे मुस्सन्ते मंसम्पि सुस्मि लोहितम्पि पच्छिज्जि । सो निक्खमन-
द्वारं अलभन्तो भयप्पत्तो हुत्वा सन्धावन्तो इतोचिनो च पहरित्वा निक्खमनद्वारं परिसेसमानो विचरति । एवं
तस्मि उक्खलियं पिट्टपिण्डि विय अन्तोकुच्छियं सिज्जमाने कतिपाहच्चयेन महामेघो पावस्सि । अथ नं कुण्णं
तेमित्वा उट्टाय पकतिमण्ठानेन अट्टामि । वच्चमग्गो विवटो हुत्वा तारका विय पज्जायि मिगालो तं छिहं दिस्वा
इदानि मे जीविनं लद्धन्ति यावहत्थिममीमा पट्टिकमित्वा वेगेन पक्खन्दित्वा वच्चमग्गं सीसेन पहरित्वा
निक्खमि । तस्स संसिन्नसरीरन्ता सव्वलोमानि वच्चमग्गे अल्लीयिंसु । सो तालक्खन्धसदिमेन निल्लोमेन
सरीरेन उच्चिग्गचित्तो मुहुनं धावित्वा निवत्तित्वा निमिन्नो सरीरं ओलोकेत्वा इदं दुक्खं मय्हं न अज्जेन
कतं लोभहेतु पन लोभकारणा लोभं निस्साय मया एतं कतं इतोदानि पट्टाय न लोभवसिको भविस्मामि
पुन हत्थिसरीरं नाम न पविसिस्मामीति संविग्गहदयो हुत्वा इमं गाथमाह :—

नाहं पुनं न च पुनं न चापि अपुनपुनं,
हत्थिबोन्दि पवेक्खामि तथा हि भयतज्जितोति । [४२१]

तत्थ—न चापि अपुनपुनन्ति अकारो निपातमत्तो । अयं पनेतिस्मा सकलायपि गाथायत्थो । अहं
हि इतो पुन ततो च पुनन्ति वृत्तवारतो पुन ततोपि च पुनपुनं वारगसरीरसङ्ख्यातं हत्थिबोन्दि न पवेक्खामि ।
किं कारणा ? तथाहि भयतज्जितो तथाहि अहं इमस्मियेव पवेसने भयतज्जितो मग्गभयेन मन्तासं संवेगं
आपादितोति ।

एवञ्च पन वत्ता ततो च पलायित्वा पुन तं वा अज्जं वा हत्थिसरीरं नाम निवत्तित्वापि न ओलो-
केसि । ततोपट्टाय न लोभवसिको अहोसि ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा भिक्खवे ! अन्तो उत्पन्नलोकिसस्स नाम वड्डितुं अदत्त्वा तत्थ
तत्थेव निग्गण्हिन् वट्टतीति वत्ता सच्चानि पकासेत्वा जातकं समोधानेसि । सच्चर्पाग्योसाने पञ्चसतापि
ते भिक्खू अरहन्ते पतिट्ठाहिंसु । अवमेमेमु केचि मोतापन्ना केचि मकदागामिनो केचि अनागामिनो अहेसु ।
तदा सिगालो अहमेव अहोमिन्ति ।

सिगालजातकं ।

६. एकपणजातकं

एकपणो ग्रयं रक्खोति इदं सत्था वेसालियं उपनिस्माय महावने कटागारसालायं विहरन्तो वेसालिकं दुट्ठलिच्छविकुमारकं आरब्ध कथेमि ।

पच्चपन्नवत्थु

तस्मिं हि काले वेसालिनगरं गावृतगावृतन्तरे तीहि पकारेहि परिक्खित्तं, तीसू ठानेस् गोपुरट्टालकोट्ट-
कथुत्तं परमसोभग्गप्पत्तं । तत्थ निच्चकालं रज्जं कारेत्वा वसन्तानं येव राजूनं सत्तसहस्मानि सत्तसतानि सत्त
च राजानो होन्ति, तत्तकायेव उपराजानो, तत्तका सेनापतिनो, तत्तका भण्डागारिका । तेसं राजकुमारानं
अन्तरे एको दुट्ठलिच्छविकुमारो नाम अहोसि, कोधनो चण्डो फरुसो, दण्डेन घट्टितासीविसो विय निच्चं पज्ज-
लितो कोधेन । तस्स पुरतो द्वे तीणि वचनानि कथेत्तुं समत्थो नाम नत्थि । तं नेव मातापितरो न ज्ञातयो न
मित्तसुहज्जा मिक्खापेत्तुं सक्खिस्सु । अथस्स मातापितुन्नं एतदहोमि अयं कुमारो अतिफरुसो साहसिको ठपेत्वा
सम्मासम्बुद्धं अञ्चो इमं विनेत्तुं समत्थो नाम नत्थि बुद्धवेनेय्येन पन भवितव्वन्ति । ते तं आदाय सत्थु सन्तिकं
गन्त्वा वन्दित्वा आहंसु—भन्ते ! अयं कुमारो चण्डो फरुसो कोधेन पज्जलति इमस्स ओवादं देथाति ।

सत्था तं कुमारं ओवदि—कुमार ! इमेसु नाम सत्तेसु चण्डेन फरुसेन साहसिकेन विहेठकजातिकेन
न भवितव्वं । फरुसवाचो नाम विजातमातुयापि पितुनोपि पुत्तस्सपि भातुभगिनीनम्पि [४२२] पजापतियापि
मित्तवन्धवानम्पि अप्पियो होति अमनापो डसितुं आगच्छन्तो सप्पो विय अटवियं उट्ठितचोरा विय खादितुं आग-
च्छन्तो यक्खो विय च उव्वेजनीयो हुत्वा दुतियकचित्तवारे निरयादिसु निव्वत्ति दिट्ठेव धम्मे कोधनो पुगलो
मण्डितपसाधितोपि दुव्वण्णोव होति । पुण्णचन्दसस्मिरिकम्पिस्स मुखं जालाभिहतपदुमं विय मलग्गहीतकञ्च-
नादासपण्डलं विय च विरुपं होति दुट्ठसिकं । कोधं निस्साय हि सत्ता सत्थं आदाय अत्तनाव अत्तानं पहरन्ति,
विसं खादन्ति, रज्जुया उव्वन्धन्ति, पपाता पपन्ति । एवं कोधवसेन कालङ्कत्वा निरयादिसु उप्पज्जन्ति
विहेठकजातिकापि दिट्ठेव धम्मे गरहं पत्वा कायस्स भेदा निरयादिसु उप्पज्जन्ति । पुन मनुस्सत्तं लभित्वा
जातकालतोपट्टाय रोगब्रहुलाव होन्ति । चक्खुरोगो सोतरोगोति आदिसु च रोगेसु एकतो बुद्ध्या एकस्मि पतन्ति
रोगेन अपरिमुत्ताव हुत्वा निच्चदुक्खिताव होन्ति । तस्मा सब्बसत्तेसु मेत्तचित्तेन हितचित्तेन मदुचित्तेन भवि-
तव्वं । एवरूपो हि पुगलो निरयादिभयेहि न परिमुच्चतीति ।

सो कुमारो सत्थु ओवादं लभित्वा एकोवादेनेव निहतमानो दन्तो निव्विसेवनो मेत्तचित्तो मुदुचित्तो
अहोसि । अक्कोसन्तम्पि पहरन्तम्पि निवत्तित्वापि न ओलोकेसि । उद्धदाठो विय सप्पो अलच्छिन्नो विय
कक्कटको छिन्नविसारणो विय च उसभो अहोसि । तस्स तं पवत्ति ज्ञात्वा भिक्खू धम्मसभायं कथं समुट्ठापेसुं—
आवुसो ! दुट्ठलिच्छविकुमारं सुचिरम्पि ओवदित्वा नेव मातापितरो न जातिमित्तादयो दमेत्तुं सक्खिस्सु ।
सम्मासम्बुद्धो पन एकोवादेनेव दमेत्वा निव्विसेवनं कत्वा मत्तवरवारणं विय समुग्गहितानञ्जकाणं अकासि ।
याव सुभासितञ्चिदं—“हत्थिदमकेन भिक्खवे ! हत्थिदम्मो सारितो एकं येव दिसं धावति पुरत्थिमं वा
पच्छिमं वा उत्तरं वा दक्खिणं वा । अस्सदमकेन भिक्खवे ! अस्सदम्मो सारितो एकं येव दिसं धावति पुरत्थिमं
वा पच्छिमं वा उत्तरं वा दक्खिणं वा । गोदमकेन भिक्खवे ! गोदम्मो सारितो एकं येव दिसं धावति पुरत्थिमं
वा पच्छिमं वा उत्तरं वा दक्खिणं वा । तथागतेन भिक्खवे ! अरहता सम्मासम्बुद्धेन पुरिसदम्मो सारितो
अट्ठदिसा धावति रूपी रूपानि पस्सति अयमेका दिसा—पे—सञ्जावेदयितनिरोधं उपसम्पज्ज विहरति अयं अट्ठमी
दिसा । सो बुच्चति योग्गाचरियानं अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथी”ति । नहि आवुसो ! सम्मासम्बुद्धेन सदिसो
पुरिसदम्मसारथी नाम अत्थीति ।

सत्था आगन्त्वा कायनुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वुत्ते
न भिक्खवे ! इदानीवेस मया एकोवादेनेव दमितो पुव्वेपहं इमं एकोवादेनेव दमेसिन्ति वत्वा अतीतं आहरिः—[४२३]

अतीतवत्थु

अतीने वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारन्ते बोधिसत्तो उदिच्चब्राह्मणकाले निव्वत्तित्वा वयप्पत्तो तक्क-
सिलायं तयो वेदे सव्वसिप्पानि च उग्गण्हित्वा कञ्चिकालं घरावासं वसित्वा मतापितुस्रं अच्चयेन इसिपव्व-
ज्जं पव्वजित्वा अभिञ्जा च समापत्तियो च निव्वत्तेत्वा हिमवन्ते वासं कप्पेसि तत्थ चिरं वसित्वा लोणम्बि-
लसेवनत्थाय जनपदं आगन्त्वा वाराणसि पत्वा राजुय्याने वसित्वा पुनरिवसे सुनिवत्थो सुपारुतो तापसाकप्प-
सम्पन्नो भिक्खाय नगरं पविसित्वा राजङ्गणं पापुण्णि ।

राजा सीहपञ्जरेण ओलोकेन्तो तं दिस्वा इरियापथे पसीदित्वा अयं तापसो सन्तिन्द्रियो सन्तमानसो
युगमत्तदसो पदवारे पदवारे सहस्सत्थविकं ठपेन्तो विय सीहविजम्भितेन आगच्छति सचे सन्तधम्मो
नामेको अत्थि इमस्स तेनव्वन्तरे भवितव्वन्ति चिन्तेत्वा एकं अमच्चं ओलोकेसि ।

सो—किं करोमि देवाति आह ।

एतं तापसं आनेहीति ।

सो साधु देवाति बोधिसत्तं उपसंक्रमित्वा वन्दित्वा हत्थतो भिक्खाभाजनं गहेत्वा किं महापुञ्जाति
वृत्ते—भन्ते ! राजा तं पक्कोमतीति आह ।

बोधिसत्तो—मयं राजकुलूपगा हेमवतका नामम्हाति आह ।

अमच्चो गन्त्वा तमत्थं रञ्जो आरोचेमि । राजा अञ्जो अम्हाकं कुलूपगो नत्थि आनेहि नन्ति
आह । अमच्चो गन्त्वा बोधिसत्तं वन्दित्वा याचित्वा राजनिवेमनं पवेसेसि । राजा बोधिसत्तं वन्दित्वा
समुस्सितसेतच्छन्ते कञ्चनपल्लङ्गे निसीदापेत्वा अत्तनो पटियत्तं नानग्गमभोजनं भोजेत्वा—भन्ते ! कुहिं
वसथाति पुच्छि ।

हेमवतका मयं महाराजाति ।

इदानीं कहां गच्छथाति ?

वस्सारत्तानुरूपं सेनासनं उपधारेम महाराजाति ।

तेन हि भन्ते ! अम्हाकञ्चोव उय्याने वसथाति ।

पटिञ्जं गहेत्वा सयम्पि भुञ्जित्वा बोधिसत्तं आदाय उय्यानं गन्त्वा पण्णसालं मापेत्वा रत्तिट्टानदि-
वाट्टानानि कारेत्वा पव्वजितपरिक्खारे दत्वा उय्यानपालं पटिच्छापेत्वा नगरं पाविसि । ततोपट्टाय बोधिसत्तो
उय्याने वसति । राजापिस्स दिवसे दिवसे द्वत्तिक्खत्तुं उपट्टानं गच्छति ।

तस्स पन रञ्जो दुट्ठकुमारो नाम पुत्तो अहोसि चण्डो फरुसो नेव नं राजा दमेतुं असक्खि न सेसजातका
अमच्चापि ब्राह्मणगहपतिकापि एकतो हुत्वा सामि ! मा एवं करि एवं कातुं न लब्भाति कुञ्जित्वा कथेन्तापि
कथं गाहापेतुं न सक्खिमु । राजा चिन्नेसि—उपेत्वा मम अय्यं सीलवन्ततापसं अञ्जो इमं कुमारं दमेतुं समत्थो
नाम नत्थि, सो येव नं दमेस्सतीति ।

सो कुमारं आदाय बोधिसत्तस्स सन्तिकं गन्त्वा भन्ते ! अयं कुमारो चण्डो फरुसो, मयं इमं दमेतुं न
सक्कोम तुम्हे नं एकेन उपायेन सिक्खापेथाति कुमारं बोधिसत्तस्स [४२४] निय्यादेत्वा पक्कामि । बोधि-
सत्तो कुमारं गहेत्वा उय्याने विचरन्तो एकतो एकेन एकतो एकेनाति द्वीहिथेव पत्तेहि एकं निम्बपोतकं दिस्वा
कुमारं आह—कुमार ! एतस्स ताव रुक्खपोतकस्स पण्णं खादित्वा रसं जानाहीति ।

सो तस्म एकं पण्णं सङ्खादित्वा रसं ज्ञात्वा धीति^१ सहखेलेन भूमियं निट्ठुभि । किमेतं कुमाराति वृत्ते—
भन्ते ! इदानींवेस रुक्खो हलाहलविमूषमो वड्डन्तो पन ब्रह्म मनुस्से मारेस्सतीति निम्बपोतकं उप्पाटेत्वा हत्थेहि
परिमदित्वा इमं गाथमाह :—

एकपण्णो अयं रुक्खो न भूम्या चतुरङ्गुलो,
फलेन विसक्कपेन महायं किं भविस्सतीति ।

तत्थ—एकपण्णोति उभोसु पस्सेसु एकेकपण्णो । न भूम्या चतुरङ्गुलोति भूमितो चतुरङ्गुलमत्तम्पि न वड्ढितो । फलेनाति पलासेन । विसकप्पेगाति हलाहलविससदिसेन । एवं खुद्दकोपि समानो एवरूपेन तित्तकेन पण्णेन समन्नागतोति अत्थो । महायं किं भविस्सतीति यदा पनायं वुद्धिप्पत्तो महा भविस्सति तदा किं नाम भविस्सति ? अट्ठा मनुस्समारको भविस्सतीति एतं उप्पाटेत्वा मद्दित्वा छड्ढेसिन्ति आह ।

अथ नं बोधिसत्तो एतदवोच—कुमार ! त्वं इमं ताव निम्बपोतकं इदानीव एवं तित्तको महल्लककाले कुतो इमं निस्साय वड्ढीति उप्पाटेत्वा मद्दित्वा छड्ढेसि यथा त्वं एतस्मि पटिपज्जि एवमेव तं रट्ठवासिनोपि अयं कुमारो दहरकाले येव एवं चण्डो फरुसो महल्लककाले रज्जं पत्वा किं नाम करिस्सति ? कुतो अम्हाकं एतं निस्साय वड्ढीति तव कुलसन्तकं रज्जं अदत्वा निम्बपोतकं विय तं उप्पाटेत्वा रट्ठा पट्ठाजनियकम्मं करिस्सन्ति, तस्मा निम्बरुक्खपटिभागतं हित्वा इतो पट्ठाय खन्तिमेत्तानुद्यसम्पन्नो होहीति ।

सो ततो पट्ठाय निहतमानो निब्बिसेवनो खन्तिमेत्तानुद्यसम्पन्नो हुत्वा बोधिसत्तस्स ओवादे ठत्वा पितु अच्चयेन रज्जं पत्वा दानादीनि पुञ्जकम्मानि कत्वा यथाकम्मं अगमासि ।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा न भिक्खवे ! इदानीवेमदुट्ठलिच्छविकुमारो मया दमितो, पुट्ठेपाहं एतं दमेसिं येवाति वत्वा जातकं समोधानेमि । तदा दुट्ठकुमारो अयं लिच्छविकुमारो अहोमि । राजा आनन्दो । ओवाददायकतापसो पन अहमेवाति ।

एकपण्णजातकं ।

१०. सञ्जीवजातकं

असन्तं यो पग्गण्हातीति इदं सत्था वेलुवने विहरन्तो अजातसत्तुस्स रञ्जो असन्तपग्गहं आरब्ध कथेसि ।
[४२५]

पच्चुपल्लवत्थु

सो हि बद्धानं पतिकण्टकभूते दुस्सीले पापधम्मे देवदत्ते पसीदित्वा तं असन्तं असप्पुरिसं पग्गय्ह तस्स सक्कारं करिस्सामीति बहुं धनं परिच्चजित्वा गयासीसे विहारं कारेत्वा तस्सेव वचनं गहेत्वा पितरं धम्मराजानं सोतापन्नं अरियसावकं धातेत्वा अत्तनो सोतापत्तिमग्गस्स उपनिस्सयं छिन्दित्वा महावितासं पत्तो । सो हि देवदत्तो पठविं पविट्ठोति सुत्वा कच्चि नुखो मम्मि पठवी गिलेय्याति भीततसितो रज्जसुखं न लभति, सयने अस्सादसुखं न विन्दति, तिब्बकारणाभितुन्नो हत्थिपोतो^१ विय कम्पमानो विचरति । सो पठविं फलमानं विय अवीचिजालं निक्खमन्ति विय पठविया अत्तानं गिलीयमानं विय आदित्ताय लोहपठविया उत्तानकं निपज्जापेत्वा अयमूलेहि कोट्टियमानं विय च समनुपस्सि । तेनस्स पट्टकुक्कुटस्सेव महुत्तम्मि कम्पमानस्स अवत्थानं नाम नाहोसि । सो सम्मासम्बुद्धं पस्सितुकामो खमापेतुकामो पज्जं पुच्छितुकामो अहोसि । अत्तनो पन अपराधमहन्तनाय उपसङ्कमितुं न सक्कोति ।

अथस्म राजगहनगरे कत्तिकरत्तिवारे सम्पत्ते देवनगरं विय नगरे अलङ्कते महातले अमच्चगरापरिवृतस्स कच्चनैयमने निसिन्नस्स जीवकं कोमारभच्चं अविदूरे निसिन्नं दिस्वा एतदहोसि—जीवकं गहेत्वा मम्मापम्बुद्धं पस्सिस्सामि न खो पन सक्का मया उज्जकमेव वत्तुं अहं सम्म ! जीवक ! सयं गन्तुं न सक्कोमि एहि मं सत्थं सन्निकं नेहीति परियायेन पन रत्तिमम्पदं वण्णेत्वा कल्लुखज्ज मयं समगं वा ब्राह्मणं वा पयिरुपासेय्याम यं नो पयिरुपामन्तानं चित्तं पसीदेय्याति वक्खामि तं मत्वा अमच्चा अत्तनो अत्तनो सत्थागनं वण्णं कथेस्सन्ति, जीवकोपि सम्मासम्बुद्धस्स वण्णं कथेस्सति । अथ नं गहेत्वा सत्थं सन्निकं गच्छिस्सामीति ।

सो पज्जहि पदेहि रत्तिं वण्णेसि—“लक्खञ्जा वत भो ! दोसिना रत्ति, अभिरूपा वत भो ! दोसिना रत्ति, दस्सनीया वत भो ! दोसिना रत्ति, पासादिका वत भो ! दोसिना रत्ति, रमणीया वत भो ! दोसिना रत्ति, कल्लुखज्ज मयं समगं वा ब्राह्मणं वा पयिरुपासेय्याम ? यं नो पयिरुपासतो चित्तं पसीदेय्या”ति ।

अयेको अमच्चो पूरगकस्सपम्म वण्णं कथेसि । एको मक्खलिगोमालस्म, एको अजितकेसकम्बलस्म, एको पकुधकच्चायनस्म, एको रज्जयस्म वेत्तट्ठिपुत्तस्म, एको नाथपुत्तनिगण्ठस्मानि^२ । राजा तेमं कथं सुत्वा तुण्ही अहोमि । सो हि जीवकस्सेव महामच्चवस्म कथं पच्चांसिमति । जीवकोपि रञ्जो मं आरब्ध कथितेयेव जानिस्सामीति अविदूरे तुण्ही निमीदि ।

अथ तं राजा आह—[४२६] न्वम्पन सम्म ! जीवक ! किं तुण्हीति ?

तस्मिं खगे जीवको उट्ठायामना येन भगवा तेनञ्जलिम्पगामेत्वा—एसो देव ! भगवा अरहं सम्मा-मम्बुद्धो अम्हाकं अम्भवने विहरति सदिं अड्डनेलमेहि भिक्खुमतेहि तच्च पन भगवन्तं एवं कल्याणो किन्तिमट्ठो अब्भुगतोति नव अरहादी गुणे वत्वा जानितो पट्ठाय पुव्वनिमित्तादिभेदं भगवतो आनुभावं पकामेत्वा तं भगवन्तं देवो पयिरुपामनु धम्मं सुणातु पज्जं पुच्छतूति आह ।

राजा सम्पुष्पामनोरथो हत्वा तेनहि सम्म ! जीवक ! हत्थियानानि कप्पापेहीति यानानि कप्पापेत्वा महत्तेन राजानुभावेन जीवकम्बवनं गत्वा गन्धमण्डलमाले भिक्खुमङ्गलपरिवृतं तथागतं दिस्वा सन्तवीचिमज्जे महानावं विय निच्चवं भिक्खुमङ्गलं इतो चित्तो च अनुविलोकेत्वा एवरूपा नाम मे परिग्मा न दिट्ठपुव्वानि इरियापथेयेव पसीदित्वा सङ्घस्स अञ्जलि पग्गण्हित्वा थुतिं कत्वा भगवन्तं वन्दित्वा एकमन्तं निमित्तो मामञ्जाफलपज्जं पुच्छि । अथस्म भगवा द्वीहि भागवारेहि पतिमण्डेत्वा मामञ्जाफलमन्तं कथेसि ।

१. स्या०—पोतो विय । २. स्या०—नाटपुत्तनिगण्ठस्साति ।

सो मुत्तपरियोसाने अत्तमनो भगवन्तं खमापेत्वा उट्टायासना पदक्खिणं कत्वा पक्कामि । सत्था अचिरपक्वन्तस्स रज्ज्वा भिक्खू आमन्तेत्वा—“खतायं भिक्खवे ! राजा, उपहतायं भिक्खवे ! राजा, सचायं भिक्खवे ! राजा इस्सरियकारणा पितरं धम्मिकं धम्मराजानं जीविता न वोरोपेस्सथ इमस्मिमेव आसने विरजं वीतमलं धम्मचक्रं उप्पज्जिस्सथ । देवदत्तं पन निस्साय असन्तपग्गहं कत्वा सोतापत्तिफला परिहीनोति” आह ।

पुनरिदमे भिक्खू धम्मसभायं कथं समुट्ठापेसुं—आवुसो ! अजातसत्तु किर असन्तपग्गहं कत्वा दुस्सीलं पापधम्मं देवदत्तं निस्साय पितुघातकम्मस्स कत्ता सोतापत्तिफला परिहीनो देवदत्तेन नासितो राजाति ।

सत्था आगन्त्वा कायनुत्थ भिक्खवे ! एतरहि कथाय सन्निस्सन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वृत्ते न भिक्खवे ! अजातसत्तु इदानीव अमन्तपग्गहं कत्वा महाविनासं पत्तो पुब्बेपेस असन्तपग्गहेनेव अत्तानं नासे-सीति वत्ता अतीतं आहरि :—

अतीतवत्थु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो महाविभवे ब्राह्मणकुले निव्वत्तित्वा वयपत्तो तक्कमिलं गन्त्वा सव्वसिप्पानि उग्गहिप्त्वा वाराणसियं दिसापामोक्खो आचरियो हुत्वा पञ्चमाणवकसत्तानि सिप्पं वाचेति । तेसु माणवेसु एको सञ्जीवो नाम माणवो अत्थि । बोधिसत्तो तस्स मतकुट्टापनमन्तं अदासि सो उट्ठापनमन्तमेव गहेत्वा पटिवाहनमन्तं पन अगहेत्वा एकदिवसं माणवेहि सद्धि दारुअत्थाय अरज्जं गन्त्वा एकं मतव्यग्घं दिस्वा माणवे [४२७] आह—भो ! इमं मतव्यग्घं उट्ठापेस्सामीति ।

माणवा—न मक्खिस्ससीति आहंसु ।

पस्सन्तानज्जोव वो उट्ठापेस्सामीति । -

सचे माणव ! सक्कोसि उट्ठापेहीति ।

एवञ्च पन वत्ता ते माणवा रुक्खं अभिरुहिंसु । सञ्जीवो मन्तं परिवत्तेत्वा मतव्यग्घं सक्खराहि पहरि । व्यग्घो उट्ठाय वेगेनागन्त्वा सञ्जीवं गलनालियं डसित्वा जीवितक्खयं पापेत्वा तत्थेव पति । सञ्जीवोपि तत्थेव पति । उभोपि एकद्वानेयेव मता निपज्जिंसु । माणवा दारुआदीनि आदाय आगन्त्वा तं पवन्ति आचरियस्स आरोचेसु । आचरियो माणवे आमन्तेत्वा—ताता ! असन्तपग्गहकारा नाम अयुत्तद्वाने सक्कार-सम्मानं करोन्ता एवरूपं दुक्खं पटिलभन्ति येवाति वत्ता इमं गाथमाह :—

असन्तं यो पग्गहाति असन्तञ्चुपसेवति,

तमेव घासं कुरुते व्यग्घो सञ्जीविको यथाति ।

तत्थ—असन्तति तीहि दुच्चरितेहि समन्नागतं दुस्सीलं पापधम्मं । यो पग्गहातीति यं खत्तियादिसु यो कोचि एवरूपं दुस्सीलं पव्वजितं वा चीवरादिसम्पदानेन गहट्ठं वा उपरज्जसेनापटिद्वानादिसम्पदानेन पग्गहाति । सक्कारसम्मानं करोतीति अत्थो । असन्तञ्चुपसेवतीति यो च एवरूपं असन्तं दुस्सीलं उपसेवति भजति पयिरुपासति । तमेव घासं कुरुतेति तमेव असन्तपग्गहनकं सो दुस्सीलो पापपुगलो घसति सङ्खादति विनासं पापेति । कथं ? व्यग्घो सञ्जीविको यथाति यथा सञ्जीवकेन माणवेन मन्तं परिवत्तेत्वा मतव्यग्घो सञ्जीविको जीवितसम्पदानेन सम्पग्गहितो अत्तनो जीवितदायकं सञ्जीवमेव जीविता वोरोपेत्वा तत्थेव पातेसि । एवं अज्जोपि यो असन्तसम्पग्गहं करोति सो दुस्सीलो तं अत्तनो सम्पग्गाहकमेव विनासेति । एवं असन्तसम्पग्गाहका विनासं पापुणन्तीति ।

बोधिसत्तो इमाय गाथाय माणवानं धम्मं देसेत्वा दानादीनि पुज्जानि कत्वा यथाकम्मं गतो । सत्थापि इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा मतव्यग्घुट्ठापको माणवो अजातसत्तु अहोसि । दिमा-पामोक्खाचरियो पन अहमेवाति ।

सञ्जीवजातकं ।

ककण्टकवग्गो पण्णरसमो ।

उपरिमो पण्णासको ।

एककनिपातवग्गणा निट्ठिता ।

सुद्धिपत्तं

| पिट्ठे | पन्तिथं | असुद्धि | सुद्धि |
|--------|---------|------------------|---------------------|
| २ | ८ | थरेन | थरेन |
| " | ३० | उग्गाण्ह | उग्गाण्ह |
| ३ | २ | गाथाबन्धनेन न | गाथाबन्धनेन पन |
| " | ३ | वचनेहि | वचनेहि |
| " | १० | वीणासद्देन | वीणासद्देन |
| " | ३४ | यो | सो |
| ४ | १ | एव | एवं |
| " | १ | भव | भवे |
| " | ४ | अजातिसंखातेन | अजातिसंखातेन |
| " | ६ | तिविधग्गी | तिविधग्गी |
| " | १२ | सञ्छन्न | सञ्छन्नं |
| " | २६ | यथासि | यथापि |
| " | ३१ | परिपीलीतो | परिपीलितो |
| " | ३३ | एव | एवं |
| " | ३५ | छड्डत्वा | छड्डत्वा |
| ५ | ४ | जिगुच्छिय | जिगुच्छिय |
| " | ११ | वच्चं | वच्चं |
| " | १५ | गच्छिस्स | गच्छिस्सं |
| " | २१ | सकनिवेसन | सकनिवेसने |
| " | २४ | कारगगगोहि | कारगगगोहि |
| " | ३३ | पञ्चदोसविवज्जित | पञ्चदोसविवज्जितं |
| " | ३८ | गुग | गुगोहि |
| ६ | ७ | वसनट्ठानं | वसनट्ठानं |
| " | ३० | गुगसमपेतं | गुगसमपेतं |
| " | ३५ | आनुपुब्बकथा | आनुपुब्बकथा |
| " | ३८ | जटामण लवाकचीरं | जटामण्डलवाकचीरं |
| ७ | २ | प वजन्तु'ति | पव्वजन्तू'ति |
| " | ७ | विवरित्वाअन्तो | विवरित्वा अन्तो |
| " | ११ | तापसपव्वज्जं | तापसपव्वज्जं |
| " | १३ | जिराणस्स | जिण्णास्स |
| " | १४ | दुरभिसम्भवभावो | दुरभिसम्भवभावो |
| " | २० | अप्पग्धं | अप्पग्धं |
| " | २७ | अट्ठदोससमाकिण्णं | अट्ठदोससमाकिण्णं |
| " | ३० | निच्चलभावकर्त्थं | निच्चलभावकर्त्तव्यं |
| " | ३१ | अंकुरापच्छि | अंकुरपच्छि |
| " | ३२ | अपर परं | अपरापरं |

| पिट्ठे | पन्तिथं | असुद्धि | सुद्धि |
|--------|---------|---|----------------|
| ८ | ३५ | उदपादी | उदपादि |
| " | ३७ | वीतिनामन्तो | वीतिनामेन्तो |
| ९ | १ | वं | एवं |
| " | ४ | नादसि | नादसि |
| " | ३४ | यव | येव |
| " | " | महानभावानं | महानुभावानं |
| " | ३६ | मानुसकगन्धहि | मानुसकगन्धेहि |
| १० | ३ | छुव्वण्णाघन- | छुव्वण्णघन- |
| " | २१ | पटिपज्जिअ अजसं | पटिपज्जि अजसं |
| " | ३४ | सहसिस्सेहि | सहसिस्सेहि |
| " | ३५ | मा मा | मा नं |
| ११ | २ | अट्ठ | अट्ठ- |
| " | ११ | पारेमि | तारेमि |
| " | २० | अत्तभावपि | अत्तभावे |
| " | २१ | हेतुसम्पन्नपि | हेतुसम्पन्नेपि |
| " | ३२ | यद्धत्तं | युद्धत्तं |
| " | ३४ | एव | एवं |
| " | ३७ | उग्घान्तेतो | उग्घाटेन्तो |
| १२ | २ | अनागतं सञ्जागं | अनागतंसञ्जागं |
| " | ४ | व्याकसि | व्याकासि |
| " | " | तापरां | तापसं |
| " | ११ | पटिग्गहेत्वा | पटिग्गहेत्वा |
| " | १४ | वचनमब्रवी | वचनमब्रुवी |
| १४ | १४ | तपज्जुभो | तेपज्जुभो |
| " | ३५ | तदान | तदा न |
| १६ | १ | यस | यसं |
| " | ४ | वि चिनामि | विचिनामि |
| " | १३ | कुम्भो | कुम्भो |
| १६ | ३४ | होन्तो | होन्तो |
| २० | २८ | तेलपन्ते | तेलयन्ते |
| २२ | १६ | वीरोच | विरोच |
| २३ | ६ | उपगन्त्वा न | उपगन्त्वान |
| २३ | ३१-३७ | एता गाथायो न भवित्त्वा, जातकट्टकथायं पन एता | |

न दिस्सन्ति । अपि च बुद्धवंसे एवं वृत्ता—

“दसवस्समहस्सानि अगारं अज्भसो वसि ।

हंसा कोच्चा मयूरा च तयो पासादमुत्तमा ॥

तीणि सतसहस्सानि नारियो समलङ्कता ।

पट्टमा नाम सा नारी उसभक्खन्धो च अत्रजो ॥

निमित्ते चतुरो दिस्वा हत्थियानेन निक्खमि ।

पिट्ठे

पन्तियं

असुद्धि

सुद्धि

अनूनदसमासानि पधानं पदहि जिनो ॥
पधानचारं चरेत्वा अवुज्झि मानसं मुनि ।”

२४

१-२

एसापि गाथा जातकट्टकथायं न दिस्सति । बुद्धवंसे

पन एवं आगताः—

“ब्रह्मुना याचितो सन्तो दीपङ्करो महामुनि ।
वत्ति चक्कं महावीरो नन्दारामे सिरिधरे ॥
निसिन्नो सिरीसमूलम्हि अका तित्थियमद्दं !”

२४

४

सामतो

गागतो

२५

१८

जोवितं

जीवितं

”

२०

पदक्खीरां

पदविखरां

२६

१

कारति

कारेति

”

१६

अय

अयं

”

२१

नीस्साय

निस्साय

२७

५

चट्ठे

च द्वे

”

१०

धम्मोक्कमभिधारयीति

धम्मोक्कमभिधारयीति

”

१६

सरणा

सरणो

२८

१

सरणासु

सरणोसु

”

२३

अगमके

अगमके

२९

३१

बुद्धप्पुखस्स

बुद्धप्पुखस्स

३०

८

रट्ठुपादं

रट्ठुपादं

”

१५

सीहहनू सभक्खन्धो

सीहहनूसभक्खन्धो

”

१६

भगव

भगवा

”

३४

पूजसि

पूजसि

३१

३१

असीति कोटिको

असीतिकोटियो

३२

३४

सम्भवो

सम्भवो

३३

२०

चत्तालीसत्थुव्वेधं

चत्तालीसत्थुव्वेधं

३४

७

वीसतीवस्ससहस्सानि

वीसतिवस्ससहस्सानि

”

३१

अट्ठधम्मसमाधाना

अट्ठधम्मसमाधाना

३६

२

लगगन

लगनं

”

३

निस्सङ्गताय

निस्सङ्गताय

३७

१५

तीणिहलाहलानि

तीणि कोलाहलानि

”

१६

बुद्धहलाहलं

बुद्धकोलाहलं

”

”

हलाहलानि

कोलाहलानि

”

१७

कप्पहलाहलं

कप्पकोलाहलं

”

”

बुद्धहलाहलं

बुद्धकोलाहलं

”

”

चक्कवनिहलाहलं

चक्कवनिहलाहलं

”

१८

कप्पहलाहलं

कप्पकोलाहलं

”

२५

”

”

”

२६

बुद्धहलाहलं

बुद्धकोलाहलं

”

२८

”

”

| पिट्ठे | पन्तिथं | असुद्धि | सुद्धि |
|--------|---------|-------------------|-------------------|
| ३७ | २६ | चक्कवत्तिहलाहलं | चक्कवत्तिकोलाहलं |
| " | ३२ | " | " |
| ३८ | २ | हलाहलानि | कोलाहलानि |
| " | २ | बुद्धहलाहलसदं | बुद्धकोलाहलसदं |
| " | १५ | पञ्जायति | पञ्जायन्ति |
| ३९ | १५ | इम | इमं |
| " | १७ | न | नं |
| " | २५ | सिरिसयनेनिपन्ना | सिरिसयने निपन्ना |
| " | २६ | सट्ठिगोजनिके | सट्ठियोजनिके |
| " | २६ | पाचिनसीसकं | पाचीनसीसकं |
| ४० | ४ | पुरेत्वा | पूरेत्वा |
| " | २६ | सुखीनि | सुखिनी |
| ४१ | १५ | मातुकुच्छिसम्भवेन | मातुकुच्छिसम्भवेन |
| " | २७ | एव | एवं |
| ४२ | १७ | आणापेत्वा | आनापेत्वा |
| " | ३६ | भगीनिया | भगिनिया |
| ४३ | २ | सन्तकं | सन्तिकं |
| " | " | कुल | कुले |
| ४५ | ११ | चरापेथइतो | चरापेथ इतो |
| " | १४ | आगतनयेनेव व | आगतनयेनेव |
| ४६ | ३२ | किसागोतामया | किसागोतमिया |
| ४७ | २४ | क | को |
| " | ३२ | निरुम्भित्वा | निरुम्भित्वा |
| ४८ | ८ | सन्निरुम्भित्वा | सन्निरुम्भित्वा |
| " | ३२ | उपपन्नमत्ते | उपपन्नमत्ते |
| ४९ | ३६ | नत्थिदानि | नत्थिदानि |
| ५० | १७ | पंसुकूलिकं | पंसुकूलिकं |
| " | ३२ | भूमिभागो | भूमिभागो |
| ५१ | ४ | न | नं |
| " | ५ | यास | यासं |
| ५२ | १७ | घटीकारब्रह्मना | घटीकारब्रह्मना |
| " | २८ | अत्थी | अत्थि |
| " | ३५ | एकोनिब्बतोति | एकोनिब्बतोति |
| ५३ | ११ | मयिदं | इमग्गि |
| " | ३७ | निसीदी | निसीदि |
| ५५ | ६ | रूपसोभगप्पत्तो | रूपसोभगप्पत्तो |
| " | १५ | ठत्वामया | ठत्वा मया |
| ५७ | ३० | ठान | ठानं |
| " | ३३ | विभुत्तिसुखं | विमुत्तिसुखं |
| ५८ | १ | पञ्जापरमि | पञ्जापरमि |

| पिट्ठे | पन्तिथं | असुद्धि | सुद्धि |
|---|---------|-----------------------|-------------------------|
| ५८ | २२ | भगवत्तं | भगवन्तं |
| " | २६ | एव | एवं |
| ५९ | २८ | धम्मचक्कपवत्तनं | धम्मचक्कप्पवत्तनं |
| " | ३७ | थरा | थेरा |
| ६० | १२ | मद्दियत्थेरं | भद्दियत्थेरं |
| " | ३० | उरुवेलकस्सपो | उरुवेलकस्सपे |
| " | " | महासमणोति | महासमणोति |
| ६१ | ३ | बुद्धो | बुद्धा |
| " | १० | आदिट्ठो | अदिट्ठो |
| " | १५ | निक्खमणोकासं | निक्खमनोकासं |
| " | ३७ | अज्जं | अज्जं |
| ६३ | २७ | परिजग्गनविधिं | पटिजग्गनविधिं |
| ६४ | ४ | एकग्गचित्तो | एकग्गचित्ता |
| " | " | हेट्ठो | हेट्ठा |
| " | २४ | युत्ततु गमुदुकायतनासो | युत्ततुङ्गगमुदुकायतनासो |
| ६५ | १७ | वन्दकित्तरजातकं | वन्दकिन्नरजातकं |
| " | २० | पक्कामी | पक्कामि |
| ६६ | १२ | कोटिमत्थारेन | कोटिसन्थारेन |
| " | ६ | अनाथपिण्डको | अनाथपिण्डको |
| " | १६ | आगमणत्थाय | आगमनत्थाय |
| " | २५ | कुरुमानो | कुरुमानो |
| " | ३३ | भामितुं | भायितुं |
| ६७ | ७ | सिखिस्स | सिखिस्स |
| " | १८ | निदानकथानिट्ठिता | निदानकथा निट्ठिता |
| ६८ | ५ | पच्चुपन्नवत्थु | पच्चुप्पन्नवत्थु |
| (इमस्मिं गन्थे सब्बत्थ पमादेन 'पच्चुपन्नवत्थु' इति मुद्दापितं अत्थि, तं 'पच्चुप्पन्नवत्थु' इच्चेव गहेतब्बं ।) | | | |
| ६८ | १० | पूजत्वा | पूजेत्वा |
| " | १४ | सीहनाद | सीहनादं |
| " | २७ | आसक्कोन्तेहि | असक्कोन्तेहि |
| " | ३० | अग्गमक्खायन्ति | अग्गमक्खायन्ति |
| ७० | २ | सेट्ठिनो | सेट्ठिनो |
| " | १० | येवग मिस्सति | येव गमिस्सति |
| " | १९ | परिणतप्पद्धतिणे | परिणतथद्धतिणे |
| " | ३७ | भिसमलालानि | भिसमुलालानि |
| ७१ | २४ | सपिंसु | सुपिंसु |
| ७२ | १ | उदक | उदकं |
| " | ११ | कान्तारे | कन्तारे |
| ७३ | १ | यथापूरितानव | यथापूरितानेव |
| ७४ | १२ | बोधितले | बोधितले |
| ७५ | ११ | इमस्मिं | इमस्मिं |

| पिट्ठे | पन्तिथं | असुद्धि | सुद्धि |
|--------|---------|--------------------------|--------------------------|
| ७५ | २४ | विरियं ते ओस्मट्टन्ति | विरियं ओस्मट्टन्ति |
| ७६ | ३३ | यथाकम्ममेव | यथाकम्ममेव |
| ७८ | १ | सेरिववाणिजजातकं | सेरिवाणिजजातकं |
| " | ६ | सेरिववाणिजो | सेरिवाणिजो |
| " | १४ | पुत्तभातिका | पुत्तभातिका |
| " | १८ | लोलवाणिजो | लोलवाणिजो |
| ८० | १ | चुल्लकमेट्टिजातकं | चुल्लसेट्टिजातकं |
| ८१ | १ | अहं | अहं |
| " | २६ | अंगीरस | अंगीरसं |
| ८२ | १२ | ारकोट्टके | द्वारकोट्टके |
| ८३ | ३० | कथापवृत्ति | कथापर्वति |
| ८४ | ४ | निसिन्नम्हा | निसिन्नम्हा |
| " | १६ | छड्ढेतुं | छड्ढेतुं |
| " | २३ | दारुनि | दारुनि |
| ८५ | ११ | कतञ्जुना | कतञ्जुना |
| " | १५ | पवृत्ति | पर्वति |
| " | २४ | सन्धमन्ति | सन्धमन्ति |
| ८७ | ६ | पवृत्ति | पर्वति |
| " | ६ | रञ्जो | रञ्जो |
| " | १५ | " | " |
| " | " | अञ्जोपि | अञ्जोपि |
| " | १६ | पवृत्ति | पर्वति |
| " | ३५ | लोलुदायी | लालुदायी |
| " | ३६ | निट्ठापेसि | निट्ठपेसि |
| ८८ | ३१ | तमं | नामं |
| " | ३४ | एक | एकं |
| " | ३५ | पूतं | पुत्तं |
| ९० | ३४ | लोक | लोकं |
| ९२ | १-२ | दवधम्माति | देवधम्माति |
| ९३ | १ | कट्टहारिजातकं | कट्टहारिजातकं |
| " | ६ | विड्डभस्सापि | विड्डभस्सापि |
| " | ७ | पञ्चसतभिक्षुपरिवृतो | पञ्चसतभिक्षुपरिवृतो |
| " | ३० | महिकं | भुद्धिकं |
| ९४ | १४ | संगहवत्थूहि | संगहवत्थूहि |
| " | २३ | कोसलरञ्जो | कोसलरञ्जो |
| ९५ | १० | समिञ्जतीति | समिञ्जतीति |
| " | १२ | संगहवत्थूनि | संगहवत्थूनि |
| ९७ | ४ | जीण्ण व्याधिमत्तपव्वजिते | जिण्ण व्याधिमत्तपव्वजिते |
| १०० | १४ | पसंसित्व । | पसंसित्वा |
| " | २६ | वीतिनामेस्साय | वीतिनामेस्साम |

| पिट्ठे | पन्तिथं | असुद्धि | सुद्धि |
|--------|---------|---------------|---------------|
| १०१ | १ | हमस्मि | इमस्मि |
| १०३ | २५ | पब्बज्ज | पब्बज्जं |
| १०४ | १ | अन्तरधापथ | अन्तरधापेथ |
| " | ३४ | गुणकथामाति | गुणकथायाति |
| १०५ | ५ | मरवं | मुखं |
| " | १२ | वागुरानि | नागरे |
| " | २३ | पवुत्ति | पवत्ति |
| १०६ | ८ | सीस | सीसं |
| १०७ | १-२ | यम्प न | यम्पन |
| १०८ | १८ | अतिवत्तित्वा | अनिवत्तित्वा |
| " | २६ | विस्साय | निस्साय |
| ११० | ३१ | पवुत्ति | पवत्ति |
| १११ | १ | पवुत्ति | पवत्ति |
| ११२ | २ | अठ्ठसुरं | अठ्ठसुरं |
| ११३ | १५ | सिक्खीकामतं | सिक्खाकामतं |
| ११७ | १४ | नदितीरे | नदीतीरे |
| १२० | २१ | सी | सो |
| १२२ | १७ | बन्धित्व । | बन्धित्वा |
| १२४ | १७ | नत्थी | नत्थि |
| " | २७ | हन्ति | अहन्ति |
| १२५ | १ | कुक्कुरहि | कुक्कुरेहि |
| " | १ | अणापेमिन्ति | आणापेसिन्ति |
| " | ५ | " | " |
| " | ३४ | रज्जो | रज्जो |
| १२७ | ७ | निव्वत्तो | निव्वत्तो |
| " | १२ | पवुत्ति | पवत्ति |
| १२८ | ११ | नासेतु | नासेतुं |
| " | १८ | मच्चपरियोसाने | सच्चपरियोसाने |
| १३० | १ | तिट्ठजातकं | तित्थजातकं |
| १३० | १६ | आगत्वा | आगत्वा |
| " | २७ | अचिच्चानि | अनिच्चानि |
| १३१ | ३ | तमोततं | समोततं |
| " | ७ | पवुत्ति | पवत्ति |
| १३२ | ११ | तिट्ठजातकं | तित्थजातकं |
| १३३ | ८ | अज्जमज्जा | अज्जमज्जा |
| १३६ | ६ | पवुत्ति | पवत्ति |
| १४० | २ | भण्डिक | भण्डिकं |
| १४१ | १ | मुणिकजातकं | मुनिकजातकं |
| १४२ | १६ | भत्ते | भन्ते |
| " | २७ | सत्थापि | तत्थापि |

| पिट्ठे | पन्तियं | असुद्धि | सुद्धि |
|--------|---------|---|------------------------------|
| १४४ | १२ | कुल | कुले |
| " | १८ | रज्जनाति | रज्जेनाति |
| १४८ | १७ | गम्बतो | गुम्बतो |
| " | ३० | त | तं |
| १४९ | १ | तरो | इतरो |
| " | " | कुज्झति | कुज्झीति |
| " | ३ | इदानेव | इदानेव |
| १५० | २ | कथसि | कथेसि |
| १५३ | १२ | पवुत्ति | पर्वत्ति |
| " | १८ | घंसन्तीसु | घंसन्तीसु |
| १५५ | ११ | सारिपुत्ताति | सारिपुत्तोति |
| " | १३ | पवुत्ति | पर्वत्ति |
| " | २३ | छलभिञ्जोति | छलभिञ्जोति |
| १५६ | १ | अत्थ | अथ |
| " | " | य | यं |
| " | ६ | मक्करो | मक्कटो |
| " | ७ | अगारवा | अगारवा |
| " | २३ | अपवादे | ओवादे |
| १५८ | ५ | पन्नायित्थ | पञ्जायित्थ |
| १६१ | ८ | आगतकालोतो | आगतकालतो |
| १६४ | ३४ | सीधं | सीधं |
| १६७ | १० | त | ते |
| " | २१ | असीतिहत्थगम्भीराय | असीतिहत्थगम्भीराय |
| " | २२ | रणुउग्गन्त्वा | रेणु उग्गन्त्वा |
| १६८ | ८ | व | च |
| " | २१ | तस्मिं वड्ढेत्वा | तस्मिं भेत्तचित्तं वड्ढेत्वा |
| " | २९ | निप्पुञ्जो | निप्पुञ्जो |
| १६९ | ७ | “लद्धं ते आवुसो ! भत्तन्ति पुच्छि” एतस्स पच्चुत्तरं | |

पमादेन न मुद्दापितं । तं एवं योजेतब्बं—

“लद्धं ते आवुसो ! भत्तन्ति पुच्छि ।

लभिस्साम नो भन्तेति ।”

| | | | |
|-----|----|-----------------|---------------|
| १६९ | १२ | सहावुसो | एहावुसो |
| १७० | १० | वा लाभेत्वा गणे | वा गणे |
| " | " | अपनिबुद्धभावं | अपलिबुद्धभावं |
| १७१ | २२ | अगाहेसि | अगगहेसि |
| १७६ | १२ | भिक्खुसंखस्स | भिक्खुसंघस्स |
| १७७ | ८ | पवुत्तिं | पर्वत्ति |
| " | ९ | " | " |
| " | १६ | " | " |
| १७८ | २७ | समय | समये |

| पिट्ठे | पन्तिथं | असुद्धि | सुद्धि |
|--------|---------|---------------|-----------------|
| १८० | ५ | देहिती | देहीति |
| " | १३ | नासितीति | नासिताति |
| " | १५ | कथापारभतन्ति | कथापाभतन्ति |
| १८१ | ४ | पण्डितान | पण्डितानं |
| " | १० | वस्साति | वस्सति |
| " | ११ | कोन चिदेव | केनचिदेव |
| " | २७ | अहतवत्थाति | अहतवत्थानि |
| १८२ | ७ | अम्हो | अम्भो |
| " | १६ | त धनं | तं धनं |
| " | २७ | सक्खिस्सति | सक्खिस्सन्ति |
| " | ३१ | वत | वत |
| १८४ | १ | नक्खत्तजातकं | ६. नक्खत्तजातकं |
| " | ५ | अञ्ज | अञ्ज |
| १८७ | ७ | दुम्मेधानं | दुम्मेधानं |
| " | " | वट्ठीति | वट्ठीति |
| १८८ | २१ | मञ्जेति | मञ्जोति |
| " | २५ | बाराणसीरञ्जो | बाराणसीरञ्जो |
| " | २८ | पवुत्ति | पवत्ति |
| १८९ | २ | रुचियासति | रुचिया सति |
| " | ६ | बाहनगरे | बहिनगरे |
| " | १३ | पल्लक- | पल्लङ्क- |
| १९१ | ८ | जीवितदनं | जीवितदानं |
| १९३ | २४ | अनत्थिको | अनत्थिको |
| " | ३० | स चायं | सचायं |
| १९५ | २८ | छेड्डेत्वा | छेड्डेत्वा |
| १९६ | २ | साधुफलो | साधुफलो |
| " | ७ | जागेन | जागेन |
| १९७ | २ | भिक्षुं | भिक्षुं |
| " | १५ | उग्गण्ह | उग्गण्ह |
| " | २६ | पञ्जा | पञ्जास |
| " | २९ | कणपेन | कणयेन |
| १९९ | २३ | द्वारीणि | द्वारानि |
| " | ३१ | पवुत्ति | पवत्ति |
| २०० | १८ | पापुगो | पापुगो |
| २०५ | ५ | इदानव | इदानेव |
| २०६ | २१ | कामद्वारादीनि | कायद्वारादीनि |
| " | २२ | गतो । अग्नि | गतो अग्नि |
| २१७ | २ | नन्द | नन्दि |
| २२० | ३३ | खारिकामजादाय | खारिकाजमादाय |
| २२१ | १० | महसाण्को | महसाण्को |

| पिट्ठे | पन्तिथं | असुद्धि | सुद्धि |
|--------|---------|--|----------------------------|
| २२२ | ३ | अज्जेव | अज्जेव |
| २२५ | २ | मनौ | मनो |
| " | १६ | भिक्षो ! | भिक्षवे ! |
| २२७ | ४ | अथकदिवसं | अथेकदिवसं |
| २३६ | ६ | गुगमत्तभि | गुगमत्तम्भि |
| २३८ | २८ | खन्तिमेत्तानुद्दयसम्पत्तिं | खन्तिमेत्तानुद्दयसम्पत्तिं |
| २४० | २६ | चारेहि | चोरेहि |
| २४४ | २ | पाण्डितानं | पण्डितानं |
| " | ८ | महागोणनं | महागोणनं |
| २५१ | २७ | मुहुत्तेनव | मुहुत्तेनेव |
| २५६ | २१ | पिच्छिआयाय | पिट्ठिच्छायाय |
| " | २५ | पनाहं | पनाहं |
| २५७ | ३५ | उभयं | उभयं |
| २६० | ३० | अनच्चिम्हाति | अनच्चिम्हाति |
| " | ३५ | एनरूपं | एवरूपं |
| १६१ | ७ | सदामत्तं | सदामत्तं |
| २६२ | ६ | परिव्वमयं | परिव्वयं |
| " | १२ | भवितु | भवितुं |
| २६१ | १ | इध "इल्लीसजातत्रं" इति मुद्दापितं अत्थि, तं न भवितव्वं | |
| २६६ | १३ | आलोकेन्नो | ओलोकेन्तो |
| २७० | १ | राजागहनगरे | राजगहनगरे |
| " | ४ | सटकयुगन्ति | साटकयुगन्ति |
| २७१ | ७ | मुञ्चेय | मुञ्चेय |
| २७२ | ६ | पटिजगति | पटिजगति |
| " | १६ | गहेच्छदनतो | गेहच्छदनतो |
| २७३ | २ | निक्खसतं | निक्खसतं |
| २७६ | ८ | परिभुज्जितुं | परिभुज्जितुं |
| " | ११ | परिभुज्जितु | " |
| " | १२ | परिभुज्जित्वा | परिभुज्जित्वा |
| २७७ | ६ | लभाम | लभाम |
| " | ३१ | एकमत्तं | एकमत्तं |
| २७८ | २४ | अन्तोवलञ्जनमनुरसा | अन्तोवलञ्जनमनुस्सा |
| २८१ | १ | अत्थगम्भीरे | अत्थगम्भीरे धम्मगम्भीरे |
| " | " | कारण | कारणे |
| " | " | उप्पन्न | उप्पन्ने |
| " | " | विचक्खण | विचक्खणं |
| २८३ | ६ | हत्वा | हुत्वा |
| " | ७ | ख्वस्स | ख्वस्स |
| २८७ | १३ | विज्जापनाय | विज्जापनाय |
| " | १५ | सव्यञ्जनं | सव्यञ्जनं |

| पिट्ठे | पन्तिपं | असुद्धि | सुद्धि |
|--------|---------|--------------------|--------------------|
| २८७ | ३० | निगतानि | निगलानि |
| २८८ | ३ | कामगतासतिं | कायगतासतिं |
| " | १३ | रज्ज | रज्जं |
| २८९ | १९ | अन्तरंधापत्वा | अन्तरंधापेत्वा |
| २९० | २० | सचित्तमनुरक्खेति | सचित्तमनुरक्खेति |
| २९२ | ४ | कालकण्णिभूतन्ति | कालकण्णिभूतन्ति |
| २९४ | १६ | अहोसी | अहोसि |
| " | २४ | वेदय्यासीति | वेदय्यासीति |
| २९६ | ८ | मासितं | भासितं |
| " | १२ | उपडढं | उपड्ढं |
| २९८ | १ | असातरूपजातकं | जातकट्टकथा |
| २९९ | ६ | अत्थनि | अत्थन्ति |
| ३०० | ७ | निच्चप्पहसितमुग्धा | निच्चप्पहसितमुग्धा |
| ३०४ | २३ | वत वत | वत |
| ३०५ | ६ | अचिर वति | अचिरवति |
| ३१४ | २८ | नन्ति | नन्ति |
| ३१५ | १८ | लङ्घयित्वान | लङ्घयित्वान |
| ३१९ | १८ | नप स्सन्ति | न पस्सन्ति |
| ३२० | १४ | नानप्परानि | नानप्पकारानि |
| " | १५ | युद्धानि | युद्धानि |
| " | १६ | पटक्खित्ता | पटिक्खित्ता |
| " | १७ | जाननत्थ | जाननत्थं |
| " | " | सुखदुक्खं | सुखदुक्खं |
| ३२३ | ३ | कथसि | कथेसि |
| ३२६ | २ | एवरूपं | एवरूपं |
| ३२८ | ५ | उच्छं | उच्छं |
| " | " | उच्छं | " |
| " | ११ | उच्छं | " |
| ३३५ | ३ | कुहकभावे | कुहकभावे |
| " | ६ | सूकरच्छापसीदसो | सूकरच्छापसदिमो |
| " | ३२ | सुग्भुरुत्ति | सुग्भुरुत्ति |

एककनिपातस्स

जातकट्टकथानुक्कमो

| कथा | पिटुडको | कथा | पिटुडको |
|-------------------|---------|-------------------|---------|
| अकतञ्जुजातकं | २७४ | कुक्कुरजातकं | १२४ |
| अकालरावीजातकं | ३१६ | कुण्डकपूवजातकं | ३०८ |
| अग्गिकजातकं | ३३६ | कुदालजातकं | २२७ |
| अण्डभूतजातकं | २१० | कुरुङ्गमिगजातकं | १२२ |
| अत्थस्सद्वारजातकं | २६४ | कुलावकजातकं | १४२ |
| अनभिरतिजातकं | २१६ | कुसनालिजातकं | ३२३ |
| अनुसासिकजातकं | ३१४ | कुहकजातकं | २७२ |
| अपण्णकजातकं | ६८ | कूटवाणिजजातकं | २६४ |
| अभिण्हजातकं | १३५ | कोसियजातकं | ३३७ |
| अमरादेवीपञ्चो | ३१० | खदिरङ्गारजातकं | १६३ |
| अम्बजातकं | ३२६ | खरस्सरजातकं | २५५ |
| असङ्गिकियजातकं | २४० | खरादियजातकं | ११२ |
| असम्पदानजातकं | ३३६ | गद्रभपञ्चो | ३१० |
| असातमन्तजातकं | २०७ | गामनिजातकं | ६५ |
| असातरूपजातकं | २६७ | गोधजातकं | ३५० |
| असिलक्खणजातकं | ३३२ | गोधजातकं | ३५४ |
| आजञ्जुजातकं | १२६ | घतासनजातकं | ३४३ |
| आयाचितभत्तजातकं | ११६ | चन्दाभजातकं | ३४५ |
| आरामदूसकजातकं | १७८ | चुल्लसेट्ठिजातकं | ८० |
| इल्लीसजातकं | २४६ | चूलजनकजातकं | १६२ |
| उच्छुङ्गजातकं | २२३ | भानसोधनजातकं | ३४४ |
| उदञ्चनिजातकं | ३०४ | तक्कजातकं | २१४ |
| उभतोभट्टुजातकं | ३५१ | तण्डुलनालिजातकं | ८६ |
| एकपण्णजातकं | ३६६ | तयोधम्मजातकं | २०३ |
| कञ्चनक्खन्धजातकं | १६६ | तित्तिगजातकं | १५५ |
| कटाहजातकं | ३३० | तित्तिरजातकं | ३१६ |
| कट्टहारिजातकं | ६३ | तित्थजातकं | १३० |
| कण्हजातकं | १३६ | तिपल्लत्थमिगजातकं | ११३ |
| कण्डिनजातकं | १०८ | तेलपत्तजातकं | २८७ |
| कपोतजातकं | १७३ | दुब्बचजातकं | ३१५ |
| कलण्डुकजातकं | ३३४ | दुब्बलकट्टुजातकं | ३०३ |
| काकजातकं | ३५२ | दुम्मेधजातकं | १८६ |
| काकजातकं | ३६० | दुम्मेधजातकं | ३२५ |
| कालकण्णिगजातकं | २६२ | दुराजानजातकं | २१७ |
| किम्पक्कजातकं | २६६ | देवधम्मजातकं | ८८ |

| कथा | पिट्टङ्को | कथा | पिट्टङ्को |
|-----------------|-----------|------------------|-----------|
| नक्खत्तजातकं | १८४ | मुदुलक्खणजातकं | २२० |
| नङ्गलीसजातकं | ३२७ | मुनिकजातकं | १४१ |
| नङ्गुट्टजातकं | ३५८ | राधजातकं | ३५६ |
| नच्चजातकं | १४७ | रुक्खधम्मजातकं | २३७ |
| नन्दजातकं | १६१ | रोहिणीजातकं | १७७ |
| नन्दिविसालजातकं | १३७ | लक्खणमिगजातकं | १०० |
| नलपानजातकं | १२० | लित्तजातकं | २७६ |
| नामसिद्धिजातकं | २६२ | लोमहंसजातकं | २८३ |
| निग्रोधमिगजातकं | १०२ | लोसकजातकं | १६८ |
| पञ्चगरुक्कजातकं | ३४१ | वट्टकजातकं | १५१ |
| पञ्चावधजातकं | १६७ | वट्टकजातकं | ३१७ |
| पण्णिकजातकं | ३०० | वण्णुपथजातकं | ७५ |
| परोसतजातकं | २६६ | वरणजातकं | २३० |
| परोसहस्सजातकं | २६६ | वातमिगजातकं | ११० |
| पुण्णपातिजातकं | १६३ | वानरिन्दजातकं | २०१ |
| पुप्फरत्तजातकं | ३६२ | वारुणजातकं | १८० |
| फलजातकं | १६५ | विरोचनजातकं | ३५६ |
| बकजातकं | १५८ | विसवन्तजातकं | २२६ |
| बन्धनमोक्खजातकं | ३२० | विस्सासभोजनजातकं | २८२ |
| बब्बुजातकं | ३४८ | वेदब्भजातकं | १८१ |
| वाहियजातकं | ३०७ | वेरीजातकं | ३०१ |
| बिलारवतजातकं | ३३५ | वेलुकजातकं | १७५ |
| भीमसेनजातकं | २५६ | सकुगुजातकं | १५३ |
| भेरिवादजातकं | २०५ | सङ्खधमनजातकं | २०६ |
| भोजाजानीयजातकं | १२७ | सच्चंकिरजातकं | २३४ |
| मकसजातकं | १७६ | सञ्जीवजातकं | ३७० |
| मखादेवजातकं | ६६ | सम्बसंहारकपञ्चो | ३१० |
| मङ्गलजातकं | २६६ | सम्मोदमानजातकं | १४८ |
| मच्छजातकं | १५० | साकेतजातकं | २२५ |
| मच्छजातकं | २३८ | सारम्भजातकं | २७१ |
| मतकभत्तजातकं | ११७ | सालित्तजातकं | ३०५ |
| महासारजातकं | २७७ | सिगालजातकं | ३११ |
| महासीलवजातकं | १८८ | सिगालजातकं | ३५५ |
| महासुदस्सनजातकं | २८५ | सिगालजातकं | ३६४ |
| महासुपिनजातकं | २४२ | सीलवनागजातकं | २३२ |
| महिलामुखजातकं | १३३ | सीलवीमंसनजातकं | २६७ |
| मालुतजातकं | ११६ | सुखविहारीजातकं | ६८ |
| मितचिन्तीजातकं | ३१३ | सुरापानजातकं | २५६ |
| मितविन्दजातकं | २६१ | सुवण्णहंसजातकं | ३४६ |
| मितविन्दजातकं | ३०२ | सेरिवाणिजजातकं | ७८ |

भारतीय ज्ञानपीठ काशीके प्रकाशन

[हिन्दी ग्रन्थ]

| | |
|--|-----|
| १. मुक्तिदूत [उपन्यास]--अञ्जना-पवनञ्जयकी पुण्यगाथा । | ४॥॥ |
| २. पथचिह्न [संस्मरण]--स्वर्गीय बहिनके पवित्र संस्मरण और युगविवलेषण । | २) |
| ३. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियाँ-- | ३) |
| ४. पाश्चात्य तर्कशास्त्र [अप्राप्य] | ६) |
| ५. शेर-शायरी [उर्दूके सर्वोत्तम १५०० शेर और १६० नज़्म]-- | ८) |
| ६. मिलनयामिनी [गीत]--कविवर बचन । | ४) |
| ७. वैदिक साहित्य--वेदोंपर हिन्दीमें साधिकार मौलिक विवेचन । | ६) |
| ८. मेरे बापू--महात्मा गांधीके प्रति श्रद्धाञ्जलि | २॥॥ |
| ९. पंच प्रदीप--[गीत] | २) |
| १०. भारतीय विचारधारा-- | २) |
| ११. ज्ञानगंगा--संसारके महान् साधकोंकी सूक्तियोंका अक्षय भण्डार । | ६) |
| १२. गहरे पानी पैठ--सूक्तिरूपमें ११८ मर्मस्पर्शी कहानियाँ । | २॥॥ |
| १३. वर्द्धमान [महाकाव्य] | ६) |
| १४. शेर-ओ-सुखन | ८) |
| १५. आधुनिक जैन कवि | ३॥॥ |
| १६. जैनशासन--जैनशासनका परिचय तथा विवेचन करनेवाली सुन्दर रचना । | ३) |
| १७. कुन्दकुन्दाचार्यके तीन रत्न-- | २) |
| १८. हिन्दी जैन साहित्यका संक्षिप्त इतिहास | २॥॥ |

[प्राकृत संस्कृत ग्रंथ]

| | |
|---|-----|
| १९. महाबन्ध [महाधवल सिद्धान्त]--प्रथम भाग, हिन्दी अनुवाद सहित । | १२) |
| २०. करलकखण [सामुद्रिक शास्त्र]--हस्तरेखा विज्ञानका नवीन ग्रन्थ । | १) |
| २१. मदनपराजय--भाषानुवाद तथा ७८ पृष्ठकी विस्तृत प्रस्तावना सहित । | ८) |
| २२. कन्नडप्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थसूची-- | १३) |
| २३. न्यायविनिश्चय विवरण [प्रथम भाग]-- | १५) |
| २४. तत्त्वार्थवृत्ति--श्रुतसागर सूरिरचित टीका । हिन्दी सार सहित । | १६) |
| २५. आदिपुराण भाग [१]--भगवान् ऋषभदेवका पुण्य चरित्र । | १८) |
| २६. आदिपुराण भाग [२]-- " " " | १०) |
| २७. नाममाला समाख्य-- | ३॥॥ |
| २८. केवलज्ञानप्रश्नचूडामणि--ज्योतिष ग्रन्थ । | ४) |
| २९. सभाष्यरत्नमंजूषा--छन्दशास्त्र । | २) |
| ३०. समयसार--[अंग्रेजी] । | ८) |
| ३१. कुरल काव्य--तामिल भाषाका पञ्चमवेद, तामिल लिपि । | ४) |

भारतीय ज्ञानपीठ काशी, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस ४

